चिकित्साचन्द्रोदय

दूसरा भाग

स्वास्थ्यरक्षा, अँगरेज़ी शिक्षा, हिन्दी बँगला शिक्षा
प्रभृति पुस्तकों के लेखक और गुलिस्ताँ
प्रभृति कितनी ही पुस्तकों के
अनुवादक

बाबू हरिदास वैद्य

द्वारा लिखित

प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी

कलकत्ता
७, गौरमोहन मुखार्जी स्ट्रीट के [illegible] में
बाबू सूर्यकुमार मान्ना द्वारा
मुद्रित।

सितम्बर सन् १९२२ ई०

दूसरी बार २०००

मूल्य { अजिल[illegible]
{ सजि[illegible]

[illegible]दास।

थोड़े ही समय में "चिकित्सा चन्द्रोदय" के पहले और दूसरे भागों के दूसरे संस्करण हो जाने से मेरे हृदय में जो आनन्द की मौजें उठ रही हैं, उनको मैं लिख कर बता नहीं सकता। यह सब इष्टदेव आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र की कृपा का ही फल है, जो मेरे जैसे मामूली लेखक की लिखी पुस्तकों की हिन्दी-संसार में ऐसी कद्र हुई। अतः सबसे पहले मैं अपने इष्टदेव को ही धन्यवाद देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। यद्यपि उन जगदात्मा भगवान् की कृपा से ही हिन्दी-प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को हाथों-हाथ खरीदकर मेरा और प्रकाशकों का उत्साह बढ़ाया है, तथापि मैं उन्हेंभी धन्यवाद से कोरा नहीं रख सकता। अगर जगदीश और पाठकों की ऐसी ही शुभ दृष्टि रही, तो इस ग्रन्थ का चौथा भाग भी शीघ्र ही निकल सकेगा, तीसरा तो अभी प्रकाशित हो ही चुका है। रङ्ग-ढङ्ग देखने मे तो यह आशा दृढ़ ही होती है।

मेरा विचार इस संस्करण में कितनी ही कमियों को पूरा कर देने का था, पर अनेक पाठक इस बात को पसन्द नहीं करते। उन्हें थोड़ी सी वृद्धि के लिये फिर व्यय करना पड़ता है। इसी से मैं अपने विचार को कार्य में परिणत न कर सका। साथ ही अवकाश न होने से इसकी पुरानी त्रुटियों को भी दूर न कर सका, क्योंकि मुझे प्रूफ संशोधन का भी मौक़ा नहीं मिला। आशा है, पाठक मुझे क्षमा करेंगे। जिस तरह उन्होंने पहले दोनों भाग खरीद कर प्रकाशकों का दिल बढ़ाया था, उसी प्रकार इस बार तीनों भाग खरीदकर प्रकाशकों को उत्साहित करने से न चूकेंगे इस कृपा के लिए लेखक और पबलिशर यावज्जीवन उनके आभारी रहेंगे

कलकत्ता
२२—६—२२

त—
हरिदास।

निवेदन।

गत जनवरी सन् १९२० ई०में, मैंने अपने प्रेमी पाठकोंके अनुरोधसे "चिकित्साचन्द्रोदय" का पहला भाग लिखा था। वह मैंने धड़कते हुए दिलसे लिखा था। अनेक वार कह चुका हूँ कि, मैं कोई विद्वान् नहीं, बिल्कुल मामूली आदमी हूँ; इसीसे मुझे अपनी लिखी पुस्तकोंके सम्बन्धमें खटका रहा करता है। पर न जाने क्यों, पबलिक मेरी लिखी पुस्तकोंको बड़े चावसे खरीदती और पढ़ती है। मैं तो इसे संकटहारी दीनबन्धु दयासिन्धु आनन्दकन्द कृष्णचन्द्र की कृपा और सहृदय हिन्दी-प्रेमियोंकी महानुभावता ही समझता हूँ। जिस तरह सज्जनोंने "स्वास्थ्यरक्षा" की एक ज़मानेमें भूरि-भूरि प्रशंसा की थी; उसी तरह अनेक हिन्दी प्रेमियोंने "चिकित्साचन्द्रोदय" के प्रथम भागकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की और दूसरे भागको जल्दी ही प्रकाशित करनेके लिये अतीव ज़ोर दिया। अपने प्रेमी पाठकोंकी आज्ञापालन करनेके लिये ही, शक्ति-सामर्थ्य और विद्या-बुद्धिका अभाव होते हुए भी, मैंने दूसरा भाग लिखकर नरसिंह प्रेसके मैनेजर महाशय को दे दिया और उन्होंने कृपा करके इसे शीघ्र ही प्रकाशित कर दिया। इसलिये मैं बाबू रामप्रतापजी भार्गव महोदयका बहुतही आभारी हूँ।

आजतक "ज्वर चिकित्सा" पर बहुतसे ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं, पर मेरी राय नाकिस में प्रायः सभी अधूरे हैं। कोई भी ऐसा ग्रन्थ मेरी नज़रसे नहीं गुज़रा, जिसे पढ़कर कोई "ज्वर चिकित्सा"में पूर्ण

पण्डित हो जाय और इस विषयके लिये उसे और किसी ग्रन्थके देखने की आवश्यकता न हो। प्रत्येक मनुष्यसे यह हो नहीं सकता, कि वह सभी ग्रन्थोंको देखकर उनका मर्म हृदयङ्गम कर ले। इसलिये अनेक लोग एक दो पुस्तक पढ़कर ही इलाज जैसी ज़िम्मेवरीका काम करने लगते हैं, पर सभी बातोंको न जाननेकी वजहसे अनेक स्थलोंमें धोखा खाते हैं, क़दम-क़दम पर नाकामयाब होते हैं और प्राणियोंके दुष्प्राप्य जीवनको वृथा नाश करके रौरव नरकके दण्ड-भागी होते हैं।

अक्सर साधारण वैद्य, ख़ासकर ज्वर-चिकित्सामें बड़ी कठिनाइयोंका सामना करते हैं। सभी रोगोंमें ज्वर राजा है और उसकी चिकित्सा भी बड़ी कठिन है। जो ज्वरकी चिकित्सा अच्छी तरह कर सकता है, वह प्रायः सभी रोगोंकी चिकित्सा कर सकता है। मतलब यह है, कि ज्वर चिकित्सामें सबसे अधिक विद्या, बुद्धि और अनुभवकी ज़रूरत है। मैंने इस कठिनाईका अनुभव स्वयँ करके, आज २० सालके अनुभवके बाद, यह ग्रन्थ लिखा है। ज्वर-सम्बन्धी कोई विषय, जहाँ तक मेरे दिमाग़ने काम किया है मैंने नहीं छोड़ा है। समझानेके लिये, एक-एक बातको दो दो और तीन-तीन जगह लिखने और उसे बढ़ाकर लिखनेमें आलस्यसे काम नहीं लिया है। आशा है, वे लोग जो बिना गुरुके, चढ़ी उम्रमें, आयुर्वेदके एक दो ग्रन्थ योंही देखकर चिकित्सा करने लगते हैं और सफल-मनोरथ नहीं होते, इस ग्रन्थको आद्योपान्त पढ़ कर" ज्वर-चिकित्सा" में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे। ज्वरके सम्बन्धमें उन्हें और किसी भी ग्रन्थके देखनेकी ज़रूरत न होगी।

ज्वर-चिकित्साके सिवा, मैंने इस भागमें "बाल चिकित्सा" भी लिख दी है; यानी इस भागमें "बालकोंके प्रायः सभी रोगोंके लक्षण और चिकित्सा लिखी गई है। गर्भवती और प्रसूता

स्त्रियोंके भी ज्वर तथा अतिसार आदि चन्द रोगोंकी चिकित्सा पूर्णरूप से लिखी गई है। इसके सिवा, चन्द अङ्गरेज़ी ज्वरों —जैसे टाइफॉइड ज्वर, टाइफस ज्वर और न्यूमोनिया प्रभृति के लक्षण और उनकी चिकित्सा, जहाँ तक मुझे मालूम थी और जो प्राचीन और अर्वाचीन ग्रन्थोंमें मिल सकी, इसमें लिख दी है। मैंने स्वयँ "रस-चिकित्सा"से बहुतही कम काम लिया है; पर जितना काम लिया है और जितना जानता हूँ, उससे अधिक ही इस ग्रन्थमें मैंने लिखा है; यानी प्रसिद्ध प्रसिद्ध ज्वरनाशक रसोंका ज़िक्र जहाँ-तहाँ मैंने इस ग्रन्थमें कर दिया है। इस पुस्तकमें जितने रस लिखे गये हैं, उनके तैयार करनेकी विधि मैंने बहुतही अच्छी तरह समझाकर लिख दी है। रस वैद्यको रस तैयार करनेमें अनेक द्रव्योंके शोधनेकी ज़रूरत होती है; इसलिये काममें आनेवाली चीज़ोंके शोधनेकी विधि, पुस्तकके अन्तमें, स्पष्टरूपसे, लिख दी है। जो रस मेरे परीक्षित हैं और जिस तरह मैंने उनसे काम लिया है, वे सभी बातें मैंने दिल खोल कर इस तरह लिख दी हैं कि, कुन्द-ज़हन से कुन्द-ज़हन भी उन्हें आसानीसे बनाकर काममें ला सकेगा और परिणाममें यश और धन अर्ज्जन कर सकेगा।

इस पुस्तकमें एक और खूबी की गयी है; वह यह कि, हर प्रकारके ज्वर या रोग पर एक दो और कहीं-कहीं चार छै नुसखे परीक्षित या मुजर्रब लिख दिये गये हैं। चिकित्सकोंको ऐसे नुसख़ोंकी बड़ी ज़रूरत रहती है। ऐसे नुसख़ोंको वे आँख बन्द करके काममें ला सकते हैं; क्योंकि आज़मूदा नुसख़े अकसर अकसीरका काम करते हैं। जिन नुसख़ोंके साथ "परीक्षित" शब्द लिखा हुआ है, वे मेरे कितनी ही बारके आज़माये हुए हैं। परीक्षितोंके सिवा, मैंने प्रत्येक प्रकारके रोग या ज्वरपर अपरीक्षित या बिना आज़माये नुसख़े भी लिखे हैं। इसकी वजह यह है, कि बाज़-बाज़ मौक़ोंपर अपरीक्षित योग परीक्षित योगोंसे अच्छे निकल जाते हैं। सभी लोगोंके मिज़ाज

यकसाँ नहीं होते ; इसीसे जिस नुसख़ेसे एकको आराम होता है, कभी-कभी दूसरेको उससे आराम नहीं होता ; इसीसे महर्षियोंने एक-एक रोग पर हज़ारों योग या नुसख़े कहे हैं और मैंने भी इसी विचारसे परीक्षितोंके सिवा अपरीक्षित योग भी लिखे हैं। इसमें शक नहीं कि, परीक्षित या मुजर्रब नुसख़े प्रायः ७५ या ८० फी सदी रोगियोंको आराम करते हैं।

मैंने अपनी ओरसे इस ग्रन्थको सर्व्वाङ्गसुन्दर बनानेमें कोई बात उठा नहीं रक्खी है ; पर मेरी अल्पज्ञता या कम-इल्मीकी वजहसे इसमें अनेक दोषों और त्रुटियोंका रह जाना सम्भव है ; इसलिये मैं अपने पाठकोंसे नम्रता-पूर्वक क्षमा प्रार्थना करता हूँ। आशा है, उदारहृदय सज्जन मुझे क्षमा प्रदान करनेमें संकोच न करेंगे। मैंने यह ग्रन्थ अपना पाण्डित्य दिखानेकी ग़रज़से नहीं लिखा है। लोगोंके पण्डित कहने पर भी, मैं अपने तईं पण्डित नहीं समझता और सच्ची बात तो यही है कि, मैं पण्डित शब्दका मुश्तहक़ भी नहीं ; क्योंकि पण्डित बननेके लिये पाण्डित्यकी ज़रूरत है और वह मुझमें ज़रा भी नहीं। यहाँ यह सवाल खड़ा होता है, कि वैद्यक-विद्याके पूर्ण विद्वान् या पण्डित न होनेपर भी, मैंने यह ग्रन्थ क्यों लिखा है ? केवल इसलिये कि, लोग अकाल मृत्युसे अपने दुष्प्राप्य जीवनको वृथा न खोवें। अनाड़ी वैद्य अपने पापी पेटके लिये जनसंहार करनेसे बाज़ आवें—थोड़ा बहुत सीखकर ही चिकित्सा-कर्म जैसे ज़िम्मेवारीके काममें हाथ न डालें। हिन्दीमें अभी तक ऐसी एक भी पुस्तक मेरी नज़र तले नहीं आई, जिस एक पुस्तकके देखनेसे ही किसी रोग विशेषके निदान, लक्षण और चिकित्साका यथेष्ट ज्ञान हो जाय। लोग अभाववश "अमृतसागर" आदि मामूली ग्रन्थोंको देखकर चिकित्सा करने लगते हैं ; मगर एक दो मामूली ग्रन्थोंके देख-पढ़ लेनेसे चिकित्सा करना आ नहीं जाता। बक़ौल सुश्रुत महाराजके, कि

जो विषय एक ग्रन्थमें लिखा है, वह दूसरेमें नहीं और जो दूसरेमें लिखा है वह तीसरेमें नहीं ; इसलिये चिकित्सकको अनेक शास्त्रोंका अध्ययन करना चाहिये। पर हमारे सभी आयुर्वेद-ग्रन्थ संस्कृतमें हैं। जो लोग संस्कृत नहीं जानते, वे उनसे कोरे रहते हैं। यद्यपि सभी ग्रन्थोंके हिन्दी-अनुवाद हो गये हैं ; पर वे अनुवाद भी ऐसे हैं, जिन्हें थाड़े-पढ़े लिखे समझ नहीं सकते--उनके समझनेके लिये भी ख़ासे पाण्डित्यकी ज़रूरत होती है। इसके सिवा, प्राचीन ग्रन्थोंमें रोगोंका सिलसिला भी ठीक नहीं। एक वात आरम्भमें है, तो उसी विषयकी दूसरी बात अन्तमें है ; तीसरी वात एक ग्रन्थमें है, तो चौथी अन्य ग्रन्थमें। इससे सभी ग्रन्थोंको आदिसे अन्त तक पढ़नेकी ज़रूरत है ; किन्तु सभी ग्रन्थोंके पढ़ने-समझनेके लिये समयकी ज़ियादा दरकार है। इसलिये बाक़ायदा तालीम पानेवाले वैद्य महाशयोंके सिवा, चिकित्सा-कर्म करके पेट भरनेवाले अन्य लोग दो एक ग्रन्थ देखकरही कार्य्यारम्भ कर देते हैं। इसका जैसा खोटा परिणाम होता है, वह समझदारोंसे छिपा नहीं है। इन्हीं सब कारणोंसे, मेरे जैसे अल्पज्ञने बौना होते हुए भी चाँद छूनेका प्रयास किया है। मैंने सोचा कि, जब पण्डित लोग इस कामको करना ही नहीं चाहते, तब मैंही यदि अपनी अल्पमतिके अनुसार कुछ करूँ तो क्या दोष है? "अकरणान्मन्द करणं श्रेयः"के न्यायानुसार ही इस दुस्तर महासागरमें कूद पड़ा हूँ। भरोसा है, भक्तवत्सल भगवान् कृष्ण मुझे पार लगायेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है, कि उनकी सहायताका भरोसा करके जो काम किया जाता है, वह अवश्य सफल होता है।

यद्यपि मैं इस ग्रन्थके प्रत्येक भागको इस ढँगसे लिख रहा हूँ कि, इसके पढ़ लेनेपर दूसरे ग्रन्थ की आवश्यकता न हो ; पर मुझे यह नहीं मालूम कि, मुझे इसमें सफलता हो रही है या नहीं। सफलता-असफलता का निर्णय विद्वान् लोग ही कर सकते हैं।

यह कह देनेमें भो हर्ज नहीं कि, मैं इस कठिन कामको केवल स्वार्थ-साधन ही के लिये नहीं कर रहा हूँ। जो विद्वान् मेरी इस वात पर विश्वास करें, उन्हें, मेरी और जगत् की भलाईके लिये, इस काममें मेरा हाथ अवश्य बँटाना चाहिये—मेरी वास्तविक भूलोंसे मुझे आगाह कर देना चाहिये। जो परोपकारो सज्जन मुझे मेरी सच्ची भूलें बतायेंगे, उनका मैं बहुत कुछ ऐहसान मानूँगा और वास्तविक भूलोंको सधन्यवाद, भूल बतानेवाले सज्जनोंका नाम देकर, अगले संस्करणमें दुरुस्त कर दूँगा।

इस ग्रन्थके लिखनेमें चरक सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश, बंगसेन, चक्रदत्त, शार्ङ्गधर, वैद्यजीवन, वैद्यविनोद, योग-चिन्तामणि, रसायन-सार प्रभृति अनेक प्राचीन और आधुनिक कोई ४० ग्रन्थोंसे मैंने सहायता ली है। सच तो यह है, कि, जो कुछ इस ग्रन्थमें है, वह सब प्राचीन आचार्य्योंका है, मेरा तो ढँगमात्र है। आजकलके कई ग्रन्थोंसे भी बराय नाम सहायता ली गई है; इसलिये उनके लेखकोंका भी मैं चिर-कृतज्ञ रहूँगा। मुरादाबादके "वैद्य" और अहमदाबादके "वैद्य कल्प-तरु"के स्वामी और सम्पादक महोदयोंने अपनी स्वाभाविक उदारतासे, बिना किसी प्रकारकी हील-हुज्जतके, मुझे अनुभूत योग लेनेकी आज्ञा प्रदान की थी; उसके लिये मैं उक्त दोनों उदार सज्जनोंका आजीवन आभारी रहूँगा; पर इस बातके कह देनेमें हर्ज नहीं है कि, मैंने उक्त दोनों सज्जनोंकी आज्ञा जिस ग्रन्थके लिये ली थी, वह ग्रन्थ मैंने अभी नहीं लिखा है। इस भागमें आठ या दस योग मलेरिया ज्वर पर, "वैद्य" से लिये हैं और "कल्पतरु" से १०५ पंक्तियाँ मात्र ली हैं। अधिक मसाला लेनेकी आवश्यकता नहीं पड़ी।

मेरा निवेदन बहुत लम्बा-चौड़ा हो गया है; पर दो तीन महोपकारी परम दयालु सज्जनोंको धन्यवाद दिये बिना इसको समाप्त करनेसे मैं अपनी आत्माके सामने कृतघ्नताका अपराधी ठहरूँगा, इसलिये उनके सम्बन्धमें भी दो चार बातें कह देना परमावश्यक है। सुनिये, गत

जनवरी १६२० में, मैं ने इस ग्रन्थका पहला भाग लिखा था। वह कारणवश इतनी जल्दीमें लिखा गया था, जिसका कोई हिसाव नहीं। उन दिनों, मैं एक घोर विपद्में फँसा हुआ था। मेरे चन्द भाई मुझसे अकारणही ऐसे नाराज़ हो गये, कि उन्होंने मुझे या इस कम्पनीको रूए ज़मीनसे उठा देनेके लिये एक ज़वर्दस्त षड्यन्त्र रचा। इस दल में अनेक लोग शामिल किये गये। मेरे साथ सच्ची दोस्तीका दम भरनेवाले, मुझे घनिष्ट मित्र समझनेवाले, मेरे लिये समयपर ज़मीन जायदाद, अपना सर्व्वस्व और जान तक दे देने की डींग मारनेवाले प्रायः सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष भावसे उस दलमें जा मिले। जब मुझे अपनी किश्तीके मँझधारमें डूबजानेमें कोई भी सन्देह न रह गया ; तब मैंने अशरणशरण अनाथनाथ दीनवन्धु भगवान् कृष्ण से पुकार की। क्योंकि जिसे कोई आश्रय नहीं रहता, जो सब जगह से निराश हो जाता है, वह भगवान्कीही शरणमें जाता है और वह भक्तवत्सल उसकी रक्षाके लिये अविलम्ब तैयार हो जाते हैं। यद्यपि मैं कोई भजनानन्दी भक्त नहीं ; तोभी उन्हें मेरी बेबसी पर दया आई। कहते हैं, भगवान् स्वयं नहीं आते, पर वे अपने आश्रितों— अपने शरणागतोंकी रक्षा किसी न किसी तरह करा ही देते हैं। यह पौराणिक बात राई रत्ती सच है; इसमें सन्देह की ज़रा भी गुँजाइश नहीं। नीचेकी चन्द पंक्तियोंसे यह बात प्रमाणित हो जायगी।

यद्यपि मैं अपनी विपद्से मुक्ति पानेके लिये कई सालोंसे प्रयत्न कर रहा था ; पर विना सभी साधन प्राप्त हुए किसी काममें सफलता नहीं होती। जब मैं ने देखा कि, देर करनेसे शत्रुओंकी बन आयेगी, मैंने औरभी ज़ोरदार उपायोंसे काम लिया। भगवान्की कृपासे ही, भारतके वर्त्तमान कर्त्ताधर्त्ता (अब भूतपूर्व्व) विधाता श्रीमान् वाइसराय लार्डचेम्सफर्ड महोदयने मेरे जैसे तुच्छ मनुष्यकी पुकार, बिना किसी सिफ़ारिशके, आनन फानन सुनी और मुझे सब तरहसे अभय किया। उन्हीं की कृपासे, मैं आनन्दपूर्व्वक इस ग्रन्थको लिख सका हूँ। मेरी

अन्तरात्मा आपको आशीर्व्वाद देती है और सदा देती रहेगी। अगर ज़िन्दगी रही और दैवानुकूल रहा, तो मैं अपनी ओरसे ऐसा प्रयत्न करनेमें कोई वात उठा न रक्खूँगा, जिससे श्रीमान् वाइसरायका शुभ नाम आनेवाली सैकड़ों हज़ारों शताब्दियों तक लोगोंकी ज़बान पर रहे—भारतके झोंपड़े-झोंपड़ेमें आपका गुणगान किया जाय। इतना करने और कर सकने पर ही शायद मेरी अन्तरात्माको शान्ति मिले। सच्चा हिन्दू मैं उसे ही समझता हूँ, जो अपने उपकारीके उपकारको न भूले। आपने मेरे साथ वह भलाई की है, जो मेरी जैसी स्थितिके वहुत कम भारतवासियोंको किसी वाइसरायसे नसीब हुई होगी। परमात्मा आपको चिरायु करे और आप इस पदसे भी उच्चपदकी शोभा वढ़ावें। एक और अत्युच्चपदासीन अङ्गरेज़ सज्जनने भी मेरी विपद्में मुझे वहुत सहारा दिया है। मेरे साथ ऐसे अच्छे सलूक किये है, जिन्हें मैं आजीवन न भूलूँगा। इन सज्जनोंके सिवा सुविख्यात धनकुवेर सदासुख गम्भीरचन्दकी फर्मके मालिक धनीमानियोंमें अग्रगण्य परोपकारपरायण, दयालुप्रकृति, परम-उदार श्रीमान् वावू कस्तूरचन्दजी कोठारी महोदयने भी मेरा अच्छा साथ दिया है—मुझपर बड़ी कृपायें की हैं; इसलिये मैं आपका वहुत ही कृतज्ञ हूँ। ऐसे आदर्श सज्जनोंसे ही संसारकी शोभा है। इस विषयमें, परमात्मा चाहे, तो मैं फिर किसी समय विस्तारसे लिखूँगा।

विनीत—

हरिदास।

विषय-सूची

पहला अध्याय ।

दूसरा अध्याय।

तीसरा अध्याय ।

विषय	पृष्ठ

चौथा अध्याय ।

पाँचवाँ अध्याय ।

विषय — पृष्ठ

छठा अध्याय ।

सातवाँ अध्याय ।

विषय पृष्ठ

आठवाँ अध्याय।

नवाँ अध्याय।

विषय　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पृष्ठ

दशवाँ अध्याय।

विषय			पृष्ठ

विषय			पृष्ठ

विषय				पृष्ठ

ग्यारहवाँ अध्याय।

बारहवाँ अध्याय।

विषय				पृष्ठ

विषय　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पृष्ठ

तेरहवाँ अध्याय ।

विषय | पृष्ठ

चौदहवाँ अध्याय ।

पन्द्रहवाँ अध्याय ।

सोलहवाँ अध्याय ।

सत्रहवाँ अध्याय ।

अठारहवाँ अध्याय ।

उन्नीसवाँ अध्याय।

बीसवाँ अध्याय ।

विषय	पृष्ठ

विषय		पृष्ठ

इक्कीसवाँ अध्याय ।

विषय | पृष्ठ

बाईसवाँ अध्याय ।

विषय	पृष्ठ

सूची समाप्त

॥ श्रीः ॥

दूसरा भाग।

ज्वरकी उत्पत्ति और भेद।

ज्वर रोगोंका राजा है।

संसारमें परमात्माने जितने रोगोंकी सृष्टि की है, उनमें ज्वर सबसे बलवान और सबका राजा है। यों तो मनुष्यके प्राण नाश करनेवाले, उसे भयङ्कर कष्ट देनेवाले क्षय, यक्ष्मा, गुल्म, अर्श, भगन्दर, उन्माद, प्रमेह, अपस्मार—मृगी प्रभृति अनेक रोग हैं; पर ज्वर की समता करनेवाला, उपद्रव पर उपद्रव पैदा करनेवाला, अनेक प्रकारके रोगोंका जन्म देनेवाला, चिकित्सा में बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित करनेवाला, जन्मकाल से मरणकाल तक प्राणी के साथ रहनेवाला और रोग नहीं है; इसीसे ज्वरको सभी प्राचीन मुनियोंने "रोगराज" कहा है।

"सुश्रुत उत्तर-तंत्र" में लिखा है :—

जन्मादौ निधने चैव, प्रायो विशति देहिनः।
अतः सर्व विकाराणामयं राजा प्रकीर्तितः॥

"पैदा होनेके समय से मरने के समय तक ज्वर प्रायः प्राणी के शरीर में रहता है, इसीसे ज्वरको सब रोगोंका राजा कहा है।" "चरक" में लिखा है :—" जीवके जन्म लेनेके समय ज्वर रहता है और उसके मरनेके समय भी ज्वर रहता है। जन्मकालमें ज्वर रहता है, इसी से प्राणी अपने पूर्वजन्म को बात भूल जाता है। शेषमें, ज्वर ही प्राणियोंके प्राण नाश करता है।" दुनियामें यह बात मशहूर है, कि कोई रोग क्यों न हो, देह छुटते समय ज्वर आही जाता है, इसीसे प्राणी उस समय जो भयङ्कर दृश्य देखता है, उसका वर्णन नहीं कर सकता। ज्वरके वेगके मारे मनुष्य बेहोश हो जाता है, गला रुक जाता है, ज़बान बन्द हो जाती है; उस समय यदि वह कुछ कहना भी चाहता है, तो कह नहीं सकता। मृत्यु समय ज्वर होता है, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। "हारीत संहिता" में लिखा है :—

ज्वरेण मृत्युर्विज्ञेयो न मृत्युः स्याज्ज्वरं विना॥

"ज्वरसे मृत्यु होती है, विशेष कर ज्वर बिना मृत्यु नहीं होती।"

मनुष्य ही ज्वरको सह सकता है।
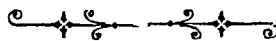
ज्वर सभी प्राणियोंको होता है; पर मनुष्योंके सिवा और प्राणी इसका वेग नहीं सह सकते। कर्मफलोंसे मनुष्य देवत्व लाभ करता है। जब उसके पुण्यकर्म्मोंका अन्त हो जाता है, तब वही स्वर्गसे गिर कर मनुष्य-देहमें आता है; इसलिये मनुष्य में देवांश रहता है। उस पहलेके देवांश के कारण ही, मनुष्य ज्वरके भयानक वेग को सह सकता है। पशु पक्षी आदि और प्राणी ज्वरको नहीं सह

सकते। यदि उनको ज्वर आता है, तो उनकी मृत्यु हो हो जाती है। गाय, भैंस और घोड़ा हाथीमें ज्वर असाध्य समझा जाता है। मनुष्योंमें ज्वर कष्टसाध्य, किन्तु और जीवोंमें प्राणनाशक ही समझा जाता है।

ज्वर पूर्व्वजन्मके पापोंका फल है।
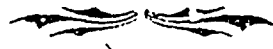
"चरक"में लिखा है -"ज्वर निर्दोष प्राणीको नहीं आता। जिन्होंने पहले जन्ममें पापकर्म्म या बुरे कर्म किये हैं, उन्हींको ज्वर सताता है; इसीसे ज्वर को ज्वर, क्षय, तम, पाप और मृत्यु कहते हैं।

ज्वरोंसे रोगोंकी उत्पत्ति।

"हारीत-संहिता"में लिखा है—"अधिक मिहनत करने, कसरत न करने, चिन्ता करने, शोक करने, भय करने, क्रोध करने एवं औषधियोंकी गन्ध और विशेष कर धातुक्षयसे, कोठेकी अग्निको निकालकर, त्वचामें रहनेवाले रक्त-पित्त ज्वरको पैदा करते हैं। उस ज्वरसे मन्दज्वर होता है। मन्दज्वरसे अति मन्दज्वर होता है। उस बहुत ही बारीक ज्वरमें रोगी, ज्वरको ज्वर न समझ कर, खट्टी चीज़ें ज़ियादा खाता है, तो उसे कामला रोग हो जाता है। कामलासे हलीमक पैदा होता है। हलीमकसे पाण्डु—पीलिया होता है। राजरोगसे सूजन, सूजनसे उदर-रोग, उदर-रोगसे वातगुल्म—वायु-गोला, वातगुल्मसे श्वास और शूल रोग होता है। शूलसे मन्दाग्नि और मन्दाग्निसे स्वरभेद होता है। मतलब यह कि, ज्वरसे इन सब रोगोंकी उत्पत्ति होती है और अन्तमें ज्वरसे मृत्यु होती है। और भी कहा है—ज्वरसे रक्तपित्त होता है। ज्वर और रक्तपित्तसे श्वास होता है। दाह बढ़नेसे जठर रोग होता है। जठर रोगसे सूजन

होती है। अर्श या ववासीरसे पेटमें दर्द और गोला होता है। ज़ुकामसे खाँसी ; और खाँसी से क्षय होता है। इस तरह एक रोग दूसरे रोगका कारण होता है ; पर ज्वर प्राय: अनेक रोगोंका कारण होता है।

मतलब यह कि, ज्वर वनराजकी तरह रोगराज है और दुश्चिकित्स्य है। इसकी चिकित्सामें बड़ी होशियारी की ज़रूरत है। ज़रा सी भूलसे ज्वर विगड़ कर विषमज्वर अथवा सन्निपात ज्वरका रूप धारण करता है। सन्निपातज्वरसे कोई विरला ही भाग्यवान बचता है। क्योंकि सन्निपात ज्वर और मृत्युमें कोई भेद नहीं। जो सन्निपात ज्वर होनेपर आराम हो जाता है, वह नया जन्म लेता है।

ज्वरकी उत्पत्ति ।

ज्वरके सम्बन्ध में अथवा ज्वरकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें आयुर्वेदमें बहुत कुछ लिखा है ; पर सबका मतलब एक ही है। फिर भी ; हम पाठकोंकी जानकारी और मनोरञ्जनके लिये दो तीन श्लोक उद्धृत किये देते हैं—

"हारीतसंहिता"में लिखा है—

> दक्षाध्वरप्रशमनः कुपितोहि महेश्वरः ।
> श्वासं मुमोच दयिता विधुरश्च तीव्रं—
> तेन ज्वरोऽष्ट विध सम्भवतोऽष्टधास्यात् ॥

दक्ष प्रजापतिसे कुपित होकर महेश्वर- महादेवने, सतीके लिए, आठ श्वास छोड़े, इससे ज्वर आठ प्रकारका हुआ।

"सुश्रुतमें" लिखा है :—

> दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भवः ।
> ज्वरोऽष्टधा पृथग्द्वन्द्वसंघातागंतुजः स्मृतः ॥

दक्षके अपमान करनेसे महादेव को क्रोध हुआ। उस क्रोधसे जो श्वास निकला—उसीसे पृथक्, द्वन्द्व, संघात और आगन्तुज आठ प्रकारके ज्वर हुए।

नोट—ये आठ प्रकारके ज्वर मुख्य हैं। इनसे ज्वरोंकी और बहुतसी शाखें निकलती हैं। उन सबका वर्णन हमने आगे किया है। पाठकोंको चाहिये, ज्वरोंके भेदोंको अच्छी तरहसे याद करलें। क्योंकि बिना भेद याद हुए चिकित्सा हो नहीं सकती।

"सुश्रुत उत्तरतंत्र" में भी लिखा है :—

रुद्रकोपाग्निसंभूतः सर्वभूतप्रतापनः।
तैस्तैर्नामभिरित्येषां सत्वानां परिकीर्त्तितः॥

ज्वर रुद्र यानी महादेवकी कोपाग्निसे पैदा हुआ है और सब प्राणियोंको सन्ताप देनेवाला है। अलग-अलग प्राणियोंमें वह अलग-अलग नामोंसे पुकारा जाता है। जैसे; मनुष्योंमें उसे ज्वर, हाथियोंमें पातक, घोड़ोंमें अभिताप, गायोंमें ईश्वर, भैंसोंमें दारिद्र, मृगोंमें मृगरोग, बकरी और भेड़ोंमें प्रलाप एवं कुत्तोंमें अर्ल। इसी तरह सब प्राणियोंमें ज्वर होता है और उसके जुदे-जुदे नाम हैं। सारांश यह कि, ज्वर महादेवके क्रोधसे पैदा हुआ है।

ज्वरकी प्रकृति।

ज्वर रुद्रकोप से पैदा हुआ है। "चरक" में लिखा है कि, क्रोधसे पित्त पैदा होता है; इसलिये, क्रोधसे पैदा होनेके कारण, ज्वरकी प्रकृति पैत्तिक यानी पित्तकी है। अथवा यों समझिये कि, ज्वरका स्वभाव गरम है। इसलिये इसका इलाज पित्तशमन करनेवाले—शीतल द्रव्योंसे करना चाहिये—पित्त-विरोधी चिकित्सा अच्छी नहीं। महर्षि वागभट लिखते हैं :—

उष्मा पित्तादृते नास्ति, ज्वरो नास्त्युष्मणा विना।
तस्मात् पित्त-विरुद्धानि, त्यजेत पित्ताधिकेधिकम्॥

गरमी विना पित्तके नहीं होती और ज्वर विना गरमी के नहीं होता, इसलिये ज्वरमें पित्तविरोधी चिकित्सा न करनी चाहिये ; विशेषकर पित्तज्वरमें तो भूलकर भी पित्तका विरोध करनेवाली— गरम चिकित्सा न करनी चाहिये।

खुलासा यह है, कि सभी प्रकारके ज्वरोंमें पित्तका कोप होता है। अगर सभी ज्वरोंमें पित्तका कोप न होता, तो ज्वरोंमें गरमी न होती। पित्त से ही ज्वरोंमें गरमीका सन्ताप रहता है, इसलिये सभी प्रकारके ज्वरोंमें ऐसी चिकित्सा करनी चाहिये, जिससे पित्त औरभी कुपित न हो जाय। खासकर पित्तज्वरमें तो इस बातका बहुत ही खयाल रखना चाहिये। पित्तज्वरमें गरमी बड़े ज़ोरसे रहती है, रोगीको दाह के मारे कल नहीं पड़ती, शरीर जलने लगता है। बुद्धिमान् और अनुभवी वैद्य पित्तज्वरमें सुगन्धवाला, ख़स और चन्दनादि द्रव्योंके योगसे काढ़ा बनाकर देते हैं; केले या कमलके पत्तोंपर रोगीको सुलाते हैं; चन्दन और ख़स प्रभृतिसे छिड़काव किये हुए, ख़सकी टट्टियाँ लगे हुए, चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल हुए घरमें पित्त-ज्वरवाले को रखते हैं, नाभि पर काँसीका वर्तन रख कर शीतल जलकी धारा देते हैं; किन्तु नासमझ वैद्य सभी ज्वरोंमें और पित्त ज्वरमें भी, शीत आ जानेके भयसे, रोगीको गरम घरमें रखते हैं, उसे गरम कपड़ोंसे ढक देते हैं, घरके दरवाज़े और खिड़कियोंको बन्द करा देते हैं, तथा शीतप्रधान ज्वरोंमें देने योग्य गरम काढ़े देते हैं। नतीजा यह होता है, कि गरम ही गरम इलाज करनेसे सन्निपातज्वर हो जाता है और रोगी परमधाम की राह लेता है।

मामूली क़ायदा यह है कि, गरमीसे पैदा हुए रोगोंमें सर्द और सरदीसे पैदा हुए रोगोंमें गरम दवा दी जाती है ; पर डाक्टरोंकी तरह सिर पर बर्फ़ रखाना अथवा हकीमोंकी तरह एकदम शीतल दवा देना भी अच्छा नहीं है। पित्तमें जिस तरह गरम दवा देना अच्छा नहीं, उसी तरह अधिक सरदी पहुँचाना भी बुरा है। ऐसी

चिकित्सा भी न करनी चाहिये, जिससे सिर पर गरमी चढ़ जाय और ऐसी भी न करनी चाहिये, जिससे शीत आजाय। ज्वरमें खूब सोच समझ कर, जहाँ जैसी ज़रूरत हो, वैसीही चिकित्सा करनी चाहिये। पित्तज्वर में तो पित्तका लिहाज़ रखनाही चाहिये; किन्तु संसर्गज ज्वरोंमें भी पित्त पर ही पहले ध्यान देना चाहिये। "सुश्रुत उत्तरतंत्र" में लिखा है—

नोट—यों तो सभी रोगोंकी चिकित्सामें बड़ी चातुरी और सावधानीकी ज़रूरत है; पर ज्वरमें इनकी विशेष ज़रूरत है ज्वर ज़रा सी असावधानीसे बिगड़ जाता है और अनमोल जीवन नष्ट हो जाता है। बहुतसे अनाड़ी वैद्य ज्वरमें शीत आ जानेके भयसे अन्धाधुन्ध गर्म दवाएँ दिये जाते हैं। अगर ज्वरमें सरदी अधिक होती है, तो रोगी बच जाता है; अन्यथा दिमाग़में गरमी चढ़ जाती है और रोगी बेहोश होकर मर जाता है।

निर्हरेत् पित्तमेवादौ ज्वरेषु समवायिषु।
दुर्निवारतरं तद्धि ज्वरार्तेषु विशेषतः॥

संसर्गज ज्वरों में पहले पित्तको शमन करनेवाली क्रिया करनी चाहिये, क्योंकि ज्वर-पीड़ित मनुष्यों में, विशेषकर, पित्त ही कठिन से क़ाबूमें आता है।

ज्वरका साधारण स्वरूप।
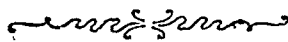
ज्वर रोग कैसा होता है, उसमें साधारण रूप से क्या-क्या लक्षण होते हैं, इसे प्रत्येक मनुष्य और स्त्री बच्चा तक समझता है। सभी जानते हैं, जिस रोग में शरीर गरम होता है, शरीर में दर्द होता है, उसे ही ज्वर कहते हैं। बोलचालकी भाषा में "ज्वर" को बुख़ार, अँगरेज़ीमें फीवर, हिकमत में तप और संस्कृत में ज्वर कहते हैं। शास्त्रों में ज्वरके लक्षण इस भाँति लिखे हैं:-

ज्वरके लक्षण।

स्वेदावरोधस्संतापः सर्वाङ्गग्रहणं तथा।
युगपद्यत्र रोगे तु स ज्वरो व्यपदिश्यते॥

जिस रोगमें पसीने न आवें, शरीर बहुत गर्म हो और सारे शरीर में दर्द या जकड़नसी हो,—उसे "ज्वर" कहते हैं। ज्वरके साधारण लक्षण यही हैं। ज्वर में शारीरिक और मानसिक सन्ताप अवश्य होता है; विना सन्ताप ज्वर नहीं होता। ज्वर में पसीना नहीं आता, यह साधारण नियम है। पित्तज्वर में कभी-कभी पसीना आता है ※।

ज्वर की क़िस्में।
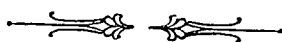
लक्षण-भेद से ज्वर बहुत किस्म का होता है; पर चिकित्सा-कार्य्य के सुभीते के लिये, मुख्यतया, ज्वर आठ प्रकार का माना गया है :—

१। वातज्वर।
२। पित्तज्वर।
३। कफज्वर।
४। वातपित्त ज्वर।
५। पित्तकफ ज्वर।
६। वातकफ ज्वर।
७। सन्निपात ज्वर।
८। आगन्तुक ज्वर।

सन्निपातज्वर के भेद।

आयुर्वेद में रोगों के अनेक वर्ग और उपवर्ग किये गये हैं। डाक्टरी में रोगों का वर्गीकरण और ही तरह से किया गया है। ज्वरके जिस तरह आयुर्वेद में अनेक भेद हैं; उसी तरह

※ यहाँ ज्वरके साधारण लक्षणों में पसीनों का न आना लिखा है, किन्तु पित्तज्वर में पसीने आते हैं और वातकफ ज्वर में खूब पसीने आते हैं; इस से नियम में कोई गड़बड़ी नहीं होती। यह साधारण नियम है; किन्तु पित्तज्वर या वात-कफज्वर विशेष हैं। हाँ, शरीर का आग की तरह कम और ज़ियादा जलना या गरम होना सभी ज्वरों में देखा जाता है

डाक्टरी में भी हैं; किन्तु आयुर्वेदमें जिस तरह सन्निपात ज्वर ५२ प्रकार का या १३ प्रकार का माना गया है; उस तरह डाक्टरी में नहीं है। सुश्रुत और वाग्भट ने सन्निपात ज्वर के अलग-अलग भेद नहीं लिखे हैं; परन्तु चरकाचार्य्य ने, कमज़ोर दिमाग़वालों के लिये, सन्निपातके ख़ास-ख़ास लक्षणों से १३ विभाग किये हैं। दोषों की कमी और ज़ियादती अथवा प्रधानता और अप्रधानता के हिसाब से, सन्निपात ज्वर के १३ विभाग कर देने से, चिकित्साकार्य्य में बड़ा सुभीता हो गया है।

वात, पित्त और कफ इन तीनों दोषों से होनेवाले ज्वर को "सन्निपात ज्वर" कहते हैं। इस ज्वर में जिस दोषके लक्षण अधिक हों, उसी की उल्वणता या प्रधानता समझनी चाहिये। यदि एक दोष अधिक ज़ोर पर हो तो एकोल्वण, दो दोष अधिक ज़ोर पर हों तो दो दोषोल्वण और तीनों दोष अधिक ज़ोर पर हों तो त्र्युल्वण या त्रिदोषोल्वण कहते हैं। दोषों की प्रधानता या उल्वणता के हिसाब से सन्निपात ज्वर सात तरह के होते हैं :

१ वातोल्वण,	२ पित्तोल्वण,	३ कफोल्वण,
४ वातपित्तोल्वण,	५ वातकफोल्वण,	६ पित्तकफोल्वण,
	७ त्र्युल्वण।	

जिस तरह वातादिक दोषों की प्रधानता या उल्वणता के भेद से सात तरह के सन्निपात ज्वर होते हैं; उसी तरह दोषों की हीनता, मध्यता और अधिकता के भेद से ६ प्रकार के सन्निपात ज्वर औरभी होते हैं। जैसे,—

१ अधिक वात,	मध्य पित्त,	हीन कफ।
२ अधिक वात,	मध्य कफ,	हीन पित्त।
३ अधिक पित्त,	मध्य वात,	हीन कफ।
४ अधिक पित्त,	मध्य कफ,	हीन वात।
५ अधिक कफ,	मध्य वात,	हीन पित्त।
६ अधिक कफ,	मध्य पित्त,	हीन वात।

इस तरह ७ दोषों की उल्बणता के हिसाब से और ६ दोषों की हीनता, मध्यता और अधिकता के हिसाब से—कुल तेरह प्रकार के सन्निपात ज्वर हुए,—यही चरक में लिखे हैं। दोषों की प्रधानता-अप्रधानता और हीनता, मध्यता तथा अधिकता की पहचान आ जाने से बड़े मज़े में चिकित्सा होती है। जैसे; जिस सन्निपात-ज्वर रोगी के ज्वरमें वात के लक्षण बहुत हों, पित्तके कम हों और कफ के और भी कम हों,—उसे वातोल्वण, अधिक वात, मध्य पित्त और हीन कफ सन्निपात कहेंगे। दोषों की कमी-वेशी के अनुसार ही चिकित्सा करनी चाहिये।

चिकित्सकों के सुभीते के लिये, अन्यान्य आचार्य्यों ने, सन्निपातों के मुख्य मुख्य लक्षणोंके हिसाबसे, उनके तेरह नाम लिख दिये हैं*। उन तेरहोंके नाम हम नीचे लिखे देते हैं। उनके लक्षण कंठाग्र रखने और पहचान लेनेका अभ्यास कर लेनेसे, सन्निपात ज्वरों की चिकित्सामें औरभी आसानी हो जाती है। उनके नाम ये हैं—

१ सन्धिक, २ अन्तक, ३ रुग्दाह, ४ चित्तविभ्रम,
५ शीताङ्ग, ६ तन्द्रिक, ७ कंठकुब्ज, ८ कर्णक,
९ भुग्ननेत्र, १० रक्तष्ठीवी, ११ प्रलापक, १२ जिह्वक,
१३ अभिन्यास।

---

* सन्धिक में सन्धियों या जोड़ों में बड़ी वेदना होती है। अन्तक असाध्य है, वह प्राणी का अन्तही कर देता है। रुग्दाह में दाह का बड़ा ज़ोर होता है, इसी से इस का इलाज पित्तज्वर की तरह होता है। चित्तविभ्रम में रोगीके चित्तमें भ्रम हो जाता है और वह पागल हो जाता है। शीताङ्ग में सारा शरीर बर्फ के समान शीतल हो जाता है। तन्द्रिक में तन्द्राका ज़ोर रहता है, आँखें झिपी जाती हैं। कण्ठकुब्ज में कंठ रुक जाता है, रोगी को जल पीने में भयानक कष्ट होता है। कर्णक ज्वर में कान की जड़ में गांठ या सूजन होती है, रोगी बहरा हो जाता है। भुग्ननेत्र में नेत्र टेढ़े हो जाते हैं। रक्तष्ठीवी में थूक के साथ खून आता है। प्रलापक में रोगी रात-दिन प्रलाप या वृथा बकवाद करता है। जिह्वक में जीभ में भयानक काँटे पैदा हो जाते हैं और रोगी गूँगा हो जाता है।

विषम ज्वर ।

जिन ज्वरों का वेग विषम होता है, जो कभी ज़ोर से चढ़ते हैं, कभी ज़ोरसे नहीं चढ़ते, कभी किसी समय आते हैं और कभी किसी समय,—उनको "विषमज्वर" कहते हैं। ज्वर आने और उसके शान्त होने पर शीघ्र ही स्नान आदि कुपथ्य करनेसे वातादि दोष फिर कुपित होकर रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र—इन सातों में से किसी एक धातु में अपना घर कर लेते हैं। ऐसे ज्वरों को "विषम ज्वर" कहते हैं। आमज्वर यानी कच्चे ज्वर में मूर्खता से औषधि दे देने से भी विषम ज्वर हो जाते हैं। "सुश्रुत" में लिखा है :—

> भेषजं ह्याम दोषस्य भूयो ज्वलयति ज्वरम्।
> शोधनं शमनीयं तु करोति विषमज्वरम्॥

दोषोंके विना पके, आमज्वर या कच्चे बुख़ारमें, दवा देनेसे ज्वर प्रचण्डरूप धारण करता है और शोधन-शमन क्रिया करने से विषमज्वर हो जाता है। मतलब यह हुआ कि, पीछे कहे हुए वातज्वर पित्तज्वर आदि की ठीक चिकित्सा न होने से, अथवा ज्वरान्त में कुपथ्य करने से, विषम ज्वर हो जाते हैं और वे रस रक्त आदि धातुओं में घुस जाते हैं, इसलिये हम विषमज्वरों को उनके बाद लिख रहे हैं। यद्यपि आठ प्रकारके ज्वरों में विषम ज्वरों का नाम नहीं आया है, पर इनकी जड़ वे ही हैं।

विषम ज्वरों की क़िस्में ।

मुख्यतया विषम ज्वर पाँच प्रकार के होते हैं :—

१ सन्तत ज्वर ३ अन्येद्युःज्वर
२ सतत ज्वर ४ तृतीयक ज्वर
५ चातुर्थिक ज्वर। *

सप्तधातुगत ज्वर।

रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र — इनमें रहनेवाले सात ज्वर होते हैं। उनके नाम ये हैं :—

१ रसगत ज्वर। २ रक्तगत ज्वर।
३ मांसगत ज्वर। ४ मेदगत ज्वर।
५ अस्थिगत ज्वर। ६ मज्जागत ज्वर।
७ शुक्रगत ज्वर।

❀ सन्तत ज्वर ७ या १० अथवा १२ दिन तक एकसा बना रहता है, किन्तु १२वें दिन अच्छी तरहसे छूट कर फिर बहुत समय तक बना रहता है ; इससे इसको विषम ज्वरोंमें मानते हैं। सुश्रुत सन्तत ज्वरको विषम ज्वर नहीं मानता, किन्तु प्रलेपक ज्वरको पाँचवाँ विषम ज्वर मानता है। ❀ सतत ज्वर दिन-रातमें दो समय होता है। अन्येद्यु: दिन-रातमें एक बार होता है। तृतीयक, जिसे बोलचालमें तिजारी कहते हैं, जिस दिन आता है उसके तीसरे दिन फिर आता है। चातुर्थिक, जिसे बोलचालमें चौथैया कहते हैं, अपने आनेके दिनसे चौथे दिन आता है।

† रस धातुमें दोषोंके होनेसे सन्तत ज्वर होता है। रुधिर या रक्तमें होनेसे सतत ज्वर, मांसमें होनेसे अन्येद्यु:, मेदमें होनेसे तृतीयक एवं अस्थि और मज्जामें दोषके स्थित होनेसे, कालके समान प्राणनाशक, चातुर्थिक या चौथैया ज्वर होता है। जब दोष शुक्र या वीर्य्यमें घर कर लेता है, तब रोगी एकदम असाध्य हो जाता है। उसकी चिकित्सा करना बदनामी मोल लेना है। इन सबके लक्षण और चिकित्सा आगे लिखेंगे।

जब दोष किसी एक धातुमें घर कर लेता है, वह उस धातुको बहुत दूषित नहीं करता तथा अनुलोम होने से कष्टसाध्य भी नहीं होता ; किन्तु जब रसमें ठहरा हुआ दोष रसको ख़राब करके रक्तमें, फिर रक्तको बिगाड़ कर मांसमें, मांसको दूषित करके मेदमें, मेदको दूषित करके अस्थि—हड्डीमें, हड्डीको ख़राब करके मज्जामें, शेषमें मज्जाको बिगाड़ कर शुक्र या वीर्य्यमें पहुँचता है ; यानी इस तरह ऊपर-ऊपरकी धातुओंको ख़राब करता हुआ भीतर-भीतर की धातुओंमें जाता है, तब उतनाही कष्टसाध्य और असाध्य होता जाता है। इसीसे कितने ही आचार्य्य धातुगत ज्वरोंको अलग मानते हैं। पर इन के जानने से लाभ यह है कि, जब ज्वर सब तरह की चिकित्सा करनेसे न जाय, तब पता लगाना चाहिये, उसने किसी धातु में तो डेरा नहीं लगा दिया है। लक्षणों से पता लगते ही, उसे उस धातु से अलग करने की चेष्टा करनी चाहिये ; बस, सफलता प्राप्त होगी।

नोट—इनके सिवा प्रलेपक ज्वर, वातवलासक ज्वर, शीतपूर्व्वक ज्वर, दाहपूर्व्वक ज्वर, अन्तर्वेगी ज्वर, वहिर्वेगी ज्वर, प्राकृत ज्वर, वैकृत ज्वर, गम्भीर ज्वर प्रभृति औरभी ज्वर होते हैं। उनको हम आगे लिखेंगे।

आगन्तुक ज्वर *

आगन्तुक ज्वर ही आठवाँ ज्वर है। आगन्तुक ज्वर चार प्रकार के होते हैं :

१ अभिघातज †। २ अभिचारज †। अभिषङ्गज †। ४ अभिशापज †।

इनकी औरभी क़िस्में हैं। जैसे,—काम ज्वर, क्रोध ज्वर, शोक ज्वर, भयज्वर, भूत ज्वर, विष ज्वर, औषधिगन्ध ज्वर प्रभृति। इनके सम्बन्ध में भी आगे लिखेंगे।

चरकसे ज्वरके लक्षण और भेद।

ज्वरके लक्षण

दैहिक और मानसिक सन्तापका होना—यह सब ज्वरोंका साधा-

---

* आगन्तुक ज्वरोंको अलग इसलिये माना है कि, इनमें वह पीड़ा पहले होती है, जिसके कारणसे आगन्तुक ज्वर होता है; पीछे दोष कुपित होते हैं; यानी पहले ज्वरकी हेतु—कारण पीड़ा पैदा होती है और पीछे दोष कुपित होते हैं। जैसे; कोई डर गया, डरनेसे ज्वर हो गया, पीछे वायु कुपित हुई। जो दोष कुपित हो, उसीके लक्षणके अनुसार इलाज करना चाहिये। अगर क्रोध करनेसे ज्वर हो, तो पित्त कुपित होगा। फिर भी उसके लक्षण मिलाकर तसल्ली कर लो।

† तलवार लकड़ी प्रभृतिकी चोट लगनेसे जो ज्वर होता है, उसे "अभिघातज" कहते हैं। विपरीत मंत्र जपने और जादू टोनेसे जो ज्वर होता है, उसे "अभिचारज" कहते हैं। काम, शोक, भय, क्रोध अथवा भूत प्रभृतिसे जो ज्वर होता है, वह "अभिषंगज" तथा शापसे होनेवाला "अभिशापज" कहाता है।

रण लक्षण है। ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है, जिसे ज्वर होने पर सन्ताप यानी गरमी न व्यापे।

ज्वरके भेद।

(१) शारीर और मानस।
सौम्य और आग्नेय।
अन्तर्वेग और वहिर्वेग।
प्राकृत और वैकृत।
साध्य और असाध्य।

इन भेदोंसे ज्वर दो दो प्रकारका होता है।

(२) दोष और कालके वलाबलसे ज्वर पाँच प्रकारका होता है। जैसे,—सन्तत, सतत, अन्येद्युः, तृतीयक और चातुर्थिक।

(३) सात धातुओंके आश्रय-भेदसे ज्वर सात प्रकार होता है। जैसे ;—रसगत ज्वर, रक्तगत ज्वर, मांसगत ज्वर, मेदोगत ज्वर, अस्थिगत ज्वर, मज्जागत ज्वर और शुक्रगत ज्वर।

(४) वातपित्त और कफके कारण-भेद से ज्वर आठ तरहका होता है :—

१ वातज्वर, २ पित्तज्वर, ३ कफज्वर,
४ वातपित्तज्वर, ५ कफपित्तज्वर ६ वातकफज्वर,
७ सन्निपात ज्वर, ८ आगन्तु ज्वर।

शारीर और मानस ज्वरके लक्षण।

शारीर ज्वर पहले शरीरमें होता है और मानस ज्वर पहले मनमें प्रकट होकर पीछे देहमें फैलता है। विकृतचित्तता, चित्तकी अनवस्थता और ग्लानि,—ये मानसिक सन्ताप और मानस ज्वरके लक्षण हैं। इन्द्रियोंकी विकृति होना शारीरिक ज्वरके लक्षण हैं।

सौम्य और आग्नेय ज्वरके लक्षण।

वातपित्तात्मक ज्वर शीतलता चाहता है और वातकफात्मक गरमी चाहता है। मिले हुए लक्षणोंवाला ज्वर सरदी और गरमी दोनों चाहता है।

सौम्य सरदीके और आग्नेय गरमीके ज्वर को कहते हैं।

अन्तर्वेग और वहिर्वेग ज्वरके लक्षण।

देहके भीतर अत्यन्त दाह, प्यास, प्रलाप, श्वास, भ्रम, सन्धिशूल, अस्थिशूल, पसीना न आना, दोष और विष्ठाकी रुकावट—ये लक्षण अन्तर्वेगी ज्वरके हैं।

शरीरके वाहर सन्ताप अधिक हो, प्यास प्रभृति लक्षण थोड़े हों तथा सुखसाध्यता हो—ये वहिर्वेगी ज्वरके लक्षण हैं।

नोट—वहिर्वेगीके सुखसाध्य लिखनेसे मालूम होता है कि, अन्तर्वेगी ज्वर कृच्छ्रसाध्य या असाध्य होता है।

प्राकृत ज्वर और वैकृत ज्वरके लक्षण।

वर्षाशरद्वसंतेष्वाताद्यैःप्राकृतःक्रमात्।
वैकृतोऽन्यःसुदुःसाध्यः प्राकृतश्चानिलोद्भवः॥

वर्षा ऋतुमें वात ज्वर, शरद् ऋतुमें पित्त ज्वर और वसन्त ऋतुमें कफ ज्वर हों, तो "प्राकृत ज्वर" समझने चाहियें। इनके विपरीत; वर्षाकालमें पैत्तिक ज्वर हो, शरद्में कफज्वर हो और वसन्तमें वात ज्वर हो, तो "वैकृत ज्वर" समझने चाहियें। प्राकृत ज्वर सुखसाध्य होते हैं और वैकृत ज्वर दुःसाध्य होते हैं।

नोट—वातजन्य प्राकृत ज्वर भी दुःसाध्य होता है। और रोगोंमें प्राकृतत्व दुःसाध्य है ; परन्तु ज्वरमें प्राकृतत्व सुखसाध्य है। वर्षा, शरद् और वसन्त क्रमसे वात, पित्त और कफके प्रकृत काल हैं। इनके विपरीतको विकृत काल कहते हैं।

गम्भीर ज्वरके लक्षण।

गंभीरस्तु ज्वरोज्ञेयो ह्यन्तर्दाहेन तृष्णया।
आनद्धत्वेन चात्यर्थं श्वासकासोद्गमेन च॥
हतप्रभेन्द्रियं क्षामं दुरात्मानमुपद्रुतम्।
गम्भीरं तीक्ष्णवेगार्तं ज्वरितं परिवर्जयेत्॥

जिसके भीतर दाह हो, प्यास अधिक हो, दोष और मल जहाँके तहाँ रुके हों, श्वास और खाँसीका अत्यन्त ज़ोर हो, कान्ति बिगड़ गई हो, और इन्द्रियाँ भ्रष्ट हो गई हों, चित्त दुर्बल और ख़राब हो, हिचकी आदि उपद्रव हों, ज्वरका वेग गम्भीर और तीक्ष्ण हो—यह "गम्भीर ज्वर"के लक्षण हैं। ऐसे रोगीको त्याग देना चाहिये। यह ज्वर असाध्य है—सुश्रुत।

आमज्वरके लक्षण।
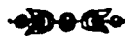
"चरक"में लिखा है,—अरुचि, अविपाक पेटका भारीपन, हृदय की अशुद्धता, तन्द्रा, आलस्य, ज्वरका बिना विश्राम एकसा चढ़ा रहना और ज़ोर रहना, दोषोंका निकाल न होना, लार बहना, सूखी ओकारी आना, भूख न लगना, मुखमें लिबलिबाहट, शरीरकी स्तब्धता, सुप्तता, भारीपन, पेशाब अधिक होना, मलका न पकना—कच्चा उतरना और शरीरका चिकनासा रहना—ये "आम ज्वर"के लक्षण हैं। "सुश्रुत"में दस्तक़ब्ज़ रहना, कल न पड़ना और नींद न आना वग़ैरः लक्षण लिखे हैं।

नोट—आम दोषसेही ज्वर होता है और आम उपवाससे नष्ट होता है; इसीसे ज्वरमें उपवास कराते हैं। आम ज्वरमें शमन औषधि और अन्न न देना चाहिये। निराम ज्वरमें दवा आदि देनेसे ज्वर शीघ्र आराम होता है।

निराम ज्वरके लक्षण।

क्षुत्क्षामतालघुत्वंचगात्राणांज्वरमार्दवम्।
दोषप्रवृत्तिरुत्साहोनिरामज्वरलक्षणम् ॥

भूखका लगना, देहका कृश होना अङ्गोंका हलकापन, मन्द ज्वर होना, अधोवायु खुलना और मनमें उत्साह होना,—ये निराम—आमरहित या पके ज्वरके लक्षण हैं।

पच्यमान ज्वरके लक्षण।

ज्वरवेगोऽधिकातृष्णाप्रलापःश्वसनंभ्रमः।
मलप्रवृत्तिरुत्क्लेशःपच्यमानस्यलक्षणम् ॥

ज्वरका वेग, अधिक प्यास, प्रलाप, श्वास, भ्रम, मलकी प्रवृत्ति और वमन सी आती जान पड़ना—ये "पच्यमान ज्वर"के लक्षण हैं।

ज्वरके कारण और सम्प्राप्ति प्रभृति ।

रोगोंके कारण ।

हमारे आयुर्वेदमें सभी रोगोंका होना वात, पित्त और कफके कुपित होनेसे बतलाया गया है। वात, पित्त और कफके कुपित होनेका कारण मनुष्योंका "अपथ्य-सेवन" बतलाया गया है ; यानी हम लोगोंके उचित रूपसे आहार विहार न करनेसे उपरोक्त वातादिक दोष कुपित होते हैं और कुपित होकर नाना प्रकारके रोग करते हैं। "माधव निदान"में लिखा है :—

> सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिता मलाः ।
> तत्प्रकोपस्य तु प्रोक्तं विविधाहित सेवनम् ॥

नाना प्रकारके अहित सेवनसे वातादिक दोष कुपित होते हैं और इन तीनोंके कुपित होनेसे सारे रोग होते हैं।

नोट—आरोग्य चाहनेवालोंको सदा अहित सेवन से बचना चाहिये, जिससे दोषोंके कुपित होनेसे रोग न हों।

महर्षि चरक और वाग्भट्टने रोग और आरोग्यके कारण बड़ी ही खूबीसे एक-एक श्लोकमें ही लिख दिये हैं। सच पूछिये, तो उक्त महर्षियोंने थोड़ेमें ही सारी आरोग्यताकी कुञ्जी लिख दी है। अगर मनुष्य उनको समझे और समझ कर उनपर ध्यान रक्खे, तो कभी रोगोंके पञ्जोंमें ही न फँसे—सदा आरोग्य रहकर, परमायु भोगता हुआ, सुखसे जीवनका बेड़ा पार करे। वे अनमोल वाक्य ये हैं—

कालार्थकर्मणां योगा हीन मिथ्यातिमात्रकाः।
सम्यंक् योगश्च विज्ञेयो रोगारोग्यैक कारणम्॥ वाग्भट्ट॥
काल बुद्धीन्द्रियार्थानां योगो मिथ्या न चाति च।
द्वाश्रयाणां व्याधीनां त्रिविधो हेतुसंग्रहः॥ चरक॥

काल, अर्थ, कर्म — इनका हीन योग, मिथ्या योग, और अतियोग ही रोगका कारण है और इनका उचित योग ही आरोग्य का कारण है।

काल, बुद्धि और इन्द्रियोंके विषयोंका मिथ्या योग, अयोग और अतियोग* — ये तीनों शारीरिक और मानसिक रोगोंके कारण हैं।

नोट—जितने रोग होते हैं, वे सब मिथ्या आहार विहार या काल, अर्थ और कर्मके हीन, मिथ्या और अति योगसे होते हैं; अतः बुद्धिमानोंको उनसे बचना चाहिये।

ज्वरके कारण।

यहाँ तक तो हमने मनुष्यके सभी रोगोंके कारण सामान्य रूपसे बतलाये; अब हम ज्वरके ही कारण बतलाते हैं। यद्यपि आयुर्वेदमें लिखा हुआ निदान विवादास्पद है, तथापि युक्तियुक्त है। "सुश्रुत" में लिखा है :—

वमन विरेचन आदिके बेकायदे होने, अधिक होने या बिगड़ जाने; नाना प्रकार की चोट लगने, किसी दारुण रोगके उठने, शरीरमें विद्रधि प्रभृतिके उठने और पकने, किसी तीक्ष्ण दवाके परिपाक, बहुत मिहनत, अजीर्ण, क्षय, विष, ऋतुओंके विपरीत होने, तेज़ दवा या ज़हरीले फूलोंकी गन्ध, शोक, क्रोध, नक्षत्र-पीड़ा, उलटे तंत्र-मंत्र जगने, शाप लगने, मनकी शंका, ग्लानि, भय, भूतकी शंका प्रभृति कारणोंसे ज्वर होता है। स्त्रियोंके असमयमें बच्चा होने या अयोग्य प्रसव होने अथवा ठीक प्रसव होने पर भी

* काल, कर्म और अर्थसे हीन, मिथ्या या अयोगके उदाहरण देखने हों, तो "चिकित्सा-चन्द्रोदय" पहले भागका ७७ वाँ पृष्ठ देखिये।

अहित आचरण—कुपथ्य सेवन करने और स्तनोंमें इतना अधिक दूध आनेसे जो बालकसे न पिया जासके प्रभृति कारणोंसे ज्वर होता है। हारीतने कसरत (अति कसरत), भोजन पर भोजन, कूप-जल और झरनेका जल पीनेसे भी ज्वर होना लिखा है।

अन्यान्य आचार्योंने मिथ्या आहार और मिथ्या विहारको ज्वर का मुख्य कारण ठहराया है। बात एक ही है। मिथ्या आहार और मिथ्या विहारके अन्दर ये सभी बातें आ जाती हैं। इनकी खुलासा टीका बड़ी लम्बी-चौड़ी है। फिर भी; हम पाठकोंके सुभीतेके लिये, इनकी कुछ व्याख्या,किये देते हैं। देश, काल, प्रकृति प्रभृतिके विरुद्ध खाना-पीना डोलना-फिरना या और काम करना, संयोगविरुद्ध* भोजन करना, समय बेसमय चाहे जब खा लेना, कभी कम और कभी ज़ियादा खाना, अपनी पाचन-शक्तिसे अधिक खाना, बिना भूख लगे खाना, एक भोजनके बिना पचे दूसरा भोजन करना, भूख लगने पर न खाना, अपनी ताक़तसे ज़ियादा काम करना, अत्यन्त स्त्री-प्रसङ्ग करना अथवा प्रभात-समय स्त्री-प्रसङ्ग करना, तेज़ घाम या धूपमें घूमना, विषैली हवा या बदबूदार हवामें घूमना या रहना, वर्षाके जलमें भीगना, कहींसे चलकर आते ही गरम शरीरसे स्नान कर डालना, स्त्रीप्रसंग या और मिहनत करके तत्काल स्नान कर लेना—ऐसे-ऐसे अनेक उदाहरण हैं और ये सब मिथ्या आहार और मिथ्या विहारमें शामिल हैं। इन मिथ्या आहार और मिथ्या विहारोंके कारण से ही वात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष कुपित हो जाते हैं और ज्वर पैदा करते हैं; यानी जो लोग मिथ्या आहार विहार नहीं करते अथवा काल, कर्म और अर्थका हीन, मिथ्या और अयोग या अतियोग नहीं करते, उन्हें ज्वर प्रभृति कोई

* दूध-मछली, दही-मूली—इनको एक साथ खाना संयोग-विरुद्ध भोजन है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं। इनको न जानने और ऐसा करनेसे ज्वर प्रभृति भयानक रोग हो जाते हैं। बहुतसे उदाहरण देखने हों, तो "चिकित्साचन्द्रोदय" प्रथम भागका २८४—२८८ पृष्ठ देखो।

रोग नहीं होता और जो लापरवाही से इनका ख़याल नहीं करते अथवा मिथ्या आहार विहार करते हैं, उन्हें ज्वर प्रभृति नाना प्रकारकी शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ सताती हैं। हमारे सारे आचरण आहार विहारकी दो क्रियाओंमें आजाते हैं। मिथ्या आहार विहारसे शरीर-सिस्टम (Bodily system) बिगड़ जाती है। यहाँ तक कि, अन्नको पचानेवाली सिस्टम,जिसपर सारे शरीरका दारमदार है, बिगड़ जाती है। इस एकके बिगड़नेसे असंख्य रोगोंकी राह साफ हो जाती है। इसके बिगड़नेसे सब रोगोंकी जड़—मलावरोध यानी क़ब्ज़ होने लगता है—आँतोंमें जितने समय तक मलको रहना चाहिये, उससे अधिक समय तक मल रुका रहता है। यह मलावरोध या क़ब्ज़ आँतोंके शिथिल होनेसे होता है। असल रोग मलका रुकना या क़ब्ज़ ही है। इसीसे अनेक रोगोंकी उत्पत्ति है। जब यह मल दोष आँखोंमें पहुँचता है, आँखोंके रोग करता है; सिरमें पहुँचता है, सिरके रोग करता है; हृदयमें पहुँचता है, हृदय-शूल प्रभृति हृदयके रोग करता है। जब आँतोंका बिगड़ा हुआ रस खूनमें मिल जाता है, तब सारे शरीरकी नाड़ियाँ उससे भर जाती हैं, वायुकी चाल बन्द हो जाती है; क्योंकि वायु उसे ठेलकर निकाल नहीं सकता; तब वह अटका हुआ ख़राब द्रव्य वहीं तरह-तरहके रोग पैदा करता है। मतलब यह कि, आँतोंके दोषसे ही सारी बीमारियाँ होती हैं। बीमारी एक आँतोंकी होती है, उसीके नाम मस्तक-रोग, हृद्रोग, नेत्ररोग, गलगण्ड प्रभृति रख लिये गये हैं। जो लोग सुखी रहना चाहें, वे आंतोंको साफ रक्खें, उनमें क़ब्ज़ न होने दें और चिकित्सक चिकित्सा करते समय इस बातकी अवश्य खोज करें कि, आँतोंमें क्या गड़बड़ हुई है।

अब यह प्रश्न उठता है कि, मिथ्या आहार विहारसे वातादिक दोष दूषित होकर शरीरमें किस तरह ज्वर पैदा करते हैं, किस तरह शरीर गरम हो जाता है, किस तरह पसीना आना बन्द हो जाता है,

किस तरह पसीना आनेसे शरीरकी गरमी कम हो जाती है इत्यादि। यद्यपि ये बातें हमारे आयुर्वेदमें साफ तौरसे नहीं समझाई गई हैं, तथापि जो कुछ कहा गया है, वही हम लिखते हैं।

ज्वरकी सम्प्राप्ति।

मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाशयाश्रयाः।
बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्यु रसानुगाः॥

अनुचित आहार विहारके कारणसे वात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष आमाशयमें जाकर, रसको दूषित करके, कोठे की अग्नि की गरमीको बाहर निकाल कर *, ज्वर उत्पन्न करते हैं।

नोट—यह विषय वैद्यक सीखनेवालोंको अच्छी तरह समझ कर याद करना चाहिये। तोता-रटन्तसे कोई लाभ नहीं। समझ कर याद करनेसे जन्मभर विषय याद रहता है।

ज्वरमें शरीर गरम क्यों होता है?
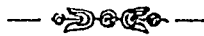
सभी जानते हैं कि, ज्वरमें शरीर गरम होता है, पर वह गरम क्यों होता है अथवा कैसे होता है, इसे बहुत कम-लोग जानते हैं। "सुश्रुत उत्तरतन्त्र"में शरीर गरम होनेके कारण इस भाँति लिखे हैं:—

तैर्वेगवद्भिर्बहुधा समुद्भ्रान्तैर्विमार्गगैः।
विक्षिप्यमाणोऽन्तराग्निर्भवत्याशु बहिश्चरः॥
रुणद्धि चाप्यपां धातुं यस्मात्तस्माज्ज्वरातुरः।
भवत्यत्युष्णगात्रश्च न च स्विद्यति सर्वशः॥

जब वातादि दोष दूषित होकर आमाशयमें जाते हैं, उस समय

† आमाशय नाभि और स्तनोंके बीचमें है। यहीं भोजनका परिपाक होता है और यहींसे ज्वरकी पैदायश होती है।

* कोठेकी गरमीको बाहर निकालते हैं, सारी अग्निको बाहर नहीं निकालते। यदि सार अग्नि निकल जाय, तो पीछे दोषोंका पाचन कैसे हो?

उनका वेग बढ़ा हुआ होता है। वे उद्दण्डकी तरह वहाँ ऊधम सा मचा देते हैं। ऊधमियोंकी तरह इधर-उधर फैलकर टेढ़े-तिरछे घूमते हैं। उनके ऊधमसे भीतरकी गरमी या अग्निके परिमाणु चमड़े और रोम-मार्गों की ओर आने लगते हैं और धातुके पतले भाग—पसीनेका बाहर आना रोक देते हैं। पसीनोंके बन्द हो जानेसे ज्वरवाले मनुष्यका शरीर गरम हो जाता है। दोषोंकी इस कारस्तानीसे पसीना बन्द हो जाता है, सारे शरीरमें पसीना नहीं आता और किसी-किसी ज्वरमें (जैसे, पित्त ज्वरमें) आ भी जाता है। *

---

* आमाशयमें भोजन पकनेके कारण, भाफ़के बबखरे पैदा होते और उठते हैं। जब वातादिक दोष, मनुष्यकी ग़लतीसे, मिथ्या आहार विहार करनेसे, कुपित हो जाते हैं, तब भाफ़के गरम बबखरोंमें मिल जाते हैं और रसमें पहुँचकर उसे ख़राब करते हैं तथा रसके साथ मिलकर, रस और पसीने बहानेवाले स्रोतोंकी राह बन्द कर देते हैं एवं जठराग्निको मन्दी करके, पाचकाशयसे बाहर निकाल कर, शरीरके रोम-कूपों या चमड़ेकी ओर ठेल देते हैं। रसरूप धातुओंकी राह रुकनेसे पसीने नहीं आते, इसलिये बदन गरम हो जाता है। भीतरकी अग्नि मन्दी हो जानेसे भूख नहीं लगती। अग्निको तेज़ करने और दोषोंके पचानेके लिये ही लङ्घन प्रभृति कराये जाते हैं। गरम भाफ़के अबखरोंमें, जो चमड़ेकी ओर आते हैं, यदि पित्तका अंश अधिक होता है यानी गरमी ज़ियादा होती है; तो पित्तज्वर होता है और पित्तके लक्षण मिलते हैं। अगर उन अबख़रोंमें कफका अंश अधिक होता है; तो गीलापन, चिकनाई और शरीरका भारीपन आदि लक्षण नज़र आते हैं। यदि वायुका अंश ज़ियादा होता है, तो रूखापन, हलकापन प्रभृति वायुके लक्षण मिलते हैं और वात ज्वर होता है। अगर वात और पित्तके अंश अधिक होते हैं, तो वातपित्तज्वर होता है। इसी तरह और ज्वरोंको समझ लो।

इतना लिखनेसे कुछ काम हो गया, पर हमारी पूरी तसल्ली न हुई। "वैद्यकल्पतरु"में एक सज्जन लिखते हैं—शरीरमें ज्वर रूप गरमी बढ़नेका कारण अंगरेज़ी वैद्यक-शास्त्र इस तरह बताता है :—"विष या ज़हरकी जातिका कोई हानिकारी पदार्थ ख़ूनमें मिल जाता है। उस पदार्थको पकाकर बाहर निकालनेके लिये ख़ूनकी गरमी बढ़ती है। प्रायः सभी ज्वरोंमें पसीना बन्द रहता है। उसका कारण यह है, कि दोषका परिपाक करनेके लिये ख़ूनकी गरमी बढ़नी चाहिये। आयुर्वेदमें जो दोषके पाचन करनेकी विधि है, उसका भी यही मतलब है। शरीरमेंसे सदैव निकलनेवाले पसीनेके बन्द होनेसे गरमी बढ़ती है और ज़ियादा पसीना आनेसे गरमी घटती है। ग्रीष्म कालमें गरमी बहुत पड़ती है, बाहरी गरमी से शारीरिक गरमी बढ़ न जाय, शरीरमें जितनी गरमी चाहिये उतनीही रहे, ज़ियादा न हो जाय, इसके लिये गरमीमें पसीना अधिक आकर फालतू गरमीको बाहर निकाल देता है। शीतकालमें सरदीके कारण शरीरकी गरमी कम न हो जाय, इसलिये पसीना बहुतही कम आता है। यह प्राकृतिक रासायनिक उलट-फेर है। यह नियम याद रखनेसे ख़ूब लाभ है।

साफ मतलब यह है कि, वातादिक दोषोंकी दुष्टतासे, रस बहनेवाले स्रोतोंके रास्ते रुक जाते हैं, भीतरकी गरमी बाहर आती है, पसीना आना बन्द हो जाता है। इसीसे ज्वरवालेका शरीर गर्म हो जाता है।

नोट—एक बात और भी याद रखनी चाहिये। वह यह कि, वातादिक दोष अपने-अपने कोपकारक आहार विहारोंसे*, अपने-अपने समयमें, कुपित होकर और सारी देहमें फैलकर ज्वर करते हैं। वायुके कोपका समय वर्षा ऋतु है, इसलिये बरसातमें वात ज्वर होता है। पित्तके कोपका समय शरद् ऋतु है, इसलिये शरद्में पित्त ज्वर होता है। कफके कोपका समय वसन्त ऋतु है, इसलिये वसन्तमें कफ ज्वर होता है।

जिस तरह वर्षके बारह महीनोंमें ग्रीष्म, वर्षा आदि ऋतुएँ होती हैं; उसी तरह दिन-रातके २४ घण्टोंमें भी छहों ऋतुएँ वर्त जाती हैं। दिनके पहले पहरमें वसन्त ऋतुका सा समय होता है, दूसरे पहरमें ग्रीष्म, तीसरेमें प्रावृट्, चौथेमें वर्षा, आधी रातका समय शरद्का और पिछली रात हेमन्त ऋतुका समय होता है। दिनका पहला पहर वसन्तके समान है, इसलिये उस समय कफ कोप करता है और उस समय कफज्वर होता या बढ़ता है। तीसरा पहर वर्षाके समान होता है; उस समय वायुका कोप होता है और उस समय वात ज्वरका उत्थान या ज़ोर होता है। आधीरात शरद् ऋतुके समान है; इसलिये उस समय पित्तका कोप होता है और उस समय पित्त-ज्वर होता या ज़ोर करता है।

---

* वात, पित्त और कफ किन-किन कारणोंसे और किस-किस समय कुपित होते हैं, इन बातोंका जानना मनुष्यमात्रके लिये ज़रूरी है। अगर इनको जानकर मनुष्य सावधान रहे, तो रोग क्यों हो? वैद्यको तो इन बातोंपर खूब ही ध्यान रखना चाहिये। इनका खूब खुलासा हाल "चिकित्सा चन्द्रोदय" प्रथम भाग पृष्ठ १२७—१३९में लिखा है। ऋतुओंके सम्बन्धमें १८४, १८५ और १८६ पृष्ठ उसी भागके देखिये।

इनके सिवा बुढ़ापा, दिनका अन्त और रातका अन्त, वर्षाकाल और भोजन पच चुकनेके बादका समय - ये वायुके समय हैं। इसी तरह गरमीका समय, शरद् ऋतु मध्याह्नकाल, जवानी और भोजन पचनेका समय—ये पित्तके समय हैं। वसन्त, दिनका पहला भाग, रातका आरम्भिक काल और अन्तिम काल, बालकपन और भोजन कर चुकनेका समय—ये कफके काल हैं। इन सब समयोंको ध्यान में रख कर इलाज करनेसे बड़ी अच्छी तरह सफलता होती है। वैद्योंकी जानकारीके लिये ही धन्वन्तरि महाराजने कहा है :—

दोषाः प्रकुपिताः स्वेषु कालेषु स्वैः प्रकोपनैः।
व्याप्य देहमशेषेण ज्वरमापादयन्ति हि॥

वात, पित्त और कफ अपने-अपने समयमें, अपने-अपने कोपकारक आहार विहार प्रभृतिसे कुपित होकर और सारे शरीरमें फैलकर ज्वर करते हैं।

ज्वरके सामान्य पूर्वरूप।

श्रमोरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः।
इच्छा द्वेषो मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु॥
जृम्भांगमर्दो गुरुता रोमहर्षोऽरुचिस्तमः।
अप्रहर्षश्च शीतं च भवत्युत्पत्स्यति ज्वरे॥

बिना मिहनत किये थकान सी मालूम होना, शरीरका गिर जाना, चित्तका न लगना—बेचैनी सी मालूम होना, शरीरका रंग बदल जाना, मुँहका ज़ायका बिगड़ जाना, आँखोंमें पानी भर आना; सरदी, हवा और धूपका कभी अच्छा और कभी बुरा लगना, जँभाई आना, शरीर टूटना और भारी होना, रोएँ खड़े होना, भोजनकी इच्छा न होना, आँखोंके सामने अँधेरी या चक्करसे आना, आनन्दका

नाश और सर्दी सी लगना—ये ज्वरके सामान्य पूर्व्वरूप हैं ; यानी ये लक्षण उस समय नज़र आते हैं, जब कि ज्वर आनेवाला होता है। अगर किसीमें इन लक्षणोंमेंसे दो चार लक्षण कम भी मिलें, तोभी समझ लेना चाहिये कि, ज्वर आनेवाला है।

नोट —"चरक"में इन लक्षणोंके सिवा, आँखोंमें सुर्खी आना, नींद ज़ियादा आना ; आवाज़, गीत और धूपका बुरा मालूम होना, ज़रा से कामको बहुत देरमें करना, अपने काममें लापरवाही करना, माता पिता और गुरुकी बात न मानना, बालकसे द्वेष करना, चन्दनादि का लगाना बुरा मालूम होना, मीठी चीज़ बुरी लगना, खट्टे चरपरे और नमकीन पदार्थों पर मन चलना प्रभृति लक्षण अधिक लिखे हैं। ये लक्षण ज्वरके पूर्व्वरूपमें होते हैं, इसीसे हमने यहाँ लिख दिये हैं।

पूर्व्वरूप जाननेसे क्या लाभ ?

—✲✲✲—

किसी भी रोगके पूर्व्वरूप जाननेसे मनुष्य सावधान होकर उस रोगसे उसी तरह बच सकता है ; जिस तरह आनेवाली विपद्के पूर्व-चिह्न जान लेने और उसका यथायोग्य उपाय करनेसे मनुष्य बच जाता है। राहमें चलता हुआ मनुष्य सिरपर घनघोर घटा उमड़ी देख-कर किसी सुरक्षित स्थानमें बैठजाय, तो भीगनेसे बच जायगा और जो उन घटाओंको देखकर उनकी परवा न करेगा, वह भीग जायगा। इसी तरह अगर मनुष्य ज्वरके पूर्व्वरूप देखते ही उनका यथोचित उपाय करले, तो ज्वरसे बच सकता है। ज्वर अमाशयसे पैदा होता है। ज्वरके पूर्णरूपसे आनेके पहले उपरोक्त चिह्न नज़र आते हैं। उस समय, यदि मनुष्य हलका भोजन या लंघन करे, अथवा वमन विरेचनसे मलको निकाल डाले तो निश्चय ही ज्वरसे बच जायगा। ज्वरके पूर्व्व रूपोंमें क्या करना चाहिये, इस विषयपर "सुश्रुत उत्तरतंत्र"में लिखा है ; —

ज्वरके पूर्वरूपमें कर्तव्यकर्म्म।

ज्वरस्य पूर्वरूपेषु वर्तमानेषु बुद्धिमान्।
पाययेत घृतं स्वच्छं ततः स लभते सुखम्॥
विधिर्मारुतजेस्वेषु पैत्तिकेषु विरेचनम्।
मृदु प्रच्छर्दनं तद्वत्कफजेषु विधीयते॥
सर्व्वं त्रिदोषजेषूक्तं यथादोषम् विकल्पयेत्॥
अस्नेहनीयोऽशोध्यश्च संयोज्यो लंघनादिना।
रूप प्राग्रूपयोर्विद्यान्नानात्वं वह्निधूमवत्॥

ज्वरका पूर्वचिह्न नज़र आते ही * बुद्धिमान् साफ-पुराना घी रोगी को, वातज्वरके पूर्व्वरूपमें, पिलावे। पित्तज्वर के पूर्वरूपमें हलका जुलाव दे और कफज्वरके पूर्वरूपमें साधारण हलके उपायसे वमन करा दे। द्वन्द्वज और त्रिदोषज ज्वरोंके पूर्व्वरूपोंमें उपरोक्त तरकीबोंमेंसे, दोषोंके विचारसे, जो मुनासिब समझे सो करे। इन उपायोंसे सुख होता है। यदि किसी कारणवश घी पिलाना, हलकी दस्तावर दवा देना या एक दो वमन—कय—कराना अनुचित या हानिकर जँचे, तो उसे लंघन करावे और गरम जल पिलावे। एक दो लंघनों और गरम जलसे भी काम हो जायगा; क्योंकि ज्वर

---

* निराम वातज्वर में या शुद्ध वातज्वर में ही पुराना घी पिलाना चाहिये। निराम वायु, निराम पित्त और निराम कफके लक्षण आगे लिखेंगे। वायु लंघन नहीं सह सकती, पित्त और कफ लंघन सह सकते हैं। लंघन हमेशा विचार कर कराने चाहिए। लंघन कब कराने, किस को कराने और किस को न कराने—इस विषय में आगे लिखेंगे। वातज्वर में वायु आम-रहित हो तो लंघन नहीं कराते, किन्तु आम-सहित हो तो लंघन कराते हैं।

नवीन ज्वर में वमन विरेचन की मनाही है (विशेष अवस्थाओं में नहीं भी है); किन्तु पूर्वरूप और रूप में आग और धूएँ की तरह भेद है, इसलिए घबराना नहीं चाहिये। पूर्वरूप में दोष प्रायः आमाशय में ही रहता है, इसलिये शोधन (वमन या विरेचन) से साफ हो जाता है; किन्तु पूर्णरूप प्रकट हो जाने पर, दोष रस और स्वेदवाहिनी नसों द्वारा चमड़े की तरफ आ जाता है। उस अवस्था में शोधन करने यानी दस्त कराने या कय कराने से दोष धातुओं में घुस कर विषम ज्वर या धातुगतज्वर उत्पन्न करता है।

दोषोंके कारण से होता है और अग्नि मन्द हो जाती है। यदि भोजन न किया जायगा ; तो जठराग्नि, भोजनरूपी ईंधन न पानेसे, खराब दोषोंको पचा डालेगी ; फिर ज्वर क्यों होगा ? "चरक"में लिखा है—"दूषित आमाशयको हलके भोजन या लंघनसे शुद्ध करले, तो ज्वरका भय न रहे।" निस्सन्देह ये दोनों उपाय सर्वोत्तम हैं। इनमें कोई खटका नहीं।

ज्वरके विशेष पूर्वरूप।
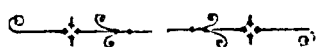
सामान्यतो विशेषात्तु जृम्भात्यर्थं समीरणात् ।
पित्तान्नयनयोर्दाहः कफान्नान्नाभिनन्दनम् ॥

वात ज्वर आनेके पहले जँभाई या अँगड़ाइयाँ आती हैं। पित्त-ज्वर आनेके पहले नेत्रोंमें दाह या जलनसी होती है। कफज्वर आनेके पहले भोजनसे अरुचि हो जाती है।

नोट—वातज्वर आनेके पहले शरीरमें पीड़ा और हाथ पैरोंमें भड़कन तथा पित्तज्वरमें सिरमें दर्द होते देखा जाता है।

द्वन्द्वज पूर्वरूप।

यदि वातपित्त ज्वर आनेवाला होता है, तो जँभाइयाँ आती हैं और नेत्रोंमें जलन होती है।

यदि वातकफज्वर आनेवाला होता है, तो जँभाइयाँ आती हैं और भोजनसे अरुचि हो जाती है।

यदि पित्तकफज्वर आनेवाला होता है, तो आँखोंमें जलन और अन्न पर अनिच्छा होती है।

सन्निपातके पूर्वरूप।

अगर त्रिदोष-ज्वर आनेवाला होता है, तो उसके आनेसे कुछ पहले जँभाई, आँखोंमें जलन और अन्नपर अरुचि—ये लक्षण होते हैं।

ज्वरके सामान्य लक्षण ।

जिस रोगमें पसीने नहीं आते हों, शरीरमें सन्ताप हो ; यानी बदन गरम हो और सारे शरीर में दर्द या जकड़न हो, उसे "ज्वर" कहते हैं। अगर ये लक्षण हों, तो समझ लो "ज्वर" है।
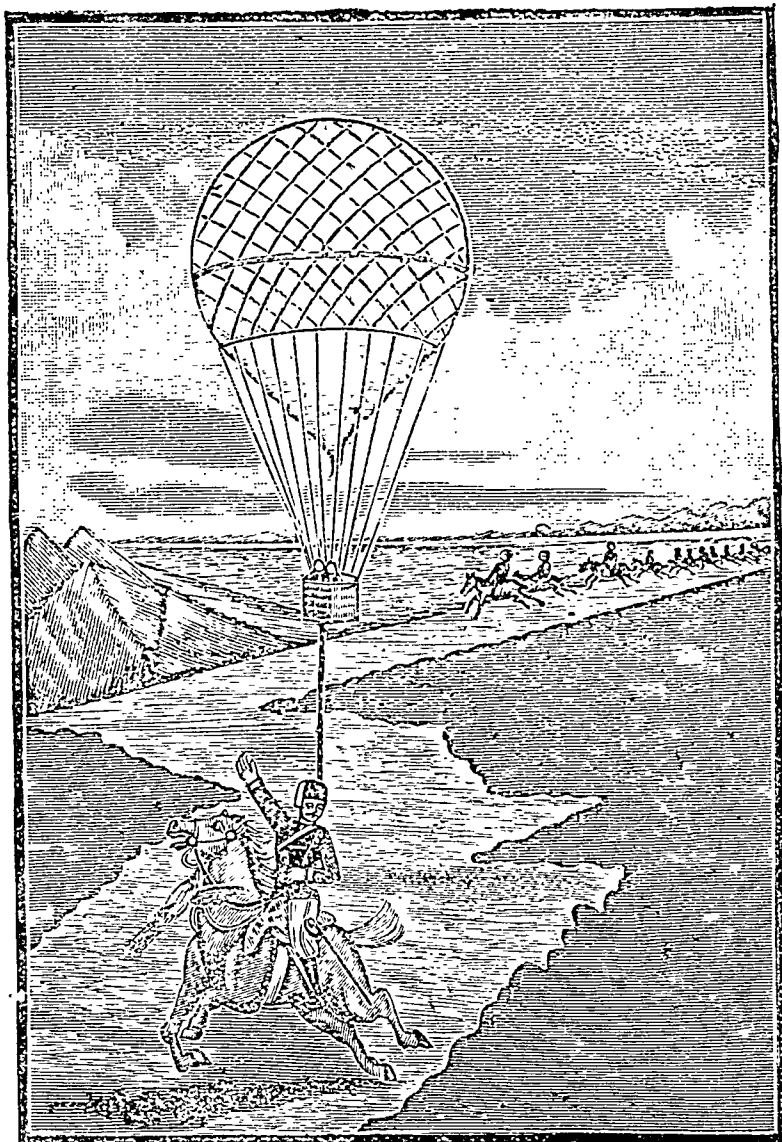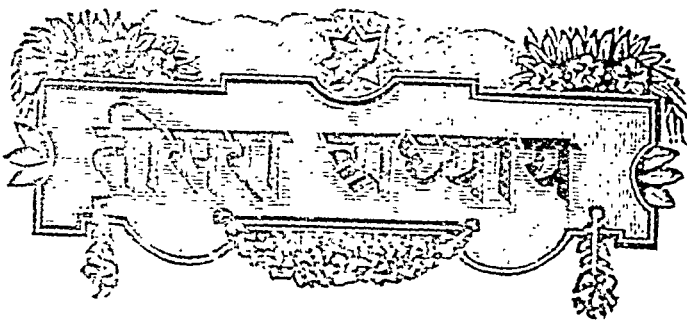
ज्वरकी सामान्य चिकित्सा ।

वात, पित्त और कफ,—इन तीनों दोषोंके ज़ियादा और कम होनेसे प्रधानता और अप्रधानता होती है। मान लो, किसीके ज्वरमें वात का ज़ोर सबसे अधिक हो, पित्तका ज़ोर बीचके दर्जेका हो तथा कफका ज़ोर नीचे दर्जेका हो, तो उसे "वात-प्रधान त्रिदोष ज्वर" कहेंगे। इस तरह भी समझिये, किसीको त्रिदोष ज्वर है। उसमें पित्तकोप के कम लक्षण हैं, वायुके कोपके उससे अधिक हैं और कफके कोपके सबसे अधिक हैं; तो कहेंगे - वृद्धपित्त है, वृद्धतर वायु है, और वृद्धतम कफ है। क्योंकि यहाँ कफ वृद्धतम यानी सबसे अधिक है, इसलिये उस ज्वरको 'कफप्रधान सन्निपात" कहेंगे। इसी तरह ठीक-ठीक इस बातका भी पता लगा सकते हैं कि, पित्तका कोप तीन आने है, वायुका कोप पाँच आने है, और कफका कोप आठ आने है। जब इस तरह अंशांशकी कल्पना हो जाय, तब नुसखेमें ओष-धियाँ वात, पित्त और कफके कोपके अन्दाज़ेसे मुक़र्रर की जा सकती हैं। जिन वैद्योंको वात, पित्त और कफके कोप, क्षय और वृद्धिके लक्षण अच्छी तरह याद होते हैं, वेही लक्षणोंको देखकर अंशांशकी कल्पना कर सकते हैं। प्रत्येक आयुर्वेद-चिकित्सकको ये बातें अच्छी

तरह याद रखनी चाहिये, और रोगोंमें अंशांशकी कल्पना का अभ्यास करना चाहिये। अभ्याससे कौनसा काम सहज नहीं हो जाता? लेकिन यह काम साधारण बुद्धिवालोंका नहीं है, इसीसे शास्त्रोंमें दोषोंके अंशांशको न जान सकनेवालोंके लिये "सामान्य चिकित्सा" करनेकी सलाह दी गई हैं। "भावप्रकाश"में लिखा है :—

अंशांश यत्र दोषाणां विवेक्तुं नैव शक्नुयात्।
साधारणीं क्रियां तत्र विदध्यातु चिकित्सकः॥

जिस ज्वरमें वैद्य दोषोंके अंशांश को न जान सके, उसमें उसे साधारण चिकित्सा करनी चाहिये।

अब यह विचार करना है कि साधारण चिकित्सा कैसी होती है और उसमें वैद्यको क्या-क्या करना होता है। ज्वरकी साधारण चिकित्सामें, मामूली तौरपर, ऐसे काम करने होते हैं. जिनसे किसी भी प्रकारके ज्वरमें हानि न हो, वरन लाभ ही हो ; औषधियाँ ऐसी देनी होती हैं, जो ज्वरकी क़िस्म या दोषोंका अंशांश न जान सकनेपर भी, रोगीके पक्षमें लाभदायक ही हों ; हानि किसी सूरतमें भी न करें। विशेष चिकित्सा परमोत्तम और शीघ्रफलप्रद होती है ; पर यदि कोई ऐसा स्थान हो, जहाँ प्रवीण और सर्व्व शास्त्रोंके जाननेवाला तथा अनुभवी वैद्य न हो ; तो साधारण वैद्य भी साधारण चिकित्सासे रोगीको देर-अबेरसे रोगमुक्त कर सके अथवा शास्त्रज्ञ वैद्यकी समझमें भी जलदी ही रोग न आवे, ज्वरके अंशांश या उसकी क़िस्मका पूरे तौरसे भेद न मालूम पड़े ; तो पहले मामूली उपाय तो कर दे ; पीछे विचार किया करे अथवा किसी और वैद्यसे सहायता ले। हमने अनेक बार अपनी आँखोंसे देखा है, बड़े-बड़े डाक्टरी और कविराजो-शिक्षाप्राप्त धुरन्धर विद्वान वैद्य कई-कई दिनों तक रोगका असली मर्म नहीं समझ सके हैं—उन्होंने अपने नामके घमण्डमें रोगीको अब-तब की हालतमें पहुँचा दिया है। चिकित्सा-कर्ममें अभिमान

करना बड़ी बुरी बात है। सभी शास्त्रोंके जान लेने और वर्षों अनुभव प्राप्तकर लेनेपर भी, मनुष्य चूक जाता है। आखिर मनुष्य —है तो मनुष्यही न ? भगवान् तो है ही नहीं, कि उससे भूल न हो। इस काममें दूसरे वैद्योंसे सहायता लेने और मिलकर काम करनेमें बड़ा सुभीता है। डाक्टर लोग प्रायः ऐसा ही करते हैं ; पर हमारे वैद्यराज तो दूसरेके नामसे उसी तरह चिढ़ने लगते हैं, जिस तरह स्त्री अपनी सौतके नामसे चिढ़ने लगती है।

ज्वर रोगी की सामान्य चिकित्सा करनेवाले वैद्यको भी निम्न-लिखित विषयोंका ज्ञान अच्छी तरह होना ज़रूरी है। कम-से कम इतनी बातोंके जाने विना कोई वैद्य किसी तरहकी चिकित्सासे भी रोगीको आराम नहीं कर सकता, बल्कि उलटा वेचारेको यमसदन-की राह दिखा सकता है :—

(१) ज्वर-रोगीको कैसे घरमें रखना चाहिये।

(२) ज्वरवालेके लिए हवाका कैसा प्रबन्ध करना चाहिये।

(३) ज्वरवालेको किन-किन आहार-विहारोंसे बचाना चाहिये।

(४) ज्वर-रोगीको लघु पथ्य देना या लङ्घन कराने चाहियें। यह काम किस तरह करना चाहिये। किन्हें लङ्घन कराने उचित हैं और किन्हें लङ्घन कराने अनुचित हैं, यह सब जानना चाहिए। अन्धाधुन्ध लंघन न कराने चाहियें।

(५) ज्वर-रोगीको गरम या शीतल जल देना चाहिये ?

(६) लंघन और गरम जल प्रभृतिसे भी दोष न पचें ; तो क्या दवा देनी चाहिये ? किस प्रकारके ज्वरमें वमन-विरेचन मना हैं, और किसमें देनेकी आज्ञा है ? पहले पाचन देना या शमन औषधि देनी, कब देनी, कब तक न देनी, किस समय औषधि सेवन करानी जिससे अधिक लाभ हो, इत्यादि बातोंका अच्छा और पूरा ज्ञान वैद्यको होना चाहिये।

(७) सब तरहके ज्वरोंपर चलनेवाले ज्वरके परीक्षित योग या नुसखे याद रखने चाहियें।

(८) रोगीको कब अन्न देना चाहिये? ज्वर-रोगियोंके लिये कौन-कौनसे अन्न पदार्थ अथवा फल और तरकारियाँ अथवा मांस हितकारी हैं और कौन कौनसे अपथ्य या अहितकारी हैं? रोगी को कैसे स्थानमें भोजन कराना चाहिये, उसके मुखका स्वाद सुधारनेको क्या उपाय करना चाहिये इत्यादि बातें तथा ज्वर-रोगीके देने योग्य मण्ड, भात, यवागू, पेया, रसौदन प्रभृति बनाने की विधि जाननी चाहिये।

नोट—इन आठों विषयोंको हम आगे अच्छी तरह समझा-समझा कर, साथ ही शास्त्रोंके प्रमाण दे देकर, विस्तारपूर्वक लिखेंगे। जिसे चिकित्साकर्म करना हो, उसे इनमेंसे प्रत्येक विषय खूब याद कर लेना चाहिये।

ज्वररोगी के रहने का स्थान।
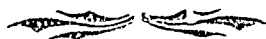
ज्वर आते ही ज्वर-रोगी को ऐसे मकान में रखना चाहिये, जो खूब साफ-सुथरा हो—मैला कुचैला न हो, जिस में बदबू न आती हो, जिसमें खाने-पीने के सामान आटा दाल मिर्च मसाले प्रभृति न रखे हों, आदमियों का जमघट न हो, बाहरी हवा बहुत तेज़ी से न आती हो। "भावप्रकाश"में लिखा है—

सामान्यतो ज्वरी पूर्वं निर्वाते निलये वसेत।
निर्वातमायुषो वृद्धिमारोग्यं कुरुते यतः॥

"जिस दिन ज्वर आवे उसी दिन से, ज्वर-रोगी को वायुरहित घरमें रक्खो, क्योंकि वायुरहित स्थान उम्र को बढ़ानेवाला और आरोग्यता करनेवाला है।" इस शास्त्राज्ञा का मर्म न समझ कर,

आजकल लोग रोगी को ऐसे मकान में रखते हैं, जिसमें हवा का अंश भी न आता हो। दरवाज़ों को वन्द कर देते हैं. जाली-झरोखों में कपड़े ठूँस देते हैं, इस से रोगी का दम घुटने लगता है ; रोगी अधमरा हो जाता है, रोग बढ़ जाता है और उसकी मृत्यु न हो तोभी मर जाता है। इस वात को न रोगी के घरवाले विचारते हैं और न चिकित्सक महाशय ही कि, यदि बिलकुल हवा न मिले तो कोई भी प्राणी विना रोग ही मर जाय। हवा से ही प्राणियों की ज़िन्दगी है। आरोग्य के लिये जिस तरह साफ हवा की ज़रूरत है, रोगी को भी उसी तरह वल्कि उससे ज़ियादा साफ हवाकी ज़रूरत है. क्योंकि तन्दुरुस्त मनुष्यों की अपेक्षा रोगी हवा को ज़ियादा और जल्दी ख़राव करता है। रोगी के साँस द्वारा गन्दी और रोग के परमाणुओं से भरी हुई ज़हरीली हवा निकलती है, उसके वाहर जाने और वाहर से ताज़ा हवा के आने की परमावश्यकता है। अगर हवा के आने जाने के सव द्वार वन्द कर दिये जायँगे, तो गन्दी हवा कैसे वाहर जायगी और साफ तन्दुरुस्ती को वख़शनेवाली हवा कैसे आवेगी ? उपरोक्त शास्त्र-आज्ञा बहुत ठीक और उचित है। उसका अर्थ जैसा लगाया जाता है, वैसा नहीं है। उस का यह मतलव है. कि वाहर की तेज़ हवा या तेज़ हवा के झोंके सीधे रोगीको न लगने पावें, क्योंकि तेज़ हवा के झोंके निश्चय ही रोगीके ज्वर को वढ़ानेवाले होते हैं ; इस लिये रोगीको साफ हवादार मकानमें रखना चाहिये, घरके दरवाज़े वन्द न करने चाहियें, हवा के आने-जाने की राह खुली रखनी चाहिये ; पर इस वातका ध्यान रखना चाहिये कि, रोगीके शरीर को वाहरी हवाके झोंके न लगें, क्योंकि वाहरी हवा पसीनोंका आना औरभी वन्द कर देती है तथा किसी-किसी दिशाका हवा वात वढ़ानेवाली, पित्त को कुपित करनेवाली अथवा कफको कुपित करनेवाली होती है। अगर रोगीको वाहरकी हवा न लगने दी जाय

तो कोई खटका ही न रहे, इसी से वायुरहित स्थान की वात लिखी गयी है; पर हवा का आवागमन ही वन्द कर देने की वात नहीं लिखी गयी है। अगर हवा के लगने का भय हो, तो रोगी के पलँग के पास, कुछ स्थान छोड़ कर, साफ-सुथरा पर्दा लगा देना चाहिये और दरवाज़े तथा छत के पास की खिड़कियाँ खुली रखनी चाहियें। हाँ, नवीन ज्वर वाले को भारी और गरम वस्त्र उढ़ा देने में हर्ज नहीं, पर वह भी ऐसा उढ़ाना चाहिये, जिससे रोगी घवरावे नहीं और उसका साँस न घुटे। ये सव व्यवस्थाएँ ज्वर के अनुसार करनी चाहिएँ। कोइ ज्वर ऐसे होते हैं, जिनमें मकान को गरम रखना होता है, गरम वस्त्र उढ़ाने होते हैं और कोई ऐसे होते हैं, जिनमें मकान शीतल रखना होता है और शीतलही उपचार किये जाते हैं। पित्त ज्वर और दाह ज्वर में रोगी को ऐसे मकान में रखते हैं, जो शीतल हो, जिसमें ख़सकी टट्टियाँ लगी हों, चन्दन और ख़स का छिड़काव हो रहा हो। "भावप्रकाश" में लिखा है :—

हर्म्यें शुभ्राभ्रसंकाशे शशांककर शीतले।
मलयोदक संसिक्ते सुप्यात्पित्तज्वरी नरः॥

पित्त ज्वर-रोगी सफेद वादल के समान निर्मल, चन्द्रमा की किरणोंसे शीतल हुए तथा मलयागिर चन्दन के जल से छिड़काव किये हुए मकान में सोवे।" कहिये, अब तो समझ गये न? सभी कामों में बुद्धि से काम चलता है। जिसमें भी इलाज-मुआलिजे के काम में तो क़दम-क़दम पर बुद्धि की ज़रूरत है।

ज्वरवालेके लिये हवा।

क्योंकि ज्वर-रोगी के लिये वाहर की हवा की मनाही है, और वहुत से ज्वरों में ज्वररोगी को इतनी गरमी लगती है कि, रोगी

व्याकुल हो जाता है। इसलिये कृत्रिम उपायों से रोगी की हवा करनी चाहिये। पंखे की हवा से हानि नहीं होती; बल्कि लाभ ही होता है। क्योंकि शास्त्र में कहा है—"व्यजनस्यानिलस्तृष्णा-स्वेदमूर्च्छाश्रमापहः" अर्थात् पंखे की हवा पसीना, प्यास, बेहोशी और थकान को नाश करती है। परन्तु जिस क़िस्म के पंखे की हवा रोगी के लिये अच्छी हो, उसी क़िस्म के पंखे की हवा करनी चाहिये। "भावप्रकाश" में लिखा है :—

"ताड़के पंखे की हवा त्रिदोष नाशक होती है। बांसके पंखे की हवा गरम और रक्तपित्त को कुपित करनेवाली होती है, कपड़े की हवा त्रिदोषनाशक, चिकनी, हृदयको हितकारी और उत्तम है। चमर, मोरछल और बेतके पंखे की हवा भी कपड़े के पखेकी तरह परमोत्तम होती है। "हारीत-संहिता" में लिखा है—

"ताड़ के पंखे की हवा तथा केलेके पत्ते की हवा शीतल और मधुर है। इन को हवा थकान को हरती है, नींद लाती है और आनन्द करती है तथा शोक, रोग, विकार, दाह, पित्त, परिश्रम, ग्लानि और भ्रम को शान्त करती है। इन दोनों तरह के पंखों की हवा सब तरह से उत्तम है; पर इस में भी एक दोष है, वह यह कि गीलेपन के कारण क़फ को कुपित करती है।" ताड़ का पंखा सूखा हो सकता है, पर केले के पत्ते का पंखा सूखा किसी काम का नहीं। केले के पत्तेका पंखा पित्तज्वर और दाहज्वरमें हर तरह उत्तम है।

ख़सके पंखे और मोरपंख से बने पंखे की हवा अच्छी होती है। इनकी हवा सुगन्धित, किसी क़दर शीतल, ग्लानि, भ्रम, मूर्च्छा, बेहोशी, शोष, विसर्प और विष के नाश करनेवाली होती है।

काँसी के बर्त्तन की हवा रूखी और गरम होती है; किन्तु वात को शान्त करती, श्रम, दाह—जलन और थकानको नाश करती तथा सुख देती और नींद लाती है।

बाँस के पंखे की हवा तन्द्रा और निद्रा करती है, रूखी और कषैली है, किन्तु वातको कुपित नहीं करती।

कपड़ेकी हवा घाव पर सूजनवाले के हक़में अच्छी नहीं है। यानी इसके सिवाय और सबको अच्छी है। लाल कपड़ेकी हवा सदा ख़राब है। लाल कपड़ेकी हवा सदा त्यागनी चाहिये. क्योंकि वह कफ और रक्त—खून को कुपित करती है तथा अनेक रोग पैदा करती है और परिश्रम, ग्लानि, प्यास, तन्द्रा तथा निद्रा बहुत करती है।

नोट—रोगानुसार या दोषानुसार जैसे पंखे की हवा उपकारी हो, वैसा ही पंखा काम में लाना चाहिये। लाल वस्त्रका हवा सदा त्यागनी चाहिये। घाव पर सूजनवाले को किसी तरहके भी कपड़ेके पंखे की हवा अच्छी नहीं है। कफप्रधान रोग में केले और गीले ताड़के पंखे की हवा अच्छी नहीं है। बाँस के पंखेकी हवा रक्त-पित्त, पित्तज्वर और दाहज्वर में अच्छी नहीं है। साधारणतया, ज्वरवालों के लिये सफेद वस्त्र, मोरपंख, चमर और सूखे ताड़के पंखे की हवा हितकारी है। बिजली के पंखेकी हवा ज्वरवालेके लिये हितकारी नहीं है।

ज्वरमें पथ्यापथ्य

(ज्वर रोगीके त्यागने और सेवन करने योग्य आहार विहार)

सभी रोगोंमें पथ्य और अपथ्य पर ध्यान देनेकी सबसे बड़ी ज़रूरत है; क्योंकि पथ्य यानी हितकारी आहार विहार सेवन करने और अहितकारी आहार विहार त्यागने से, बिना किसी दवाके भी, रोग आराम हो जाता है; पर अपथ्य सेवन करने से, हज़ारों दवाइयाँ खाने से भी, रोग नाश नहीं होता। कहा है—

विनाऽपि भेषजैर्व्याधिः पथ्यादेव निवर्त्तते ।
न तु पथ्यविहीनस्य भेषजानां शतैरपि ॥
पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषध निषेवणैः ।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः ॥

सारे रोग, विना औषधि सेवन किये, केवल पथ्यसे ही नाश हो जाते हैं ; परन्तु कुपथ्य सेवन करनेसे, सैकड़ों दवाइयाँ होने पर भी, रोग आराम नहीं होता ।

यदि पथ्य सेवन करे तो औषधि की क्या ज़रूरत ? अर्थात् हितकारी आहार विहार सेवन करनेवाले को दवा खानेकी ज़रूरत नहीं, वह तो पथ्य सेवन करनेके कारण, बिना दवा ही आराम हो जायगा ; इसी तरह अपथ्य सेवन करनेवाले यानी अहितकारी आहार विहार सेवन करनेवालेको भी दवा की ज़रूरत नहीं ; क्योंकि जो अपथ्य सेवन करता है, वह हज़ार उत्तम से उत्तम दवाइयाँ खानेसे भी आराम न होगा ।

कैसे अनमोल उपदेश हैं ! इनके भीतर कैसा अमृत भरा हुआ है ! ये रोगके नाश करने और आरोग्य रहनेके सच्चे मंत्र हैं । पर दुःख है कि, आजकल भारतवासी आयुर्वेदका पढ़ना छोड़ देनेके कारण, इन अनमोल उपदेशोंको जानते ही नहीं । जानते हैं, केवल चिकित्सक ; पर वे भी दुर्भाग्यसे जितना ध्यान अच्छी-अच्छी औषधियों पर देते हैं, इन मुख्य और शीघ्र रोग नाश करनेवाली तत्व-पूर्ण बातों पर नहीं देते । आजकलके वैद्य अच्छी तरह रोगीसे बात भी नहीं करते ; ज़रा नाड़ी छुई, दो चार बातें पूछीं और नुसखा लिखा। फीस हाथमें आते ही नौ दो ग्यारह हुए । रोगी या रोगी के परिचारकने पूछा कि, वैद्य जी ! रोगीको क्या पथ्य और अपथ्य है, तो जूते पहनते हुए फरमा दिया—"अभी तो लंघन होने दो ।" यदि रोगीको अन्न दिलाना हुआ तो कह देते हैं—"सूखी रोटी, मूँगकी

दालका पानी अथवा साबूदाना देदो ।" बस हो गया, सब काम । वैद्यराजका फ़र्ज़ अदा हो गया ! अब रोगीका परिचारक या घरका आदमी आयुर्वेदका ज्ञाता हुआ, तब तो वह रोगीको हितकारी आहार विहार सेवन करावेगा और अहितकारी आहार विहारोंसे बचावेगा ; नहीं तो वैद्यजीका यश धूलमें मिला और रोगीके प्राण संकटमें पड़े । रोगी या रोगीके परिचारकको पथ्यापथ्य-सम्बन्धी बातें बतला देना वैद्यराजका पहला कर्त्तव्यकर्म है । जो वैद्य इस ओर ध्यान नहीं देते, अँधाधुन्ध दवा दिये जाते हैं, उन्हें कर्म-भाग्यसे ही कभी सिद्धि प्राप्त होजाती है । आयुर्वेदमें लिखा है : -

> भिषक् सर्वेषु रोगेषु निर्दिष्टानि यथायथम् ।
> निदान पथ्यापथ्यानि त्रीणि यत्नात् विचिन्तयेत् ॥
> पूर्वं सर्वगदे कुर्यात् निदानपरिवर्जनम् ।
> तेनैव रोगाः शीर्यन्ते शुष्क नीराङ्कुराः ॥
> रुग्णः सर्वास्व पथ्यानि यथास्वं च विवर्जयेत् ।
> ता ह्य पथ्यैर्विवर्द्धन्ते दोहदैरिव वीरुधः ॥

वैद्यको चाहिये कि, समस्त रोगोंमें यथार्थ रीतिसे कहे हुए निदान, पथ्य और अपथ्य,—इन तीनों पर विचार करे ।

पहले सब रोगोंमें रोगका निदान यानी कारण बन्द करना चाहिये, क्योंकि रोगके कारणको त्यागनेसे रोग इस तरह नाश हो जाते हैं, जिस तरह जलके सूख जानेपर वृक्षके अङ्कुर स्वयं नष्ट हो जाते हैं ।

रोगी अपथ्य पदार्थोंको बिल्कुल त्याग दे, क्योंकि अपथ्य सेवनसे रोग इस तरह बढ़ते हैं, जिस तरह जल सींचनेसे बेल बढ़ती है ।

सारांश यह है कि, रोगीको अपथ्य सेवनसे बचाना चाहिये और पथ्य सेवनकी सलाह देनी चाहिये । साथ ही रोगके कारणको जानकर उसे फौरन बन्द करना चाहिये ; नहीं तो अमृत पिलानेसे भी उपकार न होगा । जिसको मिट्टी खानेसे पीलिया हुआ है, उसका मिट्टी खाना बन्द न किया जायगा, तो कैसे आराम होगा ? जिसे एक साथ दूध-मछली या दूध-मूली खानेसे रोग हुआ है, उसका

दूध-मछली या दूध मूली एक साथ खाना बन्द न किया जायगा, तो रोग कैसे आराम होगा ? जिसे अति स्त्रीप्रसंगसे क्षयरोग हुआ है, उसको आगे स्त्रीप्रसंग करनेसे न मना किया जायगा, तो कैसे क्षयरोग जायगा ? इसी तरह और उदाहरण भी समझ लीजिये । यदि कोई नये ज्वरवाला ज्वरमें स्नान अथवा स्त्रीप्रसंग करेगा तो वह कौन सी दवासे आराम होगा ? यदि नवीन ज्वरवालेको अँधाधुन्ध वमन या विरेचन करा दिया जायगा, तो उसका ज्वर बिगड़कर विषमज्वर न हो जायगा ? यदि ज्वरवालेको ज्वरकी हालतमें क्रोध करनेकी मनाही न की जायगी और वह क्रोध करेगा, तो उसका ज्वर बढ़ेगा या घटेगा ?

ज्वर-रोगीको जिसतरह अपथ्य-सेवन हानिकारक है, उसी तरह मूढ़ वैद्यकी दवा लेना भी अनिष्टकारक है। लोलिम्बराज महोदय कहते हैं :-

औषधं मूढ़ वैद्यानां त्यजन्तु ज्वरपीड़िताः ।
परसंसर्गसंसक्तं कलत्रमिव साधवः ॥

ज्वर-पीड़ित मनुष्य मूढ़ वैद्यकी दवाको उसी तरह त्याग दे, जिस तरह परपुरुषरता नारीको सज्जन लोग त्याग देते हैं ।

बहुत समझा चुके , समझदारोंके लिये इतना कम नहीं है । अब हम यह लिखते हैं कि, ज्वरवालों और ख़ासकर नवीन ज्वरवालोंको किन-किन बातोंसे परहेज़ करना चाहिये :-

नवीन ज्वरमें अपथ्य

परिषेकान्प्रदेहांश्च स्नेहान्संशोधनानि च ।
दिवास्वप्नं व्यवायंच व्यायामं शिशिरं जलम् ।
क्रोध प्रवात भोज्यांश्च वर्जयेत्तरुणाज्वरी ॥

तरुण ज्वर यानी नये बुख़ारमें रोगीको स्नान प्रभृति करने, चन्दनादिका लेप करने, तेलकी मालिश कराने, स्नेहपानादि—घी तेल खाने पीने ; वमन, विरेचन—जुलाब वगैरः लेने, दिनमें सोने

मैथुन करने, कसरत करने, शीतल जल पीने, क्रोध करने, (बाहरी) हवा और भोजन—इन सबसे बचना अर्थात् इन्हें त्याग देना चाहिये। इन अपथ्योंके सेवन करनेसे शोष, वमन, मद, मूर्च्छा, भ्रम, तृषा—प्यास और अरुचि आदि उपद्रव उत्पन्न होते हैं।

"हारीत संहिता"में लिखा है,—"कसरत करनेसे ज्वर बढ़ता है; मैथुन करनेसे शरीर जकड़ासा हो जाता है तथा मूर्च्छा और मृत्यु होती है; स्नेह पान करनेसे मूर्च्छा—बेहोशी, वमन, मद और अरुचि होती है। भारी अन्न खाने और दिनमें सोनेसे मलविष्टम्भ हो जाता है, दोषोंका कोप होता है, जठराग्नि मन्दी हो जाती है और शरीरके स्रोत या छेद बन्द हो जाते हैं।

"चरक"में लिखा है :—

नवज्वरे दिवास्वप्न स्नानाभ्यंगान्न मैथुनम्।
क्रोध प्रवात व्यायाम कषायांश्च विवर्जयेत्॥

नये ज्वरमें दिनमें सोना, स्नान करना, शरीरमें तेलकी मालिश कराना *, अन्न भोजन, अत्यन्त हवादार स्थान, परिश्रम और कषाय यानी कषैले रसका क्वाथ पीना—इन सबसे बचना चाहिये।

---

* वातज्वरमें तेलकी मालिशकी मनाही नहीं है। "चरक"में लिखा है :—

ज्वरे मारुतजे त्वादावनपेक्ष्यापिहिक्रमम्।
कुर्यान्निरनुबन्धानामभ्यंगादीनुपक्रमान्॥
पाययित्वाकषायञ्च भोज्येद्रसभोजनम्।
जीर्णज्वरहरंकुर्यात् सर्वशश्चाप्युपक्रमम्॥

यदि वातज्वरमें कफ अथवा पित्तका सम्बन्ध न हो; यानी शुद्ध वातज्वर हो, तो पहले ही लंघन आदि कर्मकी उपेक्षा करके, अभ्यङ्ग आदि चिकित्साका अवलम्बन करो अर्थात् शुद्ध वातज्वर हो, उसमें पित्त और कफका लवालेश न हो, तो लंघन वगैरः न कराकर, तेलकी मालिश वगैरः कराओ; रोगीको मीठे और चिकने काढ़े पिलाकर मांसरस पिलाओ। वातज्वरमें सारे काम जीर्ण ज्वरकी तरह करो। यानी वात ज्वरका इलाज जीर्ण ज्वरकी तरह करो।

औरभी कहा है ;—

> स्नानं विरेकं सुरतं कषायं व्यायाममभ्यंजनमह्नि निद्राम्।
> दुग्धं घृतं वैदलमामिषं च तक्रं सुरां स्वादु गुरु द्रवं च॥
> अन्नं प्रवातं भ्रमणं च क्रोधं त्यजेत् प्रयत्नात्तरुणज्वरार्तः।
> आसप्तरात्रं तरुण ज्वरं तत् सूर्याहमध्यं परतः पुराणम्॥

स्नान, जुलाब, मैथुन, काढ़ा, कसरत, उवटन और तेलकी मालिश दिनमें सोना, दूध, घी, दाल, मांस, माठा, शराब, मीठे पदार्थ, भारी पदार्थ, पतले पदार्थ, अन्न, हवा, घूमना और क्रोध करना— इनको तरुण ज्वर अर्थात् नवीन ज्वरवाला रोगी त्याग दे : यानी इन सबसे परहेज़ करे। ज्वर आनेके दिनसे सात दिन तक ज्वर तरुण या नया कहलाता है ; वारह दिन तक मध्यम और इसके वाद पुराना कहलाता है।

औरभी लिखा है : –

> सज्वरो ज्वरमुक्तोवा विदाहीनि गुरूणि च।
> असात्म्यान्नानि पानानि विरुद्धाध्यशनानि च॥
> व्यायाममति चेष्टां वाऽभ्यंगं स्नानं च वर्जयेत्।
> ते ज्वरः शमं याति शान्तश्च न पुनर्भवेत्॥

ज्वर-रोगी या ज्वरसे छूटा हुआ मनुष्य दाहकारक, भारी, अपनी प्रकृतिके प्रतिकूल—मिज़ाजके ख़िलाफ़ अन्नपान, विरुद्ध भोजन, कसरत, चलना-फिरना-डोलना तथा तेल वगैर:की मालिश और स्नान—इन सबको त्याग दे। इनके त्यागनेसे ज्वर शान्त हो जाता है और शान्त होकर फिर नहीं आता।

"हारीत-संहिता"में लिखा है—"दाहकारक और भारी अन्न, कफ-कारी पदार्थ, तेलसे पके हुए खट्टे साग, दही, दहीका तोड़, शिखरन, क्षुद्र अन्न बहुत जल पीना, पान खाना, घी, शराब, क्रोध, शोक,

रातमें जागना ,दिनमें सोना, गाड़ी घोड़े हाथी और गेंडेकी सवारी—इनको त्यागना ज्वरवालेके लिये भला कहा है।"

ज्वरमें मिहनत, क़सरत या मिहनतसे सम्बन्ध रखनेवाले सभी कामोंकी सख़्त मनाही है।

"सुश्रुत उत्तर तन्त्र"में लिखा है :—

ज्वरे प्रमोहो भवति स्वल्पैरपि विचेष्टितैः।
निषण्णां भोजयेत्तस्मान्मूत्रोचारौ च कारयेत् ॥

ज्वरमें ज़रासी भी चेष्टा - मिहनत प्रभृति करनेसे मोह या बेहोशी हो जाती है; इसलिये रोगीको बिना मिहनत, बैठे-बैठेही भोजन कराना चाहिये और पाख़ाने पेशावके लिये भी सहारा देकर उठाना चाहिये।

ज्वरमें जिस तरह मिहनत करनेकी ममानियत है; उसी तरह दिनमें सोनेकी भी सख़्त ममानियत है।

"भावप्रकाश"में लिखा है :—

दिवास्वापं न कुर्वीत यतोऽसौस्यात् कफावहः।
ग्रीष्मवर्ज्येषु कालेषु दिवास्वापो निषिध्यते ॥

रोगीको दिनमें न सोना चाहिये, क्योंकि दिनमें सोनेसे कफ बढ़ता है। ग्रीष्म ऋतु—गरमीके मौसमके सिवा और सभी मौसमों में दिनमें सोना मना है।

ज्वर-रोगीको जहाँतक हो सके, यदि वह लंघन करने योग्य हो, लंघन कराने चाहियें ; क्योंकि ज्वर आम दोषसे होता है और भोजन न करने यानी उपवास करनेसे आम नष्ट होता है; किन्तु कितने ही नवीन ज्वरोंमें भी लंघन कराना—रोगीका बल घटाना और उसे मारना है ; क्योंकि बलके अधीन आरोग्यता है और आरोग्यताके लियेही चिकित्सा की जाती है। यदि रोगी बालक हो, बहुत कमज़ोर हो, स्त्री हो और गर्भवती हो अथवा कामज्वर, शोक-

ज्वर और श्रमज्वर या निराम वातज्वर हो, तो रोगीको हलका भोजन देना चाहिये ; पर भूलकर भी भारी भोजन न देना चाहिये। "वंगसेन" लिखते हैं :-

गुर्वभिष्यन्द्यकाले च ज्वरी नाद्यात्कथञ्चन।
न तु तस्याहितं भुक्तमायुषे वा सुखाय च॥

ज्वर वालेको कदापि भारी और अभिष्यन्दी पदार्थोंका भोजन तथा विना समय भोजन न देन चाहिये, क्योंकि भारी और असमयका भोजन रोगीकी आयु और सुखके लिये हितकारी नहीं होता।

आजकल नये पुराने सब तरहके ज्वरोंमें दूध देनेकी चाल हो गयी है। डाकृरोंकी नक़ल वैद्य लोग भी करने लग गये हैं। वैद्य इस बातको नहीं समझते कि, डाकृरी दवाइयोंकी प्रकृति ही ऐसी है कि, उनके साथ दूधकी आवश्यकता है। हमारी आयुर्वेदीय औषधियाँ नये ज्वरमें दूधको नहीं मानतीं। दूध पौष्टिक पदार्थ है, इसीसे शास्त्रकारोंने नवीन ज्वरमें दूधकी सख़्त मनाही की है। देखिये "सुश्रुत"में लिखा है :—

कृशोऽल्प दोषो दीनश्च नरो जीर्णज्वरार्दितः।
विवद्धः सृष्टदोषश्च रूक्षः पित्तानिलज्वरी॥
पिपासार्तः सदा हो वा पयसा स सुखी भवेत्।
तदेव तु पयः पीतं तरुणे हन्ति मानवम्॥

जो रोगी दुर्बल हो, जिसके अल्प दोष हों, जीर्णज्वरसे पीड़ित हो, जिसके विबन्ध हो और विबन्ध होनेके कारण दोष अनुलोमन न होते हों, जिसके दोष कुछ-कुछ निकलते हों, रोगी रूखा हो, पित्तवात ज्वरवाला हो ; प्यास और दाहसे युक्त हो—ऐसा रोगी दूध पीनेसे सुखी होता है, परन्तु तरुण ज्वरमें पिया हुआ दूध रोगीको मार देता है। सारांश यह है कि, कफ क्षीण होने पर, जीर्णज्वरमें दूध देना चाहिये। नये ज्वरमें दूध विषका काम करता है।

नोट—(१) नवीन ज्वरमें वमन या विरेचन मना है; पर तत्काल अधिक खा जानेसे ज्वर हुआ हो तो वमन करा देनेमें हर्ज नहीं है। यदि स्रोतोंका मल पक कर कोठेमें ठहर गया हो, तो वमन या विरेचन से निकाल देना चाहिये; क्योंकि पका हुआ दोष, न निकालनेसे, विषम ज्वर आदि भयंकर रोग करता है। अगर बलवानके कफ ज्वर हो, तो हलकी वमन करा देनी चाहिये; अगर पित्तप्रधान ज्वर हो और पक्काशय शिथिल हो, तो हलका जुलाब देना चाहिये। अगर वेदना-सहित उदावर्तयुक्त वातज्वर हो, तो निरूहण वस्ती करनी चाहिये। अगर सिरमें कफ भरा हो, तो सिरका भारीपन और दर्द दूर करनेवाली नस्य देकर, सिरका मलग़म निकाल सकते हो। अगर ये हालतें न हों, तो आमज्वर या कच्चे ज्वरमें शोधन औषधि देने या शोधन शमन औषधि देनेसे विषम ज्वर हो जाता है। हाँ, जिसने लंघन किये हों, उसे तथा गर्भवती, बालक, दुर्बल तथा डरे हुएको वमन न करानी चाहिये। इस विषयमें हम आगे विस्तारसे लिखेंगे। जहाँ तक हो, वमन विरेचन न कराना चाहिये। अगर रोगी अत्यन्त दुखी हो, विना हलके जुलाबके रोग जाता न दीखे तभी, मजबूरीसे, जुलाब— परन्तु बहुत हलका जुलाब देना चाहिये। क्योंकि, बिना विशेष अवस्थाके, नवीन ज्वरमें जुलाब देनेसे वमन, मूर्च्छा, मद, श्वास, मोह, भ्रम, तृषा और विषम ज्वर होनेका भय रहता है। जहाँ तक हो, गुदामें वत्ती वगैरः डालकर दस्त करा देना चाहिये। इस विषयमें भी आगे विस्तारसे लिखेंगे।

२ नवीन ज्वरमें कषाय या काढ़ेकी मनाही है, पर वह काढ़ा यदि जल और पेया प्रभृतिके संस्कारके लिये काममें लाया जाय, तो मनाही नहीं है। नवीन ज्वरमें "आरग्वधादि पाचन"की मनाही नहीं है, क्योंकि वह त्रिदोषनाशक, आमपाचक, दीपन और शूलनाशक है। "षड़ंग पानीय" क्वाथ ही है, पर उसकी भी मनाही नहीं है। वह दिया जाता है, क्योंकि उसमें काढ़ेके लक्षण नहीं मिलते। षड़ंग पानीय प्रथम तो पकाया ही नहीं जाता और यदि पकाया भी

जाता है, तो आधा पानी रक्खा जाता है ; किन्तु कषाय या क्वाथमें जलका चौथा या आठवाँ भाग शेष रहता है और वह कषैले रस और कषैले रंगका हो जाता है। कषाय पीनेसे बढ़े हुए दोष अपना अपना मार्ग छोड़कर आममें मिल जाते हैं। उस समय उनको काबूमें करना महा कठिन हो जाता है। इसीसे नवीन ज्वरमें, विना दोष पके, कषाय न देना चाहिये।

३ जिस तरह नवीन ज्वरमें दूध विषके समान है ; उसी तरह नवीन ज्वरमें "घी" भी नुकसानमन्द है। बारह दिन हुए विना ज्वररोगीको "घी" न देना चाहिये। "सुश्रुत"में लिखा है ;—

घृतं द्वादशरात्रात्तु देयं सर्वज्वरेषु च।
तेनान्तरेणाशयं स्वं गता दोषा भवन्ति हि॥

सब तरहके ज्वरोंमें १२ दिन बाद "घी" देना चाहिये, क्योंकि इतने दिनोंमें सब दोष पककर अपने-अपने स्थानोंमें आ जाते हैं।

"वंगसेन"में लिखा है :–

पक्वेषु दोषेष्वमृतं तद्विषोपमन्यथा।
दशाहात्परतो दाने ज्वरोपद्रववृद्धिकृत्॥

ज्वरकी पकी अवस्थामें घी अमृतके समान गुण करता है : किन्तु ज्वरकी अपक अवस्थामें यानी आमज्वर या कच्चे ज्वरमें घी विषके समान अवगुण करता है। दश दिनके भीतर घी ज्वरके उपद्रवोंको बढ़ाता है।

"हारीतसंहिता"में लिखा है :–

ज्वरे विबन्धे विषूचिकायामरोचके वा शमिते तथाग्नौ।
पानात्यये वापि मदात्यये वा शस्तं न सर्पिर्बहुमन्यते सुधीः॥

ज्वर, विबन्ध, हैज़ा, अरोचक, मन्दाग्नि, पानात्यय, मदात्यय— इन रोगोंमें वैद्य "घी" देना अच्छा नहीं समझते।

४ ज्वर-रोगीको दिनमें सोनेकी मनाही इसलिये है कि, दिनमें सोनेसे कफ बढ़ता है और ज्वरमें कफका बढ़ना अच्छा नहीं। हाँ, गरमीके मौसममें दिनमें सोना मना नहीं है। जिनको सदा दिनमें सोनेकी आदत है, उनको दिनमें सोनेकी कभी मनाही नहीं है; क्योंकि दिनमें सोनेकी आदतवाले अगर दिनमें नहीं सोते, तो उनके वायु आदि दोष कुपित हो जाते हैं, इसलिये आदतवाले बेखटके सोवें।

इनके सिवा जो कसरत, परिश्रम, स्त्रीप्रसंग, अधिक राह चलने और हाथी घोड़ेकी सवारी करनेसे थक गये हों, वे भी दिनमें सो सकते हैं। थका हुआ, अतिसार-रोगी, शूल रोगी, श्वास रोगी, वमन-रोगी, तृषा रोगी, हिचकी-रोगी, वात-रोगी, क्षीण, कफक्षीण रोगी, बालक, बूढ़ा, अजीर्ण-रोगी, रातमें जागनेवाला, शराब वगैरःका नशा करनेवाला और जिसने लङ्घन या उपवास किये हों—ये सब मनुष्य इच्छानुसार सो सकते हैं। जिसे मार्ग चलनेसे बुख़ार आया हो, उसे भी दिनमें सोनेकी मनाही नहीं है। "भावप्रकाश"में लिखा है:—

अध्वश्रान्तेषु वाऽभ्यंगं दिवा निद्रांचकारयेत्।

जिसे अत्यन्त मार्ग चलनेसे ज्वर हुआ हो, उसके बदनमें वैद्य तेलकी मालिश करावे और दिनमें सुलावे।

५ नवीन ज्वरमें तेलकी मालिश करानेकी मनाही है, पर यह मनाही क्यों है, इस बातको भी जानना ज़रूरी है। असल बात यह है, तेलकी मालिशसे पसीने रुकते हैं; दूसरे तेल अपने चिकनेपनके कारण कफकारक और आमवर्द्धक है; इसीसे नये बुख़ारमें तेल मालिश कराना मना है; किन्तु किसी औषधके साथ पकानेसे तेलके गुण बदल जाते हैं। रूखी औषधिके साथ तैयार किया हुआ तेल रूखा होता है; मेदनाशक द्रव्योंके योगसे बनाया हुआ तेल मेदनाशक होता है; पसीनेनाशक द्रव्योंके साथ बनाया हुआ तेल

पसीने नाशक होता है और पुराने ज्वरनाशक द्रव्योंके साथ पका हुआ तेल पुराने बुख़ारको नाश करता है। पुराने बुख़ारोंमें तेलकी मालिशसे ज्वर छूट जाता है। नये ज्वरमें भी, वातज्वरमें, तेलकी मालिश करानेकी आज्ञा "चरक"में है। राह चलनेकी थकानसे पैदा हुए ज्वरमें तो तेलकी मालिश कराना स्पष्ट ही लिखा है। जहाँ कहीं सारे शरीरमें तेल मलवाना मना किया है, वहाँ भी किसी ख़ास मुक़ाम पर तेल लगानेसे हर्ज नहीं।

ज्वरमें पथ्य।

ज्वरवालेको यवागू, भात तथा खीलोंके लिये लाल शालि चाँवल और पुराने साँठी चाँवल अत्यन्त हितकर और ज्वरनाशक हैं।

जिन ज्वरवालोंको यूष मुआफ़िक़ हो, उनके लिये मूँग, मसूर, चने और कुलथी तथा मोंठका यूष देना हितकर है।

ज्वरवाले साग खाना चाहें तो पटोल-पत्र, बैंगन, परवल, करेला, ककोड़ा, पित्तपापड़ा, कच्ची मूली और गिलोयके पत्ते—इनका साग वैद्य उन्हें दे। ये सब ज्वरनाशक हैं।

जिन ज्वरवालोंको मांस माफ़िक़ है, उनको लवा, तीतर, काला हिरन, लाल हिरन, चितकबरा हिरन, ख़रगोश, किसी क़दर लाल हिरन, काली पूँछ का हिरन अथवा सारी जातिके हिरनोंका माँस देना हितकर है।

जिस ज्वर-रोगीको वायुका दोष हो उसको, मात्रा और कालका विचार करके, सारस, क्रौञ्च, मोर, काला तीतर और मुर्ग़का मांस दिया जा सकता है; परन्तु इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि इन पक्षियोंका मांस गरम और भारी होता है, इसलिये वह सब ज्वर-रोगियोंके लिये हितकर नहीं है।

जिन रोगियोंको खटाई सात्म्य या माफ़िक़ हो, उनकी इच्छा हो तो नीबू, अनार, आमला और पुरानी काँजी दी जा सकती है।

नोट—चूँकि सात, दस या बारह दिन तक ज्वरोंमें लंघन कराये जाते हैं, और ज्वर सात दिन तक नवीन तथा बारह दिन तक मध्यम और इसके बाद पुराना समझा जाता है; इसलिये हम नवीन ज्वर, मध्यमज्वर और जीर्णज्वर प्रभृति ज्वरोंके पथ्य, पाठकोंके सुभीतेके लिये, अलग-अलग लिखते हैं।

नवीन ज्वरमें पथ्य।

यथोचित समय पर वमन, लंघन, यवागू, पसीने लेना, पाचन सेवन करना तथा कड़वे और तिक्त रस सेवन करना "नवीन ज्वर"में हितकारी है।

नोट—नवीन ज्वरमें चेष्टा करके वमन न करानी चाहिये। अगर अपने-आप वमन हो जाय तो हानि नहीं। हाँ, बहुत खा जानेसे तत्काल ज्वर हो जाय, तो वमन करायी जा सकती है, क्योंकि आरम्भमें विकार आमाशयमें ही रहते हैं। अगर बलवान रोगीको कफज्वर हो, दोष पककर कोठेमें ठहरा हुआ हो, तो उसको किसी हलकी वमन करानेवाली दवा—जैसे नमक और गरमजल—से निकाल देना ही अच्छा है। बिना दोष पके, ज्वरवालेको कोई भी दवा देने, वमन विरेचन कराने या रोग शान्त करनेवाली दवा देनेसे ज्वर बिगड़ कर विषम ज्वर हो जाता है। वमनसे लंघन कराना अच्छा है, क्योंकि वमनमें बड़ी तकलीफ होती है; किन्तु कफ-ज्वरमें दोष पके हों, तो वमन करा देना लंघनसे बहुत अच्छा है; क्योंकि जो काम लंघनोंसे कई दिनोंमें होगा, वह वमनसे शीघ्र ही हो जायगा। लंघन कराने और वमन कराने अथवा जुलाब देनेका

मतलब एकही है ; यानी सबका मतलब ज्वर पैदा करनेवाले दूषित पदार्थोंका निकाल देना है। लंघनमें खटका कम है। वमन विरेचन कराना ज़रा अधिक समझ बूझ चाहता है। फिर भी; जिसमें सुभीता हो वही कराना चाहिये।

"सुश्रुत" में लिखा है—अगर स्रोतोंका मल पककर कोठेमें ठहर जाय, तो थोड़े दिनके ज्वरवालेको भी विरेचन दे देना चाहिये ; क्योंकि पके हुए दोषको न निकालनेसे वह भयंकर विषमज्वर प्रभृति रोग पैदा करता तथा बलनाश करता है। बलवान रोगी हो तो कफ-ज्वरमें वमन और पित्त-प्रधान ज्वरमें, यदि पक्वाशय शिथिल हो. विरेचन देदेना चाहिये। वेदना-सहित वातज्वर हो और उसमें उदावर्त भी हो, तो निरूहण वस्ती करनी चाहिये। अगर जठराग्नि दीप्त हो और कमर तथा पीठ जकड़ रही हों, तो अनुवासन वस्ती करनी चाहिये। यदि सिर कफसे भर रहा हो, तो सिरका भारीपन और दर्द नाश करनेवाली तथा इन्द्रियोंको चैतन्य करनेवाली नस्य देकर सिरका मलग़म निकाल देना चाहिये। अगर रोगी कमज़ोर हो, उसके पेटपर अफारा और दर्द हो, और दस्त कराना ज़रूरी हो तो—दारूहल्दी, बच, कूट, सौंफ, हींग और सेंधानोन,—इन छहों दवाओंको काँजीमें महीन पीस कर, पेटपर लेप करना चाहिये। इससे अफारा और दर्द आराम होगा। यदि अपान वायु न खुलती हो ; यानी हवा न निकलती हो, पाखाना और पेशाब रुक गये हों, तो मोटी अँगुलीके बराबर कपड़ेकी बत्ती बनाओ। उस बत्तीपर उपरोक्त दारुहल्दी बच प्रभृति छहों दवाओंको महीन पीस कर लेप कर दो। पीछे उसे गुदामें घुसाते समय, उसपर कुछ चिकनी चीज़ घी या तेल भी लगा दो या गुदामें लगा दो, जिससे कि बत्ती गुदामें आसानीसे घुस जाय। बिना घी या तेलके बत्ती गुदामें न जायगी। इस बत्तीसे ख़राब मल निकल जायगा। आजकल डाक्टरोंने भी ऐसीही एक सफेद-सफेद बत्ती निकाली है। उसमें ज़रासा घी

चुपड़कर, उसे वे गुदामें घुसाते हैं ; बस, पाँच मिनटके अन्दर सूखा लकड़-सा मल भी ढीला होकर बाहर आ जाता है। रोगीको कोई कष्ट नहीं होता। पर डाक्टर लोग अभी उस बत्तीका प्रयोग केवल बच्चों पर ही करते हैं। हमारी समझमें वह गिलेसरिनकी बत्ती है।

२ लङ्घन या उपवासके समान रोगनाशक और उपाय संसारमें नहीं है। ज्वर तो लङ्घनोंसे शान्त होता ही है, पर औरभी बहुतसे दुस्साध्य रोग लंघनसे आराम हो जाते हैं। लंघन कराना प्राकृतिक चिकित्सा है। लङ्घनका बड़ा महत्त्व है। हमारे आयुर्वेदके मतसे सभी रोग वात, पित्त और कफकी घटती-बढ़तीसे होते हैं। जब ये तीनों दोष समान रहते हैं, तब मनुष्य निरोग रहता है। लङ्घन करनेसे दोष नष्ट होते हैं और जठराग्नि तीव्र होती है। मतलब यह कि, लङ्घनोंसे रोग ही नाश हो जाते हैं। शास्त्रोंमें लिखा है, अगर मनुष्य भोजन करता है, तो जठराग्नि भोजनको पचाती है ; किन्तु जब उसे आहार नहीं मिलता, तब शरीरकी धातुओंको जलाती है ; यानी ज़ब रोगी खाना छोड़ देता है, तब वही अग्नि शरीरके ख़राब विकारोंको जलाती है। जब विकारोंका नाश हो जाता है, तब रोग भी नाश हो जाता है। इसीलिये ज्वरमें लङ्घनकी महिमा गायी गई है। सचमुचही, नवीनज्वरमें लङ्घन भगवान्का शुभाशीर्व्वाद है। वातज्वर सात दिनमें, पितज्वर दस दिनमें और कफज्वर बारह दिनमें पचना है। वातज्वरमें सातवें दिन, पितज्वरमें ग्यारहवें दिन और कफज्वरमें तेरहवें दिन अन्न दिया जाता है। इतने-इतने दिन इन ज्वरोंमें उपवास करानेसे ज्वर पैदा करनेवाला ख़राब मल नष्ट हो जाता है। इन मियादोंके बाद ; हलका अन्न, पाचन या शमन दवा देनेसे रोगी सहजमें रोगमुक्त हो जाता है। दोष पचजाने पर स्वयं भूख लगती है और दोष पचजानेकी यह पहचान सर्व्वोत्तम है। बिना दोष पके, कच्चे ज्वरमें, अन्न या कोई औषधि देना रोगीको मारना है। लङ्घन करानेमें बहुतसी बातोंका विचार करना होता है ; उन्हें हम आगे लिखेंगे। अँधाधुन्ध लङ्घन कराने, न कराने योग्य रोगी

को लङ्घन कराने, अथवा लङ्घन हो चुकते ही भारी पथ्यादि दे देने, अथवा लङ्घनवालेको वमन करा देने प्रभृति भूलोंसे रोगीकी जानको ख़तरा हो जाता है। गर्भवती, बालक, वृद्ध, जीर्णज्वर-रोगी, क्रोधज्वर वाले, कामज्वरवाले, श्रमज्वरवाले, क्षयरोगी एवं निराम वातज्वर-वालेको लङ्घन करानेसे बड़ी हानि होती है।

३ यदि रोगी कमज़ोर हो, निराहार लङ्घन न कर सकता हो, बहुत से लङ्घन करानेसे हानि नज़र आती हो, रोगीको भूख हो, वह भूखा-भूखा चिल्लाता हो, तो समय हुआ हो या न हुआ हो, उसे हलका अन्न देना उचित है। क्योंकि बिना आम पचे भोजनकी इच्छा हो नहीं सकती, और जब आम पच जायगा, तब भोजनकी इच्छा होगी ही होगी। मगर ज्वर-रोगीको भारी अन्न भूलकर भी न देना चाहिये। शास्त्रोंमें यवागू या पेयाकी बड़ी तारीफ़ है। ये सबसे हलके और ज्वरनाशक खाद्य समझे गये हैं। पर मन्दाग्निवाले और प्याससे व्याकुल तथा सदा शराब पीनेवाले रोगीको, गरमीके मौसममें, पित्त और कफसे हुए रोग में, ऊपरके रक्तपित्त और ज्वरमें, यवागू नहीं देनी चाहिये। "सुश्रुत" में लिखा है, यदि रोगी मन्दाग्नि और प्याससे पीड़ित हो ; तो पतली यवागू पिलानी चाहिये। अगर रोगीको प्यास, क़य, दाह जलन और गरमीसे अधिक घबराहट हो तथा रोगी शराब पीनेवाला हो ; तो उसे लाजातर्पण देना चाहिये ; यानी धानकी खीलोंको पानीमें भिगोकर, मल छानकर, उसमें शहद मिलाकर पिलाना चाहिये। जब यह पच जाय, तब यूषरस या भात देना चाहिये। अगर लङ्घन करने, व्रत उप-वास करने या बहुत मिहनत करनेकी थकानसे ज्वर हुआ हो, रोगी कमज़ोर हो या वातादिक ज्वर हो, पर रोगीकी अग्नि दीप्त हो यानी रोगीको भूख हो ; तो चतुर वैद्य ऐसे रोगियोंको रसौदन यानी मांसरस के साथ भात खिलावे। अगर कफज्वर हो, तो मूँगका यूष और भात दे। अगर पित्तज्वर हो, तो वही मूँगका यूष और भात मिश्री मिलाकर और कुछ शीतल करके दे ; अगर वातपित्तज्वर हो, तो अनार आँवले

और मूँगका यूष दे। वातकफज्वरमें कच्ची मूलीका यूष दे तथा पित्त-कफज्वरमें परवल और नीमका यूप दे। ज़िसे दाह और छर्दि हो; यानी जिसके जलन हो तथा क़य होती हों और वह रोगी दुर्बलहो तथा उसने अन्न न खाया हो एवं प्याससे व्याकुल हो, ऐसी अवस्थामें, रोगीको मिश्री और शहद मिलाकर धानकी खीलोंका तर्पण देना चाहिये। अगर रोगी कफपित्तसे व्याप्त हो, गरमीका मौसम हो,रक्तपित्तहो, रोज़ शराब पीता हो—तो उसे "यवागू" नहीं देनी चाहिये। ऐसे रोगीको यवागू हानिकर है; मगर उसे खटाई या विना खटाईके यूप, जंगली जानवरोंका मांस रस अथवा और हितकारी पथ्य देना उचित है। नवीन ज्वरवालेोंको दूध कभी न देना चाहिये। नवीन ज्वरमें दूध रोगीको मार डालता है। नवीन ज्वरमें या अपक्वज्वरमें "घी" भी ज़हरका काम करता है ज्वरआनेके दश दिनके भीतर दिया हुआ घी ज्वरके उपद्रव वढ़ाता है; पर ज्वरकी पक्व अवस्थामें अमृतका काम करता है।

"वङ्गसेन"में लिखा है:—लङ्घन करनेवाले रोगीके लिये पेया अत्यन्त हितकारी है। यथा दोपानुसार पाचन द्रव्योंसे बनाई हुई पेया दीपन पाचन, हलकी और ज्वर रोगीके ज्वरको हरनेवाली है।

वातपित्तज्वरमें लघुपञ्चमूलके द्वारा बनाई हुई पेया हितकारी है। कफपित्तज्वरमें पीपल और धनियाके द्वारा बनाई पेया हितकारी है। वातकफज्वरमें वृहत् पञ्चमूलके द्वारा बनाई पेया देनी चाहिये। त्रिदोष-ज्वरमें कटेरी, जवासा और गोखरू, इन तीनोंके काढ़ेसे बनाई हुई पेया देना हितकर है।

वातज्वर, कफज्वर, पित्तज्वर, आमज्वर अथवा तरुण—नवीन ज्वरमें, पहले, परवल और पीपल के द्वारा सिद्ध किया हुआ मण्ड या माँड़ अत्यन्त हितकारी है।

वस्ती, पार्श्व रोग तथा शिरोरोगमें लाल शालि चाँवलोंकी पेया देनी चाहिये। ज्वरमें गोखरू और कटेरीके काढ़ेसे बनाई पेया भली होती है। मलवद्ध रोगमें जो, पीपल और आमलेके द्वारा सिद्ध की हुई

पेया पीनी चाहिये । ज्वर और वात आदि दोषोंके अनुलोमन करनेके लिये रोगी पेयामें घी मिलाकर पीवे ; खाँसी, श्वास और हिचकीमें पञ्चमूल के द्वारा सिद्ध की हुई पेया पीवे । पसीनोंका न आना, निद्रा और प्यासकी पीड़ा दूर करनेके लिये खिरैटी, त्रिपांबिल, बेर, इमली, पृश्निपर्णी और शालिपर्णी—इनकी पेया बनाकर उसमें मिश्री मिलाकर पीनी चाहिये ।

सूचना—यवागू, पेया, भात, माँड़, रसौदन और यूष बनानेकी विधि आगे लिखी हैं ।

मध्यम ज्वरमें पथ्य ।

जब ज्वर नवीन न रहे यानी सात दिन हो जायँ, तब निम्नलिखित आहार विहार ज्वरवालेको पथ्य या हितकारी हैं :—

पुराने साँठी चाँवल, बैंगन, सहँजना, करेला, आषाढ़ीफल, परवल, ककोड़ा, मूली और पोईका साग ; मूँग, मसूर, चना, कुलथी और मोठ—इनमेंसे किसीका यूष । पत्तोंके सागोंमें गिलोय, बथुआ, चौलाई और जीवन्तीका साग ; खटाईमें दाख, कैथ और अनारकी खटाई । ये सब तथा औरभी अपने आत्माके अनुकूल, पाचन और हलके पथ्य पदार्थ मध्यम ज्वरवालेको हितकर हैं । यूषोंमें मूँगका यूष सबसे अच्छा माना गया है ।

अगर ज्वरवाला मांसाहारी हो तो लवा, सफेद तीतर, काला हिरन, बूँदवाला हिरन, शरभ (आठ पैरवाला, जानवर, जो सिंहका शत्रु होता है), ख़रगोश, काली दुमवाला हिरन, किसी क़दर लाल रंगका हिरन अथवा सब तरहके हिरनोंका मांस पथ्य है । ज्वर वालेको पहले मांसरस—शोरवा देना हितकारी है ।

अगर ज्वरवालेको भात माफ़िक़ हो, तो एक वर्णके पुराने चाँवलों का भात देना चाहिये । अगर रोटी देनी हो, तो दो सालके पुराने

चाँवलोंका आटा पीसकर उसकी रोटी, मगर थोड़ी, दे सकते हो। अगर रोगी जौ या गेहूँकी रोटी चाहे, तो बलाबल देखकर थोड़ी दे सकते हो ; पर चुपड़ी हुई न देना। बैंगन, परवल, करेला और ककोड़े प्रभृतिका साग भी, विना घी तेलमें छोंकेही, देना चाहिये।

"हारीत-संहिता" में लिखा हैं ;—

> शतपुष्पा च जीवन्ती तण्डुलीयकवास्तुकम्।
> घृतेन भाजिका सिद्धा शाकपत्राणी मानि च ॥

सौंफ, जीवन्ती, चौलाई और बथुआ—इनका साग घीमें भूँज कर देना चाहिये। हमारी रायमें दस दिन पहले घीमें भूँज कर साग न देना चाहिये। इस ग्रन्थमें तोरई और सोंठ देना भी हित-कारी लिखा है। वास्तव में तोरई ज्वर वालेके लिये बहुत ही उप-कारी है। हकीम लोग गलका तोरईका साग अक्सर ज्वर-रोगी को दिलाते हैं।

द्वन्द्वज ज्वरों में पथ्य।

वातकफ ज्वरमें पथ्य

वात-कफ ज्वरमें नवें दिन दवा देनी चाहिये तथा वृहत्पञ्च-मूलके काथमें पकाया हुआ अन्न सातवें दिन देना चाहिये। इस ज्वरमें वृहत्पञ्चमूलके द्वारा सिद्ध की हुई पेया उत्तम पथ्य है। "सुश्रुत"में छोटी मूली का यूष अच्छा लिखा है। इस ज्वरमें पसीने बहुत आते हैं। अगर पसीनोंको ज़ोर हो, तो भुनी हुई कुलथी पीसकर मलनी चाहिये अथवा पुराना गोबर और नमक की हाँडी पीसकर मलनी चाहिये। इन उपायोंसे पसीना आना बन्द हो जाता है। अगर दर्द, श्वास और बहरापन प्रभृति लक्षण हों, तो "बालुका

स्वेद" करना चाहिये। "वालुका स्वेद" वातज्वर और वातकफ ज्वर दोनों में हितकारी है। सैंधानोन, कालीमिर्च और बिजौरे नीबू की केशर का कवल भी अच्छा है।

वातपित्तज्वरमें पथ्य।

वातपित्तज्वरमें पाँचवें दिन दवा देनी चाहिये। मूँग और आमलों का यूष पथ्य है। अगर दाह बहुत ही हो, तो चनेका यूष देना चाहिये। अनार, आमले और मूँगका यूष इस ज्वरमें सब से अच्छा है। लघु पञ्चमूलके काढ़े से पकाई पेया भी बहुत अच्छी है।

नोट—मूँग और करेला आदि कफवात नाशक पदार्थ वात-पित्तज्वर में न देने चाहियें। इनके देनेसे विष्टंभ, शूल, अफारा और ज्वर होता है।

पित्तकफ ज्वर।

पित्तकफ ज्वर में दसरे दिन दवा देनी चाहिये। इस ज्वर में परवल और नीमका यूष, खटाई या बिना खटाई डाला यूष, जंगली जानवरोंका मांसरस, धनिया और पटोल-पत्रके यूष से सिद्ध किया हुआ अन्न—ये सब पथ्य हैं।

नोट—पित्तकफ ज्वरवाले, रक्तपित्तवाले तथा रोज़ शराब पीने वाले को, गरमी की ऋतु में, यवागू हितकारी नहीं है।

सन्निपातज्वर में पथ्य।

सन्निपातज्वरमें कटेरी, गोखरू और जवासेके क्वाथसे सिद्ध की हुई पेया देनी चाहिये। इसके सिवाय, नवीन ज्वरके समान काम करने चाहियें। आम और कफनाशक विधियोंसे काम लेना चाहिये। पहले

कफको सुखानेका उपाय करना ज़रूरी है। पित्तको शान्त नहीं करना चाहिये, क्योंकि कफ़ और वातकी अधिकता वाला सन्निपात रोगीको मार देता है। कफ सूखजाय, तब वातको निवारण करना चाहिये; पीछे पित्तका कोप दीखे, तो पित्तको भी शान्त करना चाहिये; किन्तु कफ और वातको अवश्य सोखना चाहिये, पित्तको कभी नष्ट न करना चाहिये। अञ्जन, नस्य, गण्डूष, दागना प्रभृति क्रियाएँ सन्निपात ज्वरमें हित हैं। पैरों और हाथोंको जड़, कण्ठकूप और कनपटियोंमें पसीने आते हों, तो भुनी हुई कुलथी को पीसकर मलवाना चाहिये।

सन्निपातज्वर अपने आनेके दिनसे चौदहवीं, वीसवीं अथवा चौवीसवीं रात्रिमें शान्त हो जाता है या मार देता है। इस ज्वरमें पहले उत्तम विधिसे लंघन कराने चाहिये। औटाकर ठण्डा किया हुआ पानी पिलाना चाहिये; सन्निपात ज्वरमें वहुत प्यास लगने, मुँह सूखने और पसलीका दर्द होने पर, विना औटाया कच्चा पानी देना, रोगीको विष देकर मारना है। मतलब यह है, कि औटा कर जल देना चाहिये। रुग्दाह सन्निपात ज्वरको छोड़कर और सन्निपात ज्वरोंमें शीतल जल छिड़कना और नहलाना रोगीको मारना है। केवल रुग्दाह सन्निपात में ही जलमें घुसकर स्नान करना अच्छा लिखा है।

इस ज्वरमें पहले लिखे हुए जवासे, कटेरी और गोखरूके काढ़ेसे सिद्ध किया हुआ आहार देना अच्छा है। यह आहार दोषोंको शान्त करता तथा वल और जठराग्नि को वढ़ाता है। दशमूलकी औषधियोंके द्वारा सिद्ध किया हुआ खीलोंका माँड देना भी अच्छा है। यह मंड दीपन, पाचन, पसीने लानेवाला और हितकारी है। सन्निपात ज्वर रोगीको अग्निके अनुसार वटेर, वतक, लवा, तीतर, खरगोश, कुलिंग, (घरका चिड़ा)—इनका मांसरस देना चाहिये। सन्निपातज्वरमें भूखसे व्याकुल रोगीको मांसयुक्त भात

हरगिज़ न देना चाहिए। अगर सन्निपात ज्वरवाला कांपे, वकवाद करे और अज्ञान होजाय, तो पहले उसके शरीरमें "पुराने घी"की मालिश कराना और पीछे बलादि, रास्नादि और गुडूच्यादि औषधियोंका तेल बनाकर सेवन कराना हितकारी है।

रुग्दाह सन्निपातवालेके लिये, सौ वार शीतल जलसे धोये हुए गायके घीमें चन्दन घिसवाकर शरीरपर लगवाना, कमल और कमोदिनीकी माला पहनाकर शीतल जलके कुण्ड या जलाशयमें प्रवेश कराना, रोगीको चित्त सुलाकर उसकी नाभिपर तांबे या काँसीका गहरा वर्तन रखकर—उसमें बहुत शीतल जलकी धारा छुड़वाना, बेरके पत्तोंको दहीमें पीसकर लेप करना, नीमके पत्तोंको दही या माठेमें पीसकर लेप करना, मिश्री और शहत मिलाकर खीलोंका सत्तू खिलाना, तथा ऐसे घरमें रखना जिसमें शीतल जलके फव्वारे छूट रहे हों, कमल खिल रहे हों और स्तनोंपर चन्दन कपूर लगाये हुए मोतियोंकी माला पहने हुए, मदमाती युवतियोंसे आलिंगन कराना—ये सब परम हितकर हैं।

नो—पित्तज्वर और रुग्दाह सन्निपातज्वरकी चिकित्सा एकसी है। इनके सिवा और ज्वरोंमें ये क्रियाएँ भूलकर भी न करनी चाहियें।

जीर्णज्वरमें पथ्य।

जुलाब, वमन, अञ्जन*, नस्य, हुक्का या धूमपान, वस्ती, फस्त, संशमन औषधियोंका प्रयोग, तेलकी मालिश, जलमें स्नान, शीतल वस्तुओंका सेवन; काला हिरन, चिरौंटा, मामूली हिरन, मोर, लवा खरगोश, तीतर, मुर्ग़ा, बगुला, कुछ लाल हिरन, बुँदकीवाला लाल

---

* "चरक"में लिखा है, कि धूप और अञ्जनसे ऐसे जीर्णज्वर-रोगीका ज्वर भी शान्त हो जाता है, जिसके शरीरमें मांस और चमड़ा थोड़ा ही रह जाता है। समग्र आगन्तुज ज्वर धूपन और अञ्जनसे आराम हो जाते हैं।

हिरन, चकोर, सफेद तीतर प्रभृतिका मांस ; गाय या बकरीका दूध, घी, हरड, पर्वतके झरनेका जल, अरण्डीका तेल, सफेद चन्दन, चन्द्रमाकी चाँदनी और प्यारी स्त्रीका आलिङ्गन,—ये सब जीर्णज्वर* या पुराने ज्वरवाले को पथ्य हैं ।

नोट—जुलाब देने और वमन करानेका काम बड़ा कठिन है । यह काम खूब सोच-विचार कर करना चाहिये ; केवल शास्त्र पर ही नहीं रहना चाहिये ।

"भावप्रकाश"में लिखा है :—

जीर्णज्वर गरच्छर्दिगुल्मप्लीहोदरेषु च ।
शूले शोथे मूत्राघाते कृमिरोगे विरेचयेत् ॥

जीर्णज्वर, विष-विकार, वमन-रोग, वायुगोला, प्लीहा, उदर-रोग, शूल, सूजन, मूत्राघात और कृमिरोगमें जुलाब देना चाहिये ।

और भी लीजिये :—

विरेचनं छर्दनमंजनं च नस्यं च धूमोऽप्यनुवासनं च ।
ज्योत्सना प्रियालिंगनमप्ययं स्यादगणाः पुराणज्वरिणां सुखाय ॥

विरेचन—जुलाब, वमन, नस्य, अञ्जन, धूम, अनुवासन वस्ती, चन्द्रमाकी चाँदनी और प्रियाका आलिङ्गन—ये सब जीर्णज्वर-रोगी को हितकारी हैं ।

"वङ्गसेन"में लिखा है ;—

जीर्णज्वरीनरः कुर्यान्नोपवासं कदाचन ।
ज्वरक्षीणस्य न हितं वमनं न विरेचनम् ।
कामन्तु पायसं तस्य निरूहैर्वा हरेन्मलान् ॥

---

* "वंगसेन"के मतसे ज्वर सात दिन तक तरुण, चौदह दिन तक मध्यम, इसके उपरान्त यानी १५ दिन बाद जीर्ण हो जाता है । कोई १२ दिन बाद और कोई २१ दिन बाद जीर्णज्वर होना मानते हैं ।

जीर्णज्वरवालेको उपवास या लङ्घन* हरगिज़ न कराना चाहिये। ज्वरसे क्षीण हुए रोगीको वमन और विरेचन हितकारी नहीं हैं। उसे इच्छानुसार गायका दूध पिलाना हितकारी है। दस्तकब्ज़ हो, तो निरूह बस्ती (आजकल एनिमा) द्वारा सञ्चित मल निकाल देना चाहिये।

"चरक"में लिखा है,—यदि विधिपूर्वक चिकित्सा करनेसे ज्वर शान्त न हो और रोगीका वल और मांस क्षीण न हुआ हो, तो विरेचन यानी जुलाव देकर रोग शान्त करना चाहिये। ज्वरसे क्षीण रोगीको वमन विरेचन हितकारी नहीं होते, इसलिए ऐसे रोगीको यथेष्ट दूध पिलाना चाहिये तथा निरूह वस्तीसे मल निकालना चाहिये। दोष-समुशयके पक जानेपर, यदि निरूह वस्ती की जाती है; तो शीघ्र ही वल और अग्नि की वृद्धि होती है तथा प्रफुल्लता और रुचि होती है एवं रोगीका ज्वर चला जाता है।

कहीं वमन विरेचनकी आज्ञा और कहीं निषेध है, इसका यह मतलब है कि, आम तौरसे पुराने बुख़ारमें वमन विरेचन करा सकते हैं, पर सभी रोगियोंको नहीं। सब जगह विवेक बुद्धिकी ज़रूरत है। जहाँ जैसा मौक़ा हो, वहाँ वैसाही काम करना चाहिये। पुराने बुख़ारके रोगी अक्सर अत्यन्त कमज़ोर हो जाते हैं. उनका कफ सूख जाता है; उनको यदि दो चार दस्त भी करा दिये जाते हैं, तो वे फ़ौरन ही परमधाम जानेको तैयार हो जाते हैं; इसलिये अगर रोगी बलवान हो, वमन विरेचन को सह सकता हो, वमन विरेचन बिना और उपायसे

---

* "बंगसेन"में लिखा है :—

पुराणेपि ज्वरे दोषाः यद्यपथ्यैः पुनस्तथा।
लंघयेत्तत्र तं पश्चाद्यथोक्तां कारयेत् क्रियाम्॥

पुराने बुखारमें, कुपथ्य करनेसे, वातादिक दोष फिर बढ़जावें; तो पहले लंघन कराकर पीछे ज्वरका इलाज करना चाहिये।

काम न चलता हो, तभी वमन विरेचन कराने चाहियें; अगर कराने ही हों, तो हलके कराने चाहियें। जहाँ तक काम चल सके; वमन, विरेचन और लङ्घनका न कराना ही अच्छा है।

जीर्णज्वरवालेकी गरमी बढ़ जाती है, उसमें वायुका अधिक कोप रहता है। शरीरमें बुख़ारके बहुत दिन रहनेसे, रक्त-मांस नाममात्र को रह जाते हैं। ऐसे रोगीको यदि लंघन या वमन-विरेचन कराये जाते हैं, तो रोगीके बिना मौत मर जानेकी सम्भावना रहती है।

२ जीर्णज्वरमें घी दूध खिलानेकी बड़ी ज़रूरत दिखाई गई है।

"वंगसेन" में लिखा है:–

ज्वरोष्मणा ज्वरेऽ जीर्णे वायुः कुप्यति रूक्षिते।
घृतं संशमनं तस्य दीप्तस्येवाम्बु वेश्मनः॥

जीर्णज्वरमें ज्वरकी गरमी और शरीरके रूखेपनसे वायु कुपित होता है। उस वायुके शान्त करनेके लिये "घी" पिलाना चाहिये। घी पिलानेसे वायु इस तरह शान्त होता है; जिस तरह जलते हुए घर पर पानी डालनेसे घरकी आग शान्त होती है*।

"सुश्रुत" में कहा है:–

कृशोऽल्प दोषो दीनश्च नरो जीर्णज्वरार्दितः।
विबद्धः सृष्टदोषश्च रूक्षः पित्तानिलज्वरी॥
पिपासार्तः सदाहो वा पयसा स सुखी भवेत्।
तदेव तु पयः पीतं तरुणे हन्ति मानवम्॥

यदि रोगी कमज़ोर हो, अल्पदोषवाला हो, दीन हो, जीर्णज्वरसे पीड़ित हो, विबन्धयुक्त हो, दोष कुछ-कुछ निकलते हों, रोगी रूखा

* चरकमें लिखा है—सब तरह के जीर्णज्वरों में अपने-अपने लक्षणों के अनुसार, औषधियोंके संस्कार से बना हुआ "घी" देना चाहिये। सिद्ध किया हुआ यानी औषधियोंके साथ तैयार किया हुआ घी वायु की शान्ति करता है, संस्कार-योग से कफ की शान्ति करता है और शीतल होनेसे पित्त की भी शान्ति करता है।

हो, पित्तवातका ज्वर हो, प्याससे पीड़ित और दाहसे युक्त हो,—ऐसी अवस्थामें मनुष्य दूधसे सुखी होता है ; परन्तु तरुणज्वरमें पिया हुआ दूध मनुष्यको मार देता है।

"सुश्रुत"में ही लिखा है :—

> शृतं पयः शर्करा च पिप्पल्यो मधुसर्पिषी।
> पंचसारमिदं पेयं मथितं ज्वरशान्तये।
> क्षतक्षीणे क्षये श्वासे हृद्रोगे चैतदिष्यते॥

औटाया हुआ दूध, मिश्री, पीपल, शहद और घी—इन सबको मिलाकर, ज्वरकी शान्तिके लिये पीना चाहिये। इसे "पंचसार"कहते हैं। यह क्षत, क्षीण, क्षय, श्वास और हृदय-रोगमें श्रेष्ठ है।

"चरक"में लिखा है :—

> जीर्णज्वराणां सर्वेषां पयः प्रशमनं परम्।
> पेयतदुष्णं शीतं वा यथास्वं भेषजैः शृतम्॥

सब प्रकारके पुराने ज्वरोंके नाश करनेमें दूध सबसे बढ़कर है। दोषोंके अनुसार औषधियोंके साथ पकाया हुआ दूध, गरम या शीतल जैसा मुनासिब हो वैसाही पीना चाहिये। जैसे ;—पुराने रक्तपित्त ज्वरमें शीतल करके पीना चाहिये ; किन्तु पुराने वात या कफ ज्वरमें गरमागरम पीना चाहिये। "चरक"में ही लिखा है कि, धारोष्ण दूध पीनेसे पुराना वातपित्त ज्वर तत्काल नष्ट होता है। पञ्चमूल द्वारा सिद्ध किया हुआ दूध पीनेसे जीर्णज्वर नाश होता है।

जीर्णज्वरमें रोगी ऐसा कमज़ोर हो जाता है, अग्नि ऐसी मन्द हो जाती है, कि उसे कुछ भी नहीं पचता। उस दशामें दूधके झाग खिला कर वैद्य रोगीको खड़ा करते हैं।

"हारीत संहिता"में लिखा है :—

> जीर्णे ज्वरातिसारे च सामे च विषमज्वरे।
> मन्दाग्नौ कफमाश्रित्य पयः फेनं प्रशस्यते॥

क्षीणज्वर, अतिसार, आमज्वर, विषमज्वर और कफाश्रित मन्दाग्नि—इनमें दूधके झाग पीना बहुत अच्छा है।

कहाँ तक लिखें, आयुर्वेदमें जीर्णज्वर आराम करनेके लिये घी और दूधकी बड़ी ही तारीफ की है। अनेक प्रकारकी औषधियों द्वारा बनाये हुए घी और दूध जीर्णज्वर नाश करनेके लिये लिखे हैं। हमने वर्द्धमान पिप्पली, क्षीरपाक, सितादि क्षीर, पञ्चसार प्रभृतिको जीर्णज्वरमें रामबाणके समान पाया है। जीर्णज्वरमें कफ सूखगया हो, रोगी रूखा हो गया हो, प्यास और दाहके मारे घबराता हो, तो उसे दूध अवश्य देना चाहिये। बहुतसे अनाड़ी वैद्य—क्या नये और क्या पुराने—सभी ज्वरोंमें घी दूध नहीं देते। यह उनकी भारी भूल है। नये ज्वरमें घी दूध बेशक हानिकारक है; परन्तु पुराने बुख़ारोंमें ये रोगनाश करके रोगीकी जान बचानेवाले हैं।

"चरक"में लिखा है,—जिस तरह धातुओंकी क्षीणतासे क्षयज्वर होता है; उसी तरह जीर्णज्वरका प्रधान हेतु देहकी धातुओंकी दुर्बलता है; ज्वरका सम्बन्ध जब किसी धातु या धातुओंसे हो जाता है, तभी वह चिपट जाता है। जब अनेक प्रकारकी चिकित्सा करने पर भी ज्वर न जाय, तब तो कम-से-कम वैद्यको इस बातकी खोज करनी चाहिये कि, इस ज्वरका सम्बन्ध किस धातुसे है। जिस धातुसे ज्वरका सम्बन्ध हो, उस धातुसे उसका सम्बन्ध छुड़ाते ही ज्वर आराम हो जाता है। इस तरहके ज्वर बलदाता और बृंहण आहारोंसे जाते हैं। धातुओंके जिस प्रमाणसे क्षीण होनेसे ज्वर हुआ हो; बलवर्द्धक और बृंहण आहार उसी प्रमाणसे शरीरके भीतर पहुँचानेसे ज्वर आराम होता है।" ऐसे जीर्णज्वरोंमें विशेषकर गरमी बढ़ जाती है और वायुके कोपसे शरीर एकदम रूखा हो जाता है। जब तक वायुको शान्त करनेवाली क्रियाएँ नहीं की जातीं, कोई लाभ नहीं होता। वायुको शमन करनेवालोंमें "घी" सर्वोत्तम है। कहा है:—

लवणेन कफं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करा ।
घृतेन वातजान् रोगान् सर्वं रोगान् गुड़ान्वितः ॥

"नमक"से कफ नाश होता है, शक्कर या चीनीसे पित्त शान्त होता है, "घी" द्वारा वादीसे हुए रोग आराम होते हैं और गुड़ मिली दवाओंसे सब रोग आराम होते हैं ।" बस,इसी वजहसे जीर्णज्वरमें घी दूध देने पर ज़ोर दिया गया है । पर इससे यह न समझ लेना चाहिये, कि जीर्णज्वरोमें एक तोले घी या एक पाव दूध भी पचानेकी ताक़त या अग्निबल हो या न हो, उसे दमादम घी दूधसे भर दिया जाय । सभी जगह अक्लकी ज़रूरत है । यद्यपि घी और दूध जीर्णज्वरमें अमृत हैं,मगर यही रोगीके बलाबलको बिना विचारे अनापशनाप दे दिये जायँ ; तो रोगी न मरता होगा, तोभी मर जायगा । कोई-कोई जीर्णज्वरी ऐसे होते हैं कि, उन्हें छटाँक भर दूध या तोले भर अन्नसे दस्त होने लगते हैं, कुछ भी नहीं पचता ; तब चतुर वैद्य दूधके झाग मिश्री मिलाकर खिलाते हैं । ज्यों-ज्यों शक्ति बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों और ताक़तवर पदार्थ दिये जाते हैं । बिना घी दूध जीर्णज्वरी औरभी रूखा होता चला जाता है ; इससे इनका देना ज़रूरी है, पर जितना पच सके उतना ही देना चाहिये ।

"चरक"में लिखा हैः—विसर्प ज्वर और विस्फोटकज्वर(चेचक प्रभृति) में,यदि कफ पित्तकी प्रबलता न हो,तो,पहलेसे ही घी पिलाना उत्तम है। किन्तु इस बातका भी ख़याल रखना चाहिये कि,विसर्पज्वर और विस्फोटक ज्वरमें सर्वत्र कफपित्तकी ही प्रबलता रहती है । यदिकोई चिकित्सक यह समझकर कि,विसर्पज्वर और विस्फोटकज्वरमें चरकने आरम्भ सेही घी पिलानेकी आज्ञा दी है, घी पिलाना शुरु करे और कफपित्तकी प्रबलता है या नहीं,इस बातका खयाल भी न करे और इन ज्वरोंमें कफ पित्तकी प्रबलता हो, तो परिणाम क्या हो ? मतलब यह है कि,चिकित्सकको चलना तो शास्त्रानुसार ही चाहिये, पर शास्त्रकी आज्ञाओं पर बारीकीसे विचार करना चाहिये और हर बातमें तर्क वितर्कसे काम लेना

चाहिये। जो लोग अक्लसे काम नहीं लेते, दिमाग़को तक़लीफ़ नहीं देते, वे रोगियोंको मारते हैं और यहाँ अपयशके भागी होकर, मरनेपर घोर नरक भोगते हैं।

"हारीत-संहिता"में लिखा है :—

बलक्षये तर्पणभोजनेषु श्रमे च पित्तासृजि रोगयुक्ते।
नेत्रामये कामलापाण्डुरोगे क्षये नवं सर्पिर्वदन्तन्ति धीराः॥

बुद्धिमान वैद्य बलक्षय, तर्पण, भोजन, थकान, पित्तरक्त, नेत्ररोग, कामला, पीलिया और क्षयमें "घी"देना अच्छा कहते हैं। ठीक बात है, इन मौक़ों पर घी देना वास्तवमें गुणकारी है; पर पाचन-शक्तिका विचार किये बिना, निर्बल क्षय रोगीको अथवा और रोगके रोगीको या निरोगको ही, उसकी ताक़तसे ज़ियादा, घी दे दिया जायगा, तो उसे निश्चय ही दस्त लग जायँगे—नीरोग रोगी होजायगा और रोगीका रोग बढ़ जायगा। ज्वरमें जो हर जगह भारी पदार्थ देनेकी मनाही की है, उस पर भी सदा ध्यान रखना चाहिये। खुब भूख लगने पर पथ्य देना चाहिये और उतनाही देना चाहिये, जितना आसानीसे पच जाय। अहितकारी पदार्थ भी यदि थोड़ासा खा लिया जाय, तो किसी तरह पच जायगा, उतनी तकलीफ न देगा और कोई उपाधि न पैदा करेगा। कोई भी चीज़ ज़ियादा न खानी चाहिये, चाहे वह अमृत हो क्यों न हो। प्रत्येक चीज़ मात्रा या क़ायदेसे खायी हुई अमृतका काम करती है। इसी लिये कहा है :—

अति भोजनं रोगमूलं आयुः क्षयकरम्।
तस्मादति भोजनं परिहरेत्॥

बहुत खाना रोगकी जड़ है, बहुत खानेसे उम्र कम होती है; इसलिये बहुत खानेसे सदा परहेज़ करना चाहिये।

३ जीर्णज्वरमें शिरोविरेचन अर्थात् नास देकर सिरका मलग़म निकालना ज़रूरी है। नास देनेसे शिरका भारीपन मिटता है, सिरदर्द आराम होता है और इन्द्रियोंमें चैतन्यता आ जाती है तथा रुचि होती है। जीर्णज्वरमें शहद या चिकनाईके द्वारा नस्य देना अच्छा समझा जाता

है। जैसे, हींग और सेंधे नमकको पुराने घी में मिलाकर नास देनेसे सिरका दर्द मिट जाता है*।

४ जीर्णज्वरमें अक्सर कफक्षय हो जाता है; इससे, तथा नस्य, लङ्घन, चिन्ता, शोक, क्रोध और मैथुन प्रभृतिसे मनुष्यकी नींद नाश हो जाती है। ऐसी दशामें, नींद लानेके लिये, रोगीके दोनों पाँवों पर तिलीके तेल या सौ वार धोये घी की मालिश करना, भाँगको वकरीके दूधमें पीस कर लेप करना अथवा नाना प्रकारके मधुर वाजोंका स्वर या गाना सुनना वगैरः उपाय हितकारी हैं।

५ जीर्णज्वरवाले रोगीको बलाबल देखकर निम्नलिखित आहार विहार भी सेवन कराये जा सकते हैं :—

मूँग या अरहरकी दाल, पुराने चाँवलोंका भात, गेहूँके अच्छे सिके पतले-पतले फुलके, गाय या वकरीका दूध, गायका घी, औषधियोंके योगसे तैयार हुआ घी, अनारदाने, आमले, कैथ, कागज़ी नीबू, कैथ या पोदीनेकी चटनी, ज़ीरा, धनिया, हलदी, सेंधानोन, नारायण तेल, चन्दनादि तेल या लाक्षादि तेल, षट्तक्र तेल प्रभृति तेलोंकी मालिश। नारायणतेल और चन्दनादि तेल साधारण अवस्थामें मलवाने चाहिएँ। दाह हो, तो "षट्तक्र तैल" मलवाना चाहिये। मालिश कराकर स्नान करना †, चन्दन और कपूर गुलाब जलमें घोटकर लगाना, फूलोंकी माला, अंशूदकजल, झरनोंका जल, बाग़की सैर, चन्दन कपूर लगाये हुए मोतियोंकी माला पहने हुए नवयौवना स्त्रियोंसे आलिंगन मगर मैथुन हरगिज नहीं),—ये सब परम पथ्य हैं। क्रोध, शोक, मैथुन, चिन्ता और वहम, —ये सब महा हानिकारक हैं।

---

* जीर्णज्वरमें शिरोविरेचन देना चरक, सुश्रुत और बंगसेन प्रभृति सबने जरूरी और हितकारी लिखा है; बशर्तें कि रोगी का सिर भारी हो और उसमें दर्द वगैरः हो।

† चरकमें लिखा है,—वैद्य जीर्णज्वरमें, विचारपूर्वक, शीतल या गरम मालिश करावे, शीतल या गरम चिकना लेप लगवावे और शीतल या गरम जलसे स्नान करावे, तो वहिर्मार्गगत ज्वर तत्काल शान्त हो जाय।

विषम ज्वरोंमें पथ्य।

"भावप्रकाश"में लिखा है,—जो मनुष्य माठेके साथ मांस, दूधके साथ मांस, दहीके साथ मांस अथवा उड़दके साथ मांस भक्षण करता है; वह विपमज्वरसे छुटकारा पा जाता है।

अग्निवेश ऋषि कहते हैं—विपमज्वरवाले मनुष्यको वैद्य माँड़के साथ शराव पिलावे और मुर्ग़ा तथा तीतर और समस्त विष्किर जातिके जीवोंका मांस खिलावे,—ये पथ्य हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है—सवेरे ही सवेरे "घी और लहसन" खानेसे विषमज्वर जाता है। घी, दूध, मिश्री, शहत और पीपल—इन पाँचों को, यथावल, सेवन करनेसे विपमज्वर जाता है। दूध और मांसरस खाते हुए, वर्द्धमान पिप्पलीका सेवन करनेसे विपमज्वर नाश होता है। मुर्ग़के साथ उत्तम शराव पीनेसे भी विपमज्वर शान्त होता है।

"वंगसेन"में लिखा है :—

> पिप्पली शर्करा क्षौद्र श्रृतं घृतं नवम्।
> स्वजेन मथितं पेयं विपमज्वर नाशनम्॥

पीपल, मिश्री, शहद, औटा हुआ दूध और नौनी घी—इन सबको कलछीसे मिलाकर पीनेसे विपमज्वर नाश होता है। और भी लिखा है,—लहसनके कल्क (लहसनकी जलके साथ पिसी हुई लुगदी) को तिलीके तेलमें नित्य सेवन करनेसे विपमज्वर और वात ज्वर दूर होते हैं। विषमज्वरमें रोगीके पीनेके किये शराव और माँड़ देना चाहिये तथा भोजनके लिये मुर्ग़ा, तीतर और मोरका मांस देना चाहिये। क्षीण मनुष्यका वहुत दिनोंका सतत या विषम ज्वर बढ़ जाय, तो उसे ज्वरनाशक पथ्योंसे जीतना चाहिये। रूखे मनुष्यका ज्वर कषाय, वमन, लङ्घन और हलके पदार्थोंसे शान्त न हो, तो उसे घी पिलना चाहिये।

सभी विषमज्वर सन्निपातसे होते हैं ; यानी तीनों दोषोंके कोपसे होते हैं ; इसलिये जिस-जिस दोषका अधिक ज़ोर हो, उसी-उसीका इलाज करना चाहिये ।

वाताधिक्य या वातप्रधान विषमज्वरमें घी पिलाना चाहिये, अनुवासन वस्ती करनी चाहिये तथा चिकने और गरम पदार्थ खाने-पीनेको देने चाहियें ।

पित्ताधिक्य या पित्तप्रधान विषम ज्वरमें, गरम दूधमें घी मिलाकर देना अच्छा है ; इससे दस्त हो जाता है । इस ज्वरमें तिक्त और शीतल पदार्थ खाने पीनेके लिये देने चाहियें ।

कफाधिक्य या कफप्रधान विषमज्वरमें वमन, पाचन, रूखे अन्न-पान (खाने-पीनेके पदार्थ) लङ्घन और गरम दवाइयोंके काढ़े—ये सब पथ्य हैं ।

सब तरहके विषमज्वरोंमें पहले वमन विरेचनादि* कराना हित-कारी है । किसीने लिखा है :—

> विषमे वमनं चैव रेचनं कारयेत्भिषक् ।
> तथा संभोजनः पथ्यैर्लघु भिः समुपाचरेत् ॥

विषमज्वरमें वैद्यको कय और दस्त कराने चाहियें तथा हलके पथ्य पदार्थ खाने पीनेको देकर विषमज्वर नाश करना चाहिये ।

---

* हमने देखा है कि, कितने ही विषमज्वर दो तीन दस्त करा देनेसे अथवा दो तीन हलके दस्त कराकर "महाज्वराङ्कुश बटी" देनेसे बहुत जल्दी आराम हुए हैं । निशोथके चूर्णमें शहत मिलाकर चटानेसे ही, दस्त होकर, अनेक वार विषमज्वर नाश हो जाता है ।

"चरक"में लिखा है,—ज्वरवाले घी और शहदके साथ निशोथका चूर्ण ; घी और शहद के साथ त्रिफले का काढ़ा ; दूधके साथ अमलतास का गूदा ; दाखोंके काढ़ेके साथ निशोथ का चूर्ण अथवा दाख और हरड़का काढ़ा,—इन में से कोई सा नुसखा काममें लावें । दाखोंका रस पीकर, ऊपरसे गरम दूध पीना भी अच्छा है । ये सब नुसखे, ज्वरोंमें, दस्तोंके लिये उत्तम हैं । मात्रा बलाबल देखकर नियत करनी चाहिये एवं घी और शहद बराबर-बराबर न लेने चाहियें ।

विषमज्वरमें वमन विरेचन बड़े लाभदायक हैं ; फिर भी, जो रोगी इनके योग्य हों, उन्हींको ये कराने चाहिये। बहुत ही ज़रूरत हो और रोगी कमज़ोर हो, तो हलकी दस्तावर दवा दे देनी चाहिये, जिससे मामूली तौर से दो तीन दस्त हो जायँ और रोगीको कष्ट न हो। जिनको वमन कराना उचित हो, उनको वमन करानी चाहिये और जिनको दस्त कराने उचित हों, उनको दस्त कराने चाहिये। जिनको ये दोनों ही हानिकर हों, उन्हें नहीं कराने चाहिये। जो घी दूध के लायक हों, उन्हें घी दूध देना चाहिये ; पर उनकी शक्तिका ख़याल ज़रूर रखना चाहिये। जो मांस देने योग्य हों, उन्हें मांस देना चाहिये ; जिनको माँस न पचे, उन्हें और हलके भोजन देने चाहिये। हमने बलवान और दुर्बल सभीके लिये हितकारी, पथ्य और ज्वरनाशक पदार्थ लिख दिये हैं ; पर बलाबल और दोषोंकी प्रधानता और अप्रधानता प्रभृति का ख़याल तो वही करेगा, जो इलाज करेगा।

महेश्वर प्रभृति धूप देने, अञ्जन लगाने, टोने टुटके करने, यन्त्र मंत्र करने, और लाक्षादि तेलकी मालिश करानेसे भी विषमज्वर नाश होते हैं। हमने कितने ही रोगी इस तरह आराम किये हैं। दाह होनेसे सौ बारका धोया घी या नीम अथवा बेरके पत्तोंके झाग मालिश कराने अथवा ऐसे ही और-और लेप करनेसे दाह फौरन शान्त हो जाता है। "दाहमें "प्रह्लादनतेल या षट्कट्वर तेल"से हमने बड़ा फायदा उठाया है। इनसे दाह और शीत फौरन मिट जाते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

निर्विषैर्भुजगैर्नागैर्विनीतै कृततस्करैः।
त्रासयेदागमे चैनं तदहर्भोजयेन्न च॥

जिस समय ज्वर चढ़नेवाला हो, उस समय विषहीन साँपों या पालतू हाथियों अथवा बनावटी तस्करोंसे रोगीको डराना चाहिये और उस दिन उसे खानेको न देना चाहिये।

जिस तरह डराने धमकाने या विस्मयजनक बात कह देनेसे "हिचकी" आराम हो जाती है ; उसी तरह कई "विषम ज्वर" भी ऐसे उपायोंसे जाते रहते हैं ; पर डरानेके लिये वही साँप मँगाने चाहियें, जिनके दाँत तोड़ दिये गये हों। बिना दाँत तोड़े—ज़हरवाले साँप, भूलकर भी, न मँगाने चाहियें। उनसे तो अर्थमें अनर्थ हो सकता है।

आगन्तुक ज्वरोंमें पथ्य।

इन ज्वरोंमें लङ्घन नहीं कराने चाहियें। तलवार, लकड़ी, घूँसा प्रभृति किसी प्रकारकी चोट लगनेसे होनेवाले अभिघातज ज्वरोंमें घी पीना, मालिश कराना, खून निकलवाना यानी फस्त खुलवाना अथवा सींगी वगैरः लगवाकर खून निकलवाना, शराब पीना, मांस-रस पीना और भात खाना पथ्य है। पहले मांसरस और दूध पीना ही अच्छा है।

"चरक"में लिखा है,—अभिघातज ज्वरमें (चोट प्रभृतिसे होनेवाले ज्वरमें), घी पिलाना और घीकी मालिश कराना ठीक है। फस्त खुलवाकर खून निकलवाना, प्रकृतिके अनुकूल—मिज़ाज़के माफ़िक़ शराब पीना, मांसरसके साथ भोजन करना अच्छा और आवश्यक है। जो कहींसे गिरकर बेहोश होगया है, उसे होशमें लानेके लिये फस्त खुलवाना और शराब पिलाना आवश्यक है ; किन्तु यदि भूलसे ज़ियादा खून निकाल दिया जायगा, तो वायु कुपित हो जायगा ; और अगर शराब अधिक पिला दी जायगी तो पित्त कुपित हो जायगा। ऐसी हालतमें, ग़लतीके कारणसे, रोगीकी मृत्यु भी हो जा सकती है।" देखा पाठको! चिकित्साकर्म कितनी होशियारी, सावधानी और ज़िम्मेवरीका काम है।

क्षतज ज्वरमें यानी उस ज्वरमें, जो तलवार भाला प्रभृति हथियार लगनेके कारण, ज़ख़्म या घाव होनेसे चढ़ा हो अथवा व्रण

ज्वरमें यानी उस ज्वरमें जो फोड़े फुन्सियोंके ज़ोर धरनेसे हुआ हो, पहले वैद्यको घाव या फोड़ा-फुन्सीका इलाज करना उचित है। उरः-क्षत और व्रण-रोगियोंके ज्वरमें भी चरकने मद्य और मांसरस—शोरवा देनेकी व्यवस्था की है।

मार्ग चालनेकी थकानसे हुए श्रमज्वरमें, प्राचीन वैद्योंने, दिनमें सोना और तेलकी मालिश कराना पथ्य बताया है। मारने, बाँधने, अत्यन्त परिश्रम करने, बहुत मार्ग चालने, पेड़ वगैरःसे गिरने और छेदन-भेदन प्रभृतिसे पैदा हुए ज्वरोंमें,—पहले मांसरस और दूधका पीना हितकारी है ;

तीक्ष्ण औषधियोंके सूँघने और विष या ज़हरसे उत्पन्न हुए ज्वरोंमें, बुद्धिमान वैद्यको विष और पित्तको नाश करनेवाला "सर्वगन्ध" * का क्वाथ पिलाना चाहिये। इन ज्वरोंमें विष और पित्तको शान्त करनेवाली क्रिया करनी चाहिये। औषधिकी गन्धसे हुए ज्वरमें चित्तको प्रसन्न करनेवाले काम करने उचित हैं।

क्रोधसे उत्पन्न हुए ज्वरमें पित्तनाशक क्रिया करनी चाहिये। महात्माओंके वचनोंको मानना भी पथ्य है। ऐसा ज्वर धीरज बँधाने, तसल्ली देने, इष्ट वस्तुके मिलने, वायुको शमन करने और आनन्द पैदा करनेवाली बातोंसे शान्त होता है। क्रोधसे उत्पन्न हुआ ज्वर चाही हुई चीज़ मिलने, धिक्कार आदि, भय पैदा करनेवाली बातों और पित्तको शान्त करनेवाले उपायोंसे शान्त होता है। क्रोधको मनमें रोकने और क्रोधको परमशत्रु समझनेसे भी क्रोधज्वर शान्त हो जाता है। कामसे भी क्रोधज्वरका नाश होता है ; यानी क्रोध-ज्वरीका चित्त सुन्दरी स्त्रियोंकी चर्चामें लगा देनेसे भी बहुत लाभ होते देखा गया है। इस ज्वरमें गरम खानपान न देकर, पित्तको शान्त करनेवाले मीठे और शीतल पदार्थ देने चाहियें।

---

* तज, तेजपात, बड़ी इलायची, नागकेशर, कपूर, शीतलचीनी, अगर, केशर और लौंग—इन नौ औषधियोंके समुदायको "सर्वगन्ध" कहते हैं।

कामज्वरमें वायु कुपित होता है। इस ज्वरमें वायु शमन करने वाले काम करने चाहिये। यह ज्वर भी तसल्ली देने, चाही हुई वस्तु के मिल जाने और आनन्द बढ़ानेवाली बातोंके कहनेसे शान्त होता है। कामको मनमें रोकना भी अच्छा है। जिस तरह कामसे यानी इश्क़ या प्रेमकी बातें करनेसे क्रोधज्वर शान्त होता है; उसी तरह क्रोध से कामज्वरका भी नाश होता है। इस ज्वरमें वातको कुपित करने वाली कोई क्रिया न करनी चाहिये। इस ज्वरके नाश करनेवाली औषधियाँ हम आगे लिखेंगे। एक ग्रन्थमें लिखा है, यदि किसी स्त्रीको कामज्वर हो तो वह, सन्ध्या समय, अत्यन्त सुगन्धित फूलोंके पलँग पर लेटे और रातको अपने प्राणप्यारेके साथ क्रीड़ा करे।

शोकज्वर और भयज्वरोंमें भी वायु कुपित होता है; इसलिये इनमें भी वायुको शमन करनेवाले काम करने चाहियें। धीरज बँधाना, शोक और भयनाश करनेवाली बातें कहना, दिलको खुश करनेवाले उपाय करना—इन ज्वरोंमें हितकारी हैं। क्रोध और कामके पैदा होनेसे, इन ज्वरोंका नाश अवश्य होता है।

भूतज्वर भूतबाधासे होता है। इसमें तीनों दोष कुपित होते हैं। इसे भूत-विद्यामें लिखे हुए उपायों—ताड़ना, आवेश, बन्धन प्रभृतिसे जीतना चाहिये; सहदेईकी जड़ कण्ठमें * बाँधनेसे एक, दो, तीन या चार दिनमें भूतज्वर नाश हो जाता है। इसमें आश्चर्य्यकी कोई बात नहीं है; जड़ियोंमें अमित शक्ति और प्रभाव है।

समस्त ज्वरोंमें पथ्यापथ्य।

पथ्य।

"विष्णुसहस्र नाम"का पाठ, "महामृत्युञ्जय"का जप, अपने इष्टदेव की उपासना या पूजन, ब्रह्मचर्य्य, हवन, दानपुण्य महात्माओंका

* कहीं ऐसाभी लिखा है—"ज्वरंहन्ति शिरोबद्धा सहदेवी जटा यथा" यानी सहदेवीकी जड़ सिरमें बाँधनेसे ज्वर जाता है।

दर्शन, हीरा, पन्ना प्रभृति रत्नोंका धारण करना और लघु पथ्य सेवन करना,—ये सब ज्वरोंमें पथ्य हैं।

अपथ्य ।

खुशबूदार तेल शरीरमें लगाना, लाल फूलोंकी माला या लाल कपड़े पहनना, वमन या कयको रोकना, दाँतुन करना, अपनी प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना, संयोग-विरुद्ध अन्नपान, दाहकारक और भारी यानी देरमें पचनेवाले पदार्थों का खाना, दिनमें दो बार खाना, पूर्वाह्नमें यानी दोपहर पहले या दिनके पहले चार घण्टोंके भीतर खाना ; अभिष्यन्दी, तीक्ष्ण और भारी अन्न खाना, एक साथ पेटभर खाना,—ये सभी ज्वरोंमें अपथ्य हैं। इनसे गया हुआ ज्वर फिर लौट आता है।

इनके सिवाय दूषित जल, खार, खटाई, पत्तोंके साग, अङ्कुर उपजा हुआ अन्न, खसका जल, पान, तरबूज़, बड़हर, तोड़ा मछली, तिलोंकी खल, पिट्ठी और मैदाके बने पदार्थ, कचौड़ी, बड़े तथा और भी कफकारी पदार्थ ज्वरोंमें त्याज्य हैं।

ज्वरान्तमें अपथ्य ।

ज्वर छूट जाने पर भी कसरत, मैथुन,स्नान, भ्रमण, परिश्रम, हवा खाना और शीतल जल—इनसे परहेज़ करना चाहिये। जब तक पहले कीसी ताक़त न आजाय, तब तक अवश्य बचना चाहिये। ज्वर जानेपर भी जल्दी ही स्नान कर लेनेसे फिर ज्वर आजाता है ; इसलिये ज्वर-मुक्त मनुष्य स्नानको विषके समान समझे। जबतक बल, वर्ण—शरीरका रंग, अग्नि और देह, पहलेके समान प्रकृतिके अनुसार न होजायँ, तब तक ज्वरमुक्त मनुष्य भी त्यागने योग्य कामोंको त्याग दे।

सुश्रुतमें लिखा है :—

> परिषेकावगाहांश्च स्नेहान्संशोधनानि च ।
> स्नानाभ्यंगं दिवास्वप्न शीतव्यायाम योषितः ॥

न भजेत ज्वरोत्सृष्टो यावन्नो बलवान्भवेत् ।
त्यक्तस्यापि ज्वरेणाशु दुर्बलस्याहितैर्ज्वरः ॥
प्रत्यापन्नो दहेद्देहं शुष्कवृक्षमिवानलः ।
तस्मात्कार्यः परीहारो ज्वरमुक्तेन जन्तुना ।
यावन्न प्रकृतिस्थः स्याद्दोषतः प्राणतस्तथा ॥

जलमें गोता मारना, स्नेह पान करना (घी तेल वगैरः चिकने पदार्थ पीना),वमन करना,जुलाब लेना, शरीरमें तेल आदिकी मालिश कराना,दिनमें सोना, सरदी खाना,मिहनत करना, स्त्रीप्रसंग करना,— इन सबसे, ज्वर छूटनेके बाद, जबतक शरीरमें पूरी ताक़त न आ जाय, परहेज़ करना चाहिये ; क्योंकि ज्वरसे मुक्ति पाया हुआ, कमज़ोर आदमी अगर ज़रा सी भी बदपरहेज़ी करता है वा कोई अनुचित काम करता है, तो उसे बुखार फिर धर दबाता है और शरीरको इस तरह जला देता है, जिस तरह सूखे वृक्षको आग जलाकर खाक कर देती है ; इसवास्ते ज्वर जानेके बाद भी, जब तक दोष पूरे तौरसे प्रकृति पर न आ जायँ और पहलेकी सी ताक़त न आ जाय, तबतक परहेज़ रखना चाहिये ।

नोट—ये अपथ्य ज्वर रहनेकी हालत और ज्वर छूटनेकी हालत, दोनोंमें ही, त्यागने उचित हैं ।

"सुश्रुत"में ही लिखा है :—

न जातु तर्पयेत्प्राज्ञः सहसा ज्वरकर्शितम् ।
तेन संदूषितो ह्येष पुनरेव भवेज्ज्वरः ॥

ज्वरसे कमज़ोर हुए मनुष्यको शीघ्रही खूब तृप्त न करना चाहिये ; यानी ज्वर जाते ही ताक़त लानेवाले पदार्थ न देने चाहियें ; क्योंकि इनसे दूषित होकर फिर बुखार आने लगता है ।

और भी देखिये :—

अरोचके गात्रसादे वैवर्ण्ये गमलादिषु ।
शान्त ज्वरोपि शोध्यः स्यादनुबन्धभयान्नरः ॥

अगर ज्वर शान्त होने पर भी अरुचि रहे, अङ्गोंमें थकान हो, शरीरका रंग ख़राब हो, देह मलीन हो; तो ज्वरके न आनेकी हालतमें भी, शोधन करना यानी जुलाब देना चाहिये। ऐसा न हो कि, दोष शेष रह गया हो, जिससे फिर ज्वर आने लगे।

हतावशेष ज्वरके लक्षण और उसकी शान्तिके उपाय।
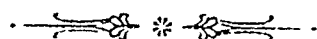
धातुगत ज्वर यानी रस, रक्त मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्यमें पेवस्त हुए ज्वर—वमन, विरेचन, लंघन, रक्तमोक्षण* प्रभृति तथा संशमन औषधियों द्वारा नाश किये जाते हैं। उस दशामें, यदि शमन-शोधनादि क्रियाओंके करने पर भी दोष शेष रह जाता है अथवा नवीन ज्वरमें दोष शेष रह जाता है; तो वह बुख़ार किया करता है। वैसे ज्वरको "हतावशेषज्वर" कहते हैं। अगर ऐसा होता हो, तो उस अवस्थामें साधारण उपायोंसे बड़ा लाभ होता है।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

हतावशेषं पित्तं तु त्वकस्थं जनयति ज्वरम्।
पिबेत् इक्षुरसं तत्र शीतं वा शर्करोदकम्॥
शालिषष्टिकयोरन्नमश्नीयात् क्षीरसंप्लुतम्।
कफवातोत्थयोरेव स्वेदाभ्यङ्गौ प्रयोजयेत्॥

शोधन शमन आदिसे चमड़ेमें बाक़ी रहा हुआ पित्त, ज्वर पैदा कर देता है। उस हालतमें, गन्नेका रस पीना या गँडेली चूसना

* रसगत ज्वर यानी उस ज्वरमें जो रसमें हो; वमन और लंघन कराये जाते हैं। अगर ज्वर रक्तगत होता है, तो जलसे सींचना, लेप करना, ख़ून निकलवाना ये कर्म करते हैं और संशमन औषधि देते हैं। मांसगत ज्वरमें तेज़ जुलाब देते हैं। मेदगत ज्वरमें मेदनाशक यानी मेदको सुखानेवाली क्रियाएँ करते हैं। अस्थिगत ज्वरमें यानी हड्डियोंमें होनेवाले ज्वरमें वातनाशक चिकित्सा करते हैं तथा बस्ती-कर्म, तेलादिकी मालिश और उद्वर्तन करते हैं। मज्जा और शुक्रगत ज्वरमें कुछ नहीं करते, क्योंकि जिसके मज्जा और वीर्य्यमें ज्वर घुस जाता है, वह निश्चयही मर जाता है। सातों धातुगत ज्वरोंमें मज्जा और शुक्रगत ज्वर त्याज्य हैं।

अथवा शीतल शर्करोदक† या कोई उत्तम शर्बत पीना हित है। साथ ही दूध भात खाना भी पथ्य है। इन उपायोंसे वह शेष रहा हुआ पित्त शान्त हो जाता है और ज्वर छूट जाता है। अगर कफ या वायुके शेष रह जानेसे ज्वर आने लगे, तो पसीना देने और तेल प्रभृतिकी मालिशसे काम निकालना चाहिये।

---

† शुद्ध जलमें मिश्री या सफेद खाँड़ घोलकर उसमें अन्दाजसे छोटी इलायची, कपूर, लौंग और काली मिर्च पीसकर मिला दो। खूब मिलजाने पर छानकर पी जाओ। यही "शर्करोदक" कहलाता है। इसकी विद्वानोंने बड़ी तारीफ की है। यह वीर्यको पैदा करता है, शीतल होनेसे जलन मिटाता है, दस्त लाता है, ताक़त लाता है, रुचि करता है, हलका है, जायकेदार है तथा वातपित्त, रुधिर-विकार, मूर्च्छा, वमन, प्यास और दाह ज्वरको शान्त करनेमें परमोत्तम है। पित्तशेष ज्वरमें यह रामबाण है। इसमें इतनाही दोष है कि, यह कफको बढ़ाता है, किन्तु वातको शान्त करता है और पित्तज्वरमें, शुद्धपित्तज्वरमें, अमृत है।

ज्वररोगियोंके लिये अन्नसाधन विधि।

मंड।

उत्तम शालि चाँवलोंको १४ गुने जलमें पकाओ। जब चाँवल अच्छी तरहसे सीज जायँ, पसाकर चाँवल अलग कर दो। जो पतला-पतला पदार्थ रहे, उसे ले लो। इसीको "मंड" या "माँड" कहते हैं। इसमें सोंठ और सेंधानोन, अन्दाज़ से, डालकर ज्वरवालेको दो। यह मंड अग्निदीपक, पाचक, ग्राही हलका, शीतल, धातुओंको समान करनेवाला, तृप्तिकारक, बलकारक और ज्वरनाशक एवं पित्त, कफ और श्रमनाशक है।

पेया।

लाल शालि चाँवलों वगैर:को चौदह गुने जलमें पकाओ। जिसमें चाँवलोंके कण कम हों तथा ज़ियादा पतली हो, उसीको "पेया" कहते हैं। पेया अत्यन्त हलकी, मल रोकनेवाली, धातुपुष्ट करने-वाली ; प्यास, ज्वर, वात, कमज़ोरी तथा कोखके रोगोंको नाश करने वाली, पसीना लानेवाली, अग्नि दीपन करनेवाली, वायु और मलको अनुलोमन करनेवाली होती है। अगर इसमें अन्दाज़का सेंधानोन और सोंठका चूर्ण मिला दिया जाय ; तो यह दीपन, पाचन, रुचि-कारक और आमशूल तथा विबन्धको नष्ट करनेवाली हो जाती है।

नोट—जिसमें जरा भी कण न हों, उसे "मंड" कहते हैं। जिसमें थोड़े कण हों और पतली हो, उसे "पेया" कहते हैं। जिसमें कण ज़ियादा हों और पतला-पन कम हो, उसे "विलेपी" कहते हैं।

प्रमथ्या।

चार तोले चाँवल या और कोई अन्न, जिसकी प्रमथ्या बनानी हो,

लेकर साफ करलो ! पीछे उसे जलमें पीसकर लुगदीसी बनाओ और अठगुने या ३२ तोले जलमें उसे पकाओ। जब चौथाई यानी आठ तोले माल रह जाय, उतार लो। यही "प्रमथ्या" है। इसके गुण पेयाके समान ही हैं, बल्कि इतनी विशेषता है कि, यह और भी हलकी है।

यूष ।

दो दालवाले मूँग, मोठ, चना प्रभृतिमें से किसी एकको लेकर १८ गुने जलमें पकाओ, जब अन्न अच्छी तरहसे गल जाय और पेयासे कुछ गाढ़ा हो जाय, तब उतार लो। इसको "यूष" कहते हैं। यूष बहुत ही रुचिकारक होता है।

दूसरी विधि ।

दो दालवाला अनाज मूँग या चना वगैरः चार तोले लेकर जल में पीस लो। पीछे ६ माशे सेंधानोन और ६ माशे पीपरको भी एक जगह जलमें पीस लो। शेषमें दोनों पिसी हुई लुगदियोंको ६४ तोले जलमें पकाओ ; जब रस सा हो जाय, उतार लो। इसे भी "यूष" ही कहते हैं। यह यूष बलकारक, पाक में हलका, रुचिकारक, कण्ठको हितकारी और कफनाशक होता है।

मूँगका यूष ।

आठ तोले मूँग लेकर १२८ तोले (१ सेर ६॥ छ०) जलमें पकाओ। जलते-जलते चौथाई पानी रह जाय, तब आगसे उतार लो। पीछे मूँगोंको हाथोंसे खूब मलकर कपड़ेमें छान लो। फिर इस छने हुए रसमें अनारका रस चार तोले, सेंधानोन १ तोले, सोंठ का चूर्ण १ तोले और धनियाका चूर्ण १ तोले मिला दो। अन्तमें ज़रासी पीपल और ज़रासे ज़ीरेसे छौंक दो। इसे "संस्कृत मूँगका यूष" कहते हैं। यह यूष पित्तनाशक, जठराग्निवर्द्धक, शीतल, हलका, घाव, उर्द्ध जत्रुरोग, प्यास, दाह, कफ, पित्तज्वर और रुधिरके

विकारको नष्ट करनेवाला और सब यूषोंमें उत्तम है। पित्तज्वरमें मूँगके यूषसे लपेटा भात मिश्री मिलाकर देनेसे बड़ा लाभ होता है।

मूँग और आमलेका यूष।

इन दोनोंका यूष दस्तावर, पित्त और वातनाशक, तृषा और दाह शान्तिकारक, शीतल तथा मूर्च्छा, श्रम और मदनाशक है।

मसूरका यूष।

मसूरका यूष मल रोकनेवाला, पुष्टि करनेवाला, ज़ायकेदार और प्रमेहनाशक है।

चनेका यूष।

वातपित्तज्वरमें, अत्यन्त दाह होनेके समय, चनेका यूष अच्छा काम करता है।

यवागू।

चाँवलोंको ६ गुने जलमें पकाओ। जब अन्न गलजाय और खूब गाढ़ा रहे, परन्तु कण अलग-अलग रहें और थोड़ा पानी भी रहे, तब उतार लो। इसे ही "यवागू" कहते हैं।

यवागू ज्वर रोगोके लिये अत्यन्त हितकारी, अग्निदीपक, हलकी, प्यासनाशक, बस्ती-शोधक, थकान और ग्लनि नाशक है। ज्वर और अतिसारमें यवागू परम पथ्य है।

"चरक"में लिखा है, नवीन ज्वरवालेको वमन करने और लघन करनेके बाद 'यवागू' देनी चाहिये। वह यवागू, दोषोंके अनुसार, औषधियोंके साथ बनानी चाहिये। पहले मंड देना चाहिये और जबतक ज्वर हलका न हो या जबतक ६ दिन न हो जायँ, तबतक "यवागू" देनी चाहिये। ईंधनसे जैसे आग तेज़ होती है, उसी तरह

"यवागू" से रोगीकी अग्नि दीपन होती है। यवागू* औषधियोंके साथ संयोग होनेसे तथा हलकी होनेसे अग्नि दीपन करती है, वात मूल और पुरीष को अनुलोमन करती है; यानी इसके सेवनसे हवा खुलती तथा पाखाना पेशाब साफ होता है। "पेया" पतली और गरम होनेके कारण पसीने लाती है, पतली होनेके कारण प्यासको नाश करती है, आहार होनेके कारण प्राण धारण करती है, सत्त्व-गुणके कारण देहमें हलकापन करती है और ज्वरमें सात्म्य होनेके कारण ज्वरनाशक है, इसलिये पहले-पहल पेया प्रभृतिका पथ्य देना चाहिये।

विलेपी।

शालि चाँवलोंको चौगुने जलमें पकाओ। जब चाँवल गल जायँ, पर अलग अलग हों और जल भी अलग हो, उतार लो। यही "विलेपी" है। यह अग्निदीपक, बलकारक, हृदयको हितकारी, मल रोकनेवाली, हलकी, घाववाले और नेत्ररोगीको पथ्य तथा तृप्तिकारक, प्यास और ज्वरनाशक है।

भात।

१६ तोले चाँवलों को चौदह गुने जलमें पकाओ, ज चाँवल खूब गल जायँ, तब पसाकर माँड को अलग कर दो।

---

* मद्यसे पैदा हुए ज्वरमें, अधिक शराब पीनेसे हुए ज्वरमें, रोज-रोज शराब पीनेवालेके ज्वरमें, पित्तश्लेष्म प्रधान (पित्तकफप्रधान) ज्वरमें तथा उर्ध्वगत—ऊपरके रक्तपित्त ज्वरमें "यवागू" अहित यानी नुक्सानमन्द है। इसी तरह पेया भी मद्यजनित ज्वरोंमें न देनी चाहिये। दाह, वमन, प्याससे घबराये हुए, गरमीसे पीड़ित, दुर्बल और निराहारको भी यवागू या पेया न देनी चाहिये। ऐसे रोगीको सन्तर्पण देना अच्छा। यवागू तीन तरहकी होती हैं:—(१) मंड, (२) पेया,, (३) विलेपी। ये उत्तरोत्तर भारी हैं; यानी मंडसे पेया भारी है और पेयासे विलेपी भारी है। यवागू पतली खिचड़ी सी हो जाती है। यवागू चाँवल, मूँग उर्द और तिल इनमेंसे जिसकी उचित हो बनानी चाहिये।

इन पके हुए चाँवलों को ही "भात" या "भक्त" कहते हैं। भात मधुर और हलका है। यह अग्निदीपक, पथ्य, तृप्तिकारक, पेशाब लानेवाला और हलका होता है।

अच्छी तरह धोया हुआ, पसाया हुआ गरम भात विशद और ज़ियादा गुणोंवाला होता है। नहीं धोया हुआ, नहीं पसाया हुआ और शीतल भात वीर्य पैदा करनेवाला, भारी और कफकारी होता है। शीतल और सूखा हुआ भात कठिन से पचता है। अच्छी तरह न पका हुआ भात, बहुत समयमें, बड़ी दिक़्क़तसे पचता है।

भुने हुए चाँवलोंका भात—रुचिकारक, सुगन्धियुक्त, कफनाशक और हलका होता है। ऐसा भात वातरोगी, निरूह बस्तीवाले मन्दाग्निवाले और और जुलाब लेनेवाले को अत्यन्त हित है।

नोट—मूँग के यूष के साथ भीगा हुआ भात कफज्वर में और मूँग के यूष से भीगा और मिश्री मिला भात पित्तज्वर में बहुत उत्तम है।

रसौदन।

पुष्ट जानवर की जाँघ का मांस अथवा हड्डी-रहित तीतर का मांस १६ तोले लेकर, उसके महीन-महीन टुकड़े कर डालो। पीछे पानी से धो लो। इसके बाद पीपल, पीपलामूल, सोंठ, ज़ीरा और धनिया—इनमें से हरेक आठ-आठ माशे ले लो। अन्तमें सब को मिला कर, १२८ तोले (१ सेर ६ छटाक) जलमें पकाओ। जब चौथाई पानी रहजाय, तब मांस को कलछी से कूट कर और हाथों से मलकर उसका रस निकाल लो। इस के बाद इसे हींग, सेंधेनोन और भुने ज़ीरे से बघार लो और तैयार किये हुए भात में मिला दो। इसी को "रसौदन" कहते हैं। रसौदन —वमन विरेचनसे शुद्ध हुए और शुद्ध होने की इच्छा करनेवाले

दोनों के लिये पथ्य है। यह भारी, मैथुनशक्ति बढ़ानेवाला, बलकारक और वातज्वर हरनेवाला है। श्रम, उपवास और वायु से पैदा हुए ज्वर में बहुत ही हितकारी है।

मांसरस।

अगर गाढ़ा मांसरस बनाना हो, तो पहले मांस के टुकड़े करके धो लो; पीछे १६ तोले मांस ४ सेर जल में पकाओ। अगर पतला मांसरस बनाना हो,तो ४८ तोले मांस ४ सेर जल में पकाओ। अच्छतर मांस का रस बनाना हो, तो पहले ८ तोले मांस को पत्थर पर पीस कर गोलियाँ बना लो और घी में भून लो। पीछे उसे चार सेर जल में पकाओ और चौथाई पानी रहनेसे उतार लो। थोड़ासा मांस बहुत से जल के साथ सिद्ध किया जाय, तो उसका गल जाना सम्भव है।

औषधियों के योग से मंड आदि बनाने की विधि।

चार तोले औषधि लेकर ३ सेर ३ छटांक जल में पकाओ। जब जलते जलते आधा पानी रह जाय, उतार लो। इस काढ़े से मंड और पेया, विलेपी आदि तैयार कर लो; यानी जल के स्थान में ऐसा पकाया हुआ काढ़ा देकर पेया वगैरः बना लो।

औषधि से तैयार की हुई पेया के गुण।

जो-जो दोष हों, उन-उन दोषों के अनुसार पाचन औषधियों से तैयार की हुई पेया, भोजन के समय, देने से हितकारी, अग्निदीपक, पाचक, हलकी और ज्वरनाशक होती है।

भिन्न-भिन्न ज्वरोंमें भिन्न-भिन्न पेया।

वातज्वर में पंच मूल (सरवन, पिथवन, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और गोखरू) का काढ़ा पाचन है। इसलिये अगर वातज्वर

में पेया देनी हो, तो चार तोले उपरोक्त पंचमूल लाकर, २५६ तोले या ३ सेर ३ छटांक जलमें पका कर काढ़ा कर लो। जब आधा जल रह जाय, तब काढ़ेको उतार कर छान लो। पीछे ६ तोले चाँवल लेकर, इसी पंचमूलके तैयार रक्खे हुए काढ़े मे पकाओ। जब उसमें थोड़ेसे कण रह जायँ और पतली सी हो जाय, उतार लो। यही औषधि से सिद्ध की हुई पेया है। यह पेया वातज्वरमें हित है।

पित्तज्वर में नागरमोथा, कुटकी और इन्द्रजौ—इन तीनोंका काढ़ा पाचन है। उसी ऊपर की रीतिसे चार तोले तीनों दवाऐं ले कर, ३ सेर ३ छटांक जलमें काढ़ा बनाओ। आधा जल रहने पर उतार कर छान लो। फिर उस काढ़े में ६ तोले चाँवल डाल कर पकाओ। थोड़ेसे कण रहने और ज़ियादा पतली होने पर उतार लो। यह पेया पित्तज्वर में पथ्य है। इस ज्वरमें मूँग के यूष के साथ मिला हुआ भात, मिश्री मिला कर देना भी अच्छा है। यह पथ्य शीतल है।

कफज्वर में पिप्पल्यादि क्काथ पाचन है। पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, गजपीपल, सोंठ, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद, ज़ीरा, सरसों, हींग, भारङ्गी, पाढ़ इन्द्रजौ, बकायन, मूर्वा (चुरनहार) अतीस, कुटकी और वायविड़ङ्ग—इन २१ औषधियोंको पिप्पल्यादि गण कहते हैं। इनको उसी तरह ले कर, उतने ही पानीमें काढ़ा बना कर, आधा रहने पर उतार लो। शेषमें उसी तरह चाँवल डाल कर पेया बना लो। यह कफज्वरमें हितकरी है।

नोट—मूँगके यूषके साथ भीगा हुआ भात भी कफज्वरमें हितकर है।

वातपित्तज्वर में लघु पंचमूलके क्काथ से पेया बना कर देनी चाहिये।

कफपित्तज्वर में पीपल और धनियेंके क्काथ से पेया बनानी चाहिये।

कफवातज्वर में बृहत् पंचमूल (बेल, अरनी, खंभारी, पाढ़ल और स्योनाक) के काथ से सिद्ध की हुई पेया देनी चाहिये।

त्रिदोषज्वर में कटेरी, जवासा और गोखरू के काथ से सिद्ध किया हुआ अन्न, विशेष कर, पेया देनी चाहिये।

ज्वर में अगर मूत्राशय, पसली और सिर में दर्द हो, तो गोखरू और कटेरीके काथ से सिद्ध की हुई लाल शालि चाँवलों की पेया दो। यह पेया उक्त पीड़ाओंको नाश करती तथा ज्वर हरती है।

ज्वर में मल मूत्र यानी पाखाना पेशाब रुक जायँ, तो पीपल और आमलों के काथ से पकाई हुई पेया घी डाल कर देनी चाहिये। इस पेया से दोष उचित मार्गों से निकलते हैं।

ज्वर में श्वास, खाँसी और हिचकी हों; तो लघुपंचमूल या बृहत्पंचमूलके काथ से सिद्ध की हुई, लाल शालि चाँवलों की पेया देनी चाहिये।

पंचमुष्टिक यूष।

जौ, बेर, कुलथी, मूँग और सोंठ—इन में से हरेक को चार-चार तोले लेकर, अठगुने (१६२ तोले) जलमें पकाओ। जब चौथाई भाग जल बाकी रहे, तब हाथों से मल कर छान लो। इसी को "पञ्चमुष्टिक यूष" कहते हैं। यह यूष वात, पित्त और कफ को नाश करता है तथा शूल, वायुगोला, खाँसी, श्वास, क्षय और ज्वर में अत्यन्त हितकारी है।

ज्वर में बत्ती।

ज्वर में अगर दस्त पेशाब बन्द हो जायँ; तो पीपल, पीपलामूल, अजवायन और चव्य—इनको जल में पीस कर मोटी अँगुली के बराबर, कपड़े की बत्ती बना कर, उसमें लपेटो और ऊपर से थोड़ा

घी भी चुपड़ दो। इस बत्ती को गुदा में चलाने से पाखाना हो जाता है।

नोट—इसके साथ ही दोषोंको यथार्थ मार्ग में स्थित करनेवाली, उधर लिखी हुई पीपल और आमलेंके काढ़ेसे सिद्ध की हुई पेया भी देनी चाहिये।

दूसरी बत्ती।

दारूहलदी, वच, कूट, सौंफ, हींग और सेंधानोन—इन छै औषधियों की बत्ती भी, उसी तरकीब से बना कर, गुदा में चलाने से मल मूत्र हो जाते हैं। अगर पेट में दर्द और अफारा हो, तो इन्हीं ६ दवाओं को कांजी में पीस कर, गरम करके, पेट पर लेप करना चाहिये।

सन्तर्पण।

खीलों का सत्तू, दाख, अनार और खजूर—इन को जलमें घोल कर, उस में मिश्री, शहद और घी डाल कर, जो चीज़ बनायी जाती है, उसे "सन्तर्पण" कहते हैं। वैद्य खीलों के सत्तू को जल में घोल कर, उस में मिश्री और शहद मिला कर भी तर्पण रूप से पिलाते हैं।

जिन रोगियों को यवागू या पेया देना मना है, उनको ये सन्तर्पण अच्छे होते हैं। इनके पीने से विशेष कर वमन, अतिसार, प्यास, दाह, विष, मूर्च्छा और ज्वर का नाश होता है।

"चरक"में लिखा है,—दाह और वमन से पीड़ित तथा लंघनोंसे क्षीण हुए ज्वरवालेको दाख,अनार,खजूर, चिरौंजी का पका फल और फालसे—इनका रस मिला कर तर्पण देने से ज्वर नाश होता है।

दुग्धफेन।

ताज़ा गायका दूध आँखों सामने कढ़ा कर ले आओ। उसे दो लोटों में भर कर, भाँग की तरह एक दूसरे में उड़ेलो; यानी एक लोटेमें थोड़ा दूध रक्खो और दूसरे लोटे में भी थोड़ा दूध रक्खो।

पहले लोटे को हाथ में रक्खो और दूसरे लोटेको ऊँचा ले जाओ, पीछे उसका दूध ऊँचेसे नीचेवाले लोटेमें उड़ेलो। इस तरह सैकड़ों बार करो। इस तरह करने से जो झाग आवें, उन्हें दूसरे बर्तन में रखते जाओ। जब झाग आना बन्द हो जाय, तब दूध को किसी को दे दो या फेंक दो। ये झाग ही बड़े कामके हैं। इनको ही 'दुग्धफेन" कहते हैं। इन में ज़रा सी मिश्री मिला कर, उस जीर्णज्वरी या अतिसार रोगी को दो,—जिसे तोले दो तोले अन्न भी न पचता हो। ये दूधके फेन त्रिदोषनाशक, रोचक और भूख बढ़ानेवाले हैं। "दुग्धफेन" बहुतही हलका पथ्य है।

लंघन-विचार।

हमारे शास्त्रोंमें लङ्घन की वड़ी तारीफ़ की गयी है। ज्वरनाश करनेमें तो इसे सर्वोत्तम ही माना है। वास्तवमें लङ्घन है भी ऐसा ही। शरीरके विकारों और रोगोंके नाश करनेमें इसका सानी और नहीं। लङ्घनसे शरीर और मन दोनोंकी शुद्धि होती है। जो शारीरिक और मानसिक रोग अच्छी-से-अच्छी दवाओंसे आराम नहीं होते, वे केवल लंघनोंसे आराम हो जाते हैं। शरीरकी वेढङ्गी मुटाई नाश करनेमें भी लंघन सर्वोत्तम है।

जो विद्वान् हैं, वे तो जानते ही हैं कि "लंघन" शब्दका अर्थ क्या है, लंघनसे कौन-कौन रोग नाश होते हैं, लंघन किसको कराना चाहिये और किसे नहीं, लंघनों से क्या लाभ और क्या हानि होती है. लंघन किस रीतिसे कराने चाहिये ; परन्तु अधकचरे वैद्य जिन्होंने शास्त्र नहीं देखे, इन वातोंका मर्म विना समझे ही, ज्वर रोगमें सभी रोगियोंको, चाहे लंघन की ज़रूरत हो या न हो, चाहे लंघनसे हानि होनेकी हो संभावना क्यों न हो, लंघनकी आज्ञा दे देते हैं। इसका बड़ा बुरा परिणाम होता है। अनेक रोगियोंके रोग वढ़ जाते हैं और अनेक रोगी कुटुम्बियोंको रुलाकर परमधाम को सिधार जाते हैं। संसारमें जितने पदार्थ या कर्म अच्छे हैं, उनमें दोष भी मौजूद हैं। भोजन अमृत है, क्योंकि इससे प्राणोंकी रक्षा होती है, किन्तु वही अधिक या नियम-विरुद्ध सेवन करनेसे मनुष्य को मार डालता है। स्त्री आनन्दके वढ़ानेवाली, सुखके देनेवाली, कुलका नाम रखनेवाली, विपद्‌में सच्चे मित्रकी भाँति सहायता देने वाली है ; पर उसके भी अधिक सेवनसे वहुतसी शारीरिक, आर्थिक और नैतिक हानियाँ होती हैं। वहुत ही स्त्रीसेवा करनेवालोंको क्षयरोग

हो जाता है, जिससे वे असमयमें ही कालके गालमें समा जाते हैं। मीठा भोजन सबसे अच्छा भोजन है, परन्तु अधिक मीठा खानेसे कृमिरोग प्रभृति अनेक रोग हो जाते हैं। जल प्राणियोंका जीवन है, जलके विना मनुष्य शीघ्रही चोलेको छोड़ देता है; पर वह भी बेक़ायदे और अधिक सेवन करनेसे मनुष्यको मार डालता है। शराब थकान दूर करने और चित्तको प्रसन्न रखनेके लिये परमोत्तम पदार्थ है; पर वह भी बेक़ायदे पीनेसे भयंकर रोग पैदा कर देती है। मुर्ग़का मांस ताक़त लानेमें सबसे बढ़कर है; पर वही निहायत कमज़ोर को एकदम खिला देनेसे मार देता है। शहद कफपित्तनाशक पदार्थोंमें सर्वोत्तम है और अनेक रोगोंका नाश करता है; पर गरम करके लेने या घीके साथ बराबर लेनेसे विष हो जाता है। कसरत शरीरको मज़बूत करनेवाले उपायोंमें राजा है; पर वह भी बेक़ायदे की जाती है, तो अनेक प्रकारके रोग पैदा कर देती है। दूध ज़ीर्णज्वर वालोंके लिये अमृत है; पर नवीन ज्वर-रोगीके लिये विष है। दूध और मांस बलवर्द्धक पदार्थोंमें सर्वश्रेष्ठ हैं; पर वे भी एक साथ खानेसे कोढ़ आदि भयानक रोग पैदा करते हैं। स्नान थकान नाश करनेवालों और चित्त प्रसन्न करनेवालोंमें परमोत्तम है; पर वही ज्वरवाले और ज्वरमुक्तको मार देता है। उपवास या लंघन ज्वर प्रभृति अनेक रोगोंके नाश करनेमें सर्वोत्तम उपाय है; पर नियम-विरुद्ध या विना विवेक-विचारसे कराये जानेपर मनुष्यके प्राण ही नाश कर देता है। संसारमें जितने कर्म और पदार्थ हैं, सभीमें कुछ न कुछ नुक़्स या दोष भी हैं। जितने अच्छे-अच्छे वचन हैं उनके साथ उनके खण्डन भी हैं। बुद्धिमानको नियम और छूट, वाक्य और खण्डन दोनोंपर ध्यान देना चाहिये। दोनों पर ध्यान रखनेसे ही सफलता मिलती है। शास्त्रमें यदि लंघन करानेकी आज्ञा है, तो मनाही भी है; क्योंकि लंघन लाभदायक भी है और हानिकारक भी है।

लंघन किसे कहते हैं ।

"चरक"में लिखा है :—

> यत्किञ्चिल्लाघवकरं देहे तल्लंघनं स्मृतम् ।

जिससे शरीर हलका हो या जो शरीरको हलका करे, उसे "लङ्घन" कहते हैं ।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

> शरीर लाघवकरं यद्द्रव्यं कर्म वा पुनः ।
> तं लंघनं इति ज्ञेयं बृंहणं तु पृथग्विधम् ॥

जिस द्रव्य या जिस कर्मसे शरीर हलका हो, वही लङ्घन है ; यानी जिस औषधि या कामसे शरीर हलका हो, उसे "लङ्घन" कहते हैं । बृंहण इसके विपरीत है ।

"हारीत-संहिता"में लिखा है :—

> अनशनवमन विरेचन रक्तस्रुति तप्ततोयपानैः ।
> स्वेदनकर्मसहितैः षड्विधं लंघनं गदितम् ॥

न खाना, वमन करना, जुलाब लेना, खून निकलवाना, गरम-गरम पानी पीना, पसीने निकालना—ये छहों लङ्घन कहलाते हैं ।

"चरक"ने कहा है :—वमन विरेचन, निरूह वस्ति, शिरोविरेचन, प्यास रोकना, हवा खाना, धूप खाना, पाचन, उपवास (न खाना) और परिश्रम - ये लङ्घन हैं ।

जो चीज़ लघु, उष्ण, रूक्ष प्रभृति गुणवाली हो, उसे भी "लङ्घन" कहते हैं । यहाँ लङ्घनका अर्थ उपवास ही है ; क्योंकि सुश्रुतने कहा है कि, जिस द्रव्य या कर्मसे शरीर हलका हो वही लङ्घन है । वमन विरेचन, निरूह बस्ति और शिरोविरेचन—इनको यहाँ लङ्घनके अर्थमें नहीं लेना चाहिये । यद्यपि ये चारों भी शरीरको शुद्ध और

हलका करते हैं, किन्तु इनका उपयोग ज्वरकी खास-खास अवस्थाओंमें, ऐसी ही ज़रूरत आपड़नेसे, किया जाता है। सभी ज्वरोंमें वमन विरेचन आदि नहीं कराये जाते ।

"सुश्रुत"में साफ लिखा है :—

प्रव्यक्त रूपेषु हितमेकांतेनापतर्पणम् ।
आमाशयस्थे दोषे तु सोत्क्लेशे वमनं परम् ॥
आनद्धस्तिमितैर्दोषैर्यावंतं कालमातुरः ।
कुर्यादनशनं तावत्ततः संसर्गमाचरेत् ॥
क्रमेण बलिने देयं वमनं श्लैष्मिके ज्वरे ।
पित्तप्राये विरेकस्तु कार्यः प्रशिथिलाशये ॥
सरुजे निलजे कार्यं सोदावर्त्ते निरूहणम् ।
कटीपृष्ठ ग्रहार्तस्य दीप्ताग्नेरनुवासनम् ॥
शिरोगौरवशूलघ्नमिन्द्रिय प्रतिबोधनम् ।
कफाभिपन्ने शिरसि कार्यं मूर्द्धविरेचनम् ॥

ज्वरका रूप प्रकट होते ही बेखटके लंघन कराने चाहियें ; अगर आमाशय में उत्क्लेश सहित दोष हों, तो वमन करानी चाहिये। जब तक दोष पच न जायँ, रोगीकी हालत न सुधर जाय, शरीर हलका न हो, तब तक लंघन कराने चाहियें ; इसके बाद अन्न देना चाहिये। इससे साफ़ ज़ाहिर है, कि लंघन शब्दसे यहाँ उपवास करानेसे मतलब है। पका हुआ दोष शरीरमें रह जानेसे भयङ्कर रोग पैदा करता है, उसका निकाल देना ही हितकर है। इसलिये कहा है, अगर बलवान रोगी के कफज्वर हो और रोगीका कोठा कड़ा हो, तो दस्त करा देना चाहिये। अगर वायुसे ज्वर हो और उसमें वेदना या उदावर्त हो, तो निरूहण बस्ति करनी चाहिये। अगर कमर और पीठ जकड़ रहे हों, तो अनुवासन बस्ति करनी चाहिए। अगर सिरमें कफ भरा हो, तो सिरका दर्द और भारीपन मिटानेको इन्द्रियोंको चैतन्य करनेवाली कोई नस्य देकर, सिरका मलग़म निकाल देना चाहिये। इस वचनसे स्पष्ट मालूम होता है, कि ज्वरकी

विशेष हालतोंमें, जब कि पका हुआ मल कोठेमें रुकजाय, थोड़े दिनके ज्वर रोगीको भी, वमन विरेचन प्रभृति करानेकी आज्ञा दी है। इसलिये चारों प्रकारकी वमन विरेचन आदि संशुद्धियोंको यहाँ लंघन न समझना चाहिये।

ज्वर-रोगीको थोड़ा-थोड़ा जल देना चाहिये; रोकने की ज़रूरत नहीं; बहुत पीना भी ख़राब है। ज्वर की विशेष अवस्थाओं में प्यास रोकनी होती है।

अब रहा हवा खाना—ज्वर में हवा सभी आचार्य्यों न बुरी कही हैं। हाँ, ज्वरकी अवस्था विशेष में, वायु-सेवन अच्छा है; सभी ज्वरों में नहीं। यही बात धूप के सम्बन्ध में भी है।

परिश्रम करना तो ज्वर में क़तई मना है। सुश्रुतने तो यहाँतक कहा है कि, रोगीको उसके पलँग पर ही खाने को देना चाहिये और हाथके सहारेसे उठा कर पास ही मल मूत्र त्याग कराना चाहिये। ज्वर में परिश्रम करनेसे अनेक उपद्रव खड़े हो जाते हैं।

गरम पानी ज्वर में अच्छा है, इस से ज्वर में बड़ा लाभ होता है। शीतल जल ज्वर को बढ़ाता है; किन्तु गरम करके शीतल किया हुआ जल ज्वर को घटाता है।

यदि-लंघन करने से, गरम जल देने से और यवागू पीने से दोष न पचे; तो मुँह की विरसता, प्यास, अरुचि और ज्वर-नाशक तथा हृदय को हितकारी पाचन-रूपी क्वाथ पिलाना चाहिये। ज्वर के आरम्भ में लंघन यानी उपवास ही कराना चाहिये।

फस्त खुलवाकर या सींगी प्रभृतिसे खून निकाला जाता है, इस से शरीर हलका हो जाता है; पर यह काम भी सभी ज्वरों में नहीं किया जाता—ज्वर की विशेष अवस्थाओं में किया जाता है। जैसे,—रक्तगत ज्वर में खून निकलवाने की आज्ञा है।

अब यह बात खूब साफ हो गयी कि, लंघन के अनेक अर्थ होने या लंघन कई प्रकार के होने पर भी ज्वर में लंघन का मतलब उपवास से ही है। अब यह विचारना चाहिये कि लंघन से लाभ क्या होता है अथवा लंघन क्यों कराया जाता है।

लंघन क्यों कराया जाता है ?

भट्टी की आग हवा के झोंके से जब बाहर आने लगती है, तब उसके ऊपर रक्खी हुई कड़ाही की चीज़ एकदम पकतीही नहीं या अच्छी तरह नहीं पकती ; मनुष्य-शरीर में भी भट्टी की आग की तरह आग जलती है। उसकी गरमी जब दोषों के कुपित होने के कारण बाहर निकल जाती है, तब वह आहार को नहीं पचाती अथवा हलका अन्न खाया जाता है, तो धीरे-धीरे पचाती है। वह अग्नि दब जाती है या मन्दी हो जाती है। उस अग्नि को तेज़ करने के लिये ही लंघन-चिकित्सा की जाती है।

"चरक" में लिखा है—जीव की नाभि और छाती—इन दोनों के बीच में आमाशय है। आमाशय में ही चर्व्य, चोष्य, पेय और लेह्य, चारों प्रकार के आहारों का परिपाक होता है। खाये हुए भोजन का पाक होने पर रस और रस से खून बनता है। वह धमनियोंके द्वारा शरीरके भिन्न-भिन्न आशयोंमें पहुँचता है। इसी आमाशय से ज्वर की उत्पत्ति होती है।

"चरक और वाग्भट्ट" दोनोंमें ही लिखा है—दूषित हुए वातादि दोष, आमाशय में स्थित हो कर—ठहर कर, जठराग्नि को ढक कर, आम के साथ मिल कर शरीर के छेदों को ढक कर, ज्वर को उत्पन्न करते हैं। आम दोष के कारण से ज्वर होता है, इसलिये उस

आम दोष को पचाने के लिये, जठराग्नि को दीपन करने के लिये और शरीर के छेदों को खोलने के लिये ज्वर में लंघन कराते हैं।

लंघनसे लाभ।

"वंगसेन"में लिखा है :—

> लंघनेन क्षयं नीते दोषे संधुक्षितेऽनले।
> विज्वरत्वं लघुत्वं च क्षुच्चास्योपजायते॥

लंघन करने से वात आदि दोषों का क्षय होकर, जठराग्नि दीप्त होती है तथा ज्वरकी हीनता और लघुता होती है एवं भूख लगती है।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

> अनवस्थित दोषाग्नेर्लंघनं दोषपाचनम्।
> ज्वरघ्नं दीपनं कांक्षारुचि लाघवकारकम्॥

जिस मनुष्य के दोष और अग्नि ठीक नहीं होते, उस को यदि लंघन कराया जाता है, तो उसके दोष पच जाते हैं। लंघन ज्वर नाश करनेवाला, अग्निदीपक, कांक्षा और रुचि तथा हलकापन करनेवाला है।

तात्पर्य्य यह कि, लंघन करने से बढ़े हुए दोष क्षीण हो जाते हैं, जठराग्नि दीपन होती है ; इसलिए ज्वर नाश हो जाता है, शरीर हलका हो जाता है और भूख लगती है।

"शास्त्रों"में लिखा है :—

> आहारं पचति शिखी दोषानाहारवर्जितः।
> पचति दोषक्षये धातून्प्राणान्धातुक्षयेऽपिच॥

शरीर की अग्नि खाये हुए आहार को पचाती है। आहार

न होने से वात, पित्त और कफ को पचाती है, दोषों के क्षय होने पर धातुओं को पचाती है और धातुओं का क्षय होने पर प्राणों को पचाती है ; यानी प्राण नाश कर देती है ।

इस एक वाक्य में रोगनाशक तत्त्व भरा हुआ है। इसे हम रोग नाश करने का महामन्त्र कह सकते हैं। जब मनुष्य को ज्वर आता है, तब अक्सर भूख बन्द हो जाती है। वह भूख बन्द होना —अग्निका इस बातका इशारा है कि, मेरे ऊपर इतना बोझा पड़ा हुआ है कि, मैं दबी जाती हूँ। जब तक मैं इस बोझे की सफाई न कर चुकूँ, मेरे ऊपर और बोझा मत डालना। अगर बीमार इस इशारे को समझ लेता है और तदनुसार काम करता है, तो अग्नि कई दिन में रोग के कारण दूषित मल को जला डालती है। जब वह उस को जला डालती है, तब और ईंधन माँगती है और उसी समय मनुष्य को सच्ची भूख लगती है।

इस तरह भी समझिये :—प्रकृतिके हुक्म से अग्नि शरीर के यंत्रों को चलाती है, शरीर की पालना करती है और यंत्रों को साफ रखती है। जब उस को शरीर में शरीरनाशक कूड़ा करकट दिखाई देता है, तब वह भूख बन्द कर देती है ; यानी वह इशारतन कहती है,—तुम्हारी मूर्खता से घर में बहुतसा रोगीला मैला जमा हो गया है। पहले मैं इसे साफ करूँगी। जब तक मेरा इशारा न हो, मेरे ऊपर और बोझा मत डालना। उस समय यदि मनुष्य खाना बन्द कर देता है, लंघन करता है ; तो पचाने को आहार न होने से, फुरसतमें वह उस मैले को जलाती है ; क्योंकि उस का स्वभाव ही कुछ न कुछ जलाना है। जब वह रोग की जड़—मैले को जला कर भस्म कर देती है, तब फिर भूख लगती है। यह उसका इस बात का इशारा है कि, मैं मैले को जला चुकी, अब मेरे लिये हलका ईंधन दो ; क्योंकि मुझे उस मैले के जलाने में बड़ा ज़ोर लगाना पड़ा है और मैं थकी हुई हूँ ।

इस सब का मतलब यह है, कि जब तक अग्नि को आहार मिलता है, वह आहार को पचाती है ; जब शरीर में रोग हो जाता है, तब वह आहार पचाना पसन्द नहीं करती। पहले शरीर के दूषित अंशों - रोग के बीजों को जलाती है। जब इनको जला चुकती है, तब आहार रूपी ईंधन माँगती है। अगर समय पर वह नहीं पहुँचता, तो धातुओं को जलाती है ; धातुओं के जलनेसे प्राणी मर जाता है। परमात्मा ने कैसे-कैसे प्रबन्ध किये हैं! हमारे शरीर के भीतर ही हमारे रोगों को नाश करनेवाला वैद्य बैठा दिया है। अगर हम अपने शारीरिक वैद्य की बात सुनें, उसकी इच्छा के विरुद्ध न चलें, रोग होते ही खाना छोड़ दें यानी उपवास करें ; तो शीघ्र ही ज्वर से छुटकरा पा जायँ। उपवास का आरंभ आहार त्यागनेसे और अन्त सच्ची भूख से होता है। भूखों मरने का आरम्भ सच्ची भूख से और अन्त प्राणनाश से होता है। मतलब यह है, कि उपवास से कोई मर नहीं सकता, वरन फायदा ही उठा सकता है ; वशर्त्ते कि मनुष्य ठीक रीति से काम करे। कह चुके हैं कि, अग्नि पहले शरीर के ख़राब अंशों—दोषों को पचाती है। जब वे नहीं रहते, तब भूख लगती है। उस समय यदि मनुष्य हलका भोजन करता है, तब तो कोई हानि नहीं होती ; किन्तु यदि रोगीको उस समय भोजन नहीं दिया जाता, तो अग्नि शरीरके रक्तमांस प्रभृति धातुओंको पचाने लगती है। उनके भी शेष हो जानेपर प्राण-नाश कर देती है ; इसलिये उपवास तभी तक करना चाहिये, जबतक शरीरके दूषित अंश न ख़तम हों। दूषित अंशोंका ख़ात्मा होते ही भूख लगती है, तब अवश्य ही खाना चाहिये ; पर बहुत हलका भोजन करना चाहिये ; क्योंकि उस वक्त अग्नि कमज़ोर रहती है। अगर लँघन करने बाद, कोई बहुत भारी पदार्थ खालेगा, तो वह निश्चय ही फिर बीमार हो जायगा और मर भी जायगा। पाश्चात्य विद्वानोंका मत है कि, लंघनके बाद ज़ल्दी पचनेवाला पथ्य देना

चाहिये । जो लोग दूध पचा सकें, उन्हें दूध देना चाहिये ; जिन्हें दूध भी न पचे, उन्हें फलोंका रस देना चाहिये । हमारे यहाँ ऐसे मौके पर यवागू, पेया अथवा मंड वगैरःकी व्यवस्था है और ज्वरमें यही ठीक भी है, क्योंकि नवीन ज्वरमें दूध देना मना है ।

क्या सभी ज्वररोगियोंको लंघन कराने चाहियें ?
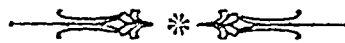
उपवास सभी रोगियोंको न कराना चाहिये । जिनकी सामर्थ्य घट गई हो, जिनमें हाड़मांसका ढेर रह गया हो, उन्हें भूलकर भी उपवास—लंघन न कराने चाहियें । क्योंकि यद्यपि लंघनसे आरोग्य लाभ होता है और रोगका नाश होता है, तोभी आरम्भमें शक्तिका ह्रास ही होता है । शक्ति या बलका घटना बुरा है । रोग रहे न रोगी, ऐसा काम करना महामूर्खता है ।

"वंगसेन"में लिखा है :—

> वलाविरोधेनाऽथैनं लंघनेनोपपादयेत् ।
> वलाधिष्ठानं आरोग्यं यदर्थोहि क्रियाक्रमः ॥

वैद्यको लंघन इस तरह कराने चाहियें, जिससे रोगीका बल न घटे ; क्योंकि बलके अधीन ही आरोग्यता है और उस आरोग्यताके लिये ही इतने काम किये जाते हैं । जिनमें लंघन सहने योग्य बल हो, उन्हींको लंघन कराने चाहियें । पुराने ज्वरवालों और क्षयरोगवालोंमें बल नहीं रहता, उनका रक्तमांस सूखजाता है, कफक्षय हो जाता है और वायुका कोप हो जाता है ; इसलिये ऐसोंको लंघन कराना मारना है । पाश्चात्य विद्वान् भी लिखते हैं, जिन लोगोंकी जीवनीशक्ति क्षीण होगई हो, उनको लंघन नहीं कराने चाहियें ।

लंघन निषेध ।

लोग भूल न करें, इसलिये हमारे महर्षियोंने लंघनके अयोग्य रोगियोंका खुलासा कर दिया है ।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

तन्निमारुत तृष्णा क्षुन्मुखशोष भ्रमान्वितैः।
न कार्यं गुर्विणी बालवृद्ध दुर्बल भीरुभिः।
न क्षयाध्व श्रमक्रोध काम शोषचिरज्वरी॥

वातज्वरवाले, प्यासवाले, भूखे, मुँह सूखनेके रोगवाले, भ्रमरोगी, गर्भवती स्त्री, बालक, बूढ़े, बलहीन यानी कमज़ोर, डरे हुए, धातुक्षय-वाले, क्षयरोगी, बहुत रास्ता चलनेसे थके हुए, मिहनत करके थके हुए, क्रोधी, कामपीड़ित, शोषरोगी और बहुत दिनोंके ज्वरवाले—इनको लंघन नहीं कराने चाहिँ।

नोट—"चरक"में लिखा है, वातज, परिश्रमसे हुए, पुराने और क्षयसे हुए ज्वर और तपेदिक़में लंघन हितकारी नहीं हैं। इन ज्वरोंमें शमन औषधियों से इलाज करना चाहिये।

हारीत कहते हैं,—वेलाज्वर, भूतज्वर, श्रमज्वर, क्रोधज्वर, भयज्वर और कामज्वरमें लंघन कराना मना है। बालक, बूढ़े, दुबले, क्षीण, अतिसार रोगी, घाव रोगी, गर्भवती और नाज़ुक,—इनको भी लंघन मना है।

वातज्वर रोगीका वायु आमरहित हो, तो लंघन नहीं कराने चाहियें; किन्तु यदि वायु आमसहित हो, तो अवश्य लंघन कराने चाहियें; क्योंकि वातज्वरमें आम * के पचानेके लिये लंघन कराये जाते हैं।

फ़र्क़ इतना ही है कि, जिस तरह कफमें आमके पक जानेपर भी लंघन कराये जाते हैं, उस तरह वातमें आमके पक जानेपर लंघन नहीं कराये जाते। इसकी वजह यह है कि कफ और पित्त तो पतले होनेके कारण बहुतसे लङ्घनोंको सह सकते हैं; किन्तु वायु तो आमके पच जाने पर क्षण भर भी लङ्घन नहीं सह सकता।

---

* आहारका साररूप रस जब अग्निकी मन्दतासे नहीं पचता, तब उसेही "आम" कहते हैं; अर्थात कच्चे रसको आम कहते हैं। कोई अन्नके कच्चे रसको "आम" कहते हैं, कोई मल-समूहको "आम" कहते हैं, कोई दोषोंकी पहली दुष्टताको "आम" कहते हैं और कोई अपक्व—कच्चा, मलसे अलग रहनेवाला, बदबूदार, बहुत चिकना और सब शरीरको पीड़ित करनेवाला जो पदार्थ है, उसे "आम" कहते हैं। उस आमसे मिले हुए दोष और दूष्य तथा उन दोष और दूष्योंसे पैदा हुए रोग को "साम" कहते हैं।

भ्रम और मुखशोष में भी जो आमसे रहित होते हैं, तो लंघन नहीं कराते ; किन्तु यदि आम-सहित होते हैं, तो अवश्य लंघन कराते हैं । *

इसी तरह गर्भवती, बालक + और बूढ़े वगैरः को भी, अगर आमसे रहित होते हैं, तो लंघन नहीं कराते ; किन्तु यदि आम-सहित होते हैं, तो अवश्य लंघन कराते हैं ।

सूचना—जिन लोगोंको लंघन कराना मना है, उनलोगोंकी चिकित्सा करते समय, विशेष करके, इस बातकी परीक्षा कर लिया करो, कि दोष साम—आम-सहित हैं या निराम—आम-रहित हैं। साम-निराम वायु, पित्त और कफके लक्षण नीचे फुटनोटमें लिखे हैं। §

---

* आम दोष से ही ज्वर होता है। उपवास करनेसे आम नष्ट होता है ; इसीसे ज्वरमें उपवास कराते हैं। लेकिन वातज्वरमें उपवास सहन नहीं होता, इससे चिकित्सामें विरोध होता है। वातज्वरमें लंघन घटता नहीं और ज्वरकी आम अवस्थामें लंघन कराना ज़रूरी है। इस विरोधके कारण, वातज्वरमें 'वत्सनाभविष' काममें लाया जाता है, क्योंकि वह आम दोष नाशक और वात-नाशक है। वत्सनाभविष देनेसे वातज्वर सुखसाध्य होता है।

+ पाश्चात्य विद्वान् कहते हैं कि, लंघनसे बालकको जितना लाभ होता है, उतना बड़ेको नहीं होता। दूधपीनेवाले बच्चे से १५ साल तकके बच्चेको उपवास बहुत ही हितकर है। ऐसे बालकोंकी छोटी बीमारियाँ केवल उपवाससे ही निर्मूल हो जाती हैं। बालकोंको दवा देना अच्छा नहीं। बालकमें एक ऐसी शक्ति है, जिससे वह अपना रोग आप नाश कर सकता है। दूध पीनेवाले बच्चोंको जो रोग होते हैं, वे माता पिताके दोषसे होते हैं।

§ <u>साम वायुके लक्षण</u>—सामवायु मलको रोकती है, अग्निको मन्द करती है, तन्द्रा और आलस्य करती है, आँतों में आवाज़ करती है ; क्रमसे वेदना, सूजन, तोड़नेकी सी पीड़ा करती है और कुपित हुई साम वायु एक ही समय आम सहित सारे अङ्गोंमें विचरती है और सब अङ्गोंको पकड़कर पीड़ित करती है तथा घी तेल प्रभृति चिकने पदार्थोंसे, वर्षाकाल, सूर्योदय और रातके समय बढ़ती है।

<u>निराम वायुके लक्षण</u>—निराम वायु स्वच्छ, रूखी, दुर्गन्धरहित और बहुत थोड़ी पीड़ा करनेवाली होती है। अपनेसे विपरीत गुणोंवाले पदार्थोंसे, विशेषकर तेल घी प्रभृति चिकने पदार्थोंसे, शान्त होती है।

लंघनसे रोगोत्पत्ति।

लंघनके रोगनाशक होनेपर भी, नियम-विरुद्ध लंघन कराने या जिनको लंघन कराना मना है, उनको लंघन करानेसे अथवा उचितसे अधिक लंघन करानेसे उल्टा रोग पैदा होता है। "चरक"में लिखा है कि, लंघनसे देहकी अग्नि, वल, वर्ण, ओज, शुक्र, मांस और वल, इनका क्षय होता है। ज्वर, खाँसीका अनुवन्ध, पसलीका दर्द, अरुचि, सुननेकी शक्तिका कम होना, उन्माद, प्रलाप—वृथा वकना, हृदयमें दर्द, मलमूत्रकी रुकावट; जाँघ, उरु और त्रिक-स्थानमें शूल; पोरुए, हड्डी और शरीरके जोड़ोंमें फूटनी और उर्ध्व-वात—ये सव तथा औरभी वातरोग लंघन करनेसे होते हैं।

अति लंघनके दोष।

उचितसे अधिक लंघन करनेसे फूटनी, शरीर टूटना, खाँसी, मुँहका सूखना, भूखका न लगना, प्यास लगना, आँखों और कानों का कमज़ोर होना यानी कम दीखना और कम सुनाई देना, वारंवार डकार आना, मनका व्याकुल होना, सदैव उर्ध्ववात, हृदयका मोह, शरीर और अग्निके वलका नाश,—ये सव दोष होते हैं।

हीन लंघनके लक्षण।

कफ वमनकी तरह निकलनेको तैयार हो, वारंवार उवाकियाँ आवें, रोगी वारम्वार कफ थूके, कफसे कण्ठ जकड़ा हो और तन्द्रा

<u>सामपित्तके लक्षण</u>—साम पित्त खट्टा, वदवूदार, हरा, भारी, कण्ठ और हृदयमें खटाईकी तरह दाह करनेवाला श्यामतायुक्त और स्थिर होता है।

<u>निराम पित्तके लक्षण</u>—निराम पित्त लाल, वहुत गर्म, चरपरा, दस्तावर, वदवूदार, रुचिकारक, जठराग्नि और वलको वढ़ानेवाला होता है।

<u>सामकफके लक्षण</u>—साम कफ मैला, रेशेदार, गाढ़ा, कण्ठको पकड़नेवाला, वदवूदार तथा भूख और प्यासको नाश करनेवाला होता है।

<u>निरामकफके लक्षण</u>—निराम कफ वदवूदार, झागोंदार, खण्डित, गांठदार, पाण्डुरंगका और मुखकी विरसता को नष्ट करनेवाला होता है।

हो; यानी आँखें मिची जाती हों—ये सब हीन लंघनके लक्षण हैं। इन लक्षणोंसे समझना चाहिये कि, अभी लङ्घन ठीक नहीं हुए, कसर है।

उत्तम लंघनकी पहचान।

अधोवायु और मलमूत्रका अच्छी तरहसे निकलना, शरीरमें हलकापन; हृदय, डकार, कण्ठ और मुँहका शुद्ध होना; तन्द्रा और ग्लानिका नाश, पसीने आना, रुचि होना, भूख प्यासका एक साथ लगना, अन्तःकरणमें किसी तरहकी तकलीफ न होना,—ये लक्षण उत्तम लङ्घनोंके हैं। ये लक्षण हों या दो एक लक्षण कम भी हों या सारे लक्षण एक साथ हों; तो समझ लो कि लङ्घन ठीक हुए। ये लक्षण उस समय होते हैं, जब अग्नि शरीरके ख़राब अंशों—रोगके कारणों—को पचा डालती है।

लंघन-कालमें कष्ट।

ज्योंही लङ्घन आरम्भ कराये जाते हैं, रोगीको बड़ा कष्ट मालूम होता है—नींद नहीं आती, रोगी तड़फड़ाया करता है। इन बातोंसे घबराना न चाहिये। हमारे शरीरकी रक्षक अग्नि तथा शरीरके अन्यान्य अङ्गोंको—दूषित दोषों, रोगके बीजों अथवा रोगसे बड़ा भारी युद्ध करना पड़ता है, इसलिये गड़बड़ी फैल जाती है और रोगीके कष्ट बढ़ने लगते हैं। इन कष्टोंको देखकर यह समझना चाहिये कि, रोग नाश हो रहा है। ज्यों ज्यों विकार नाश होते जाते हैं, रोगीकी दशा भी सुधरती जाती है। उस समय जो बदबूदार पसीना निकलता है, वह शरीरके विकार निकलनेका चिह्न है। होठों और जीभपर छालेसे भी हो जाते हैं। जिनका पित्त कुपित होता है, उन्हें बड़ी तकलीफें होती हैं, उबाकियाँ आती हैं,और क़य भी हो जाती हैं।

ये सब सुलक्षण हैं, इनको विकारोंका बाहर निकलना समझना चाहिये। जितनाही विकार ज़ियादा होता है, उतना ही कष्ट अधिक होता है। ऐसी हालत होनेपर, रोगीको तसल्ली देनी चाहिये।

लङ्घनसे शरीरमें एक प्रकारका खिंचावसा होता है और रक्तसंचार कम होता है; इससे पैर शीतल हो जाते हैं। उस समय पैरोंको खूब गरम कपड़ेसे ढके रखना चाहिये। बोतलमें गरम जल भरकर, उस पर कपड़ा लपेटकर, पैरोंपर फेरना चाहिये। इससे पैरोंमें गरमाई आकर फौरन नींद आ जाती है। नींद आनेके उपाय हम आगे औरभी लिखेंगे। ज़रूरत होनेमे, उनसे भी काम ले सकते हो। लङ्घन या उपवासकी हालतमें नींद न आवे, तो कोई हानि नहीं; क्योंकि उपवासकी दशामें शारीरिक शक्तियोंको कोई काम नहीं करना पड़ता।

लंघन करानेके निय

सभी आचार्य्योंने ज्वर आते ही, ज्वरके शुरूमें, लङ्घन करानेकी सलाह दी है। इसमें कहीं मतभेद नहीं है। यह व्यवस्था है भी सर्वोत्तम। ज्वर आते ही अगर रोगीका खाना बन्द कर दिया जाय, तो जठराग्नि ख़राब मल या दोषोंको पचाने लगती है। उससे जब ज्वर हलका हो जाय, शरीरका भार कम हो जाय; तभी पाचन, संशमन औषधि और अन्न देना चाहिये। पर आजकल देखते हैं, कुछ वैद्य तो लङ्घनोंकी भरमार कर देते हैं और कुछ ज्वर आते ही ज्वरको शान्त करनेवाली औषधियाँ देते हैं। जो काम उन्हें जीर्णज्वर या क्षयज्वर प्रभृतिमें करना चाहिये, उसीको वे नवीन ज्वरमें करते हैं। जीर्णज्वर, क्षयज्वर, परिश्रमजन्यज्वर आदि ज्वरोंमें लंघन न कराकर पहले संशमन औषधि देनेकी रीति है, किन्तु नये बुख़ारमें तो सभी प्राचीन वैद्य लंघन करानेकी व्यवस्था कर गये हैं। इस बेक़ायदे

कामसे अव्वल तो बुखार विगड़ जाता है ; यदि पीछा भी छोड़ देता है, तो आगे चलकर फिर फिर कर आता है और मनुष्यको निकम्मा कर देता है। पाश्चात्य विद्वानोंका कहना है कि, दवासे इलाज करानेवालोंके रोग दवा छोड़ते ही फिर आ जाते हैं ; किन्तु उपवाससे जो रोग आराम हो जाते हैं, फिर कभी नहीं आते। पहलेके वैद्य उपवास प्रभृति कराकर बाक़ायदे चिकित्सा किया करते थे और आजकल की तरह रोगी भी चट रोटी पट दाल नहीं चाहते थे। पहलेके रोगी वैद्यराज पर विश्वास रखते थे और धैर्य्यसे काम लेते थे। आजकल तो यह हाल है कि, यदि आज किसीने दवा दी और आज ही ज्वर कम न पड़ा ; तो शामको ही डाक्टर साहब बुला लिये जाते हैं। वे आते ही दवा दे ही देते हैं। यदि ज्वर उतर गया तब तो खैर, नहीं तो दूसरे दिन फिर और डाक्टर बुलाये जाते हैं। इस तरह सप्ताहके सप्ताह घुला देते हैं ; पर जिससे उनका सदाको भला हो, वह काम पसन्द नहीं करते। रोगियोंका यह हाल देखकर, विद्वान् वैद्य भी, अपनी रोज़ी मारे जानेके भयसे, बेक़ायदे इलाज करने लग गये हैं। अनेक वैद्य तो नामको आयुर्वेदीय चिकित्सा करते हैं, अङ्गरेजी दवाइयाँ ला ला कर रोगियोंको देते हैं। एकही रोगमें देशी विदेशीकी खिचड़ी बना देते हैं। संकर क्रियाका भी विचार नहीं करते। इसीसे आजकल रोगी और डाक्टरोंकी भरमार हो रही है। लोग सदा ही किसी न किसी रोगमें गिरफ्तार रहते हैं।

"चरक"के विमान स्थानमें लिखा है,—"आमदोष होनेसे, पहले रोगीको लंघन कराना चाहिये, जिससे बीमारीके पहलेका किया हुआ आहार पच जाय। इसके बाद जब अन्न देनेका समय हो, उस वक्त भी अगर वैद्य देखे कि, आमाशय दोषोंसे लिप्त है, कोठा आर्द्र और भारी है तथा रोगीकी इच्छा खानेकी नहीं है, अन्न पर अरुचि है, तो समझ ले कि अभी दोष बाकी हैं। उस हालतमें शेष

दोषोंके पचानेके लिये और अग्नि दीप्त करनेके लिये कोई अग्नि-दीपन करनेवाली दवा दे; पर अजीर्ण रहनेपर, पहलेके दोष न पकनेपर, पाचन औषधि न दे। क्योंकि आम दोषसे ढकी हुई जठराग्नि औषधि और आहारसे पैदा हुए आम—इन दोनोंको एक ही समयमें पचा नहीं सकती। अगर कोई ऐसा करता है, विना पहलेके आहारके पचे या आमदोषके पचे पाचन प्रभृति देता है; तो आम, आहार और औषधि तीनोंका गोलासा बँध जाता है। उससे भयङ्कर मन्दाग्नि रोग हो जाता है और कमज़ोर रोगी मर जाता है।" पाठको! अब तो आप लङ्घन कराने और न करानेके लाभ-हानिको अच्छी तरह समझ गये होंगे। हमेशा याद रक्खो! जठराग्नि जितना पचा सके, उससे उतना ही पचवाओ; उसपर अधिक भार मत डालो; नहीं तो वह विल्कुल क्षीण या मन्दी हो जायगी और उसके मन्दी होनेसे आपका सारा सुख और जीवन नाश हो जायगा। जब ज्वर आजाय या और कोई ऐसाही रोग हो जाय; तब जठराग्नि को भगवान्के विधान-अनुसार, पहले रोगके कारण आम—आहारके कच्चे रस अथवा रोगके बीजको पचाने दो। जब वह उसे पचा ले, तब आप उसे और काम सौंपें।

अनेक वार देखते हैं, बुद्धिमान् लोग ज्वर आनेके आसार देखते ही उपवास करने लगते हैं। मामूली ज्वर या थोड़े से दोष, उपवाससेही नाश हो जाते हैं। उन्हें दवा खानेकी ज़रूरत ही नहीं होती। बहुत से रोगोंमें, ख़ासकर बुख़ारमें, उपवास करानेसे चिकित्सामें सहजमेंही सफलता मिल जाती है। "चरक"में लिखा है, थोड़े दोषवाले को लंघन कराना ही उचित है। हवा और धूपसे जिस तरह थोड़ासा पानी सूख जाता है; उसी तरह लंघन करनेसे, जठराग्नि और वायुकी वृद्धि होकर, थोड़ेसे दोष भी सूख जाते हैं। जिस तरह सूरजकी धूप, वायु और धूल—इन तीनोंसे मध्यम (न बहुत न कम) जल सूख जाता है; उसी तरह लंघन द्वारा बढ़ी हुई अग्नि और

वायु तथा पाचनसे मध्यम (न कम न ज़ियादा) दोष सूख जाते हैं। मतलब यह है कि, नीचे दर्जे के और बीचके दर्जेके दोष तो केवल लंघन—उपवाससे ही, बिना किसी दवाके, नाश हो जाते हैं। दोषोंसे ही ज्वर होता है ; जब लंघनसे दोष नाश होजाते हैं, तब ज्वर कहाँ से रहेगा ? इसलिये ऐसा समझनेमें कोई दोष नहीं, कि लंघनसे हलका और लंघन तथा पाचनसे बीचके दर्जे का ज्वर ही नाश हो जाता है। अगर ज्वरके आरम्भसे ही नियमानुसार लंघन और पाचन की व्यवस्था की जाय, तो दोष बढ़ें ही क्यों ? इसीलिये शास्त्रोंमें लिखा है,—"दोषेऽल्पे लंघनं पथ्यं, मध्ये लंघनपाचनम् ।" दोष अल्प हों तो लंघन कराना चाहिये ; मध्यम हों तो लंघन कराना और पाचन देना चाहिये। थोड़े दोषोंमें अकेला लंघन ही काम कर लेगा ; यानी थोड़े दोषोंको अकेला उपवास ही मार लेगा। अगर दोष ज़ियादा हों न कम हों, बीचके हों, तो वहाँ उपवास और उसका भाई पाचन—दोनों फतह हासिल कर लेंगे, क्योंकि पाचन भी तो लंघन ही है। इस तरह दोषोंके अत्यन्त बढ़नेकी नौबत ही न आवेगी। अगर पहले ही यानी ज्वर आते ही लंघन वगैरःकी ठीक व्यवस्था न होनेसे दोष अत्यन्त बढ़ गये हों, तो उस दशामें शोधन यानी वमन विरेचन से काम लेना चाहिये ; क्योंकि एक साथ ही तो दोष बढ़ नहीं जाते, कुछ समय अवश्य लगता है। उस अवस्थामें दोषोंका पक जाना भी सम्भव है। पके हुए दोष कोठेमें ठहर कर भयानक व्याधियाँ करते हैं ; इसलिये यदि दोष पककर कोठेमें ठहर गये हों, बुख़ार बहुत दिनोंका न हो तोभी, उन दोषोंको वमन विरेचनादिसे निकाल देना ही बुद्धिमानी है। अगर वे न निकाले जायँगे, तो विषम ज्वर प्रभृति रोग पैदा करेंगे। अत्यन्त बढ़े हुए दोषोंको लंघन क़ाबूमें नहीं कर सकते ; दूसरे लंघनोंमें देर लगेगी ; देर होनेसे अनर्थ होनेका भय है ; इसीसे वमन विरेचन आदि क्रियाकी आज्ञा दी गई है।

इस मौकेपर शोधन—वमन, विरेचन, निरूहण वस्ती तथा शिरोविरेचनमें भी बुद्धिसे काम लेनेकी ज़रूरत है। अगर रोगी ताक़तवर हो और ज्वर कफसे हुआ हो, तो वमन कराकर दोष निकालने चाहियें। अगर पित्तप्रधान ज्वर हो, कोठा बड़ा हो, तो जुलाब देना चाहिये। अगर वेदना सहित वातज्वर हो यानी वातज्वर उदावर्तयुक्त हो, तो निरूहण वस्ती—गुदाकी पिचकारी-द्वारा मल निकाल देना चाहिये। अगर सिरमें कफ भरा हो, कफके मारे सिरमें दर्द और भारीपन हो,तो शिरोविरेचन—सिरका जुलाब—देना चाहिये, अर्थात ऐसी नस्य या सूँघनी देनी चाहिये, जिससे सिर का कफ निकलकर सिर हलका हो जाय। इस संशोधन-कर्ममें बुद्धिमानीकी बात यही है कि, रोगीका बलाबल देखना चाहिये। बलाबलके अनुसार ही हलका या बीचका जुलाब या वमन करानेवाली दवा देनी चाहिये। कमज़ोर रोगीको वमन विरेचन मार देते हैं। कफसे हुए ज्वरमें जुलाब नहीं देना चाहिये और पित्तज्वरमें वमन नहीं करानी चाहिये। दोष और बलके अनुसार काम करना चाहिये।

लंघनादिका क्रम।

—※※※—

ज्वरादौ लंघनं प्रोक्तं ज्वरमध्येतु पाचनम्।
ज्वरान्ते भेषजं दद्याज्ज्वरमुक्ते विरेचनम्॥ आत्रेय।
तरुणं तु ज्वरे पूर्वं लंघनेन क्षयं नयेत्।
आमदोषं लिंगात् वा लंघयेत्तं यथाविधि॥ चक्रदत्त।

ज्वरके आदिमें लंघन कराना चाहिये, ज्वरके मध्यमें पाचन देना चाहिये, ज्वरके अन्तमें औषधि देनी चाहिये और ज्वरमुक्त होने पर जुलाब देना चाहिये। चक्रदत्त महोदय कहते हैं,—"नवीन ज्वरको पहले लंघनोंसे क्षय करना चाहिये। यदि आम—कच्चे दोषके लक्षण नज़र आवें अथवा साफ नज़र न आवें, तो यथाविधि काम करना चाहिये।

अगर दोष अल्प हो तो लंघन कराना चाहिये, दोष मध्यम हो तो लंघन कराना चाहिये और पाचन भी देना चाहिये, अगर दोष अत्यन्त बढ़े हों, तो वमन विरेचन आदिसे शोधन करना चाहिये; क्योंकि वमन विरेचन आदिसे दोष जड़से नष्ट हो जाते हैं।

वायु सात दिन लंघन करनेसे पचता है, पित्त दश दिन लंघन करनेसे और कफ बारह दिन लंघन करनेसे पचता है।

लंघन करने लायक़ ज्वररोगीको, दोषानुसार, तीन रात, एक रात और एक दिन-रात लंघन कराना चाहिये। वायुरहित स्थानमें रखकर, पसीने निकालकर या बफारा देकर, लंघन कराकर और गरम जल पिलाकर, आमज्वर * को क्षीण करके, पीछे औषधि सेवन करानी चाहिये।

लंघन करनेसे जिसके दोष नष्ट हो जायँ, उसके बाक़ी रहे हुए दोषोंको पचानेके लिये और अग्नि दीपन करनेके लिये "यवागू" पिलानी चाहिये अथवा शालि या साँठी चावल और मूँगका यूष देना चाहिये।

नोट—जिनको यवागू अहित है, उनको यवागू न देनी चाहिये। इसी तरह यूष वगैर: भी दोषानुसार विचारकर देने उचित हैं।

---

* हृदयमें उचेड़ सी हो, तन्द्रा हो, मुँहसे लार गिरे, अरुचि हो, दोषोंकी स्थिरता, आलस्य, क़ब्ज ये सब हों, पेशाब ज़ियादा आता हो, पेट भारी हो यानी अफारा हो, पसीना न आता हो, पाख़ाना ठीक पककर न आता हो, बेचैनी हो, चमकनींद हो, शरीर जकड़ा हुआ और भारी हो, थोड़ी ग्लानि हो, ज्वरका वेग निश्चल और बलवान हो.—इन लक्षणोंसे बुद्धिमान्को जान लेना चाहिये कि "आमज्वर" है। आमज्वरकी अवस्थामें दवा और अन्न न देने चाहियें। आम ज्वरमें लंघन करानाही हित है।

विरामज्वर—भूख थोड़ी लगे, शरीरमें हलकापन हो, श्रमसे शिथिलता हो, भ्रम और ज्वरका वेग—इनसे रोगी पीड़ित हो, शरीरके भीतर दाह हो, लाल पेशाब होता हो.—अगर ये लक्षण हों तो समझो कि ज्वर उतरनेवाला है। ये विराम ज्वरके लक्षण हैं।

अगर रोगीने लंघन मध्यम किये हों ; तो पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ) को यवागू बनाकर पिलानी चाहिये। लंघनकी दशामें यवागू या मूँग वगैरःका यूष देना अच्छा है ।

जिस रोगीने अत्यन्त लंघन किये हों,—उसको दाख, अनार, खजूर, चिरोंजी और फालसेसे तृप्त करना चाहिये। ये फल अत्यन्त हितकारक हैं। जो रोगी तर्पण कराने योग्य हों उनको, ज्वरकी शान्तिके लिए, तर्पण अवश्य कराना चाहिये।

जब तक दोष निश्चल रहें—जबतक रोगी दोषोंसे व्याप्त रहे तब-तक लंघन कराने चाहिएँ ; पीछे औषधि और अन्नादिका संसर्ग कराना चाहिए ; अर्थात् लघु पथ्य देना चाहिये।

लंघन इस तरह कराने चाहिएँ ; जिससे बलका नाश न हो ; क्योंकि आरोग्यता बलके अधीन है और आरोग्यताके लिये ही चिकित्सा की जाती है। अँधाधुन्ध लंघन कराना अच्छा नहीं ; यानी जो लंघन योग्य न हो, उसे लंघन न कराने चाहिएँ ।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

कृशंचैवाल्पदोषंच शमनीयैरुपाचरेत्।
उपवासे बलस्यं तु ज्वरे संतर्पणोत्थिते॥

अगर रोगी कमज़ोर या दुबला हो और उसके दोष भी कम हों ; तो उसे शमनीय यत्नोंसे ही आराम करना चाहिए—यानी लंघन न कराकर रोगनाशक दवा देनी चाहिए। अगर रोगी बलवान हो तथा अति तर्पणसे ज्वर हुआ हो, तो उसका ज्वर लंघनोंसे ही शान्त करना चाहिये—यहाँ तक लिखा है। फिर भी ; आमज्वर हो तो २।३ लँघन कराते हुए, यवागू देते रहने या मूँगका यूष देते रहनेसे भय नहीं है। और भी लिखा है,—अगर रोगीकी अग्नि मन्द हो, साथ ही प्यास हो, तो पतली यवागू देनी चाहिए। अगर रोगीको प्यास, दाह, वमन और गरमी बहुत हो और रोगी शराब पीता

हो, तो लाजातर्पण देना चाहिये। इसके पच जाने पर यूष-रस और भात देना चाहिए।

नवीनज्वरमें उपवास, स्वेदन क्रिया—बफारा प्रभृति देकर पसीने निकालना, समय, यवागू और कड़वे रस—ये सब बिना पके—कच्चे दोषोंको निकालते हैं। इससे साफ ज़ाहिर है कि, ज्वरमें लंघन करते हुए भी यवागू प्रभृति पथ्य देना उचित है।

जो ज्वर आमसंसृष्ट, कफजन्य और कफपित्तज हों; यानी जो बुख़ार, कफ या कफपित्तसे पैदा हुए हों और आमसंसृष्ट हों, उन्हीं में लंघन कराने चाहिये।

ज्वरमें लंघन कराते समय भी रोगीका जल बन्द न करना चाहिये, क्योंकि जल बिना मनुष्य मर जाता है। हाँ, ऐसे बहुतसे मौक़े हैं, जहाँ जल कम पीना चाहिए; पर एकदम मनाही किसी हालतमें भी नहीं है।

उपवास जितने ज़ियादा दिनों का हो, उस पर, भोजनके समय, भोजन उसी परिमाणसे हलका और कम देना चाहिए। उपवाससे दुर्बल रोगीको भारी भोजन मार डालता है। हमारे यहाँ जो यवागू अथवा यूष वगैरः की आज्ञा है, वह उत्तम है। यवागू और यूष बहुत हलके और ज्वरनाशक हैं। उपवास या लंघन रोगोंको शरीरसे निकालनेकी सर्व्वोत्तम क्रिया है; इसलिये उपवासकालमें मन को बिगाड़ना न चाहिए। ज्वर और लंघनके कष्टोंसे घबराना न चाहिये। ज्योंही दोष पच जायँ, शरीर हलका हो जाय, भूख लगने लगे—अच्छा फल हुआ समझना चाहिए। दोष पच चुकनेपर, फालतू उपवास न कराने चाहिएँ। इस बातको हमेशा याद रखना चाहिये; कि उपवासका आरम्भ भोजन त्यागनेसे और अन्त वास्तविक भूखसे होता है। जबतक खूब भूख न लगे, खानेको न देना चाहिए; क्योंकि दोषोंका नाश हुए बिना भूख नहीं लगती। कहा है:—

नहि दोषक्षये कश्चित् सहेत लंघनादिकम्।

दोषके क्षय होने पर कोई लंघन आदिको नहीं सह सकता। इससे स्पष्ट है कि, भूखका लगना दोप-क्षय होनेकी निशानी है। जब तक भूख न लगे, हवा न खुले, दोषोंका ज़ोर हो, तभी तक लंघन कराना उचित है। लंघनकी हालतमें भी, बलरक्षाके लिये यवागू प्रभृति देनेकी हमारे आयुर्वेदमें आज्ञा है।

ज्वरमें कमसे-कम पहले तीन दिन तो उपवास करना ही ज़रूरी है। उन तीन दिनोंमें किसी तरहके काढ़ेका जल या दवा हरगिज़ न देनी चाहिए। कहा है :—

ज्वरस्य प्रथमोत्थाने लंघनं च दिनत्रयं।
न देयं क्वथितं वारि न च भेपज्य दापयेत् ॥

ज्वरके आरम्भमें ही कोई दवा देना ज्वरको बिगाड़ना है। रोगीके भूखा-भूखा चिल्लाने पर ख़याल करना चाहिये, कि दोष पक तो नहीं गये, अनेक बार दोष अपने समयसे पहले भी पक जाते हैं। पित्तज्वरका दोष शीघ्र ही पक जाता है। कभी कभी वातकफज्वर भी समयसे पहले पक जाता है। हारीतने तो पित्तज्वरमें लंघन कराना भी मना किया है। मतलब यह है, कि भूख लगने पर रोगीको हलका भोजन देना चाहिये, क्योंकि भूख लगनेपर भोजन न मिलनेसे जठराग्नि रोगीके शरीरकी धातुओंको जलावेगी, इससे रोगी कमज़ोर होकर मर जा सकता है।

इसीसे "धन्वन्तरिजी" कहते हैं—

ये गुणा लंघने प्रोक्तास्ते गुणा लघु भोजने।

जो गुण लंघनमें हैं, वेही गुण हलके भोजनमें हैं।

इसीसे "वङ्गसेन"में लिखा है :—

ज्वरितं ज्वरमुक्तं वा भोजयेल्लघु भोजनम्।
श्लेष्मक्षये प्रवृद्धोष्मा बलवाननलस्तदा।
वेगापायेऽन्यथा तद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम् ॥

ज्वरितो हितमश्नीयाद्यद्यप्यस्याऽरुचिर्भवेत् ।
अन्नकाले ह्यभुञ्जानः क्षीयते म्रियतेऽथवा ॥

जिसे ज्वर आता हो अथवा जिसका ज्वर छूट गया हो, उसे अवश्य हलका भोजन देना चाहिये ; क्योंकि कफके क्षय होनेसे गरमी बढ़ती है और जठराग्नि तेज़ हो जाती है। उस अवस्थामें दोष वेगको प्राप्त होकर ज्वरके वेगको बढ़ाते हैं। इसवास्ते ज्वररोगीको यदि अरुचि भी हो, खानेकी इच्छा न हो ; तोभी हितकारी पदार्थ खिलाने चाहियें ; क्योंकि अन्नके समय, भोजन न करनेसे ज्वररोगी क्षीण होजाता है या मर जाता है और क्षीण रोगी असाध्य हो जाता है, इसलिए बलकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये ।

और भी कहा है :—

सर्वज्वरेषु सप्ताहं मात्रावद् भोजनंहितम् ।
अन्नकालेह्यभुञ्जानः क्षीयते म्रियतेऽथवा ॥

सभी ज्वरोंमें सात दिन तक बहुत हलका भोजन देना चाहिये, क्योंकि भूखके समय भोजन न मिलनेसे रोगी कमज़ोर हो जाता है या मर जाता है। इसलिये हलका पथ्य देनेमें हर्ज नहीं ; क्योंकि हलका भोजन और लंघन दोनों बराबर हैं।

सबका मतलब यही है कि ज्वरके आरम्भमें लंघन अवश्य कराने चाहिये। कम और ज़ियादा कराना दोषोंके पकनेपर मुनहसिर है। ज़रूरत होनेसे, समय देखकर, हलका भोजन अवश्य देना चाहिये, क्योंकि रोगीके बलकी रक्षा परमावश्यक है।

"हारीत-संहिता"में तो साफ ही कहा है :—

लंघिते चैव दोषे च यवागूपानमाचरेत् ।
शालिषष्ठिमुद्गञ्च यूषं शस्तं वदन्ति हि ॥

लंघन करता हुआ रोगी, दोषकी हालतमें भी, यवागू पीता रहे। शालि चाँवल, साँठी चाँवल और मूँगका यूष लंघनमें श्रेष्ठ है।

ज्वरमें जल ।

पहले लिख आये हैं कि, ज्वरके समय लंघनोंमें भी जल देना मना नही है ; क्योंकि प्यासके मारे वेहोशी होती है और वेहोशीसे प्राणनाश हो जाते हैं। प्यास वड़ी भयङ्कर है, प्यासेका प्राणनाश करनेवाली है ; इसलिये प्यासेको प्राणधारक जल अवश्य पिलाना चाहिये। ज्वररोगीको जल अवश्य पिलाना चाहिये, पर थोड़ा-थोड़ा पिलाना चाहिये और जलदी-दलदी वहुत-वहुतसा न पिलाना चाहिये। कहा है :—

जीविनां जीवनं जीवो जगत्सर्वं तु तन्मयम् ।
अतोऽत्यन्त निषेधेन न क्वचिद्वारि वारयेत् ॥

जल जीवोंका जीवन है ; सव जगत् जलमय है ; इसलिये किसी अवस्थामें भी जलकी अत्यन्त मनाही नहीं है। हाँ, अनेक अवस्थाओंमें जल थोड़ा-थोड़ा पीना चाहियें। अव यह सवाल उठता है कि, थोड़ा-थोड़ा जल किन-किन हालतोंमें पीना चाहिये ?

रोग जिनमें थोड़ा जल पीना चाहिये ।

"सुश्रुत"में कहा है :—

ज्वरे नेत्रामये कुष्ठे मन्देऽग्नावुदरे तथा ।
अरोचके प्रतिश्याये प्रसेके श्वयथौ क्षये ।
व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत् ॥

ज्वर, नेत्ररोग, कोढ़, मन्दाग्नि, उदर रोग, अरुचि, प्रतिश्याय—जुकाम, प्रसेक (मुँहमें जल भर-भर आना) सूजन, क्षय, व्रण (घाव) और मधुमेह—इन रोगोंमें थोड़ा-थोड़ा जल पीना चाहिये।

हारीत कहते है,—"सूतिका नारी और रक्तस्राववालेको भी पानी कम पीना चाहिये।" आप कहते हैं, —"परिश्रमसे थककर वहुत पानी पीनेसे गुल्म और शूल रोग होता है। भोजन पचने पर पिया हुआ पानी जठराग्नि नाश करता है। अजीर्णमें पानी पीना दवा है। भोजनके वीचका और पीछेसे (कुछ देर वाद खूब प्यास लगने पर) पिया हुआ पानी गुण करता है। रास्ता चलकर थका हुआ, भूखा, शोकग्रस्त, गुस्सेसे भरा हुआ, रोगसे पीड़ित और विषम आसनपर बैठा हुआ मनुष्य जल पीता है, तो रोग होता है। तवियत खुश होने पर भी थोड़ा जल पीना चाहिये। भोजनके आदिमें पिया जल मन्दाग्नि करता है, भोजनके वीचमें पिया अमृत है और भोजनके अन्तमें पिया जल कष्टसे पचाता है तथा मुटापा करता है और आमाशयसे ऊपर कफ पैदा करता है।

ज्वर प्रभृतिमें अधिक जल पीनेसे हानि।
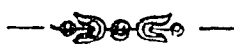
अतियोगेन सलिलं तृष्यतोऽपि प्रयोजितम्।
प्रयाति श्लेष्मपित्तत्वं ज्वरितस्य विशेषतः॥

प्यासा आदमी अगर जरूरतसे ज़ियादा जल पीता है, तो वह जल कफपित्त हो जाता है। अगर ज्वररोगी अधिक जल पीता है, तो वह, विशेषकर, कफपित्त हो जाता है।

नवीन ज्वरमें शीतल जल निषेध।

नये ज्वरमें शीतल जलको मनाही इसी कारणसे है कि, नये ज्वरमें शीतल जल पीनेसे ज्वर बढ़ जाता है; इसलिये नवीन ज्वरमें कच्चा शीतल जल न पीना चाहिये—औटाकर और शीतल करके पीना चाहिये। कच्चे शीतल जलसे ज्वर वढ़ता है, किन्तु गरम करके शीतल किये हुए जलसे ज्वर घटता है।

"चरक"में लिखा है,—ज्वर आमाशयसे पैदा होता है। पाचन, वमन, और लंघनादि कर्म आमाशयसे होनेवाले प्रायः सभी रोगों को शान्त करते हैं। ज्वर आमदोषसे होता है; इसीलिये आमके पचानेको गरम जल दिया जाता है। ज्वररोगी अगर गरम जल पीता है, तो वह गरम जल वायुको अनुलोम करता है, अग्निको दीपन करता है, जल्दी पचता है, कफको सुखाता है और बड़ी खूबी यह है कि, थोड़ासा जल पीनेसे ही प्यास शान्त हो जाती है। परन्तु गरम जल, उत्तम होनेपर भी, कुछ रोगोंमें बड़ा नुकसान करता है; इसलिए जिन रोगोंमें शीतल जल न पीना चाहिये, गरम पीना चाहिये, उनमें गरम जल ही पीना चाहिये। जिन रोगोंमें शीतल जलसे लाभ हो और गरमसे हानि हो, उनमें शीतल जल ही पीना चाहिये।

रोग जिनमें शीतल जल न पीना चाहिये।
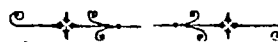
(गरम जल पीने योग्य रोगी)

नवज्वरे प्रतिश्याये पार्श्वशूले गलग्रहे।
सद्यः शुद्धौ तथाध्माने व्याधौ वातकफोद्भवे॥
अरुचि ग्रहणी गुल्म श्वास कासेषु विद्रधौ।
हिक्कायां स्नेहपानेच शीतं वारि विवर्जयेत्॥

नया बुखार, जुकाम, पसलियोंका दर्द, गलेका पड़ जाना, तत्काल वमन विरेचन ले चुकते ही, अफारा, वात और कफके रोग, अरुचि संग्रहणी, वायुगोला, श्वास, खाँसी, विद्रधि और हिचकी,—इन रोगोंमें तथा स्नेहपान करनेवालेको कच्चा शीतल जल न पीना चाहिये। इन रोगोंमें औटाकर शीतल किया हुआ जल पीना चाहिये। हारीत अजीर्णमें भी शीतल जलको बुरा कहते हैं।

नोट—"चरक"में लिखा है,—"अत्यन्त पित्तकोपके दाह, भ्रम, प्रलाप, और अतिसारयुक्त ज्वरोंमें गरम जल न देना चाहिये। इनमें गरम

जल देनेसे दाह, भ्रम, प्रलाप और अतिसार अत्यन्त बढ़ जाते हैं। इसके विपरीत शीतल क्रियासे शान्त होते हैं।" याद रखना चाहिये, प्रलाप दो तरहका होता है,—(१) वातकफका (२) पित्तका। वातकफ के प्रलापमें रोगीको होश नहीं रहता, वह बेहोशीमें बकता है; किन्तु पित्तके प्रलापमें रोगीको सब ज्ञान रहता है। पित्तके प्रलापमें ही गरम जल मना है।

रोग जिनमें शीतल जल पीना चाहिये।
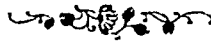
मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषु विषेरक्ते मदात्यये।
भ्रमश्रमपरीतेषु तमकेश्वयथौ तथा॥
धूमोद्गारे विदग्धेऽन्ने शोषे च मुखकण्ठयोः।
उर्द्ध्वगे रक्तपित्ते च शीतलाम्बु प्रशस्यते॥

"सुश्रुत"में लिखा है,—मूर्च्छा, पित्त, गरमी, दाह, विष, खूनके रोग मदात्यय रोग, भ्रम, श्रम, तमकश्वास, सूजन, धुएँकी डकार, भोजनकी विदग्ध अवस्था, मुखशोष, कण्ठशोष और उर्द्ध्वगत रक्तपित्त,—इनमें शीतल जल (बिना औटाया-कच्चा) ही हितकारक है। हारीत रक्तप्रमेहमें भी गरम जलको बुरा कहते हैं। चरक अत्यन्त पित्तकोप-युक्त दाह, भ्रम, प्रलाप (पित्तका प्रलाप) और अतिसारयुक्त ज्वरमें गरम पानीको हानिकर कहते हैं।

नोट—ज्वर सहित दाहादिक रोगोंमें गरम करके शीतल किया हुआ जल पीना चाहिये; किन्तु ज्वर रहित—अकेले दाहादिक रोगोंमें बिना औटाया कच्चा जल ही पीना हितकर है।

रोग जिनमें औटाकर शीतल किया जल पीना चाहिये
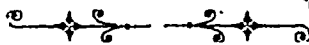
दाहातिसारपित्तास्रमूर्च्छामद्य विषार्तिषु।
मूत्रकृच्छ्रे पाण्डुरोगे तृष्णाच्छर्दि भ्रमेषु च॥
मद्यपान समुद्भूते रोगे पित्तोत्थिते तथा।
सन्निपातसमुत्थेषु शृतशीतं प्रशस्यते॥

दाह, अतिसार, पित्त, रुधिर-विकार, मूर्च्छा, मद्यपानसे हुआ रोग, विषसे पैदा हुआ रोग, मूत्रकृच्छ, पीलिया, प्यासरोग, वमन, श्रम, शराब पीनेसे हुए रोग, पित्तसे हुए रोग, सन्निपातसे हुए रोग—इन रोगोंमें औटाया हुआ जल शीतल करके देना चाहिये।

जल औटानेकी विधि।

—✻✻✻—

जो जल औटाते-औटाते धीरे-धीरे झागरहित और निर्मल होजाय, उस को औटा हुआ जल कहते है। औटाते समय जलपर ढकना न देना चाहिये। औटाये हुए जलको फिर न औटाना चाहिये। औटाया हुआ जल फिर औटानेसे विषके समान हो जाता है।

नोट—इसी तरह काढ़ा भी शीतल होनेपर, फिर औटानेसे विषके समान हो जाता है। कहा है:—

शृतशीतं पुनस्तप्तं तोयं विषसमं भवेत्।
निर्य्यूहोऽपि तथा शीतः पुनस्तप्तो विषोपमः॥

औटाये हुए जलके गुण और पीनेकी विधि।

"सुश्रुत"में लिखा है,—"वातकफज्वरवाले मनुष्यको, प्यासके समय, औटाया हुआ जल अत्यन्त हितकारी है। ऐसा जल अग्निको दीपन करनेवाला, कफको छेदन करनेवाला, वातपित्तको अनुकूल करनेवाला, दोष और शरीरके स्रोतोंको नर्म करनेवाला है; शीतल जलमें इस-के विपरीत गुण होते हैं।"

औटाकर शीतल किये जलके भेद।

जो जल औटानेके बाद ढक दिया जाय और अपने-आप शीतल होजाय, वह त्रिदोषनाशक, रूखा नहीं, सरदी न करनेवाला, हलका कृमि, प्यास और ज्वरनाशक है।

जो जल औटाकर धारा द्वारा शीतल किया जाता है, वह विष्टम्भ-कारक होता है।

जो जल हवा करके शीतल किया जाता है अथवा जिसे खूब बाहरी हवा लग जाती है, वह बड़ी मुश्किलसे पचता है।

औटाया हुआ बासी जल ख़राब ।

रातका औटाया हुआ जल दिनमें भारी हो जाता है और दिनका औटाया हुआ रातमें भारी हो जाता है, इसलिये रोगीको ऐसा जल न देना चाहिये। ऐसा जल त्रिदोषकारक, भारी, खट्टा पाक करने वाला और विष्टम्भकारी होता है। बासी जल सभी रोगोंमें अपथ्य या ख़राब है।

रातमें गरम जल ।

रातमें सेरका आध पाव, सेरका एक पाव, सेरका आध सेर अथवा योंही औटाये हुए जलको "उष्णोदक" कहते हैं। रातमें गरम जल पीनेसे कफ, वात, आम और मेद नष्ट होते हैं, अग्निदीपन होती है, वस्तिका शोधन होता है तथा श्वास, खाँसी और ज्वर नष्ट होते हैं।

जल पचनेकी अवधि ।

कच्चा जल एक पहरमें पचता है, औटाकर शीतल किया हुआ जल चार घड़ी या डेढ़ घण्टे में पचता है और औटाया हुआ किसी क़दर गरम जल दो घड़ी या पौन घण्टे में पचता है।

ऋतुभेदसे जल लेना ।

हेमन्त और शिशिरमें तालाबका जल हितकारी है। वसन्त और गरमीमें कुएँ, बावड़ी और झरनेका जल लेना चाहिये; वसन्त और गरमीमें नदीका जल न लेना चाहिये। वर्षामें ज़मीनके भीत-

रसे निकला, कुएँका और मेहका जल लेना चाहिये। शरद् ऋतुमें नदीका जल या अंशूदक जल लेना चाहिए। जिस जल पर दिनमें सूरजकी और रातमें चन्द्रमाकी किरणें पड़ती हों, वही "अंशूदक" है। यह जल त्रिदोषनाशक, ताक़तवर, निर्दोष, शीतल, रसायन, हलका और अमृतके समान है।

उष्णोदकके गुण।

जो जल औटाते-औटाते धीरे-धीरे झागरहित निर्मल—साफ हो जाय और आधा रहजाय, उसको "उष्णोदक" कहते हैं। यह उष्ण जल ज्वर, खाँसी, कफ, श्वास, वात पित्त, आम और मेदको नष्ट करता है। "उष्णोदक" पाचक और सदा पथ्य है।

आरोग्योदकके गुण।

जो जल औटाते-औटाते सेरका पाव रह जाय, उसे "आरोग्योदक" कहते हैं। यह सदैव पथ्य है। यह कफ, श्वास और खाँसीको नाश करता है तथा मलरोधक, अग्निदीपक, पाचक, हलका, अफारा, पाण्डु, शूल, बवासीर, वायुगोला, सूजन और उदररोग नाशक है।

ऋतुभेदसे जल।

गरमी और शरद् ऋतुमें सेरका पाव जल पीना चाहिये। कोई आचार्य्य गरमीमें सेरका आध सेर और शरद्में सेरका तीन पाव जल पीनेकी सलाह देते हैं।

हेमन्त, शिशिर वर्षा और वसन्तमें सेरका आध सेर जल पीना चाहिये। कोई कहते हैं, वर्षामें सेरका आधा पाव रखना चाहिये। कोई कहते हैं,—वर्षामें सेरका आठवाँ भाग रहा जल पीना चाहिये।

,,	शरदमें ,,	छठा	,,	,,
,,	शिशिरमें,,	पाँचवाँ	,,	,,
,,	वसन्तमें ,,	तीसरा	,,	,,
,,	गरमीमें ,,	आधा	,,	,,

इस तरह गरम जलके सम्बन्धमें वहुत मतभेद हैं। दोषोंकी उग्रता और हीनताके अनुसार जलकी कल्पना करनी चाहिये।

गरम जल सेरका तीन पाव —पित्तनाशक है।

,, ,, आध सेर—वातनाशक है।

,, ,, एक पाव—कफनाशक, मलरोधक और दीपक है।

औषधियोंका पानी।

कुछ रोगोंमें औषधियोंके साथ पकाया हुआ अथवा पानीको गरम करके उसमें दवा डाल कर वनाया हुआ पानी वहुत हित होता है। इसलिये वैसी अवस्थामें वैसा ही पानी देना चाहिए।

मद्यविकार, पित्तदोष और विष-पीड़ित मनुष्योंके लिए कड़वे द्रव्यों—दवाओं के द्वारा जलको औटाकर और शीतल करके पिलाना चाहिए। ऐसे रोगियोंको ऐसा ही पानी हितकर है।

तृषादिनाशक जल।

"सुश्रुत"में लिखा है,—"नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, धनिया ख़स और लालचन्दन,- इन छै दवाओंको एक जगह कच्चीही कूटकर, जलमें डालकर, ऋतुके अनुसार, पकाओ। पीछे शीतल करके, उपरोक्त मद्यविकार, पित्तविकार और विष-विकार-रोगियोंको दो। यह जल प्यास, दाह और ज्वरको शमन करता है। "चरक"में भी लिखा है,—"सब तरहके ज्वरोंमें, विशेषकर पित्त से और मद्यपानसे हुए ज्वरमें, प्यास और ज्वर शान्त करनेके लिये, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, ख़स, लालचन्दन, सुगन्धवाला और सोंठ,—इनको डालकर पकाया हुआ पानी देना चाहिये।

नोट—सुश्रुतमें धनिया लिखा है और चरकमें सोंठ लिखी है, इतनाही भेद है। सुश्रुतने अपने नुसख़ेको मद्यविकार, पित्तविकार और विषविकारवालोंके लिये अच्छा कहा है; किन्तु चरकने अपना

नुसख़ा सभी ज्वरोंमें, विशेष कर पैत्तिक और मद्यजनित ज्वरोंमें, देनेकी सलाह दी है।

इन नुसख़ोंको बनाना हो, तो ६४ तोले जलमें १ तोला ये छहों दवाएँ डालकर औटाना चाहिये। जब आधा जल रहजाय, उतार लेना चाहिये।

षड़ङ्ग पानीय।

वंगसेनका मत है कि, उपरोक्त नागरमोथा, पित्तपापड़ा प्रभृति छहों दवाओंको कूट लो। पीछे ऋतुके क़ायदेसे पानी औटालो। पानीमें औटते समय दवा मत डालो। जब पानी औट जाय, उतारकर रख लो। जब शीतल हो जाय, उस जलमेंसे १२ छटांक जल निकाल लो। उस निकाले हुए जलमें कुटी हुई दवाओंको १ तोला लेकर, कच्ची ही डाल दो,—यही "षड़ङ्ग पानीय" है।

नोट—तृष्णादि नाशक जलकी दवाएँ औटायी जाती हैं, इसलिये वहाँ लालचन्दन लिया जाता है; किन्तु "षड़ङ्ग पानीय" काढ़ा नहीं है; इस लिये इसमें लालचन्दनके बजाय सफेद चन्दन लेना चाहिये। याद रक्खो, लालचन्दन प्रायः काढ़े और लेपमें लिया जाता है। षड़ङ्गपानीय की दवाओं को पीस कर, बारीक चूर्ण मत कर लेना, किन्तु जौकुट करना।

पित्तज्वरनाशक पान।

कुँभेरके फल, चन्दन, खस, महुएके फूल, फालसे, सारिवा और मिश्री—इन को उधर लिखी षड़ङ्गपानकी विधि से पका कर, आधा जल रहने पर, उतार कर, काममें लाओ। इस औटाये हुए पानी से पित्तज्वर नाश होता है।

और भी

मुलेठी और कमल अथवा कमल और सफेद चीनी—

इन दोनों में से कोई सा एक पान बना कर देनेसे पित्तज्वर आदि रोग नाश होते हैं। बनाने की तरकीब वही है।

बंगसेन का षड़ङ्गपान।

बंगसेन ने लिखा है,—पित्तपापड़ा, नागरमोथा, खस, लाल-चन्दन, सुगन्धवाला और सोंठ,—इनको जलमें औटाओ, जब औट-चुके, खूब शीतल करके छान लो। यह जल प्यास, दाह और ज्वर को शान्त करनेके लिये दो।

नोट—नये ज्वरमें कषाय या काढ़ा देने की मनाही है। उस पर बङ्गसेन महोदय कहते हैं, कि जब काढ़े की दवाएँ १६ गुने जलमें पकाकर, चौथाई जल रक्खा जाय, तब उसे "कषाय" कहते हैं। वही कषाय नये ज्वरमें मना है। षड़ङ्गपान में तो जल चौथाई रखा नहीं जाता, इसलिये नवीन ज्वरमें षड़ङ्गपान का निषेध नहीं है। वङ्गसेनके और चरकके षड़ङ्गपानमें कोई भेद नहीं है। दोनोंके नुसखे एक ही हैं।

सूचना—वातकफ ज्वरमें अगर प्यास लगे, तो रोगी को गरम जल ही देना चाहिये। अगर पित्त का ज्वर हो या मद्य से ज्वर हो तो भूल कर भी गरम पानी न देना चाहिये। बहुतसे वैद्य रोगी को बकते-झकते देख कर पित्त के प्रलाप में भी वायु का ज़ोर समझ लेते हैं और रोगी को गरम जल दिये जाते हैं; इस से प्रलाप बढ़ता जाता है। "ज्यों ज्यों दवाकी मर्ज़ बढ़ता गया" वाली कहावत चरितार्थ होती है। प्रलाप वातकफ से भी होता है और पित्त से भी। दोनों को पहचान कर जल या दवा की व्यवस्था करनी चाहिये। पित्त के प्रलाप में रोगी को होश रहता है; किन्तु वातकफ के प्रलाप में रोगी बेहोशीमें बकता है।

"चरक"ने लिखा है, गरम जल और तिक्त औषधियोंके योग से औटाये हुए जल—दोनों ही दीपन, पाचन, ज्वरनाशक, रुचिकारक,

बलकारक, पसीना लानेवाले और मंगलकारी हैं ; पर पित्तज्वर में कड़वी दवाओं का जल देना चाहिये और वातकफात्मक ज्वर में गरम जल देना चाहिये। गरम जल रोगी की देह, निदान, देश और काल की परीक्षा करके आम के पचाने को वैद्य लोग देते हैं।

ज्वर में निद्रा।

जिस तरह मनुष्यको खाने-पीने को ज़रूरत है; उसी तरह नींद की भी ज़रूरत है। जिस तरह मनुष्य हवा, पानी और भोजन बिना मर जाते हैं; उसी तरह सुखनिद्रा न आने से भी मनुष्य मर जाते हैं। मनुष्यका सुख-दु:ख, स्थूलता-कृशता, बलाबल, मर्दानगी-नामर्दी, ज्ञान और अज्ञान सब निद्रा के अधीन हैं।

निद्रा तमोगुणसे उत्पन्न होती है और तमोगुण कफसे उत्पन्न होता है। मानसिक और शारीरिक परिश्रम से भी नींद आती है। रात में नींद स्वभाव से ही आती है। किसी-किसी रोग में बहुत नींद आती है और कितने ही रोगों में नींद जाती रहती है। लोक में निद्रा को "भूतधात्री" कहते हैं। कोई-कोई इस तमोभवा निद्रा को पाप-मूल भी कहते हैं। फालतू निद्रा रोगरूप समझी जाती है।

यद्यपि निद्रा देहयात्रा-निर्व्वाहार्थ आहार की तरह उपयोगी है—भूतधात्री है; तथापि कुसमयमें सोने, अधिक सोने अथवा निद्रा को सर्वथा त्याग देने से मनुष्य के सुख और आयु रात्रि के उषाकाल की तरह शेष हो जाते हैं अर्थात् नष्ट हो जाते हैं। जिस तरह योगिजन सिद्धि लाभ करके योग को सत्यबुद्धि को प्राप्त होते हैं, उसी तरह युक्तिपूर्व्वक निद्रा सेवन करने से देह के सुख और दीर्घायु की प्राप्ति होती है। असमय में सोने या बहुत सोने से मनुष्यों को नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं; इसलिये किस स्थलमें निद्रा हितकर है और किस स्थल में अहितकर है, इस बात का विचार करके निद्रा सेवन करनी चाहिये।

असमय में सोने या बहुत सोने से रोग।

असमय में सोने या बहुत सोने से मनुष्यों के हलीमक, मस्तक-शूल, स्तैमित्य, शरीरका भारीपन, शरीर में दर्द, अग्निका नाश, हृदय में कफका लिपा सा रहना, सूजन, अरुचि, उबकी, ज़ुकाम, आधा-शीशी, कोढ़, पिड़का, खुजली, तन्द्रा, खाँसी, गले का रोग, स्मृति-नाश, बुद्धिनाश, छेदों या स्रोतों का रुकना, ज्वर, इन्द्रियों की सामर्थ्य-हीनता और विष की वृद्धि—ये सब होते हैं।

दिनमें सोना निषेध।

"हारीत संहिता" में लिखा है,—"दिन में सोने से ज़ुकाम होता है; ज़ुकाम से खाँसी होती है और खाँसी से पीनस होती है। पीनस से क्षय, क्षय से सूजन और सूजनसे मृत्यु होती है। दिन में सोने से कफकी वृद्धि होती है, इसलिये रोगी को और ख़ासकर नवीन ज्वररोगी को दिन में न सोना चाहिये। यों तो ख़ास-ख़ास अव-स्थाओं को छोड़कर, दिन में सोना सभी को मना है, क्योंकि उधर लिख आये हैं कि, असमय में सोने से रोग होते हैं; इतने पर भी निम्नलिखित व्यक्तियों को तो दिन में कदापि न सोना चाहिये :—

दिन में न सोने योग्य मनुष्य।

नवीन ज्वररोगी, मेदस्वी, स्नेह सेवन करनेवाला, कफप्रधान धातुवाला, कफरोगग्रस्त और दूषी विष से पीड़ित प्राणी—इन को दिन में हरगिज़ न सोना चाहिये। क्योंकि कहा है—"दिवास्वापं न कुर्वीत यतोऽसौ स्यात् कफावहः" अर्थात् दिन में सोने से कफ बढ़ता है।

"चरक"में लिखा है :—

> ग्रीष्मवर्ज्येषु कालेषु दिवास्वप्नात् प्रकुप्यतः।
> श्लेष्मपित्ते दिवास्वप्नस्तस्मादन्येषुनेष्यते॥

गरमी के सिवा और मौसमों में दिन में सोने से कफ और पित्त कुपित होते हैं, इसलिये गरमी के सिवा और ऋतुओं में दिन में सोना मना है।

ग्रीष्म ऋतु में दिन में सोने की आज्ञा।

गरमी की ऋतु में प्राणियों के शरीर उत्तरायण काल के धर्म से रूखे हो जाते हैं तथा गरमी में वायु का संचय होता है और रात बहुत छोटी होती हैं, इसलिये गरमी के मौसम में दिन में सोने की आज्ञा है।

ग्रीष्मकालके सिवा और ऋतुओं में भी सोने योग्य मनुष्य।
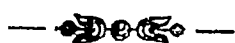
"चरक"में लिखा है,—"जो गाने, पढ़ने, स्त्री-प्रसंग करने, काम करने, बोझा उठाने, रास्ता चलने और शराब पीने से थक गये हों, वे सदा दिन में सो सकते हैं। अजीर्ण-रोगी, उरःक्षत-रोगी, क्षीण रोगी, बूढ़ा, बालक, दुर्बल, तृषा-रोगी, अतिसार-रोगी, शूल-रोगी, श्वास-रोगी, हिचकी-रोगी, कृश और गिरा हुआ, चोट लगा हुआ, बावला, सवारी करने से थका हुआ, रात के जागने से थका हुआ, क्रोधी, शोकार्त एवं भयातुर और दिन में सोने के अभ्यासी—ये सब हर मौसम में दिन में सो सकते हैं। इन सब के दिन में भी सोने से, धातु सात्म्य होने के कारण, इन की बलवृद्धि होती है। दिन के सोने से पैदा हुआ कफ इन के अंगों की पुष्टि करता है। उस से इन की आयु दृढ़ होती है।"

"भावप्रकाश"में लिखा है,—"कसरत, मिहनत, स्त्रीसंग, बहुत राह चलने और हाथी-घोड़े की सवारी करने से थका हुआ,

श्रमयुक्त, अतिसारवाला, शूल रोगी, श्वासवाला, वमनवाला, तृषा-रोगी, हिचकीवाला, वातरोगी, क्षीण, कफक्षीण रोगी, बालक, शराब-वगैरः किसी तरह की नशीली चीज़ सेवन करनेवाला, अजीर्ण-रोगी, रात में जागनेवाला और उपवास करनेवाला- ये सब, दिन में, इच्छानुसार सो सकते हैं।

नोट—रात में जागने से रूखापन होता है और दिन में सोने से चिकनापन होता है। इसी से रात के जागनेवाले को दिन में सोने की आज्ञा है। रात के जागने का रूखापन दिन के सोने से पैदा हुए चिकनेपन से मिट जाता है; क्योंकि दिन में सोने से कफ पैदा होता है। इसी तरह औरों में भी समझ लीजिये।

निद्रानाशके कारण।

कार्य, काल—बुढ़ापा, रोग, अपनी प्रकृति और वायुकी प्रबलता ये सब निद्रानाशके हेतु हैं। कायविरेचन, शिरोविरेचन, वमन, भय, चिन्ता, क्रोध, धूम, परिश्रम, खून निकालना, उपवास,दुखदायी खाट, सत्वगुणकी जय और तमोगुण का क्षय—इन सब कारणोंसे, आई हुई निद्रा भी नष्ट हो जाती है।

"भावप्रकाश"में लिखा है :—

नावनं लंघनं चिन्ता व्यायामः शोक भीरुषः।
एभिरेव भवेन्निद्रानाशः श्लेष्मातिसंक्षयात्॥

नस्य, लंघन, चिन्ता, मिहनत, शोक, भय और क्रोधसे कफका अत्यन्त क्षय होता है और कफके क्षय होनेसे नींद नाश हो जाती है।

निद्रानाशकी चिकित्सा।

नींदका आना ज़रूरी है। नींद न आना बड़ा खराब है। नींद से अनेक रोग नाश होते हैं, नींदसे शरीरको पुष्टि होती है। जिस-तरह भोजन विना नहीं सर सकता; उसी तरह नींद विना भी गुज़ारा नहीं; इसलिये यदि किसी कारणसे नींद न आती हो अथवा वातज्वर, धातुगत ज्वर प्रभृतिमें नींद न आती हो, तो उसका उपाय करना चाहिये।

नींद लानेके उपाय।

(१) अभ्यङ्ग, उबटन, स्नान, ग्राम्य और जल-संचारी जीवोंका मांसरस, शालि अन्न, दही, दूध, स्नेह, मद्य, दिल खुश करनेवाले काम, मनोहर गन्ध, मनोहर शब्द, शरीर दबवाना, नेत्र-सन्तर्पण, मस्तक और मुखका सन्तर्पण और लेपन, सुखदायी पलँग, घरका सुख और निद्राका समय—ये सब द्रव्य और उपाय निद्राको लौटा लानेवाले हैं।

(२) जिनको थोड़ी नींद आती हो वे,—दूध, शराब, मांसरस, दही, तेलकी मालिश, उबटन, स्नान, सिरमें तेल लगाना, कानोंमें तेल डालना, आँखोंमें तेल भरना—इनकी आदत डालें; सुन्दरीकी बाहुलताको आलिङ्गन करें; मनमें सन्तोष और शान्ति रक्खें; चिन्ता, क्रोध और शोक को त्यागें; किसी तरहका भय न रखें; चित्तको प्रसन्न करनेवाले काम करें—इनसे विषम निद्रावालोंको बड़ा सुख होता है।

(३) भुनी हुई भाँगका चूर्ण, शहदमें मिलाकर, रातके समय, खानेसे नींद आ जाती है। इस उपायसे अतिसार, संग्रहणी और अग्निक्षीणता भी नाश हो जाती है।

(४) पीपलामूलका चूर्ण, गुड़में मिलाकर, खानेसे बहुत दिनोंकी गई हुई नींद भी लौट आती है। ८ माशे पीपलामूल गुड़में मिलाकर खानेसे निश्चय ही नींद आती है।

(५) काकजंघाकी जड़को सिरमें रखने या बाँधनेसे नींद आ जाती है।

(६) मकोयकी जड़को सिरमें बाँधने या सिर पर रखनेसे नींद आ जाती है। मकोयकी जड़को सूतमें बाँधकर, निरन्तर, मस्तक पर रखने से नष्ट हुई निद्रा भी तत्काल आ जाती है। मकोयकी जड़ और छालका काढ़ा बनाकर और उसमें गुड़ मिलाकर पीनेसे भी नींद आ जाती है।

(७) मांसरसमें, सागमें, दालमें, घीमें, यूषमें और दूधमें "प्याज़" मिला कर खानेसे तत्काल नींद आ जाती है।

(८) ईखके रससे बने हुए पदार्थ, पोईका साग, उड़द, शराब, मांस-रस, दूध, गेहूँ, तिल और मछली—ये सब पदार्थ भी नींद लानेवाले हैं।

(९) बैंगनको, सन्ध्या समय, सिजोकर, उसमें शहद मिलाकर खानेसे गई हुई नींद भी आ जाती है।

(१०) थूहरकी जड़को, गुड़के साथ, खानेसे अवश्य नींद आती है।

(११) रोगीके पाँवोंपर तिलोंका तेल मलने अथवा काँजी या सौ वारका धोया घी प्रभृति मृदु पदार्थ मलनेसे नींद आ जाती है।

(१२) भाँगको वकरीके दूधमें पीसकर, पाँवों पर लेप करनेसे बहुत दिनोंकी गई हुई नींद अवश्य आ जाती है।

(१३) उत्तमोत्तम स्वरोंके सुनने, नाना प्रकारके संगीत और रागोंके सुननेसे नींद आ जाती है।

(१४) कालीमिर्च और कस्तूरीको, लारमें घिसकर, नेत्रोंमें आँजनेसे तीन दिनकी गई हुई निद्रा भी आजाती है।

(१५) नींद न आती हो तो थोड़ी देरतक पैरोंको गरम जलमें डुबाये रखो। सिर और पैरों पर गायका दूध मलो। अथवा अरण्डीका तेल और अलसीका तेल बराबर-बराबर लेकर काँसीकी थालीमें काँसी की कटोरीसे घोटकर आँखोंमें आँज दो; तत्काल नींद आवेगी। (परीक्षित है)

नोट—नींद वातज्वर, जीर्णज्वर, धातुगत ज्वर प्रभृति रोगोंमें भी नहीं आती। उपरोक्त नींद लानेके उपाय रोगी और अरोगी सबके लिये हैं। इसलिये ज्वरमें जो उपाय अहितकर हों, उनको छोड़कर और उपायोंसे काम लेना चाहिये। जैसे; नवीन ज्वरमें अभ्यङ्ग, उबटन, दही, दूध प्रभृति अपथ्य हैं। यद्यपि ये निद्रा लाते हैं, पर ज्वरमें तो आफत कर देंगे। इसलिये बुद्धिमान ज्वरमें अहितकर न हो, उसी उपायसे नींद लानेकी चेष्टा करे।

ज्वरोंके पकनेकी अवधि।
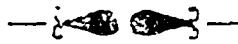
वात ज्वर सात दिनमें, पित्तज्वर दस दिनमें और कफज्वर बारह दिनमें पचता है।

नोट—यदि रस आम—कच्चा रहे, तो इस अवधिके भीतर ज्वर नहीं पचता, इस अवधिके बाद भी रहता है। सुश्रुत कहता है, बहुत दोषयुक्त तथा मन्दाग्निवालेका ज्वर सात दिनके बाद भी बना रहता है। यदि उसके दोष लंघन, गरम जल और यवागूसे न पचें, तो मुखकी विरसता, प्यास, अरुचि और ज्वर नाश करनेवाले पाचक और हृदयको हितकारी काथोंसे चिकित्सा करनी चाहिये।

ज्वरकी अवस्थायें।

ज्वर सात दिनतक तरुण कहलाता है, १२ दिन तक मध्यम कहलाता है और १२ दिनके बाद जीर्ण कहलाता है। कहीं-कहीं लिखा है, ६ दिनके बाद ज्वर जीर्ण हो जाता है। जातूकर्ण ऋषि कहते हैं,—ज्वर तेरहवें दिन जीर्ण हो जाता है। बंगसेन कहते हैं,—जो ज्वर १५ दिनके बाद भी शान्त न हो, मन्दवेगसे बना रहे, वह जीर्ण हो जाता है; यानी १५ दिनके बाद जीर्णज्वर हो जाता है। ज्वर सात दिन तक तरुण रहता है; इसके बाद चौदह दिन तक मध्यम रहता है और इसके बाद पुराना हो जाता है। वैद्यविनोदकर्त्ता लिखते हैं,—जो ज्वर २१ दिनके बाद शरीरमें सूक्ष्म होकर रहे तथा तिल्ली और मन्दाग्नि पैदा करे, वह जीर्णज्वर कहलाता है।

ज्वरमें औषधि देनेका समय।

वातज्वरमें ६ दिन तक लंघन कराकर, सातवें दिन दवा देनी चाहिये। पित्तज्वरमें १० दिन तक लंघन कराकर, ग्यारहवें दिन दवा देनी चाहिये और कफज्वरमें १२ दिनतक लंघन कराकर, तेरहवें दिन दवा देनी चाहिये।

पहले कह चुके हैं, अगर वातज्वर रोगी साम हो, तो वैद्य सातवें दिन दवा खिलावे ; अगर निराम हो तो शमनकारक औषधियोंसे चिकित्सा करे।

"शार्ङ्गधर" भी कहते हैं, -अगर वातज्वरके सब लक्षण हों, तो गिलोय, पीपरामूल और सोंठ—इन तीनोंका पाचनरूपी क्वाथ रोगी को सातवें दिन दो।

"हारीत" कहते है,—६ दिनतक लंघन आदि क्रिया करो और सातवें दिन काढ़ेसे सिद्ध की हुई "पेया" पिलाओ।

"खरनाद" भी कहता है,—इस प्रकार नवीन ज्वरको नाश करने-वाली विधि ६ दिन तक कही है। पीछे पाचन और शमन क्रिया ज्वरमें हितकारी है।

"वाग्भट्ट" महोदय कहते हैं,—रोगीको सातवें दिन हलका अन्न खिलाकर, उसी दिनसे औषधि देनी चाहिये।

कोई कहता है,—रोगीको दशवें दिन हलका अन्न खिलाकर, उसी दिनसे दवा देनी चाहिये। कोई कहता है, अगर आम उल्वण हो, तो दवा हरगिज़ न देनी चाहिये।

"चरक" मुनि कहते हैं,—ज्वर रोगी यदि निराम हो,तो सातवें दिन हलका अन्न खिलाकर, पीछे आठवें दिन काढ़ा पिलाना चाहिये।

"सुश्रुत" कहता है—सात दिन बीतने पर, आठवें दिन औषधि देनी चाहिये।

"चक्रदत्त" कहता है,—सात धातुओंमें प्राप्त हुआ मल सात दिनमें पचता है, इसलिये ज्वर विशेष करके आठवें दिन आमरहित होता है।

सबमें कुछ न कुछ मतभेद है, इसलिये असल मतलब यह है कि, वैद्य सातवें या आठवें दिनके भरोसे न रहे ; किन्तु अवस्था, बल, अग्नि, दोष, देश और कालका विचार करके दवा दे दे ; यानी दोष पहले ही पच जाय, तो अवधिसे पहले ही औषधि और अन्न

देदे और यदि दोष न पचे तो समय या अवधि आने पर भी न दे। सुश्रुतने कहा है,—थोड़े समयके पैदा हुए पित्तज्वरमें जब दोष पक जाय, तभी वैद्य दवा देदे, दश दिन बीतनेकी राह न देखे। इसी तरह थोड़े दिनके पैदा हुए वातज्वर और कफज्वर में भी सात और बारह दिनकी राह न देखनी चाहिये, जब ये दोनों दोष पक जायँ तभी दवा देनी चाहिये।

दोषोंके पकनेके लक्षण।

"सुश्रुत"में लिखा है, जब ज्वर हलका हो जाय, शरीर भी हलका हो जाय; वात, कफ, और मल ये अपने-अपने मार्गमें संचार करने लगें, तब समझो कि दोष पचकर आमरहित हो गये। अगर दोष पके हुए दीखें तो दवा दे दो।

कोई-कोई कहते हैं, कि दुष्ट हुए वात, पित्त और कफ,—इनके ज्वर और ज्वरके उपद्रव पैदा करने का स्वभाव बदलजाय, तब समझ लो कि दोषोंका पाक होगया। भूख, शरीरका हलकापन, ज्वरकी सूक्ष्मता, दोषोंका अपने-अपने मार्गमें संचारण और उत्साह, इन लक्षणोंसे जान लो कि ज्वर आमरहित होगया।

नये ज्वरोंके इलाजमें आमज्वर—कच्चे ज्वर और पके ज्वरका ख़याल ज़रूर कर लेना चाहिये। कच्चे बुख़ारमें दवा देना सोते साँपको उँगलीसे जगाना है। कच्चे ज्वरमें दवा देनेसे ज्वर बिगड़कर सन्नि-पात हो जाता है अथवा प्रचण्ड हो जाता है और शोधन शमन करनेसे विषमज्वर हो जाता है*। जब ज्वर हलका हो जाय, शरीर हलका होजाय, हवा खुलने लगे, मलमूत्र होने लगें, तभी दोषोंके पाकके लक्षण देखकर दवा दे देनी चाहिये।

* इस बातको भी याद रखो कि, यदि दोष पक भी गया हो, परन्तु शरीरमें ही ठहर गया हो, उसे वैद्य यदि न निकाले तो वह भयानक हानि करता है; वह या तो विषम ज्वर करता है या बलनाश करता है।

"वङ्गसेन"में लिखा है :-

पाययेदातुरं सामं पाचनं सप्तमेऽहनि।
शमनेनाथवा हत्वा निरामं समुपाचरेत्॥

आम ज्वरवालेको वैद्य सातवें* दिन दवा दे दे, और यदि निराम हो तो तत्काल शमन औषधि दे दे।

ज़रूरत होनेसे ऊपरी उपचार करनेमें हर्ज नहीं। मसलन,—सिरमें दर्द हो तो लेप लगवा दो। किसी खास जगह दर्द हो तो कोई वातनाशक तेल लगवा दो। हिचकियाँ चलती हों, तो नस्य वगैरःसे हिचकी बन्द कर दो; इसमें हर्ज नहीं।

दवा खानेके पाँच वक्त।

(औषधि भक्षणके पाँच काल)

मनुष्योंके औषधि खानेके लिये पाँच समय कहे हैं :—

पहला समय—सूरज निकलते ही दवा लेना। वह काढ़ेका समय है।

दूसरा समय—दिनमें भोजनके समय दवा लेना।

तीसरा समय—साँझको भोजनके समय दवा लेना।

चौथा समय—बारम्बार दवा लेना।

पाँचवाँ समय—रातमें दवा लेना।

नोट—(१) पहला समय प्रातःकाल है। इस समय काढ़ा या कषाय लेना चाहिये। पित्तको विरेचन द्वारा निकालने, कफको वमन

---

* "हारीत" कहते हैं,—"आमज्वरकी अवस्था सात दिन रहती है। आमज्वरमें दवा न देनी चाहिये।"

द्वारा निकालने, उसी तरह दोषोंको पतला करनेके लिये प्रातः-समय दवा देनी चाहिये। जिस औषधिके पीनेका समय न कहा हो, उसे प्रातःकालमें पीना चाहिये।—

(२) दूसरा काल भोजनके समयका है। वह भी पाँच तरहका है। जैसे,—भोजनके पहले नमक और अदरख खाना, भोजनमें मिला कर "हिंग्वाष्टक" आदि चूर्ण खाना, भोजनके बीचमें जल प्रभृति पीना, भोजनके अन्तमें लौंग या हरड़ वगैरः खाना, भोजनके आदि अन्तमें दवा खाना। जैसे,—अम्लपित्त रोगमें "धात्री-अवलेह" भोजनके आदि और अन्तमें दिया जाता है।

अपान वायुके कुपित होनेपर, भोजनसे ज़रा पहले दवा खानी चाहिये। अरुचि होनेपर अन्न अथवा और किसी रोचक चीज़में दवा मिलाकर देनी चाहिये। नाभिसे सम्बन्ध रखनेवाली समान वायुके कोप एवं अग्नि मन्द होनेपर अग्निदीपन करनेवाली दवा भोजनके बीचमें देनी चाहिये। सर्वदेहव्यापी व्यान वायुके कुपित होनेपर, भोजनके अन्तमें दवा खिलानी चाहिए। हिचकी, आक्षेपक वायु तथा कम्पवायु के कुपित होनेपर भोजनके पहले और अन्तमें दवा देनी चाहिये। यही दूसरा काल है।

(३) कंठ-सम्बन्धी उदान वायुके कुपित होनेसे, (कंठके बैठ जाने गूँगा हो जाने वगैरःमें) साँझके भोजन-समय, प्रत्येक ग्रास या कौरके साथ अथवा दो दो ग्रासोंके बीचमें दवा खिलानी चाहिये। हृदय में रहनेवाली प्राणवायुके कुपित होनेसे, बहुधा, सन्ध्या समय, भोजनके अन्तमें दवा खिलानी चाहिये। यह तीसरा काल है।

(४) प्यास, वमन, हिचकी, श्वास और विष-दोष होनेसे बारम्बार अन्न सहित औषधि खानी चाहिये। अनेक मौकोंपर तृषा प्रभृति रोगोंमें अन्नरहित भी दवा देते हैं। यह चौथा समय है।

(५) अगर हँसलीके ऊपरके कर्णरोग, नेत्ररोग, मुखरोग अथवा नाकके रोगोंका इलाज करना हो; या बढ़े हुए वातादि दोषोंको घटाना हो,

या अति क्षीण हुए दोषोंको बढ़ाना हो, तो रातके समय, पाचन शमन औषधि, बिना अन्नके, खिलानी चाहिये। कोई-कोई सारी रात दवा देनेको कहते हैं, परन्तु आमतौरसे रातके पहले पहरमें ही दवा दी जाती है।

वैद्योंको ये पाँचों औषधिकाल खूब याद रखने चाहिएँ। रोगानुसार, रोगके समयपर, दवा देनी चाहिये। इस तरह करनेसे निश्चयही सिद्धि मिलती है। हारीत महोदयका कहना है कि, औषधि सवेरे और शामको देना चाहिये।

सात प्रकारके क्वाथ।

पाचन, दीपन, शोधन, शमन, तर्पण, क्लेदन और शोषण ये सात तरहके काढ़े या क्वाथ होते हैं। शृत, क्वाथ, कषाय और निर्य्यूह—ये क्वाथके चार नाम हैं।

पाचन—जिसमें औटाते-औटाते आधा जल रहे, उसे "पाचन" कहते हैं। पाचन काढ़ा दोषोंको पकाता है। इसीलिये ज्वरमें पहले दोष पकानेके लिये पाचन क्वाथ देते हैं।

दीपन—जिसमें औटाते-औटाते दसवाँ भाग पानी रहे, उसे "दीपन" कहते हैं। दीपन क्वाथ जठराग्निको तेज़ करता है।

शोधन जिसमें औटाते-औटाते बारहवाँ भाग पानी रहे, उसे "शोधन' कहते हैं। शोधन क्वाथ मलको साफ करता है।

शमन—जिसमें औटाते-औटाते आठवाँ भाग जल रहे, वह "शमन" कहलाता है। शमन रोगोंको शान्त करता है। प्रायः पाचन क्वाथसे दोष पकनेपर, शमन क्वाथ देते हैं; पके हुए दोषोंको शमन

क्वाथ झट शान्त कर देता है। कच्चे दोषोंमें शमन क्वाथ देना उचित नहीं।

तर्पण—जिसमें ज़रा जोश दिया जाता है, उसे "तर्पण" कहते हैं। तर्पण धातुओंको तृप्त करता है।

क्लेदन—जिसमें औटाते औटाते चौथा भाग पानी रहे, उसे "क्लेदन" कहते हैं।

शोषण—जिसमें औटाते-औटाते सोलहवाँ भाग पानी रहे, उसे "शोषण" कहते हैं। यह दोषोंको सुखाता है।

काढ़ा बनाने की विधि।

चार तोले दवाको ६४ तोले पानीमें डालकर, हलकी आगसे औटाओ। औटाते समय काढ़ेके बर्तनको ढकना नहीं चाहिये; ढकनेसे काढ़ा भारी हो जाता है। जब ८ तोले पानी शेष रहे, तब उतारकर छान लो। मतलब यह है, जितनी दवा हो, उससे १६ गुने जलमें काढ़ा पकाओ। आधा, चौथाई अथवा आठवाँ भाग जैसा रखना हो, वैसा रक्खो। बनते हुए काढ़ेको बीचमें छोड़ना और चलाना नहीं चाहिये। अशुद्ध जगहमें काढ़ा बनाना नहीं चाहिये और ज़मीन पर गिरे हुए को उठाना नहीं चाहिये। काढ़ा सुहाता-सुहाता गरम पिलाओ और पिलाकर बासन औंधा रख दो। काढ़ेके पीनेके एक घण्टे बाद तक, प्यास लगनेपर भी, जल मत दो। काला, नीला, कड़ा, लाल, झागदार, जला हुआ, कच्ची या मुर्देकीसी गन्धवाला काढ़ा विषके समान होता है और रोगको असाध्य कर देता है। दवाकी गन्धके माफ़िक़ शुद्ध और सुन्दर कान्तिवाला काढ़ा अमृतके समान होता है।

काढ़ेमें खाँड़ डालनी हो, तो वात रोगमें काढ़ेकी चौथाई; पित्त-रोगमें आठवाँ भाग और कफरोगमें सोलहवाँ भाग डालो। शहत

मिलाना हो तो पित्तरोगमें सोलहवाँ भाग ; वातरोगमें आठवाँ भाग और कफरोगमें चौथा भाग डालो। अगर ज़ीरा, गूगल, जवाखार, सेंधानोन, शिलाजीत, हींग, त्रिकुटा (सोंठ मिर्च पिपर) ये डालने हों तो ३।४ माशे डालो। अगर दूध, घी, तेल, गुड़, मूत या और कोई पतली चीज़ डालनी हो, तो तोले भर डालनी चाहिये।

वात, पित, कफ, रस, रक्तके संचयसे हुआ बुखार,जब अच्छी तरह पक जाय तब काढ़ा देना चाहिये। पाचन काढ़ा रातको, शमन काढ़ा दोपहर पहले, दीपन दोपहर बाद, सन्तर्पण और शोधन सवेरे ही प्रभात समय देने उचित हैं।

ज्वरमें संशोधन।
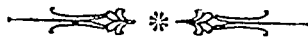
नवीन ज्वरमें संशोधनसे हानि।

अगर नवीन ज्वरवाला रोगी शोधन (वमन विरेचन आदि) औषधि पीता है, तो वमन, मूर्च्छा. मद, नशा, श्वास, भ्रम, प्यास और विषमज्वर उत्पन्न होता है।

नवीन ज्वरकी विशेष अवस्थामें

संशोधनकी आज्ञा।

यद्यपि नवीन ज्वरमें संशोधन (वमन विरेचनादि) की मनाही है ; तथापि अवस्था विशेषमें संशोधन कराना उचित है। रोगी दोषों की वृद्धिसे अत्यन्त दुखी हो और रोग शोधन (वमन विरेचनादि) से ही शान्त हो, बिना शोधनके शान्त न हो—ऐसी दशामें वैद्य वमन विरेचनको हलकी दवा देकर दोषोंको उखाड़ डाले।

वमन कराने योग्य रोगी ।

"शार्ङ्गधर"में लिखा है—बलवान मनुष्य कफसे व्याकुल हो, जिसके मुखसे लार गिरती हो, धीरज धरनेवाला हो उसे वमन करानी चाहिये। विषदोष, स्तन्यरोग, मन्दाग्नि, श्लीपद, अर्बुद, हृद्रोग, कोढ़, विसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम, विदारिका—गण्डमालाका एक भेद, अपची, खाँसी, श्वास, पीनस, अण्डवृद्धि, अपस्मार—मृगी, ज्वर, उन्माद, रक्तातिसार, नासापाक, तालुपाक, होठका पकाव, कर्णस्राव, द्विजिह्वक, गलशुंडि, अतिसार, पित्तकफके रोग, मेदोरोग और अरुचि,—इन रोगोंमें वैद्यको वमन करानी चाहिये ।

वमन न कराने योग्य रोगी ।

तिमिर रोगी, गुल्म रोगी, उदररोगी, अतिकृश, अतिवृद्ध, गर्भवती स्त्री, मोटा, उरक्षतवाला, बालक, रूखा, भूखा, निरूहण वस्ती करानेवाला, उदावर्तरोगी, उर्ध्वरक्तपित्तरोगी, वमनको बर्दाश्त न कर सकनेवाला, पीलियावाला, कृमिरोगी और ज़ोरसे पढ़नेसे कण्ठ बैठ जानेवाला,—इनको वमन न करानी चाहिये ।

नाज़ुक-मिज़ाज, कमज़ोर, बालक और बूढ़ा तथा डरपोक इन पाँचोंको वमन करानेवाली दवा विशेषकर न देनी चाहिये ।

नोट—अगर उपरोक्त तिमिर आदि रोगी अजीर्ण या कफसे व्याप्त हों ; तो मुलहटीका काढ़ा या महुएकी छालका काढ़ा पिलाकर वमन करा देनी चाहिये ।

नवीन ज्वरमें वमन निषेध ।

कफादि दोषोंके बहुतही ऊँचे आजानेसे अपने-आप वमन हो जाय, उससे नुक़सान नहीं ; किन्तु नवीन ज्वरमें कफ आदि अपने-आप ऊपर न आते हों, तो उपाय करके वमन न करानी चाहिये ।

उपाय द्वारा ज़बर्दस्ती वमन करानेसे (नवीन ज्वरमें) हृदयरोग, श्वास, अफारा और मोह—बेहोशी उत्पन्न होती है ।

नवीन ज्वरमें वमन करानेकी आज्ञा ।

नवीन ज्वरमें, अवस्था विशेपमें, वमन कराना मना नहीं है। जैसे :—

(१) तत्काल भोजन करनेपर तृप्तिसे ज्वर चढ़ा हो, तो वमन करायी जा सकती है । तत्काल ज्वर चढ़नेपर वमन करानेमें हर्ज नहीं । "चरक"में लिखा है, रोगीके आमाशयमें ठहरे हुए, ज्वर उत्पन्न करनेवाले सब दोष कफप्रधान हों और वे वमनोन्मुख हों यानी निकलनेको उत्सुक हों और रोगी वमन कराने लायक़ हो, तो उन दोषोंको वमन कराकर निकाल दो । लेकिन अगर सब दोष उपस्थित न हों, तो नवीन ज्वरमें वमन कराना मुनासिब नहीं। अगर दोषके मौजूद न रहनेकी हालतमें वमन करा दी जाती है, तो हृद्रोग, श्वास और बेहोशी हो जाती है। नवीन ज्वर और आमदोषमें रूक्षस्वेद, लंघन और वमन खूब विचार करके कराने चाहियें। अगर ज्वर रोगी दोषोंसे अत्यन्त घिरा हो, तो वमन और विरेचन कराना ही चाहिये ।

(२) रोगी—गर्भवती स्त्री अत्यन्त कृश और अत्यन्त बूढ़ा न हो, तो लंघनके एवज़में वमन करायी जा सकती है ।

नोट—जिसने वमन की हो, उसे लंघन करा सकते हो ; किन्तु जिसने लंघन किये हों, उसे वमन नहीं करा सकते ; क्योंकि वमन कष्टकर होनेके कारण, लंघनसे कमजोर हुए रोगी को मार डालती है। अगर रोगी बलवान हो और उसके कफज्वर हो, साथ ही वमन कराये बिना काम चलता न दीखे, तो वमन करा देनी चाहिये ।

वमन कराते समय ख़याल रखने योग्य बातें ।

(१) जिसे वमन करानी हो उसे पेट भरकर यवागू या दूध प्रभृति पिला देने चाहिएँ । जो चीज़ बुरी लगती हो वह, अथवा कफकारी पदार्थ

खिलाकर दोषों को उत्क्लेशित करना चाहिये। इस तरह करनेसे वमन अच्छी तरह होती है। जिसने घृतपान किया हो यानी घी पिया हो, उसे एक दिन बीचमें देकर वमन करानी चाहिये।

(२) जितने वमनकारक प्रयोग या नुसखे हैं, उन सबमें सेंधानोन या शहदका मिला देना अच्छा है। वमन घी मिलाकर करानी चाहिये यानी वमन करानेवाली दवाओंमें घी मिला देना चाहिए। इसको "बीभत्स" वमन कहते हैं; किन्तु जुलाबकी दवाओंमें घी न मिलाना चाहिए।

(.) कड़वी और तीक्ष्ण * दवाओंसे कफको, मधुर और शीतल दवाओंसे पित्तको तथा मीठी, खारी, खट्टी और गरम दवाओंसे वात कफको वात मिले कफको) जीतना चाहिये।

(४) कफदोषमें पीपल, मैनफल और सेंधानमक—इनका चूर्ण करके, गरम जलके साथ पिलानेसे कफ निकलता है।

पित्तदोषमें—पटोलपत्र, अडूसा, और कड़वे नीमके पत्तोंका चूर्ण करके, शीतल जलमें मिलाकर पिलानेसे पित्त निकलता है।

कफ और वायुके दोषमें—मैनफलका चूर्ण दूधमें डालकर पीना चाहिए।

अजीर्णकी दशामें—गरम जलमें सेंधानोन मिलाकर पीना चाहिये। वमन होनेसे अजीर्ण दूर हो जाता है।

ज्वर शान्त करनेको पीपरके साथ या इन्द्रजौके साथ या मुलहटीके साथ मैनफल और गरम जलसे वमन करानी चाहिये। ज्वरमें शहद और जल, ईखका रस अथवा नमकका जल अथवा शराब अथवा तर्पण द्वारा वमन करानी चाहिये। इसी तरह वमनके लिये दाख और आमलेका काढ़ा पीना चाहिये अथवा आमलेका काढ़ा घीमें पकाकर पीना चाहिए। जहाँ जैसा उचित हो, वहाँ वैसा हो

* सोंठ, मिर्च, पीपल, राई आदि तीक्ष्ण दवा हैं और अनार, मुनक्का, मिश्री प्रभृति मधुर दवा हैं।

नुसखा देना चाहिये। इस बातको भी ध्यानमें रखना चाहिये, जिस तरह कच्चे फलसे स्वरस निकालनेसे फल नष्ट हो जाता है; उसी तरह सब देहमें व्याप्त धातुमें ठहरे हुए सारेही साम दोषको निकालना कष्टकी निशानी है।

५) जिसे वमन करानी हो, उसे वमनकारक दवा देकर, ऊँचे आसन पर बिठाना चाहिये। अरण्डकी नालको मुखमें डालकर, हलके हाथसे कफको छूना चाहिए। इस प्रकार भीतर बाहरसे कंठको सिरा सिराकर वमन करानी चाहिये। साथ ही वमन करनेवालेके मस्तक और दोनों कूखों यानी पसलियोंको धीरे-धीरे हाथसे सिराना चाहिये।

६) अगर बहुत क़य होनेसे प्यास लगे, हिचकियाँ चलें, डकार आवें, अङ्ग जकड़ जायँ संज्ञा जाती रहे जीभ निकल आवे, नेत्र फटेसे होकर चञ्चल हो जायँ, भ्रम हो, ठोड़ी जकड़ जाय, पीड़ा हो, मुँहसे खून गिरे, बारबार थूक आवे, कंठमें दर्द हो; तो उसका उपाय शीघ्र करना चाहिये; घबराना उचित नहीं। बहुत क़य होनेसे बहुधा ऐसा होता है। इसीलिये वमन विरेचन करानेके लिये होशियार चिकित्सक की ज़रूरत है।

अत्यन्त वमनके उपद्रव नाश करनेकी तरकीबें।

१) हलका सा जुलाब दो।

२) अगर जीभ बहुत घुसगई हो, तो मनको प्रसन्न करनेवाले खट्टे, तीक्ष्ण, मीठे, नमकीन पदार्थ भातके साथ खानेको दो। घी और दूध भातके साथ दो। उस रोगीके सामने दूसरे लोगों को नीबू या नारङ्गी चूस चूसकर खानेको कह दो। इस तरह करनेसे उसकी जीभ ठिकाने पर आ जायगी। खटाई देखकर, मुँह में पानी छूटेगा और काम बन जायगा।

(३) अगर जीभ बाहर निकल आई हो, तो तिल और दाखोंको पीस-कर, लुगदीसी बनाकर, उसका रोगीकी जीभपर लेप करो और जीभको भीतर घुसाओ।

(४) अगर आँखें फटीसी होगई हों, तो आँखोंमें घी लगाकर ठीक करो। यह काम हलके हाथसे करना उचित है; ज़ोरका काम नहीं है।

(५) वमन करते करते ठोड़ी रह गई हो, तो रोगीके अङ्गोंका पसीना निकालना चाहिये तथा कफवायु नाशक औषधि नाकमें डालनी चाहिये। इससे ठोड़ी का रहजाना ठीक होगा।

(६) बहुत वमन करनेसे अन्तमें खून गिरने लगे, तो रक्तपित्त रोगमें जो उपाय किये जाते हैं, उनसे खूनकी वमनकी शान्ति करनी चाहिये।

(७) अगर बहुत वमन होनेसे प्यास बढ़ जाय; तो आँवले, रसौत, नेत्रवाला, शालि चाँवलोंकी खील, लालचन्दन और खस ६ दवाओंको ४ तोले लेकर जौकुट कर लो; पीछे १६ तोले जल हाँड़ीमें डाल, उसीमें सब दवाएँ मिलाकर मथ डालो। मथनेके बाद नितारकर छान लो, इसीको "मंथ" कहते हैं। इस मन्थमें घी, शहद और मिश्री डाल कर पिलाओ। इस नुसखे द्वारा वमन से उत्पन्न हुए प्यास प्रभृति उपद्रव नाश हो जायँगे।

(८) अगर वमन अच्छी हो जाती है, तो हृदय, कंठ और मुख साफ हो जाते हैं, अग्नि दीप्त होती है, शरीर हलका होता है तथा कफ और पित्तके दोष दूर हो जाते हैं। अगर वमन इसी तरह अच्छे ढँगसे होगई हों, उपद्रव न हुआ हो; तो तीसरे पहरके समय मूँग और साँठी चाँवलोंका यूष अथवा हिरन वग़ैरःके मांसका रस रोगीको दो। अच्छी तरह वमन होनेसे तन्द्रा, निद्रा, मुँहकी बदबू, खाज, संग्रहणी और विषदोष, ये उपद्रव कभी नहीं होते।

(९) जिस दिन रोगी वमनकारक दवा पीवे, उस दिन उसे चाहिये

कि, अजीर्ण करनेवाले, देरमें पचनेवाले, भारी पदार्थ, शीतल जल, दंड कसरत, मैथुन, शरीरमें तेलकी मालिश और क्रोध—इनको त्याग दे अर्थात् इन सब अपथ्योंसे परहेज़ करे।

विरेचन या जुलाब देने योग्य रोगी।

जीर्णज्वर, विषविकार, वमन, वायुगोला, प्लीहा—तिल्ली, उदर-रोग, सूजन, मूत्राघात और कृमि-रोग—इन रोगोंमें जुलाब दिया जा सकता है।

ज्वरके शान्त होनेपर भी शरीरमें थकान हो, शरीरका रङ्ग ख़राब हो और शरीर मलीन हो, तो विरेचन दे देना उचित है। यदि दोष बाक़ी रह जायगा, तो ज्वर फिर आने लगेगा ; इसलिये शेष रहे दोषको निकाल देना ही अच्छा है।

नोट—वायुगोला और कृमिरोग (कीड़ोंका रोग और उदर रोग) प्रभृतिमें वमन कराना मना है।

जीर्णज्वरमें भी अगर रोगी कमजोर हो, तो विरेचन न देना चाहिये। विरेचन करानेके कायदे और विरेचन-सम्बन्धी अनेक उपयोगी विषय देखने हों, तो 'चिकित्साचन्द्रोदय" प्रथम भागके अन्तमें देखिये।

नवीन ज्वरमें विरेचन निषेध।

नवीन ज्वरमें और ख़ासकर अपक्क दोषोंकी हालतमें, शोधन (जुलाब वग़ैर:) और शमन औषधि मना है। कच्चे ज्वरमें जुलाब प्रभृति देनेसे ज्वर प्रचण्ड हो जाता है या विषम ज्वर होने लगता है।

नवीनज्वरमें विरेचनकी आज्ञा।

"सुश्रुत"में लिखा है, अगर थोड़े दिनके ज्वरमें भी दोष पककर कोठेमें ठहर जाय, तो विरेचन दे देना चाहिये ; क्योंकि पके हुए दोष को न निकालोगे, तो वह शरीरमें रहकर विषमज्वर आदि भयङ्कर

रोग पैदा करेगा तथा बलका नाश करेगा। इसलिये पके हुए दोषको वमन, विरेचन, निरूहवस्ती और शिरोविरेचन (सिरका जुलाब नस्य वगेरः) से निकाल देना चाहिये। और भी लिखा है,— अगर दोष चञ्चल हों, कोठा नरम हो, तो वैद्य शोधन औषधि देदे। ऐसी अवस्थामें दोषोंसे निर्बल हुए मनुष्यको शोधनसे वमन आदि विकार उत्पन्न नहीं होते; बल्कि शोधन न करनेसे और रोग हो जाते हैं। लङ्घन कराने, गरम जल पिलाने और पेया आदि पिलानेसे पका हुआ दोष अगर नीचेके रास्ते (गुदा) से दस्त द्वारा नहीं निकाला जाता है, तो वह शरीरमें रहकर महाकष्टसाध्य विषम-ज्वर— चौथैया और बलक्षय करता है। कार्तिक वैद्य चौथैयाके स्थानमें महाकष्टसाध्य गम्भीर ज्वरका पैदा होना कहते हैं।

ज्वर रोगियोंको वमन विरेचन कराना हो, तो सदा बलाबल देख कर हलके नुसख़े ही काममें लाना अच्छा है। "आरोग्यपंचक" और "सारिवादि कल्क" देनेमें ज़रा भी खटका नहीं। इनके नुसखे आगे लिखे हैं।

अगर रोगी कमज़ोर हो, दस्त कराने लायक़ न हो; किन्तु उसके पेट पर अफारा हो,पेटमें दर्द हो; तो दारूहल्दी, बच, कूट, सौंफ, हींग और सेंधेनोन को काँजीमें महीन पीसकर पेटपर लेप करो। अगर हवा न खुलती हो, दस्त और पेशाब भी रुक रहे हों; तो दारूहल्दी आदि छहों दवाओंको पीसकर, कपड़ेकी बड़ी अँगुलीके समान मोटी बत्तीपर लेप करके, ऊपरसे घी लगा कर, गुदामें हाथसे घुसाओ। इसके साथ ही पीपर, पीपरामूल, अजवायन और चव्य,—इन चारोंके काढ़ेसे बनाई हुई यवागू पिलाओ। यह भी हवा खोलती और मल-मूत्र उतारती है। अगर वमन विरेचन दोनों ओरके शोधनोंसे भी ज्वर शान्त न हो, दोष रह जाय; तो पुराने ज्वरमें, रोगीके रूखे होनेकी हालतमें, कोई उत्तम ज्वरनाशक घृत दो। इससे अवश्य लाभ होगा।

संशोधन और शमन औषधि निषेध।

जिस मनुष्यने कड़वा—दवाओंका जल पिया हो, जो लंघन या उपवाससे कमज़ोर होगया हो, जिसने तत्काल खाना खाया हो, जो बूढ़ा हो, जो प्याससे दुखी हो—उनको संशोधन या शमन औषधि नहीं पिलानी चाहिये।

पाचन और शमन औषधि देनेका समय।

अगर रोगी आम-सहित हो, तो सातवें दिन पाचन दे देना चाहिये। अगर रोगी आम-रहित हो, तो सातवें दिन शमन औषधि दे देनी चाहिये। इसी तरह कमज़ोर और थोड़े दोषवालेको भी शमन औषधि दी जा सकती है।

प्र०—आमज्वरमें दवा देना मना है ; क्योंकि आमज्वर में दी हुई दवा ज्वरको बढ़ाती है, फिर आम सहित ज्वरमें पाचनकी आज्ञा क्यों दी गई है ?

उ०—आमज्वर उपद्रव-रहित हो तो पाचन देना चाहिए। अगर आमज्वर उपद्रव-सहित हो, तो पाचन दवा न देनी चहिये।

वागभट्ट महाशय कहते हैं, सात दिन बाद ज्वर आम सहित भी हो, किन्तु उपद्रव न हों तो पाचन दे देना चाहिये। अगर सात दिन बाद ज्वर आम रहित हो, तो शमन औषधि देदेनी चाहिये। किन्तु यदि ज्वर आम और उपद्रव दोनोंसे संयुक्त हो, तो दवा हरगिज़ न देनी चाहिये।

ज्वररोगी को अन्न देने का समय।

रस, दोष और मलों के पकने पर रोगी को भूख लगती है। जब रोगी को भूख लगे, तब भूख का समय हो या न हो, किन्तु उसी को अन्नकाल या खाने का समय कहते हैं।

और भी कहा है—जब मनुष्यों का आम पच जाता है, तब खानेकी इच्छा होती है। चाहे वह समय खाने का हो या न हो,

उसी को अन्नकाल कहते हैं; यानी उस समय भोजन देना ही चाहिये। मतलब यह है, कि ज्वर पचने पर ही भूख लगती है, इसलिये भूख लगने पर खाने को देना चाहिये।

वातज्वर सात दिनमें, पित्तज्वर दस दिनमें और कफज्वर बारह दिनमें पकता है। जब ज्वरका पाक होता है, तब रस और दोषों का भी पाक होता है। एक दूसरे का सम्बन्ध है। बिना दोषों का पाक हुए ज्वरका पाक नहीं होता और बिना रस का पाक हुए दोषों का पाक नहीं होता। ज्वरका पाक होने से रस और दोषों को पके हुए समझो। इसी तरह रस और दोषों का पाक होने से ज्वर को पका समझो। जब रस, दोष और ज्वर पक जायँगे, तब भूख लगेहीगी। भूखका लगना—ज्वर के पकने की निशानी है। उस समय रोगी को भोजन, किन्तु खूब हलका भोजन, देने में हानि नहीं है।

धन्वन्तरि महोदय कहते हैं—"वात ज्वरवाला रोगी वैद्य की आज्ञानुसार लंघन, गरम जल, वातरहित स्थानके निवास और भारी और गरम कपड़ों के पहनने-ओढ़ने प्रभृति नियमों को पालन करता है, तथा वात दोष के पच जाने पर—६ दिन बीत जाने पर, सातवें दिन अन्न और औषधि खाता है, तो वह जल्दी ही आराम हो जाता है।"

चरक महोदय कहते है,—"वातज्वरवाले को ६ दिन बाद, पित्तज्वरवाले को १० दिन बाद और कफज्वरवाले को १२ दिन बाद हलका अन्न खिला कर, पाचन या शमन क्वाथ पिलाना चाहिये।"

वैद्यको चाहिये कि, रोगी को दोपहर से पहले अन्न दे दे; क्योंकि यह पित्त की प्रधानता का समय है। यों तो दिन का सारा मध्य भाग पित्त की प्रधानता का समय है, पर दस और बारह बजे के बीच में भोजन देना भला है। दिन के पहले पहरमें यानी दस बजे पहले खाना न देना चाहिये, क्योंकि दिन के पहले

पहर में कफ का समय होता है। रोगी को दोपहर तक भूखा भी न रखना चाहिये। दूसरे पहर में भोजन न करनेसे बलका नाश होता है। दिनके मध्य भाग में, पित्त के समयमें, कफ का क्षय होता है। कफ के क्षय होने से (कफ गीला है) जठराग्नि बलवान हो जाती है। जठराग्नि के तेज़ होने पर खाना देने से झट पच जाता है। दोपहर बाद, पित्त का समय निकल जाने पर, जठराग्नि फिर मन्द होने लगती है, उसका वह तेज नहीं रहता; इसलिये अग्नि की तेज़ी शान्त हो जाने पर जो खाना दिया जाता है, वह नहीं पचता और ज्वर के वेग को बढ़ाता है। इसीलिये दोपहर पहले (दस और बारह बजे के दर्म्यान) भोजन देने की बात कही गयी है। भोजन सदा एकान्त में कराना अच्छा है।

सब तरह के विषम ज्वरों में, ज्वर का वेग शान्त होने पर, सात दिन तक, मात्रा के अनुमान से हलका भोजन देना चाहिये। यदि ज्वर के वेग के बिना शान्त हुए ही, ज्वर के चढ़े रहने की हालत में, भोजन दिया जाता है, तो वह भोजन विषमज्वर के ज़ोर को बढ़ाता है; यानी बुख़ार का ज़ोर हो जाता है।

सब तरह के ज्वररोगियों को बहुत ही हलका भोजन देना चाहिये। उनसे ज़रा भी मिहनत न करानी चाहिये। रोगी को चारपाई पर ही या नीचे, बिना अधिक चलाये फिराये खाना खिला देना चाहिये। पेशाब पाख़ाने की हाजत होने पर, वह भी कहीं पास ही करा देने चाहियें। ज्वररोगी के थोड़ा भी चलने फिरने या मिहनत करने से "प्रमेह" रोग हो जाता है।

नोट—पित्तज्वर दस दिन में पकता है और ग्यारहवें दिन भोजन दिया जाता है। कफज्वर बारह दिन में पचता है और तेरहवें दिन भोजन दिया जाता है। वातज्वर सात दिनमें पचता है और सातवें दिन ही अन्न दिया जाता है। इसका कारण यह

है कि, कफ और पित्त पतले होते हैं, वे अधिक लंघन सह सकते हैं ; परन्तु वायु तो आम पक जाने के बाद क्षण भर भी लंघन नहीं सह सकता। मतलब यह है, कि वायु के निराम होने पर, अगर भोजन न दिया जाय, तो वह शीघ्रकारी होने के कारण विकलता —घबराहट प्रभृति विकार पैदा कर देता है।

सामान्य ज्वर में पाचन कषाय।

नागरादि क्वाथ।

सोंठ, देवदारू, रोहिषतृण, कटेरी और बड़ी कटेरी—इनको बराबर-बराबर आधा-आधा तोला लेकर काढ़ा बनाओ। इसको "नागरादि क्वाथ" कहते हैं। सब तरह के ज्वरों में, ज्वरके पचानेके लिये, यह क्वाथ "सुश्रुत" और "शार्ङ्गधर" के मत से अच्छा समझा गया है।

नोट—यह पाचन काढ़ा है। यह दोषों को पकाता है। रोग को आराम करनेवाला-संशमन काढ़ा—इस से दोष पक जाने पर देना चाहिये। पहले संशमन काढ़ा नहीं देना चाहिये। हाँ, दोष पके हुए हों, तो संशमन काढ़ा दे सकते हो।

अगर "रोहिषतृण" न मिले, तो उसके बदले में "ख़स" लेनी चाहिये। कोई-कोई उसके बदले में "धनिया" लिखते हैं।

नोट—काढ़ा पिलाते समय रोगीको उत्तर या पूरब तरफ मुँह करके बिठाओ। ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराकर काढ़ा पिलाओ। काढ़ा पिलाने पर काढ़ेके बर्तनको नीचा मुँह करके औंधा रखदो। रोगीसे कह दो, लेट रहो, पर सोना मत ; काढ़ा पीकर एक घण्टे तक जल पीनेकी भी मनाही कर दो। यह काढ़ा पीनेकी उत्तम विधि है।

सूचना—अगर कभी पाचन काढ़ा पीनेसे ग्लानि और विकलता पैदा होजाय, तो वमन करानेवाली दवा देकर उसे निकाल दो और पथ्यमें शमन क्वाथ दो।

सब तरहके ज्वरों पर सामान्य संशमन औषधियाँ।

दूध पाक।

सफेद पुनर्नवा (साँठ), बेलका गूदा और लाल पुनर्नवा (गदह-पुनेरा) इन तीनों को चार तोले लेकर, ३२ तोले दूध और दूध से चौगुने १२८ तोले जल को लेकर, सबको एकमेक कर मिट्टी की हाँड़ी में पकाओ। जब पानी जल जाय, केवल दूध रह जाय, उतार कर छान लो। पीछे शीतल होने पर रोगी को पिलाओ। महर्षि सुश्रुत कहते हैं, इस नुसखे को वैद्य सब तरह के ज्वरों में दे सकता है। इस से सब तरहके ज्वर नाश होते हैं।

नोट—"नागरादि क्वाथ" से दोष पका कर, यह नुसख़ा देना चाहिये। जो दोषों के अंशांश को न जान सके, (यह वातज्वर है या पित्त ज्वर है, या वातकफ ज्वर है, ऐसा निर्णय न कर सके) उसके लिए सब तरह के ज्वरों में "नागरादि क्वाथ" और दोष पक जाने पर यह "दूध पाक" का नुसख़ा देना चाहिये। इन से ज्वर की क़िस्म न समझने पर भी, हानि नहीं, लाभ की ही संभावना है।

सर्वज्वरोंपर

दूसरा दूध पाक।

एक हिस्सा जल और दो हिस्सा दूध लेकर, उसमें शीशम का बुरादा और ख़स डाल कर पकाओ। जब पानी जल कर दूध-मात्र रह जाय, छान कर रोगीको पिलाओ। इसके पीने से सब तरह के ज्वर जाते हैं।

नोट—दूधपाक बनाना हो, तो ४ तोला दवा, ३२ तोला दूध, १२८ तोला पानी मिला कर औटाना और जब जल जल जाय, दूध मात्र रह जाय, छान कर और शीतल करके पिलाना। यह दूध पाक की विधि उत्तम है। दूध-पाक इसी तरह किया जाता है। यह

दूसरी तरकीब है। इसमें जलसे दूध दूना लिया जाता है; और उस में दूधसे चौगुना जल लिया जाता है।

सब तरह के ज्वरों पर

गुडूच्यादि क्वाथ।

गिलोय, धनिया, नीम की छाल, पद्माख और लालचन्दन,— इन सब दवाओं को बराबर-बराबर आधा आधा तोला लेकर, काढ़ा बनाकर पिलाओ। इस काढ़े से सब तरह के ज्वर निश्चय ही आराम होते हैं। यह जगत्प्रसिद्ध क्वाथ ज्वरों को हरनेवाला, अग्नि दीपन करनेवाला, दाह, उबकाई, प्यास, वमन और अरुचि को नाश करनेवाला है।

नोट—यह काढ़ा हमारा आज़माया हुआ है। अगर इस का अर्क़ भभकेसे खींच लिया जाय,तो इसका स्वाद भी अच्छा हो जाता है। देखनेमें भी साफ रहता है। महीने दो महीने रक्खे रहनेसे बिगड़ता भी नहीं। समय पर तैयार रहता है। औटाने छानने की दिक़त मिटती है। हम इसे सब तरहके ज्वरोंमें आँख बन्द करके देते थे। सदा लाभ होता था। हाँ, इतनी-बात है कि, धीरे धीरे आराम करता है। अर्क़ जवान आदमी को २ तोले या २॥० तोले देना चाहिये।

अर्क़ खिंचवाना हो,तो पाँचों दवाएँ बराबर-बराबर लेनी चाहियें। कुल वज़न पौने चार सेर होना चाहिये; यानी प्रत्येक दवा तीन-तीन पाव लेनी चाहिये और मिट्टी या काठके बासनमें अथवा चीनीके या क़लईके बरतनमें २४ घण्टे तक दस बारह सेर पानी डालकर भिजो देनी चाहियें। दूसरे दिन अर्क़ निकाल लेना चाहिये। पीछे साफ सफेद बोतलोंमें भरकर काग लगा देने चाहियें। इसे "अमृतादि या गुडूच्यादि अर्क़" कहते हैं। यह अर्क़ सब तरहके ज्वरोंमें आँख बन्द करके देनेसे निश्चयही लाभ होता है; पर जल्दी न करनी चाहिये।

यह धीरे धीरे आराम करता है ; पर पक्का आराम करता है। इससे गया हुआ बुख़ार बरसों नहीं आता।

नोट—जिस दवाका अर्क़ बनाना हो, उसे २४ घन्टे तक तिगुने पानीमें क़लईदार या चीनीके या मिट्टीके हो बर्तनमें भिगो रखना चाहिये। पीछे भभकेसे अर्क़ निकालना चाहिये। जितनी दवा हो, उतनाही अर्क़ निकाला जाय, तो वह अर्क़ अव्वल दर्जेका होता है। ऐसे अर्क़में बड़ा गुण होता है।

सब तरहके ज्वरोंमें पेट साफ करनेको

आरोग्य पञ्चक।

अमलताशका गूदा, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी और जङ्गी हरड़,—इन पाँचोंका काढ़ा आम और शूलयुक्त कफ, वात और पित्तज्वरमें अत्यन्त हितकारी है। दीपन और पाचन है। "शार्ङ्ग धर"में लिखा है, यह काढ़ा वातकफज्वर और आमके शूलको तत्काल नष्ट करता है। इससे मल साफ होकर दीपन पाचन होता है। इस को "आरग्वधादि क्वाथ" भी कहते हैं।

नोट—नये बुख़ारमें कषाय या काढ़ा देना मना है, क्योंकि नवीन ज्वरमें, आमकी हालतमें, कषैले रस और सम्पूर्ण कषाय देनेसे दोष रुक जाते हैं, पचते नहीं तथा विषमज्वर पैदा करते हैं, इसीसे नये बुख़ारमें जबतक दोष न पके, काढ़ा देना न चाहिये ; पर इस "आरोग्य पञ्चक" या "आरग्वधादि क्वाथ"की नवीनज्वरमें मनाही नहीं है। क्योंकि यह आम-पाचक, त्रिदोषनाशक, शूलनाशक और दीपक है। बड़ी उत्तम चीज़ है। पचकर दस्त होता है, और ज्वर में भी फायदा होता है। यह "वातकफज्वर" पर विशेष रूपसे चलता है।

दूसरा आरोग्य पञ्चक।

हरड़, अमलताशका गूदा, कुटकी, निशोथ और आमले,—इन

पाँचोंका काढ़ा आमसहित जीर्णज्वरमें पाचन है। यह साफ दस्त लाता है।

सारिवादि कल्क ।

अनन्तमूल, गोरोसाँव, सुगन्धवाला, नागरमोथा, सोंठ और कुटकी,—इन छहों दवाओंको बराबर-बराबर कुल एक तोले लेकर, मन्दोष्ण (न बहुत गरम न शीतल) जलमें पीसकर, पीनेसे, थोड़ेही दिनोंमें सब तरहके ज्वर आराम हो जाते हैं। इस कल्क* से कोठा साफ होता और जठराग्नि दीपन होती है।

सर्वज्वरनाशक

सुदर्शन चूर्ण ।

त्रिफला, हल्दी, दारुहलदी, कटेरी, कटाई, कचूर, त्रिकुटा, पीपलामूल, मूर्वा, गिलोय, धमासा, कुटकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, त्रायमाण, सुगन्धवाला, नीमकी छाल, पोहकरमूल, मुलेठी, कुड़ेकी छाल, अजवायन, इन्द्रजव, भारंगी, सहँजनेके बीज, सोरठकी मिट्टी, वच, दालचीनी, पद्माख, खस, चन्दन, अतीस, खिरेंटी, शालिपर्णी (सरिवन), पृश्निपर्णी (पिथिवन), बायविड‌ङ्ग, तगर, चीता,

* गीली दवा चटनी या भाँगकी तरह खूब महीन पीसनी चाहिये। अगर दवा या दवाएँ सूखी हों, तो पानी डालकर पीसनी चाहियें। इसीको "कल्क" कहते हैं। कल्कके सेवन करनेकी मात्रा एक तोलेकी है। अगर कल्कमें शहद, घी या तेल डालना हो, तो कल्कसे दूना डालना चाहिये। अगर खाँड़ या गुड़ डालना हो तो कल्कके समान डालना चाहिये। दूध पानी वगेरः पतले पदार्थ डालने हों, तो कल्कसे चौगुने डालने चाहियें।

पोहकरमूल न मिले तो कूट लेना, भारंगीके अभावमें कटेरीकी जड़, सोरठकी मिट्टीके अभावमें फिटकरी; तगरके अभावमें कूट, तालीस पत्रके अभावमें स्वर्णा-तालीस या कटेरीकी जड़। जीवक और ऋषभक न मिले तो दोनोंके बदलेमें दो भाग विदारीकन्द लेना और काकोली न मिले तो असगन्धकी जड़ या मुलहटी लेना। जब तक मिल सकें असल दवा लेना ; न मिलने पर अभावमें बदल लेनेकी शास्त्रमें आज्ञा है। बदल या प्रतिनिधियोंके लिये पहले भागके ३०३-३०७ पृष्ठ देखिये।

देवदारु, चव्य, पटोलपत्र, जीवक, ऋषभक, लौंग, वंसलोचन, पुण्डेरिया, सुगन्धद्रव्य, काकोली, तेजपात, तालीसपत्र और जावित्री—इन सब ५० दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, सबका आधा चिरायता लो। पीछे सबको मिलाकर हिमामदस्तेमें कूटकर, बारीक चलनीमें छान लो। इसका नाम "सुदर्शन चूर्ण" है।

नोट—इस सुदर्शण चूर्णमें ५० औषधियाँ हैं और इक्यावनवीं "चिरायता" है। अगर ५०दवाओंको एकएक तोले लोगे, तो सब वज़न ५० तोले होगा। इस दशामें चिरायता २५ तोले लेना होगा; तब सब वज़न ७५ तोले हो जायगा। सबको कुटवाकर, बहुत बारीक तारोंकी चलनीमें छान लेना। पीछे एक मिट्टीकी हाँड़ी या अमृतबानमें भरकर रख देना। रोगोकी ताक़त देखकर मात्रा देना। जवानको ३ माशेसे ६ माशे तक और बालकको १ माशेसे १॥ माशे तक देना चाहिये।

यह "सुदर्शन चूर्ण" तीनों दोषोंको हरता है और सब तरहके ज्वरों को निस्सन्देह नष्ट करता है। इसके सेवनसे दोषज, आगन्तुज, धातुगत ज्वर, विषमज्वर, सन्निपातज्वर और मानसिक ज्वर निश्चयही आराम होते हैं। ज्वरोंमें होनेवाले शीतादि दोष, दाहादि दोष—जाड़ा लगना या गरमीसे जलन होना, प्रमेह, तन्द्रा, भ्रम, प्यास, खाँसी, श्वास, पीलिया, हृदयका रोग, कामला रोग, त्रिकस्थानका दर्द, पीठका दर्द, कमरका दर्द, जाँघोंका दर्द और पसलियोंका दर्द—ये सब इससे आराम होते हैं। जिस तरह विष्णुका सुदर्शन चक्र दैत्यों का नाश करता है, उसी तरह यह ज्वरोंका नाश करता है।

सेवन विधि—इस चूर्णको शीतल जलके साथ खाना चाहिये। अर्क हो, तो काँच या मिट्टीके बर्तनमें पीना चाहिये। पथ्य परहेज़ जैसा ज्वर हो वैसाही रखना चाहिये। ज्वरके पक जानेपर, अगर यह दिया जाता है, तो बड़ा चमत्कार दिखाता है। कच्चे ज्वरमें न देना चाहिये। यह हमारा आज़माया हुआ है। पहले हम चूर्ण देते

थे। पीछे अर्क खींचकर देने लगे, तब तो इसके देनेसे जो सफलता हुई, वह अकथनीय है।

अगर इस चूर्णकी दवाओंका गुडूच्यादि अर्ककी तरह अर्क खींच लिया जाय, तब तो कहनाही क्या है। अर्क बड़ा काम देता है। पीनेमें उतना बुरा नहीं लगता। उसी तरह अढ़ाई सेर या पौने चार सेर सब दवायें लेकर, अर्क खिँचवाना चाहिये। मात्रा बलाबल देखकर २ तोले तक देनी चाहिये। बालक और स्त्रियोंको सदा हलकी मात्रा देनी चाहिये। पौने चार सेर दवाओंका १० बोतल अर्क अच्छा तेज़ होता है।

निम्बादि चूर्ण।

नीमके पत्ते १० भाग,हरड १ भाग, आमले १ भाग, बहेड़ा १ भाग, सोंठ १ भाग, मिर्च १ भाग, पीपल १ भाग, अजवायन ५ भाग, सैंधा नोन १ भाग, विरियासंचर नमक १ भाग, कालानमक १ भाग और जवाखार २ भाग—इन सब को कूट छानकर रख लो। इसे सवेरेके समय खाना चाहिये।

इसके खानेसे रोज़ आनेवाला, दूसरे दिन आनेवाला, तीसरे दिन आनेवाला, चौथे दिन आनेवाला, दिन रातमें एक बार आनेवाला, दो बार आनेवाला ; सात दिन, दस दिन या बारह दिन तक एकसा बना रहनेवाला, धातुगत ज्वर और तीनों दोषोंसे उत्पन्न हुआ ज्वर— ये सब ज्वर निश्चय ही आराम होते हैं।

नोट—हमारी जाँचमें यह निम्बादि चूर्ण विषमज्वरोंपर अच्छा साबित हुआ है। मात्रा सुदर्शन चूर्णके समान है।

शठ्यादि क्वाथ।

कचूर, हल्दी, दारूहल्दी, सोंठ, पोहकरमूल, इलायची, गिलोय, कुटकी, पित्तपापड़ा, जवाखार, काकड़ासिंगी, चिरायता, देवदारू और दशमूलकी दसों औषधियाँ—कुल २३ औषधियोंको बराबर

बराबर एक-एक माशे लेकर काढ़ेकी तरकीबसे काढ़ा बनाकर, पीछे उसमें ३ या ४ माशे पिसा हुआ सेंधानोन डालकर, सुहाता-सुहाता पी जाओ। इसके पीनेसे सब तरहके ज्वर निस्सन्देह आराम होते हैं।

नोट—यह काढ़ा परीक्षित है। रोगी बलवान हो, तो प्रत्येक दवा दो दो माशे भी ले सकते हो।

गुडूच्यादि चूर्ण।

गिलोय, पीपरामूल, पीपल, हरड़ जंगो, लौंग, नीमकी छाल, सफेद चन्दन, सोंठ, कुटकी और चिरायता—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्ण को गरम जलके साथ सेवन करने से सब तरहके ज्वर आराम होते हैं। यह चूर्ण हमारा परीक्षित है। माता सुदर्शन चूर्णके समान समझनी चाहिये।

आमलक्यादि क्वाथ।

आँवला, चित्रक, छोटी हरड़ और पीपल—इन चारोंको मिलाकर २॥० तोले लेलो। पीछे काढ़ा बनाकर पिलाओ। इस काढ़े से सब तरहके ज्वरोंमें लाभ होता है। अथवा उपरोक्त चारों चीज़ों का चूर्ण बनाकर और चूर्ण में सैंधानोन मिलाकर, रोगीको गरम जलके साथ पिलाओ। यह भी परीक्षित है।

नागरादि चूर्ण।

सोंठ, धमासा, खस, नागरमोथा और कुटकी—इनको बराबर-बराबर लेकर, चूर्ण करलो। इस चूर्णके गरम जलके साथ सेवन करनेसे, सब तरहके ज्वरोंमें फायदा होता है। यह चूर्ण ज्वरनाशक और अग्निप्रदीपक है। परीक्षित है।

भारंग्यादि चूर्ण।

भारंगीकी जड़ ८ तोला, काकड़ासिंगी ८ तोला, चव्य ८ तोला, तालीसपत्र ८ तोला, कालीमिर्च ८ तोला, पीपल १२ तोला, सोंठ २४ तोला, दालचीनी ४ तोला, इलायची ४ तोला, तेजपात ४ तोला, नागकेशर ४ तोला, खसकी जड़ ४ तोला

और सफेद खाँड़ ४ तोला—इन सबको कूट पीसकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे आठों प्रकारके ज्वर नाश होते हैं। साथ ही खाँसी, श्वास, सूजन, पेटका अफारा वगैरः भी आराम होते हैं। यह चूर्ण त्रिदोष नाशक है। परीक्षित है।

हरीतक्यादि वटी। *

हरड़, निशोथ, त्रिधारा और विधारा—इन चारोंको आठ-आठ तोले लो। पीपल, सोंठ गिलोय, गोखरू, शतावर, सहदेई और वायविड़ङ्ग चार-चार तोले लो। कुल वज़न ६० तोले होगा। इन सबको एक जगह महीन कूट पीसकर छान लो। पीछे शहद मिला कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे ज्वर, खाँसी, श्वास, दस्तकब्ज और अग्निमन्दता नाश होती है।

नोट—पहले पिसे छने हुए चूर्णको खरलमें डालकर, ऊपरसे शहद देदेकर खूब खरल करो। पीछे गोलियाँ बनाओ। यह नुसखा भी परीक्षित है।

---

* गुटिका, वटी, मोदक, वटिका, पिण्डी, गुड़ और वत्ती,—ये सात गोलियोंके नाम हैं। गुड़, खाँड या गूगलका पाक करके, उस पाकमें दवाओंका चूर्ण मिलाकर गोली बनानी चाहिएँ। अगर विना पाक किये गोलियाँ बनानी हों, तो गूगलको शोधकर और पीसकर और चूर्णमें मिलाकर, घी से गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर जल, शहद, दूध आदि पतली चीजोंमें चूर्ण डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो इनमें चूर्णको डालकर और खरल करके गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर खाँड़ या मिश्री आदि डालकर गोली बनानी हों, तो चूर्णसे चौगुनी खाँड़ या मिश्री मिलाकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर गुड़ डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो चूर्णसे दूना गुड़ डालकर गोली बनानी चाहियें।

अगर गूगल और शहद दोनों डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो इन दोनोंको चूर्णके बराबर लेकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर दूध या पानी वगैरः पतले पदार्थोंसे गोलियाँ बनानी हों, तो चूर्णसे दूने लेकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

उदकमंजरी रस।

शोधा हुआ पारा १ भाग, शोधी हुई गन्धक १ भाग, कालीमिर्च १ भाग, भुना हुआ सुहागा १ भाग, सफेद खाँड़ ४ भाग और मछलीका पित्ता ४ भाग—इन सबमेंसे पहले पारे और गन्धकको खूब खरल करके कजली बना लो। पीछे शेष चारोंको खरलमें डालकर और साथ ही पारे और गंधककी कजली डालकर, तीन दिनतक, बराबर घोटो। यही "उदकमंजरी रस" है।

हर किसी तरहके नवीन ज्वरमें इस रसको १ या २ रत्ती बलाबल देखकर, अदरखके रसके साथ खिलाओ।

अगर गरमी बहुत मालूम हो, शीतल जल पिलाओ और पंखेकी हवा करो। अगर ज़ियादा गरमी लगे, पित्तकी तेज़ी हो, तो सिर पर शीतल जलकी धारा दो।

इस रसके खानेवालेको भूख लगे तो "माठा" भात और बैंगन दो। ये पथ्य हैं। इसके सेवन करनेसे तेज़ नया ज्वर एक ही दिनमें भाग जाता है।

नोट—पारा, गन्धक और सुहागा—इनको बिना शोधे कभी मत लेना। इन सबके शोधनेकी विधि पुस्तकके अन्तमें लिखी है।

ज्वरधूमकेतु रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध समन्दरफेन, शुद्ध सिंगरफ और शुद्ध गन्धक—इन चारोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे अदरखका रस दे देकर खरल करो। एक पहर तक खरल होने पर, तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बनालो। रोगीका बलाबल देखकर, पूरी या आधी गोली अदरखके रसके साथ खिलाओ। एक दिनमें एक गोली खानेसे नवीन ज्वर अवश्य चला जायगा।

नोट—सिंगरफ और समन्दरफेन प्रभृतिके शोधनेकी विधि पुस्तकके-अन्तमें लिखी है।

ज्वरघ्नी रस।

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, शुद्ध सिंगरफ ३ भाग और शुद्ध जमालगोटेके बीज ४ भाग—पहले पारे और गन्धकको खरल करलो ; पीछे उसी कजलीमें सिंगरफ और जमालगोटेके बीज डालकर खरल करो। खरल करते समय दन्ती या जमालगोटेकी जड़का रस डालते जाओ। खूब घुट जानेपर, चिरमिटीके बराबर गोलियाँ बना लो।

नवीनज्वरमें, सवेरे ही, एक गोली शीतल जल और सफेद चीनी के साथ सेवन करानेसे नया ज्वर एक ही दिनमें उड़ जाता है। आज़मानेवाले सज्जनको ज्वार या सरसों के बराबर गोलियाँ बनानी ठीक होंगी।

सर्वज्वरहरी वटी।

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, शुद्धवत्सनाभ विष ३ भाग, सत्यानाशी कटेरीकी जड़ ४ भाग और शुद्ध जमालगोटेके बीज ५ भाग,—इन सबको एक जगह पीसकर, खरलमें डालकर, नीबूकेरसके साथ खरल करो। खरल हो जाने पर, कालीमिर्चके बराबर गोलियाँ बनालो। प्रत्येक दिन १ गोली अदरखके रसके साथ सेवन कराओ। इन गोलियोंके सेवन करनेसे जीर्णज्वर, अजीर्णज्वर, सामज्वर, विषमज्वर तथा और सब ज्वर उस तरह भस्म होते हैं, जिस तरह दावाग्निसे वन भस्म होता है।

श्वासकुठार रस।

शुद्ध पारा ३ माशे, शुद्ध गन्धक ३ माशे, शुद्ध वत्सनाभविष ३ माशे, शुद्ध सुहागा ३ माशे, शुद्धमैनसिल ३ माशे, कालीमिर्च २ तोला, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च पीपर) १॥ तोला—इन सबको खरल करके शीशीमें भरलो। यह रस सब तरहके ज्वरोंको नाश करता है। हमारा आज़माया हुआ नहीं है।

हुताशन रस।

सोंठ १ तोला, शुद्ध सुहागा २ तोला, कालीमिर्च १॥ तोला, कौड़ी की भस्म १॥ तोला और शुद्ध विप ३ माशे,—इन सबको एकल महीन पीसकर शोशोमें भर लो। इसकी मात्रा १ रत्तीकी है। ज्वरमें हर दिन १ रत्ती खाना चाहिये। यह रस सब तरह के ज्वरोंको नाश करता है।

ज्वरघ्नी वटी।

शुद्ध पारा १ भाग, भूरिछरीला ४ भाग, पीपल ४ भाग, जङ्गीहरड़ ४ भाग, अकरकरा ४ भाग, सरसोंके या कड़वे तेलसे शोधी हुई गन्धक ४ भाग और इन्द्रायनके फल ४ भाग—इन सब को लेलो। पहले गन्धक और पारेको खरल करो। पीछे इस खरल की हुई कज्जलीमें और सबका पीसा हुआ चूर्ण मिला दो; ऊपरसे इन्द्रायन के फलोंका रस डाल-डाल कर खूब खरल करो। घुट जानेपर उड़दके बराबर गोलियाँ बनालो।

इन गोलियोंको बलाबल देखकर, गिलोयके रसके साथ सेवन कराओ। इन गोलियोंसे नवीनज्वर नाश होता है। हमने यह नुसखा "भावप्रकाश"से लिया है। "भावप्रकाश"में भूरिछरीला जहाँ लिखा है "शार्ङ्गधर"में वहाँ 'एलुआ' लिखा है। असलमें यह नुसखा "शार्ङ्गधर" का ही है।

नवज्वरहरी वटी।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्धवत्सनाभ विष, सोंठ, पीपल, काली-मिर्च, हरड़, बहेड़ा, आमला, शुद्ध किये हुए ज़मालगोटेके बीज—इन सबको बराबर-बराबर लेलो। पारे और गन्धकको खरल करके उस कजलीमें शेष आठों दवाओंके चूर्णको मिला दो। पीछे खर-लमें द्रोणपुष्पी या गूमा का रस इतना भर दो कि, सब चूर्ण डूबजाय; पीछे खरल करो। जब सूखकर गोली बनाने योग्य हो जाय, तब

उड़दके बराबर गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंसे नवीन ज्वर जाता है, यह बात "भावप्रकाश"में लिखी है।

ज्वरघ्न वटिका।

शुद्ध जमालगोटेके बीज ४ माशे, कुटकी ८ माशे और गेरू ४ माशे—इन तीनोंको खरलमें डालकर, घीग्वारके रससे खरल करो और मटरके बराबर गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक गोली नित्य सेवन करनेसे जीर्णज्वर जाता है।

महाज्वरांकुश रस।

शुद्ध पारा ३ माशे, शुद्ध वत्सनाभ विष ३ माशे, शुद्ध आमलासार गन्धक ३ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज ६ माशे, चोक ३६ माशे—इन सबको लेकर, पहले शोधे हुए गन्धक और पारेको खरल कर लो। पीछे उस कज्जलीमें शेष सबका चूर्ण मिलाकर खरल कर लो। यही "महाज्वरांकुश रस" है। यह रस जम्भीरी नीबूके रसमें अथवा अदरखके रसमें दो दो रत्तीकी मात्रासे रोगीको दो।

यह महाज्वरांकुश रस "शार्ङ्गधर"में लिखा है। इसके सेवन करने से त्रिदोषज्वर, नित्य आनेवाला ज्वर, दिन रातमें दो बार आनेवाला ज्वर, इकतरा, तिजारी और चौथैया—ये सब ज्वर नष्ट होते हैं। यह बात "शार्ङ्गधर"में लिखी है। "भावप्रकाश"के लेखक महाशयने यद्यपि इसे "शार्ङ्गधर"से लिया है; तथापि उन्होंने उपरोक्त ज्वरोंके सिवाय इससे नवीन ज्वर, जीर्ण ज्वर प्रभृति सब तरहके ज्वरोंका जाना भी लिखा है।

हमने इसे सैकड़ों बार आज़माया है; पर हम इससे शीतपूर्वक विषमज्वरों यानी जाड़ा लगकर आनेवाले ज्वरोंको ही आराम कर सके हैं। जाड़ा लगकर आनेवाले इकतरा, तिजारी और चौथैया प्रभृतिमें यह सचमुच ही अचूक रामबाण है। अच्छी-से-अच्छी तेज़ अङ्गरेज़ी दवा इसकी बराबरी नहीं कर सकती।

हमारी परीक्षित विधि।
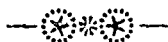
हम उपरोक्त सब दवाओंको घोटकर गोलियाँ बनाते हैं। अगर चूका सूखा होता है, तो जँभीरी नीबूका रस डाल कर घोटते हैं और पीछे सरसोंके बराबर गोलियाँ बना लेते हैं। हम ताक़तवरको दो और कमज़ोरको एक गोली ताज़ा पानीसे निगलवा देते हैं। हम चढ़े हुए ज्वरकी हालतमें कभी गोली नहीं खिलाते। यद्यपि विषम ज्वर सर्वथा शरीरके बाहर नहीं जाता, तथापि अपने समय पर एक तरहसे उतर ही जाता है। जब रोगीका बदन गरम नहीं रहता; रोगी कहता है अब ज्वर नहीं है; थर्मामीटरसे टेम्परेचर या ताप ९८, ९८॥ या ९९ डिग्री तक रहता है; तब हम रोगीको ज्वर आनेके समयसे १२ घण्टे या ६ घण्टे पहले, हर दो दो घण्टेपर, एक-एक गोली ताज़ा जलसे निगलवाते हैं। अगर गोली खिलाते-खिलाते ज्वर चढ़ आता है, तो गोली खिलाना बन्द कर देते हैं। ज्वर उतर जानेपर, बारीके दिन, अगर ज्वर नित्य आता हो तो, ६ या ८ घण्टे पहले फिर उसी तरह गोली खिलाते हैं। इस तरह करनेसे हठीसे हठी जाड़ा लगकर चढ़नेवाला बुख़ार अव्वल तो एक ही पारीमें—अगर १ में नहीं तो २ या ३ पारीमें तो अवश्य ही छूमंतकी तरह उड़ जाता है। इन गोलियों से हमें बहुत कुछ यश मिला है। मान लो, किसी रोगी को दिन के २ बजे बुख़ार आनेवाला हो, तो आप रातके २ बजे २ गोली निगलवा दें, पीछे ४ बजे १ गोली, फिर सवेरेके ६ बजे, फिर ८ बजे, फिर १० बजे और फिर १२ बजे गोली निगलवा दें। अगर २ बजे भी ज्वर न चढ़े, तो २ बजे १ गोली और निगलवा दें। परमात्मा की दया से उसी दिन ज्वर बिदा हो जायगा। अगर उस दिन समय टाल कर ज्वर ३ बजे, ४ बजे या ५।६ बजे आजाय; तो दूसरे दिन या दूसरी पारी को उपरोक्त विधि से जिस समय ज्वर चढ़े, उस

से १२ घण्टे पहले गोली खिलावें। अगर रोगी कमज़ोर हो, तो तीन तीन घण्टे पर एक एक गोली खिलावें।

जाड़ेके ज्वरों का यह क़ायदा है, कि रोगी को एक दो हलके दस्त करा देने से फ़ौरन ही भाग जाते हैं। अनेक वार तो विना किसी दवा के केवल दस्त करा देने से ही चले जाते हैं। इसलिये "स्वास्थ्यरक्षा"के आरम्भ में ही लिखे "पंचसकार चूर्ण" की १ खूराक रोगी को, रात को सोते समय, गरम जलसे खिला देना अच्छा होगा। अगर यह न हो, तो "हरड़ का मुरब्बा" खिला कर (गुठली निकाल कर), ऊपर से पाव भर गरम दूध पिला देना चाहिये अथवा और कोई उत्तम हलकी दस्तावर दवा दे देनी चाहिये। इस तरह दस्त करा देने से एक या दो पारी में बाज़ी बद कर जाड़ा लग कर आनेवाला बुखार—चाहे वह तिजारी और चौथैया ही क्यों न हो—काफ़ूर हो जाता है।

"वैद्यविनोद"में लिखा है—

> विषमंतु निहंत्यूर्ध्वमधोवा शोधनम्परम्।
> एकैका मधुनाहन्ति त्रिवृत्कृष्णा हरीतकी॥

वमन और विरेचन से विषमज्वर नाश हो जाता है। निशोथ, पीपल और हरड़—इन में से किसी एक को शहत के साथ चाटने से भी विषमज्वर चला जाता है। दस्त कराने के लिये ज्वरमें और ख़ास कर विषमज्वरमें, शहतके साथ निशोथ का ३।४ या ८।१० माशे चूर्ण चटाना बहुत अच्छा है। "चरक"में कहा है, दस्त करानेवाले पदार्थों में "निशोथ" सर्वोत्तम है।

<u>सावधानी</u>—ये गोलियाँ गरम हैं, इन में विष पड़ा हुआ है; इसलिये रोगी की ताक़त देख कर कम या ज़ियादा देनी चाहियें। जल्दी आराम करने के लिये, अधिक गोलियाँ न खिलानी चाहियें। बलवान को ६ गोली और निर्बल को ३ या २ गोली देनी चाहियें। रोग को १ दिन देर से आराम करना भला, पर जल्दी करके उपद्रव

मोल लेना अच्छा नहीं ; १४।१५ साल के बालक को या तो यह गोली देनी ही नहीं ; अगर देनी ही हो, तो बुख़ार आने से पहले आधी-आधी गोली, दिनमें ३ बार, दो दो घण्टे में देना अच्छा है।

अगर रोगी को गरमी बहुत लगे—प्यास का ज़ोर हो, तो मिश्री खिलानी चाहिये और ऊपर से शीतल जल पिलाना चाहिये। मिश्री के टुकड़े खाकर शीतल जल पीने से रोगीकी प्यास कम होती और बेचैनी मिटती है। अगर सिर में दर्द हो या उबकियाँ आती हों, तो ज्वरके उपद्रवों में लिखे हुए उपाय ऊपर से अलग करते रहना उचित है। अगर ज्वर न चढ़ा हो, गोली बहुत गरमी करे, तो १ बार चीनी या मिश्री का शर्बत पिलाना चाहिये।

पथ्य—इस दवा से ज्वर छोड़ जाने या उतर जाने पर दूध, भात और मिश्री खिलानी चाहिये। अगर रोगी को ज्वर ने छोड़ा न हो, तो दूधमें साबूदाना पका कर मिश्री मिलाकर देना चाहिये। ज्वर छोड़ जाने पर दूध, भात, मिश्री इन गोलियों की लाग है।

नोट—बहुत बार ऐसा होता है, कि एक दो रोज़ इन गोलियों के खिलाने से ही जाड़ा लगना बन्द हो जाता है। एक तरह से ज्वर चला जाता है ; पर शरीरमें कुछ हरारत सी किसी-किसी को होने लगती है। अगर ऐसा हो, तो गन्नेकी गँडेरी चुसाना या "शर्करोदक" पिलाना ठीक होगा। अकसर पित्त बाकी रह जाने से ऐसा हुआ करता है। गन्ने के चूसने और शर्करोदक के पीने से निश्चय ही वह हरारत जाती रहती है। (देखो पृष्ठ ७५।७६)।

वातज्वर की चिकित्सा।

वातकोपके कारण।

रूखे, हलके और शीतल पदार्थों के सेवन करने, ज़ियादा मिहनत करने, वमन विरेचनादि पंच कर्मों के अतियोग, मल मूत्र आदि वेगों के रोकने, उपवास या व्रत करने, शस्त्र लकड़ी वगैरः की चोट लगने, बेक़ायदे स्त्रीप्रसङ्ग करने, घबराने, शोक करने, अत्यन्त खून निकलने, रात में जागने, शरीर को टेढ़ा तिरछा करने प्रभृति कारणों से वायु कुपित होकर रोग उत्पन्न करता है।

वातज्वर कैसे होता है ?

वातकारक आहार विहारों से वायु कुपित होती है। कुपित वायु आमाशयमें घुस कर, आहारके सारभूत रस को दूषित करती है। उस समय रस और पसीनों का बहना बन्द हो जाता है, अतएव पाचक अग्नि मन्द हो जाती और जठराग्नि की गर्मी बाहर निकल जाती है। उस समय वायु ही स्वतंत्र मालिक बन बैठता और अपनी कारस्तानी करता हुआ वातज्वरको उत्पत्ति करता है।

वातज्वरके पूर्व्वरूप।

जब वातज्वर होनेवाला होता है, उस से कुछ पहले—प्रथम तो बिना मिहनत किये थकान सी मालूम होती है, फिर शरीर का गिरना प्रभृति लक्षण होते हैं। इसके बाद जम्हाइयाँ आने लगती हैं।

वातज्वरके लक्षण।

वेपथुर्विषमो वेगः कंठोष्ठमुखशोषणम्।
निद्रानाशः क्षवः स्तंभो गात्राणां रौक्ष्यमेव च॥
शिरोहृद्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यं गाढ़विट्कता।
शूलाध्माने जृंभणं च भवन्त्यनिलजे ज्वरे॥

शरीरका काँपना, ज्वरका कभी तेज़ होना और कभी मन्दा होना; कंठ, होठ, मुख या तालू का सूखना; नींद और छींकों का न आना, शरीरमें रूखापन होना; सिर, हृदय और शरीरमें दर्द होना, मुँह का ज़ायका बिगड़ जाना या कषैलासा हो जाना, पाख़ाना न होना और अगर होना तो सूखासा और थोड़ासा होना, जम्भाई आना, पेट में अफारा होना और मीठा-मीठा दर्द चलना—ये लक्षण वातज्वरमें विशेषरूप से होते हैं। ये लक्षण "सुश्रुत"में लिखे हैं।

"चरक"में लिखा है—ज्वर सदैव एकसा न रहे, कभी घटे और कभी बढ़े; नाखुन, नेत्र, चेहरा, मल, मूत्र और चमड़ा ये कठोर हो जायँ और लाल-लाल मालूम हों; शरीर में स्थिर और अनस्थिर दर्द हो, पैर सो जायँ, पैरों की पिंडलियाँ ऐंठें, घोंटू और जोड़ अलग-अलग से जान पड़ें; कमर, पसली, पीठ, कन्धे और भुजाओं

तथा छाती में तोड़ने, दबाने, मथने, उचेलने और सूई चुभाने की सो पीड़ा हो ; ठोड़ी जकड़ जाय, कानों में आवाज़ हो, मुँह का स्वाद कषैला हो ; मुख, तालू और कण्ठ सूखें ; प्यास लगे, सूखी ओकारियाँ आवें ; छींक और डकार न आवें ; अन्नरस मिला थूक आवे ; खाने पर मन न हो, खाया पचे नहीं, दिल में दुःख हो, जँभाई आवें ; शरीर नव जाय और काँपे ; मिहनत बिना किये थकान मालूम हो ; भौंर या चक्कर से आवें ; रोगी बकवाद करे नींद न आवे ; शरीर के रोयें खड़े हो जायँ ; गरमी की इच्छा हो, रूखी, हलकी और शीतल प्रभृति गुणवाली चीज़ों से ज्वर बढ़े और इनके विपरीत चिकनी, भारी और गरम प्रभृति गुणवाली चीज़ों से ज्वर घटे ।

वाग्भट्ट भी कहते हैं,—वातज्वरमें रोएँ खड़े हो जाते हैं, दाँत खट्टे हो जाते हैं, कँपकँपी आती है और छींक नहीं आती हैं इत्यादि ।

नोट—ये सब लक्षण हों या दो चार लक्षण कम हों,तो समझ लो कि, "वातज्वर" हुआ है। लक्षणों को कण्ठाग्र (बरज़बान) रखिये और मौक़े पर ज्वरोंके पहचाननेमें काम लीजिये। जिन्हें रोगोंके लक्षण याद नहीं रहते, वे रोगोंको पहचान नहीं सकते ।

वातज्वरमें नाड़ी और नेत्र प्रभृति ।

वातज्वरमें नाड़ीकी चाल साँप और जौंक के समान होती है। गरमीमें, दोपहर या आधी रातको अगर वातज्वर होता है ; तो नाड़ी धीमी-धीमी चलती है ; किन्तु वर्षाकालमें, भोजन पचनेके बाद और पिछली रातको जब वायुके कोपका समय होता है, नाड़ी वातज्वरमें जल्दी जल्दी चलती है ; पर वह टेढ़ी, चपल और छूनेमें कुछ कम गरम होती है ।

वातज्वरमें दस्त सूखा और थोड़ा होता है। पेशाब स्याही माइल होता है। शरीर रूखा और गरम रहता है। आवाज़ घरघराती सी होती है। जीभ सख़्त, फटीसी, रूखी, गाय की जीभ की तरह खरदरी और हरे रंग की होती है। जीभ से लार गिरती, मुखका स्वाद विरस और चेहरा रूखा रहता है। आँखें रूखी, धूमिल रंग की, टेढ़ी और चंचल होती हैं।

वातज्वरके बढ़ने और पैदा हानेके समय।

भोजन पचने के बाद, सन्ध्या समय, गरमी के अन्त में; यानी "आषाढ़" में वातज्वरकी उत्पत्ति और वृद्धि होती है।

वातज्वरमें लंघन।

वातज्वर में लंघन कराना मना है! वातज्वरवाले का वायु आम-सहित हो, तो लंघन कराने चाहियें; अगर वायु आम-रहित हो तो लंघन नहीं कराने चाहियें। कफ में, आम के पक जाने पर भी, लंघन कराये जाते हैं; वात में, आमके पक जाने पर, लंघन नही कराये जाते।

वातज्वरके पकने की अवधि।

वातज्वर सात दिन में पचता है और सातवें दिन ही अन्न दिया जाता है।

चिकित्सा।

वातज्वरमें पाचन।

(१) बेल, स्योनाक, कुम्भेर, पाढ़ और अरणी—इनको "वृहत्पञ्च-मूल" कहते हैं। इन का काढ़ा बना कर, दोष पचाने के लिये,

वातज्वर में देना चाहिये। सुश्रुत, बंगसेन और भावमिश्र सभीने वातज्वर में इस पाचन को अच्छा कहा है।

(२) बंगसेन में लिखा है,—पीपरामूल, गिलोय और सोंठ का पाचन-क्वाथ वातज्वर में देना चाहिये। भावमिश्र कहते हैं, इसके पीने से वातज्वर खड़ा नहीं रहता। इसका नाम "शुंठ्यादि क्वाथ" है। शार्ङ्गधर कहते हैं, वात ज्वरके पूर्ण लक्षण होने पर, सातवें दिन के बाद इसे देना चाहिये।

नोट—यह पाचन परीक्षित है। सातवें दिनसे आरम्भ करके, सुबह शाम ३ दिन तक, इसे देना चाहिये।

(३) "हारीत-संहिता" में लिखा है,—वच, अजवायन, धनिया और सोंठ का गरमागर्म काढ़ा रात में पीना चाहिये। यह पाचन वातज्वर और वात की पीड़ा में सुखदायी है।

(४) धनिया, देवदारू, कटेरी और सोंठ—इन चारों का काढ़ा वातज्वर में उत्तम पाचन है। वैद्यविनोदकर्ता लिखते हैं, यह दीपन और पाचन है; निश्चय ही ज्वरको नाश करता है।

नोट—कटेरी दोनों लेनी चाहियें। ज्वरवाले को पहले यही पाचन-क्वाथ देना चाहिये।

वातज्वर नाशक नुसखे।

(१) बेल, कुम्भेर, पाढ़ल, सोनापाठा, अरणी, गोखरू, कटेरी, कटाई, पृश्निपर्णी, , शालिपर्णी, रायसन पीपल, पीपलामूल कूट, सोंठ, चिरायता, नगरमोथा, खिरेंटी, गिलोय, सुगन्धवाला दाख, जवासा और शतावर—इन २३ औषधियोंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनानेकी विधिसे काढ़ा बनाकर पिलाओ। इस काढ़ेसे उपद्रवों सहित वातज्वर नष्ट होता है। भावमिश्र लिखते हैं—यह योग सब योगों—नुसख़ोंसे उत्तम है। इसका नाम "दशमूलादि क्वाथ" है।

(२) चिरायता, गिलोय, सुगन्धवाला, कटाई, कटेरी, गोखरू, शालिपर्णी (सरवन), पृष्ठिपर्णी (पिथवन)—इन आठ दवाओंका काढ़ा वातज्वरको नाश करता है। इसका नाम "किरातादि काथ" है।

(३) गिलोय, पीपरामूल और सोंठ—इनके साथ इन्द्रजौका काढ़ा बनाकर, वातज्वरमें सातवें दिन पीना चाहिये।

(४) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय सुगन्धवाला, कटेरी, कटाई, गोखरू, पृश्निपर्णी शालिपर्णी और सोंठ—इन दसों दवाओंका काढ़ा वातज्वरको नाश करता है।

(५) बेलगिरी, श्योनाक, कुम्भेर, पाढ़ल, अरणी, खिरेंटी, रायसन कुलथी और पोहकरमूल—इन ६ दवाओंके काढ़ेसे सन्धियों—जोड़ोंका दर्द, शिरका काँपना और वातज्वर नष्ट होता है। वङ्गसेन और भावमिश्र दोनोंने इसे अच्छा बताया है।

(६) शालिपर्णी, खिरेंटी, रास्ना, गिलोय और सरिवन—इन पाँचों का काढ़ा सुहाता-सुहाता गर्म पीनेसे तेज़ वातज्वर नाश हो जाता है।

(७) पीपल, अनन्तमूल, दाख, खिरेंटी और शालिपर्णी—वङ्गसेन कहते हैं—इन पाँचोंके काढ़ेसे अवश्य वातज्वर नाश होता है।

(८) दाख, गिलोय, कुम्भेर, त्रायमाण और अनन्त-मूल—इन पाँचोंका काढ़ा, गुड़ मिलाकर, वातज्वर, और कफज्वरमें पीना चाहिये।

(९) पीपल, लहसन, गिलोय, सोंठ, कटेरी, सेंधानमक, चिरायता, और नागरमोथा—इन आठों दवाओंका काढ़ा, पथ्य भोजन करनेवाले रोगियोंके वातज्वर, कफज्वर, मन्दाग्नि, कंठरोध (कण्ठ रुकना), हृदयका अवरोध, पसीना, रोमाञ्च, शीत और मोह (बेहोशी) सबको नाश करता है।

(१०) चिरायता, नागरमोथा नेत्रवाला, दोनों कटेरी, गिलोय, गोखरू, सोंठ, शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी और पोहकरमूल—इन ग्यारह दवा-ओंका काढ़ा वातज्वरवालेको पिलाना चाहिये। वैद्यविनोद कर्त्ताने इसका नाम "भूनिम्बादि क्वाथ" लिखा है। सचमुच ही यह उत्तम है।

(११) जवासा, सोंठ, कुटकी, पाठा, कचूर, अड़ूसा और अरण्डकी जड़,—इन सातोंका काढ़ा पीनेसे श्वास और खाँसी तथा शूल समेत वातज्वर नाश होता है।

(१२) सोंठ, नीमकी छाल, धमासा, पाढ़, कचूर, अड़ूसा, अरण्डकी जड़ और पोहकरमूल—इन आठोंको जौकुट करके और काढ़ा बनाकर पीनेसे वातज्वर नाश होता है।

(१३) खस, पृष्ठिपर्णी, सोंठ, चिरायता, मोथा, जवासा, दोनों कटेरी, गिलोय और बड़ा गोखरू—इन दसोंको तीन-तीन माशे लेकर जौकुट करलो, पीछे काढ़ा बनाकर शीतल करलो। शीतल होने पर, ३ माशा शहद मिलाकर पिलाओ। अगर ज्वरके एक जानेपर यह काढ़ा दिया जाय, तो ३।४ दिनमें ही वातज्वरको नाश कर देता है। इसको दोनों समय पिलाना चाहिये। यह परीक्षित नुसख़ा है।

(१४) धनिया, लाल चन्दन, नीमकी छाल, गुरुच और पद्माख—इन की ६।६ माशे लेकर, डेढ़ पाव जलमें औटाओ। आधापावके क़रीब जल रहनेपर मल छानकर शीतल करलो। पीछे शहद मिलाकर दोनों समय पिलाओ। इसके दोनों वक्त पिलानेसे वातज्वर और पित्तज्वर दोनों नाश होते हैं। यह भी परीक्षित है।

(१५) कल्पतरु रस—शुद्धपारा १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, शुद्ध वत्सनाभविष १ तोला, शुद्ध मैनसिल १ तोला, शुद्ध सोनामक्खी

१ तोला, शुद्ध सुहागा १ तोला, सोंठ २ तोला, पीपल २ तोला और कालीमिर्च १० तोला—इन ९ चीज़ोंको तैयार करलो। पहले पारे और गन्धकको छोड़कर, वत्सनाभ प्रभृति सातों दवाओंको, सिलपर महीन पीसकर कपड़छन करलो। इसके बाद इन सातोंके छने हुए चूर्णको तथा पारे और गन्धकको खरलमें डाल कर ६ घण्टेतक लगातार खरल करो। बस, यही "कल्पतरु रस" है।

"कल्पतरुरस" कल्पवृक्षके समान गुण रखता है। यह वात और कफके रोगोंको नाश करता है। इसकी मात्रा १ रत्ती तककी है। कमज़ोरोंको दो चाँवल भर देना चाहिये।

अदरखके रसके साथ खानेसे वातज्वर, कफज्वर, श्वास, खाँसी, मुँहसे पानी गिरना, जाड़ा लगना, मन्दाग्नि और विशूचिका (हैज़ा) नष्ट होता है। इस रसकी नास देनेसे कफ-सम्बन्धी और वातसम्बन्धी सिरकी वेदना आराम होती है तथा प्रलाप, मोह और छींक न आना ये सब भी आराम होते हैं।

(१६) त्रिपुर भैरव रस—शुद्ध वत्सनाभ विष १ भाग, सोंठ २ भाग, पीपल ३ भाग, मिर्च ४ भाग, ताँबेकी भस्म ५ भाग और शुद्ध शिङ्गरफ या हींगलू ६ भाग—इन छहोंको एकत्र करके, खरलमें डालकर, अदरख के रसमें खरल करनेसे "त्रिपुरभैरवरस" सिद्ध होता है। यह ज्वरको नाश करता है। इसकी मात्रा आधी रत्ती या ४ चाँवल की है।

नोट (१)—पारा, गन्धक, विष, मैनसिल, सोनामक्खी, सुहागा, हिंगलू ये सब विना शोधे कभी मत लेना। इन सबके शोधनेकी विधि आगे इसी पुस्तकके अन्तमें देखिये।

नोट (२)—प्रथम तो किसीको एकाएकी रस देना ही नहीं चाहिये; क्योंकि आजकलके लोग धातुक्षीणता और गरमी सोज़ाकके कारणसे

इनको बर्दाश्त नहीं कर सकते और यदि दिये विना काम न चलता दीखे, तो मात्रा कमती देनी चाहिये । शास्त्रकारोंके समय और अबके समयमें बड़ा फ़र्क़ होगया है । जिसकी मात्रा रत्ती लिखी है, उसे २ चाँवलभर देना चाहिये । पीछे यदि रोगी सहजाय, लाभ दीखे तो धीरे-धीरे मात्रा बढ़ा सकते हो । इस तरह काम करनेसे दुःख खड़ा नहीं होता ।

वातज्वरमें फुटकर इलाज ।

वातज्वरमें अक्सर जाँघोंमें दर्द, पसलियों और हड्डियोंमें पीड़ा, जुकाम, श्वास, मुँह सूखना, अरुचि, मुखका स्वाद ख़राब रहना, नींद न आना, पेटमें दर्द, पेट फूलना, कानोंमें आवाज़ होना और सूखी खाँसी—ये तकलीफें होती हैं । असल औषधि देते हुए इनका अलग-अलग उपाय करनेसे रोगीको बड़ा सुख होता है । इसलिये वैद्यको इनको शान्तिकी चेष्टा करनी चाहिये ।

वालुका स्वेद ।

अगर जाँघोंमें दर्द, पसलियों और हड्डियोंमें वेदना, जुकाम, श्वास, बहरापन हो; तो ऐसे लक्षणों वाले वातज्वर अथवा कफज्वरमें वैद्य को स्वेद (पसीना) देना चाहिये; क्योंकि स्वेद--पसीना शरीरकी रस बहानेवाली नाड़ियोंको नरम करके, अग्निको आमाशयमें पहुँचाकर, कफ और वायुके बन्धनको तोड़कर ज्वरको नाश करता है ।

वालूको ठीकरोंमें गरम करके, कपड़ेमें बाँधकर, उसकी पोटली बना लो । पीछे काँजीमें बुझाकर बारम्बार स्वेद दो । अथवा एक ठीकरेमें वालूको खूब तपाकर रोगीके पास रक्खो । रोगीको कपड़ा उढ़ाकर, तपी हुई वालू पर काँजीके छींटे मारो । इस तरह बारम्बार

करो । यह वालुका स्वेद वातकफके रोग, सिरका दर्द और शरीरका टूटना प्रभृतिमें बड़ा लाभदायक है । यह कम्प, सिर-दर्द, हृदयका दर्द, शरीरका दर्द जंभाई, पाँव सोना, पिंडलियोंका फूटना, शरीरका जड़ हो जाना, ठोड़ीका जकड़ जाना और रोमोंका खड़ा हो जाना— इन सबको शान्त करता है ।

कवल ।

बिजौरे नीबूकी केशर, सेंधानोन और कालीमिर्च— इनको एकत्र पीसकर, इनका कवल मुँहमें रखनेसे वातसम्बन्धी और कफसम्बन्धी मुँहके रोग, मुँह का सूखना, जड़ता और अरुचि नाश होती है ।

नोट—मन्या, मस्तक कान, मुख और नेत्रोंके रोग, प्रसेक, कण्ठरोग, मुखरोग, हुल्लास, तन्द्रा, अरुचि और पीनस—इन रोगोंमें कवल धारण करनेसे विशेष रूपसे लाभ होता है । कल्क आदिक पदार्थको मुखमें रख कर इधर उधर फिराने को "कवल" कहते हैं । कवल में १ तोला भर कल्क लेना चाहिये । पांच सालकी उम्रके बाद गण्डूष (कुल्ले) और कवलका प्रयोग करना चाहिये ।

दूसरा कवल ।

मिश्री और अनारको पीसकर, उसकी गोली बनाकर, मुखमें रखने अथवा दाख और अनारका कल्क (लुगदी) मुँहमें रखनेसे मुखशोष और मुखकी विरसता दूर होती है ।

तीसरा कवल ।
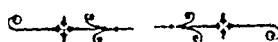
दाख और आमलोंका कल्क बनाकर मुखमें रखने और उससे मुँह के भीतरका भाग घिसनेसे, लार गिरकर, तालू और गलेका शोष दूर होता है तथा मुखकी विरसता नाश होकर भोजनमें रुचि होती है ।

नोट—गीली या सूखी दवाको सिलपर भाँगकी तरह पीस लेना चाहिये। उस पिसी हुई लुगदी को ही "कल्क" कहते हैं। सूखी दवा बिना जल डाले नहीं पिस सकती, इस लिये जल डालकर पीसनेमें हर्ज नहीं। कल्कमें शहद, घी, तेल आदि डालने हों तो दूने डालने चाहियें अथवा १६ माशे डालने चाहियें। मिश्री और गुड़ बराबर डालने चाहियें तथा पतले पदार्थ चौगुने डालने चाहियें।

निद्रानाश का इलाज।
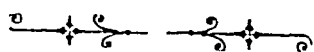
नींद न आती हो तो निम्नलिखित उपाय करने चाहियें—

(१) भुनी हुई भाँगके चूर्ण को शहतमें मिलाकर रातमें खाओ।

(१) आठ माशे पीपलामूलका चूर्ण गुड़में मिलाकर खाओ।

(३) काकजंघा (मसी) की जड़ सिरपर धारण करो।

(४) मकोयकी जड़को सूतमें बाँधकर निरन्तर मस्तक पर धारण करो।

(५) भाँगको बकरी के दूधमें पीसकर पाँवों पर लेप करो।

(६) सिर और पैरोंमें गायका दूध मलो अथवा थोड़ी देर तक गरम पानी में पैर डुबाये रक्खो।

नोट - नींद लानेके लिये ये सब उपाय परीक्षित हैं। नींद न आने के कारण, नींदसे लाभ-हानि और निद्रा आनेके ज़ियादा उपाय पीछे पृष्ठ १२२-१२७ में लिख आये हैं।

पेटमें शूल और अफारा।

देवदारू, सफेद बच, कूट, शतावर, हींग और सेंधानमक - इन सबको नीबूके रसमें पीसकर, ज़रा गरम करके, पेटपर लेप करनेसे पेट का दर्द और अफारा आराम होता है।

कानमें आवाज़ होना।

पीपल, हींग, बच और लहसन—इन चारोंको कड़वे तेलमें पका कर, उस तेलको कानमें डालनेसे, कानमें शब्द होनेकी तकलीफ मिट जाती है।

सूखी खाँसी ।

पीपल, सुगन्धित वच, अजवायन और पान (ताम्बूल),— इनके साथ पीपलको मुँहमें रखनेसे सूखी खाँसी नष्ट होती है।

रोगनाशक पथ्य ।

(१) श्रम, उपवास और वायुसे पैदा हुए ज्वरमें रसौदन या मांसरस-युक्त भात हितकारी है। रसौदन आमको पचाता है।

(२) अगर वातज्वरमें मल सूख गया हो, कब्ज़ हो; तो मूँग और आमलोंका यूष देना चाहिये।

(३) अगर वातज्वरमें मूत्राशय, पसली और सिरमें दर्द हो; तो गोखरू और कटेरीके काढ़ेसे सिद्ध की हुई लाल शालि चाँवलोंकी ज्वरनाशक पेया देनी चाहिये।

(४) अगर वातज्वरमें श्वास, खाँसी और हिचकी हों; तो लघु या वृहत् पंचमूलके काढ़ेसे सिद्ध की हुई लाल शालि चाँवलोंकी पेया दो।

(५) जल औटाकर देना चाहिये; क्योंकि कच्चा शीतल जल ज्वरको बढ़ाता है। दिनमें सोना, हवा, मैथुन, मिहनत, भारी भोजन, शीतल जल प्रभृति अपथ्योंसे रोगीको बचाना चाहिये।

(६) वातज्वरमें सेरका आधा सेर जल अच्छा होता है। सेरका आध सेर रहा हुआ जल वातनाशक होता है। ऋतुका भी ख़याल करना ज़रूरी है। जलसम्बन्धी बातें पीछे पृष्ठ ११९-१३१ में लिख आये हैं।

काढेकी मात्रा ।

वैद्यको दोष, अग्नि, बल, अवस्था व्याधि, औषधि और कोठेका विचार करके मात्रा नियत करनी चाहिये। फिर भी; हम, मामूली तौर से, मात्रा बतलाये देते हैं। काढ़ेकी सब दवायें; अगर अलग

अलग वज़न न लिखा हो, तो बराबर-बराबर लेनी चाहियें। सब का वज़न मिलाकर जवान के लिये २ तोलेसे ४ तोले तक होना चाहिये ; यानी जवानके लिये सब दवाएँ कम-से-कम २ तोला लेनी चाहियें (प्रत्येक दो दो तोला नहीं) और ज़ियादा से ज़ियादा ४ तोले लेनी चाहियें। बालकको ३ माशेसे १ तोले तक लेनी चाहियें। काढेकी दवाओंको जौकुट करके ३ घन्टे तक पानीमें भिगो देना चाहिये ; पीछे जोश देना चाहिये। वातकफके रोग में काढ़ा गरमागर्म और पित्त के रोग में शीतल करके पिलाना चाहिये। शहद हमेशा काढ़ेके शीतल होने पर मिलाना चाहिये। काढ़ेके सम्बन्ध की और बातें इसी भागके पृष्ठ १३२—१३५ में देखनी चाहियें। दवा खानेके क़ायदे और समय जानने के लिये १३१ — १३३ पृष्ठ देखने चाहियें।

सूचना ।

वातज्वरमें श्वास, खाँसी, हिचकी, दस्तकब्ज, अरुचि प्रभृति कोई उपद्रव हो और उस या उन उपद्रवोंके लिये किसी चलते हुए नुसखेकी ज़रूरत हो ; तो आप पुस्तकके अन्तमें देखिये। वहाँ ज्वरके दसों उपद्रव और सिर-दर्द, पसलीका दर्द, निद्रानाश प्रभृतिमेंसे हरेक पर दर्जनों उत्तमोत्तम प्रयोग लिखे गये हैं। पेया और यूष वगेरः बनानेकी विधि और दस्त लानेवाली फलवर्त्ती प्रभृति अनेक आवश्यक चीजें पीछे पृष्ठ ७७-८६ में लिखी हैं।
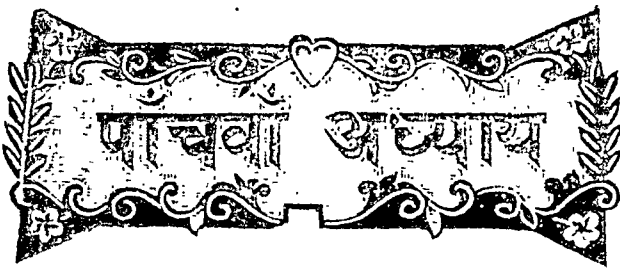
पित्तज्वरकी चिकित्सा।

पित्तकोपके कारण।

गरम, खट्टे नमकीन, खारी, चरपरे और वदहज़मी करनेवाले पदार्थोंके ज़ियादा खाने, तेज़ धूपमें या आगके सामने रहने, अधिक मिहनत करने, क्रोध करने और कभी कम और कभी अधिक खानेसे पित्त कोप करता है। पित्तके कुपित होनेसे पित्तज्वर प्रभृति पित्त के रोग होते हैं।

पित्तज्वर कैसे होता है ?

ऊपर लिखे कोपकारक आहार विहारोंसे दूषित हुआ पित्त, आमाशय में जाकर, आहारके सारभूत रसको दूषित करता है। उस समय रस और पसीनोंका प्रवाह रुक जाता है तथा पित्तके पतला होनेके कारण जठराग्नि मन्दी हो जाती है और उसकी गरमी वाहर निकलने लगती है; यानी पित्त गरमीको निकालकर, अकेला मालिक वनकर पित्तज्वर उत्पन्न करता* है।

---

* कहते हैं:—

पित्त पंगु कफः पंगु पंगवो मलधातवः।
वायुना यत्र नीयन्ते तत्र गच्छन्ति मेघवत्॥

पित्त लूला है, कफ लूला है, मल और धातु भी लूले हैं; इसलिये वायु उनको

पित्तज्वरके पूर्वरूप ।

पित्तज्वरके आनेसे कुछ पहले, पहले तो थकान सी जान पड़ती है और पीछे आँखोंमें जलन होती है ।

पित्तज्वरके लक्षण ।

वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्च निद्राल्पत्वं तथा वमिः ।
कण्ठोष्ठमुखनासानां पाकः स्वेदश्च जायते ॥
प्रलापो वक्त्रकटुता मूर्च्छादाहो मदस्तृषा ।
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक् पैत्तिके भ्रम एवच ॥

ज्वर तेज़ हो, दस्त पतला हो, ❀ नींद कम आवे, वमन या कय हो अथवा उबकाइयाँ आवे †, कण्ठ होठ और नाक मुँह पक जायँ, पसीना आवे, रोगी बकवाद करे, मुखका स्वाद कड़वा रहे, बेहोशी हो, पेट या सारे शरीरमें जलन हो, नशासा जान पड़े, प्यास ज़ियादा

जहाँ लेजाता है वहीं वे बादलोंकी तरह चले जाते हैं । जब यही बात है, तब सवाल पैदा होता है कि, लूला पित्त कोठेकी अग्निको बाहर कैसे ले जाता है ?

बेशक पित्त लूला है, किन्तु वह वायुकी मददसे कोठेकी अग्निको बाहर लेजाता है, क्योंकि कोई भी रोग केवल एक दोषसे नहीं होता । कहा है :—

द्रव्यमेकरसं नास्ति न रोगऽप्येकदोषजः
एकस्तु कुपितो दोष इतरानपि कोपयेत्

संसारमें कोई चीज़ एक रसवाली नहीं है और रोग भी एक दोषसे नहीं होता । एक दोषके कुपित होनेसे दूसरे दोष भी कुपित हो जाते हैं ।

❀ पित्तज्वरमें अतिसार नहीं होता, किन्तु पित्तके पतले होनेके कारण पतला दस्त होता है । अतिसार तो ज्वरका उपद्रव है । ज्वरमें दस्तोंको फौरन ही नहीं रोकना चाहिये । अगर कई दिन होनेसे भी बन्द न हों, तो अतिसारकी तरह साधना करनी चाहिये ; किन्तु ज्वर और अतिसार की दवाएँ मिलाकर न देनी चाहियें ; क्योंकि ज्वरकी दवाएँ भेदक और अतिसारकी दवाएँ स्तम्भक होती हैं । ये परस्पर रोग बढ़ानेवाली हैं ।

† जब पित्त कफके स्थानमें जाता है, तब वमन होती है ।

लगे, पाखाना, पेशाब और नेत्र पीले हों तथा भौंर या घुमेर सी आती हों।

"चरक" में लिखा है—ज्वरका एक साथ चढ़ना और बढ़ना, शरीर में वात कफका प्रभाव (सरदी वगैरः) न रहना, मूँहका स्वाद कड़वा होना, नाक मुख कण्ठ होठका पकना यानी इनका रङ्ग वैसाही हो जाना जैसा फोड़ा वगैरःके पकने पर हो जाता है; प्यास, भ्रम, मोह, मूर्च्छा होना, पित्तकी हरी हरी वमन होना, अतिसार होना, भोजन में अरुचि होना, पसीने आना, ज्ञानयुक्त प्रलाप—बकवाद * करना, शरीरमें लाल-लाल चकत्ते उठना; नख, नेत्र, मुख, मूत्र, मल और चमड़ेका रङ्ग पीला हल्दीकासा या हरासा होना, अत्यन्त गरमी लगना, एकदमसे दाह या जलन होना और शीतल वस्तुओंकी इच्छा होना—ये लक्षण "पित्तज्वर"में होते हैं।

पित्तज्वरके कारणरूप गरम और नमकीन प्रभृति पदार्थों से ज्वर बढ़ता है और उनके विपरीत शीतल और मीठे प्रभृति पदार्थों से घटता है।

कन्टिन्यूड फीवर।

जिसको वैद्यकमें पित्तज्वर और यूनानी हिकमतमें सफरावी ताप कहते हैं, उसीको अँगरेज़ीमें कण्टिन्यूड फीवर (Continued Fever) कहते हैं। यह ज्वर दो तरहका माना गया है—(१) कॉमन कण्टि-न्यूड (Common Continued) (२) आरडेन्ट कन्टिन्यूड (Ardent Continued) कॉमन कन्टिन्यूडमें जीभ खुश्क रहती है,

* पित्तके कारणसे जो प्रलाप होता है, उसमें रोगीको सब ज्ञान रहता है। वह समझता है कि, मैं वृथा आनतान बकता हूँ; किन्तु वातकफके प्रलापमें रोगीको ज्ञान नहीं रहता, वह बेहोशीमें बकता है। मूर्ख वैद्य पित्तके प्रलापको भी वात-कफका समझकर गरम दवाएँ देदेकर रोगीको मार डालते हैं। पहचान साफ है।

शरीर गर्म रहता है,—पेशाव कम उतरता है और पसीना नहीं आता तथा बिना शीत लगे ज्वर चढ़ता है।

आरडेण्ट कन्टिन्यूडमें—चेहरा लाल हो जाता है, सिर घूमता है, दीपककी रोशनी और आवाज़ ये बुरे लगते हैं, शरीर बहुतही गरम होता है, नाड़ीकी चाल बहुत तेज़ होती है, हड़फूटन होती है, कयमें पित्त निकलता है, कभी दस्तकब्ज़ रहता है, कभी पित्तके दस्त आते हैं, पेशाव कम उतरता है और रङ्गतमें लाल या पीला होता है, सिरमें दर्द होता है, जीभ पीली या लाल हो जाती है,—पर किनारों पर से मैली रहती है, कभी कभी भ्रम होता है। इसमें ऊपरवाले कॉमन कन्टिन्यूड फीवरसे गरमी बहुत अधिक रहती है।

ये दोनों तरहके ज्वर मौसम बदलने या ज़ियादा गरमी होने या धूपमें फिरने, अधिक मिहनत करने, बहुत नशा करने, पाखाना पेशाव रोकने और रञ्ज शोक या फिक्र करनेसे होते हैं।

पित्तज्वरमें नाड़ी और नेत्र प्रभृति।

पित्तज्वरमें नाड़ी मेंडक और कव्वा प्रभृतिकी तरह फुदक-फुदक कर बड़ी तेज़ीसे जल्दी-जल्दी चलती है और कठिनाईके साथ जल्दी-जल्दी फड़कती है। पित्तका समय न होनेसे कुछ धीमी हो जाती है; किन्तु शरद् ऋतु, भोजन पचनेके समय, दोपहर और आधीरातको—पित्तके समयमें—इतनी तेज़ीसे चलती है कि, बयान नहीं कर सकते। ऐसा जान पड़ता है, मानो नाड़ी मांसको चीरकर बाहर निकल जायगी।

पित्तज्वरमें दस्त पतला और पीला होता है। पेशाब भी पीला होता है। आवाज़ साफ होती है। शरीर गरम और कुछ पीला होता है। जीभ लाल, कड़वी, जली हुई सी, दाहयुक्त और काँटों से घिरी हुई होती है। मुखका स्वाद कड़वा या चरपरा रहता

है। चेहरा लाल, पीला और गरम होता है। नेत्र पीले, नीले, लाल और गरम होते हैं तथा चिरागकी रोशनीको बर्दाश्त करनेमें असमर्थ होते हैं।

पित्तज्वरके पैदा होने और बढ़नेका समय।

पित्तज्वर भोजन पचनेके समय, दोपहरके समय, आधीरातको और शरद् ऋतुमें प्रकट होता और बढ़ता है।

पित्तज्वरमें लंघन।

पित्तज्वर में रोगीका बलाबल देखकर लंघन कराने चाहियें। रोगीके बलके विरुद्ध लंघन कराना हानिकारक है। रोगी को २।३ लंघन कराकर हलका पथ्य देना चाहिये। ज्वरकी हालतमें भी रोगीको पथ्य, पर अत्यन्त हलका पथ्य, देनेकी सलाह सभी आचार्य्योंने दी है। पित्तज्वरमें औटाकर शीतल किया पानी रोगीको पिलाना चाहिये। लंघनमें जल देना मना नहीं है। पर हाँ, ज्वर में थोड़ा जल पिलाना हित है। बहुत जल कफ और पित्त हो जाता है। चतुर वैद्यको इसी भागके ८७—११० के पृष्ठ देख कर और बुद्धिसे विचार कर काम करना चाहिये।

पित्तज्वर पकनेकी अवधि।

पित्तज्वर दस दिनमें पकता है। ग्यारहवें दिन अन्न और शमन औषधि देनेका नियम है। कच्चे ज्वरमें रोगनाशक औषधि न देनी चाहिये। कच्चे ज्वरमें औषधि देनेसे ज्वर प्रचण्ड रूप धारण करता है। ज्वरके आमसहित—कच्चा होनेपर भी, सातवें दिन पाचन देनेका नियम है। अगर ज्वर आमरहित यानी पका हो, तो शमन औषधि देनेका विधान है। अगर रोगी कमज़ोर हो या थोड़े दोषवाला हो; तो पहले ही शमन औषधि देनेका विधान है।

चिकित्सा ।

पित्तज्वरमें पाचन ।

(१) कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, पाढ़ी और कायफल— इन पाँचोंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ेकी विधिसे काढ़ा बनाना चाहिये। पक जानेपर मलछान, मिश्री या चीनी मिलाकर और शीतल करके पी जाना चाहिये। भावमिश्रजी लिखते हैं,—यह "तिक्तादि क्वाथ" पित्तज्वर पर अच्छा पाचन है।

नोट—शार्ङ्गधर महोदय लिखते हैं,—तेज पित्तज्वरके दस दिन बीतने पर, अगर यह पाचन दिया जाय, तो पित्तज्वर नाश हो जाय। बंगसेन भी इससे पित्तज्वरका दूर होना लिखते हैं।

यह पाचन परीक्षित है। दसवें दिन से आरंभ करके ३ दिन तक देना चाहिये। इस से पित्तज्वर पच जाता है।

(२) हलदी, नीमकी छाल, गिलोय, धनिया और सोंठ—इन पाँचोंको समान समान लेकर, काढ़ा बनाकर और उसमें गुड़ मिलाकर पीनेसे पित्तज्वर में मनुष्यको सुख होता है।

पित्तज्वर नाशक नुसखे ।

(१) पित्तपापड़ा, अडूसा, कुटकी, चिरायता, धनिया और फूलप्रियङ्गु —इन छहोंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर, चीनी मिलाकर पीनेसे प्यास, दाह और रक्तपित्त सहित पित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम "पर्पटादि क्वाथ" है।

(२) दाख, हरड़, नागरमोथा, कुटकी, अमलताश और पित्तपापड़ा—इन छहोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे, पित्तज्वर, मुँहका सूखना, आन-तान बकना, पीड़ा, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, प्यास और रक्तपित्त ये सब शान्त होते हैं। यह काढ़ा दस्तावर है। इसका नाम "द्राक्षादि क्काथ" है।

नोट—यह नुसख़ा हमारा कितनी ही बारका आज़माया हुआ है ; इसमें हम सुगन्धवाला और मिलाते हैं। इस तरह ये सात दवाएँ हो जाती हैं। अमलताशका गूदा, कुटकी और हरड़को तीन तीन माशे लो और शेष चार दवाओंको छै-छै माशे लो। कुल २॥ तोले दवाएँ लेकर, काढ़ा बनाकर, दोनों समय, पिलानेसे निश्चय ही लाभ होता है।

(३) पटोलपत्र, इन्द्रजौ, धनिया और महुआ—इन चारोंके काढ़ेमें, शीतल होने पर, शहद डालकर पीनेसे—पित्तज्वर, दाह और घोर प्यास नष्ट हो जाती है। इस काढ़ेका नाम "पटोलादि क्काथ" है।

(४) गिलोय, आमले और पित्तपापड़ा—इन तीनोंको समान-समान लेकर और काढ़ा बनाकर पीनेसे दाह, शोष—मुँह सूखना—और भ्रम सहित पित्तज्वर नाश होता है। यह "गुडूच्यादि क्काथ" है।

(५) पित्तपापड़ेके काढ़ेमें, पीपरका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे पित्तज्वर शान्त होता है।

(६) पित्तपापड़ा, लालचन्दन, ख़स और सोंठ—इन चारोंका काढ़ा भी पित्तज्वरको नाश करता है। परमोत्तम नुसख़ा है।

नोट—शार्ङ्गधरने "ख़स"के स्थानमें "नेत्रवाला" लेना लिखा है।

(७) केवल पित्तपापड़ेका काढ़ा पीनेसे दाह, शोष और भ्रम सहित पित्तज्वर नाश होता है। अगर पित्तपापड़ेके साथ लालचन्दन, ख़स और सुगन्धवाला भी मिला दिया दिया जाय, तब तो कहना ही क्या है ?

(८) सुगन्धवाला, लालचन्दन, ख़स, नागरमोथा और पित्तपापड़ा—इनका पकाया हुआ जल अत्यन्त शीतल करके पिलानेसे प्यास,

वमन, दाह और ज्वर शीघ्र ही नाश होते हैं। इसका नाम "ह्रीवेरादि क्काथ" है।

नोट—यह काढ़ा भी आज़माया हुआ है। अगर दाह बहुत हो, तो इसे अवश्य दो। इन पाँचों दवाओंको ६।६ माशे लेकर १ पाव जलमें भिगो दो। पीछे काढ़ेकी रीतिसे औटाओ। आधा रहने पर उतारकर और खूब शीतल करके १ तोला मिश्री मिलाकर पिलाओ। अगर दो तीन दिनमें इससे लाभ न हो, तो काढ़ा मत बनाओ। रातको इन्हीं पाँचों दवाइयोंको भिगो दो। सवेरे मलछान कर और १ तोला मिश्री मिलाकर पिला दो। आगे नं० १५, १६ और १७ में ऐसे ही "हिम" लिखे हैं। जब औटाये हुए काढ़े से लाभ न हो, दाहका ज़ोर हो "हिम" देना चाहिए।

(९) चिरायता, अतीस, लोध, नागरमोथा, इन्द्रजौ, गिलोय, सुगन्धवाला, धनिया और बेलगिरी—इनका काढ़ा बना, मलछान शीतल कर, शहद मिलाकर पिये, तो मलभेद, श्वास, खाँसी, रक्तपित्त और पित्तज्वर नाश हो। इसका नाम "भूनिम्बादि क्काथ" है।

(१०) दाख, लालचन्दन, कमल, नागरमोथा, कुटकी, गिलोय, आमले, सुगन्धवाला, खस, लोध, इन्द्रजौ, पित्तपापड़ा, फालसे, फूलप्रियंगू, जवासा, अडूसा, मुलेठी, बेर, चिरायता, और धनिया—इन २० औषधियोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे पित्तज्वर, प्यास, दाह, प्रलाप, आनतान बकना, रक्तपित्त, भ्रम, ग्लानि, मूर्च्छा, वमन, शूल, मुख-शोष, अरुचि, खाँसी, श्वास और उबकाई—ये सब नाश होते हैं। इस काढ़ेका नाम "महाद्राक्षादि क्काथ" है।

(११) रातके समय "धनिया" भिगो दो। सवेरे काढ़ा बनाकर और उसमें मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इससे थोड़े ही समय में भीतरके दाह समेत पित्तज्वर नष्ट होता है। इसे "धान्याक क्वाथ" कहते हैं।

(१२) गिलोय, चिरायता, सुगन्धबाला, खस, मोथा, निसोथ, आमले, दाख, अडूसा और पित्तपापड़ा—इन दसोंका काढ़ा बनाकर, शहत

के साथ, प्रातःकालमें, पीनेसे उपद्रव सहित घोर पित्तज्वर नष्ट होता है।

(१३) जवासा, अड़ूसा, कुटकी, पित्तपापड़ा, फूलप्रियंगू और चिरायता—इन छहोंके काढ़ेमें मिश्री या खाँड़ डालकर पीनेसे प्यास, दाह और रक्तपित्त सहित पित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम "दुस्पर्शादि क्वाथ" है।

नोट—यह नुसखा आजमाया हुआ है। इन सब दवाओंको पाँच-पाँच माशे लेकर, काढ़ा बनाकर, १ तोले मिश्री डालकर पिलाओ।

(१४) गिलोयका सत २ माशे बूरेके साथ खानेसे पित्तज्वर नाश होता है।

(१५) गिलोयको जौकुट करके, छैगुने जलमें, रातके समय, मिट्टीकी कोरी हाँड़ीमें भिगो दो ; सवेरे उस जलको छानकर मिश्री मिलाकर पीजाओ। इसे "हिम" या "शीत कषाय" अथवा "ठंढा काढ़ा" कहते हैं। इससे पित्तज्वर नष्ट होता है।

(१६) अड़ूसेको रातके समय ६ गुने जलमें, मिट्टीकी कोरी हाँड़ीमें भिगो दो। सवेरे मल छानकर, उसमें मिश्री या चीनी मिलाकर पिलाओ। इससे खाँसी, रक्तपित्त और पित्तज्वर नाश होता है। इसे "वासाहिम" कहते हैं।

(१७) आमले और गिलोय—इन दोनों को, रातके समय, कोरी हाँड़ीमें, दवासे ६ गुना जल डाल कर भिगो दो। सवेरे छान कर, उस पानीमें खाँड़ या शहद डाल कर पिला दो। इस उपायसे पित्तज्वर, प्यास, दाह, भ्रम और मूर्च्छा प्रभृति उपद्रव शान्त होते हैं।

(१८) सफेद कमलकी पंखड़ी, मुलहटी और मिश्री का काढ़ा पित्तज्वरको नाश करता है।

(१९) धनिया, अड़ूसा, आमला, काले मुनक्के और पित्तपापड़ा

—इन पाँचों को अढ़ाई तोले लेकर, मिट्टीकी हाड़ीमें, पाव भर-जलमें रातको भिगो दो। सवेरे इसका जल छान कर रोगीको पिलाओ; इससे पित्तज्वर का दाह और प्यास दोनों आराम होते हैं।

(२०) धनिया रातके समय जलमें भिगो दो। सवेरे जलको छान कर, उसमें १ तोला मिश्री डालकर पिलाओ। इससे दाह नाश होता है।

(२१) हरड़ को पीस कर, शहदमें मिलाकर रोगीको चाटाओ। इस उपायसे दाह, खाँसी, ज्वर, रक्तपित्त, विसर्प, श्वास, और वमनमें निश्चयही लाभ होता है।

(२२) सफेद कमलकी पाँखड़ी, मुलहटी और मिश्री का काढ़ा शीतल करके पीनेसे पित्तज्वर आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—जब २।३ दिन पित्तज्वरनाशक औटाये हुए काढ़े देने से लाभ न हो, दाह और प्यास का जोर बना रहे; तब नं० ८ को 'हिम' की रीति से विना औटाये पिलाओ अथवा नं० १५।१६। १७।१८ प्रभृतिके हिम पलाओ।

काढ़ा बनाने की विधि।

काढ़ा बनाने और पिलाने कि विधि और काढ़े में शहद या खाँड़ वगेरः मिलाने का नियम जानना चाहो; तो इसी भाग के पृष्ठ १३१-१३३ तथा पृष्ठ १७३-७४ में "काढ़े की मात्रा" शीर्षक नोट देखो।

दाहनाशक ऊपरी उपाय।

"सुश्रुत उत्तरतंत्र" अध्याय ३९ में लिखा है:—

दाहाभिभूते तु विधिं कुर्याद्दाहविनाशनम्।

हर तरहके बुखारमें, दाह होने पर, अवश्य दाहनाशक उपाय करना चाहिये।

(१) दाहवालेको अगर बहुत कष्ट हो, तो नीमके पत्तोंका जल पिला कर वमन करा दो। इस उपायसे बड़ी जल्दी लाभ होता है। अगर रोगी ताक़तवर हो, वमन सह सकता हो, तो कड़वे नीमके पत्ते बलाबल अनुसार एक या दो तोले लेकर महीन पीस लो। पीछे पाव डेढ़ पाव शीतल जलमें भाँगकी तरह छान लो। उस पानीको रोगीको पिला कर, अँगुली डाल कर, वमन करा दो। अगर ज़रूरत समझो, तो ६ माशे शहद और २ तोला शक्कर भी मिला दो। इससे वमन होते ही लाभ होगा। परीक्षित उपाय है। अगर रोगी वमनके योग्य न हो, वमनसे बहुतही घबराता हो, तो ऊपर नं० २१ में लिखा हरड़ और शहतका प्रयोग करो। हरड़ का चूर्ण चार या छै माशे लेकर शहद्के साथ २।३ बार चटाओ।

(२) नीमके पत्तोंका रस निकाल कर और उसमें झाग उठा कर, दाहवालेके शरीर पर मलो; अवश्य दाह नाश होगा। परीक्षित है।

(३) ढाकके नम-नर्म पत्तोंको नीबूके रसमें पीस कर, दाहवालेके शरीर पर या जहां-जहाँ दाह हो लेप कर दो।

(४) बेरके पत्तोंको नीबूके रसमें पीस कर लेप करो।

(५) नीमके पत्तों को भी नीबूके रसमें पीस कर लगाने से लाभ होता है। नीमके नर्म-नर्म पत्तोंके झागोंके लगानेसे हमने कई बार अपूर्व्व चमत्कार देखा है।

(६) सौ बार का धोया हुआ घी शरीरमें मलनेसे दाहमें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(७) बेरके पत्तों को पीस कर, एक बाल्टी जलमें घोल दो। पीछे मथ-मथ कर झाग उठाओ; इन झागोंको दाहवालेके शरीर पर लगाओ।

(८) उत्तम मनोहर निर्मल आकाशकी समान साफ, चन्द्रमा की किरणोंसे शीतल, जिसमें चन्दन और खस वगेरः के जलका छिड़काव हो रहा हो, फव्वारे चल रहे हों—ऐसे घरमें पित्तज्वरके दाहवालेको सुलाओ।

(९) जिनके स्तनों पर कपूर चन्दनादिका लेप हो रहा हो, नीले रेशमी कपड़े पहने हों, गलेमें फूलोंके हार पड़े हों, हीरा पन्ना प्रभृति रत्नोंके गहने जिन्होंने पहन रखे हों, जो मन्द-मन्द हँस रही हों—ऐसी स्त्रियोंको शरीरसे लिपटानेसे भयङ्कर दाह शान्त होता है; पर रोगीके मनमें मैथुनकी इच्छा होतेही, स्त्री या स्त्रियोंको फौरन अलग कर दो।

(१०) पित्तज्वर रोगीको सीधा सुलाकर, उसकी नाभिपर काँसी या ताम्बे का एक गहरा वासन रक्खो। उसमें खूब शीतल जलकी धारा ऊपरसे इस तरह ढालो कि, पानी वर्तन में ही पड़े। इस उपायसे तत्काल दाह और ज्वर शान्त हो जाता है।

(११) काँजीमें कपड़ा भिगो कर, रोगीको उढ़ाओ अथवा गायके माठेमें कपड़ा उकाल कर और शीतल करके रोगीको उढ़ाओ। इन उपायोंसे भी दाह शान्त होता है।

(१२) भौंरोंकी कतार, बालकोंकी मीठी-मीठी तोतली बोली, तोता मैनाका मधुर स्वर, फूलोंसे लदे हुए वृक्ष, बाग़की हरियाली, यौवनके मदसे मतवाली हँसती हुई स्त्रियाँ—ये सब दाहको निश्चय ही नाश करते हैं।

(१४ विदारीकन्द, लोध्र, कैथ, बिजौरा और अनार—इनमेंसे सब या जो समय पर मिलें, उनको पीसकर तालूपर लेप करो। हारीत कहते हैं,—इस लेपसे दाह, बेहोशी और प्यास नाश होती है।

कवल।

पित्तज्वरमें दाख और आमलोंके कल्कका कवल हितकारी है। पके अनारके कल्कका कवल अथवा केवल धनियाके कल्कका कवल भी हितकारी है।

अगर जीभ, तालू, गला, मुख, कंठ, प्यासका स्थान और मस्तक में शोष हो—ये सूखे जाते हों, तो बिजौरे नीबूकी केशरको शहद और सेंधे नमकमें मिलाकर सेवन करो या मुखमें रक्खो। हारीत ऋषि कहते हैं—बिजौरे नीबूको केशर, शहद और सेंधेनोन को एकत्र पीसकर, तालूपर लेप करनेसे जीभ, तालू, गला, मुख, कंठ प्रभृतिका सूखना मिटता है और शीघ्रही पित्तज्वर शान्त होता है।

नोट—कवलके सम्बन्धमें पीछे १७१ पृष्ट में लिखा हुआ नोट देखिये।

गण्डूप या कुल्ले।

—***—

हरड़, फूलप्रियंगू, पीपल, लोध, दारूहल्दी, हल्दी और तेजबल—इनको जलमें भिगोकर, शहत मिलाकर, बारम्बार कुल्ले करनेसे मुखका कड़वापन नाश होता है, मुँहके सारे रोग नाश होते हैं, मुँहमें निर्मलता और अन्नमें रुचि होती है।

नोट—काढ़े वगेरः पतले पदार्थोंको मुँहमें भरकर जैसाका तसा रहने दो और पीछे मुखसे गिरा दो। इसीको "गण्डूप या कुल्ला" कहते हैं। अगर गण्डूपके काढ़ेमें चूर्ण मिलाना हो, तो ८ माशे मिलाना चाहिये। स्वस्थचित्त बैठकर, तीन पाँच या सात कुल्ले करने चाहियें अथवा जब तक मुँहमें कफ भर-भर आवे, नाक आँखसे पानी वगेरः निकले या कपाल, गले तथा मुँहमें ज़रा ज़रा पसीने आने तक कुल्ले करने चाहियें। मुखरोग नाश करनेमें गण्डूप परमोत्तम उपाय है।

तर्पण।

दाह और कम्पसे पीड़ित, दुर्बल और निराहार तथा प्यासे ज्वर

रोगीको खीलोंके सत्तूमें मिश्री और शहद डालकर पिलाओ। खीलों के सत्तूको शीतल जलमें घोलकर ऊपरसे अन्दाज़का शहत और मिश्री मिलाकर, पिलानेसे वमन, अतिसार, प्यास, दाह, विष, बेहोशी और ज़्वरका नाश होता है। (देखो पृष्ठ ८५।)

पित्तज्वरमें चीनी मिलाकर, मूँगके यूषके साथ भात खिलाना चाहिये अथवा पीछे ८३ वें सफेमें लिखी पित्तज्वर नाशक पेया देनी चाहिये।

नोट—पित्तज्वरमें देने योग्य यूष, भात और औषधियोंके पानी प्रभृति पीछे लिखे हैं, वहाँ देख लो और जो समय पर उचित जँचे वही दो।

पानी।

पित्तज्वरमें भी गरम किया हुआ जल शीतल करके दो। जलको औटाकर रख दो, आपही शीतल हो जाय तब दो; अपनी किसी चेष्टासे शीतल मत करो। गरम करनेसे पानीके सब दोष नाश हो जाते हैं। गरम किया हुआ जल जल्दी पचता है और ज़्वर को नाश करता है। पित्तज्वरमें ऋतुके अनुसार औटाकर जल दो। साधारणतया पित्तज्वरमें सेरका तीन पाव जल अच्छा होता है। ऐसा औटा हुआ जल पित्तनाशक है।

सूचना।

(१) ज्वरोंमें हिचकी, श्वास, खाँसी, दाह प्रभृति दस उपद्रव होते हैं तथा सिरमें दर्द होता है। इनके उपाय पुस्तकान्तमें लिखे हैं। ज़रूरत पड़नेसे देख लेना।

(२) पित्तज्वरके आराम होनेपर भी अगर कुछ पित्त बाकी रहजाय, तो उसको अवश्य शान्त कर देना चाहिये; क्योंकि ज़रासा रहा हुआ पित्त फिर ज्वर पैदा कर देता है। पित्तके शेष रह जानेसे अक्सर विषम ज्वर हो जाते हैं। "सुश्रुत" उत्तरतन्त्रमें, ऐसे मौके पर,

ईखका रस या शीतल शर्बतका पिलाना हितकर लिखा है। शास्त्रोक्त शर्करोदक बनानेकी विधि पृष्ठ ७६ में लिख आये हैं, गन्ना चूसने और शर्करोदक पीनेसे बाकी रहा हुआ पित्त निश्चयही शान्त हो जाता है। कफ और वायुका शेष अंश पसीने दिलाने और मालिश करानेसे आराम हो जाता है।

डाक्टरी मतसे

कन्टिन्यूड फीवर या पित्तज्वरकी चिकित्सा।

(१) कामन कन्टिन्यूड फीवरमें हलका जुलाब देकर"फीवर मिक्सचर" देना चाहिये।

(२) आरडेन्ट कन्टिन्यूडमें रोगीके पास दीपक वगैरःकी रोशनी न रखनी चाहिये और न ज़ोरसे बोलना, चीखना-चिल्लाना चाहिये। केलोमेलसे कड़ा जुलाब देकर, "टारटा एमेटिक मिक्सचर" देना चाहिये। पानीमें सिरका मिलाकर, उसमें कपड़ा भिगोकर, उस कपड़ेसे कभी-कभी शरीर पोंछना चाहिये।

हिकमतके मतसे

पित्तज्वर या सफरावी तपका इलाज।

(१) शाहतरा (पित्तपापड़ा), लालचन्दन, नेत्रवाला और सोंठ—इन सब को चार चार माशे लेकर, इनका काढ़ा ३।४ दिन पिलानेसे ताप भाग जाता है।

(२) शरबत वजूरी या शर्बत नीलोफर पानीमें मिलाकर पिलानेसे भी लाभ होता है। शर्बत वजूरी पित्तज्वरकी गरमी शान्त करनेमें बहुतही उत्तम है।

(३) गिलोय, शाहतरा, धनिया, मुलहटी, काकड़ासिंगी, ख़स, लालचन्दन, नीमके पत्ते और ख़रबूज़ेकी मींगी—सबको सवा चार चार माशे लेकर, आधासेर पानीमें औटाओ। आधा पाव पानी रहनेपर, मल-छानकर पिला दो। इस तरह दोनों समय पिलाओ। यह जुशाँदा गरमी या पित्तके नये और पुराने दोनों ज्वरोंको आराम करता है।

(४) ख़मीरा ख़सके चाटनेसे भी पित्तज्वर और प्यासमें लाभ होता है। अगर तपेदिक़में देना हो, तो दो दिन तक इसमें ४ रत्ती कपूर मिलाकर दो। अगर अतिसारमें देना हो या मलको नर्म करनेको देना हो, तो इसमें ६ माशे बंशलोचन मिला दो। यह ख़मीरा परमोत्तम चीज़ है। (५) शर्बत बनफ़शा देनेसे दाह, ज्वर, प्यास और खाँसी आराम होती है। शर्बत इमली दाह, प्यास और पित्तको शान्त करनेमें एकही है। शर्बत आलू बुख़ारा कफ़को नाश करता है, दाह और प्यास शान्त करता है तथा पित्तको नीचेकी राहसे निकालता है। नारङ्गीका शर्बत प्यास और गरमीके सिरदर्दमें फ़ायदा करता है। मीठे अनारका शर्बत ज्वर और प्यासको शान्त करता है। शर्बत हरड़ ज्वरको शान्त करता है और दस्त लाता है। शर्बत गुलाब पित्तको दस्तसे निकालता है। शर्बत गावज़बाँ दिलके लिये मुफ़ीद है और वातपित्त प्रकृतिवालोंको अच्छा है। जवारश ज़रश्क मेदे में ताक़त लाती है, आँतों और कलेजेको मज़बूत करती है, गरमी और प्यासको शान्त करती है तथा खूनकी गरमीको शान्त करती है। सिकंजबीन बज़ूरी सर्द कलेजेके रोगोंको हित है। सिकञ्जबीन बज़ूरी मुअतदिल है, तिल्ली, मसाने और कलेजेके रोगोंको मुफ़ीद है। कमीनी मुसहल मामूली दस्त लाती और पित्तको नाश करती है। सिकञ्जबीन सादा प्यासको नाश करती है। ये सब चीज़ें पित्तज्वरमें लाभदायक हैं। जैसी ज़रूरत हो, विचारके साथ देनेसे पित्तज्वरकी सब तकलीफ़ें रफ़ा होती हैं। ये सब चीज़ें अत्तारों की दूकानों पर तैयार मिलती हैं।

(६) बबूलका गोंद, भुनाहुआ बन्सलोचन, जावित्री, मुलेठीका सत्त और कहरुबा—ये सब ६।३ माशे, ईसबगोल १तोले, भुनाज़ीरा १तोले भुना बाकला १ तोले—इन आठोंको कूटपीस और छानकर रख लो। ४।४ माशे चूर्ण सवेरे शाम खानेसे खून और पित्तके दस्त निश्चयही आराम हो जाते हैं।

नोट—मुलहटी छिली हुई लेनी चाहियें और ईसबगोलको कूटना न चाहिये। इसका लुआब काम में लाना चाहिये अथवा योंही बिना कूटे काममें लाना चाहिये। काढ़े में दवा २ से ४ तोले तक लेनी चाहियें। काढ़ा १६ गुने जलमें औटाना चाहिये। आधा जल रहने पर उतार लेना चाहिये। छान कर और मिश्री मिलाकर पिला देना चाहिये।

(७) पपरिया कत्था ४ तोले, कपूर १ तोले - इन दोनोंको पीसकर, गोंद का पानी डालकर बेरके बराबर गोलियाँ बनालो। एक गोली रोज़ खानेसे पित्तकी खाँसी शान्त होती है।

नोट—कासमर्दन वटी चूसनेसे सब तरहकी खाँसी आराम होती हैं। (देखो "स्वास्थ्यरक्षा" पृष्ठ ३३१)

कफज्वरकी चिकित्सा ।

कफ कुपित होनेके कारण ।

चिकने, मीठे, भारी, शीतल, लिबलिबे, खट्टे और नमकीन पदार्थों के सेवन करने, दिनमें सोने और परिश्रम न करने प्रभृति कारणोंसे कफ कुपित होकर कफज्वर आदि रोग उत्पन्न करता है।

कफज्वर कैसे होता है ?

कफकारी आहार विहारोंसे कुपित होकर, कफ आमाशयमें जाकर, रसको दूषित करके और कोठेकी अग्निको बाहर निकालकर, आप स्वतन्त्र हो कर, कफज्वर करता है।

कफज्वरके पूर्वरूप ।

जब कफज्वर होनेवाला होता है, उससे कुछ पहले थकान प्रभृति मालूम होती हैं। उसके बाद अन्नमें अरुचि हो जाती है।

कफज्वरके लक्षण।

स्तैमित्यं स्तिमितो वेग आलस्यं मधुरास्यता।
शुक्लमूत्रपुरीषत्वकुस्तम्भस्तृप्तिरथापि च॥
गौरवं शीतमुत्क्लेदो रोमहर्षोऽतिनिद्रता।
प्रतिश्यायोरुचिः कासः कफजेऽक्ष्णोश्च शुक्लता॥

शरीर गीले कपड़ेसे ढकासा जान पड़े, मन्दा-मन्दा ज्वर हो, आलस्य हो, मुँहका स्वाद मीठा हो, मलमूत्र सफेद हों, सारा वदन जकड़ रहा हो, पेट भरासा मालूम हो, खानेकी इच्छा न हो, शरीर भारी हो, जाड़ासा लगे, जी सा मिचलावे, रोएँ खड़े हो जायँ, नींद वहुत आवे, जुकाम हो, भोजनमें अरुचि हो, खाँसी आती हो और नेत्र सफेद हों—ये लक्षण कफज्वरमें होते हैं। इनके सिवाय, देहमें वेदना, मुँहसे पानी गिरना, सफेद फुन्सी होना, वमन होना, तन्द्रा होना, जाडा लगना, गरमी अच्छी मालूम होना, मन्दाग्नि होना और हृदय या छातीका कफसे लिहसासा मालूम होना प्रभृति लक्षण औरभी होते हैं।

"चरक"में लिखा है,—शरीरमें वातपित्तका प्रभाव न रहे, ज्वर एक दमसे आवे और वढ़े, देह भारी हो, अरुचि हो, कफ गिरे, मुँहका स्वाद मीठा हो, नींद वहुत आवे, तन्द्रा और श्वास हो, खाँसी और जुकाम हो; नेत्र, नाखून, मुँह, मल, मूत्र और चमड़ेका रङ्ग अत्यन्त सफेद हो, देहमें सफेद फुन्सियाँ हों और उनमें खुजली चले और गरमीकी इच्छा हो इत्यादि लक्षण कफज्वरमें होते हैं। चिकने, मीठे, शीतल प्रभृति गुणवाले पदार्थोंसे रोग वढ़ता है और रूखे कड़वे गरम प्रभृति गुणवाले पदार्थोंसे घटता है।

हारीतने पसीने आना, कानोंके छेदोंका रुक जाना, आँखोंका आधा पीला और आधा सफेद मिलासा रंग होजाना, वँधा दस्त आना प्रभृति लक्षण कफज्वरके लिखे हैं।

हिकमतसे कफज्वरके लक्षण।

इसे हिकमतमें वलग़मी ताप कहते हैं। इसमें ताप, सिरदर्द, शरीर भारी और ज़वान सफेद होती है। किसी-किसीके मुँहसे पानी भी आता है। इस बुख़ारमें पेशाव वहुत होता है।

कफज्वरमें नाड़ी और मूल प्रभृति।

कफ ज्वरमें नाड़ी हंस या हाथी या गजगामिनी स्त्री की तरह धीरे-धीरे झूमती हुई चलती है। कफके समय यानी वसन्त, प्रातः-काल, संध्याके बाद, भोजन करते-करते—कफकी नाड़ी उसी तरह हंसकीसी चालसे चलती है। छूनेमें ऐसी मालूम होती है, जैसी गरम जलमें भीगी हुई रस्सी शीतल जान पड़ती है अथवा तन्तुओंके समान सूक्ष्म, मन्दी चालवाली और शीतल जान पड़ती है। उसी तरह मल या अजीर्णमें भी वहुत नहीं फडकती।

कफज्वरमें दस्त सफेद और मिक़दारमें ज़ियादा होता है। पेशाव ज़ियादा. कुछ सफेद, गाढ़ा और चिकना होता है। आवाज़ भारी होती है। शरीर हलका, गरम, चिपचिपा, चिकना और पानीसे भीगा सा होता है तथा रंगत सफेद होती है। जीभ मोटी, भारी, कफसे लिहसी हुई और खारी होती है। मुखका स्वाद मीठा होता है। चेहरा भारी और सूजा सा जान पडता है। आँखोंकी ज्योति मन्दी होजाती है, रङ्ग सफेद होता है और उनमें जल भर-भर आता है।

कफज्वरका समय।

भोजन करतेही, सवेरेके पहले पहरमें, रातके पहले पहरमें तथा वसन्त ऋतुमें कफज्वरकी उत्पत्ति और वृद्धि होती है।

कफज्वरमें लंघन ।

इस ज्वरमें पहले लिखे हुए नियमोंके अनुसार, ज्वर न पकने तक लंघन कराने चाहियें। गरम जल पिलाना चाहिये। खानेको दोपानुसार पेया प्रभृति देनी चाहिये। तेरहवें दिन अन्न और शमन औषधि देनी चाहिये। यह साधारण नियम है। ज़ियादा लंघन कराना, कम कराना, जल्दी या देरसे शमन औषधि देना—इसमें चिकित्सकके विचार बुद्धिकी भी ज़रूरत है। लंघन-सम्बन्धी नियम पीछे पृष्ठ ८६-११० में लिख आये हैं।

कफज्वरके पकनेकी अवधि ।

कफज्वर बारह दिनमें पचता है। तेरहवें दिन अन्न और शमन औषधि देनेका नियम है। आमज्वरमें शमन औषधि न देनी चाहिये। ये सब पहले लिख आये हैं। "सुश्रुत"में लिखा है,—कफज्वरमें १२ दिन बीतने पर दवा देनी चाहिये।

चिकित्सा ।
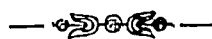
कफज्वरमें पाचन क्वाथ ।

(१) पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, गजपीपल, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद, सरसों, हींग, भारङ्गी, पाढ़ी, इन्द्रजौ, ज़ीरा, बकायन, मूर्वा (चुरनहार), अतीस, कुटकी और वायबिड़ङ्ग —इन २१ दवाओंको मिलाकर "पिप्पल्यादिगण" कहते हैं। यह पिप्पल्यादिगणका समुदाय कफ और वातको नाश करता है;

गोला, शूल और ज्वरको हरता है; अग्निको दीप्त करता और आम को पचाता है। वङ्गसेन और भावमिश्र प्रभृतिने पिप्पल्यादिगणका काढ़ा कफज्वरमें अच्छा पाचन बताया है। मतलब यह है, इन २१ दवाओंको बराबर-बराबर माशे-माशे, डेढ़-डेढ़ माशे या ज़ियादा, जैसा वैद्य उचित समझे, लाकर, इनका काढ़ा बनाकर, कफज्वर पचानेके लिये देना चाहिये। यह काढ़ा कफज्वरको पका देगा और अग्निको दीप्त करेगा।

(२) बिजौरे नीबूकी जड़, सोंठ, गिलोय और पीपरामूल—इन पाँचोंके काढ़े में "जवाखार" डालकर पीनेसे भी कफज्वरका पाचन होता है।

(३) कटेली, वासा, लोध, कूट और परवल—इनका कल्क हारीतने कफज्वरमें हितकारी कहा है।

कफज्वर नाशक नुसखे।
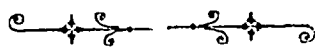
(१) नीमकी छाल, सोंठ, गिलोय, शतावर, कचूर, चिरायता, पोहकरमूल, पीपल, और कटाई—इन ६ औषधियोंको तीन-तीन माशेके हिसाबसे २। तोले लेकर, काढ़ा बनाकर, पिलानेसे कफज्वर नष्ट होता है।

नोट—शतावरके स्थानमें देवदारु डालने और काढ़ा औट जानेपर ४माशा शहद मिलाकर देनेसे भी अच्छा फल होता है। यह नुसखा आजमाया हुआ है।

(२) नीमकी छाल, सोंठ, गिलोय, कटेरी, पोहकरमूल, कुटकी, कचूर, अड़सा, कायफल, पीपल और शतावर—इन ग्यारह औषधियोंका काढ़ा भी कफज्वरको नाश करता है। परीक्षित योग है।

(३) कायफल, पीपल, काकड़ासिंगी और पोहकरमूल—इन चारोंको बराबर-बराबर लाकर, कूट-पीसकर छान लो। शीशीमें भरकर रख लो। दो दो माशेकी ६ मात्रा बना लो। सवेरे, दोपहर और शाम को और इसी तरह रातको, चार-चार घण्टेपर, एक-एक मात्रा शहतके

साथ चटाओ। इस नुसख़ेसे श्वास, खाँसी, ज्वर और कफका नाश होता है। यह नुसखा कफज्वरमें श्वास, खाँसीको निश्चयही दबाता है ; पर गरम है। अगर रोगीको गरमी मालूम हो, तो मात्रा कम कर देनी चाहिये।

नोट—यह नुसखा कफज्वर पर प्रधान नहीं है ; इसलिये सवेरे शाम नं० १ या नं० २ देना चाहिये। इन नुसखोंके १ या २ घण्टे बाद इसको देना चाहिये। ये दोनों साथ-साथ चलते हैं। ये तीनों नुसखे, अगर कफज्वर ठीक पहचाना गया हो, तो रामबाणका काम करते हैं। अगर येही नुसखे पित्तज्वरमें दे दिये जायँ, तो रोगी मर जाय। इसलिये ज्वरको खूब पहचानकर दवा देनी चाहिये। पित्तज्वर शीतल चिकित्सा चाहता है और कफज्वर गरम।

(४) अगर कफज्वरमें आँखोंका बल क्षीण हो जाय और कानोंसे सुनाई न दे, तो निर्गुण्डी या सम्हालूके पत्तोंका काढ़ा, पीपरका चूर्ण डालकर, पिलाना चाहिये। इससे निश्चय ही लाभ होता है। नं० १ की तरह २ तोले पत्तोंका काढ़ा बनाकर, ३ माशे पीपरका चूर्ण मिलाकर पिला देना चाहिये। यह भी परीक्षित है।

(५) शहतमें पीपलका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे श्वास, खाँसी, ज्वर, तिल्ली, अफारा और हिचकी,—ये आराम होते हैं। परीक्षित है। बालकोंके लिये तो रामबाण ही है।

(६) पीपल, हरड़, बहेड़ा और आमला—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। कफज्वर रोगीको यह नुसख़ा शहतके साथ चटानेसे श्वास और खाँसीमें निश्चय ही लाभ होता है।

(७) कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, अजवायन, कलौंजी, सोंठ, मिर्च और पीपल—इन सबको बराबर बराबर लेकर, कूट पीस और छानकर शीशीमें भर लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण अदरखके रस या शहतमें मिलाकर चाटनेसे श्वास, खाँसी, अरुचि, वमन, हिचकी, कफ और वात—ये सब नाश होते हैं। उत्तम नुसखा है। इसका नाम "अष्टाङ्ग अवलेह" है।

ज्वरके उपद्रव ।

प्रथम तो हमने यहीं खाँसी, श्वास, हिचकी प्रभृतिके परीक्षित नुसख़े लिख दिये हैं। अगर किसी और उपद्रव या इन्हीं उपद्रवोंके लिए और किसी नुसख़ेकी ज़रूरत हो, तो पुस्तकके अन्तमें देखना चाहिये। वहाँ हिचकी, वमन, मूर्च्छा, कोष्ठबद्ध प्रभृति दसों उपद्रव और शिरशूल, पसलीका दर्द वगैरः के भी, एकसे एक बढ़कर आज़मूदा नुसख़े लिखे हुए हैं।

हिकमतसे

कफज्वरका इलाज ।

(१) अनीसूँ, मस्तगी, गुलक़न्द—इन तीनोंको चार-चार माशे लेकर दिनमें दो बार खिलानेसे ज्वर जाता रहता है।

नोट—अगर कफका कोप अधिक हो, तो वमन करानी चाहिये। अगर रोगीके भीतर बुखार हो तो जुलाब देना चाहिये।

(२) निर्गुण्डीका काढ़ा, और बनपीपरका चूर्ण मिलाकर पीनेसे कफ-ज्वर आराम होजाता है।

(३) अजवायन, पीपल, वासा, ख़शख़ाशका वक्कल--इनका काढ़ा पीनेसे श्वास, खाँसी और ज्वर नाश हो जाते हैं।

(४) त्रिफला और पीपर—बराबर-बराबर लेकर, पीस छानकर, शहत में मिलाकर चाटनेसे खाँसी नाश हो जाती है।

रोग परीक्षामें सावधानी ।

बहुतसे वैद्य केवल नाड़ी पकड़कर दवा तजवीज कर देते हैं; रोगीसे उसके दुःख-सुखका पूरा हाल भी नहीं सुनते। नाड़ी देखना बड़ा कठिन काम है। यह अभ्यास चाहता है। जो वैद्य नाड़ी ही देखकर

दवा तजवीज नहीं कर देता, उसे आजकलके लोग भोंदू वैद्य समझते हैं; इसलिये अनेक अपरिणामदर्शी वैद्य, अपनी प्रतिष्ठा भंग होनेके खयालसे, नाड़ीही पर निर्भर रहते हैं। ऐसोंके हाथोंसे बहुतसे रोगी बिना मौत मरते हैं। प्राचीन शास्त्रोंमें कहीं नाड़ीका ज़िक्र नहीं है। पहले लोग लक्षण देखकर ही चिकित्सा करते थे। उसमें भूल कम होती थी। अगर नाड़ी देखना आता हो, तो नाड़ी देखकर रोगका हाल जानना बुरा नहीं; पर केवल नाड़ीके ही भरोसे रहना अच्छा नहीं।

शास्त्रमें लिखा है:—

> अति पित्त भवे व्याधौ बुद्ध्यतिक्रमतो यदि।
> वातकोपवशाद्वमादौ ज्ञात्वा धरागतिम्॥
> प्रदद्यादुष्णजं द्रव्यं तद्दोषविनिवृत्तये।
> तदा नूनं भवेन्मृत्युः पित्तकोपेन भूयसा॥

मान लो, किसी रोगीको पित्तका रोग हो और वैद्य, बुद्धिके भ्रमसे, वातकोपकी नाड़ीको अगले भागमें समझकर, उस रोगीके दोष दूर करनेके लिये, उसको कोई गरम दवा देदे, तो वह रोगी निश्चय ही मर जायगा; क्योंकि अव्वल तो पित्तकी गरमी और उसके ऊपर दवाकी गरमी—दोनों गरमियोंसे रोगीका करम कल्याण ही होगा। इसी तरह रोगीको वादीका रोग हो; वैद्य नाड़ीका ज्ञान ठीक न होनेके कारण, उसे पित्त का रोग समझकर शीतल उपचार करे, तो रोगी मरेगा या बचेगा? इसलिये नाड़ीके स्थानपर ध्यान न देकर, उसकी चाल पर ध्यान देना चाहिये।

जिस तरह साँप और जोंक टेढ़े तिरछे होकर चलते हैं अथवा जिस तरह बिच्छू चलता है, उस तरह वातकी नाड़ी चलती है।

जिस तरह कव्वा, मेंढ़क, लवा, कुलिङ्ग और चिड़ा फुदक-फुदक कर चलते हैं, उसी तरह पित्तकी नाड़ी फुदक-फुदक कर चलती है।

जिस तरह बतख, मोर, कबूतर, पिंडुकिया, मुर्गा, गज और गज-

गामिनी नारी धीरे-धीरे झूमते हुए चलते हैं ; उसी तरह कफकी नाड़ी मन्दी-मन्दी चलती है। बस, इन तीनों चालोंपर नज़र रखनी चाहिये। इस चालकी पहचानका अभ्यास होनेसे बेशक सफलता होगी।

जब मनुष्यको ज्वर चढ़ आता है, तब उसकी नाड़ी गरम और वेगवती होजाती है। बिना पित्तके गरमी नहीं होती और बिना गरमीके ज्वर नहीं होता, इसलिये ज्वरके वेगमें नाड़ी भी गरम और वेगवती हो जाती है।

इस तरह इन बातोंको ध्यानमें धर कर अभ्यास कीजिये। जब तक पूर्ण अभ्यास न हो जाय, तब तक नाड़ी देखकर भी, अधिक विश्वास लक्षणों पर ही कीजिये। कफज्वरका इलाज करते समय, कफज्वरकी दवा तब तक तजवीज न करो, जब तक आपकी पूरी खातिरी न होजाय कि, ये कफज्वर है। सब लक्षण अच्छी तरह मिला लीजिये। पहले लिख आये हैं,कफज्वरमें पित्तज्वरकी दवाएँ देनेसे और पित्तज्वरमें कफज्वर की दवाएँ देनेसे रोगी अवश्य मर जायगा। कफज्वरके रोगीको हर तरह गरम रखना होता है, गरमही दवा दी जाती है, गरम ही जल दिया जाता है, हवासे बचानेको कपड़ेसे ढके रखना पड़ता है और शीतल पदार्थ खानेको नहीं दिये जाते। शीतल आहार विहारोंसे रोगी को हर तरह बचाना होता है। क्योंकि लिख आये हैं कि, शीतल और मीठे पदार्थों से कफ कुपित होता है और गरम तथा कड़वे पदार्थों से शान्त होता है। पित्तज्वर गरम पदार्थों से बढ़ता है और शीतल पदार्थों से घटता है। नाड़ीके सम्बन्धमें अधिक देखना हो, तो हमारा "चिकित्साचन्द्रोदय" प्रथम भाग पृष्ठ २०६-२२६ तक देखिये।

किसी भी रोगकी परीक्षा करते समय आप नाड़ी, मूत्र, मल, शब्द, स्पर्श, वर्ण, जीभ, मुख, चेहरा और नेत्र—इनकी परीक्षा अवश्य किया करें, फिर आपको धोखा न होगा।

जब वैद्यको अभ्यास होजाता है, तब वह कोई १०।१५ मिनटमें इन सबकी परीक्षा कर लेता है। जो इतनी परीक्षा बिना किये, रोगियोंका

इलाज हाथमें लेते हैं, हम तो उन्हें महापापी समझते हैं। मनुष्य-चोला बडी कठिनाईसे मिलता है। रुपया लेना और अपना १५।२० मिनिट समय भी न देना—घोर अन्याय है! आशा है, प्यारे पाठक हमारे इस लेखसे शिक्षा ग्रहण करेंगे और परीक्षामें जल्दबाज़ी न करेंगे, क्योंकि मुख्य काम "रोगपरीक्षा" ही है। निशाना बाँध लेने पर, गोली मारनेसे गोली ठीक निशानेपर लगती है और सिपाहीके नामके आगे गुलज़री (Bull's eye) लिखी जाती है। आठों प्रकारकी रोग-परीक्षा करनेकी विधि खूब अच्छी तरह समझाकर, हमने इसी पुस्तक के प्रथम भागमें—२०६—२४० पृष्ठोंमें—लिखी है।

द्विदोषज और सन्निपात ज्वरोंके कारण ।

विषम भोजन करने यानी कभी कम और कभी ज़ियादा खाने, व्रत-उपवास करने, ऋतुओंके पलटने, ऋतुओंके बिगड़ने, बदबूदार पदार्थोंके सूँघने, विषैला जल पीने, ज़हरीले पदार्थ सेवन करने, पहाड़ प्रभृतिके पास रहने, वमन विरेचनादिके ठीक न होने, स्त्रियों के असमय में बालक जनने, समयपर जननेसे कुपथ्य सेवन करने अथवा पहले लिखे हुए वातज्वर, पित्तज्वर और कफज्वरके कारणोंके मिल जानेसे दो दोषोंवाले और तीन दोषोंवाले ज्वर दो और तीन दोषोंके, एकही समयमें, कुपित होनेसे होते हैं। जो ज्वर दो दोषोंके कोपसे होते हैं, उन्हें "द्वन्द्वज" और जो तीन दोषोंके कोपसे होते हैं, उन्हें "त्रिदोषज" या "सन्निपातज" कहते हैं।

वातपित्तज्वरकी चिकित्सा ।
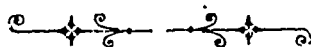
वातपित्तज्वर कैसे होता है ?

वात और पित्तको कुपित करनेवाले आहार विहारोंसे कुपित होकर, वात और पित्त आमाशयमें जाकर, रसको दूषित करके, कोठे की अग्निको बाहर निकालकर, वातपित्तज्वर उत्पन्न करते हैं।

वातपित्ताज्वरके पूर्वरूप।

जँभाइयाँ आती हैं और आँखोंमें जलन होती है। इस ज्वरमें वातज्वर और पित्तज्वर दोनोंके पूर्वरूप होते हैं।

वातपित्तज्वरके लक्षण।

तृष्णा मूर्च्छा भ्रमो दाहः स्वप्ननाशः शिरोरुजा।
कंठास्यशोषो वमथू रोमहर्षोऽरुचिस्तमः
पर्वभेदश्च जृम्भा च वातपित्तज्वराकृतिः॥

प्यास,मूर्च्छा—बेहोशी, भ्रम, दाह, नींद न आना, सिरदर्द, कंठ और मुँह सूखना, वमन, रोएँ खड़े होना, अरुचि, आँखोंके आगे अँधेरा आना, जोड़ या सन्धियोंमें पीड़ा होना और जँभाइयाँ आना,—ये "वातपित्तज्वर"के लक्षण हैं।

नोट—"चरक"में लिखा है, वातपित्तज्वरवाला शीतल पदार्थोंकी इच्छा करता है, क्योंकि वायु योगवाही है; जिसके साथ मिलता है उसीकेसे काम करता है। पित्तके साथ मिलनेसे वह पित्तकेसे काम करता है। इसीसे वातपित्ताज्वरवालेको गरमी बुरी लगती है और सरदी अच्छी लगती है। वायु जब कफके साथ मिलता है, तब कफकेसे काम करता है, उस समय रोगीको गरमी अच्छी लगती है। "चरक" में ज्ञानपूर्वक या अज्ञानपूर्वक प्रलाप या आनतान बकनेका लक्षण अधिक लिखा है। हारीतने मुँहका कड़वा होना, शरीरका रूखा होना और नेत्रोंका लाल होना,—ये लक्षण ज़ियादा लिखे हैं।

वातपित्ताज्वरमें नाड़ी।

वातपित्तकी नाड़ी चञ्चल, तरल, स्थूल और कठोर होती है और झूम-झूमकर चलती सी मालूम होती है। वातपित्तके कोपसे मल बँधा, हुआ, कभी बिखरासा या पीला-कालासा होता है। इस ज्वरमें नाड़ी बारम्बार साँपकी चालसे टेढ़ी और मेंढककी चालसे फुदक-फुदककर चलती है।

वातपित्तज्वरमें लंघन।

—✻—

पीछे (पृष्ठ ८७-११० में) लिखी हुई विधिसे लंघन कराने चाहियें। कच्चे ज्वरमें औषधि न देनी चाहिये। ज्वर कच्चा हो, तो दोष पकानेका यत्न करना चाहिये। दोषपाकके लक्षण दीखते ही, संशमन क्वाथ आदि जो जचे सो देना चाहिये।

वातपित्तज्वरमें औषधि देनेका समय।

—✻—

वातपित्तज्वरमें पाँचवें दिन औषधि देनी चाहिये।

वातपित्तज्वरमें पाचन।

—✻—

हरड़, बहेडा, आमला, सेमलकी छाल, रास्ना और चिरायता—इनका काढ़ा वातपित्तज्वरमें पाचन है और इसका नाम "त्रिफलादि क्वाथ" है।

वातपित्तज्वर नाशक नुसखे।

—✻—

(१) चिरायता, गिलोय, दाख, आमले और कचूर—इन पाँचोंके काढ़े में, पुराना गुड़ मिलाकर पीनेसे, वातपित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम "किरातादि क्वाथ" है।

(२) चिरायता, आमला, कचूर, दाख, कालीमिर्च, सोंठ और गिलोय,—इन सातोंके काढ़ेमें, गुड मिलाकर देनेसे वातपित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम भी "किरातादि क्वाथ" है।

(३) गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चिरायता और सोंठ—इन पाँचोंका काढ़ा वातपित्तज्वरमें सर्वोत्तम है। इसका नाम "पञ्च भद्र क्वाथ" है।

नोट—यह काढ़ा सचमुच ही बड़ा अच्छा है। हमारा अनेक बारका परीक्षित है।

(४) हड़र, बहेड़ा, आमला, सेमलकी छाल, रायसन, अमलतासका गूदा और अड़ूसा—इन सातोंका काढ़ा वातपित्तज्वरको नाश करता है। इसका नाम भी "त्रिफलादि" क्वाथ" है।

(५) सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, चिरायता तथा पंचमूलका पाँचों औषधियाँ—इन नौ औषधियोंका काढ़ा पीनेसे शीघ्रही वात-पित्तज्वर दूर होता है।

(६) खिरेंटी, भारङ्गी, गिलोय, अरण्डकीजड़, लालचन्दन, खस, पित्तपापडा, पीपल, नागरमोथा और सुगन्धवाला—इनका काढ़ा सन्धियोंकी पीड़ा—जोड़ोंका दर्द, सिरका काँपना और वात-पित्तज्वरको नाश करता है।

(७) नील कमल, खस, खिरेंटी, पद्माख, कुम्भेर, मुलेठी, दाख, महुआ और फालसे—इनका काढ़ा, शीतल करके, पीनेसे वातपित्तज्वर नाश होता है तथा प्रलाप और मोहयुक्त पितज्वर भी नाश होता है; यानी जिस पित्तज्वरमें रोगी आनतान बकता और बेहोश रहता है, वह पित्तज्वर भी नाश हो जाता है।

(८) अमलतासका गूदा, नागरमोथा, मुलेठी, ख़स, हरड़, हल्दी, दारूहल्दी, पटोलपत्र, नीमकी छाल और कुटकी—इन दसोंका काढ़ा वातपित्तज्वरमें हितकारी है।

(९) नेत्रवाला, गिलोय, अरण्डकी जड़, सुगन्धवाला, नागरमोथा, पद्मकाष्ट, भारङ्गी, पीपल, खस और चन्दन—इन दसोंका काढ़ा पीनेसे वातपित्तज्वरका नाश होकर अग्निकी वृद्धि होती है।

नोट—यह नुसखा परीक्षित है। इन सब दवाओंको तीन-तीन माशे या कुल २॥) तोले लेकर, काढ़ेकी तरह औटाओ और सवेरे शाम पिलाओ; अवश्य फायदा करेगा। नं० ३ "पञ्चभद्र क्वाथ" भी परीक्षित है। आजकलके मनुष्योंके लिये प्रायः दो तोला या अढ़ाई तोला काढ़ेकी सब दवायें मिलाकर लेना हमारी परीक्षा में निरापद और

लाभदायक साबित हुआ है। इसीसे हमने दो चार जगह काढ़ेकी मात्रा लिख दी हैं। इसी तरह और जगह भी समझना चाहिये। फिर भी; रोगीका बलाबल, प्रकृति और काल प्रभृतिका विचार करके, मात्राका घटाना और बढ़ाना चिकित्सकका काम है।

(१०) मुलेठी, सारिवा (गौरीसर-अनन्तमूल) दाख, महुआ, चन्दन, कमल, कुम्भेरका फल, लोध, त्रिफला, कमलकी केशर, फालसे और कमलकी नाल—इन बारह दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, कोरी हाँडीमें डालकर, ऊपरसे साफ पानी डालकर, रातके समय भिगो दो। सवेरे बिना औटाये ही मलछान कर, उसी बासी जलमें,—मिश्री, शहत और खीलोंका सत्तू मिलाकर रोगीको पिलाओ। "भावप्रकाश"में लिखा है, इस हिमके पीनेसे दाह, प्यास, मूर्च्छा, अरुचि, भ्रम और वातपितज्वर इस तरह भागते हैं, जिस तरह हवासे बादल भागते हैं। बङ्ग-सेनने भी ऐसी ही तारीफ की है। "भावप्रकाश"में लिखा है, इन सब दवाओंको ८ तोले लेकर २४ तोले जलमें भिगोदो। सवेरे मिश्री और शहद तथा खीलोंका सत्तू मिलामर पिला दो। इसका नाम "मधुकादि हिम" है।

नोट—पहले लिख आये हैं, कि "हिम" शीत कषाय या शीतल काढ़ेको कहते हैं। हिमका यही कायदा है कि, उसकी दवाएँ काढ़ेकी तरह औटाई नहीं जातीं। रातको भिगोकर, सवेरे मलछानकर जल निकाल लिया जाता है और वह बासी जल शहत मिश्री प्रभृति डालकर रोगीको पिलाया जाता है। हिमकी तासीर शीतल है। पित्तके कारणसे हुए तृषा और दाह वगैरःमें यह अपूर्व्व चमत्कार दिखाता है। जिसे गरम औटाये हुए काढ़ेसे लाभ न होता हो, मिज़ाज गर्म हो, उसे हिम देनेसे अवश्य लाभ होता है।

पानी।

—*—

वातपित्तज्वरमें औटाकर शीतल किया हुआ जल पिलाना चाहिये।

पथ्य ।

—*—

वातपित्तज्वरमें मूँग और आमलोंका यूष अथवा अनार, आमले और मूँगका यूष देना हितकारी है। अगर वातपित्तज्वरमें दाहका बहुत ज़ोर हो, तो चनेका यूष देना चाहिये ।

अपथ्य ।

वातपित्तज्वरमें मूँग और करेला प्रभृति कफवातनाशक पदार्थ न देने चाहियें । इनके देनेसे ज्वर, शूल (दर्द), कब्ज और अफारा होता है ।

काढ़ा बनाने और पीनेकी विधि ।

इसके लिये आप इसी भागके १३१—१३५ तक के पृष्ठ और काढ़ेकी मात्राके लिये १७३—१७४ पृष्ठ देखिये ।

आठवाँ अध्याय

वातकफज्वरकी चिकित्सा ।

वातकफज्वर कैसे होता है ?

वात और कफकारक आहार विहारों से वात और कफ कुपित होकर, आमाशय में जाकर, रसको दूषित करके और कोठे की अग्निकी बाहर निकाल कर, "वातकफज्वर" करते हैं ।

वातकफज्वरके पूर्वरूप ।

वातकफज्वरमें वातज्वर और कफज्वर दोनों के पूर्वरूप—जँभाई आना और अन्न से अरुचि होना—ये होते हैं ।

वातकफज्वरके लक्षण ।

स्तैमित्यं पर्वणांभेदो निद्रागौरवमेव च ।
शिरोग्रहः प्रतिश्यायः कासः स्वेदाप्रवर्तनम् ॥
संतापो मध्यवेगश्च वातश्लेष्मज्वराकृतिः ॥

शरीर गीले कपड़े से ढका हुआ मालूम हो, जोड़ों में दर्द हो, नींद आवे, देह भारी हो, सिर में दर्द और जुकाम हो, खाँसी हो,

पसीने आवें *, सन्ताप हो और मन्दा-मन्दा ज्वर हो—ये "वातकफ ज्वर"के लक्षण हैं। हारीतने लिखा है;—"वातकफज्वरमें जाड़ा लगता है, शरीर काँपता है, शरीरके जोड़ टूटते हैं, शरीर लकड़ी सा हो जाता है; शूल, अरुचि, मन्दाग्नि, बन्धन, कठोरता, खाँसी ये उपद्रव होते हैं, तन्द्रा होती है, कूजन होता है, शरीर में चंचलता होती है, शरीर गीलासा हो जाता है, जँभाइयाँ आती हैं, पसीना आता है और मल मूत्र रुक जाते हैं।"

नोट—इस बुखार में सारे शरीर में बहुत पसीने आते हैं। उन पसीनों को ऊपरी उपायोंसे बन्द करना जरूरी है। भुनी हुई कुलथी या चूल्हेकी जली हुई मिट्टी पीस कर मलना अच्छा है।

वातकफज्वरमें नाड़ी आदि।

वातकफज्वर में नाड़ी मन्दी-मन्दी चलती है और किसी क़दर गर्म रहती है। अगर इस ज्वरमें कफ का अंश कम और वायु का अंश अधिक रहता है, तो नाड़ी रूखी और बराबर तेज़ चलती है। ये नाड़ी कभी सर्प की चाल से और कभी हंस या हाथी की सी चालसे चलती है। जिस की नाड़ीमें वायुका अत्यन्त कोप होता है, उसकी नाड़ी पित्तके समान अत्यन्त टेढ़ी और अत्यन्त स्थूल होती है।

वातकफज्वरमें अन्न और दवा देने का समय।

वातकफज्वर में, सातवें दिन, बृहत्पञ्चमूल के काढ़े में पकाया हुआ अन्न देना चाहिये। वातकफज्वर में नवें दिन दवा देनी चाहिये।

---

* पसीनों का आना तो पित्तज्वर में लिखा है, फिर वातकफज्वर में पसीने कैसे आते हैं? विकृति समवाय के अनुसार संयोग होनेसे विकार को प्राप्त हुए वात और कफ इन दोनों में—स्वभाव न मिलने से—ज़ियादा पसीने आते हैं। जैसे; हल्दी और चूने के मिलने से लाल रंग पैदा होता है।

वातकफज्वर में पाचन ।

अमलताशका गूदा, कुटकी, हरड़, पीपलामूल, नागरमोथा,—इन पाँचों का काढ़ा बनाकर, पिलाने से वातकफज्वर और आमशूल तत्काल नाश होता है। इस से दस्त साफ होता है। यह दीपन और पाचन है। इस का नाम "आरग्वधादि क्वाथ" है।

नोट—निस्सन्देह यह काढ़ा बहुत उत्तम है। हरड़ बड़ी लेनी चाहियें। सब दवाओं को पाँच-पाँच या छै-छै माशे ले कर, औटा कर और छान कर पिलाना चाहिये।

वातकफज्वर नाशक नुसख़े ।

(१) कटेरी, सोंठ, गिलोय और अरण्ड की जड़—इन चार दवाओं को ६।६ माशे लेकर, काढ़ा बना कर, पिलानेसे वातकफज्वर नाश होता है। ख़ासकर जिस ज्वर में कफ और वायु का बहुत ज़ोर हो, उस में अधिक लाभदायक है। इस से खाँसी भी मिटती है। श्वास, खाँसी, अरुचि और पीठ का दर्द—इन उपद्रवों सहित त्रिदोषज्वर को भी यह नाश करता है।

(२) पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ--इन पाँचों को "पंचकोल" कहते हैं। यह अग्नि को दीपन करता और वातकफज्वर को नाश करता है। यह उत्तम पाचन है, दीपक है, गरम है, कफदाह नाशक है, गोला, तिल्ली, उदर रोग, अफारा और शूल को नाश करनेवाला है, तीक्ष्ण और गरम है; इसलिये पित्त को कुपित करनेवाला है। ये पाँचों चीज़ें एक-एक कोल (तोला) लेने से "पञ्च कोल" कहलाता है।

नोट—इन पाँचों के काढ़े को "आरोग्य पंचक" भी कहते हैं इनका काढ़ा दीपन और कफवात नाशक है।

(३) चिरायता, सोंठ, गिलोय, कटेरी, कटाई, पीपलामूल, लहसन और सम्हालू—इन आठों का काढ़ा वातकफज्वर को नाश करता है।

(४) कटेरी, गिलोय, सोंठ और पोहकरमूल—इन चारों का काढ़ा खाँसी, अरुचि, श्वास, अफारा और शूल समेत वातकफज्वर को नाश करता है। इसका नाम "क्षुद्रादि क्वाथ" है।

नोट—राजद्रुमादि क्वाथ (आरग्वधादि क्वाथ) और ऊपर का क्षुद्रादि क्वाथ, इस ज्वरमें बहुत अच्छे हैं। क्षुद्रादि क्वाथ श्वास, खाँसी, अरुचि, पसलियों का दर्द और त्रिदोष के ज्वर को भी नाश करता है। अगर क्षुद्रादि क्वाथकी दवाओं में "चिरायता" और मिला दिया जाय, तब तो सोनेमें सुगन्ध ही हो जाय। कटेरी, गिलोय, सोंठ, पोहकरमूल और चिरायता—इन पाँचोंके काढ़े से वातकफ-ज्वर तो निश्चय ही आराम होता है। इसके सिवाय और सब ज्वर भी नाश हो जाते हैं।

(५) पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, गजपीपल, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद, सरसों, हींग, भारङ्गी, पाढ़, इन्द्रजौ, ज़ीरा, बकायन, मूर्वा, अतीस, कुटकी और वायविड़ङ्ग —इन २१ दवाओं को "पिप्पल्यादि गण" कहते हैं। इन का काढ़ा वातकफज्वर में सर्वश्रेष्ठ दवा है। इसके समान वातकफज्वर-नाशक और दवा नहीं है। इसका नाम "पिप्पल्यादि क्वाथ" है।

(६) पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, बच, अतीस ज़ीरा, पाढ़ी, इन्द्रजौ, रेणुका, चिरायता, मूर्वा, सरसों, कालीमिर्च, कायफल, पोहकरमूल, भारङ्गी, वायविड़ङ्ग, काकड़ासिंगी, आक की जड़, बड़ी कटेरी, रास्ना, धमासा, अजवायन, अज-मोद, श्योनाक और हींग—इन २८ दवाओं को बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बना कर पीने से, वातकफज्वर, वात-शीत (सर्दी), पसीना, अत्यन्त कँपकँपी, प्रलाप, आनतान

बकना, अत्यन्त नींद आना, रोएँ खड़े होना, अरुचि, अपतंत्र नामक महावायु और सारे शरीर की शून्यता—ये सब नाश हो जाते हैं। यह "पिप्पल्यादि महा क्वाथ" सब तरह के ज्वरों में पूजा जाता है।

(७) दशमूल के काढ़े में पीपल का चूर्ण मिलकर पीने से मुखपाक, अतिनिद्रा, अजीर्ण, पसलियों का दर्द, श्वास और खाँसी समेत वातकफज्वर नाश होता है।

नोट—शालिपर्णी पृष्ठपर्णी, कटेरी, कटाई, गोखरू, बेलगिरी, अरणी, स्योनाक कुम्भेर और पाढ़ल—इन दशों को "दशमूल" कहते हैं। यह नुसखा वातकफज्वर में रामबाण है। इसके सेवन से सन्निपातज्वर, प्रसूतिका रोग, श्रम और पसीने प्रभृति भी अवश्य नाश हो जाते हैं।

(८) केवल पीपलों का काढ़ा पीनेसे वातकफज्वर नाश होता है। यह अनभिष्यन्दि, अग्निदीपक और तिल्ली को नाश करने वाला है।

(९) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सोंठ, गिलोय और धमासा—इन पाँचों का काढ़ा वातकफ, अरुचि, वमन, दाह, शोष और ज्वर को नाश करता है।

(१०) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ—इन चारों को "चातुर्भद्रक" कहते हैं। यह वातकफ-नाशक है। इन का काढ़ा भी वातकफज्वर को नाश करता है।

(११) नीम की छाल, गिलोय, सोंठ, देवदारू, कायफल, कुटकी और वच—इन का काढ़ा वातकफज्वर नाशक तथा सन्धियों की पीड़ा, सिरका दर्द, खाँसी और और अरुचि को नाश करता है।

(१२), देवदारू, पित्तपापड़ा, भारङ्गी, नागरमोथा, वच, धनिया, कायफल, हरड़, सोंठ और पूतिकरञ्ज—इनके काढ़ेमें हींग और शहद डालकर पीनेसे कफवातज्वर, हिचकी, मुँह या गला सूखना, गलग्रह, श्वास, खाँसी और प्रमेह नाश होते हैं।

नोट—यह नुसखा सुश्रुतमें भी है। वहाँ "पूतीक"के स्थानमें "भूतीक" लिखा है। पूतीक "पूतिकरंज" को कहते हैं और भूतीक 'चिरायते' को कहते हैं। डल्हन-मिश्र 'भूतीक"का अर्थ "रोहिषतृण" कहते हैं।

इस नुसखेमें शहद ६ माशे और हींग २ रत्ती मिलानी चाहिये। अगर काढ़े-की मात्रा दो अढ़ाई तोलेसे जियादा हो, तो शहद और हींग भी जियादा डाले जा सकते हैं। यह नुसखा कंठकी सूजन, हृदय और पसलीके दर्द तथा कफके अधिक जोरमें देनेसे भी लाभ दिखाता है।

(१३) पटोलपत्र, सोंठ, इन्द्रजौ और पीपल—इन चारोंका काढ़ा दीपन और पाचन है। अगर कफवातके रोगमें प्यास, शूल, श्वास, खाँसी, अरुचि और दस्तकी क़ब्जियत हो, तो यह नुसखा देना चाहिये।

(१४) शुद्ध पारा, भुना हुआ सुहागा और शुद्ध गन्धक,—ये तीनों बरा-बर-बराबर लो। शुद्ध तुषरहित जमालगोटेके बीज पारेसे दूने लो। संधानोन, कालीमिर्च, इमलीका खार और खाँड़—ये सब पारेकी बराबर लो। पीछे सबको एकत्र खरलमें डालकर, जँभीरी नीबूके रसमें एक दिन-भर खरल करो। यही "सूर्यशे-खर" रस है। इसको २ रत्ती प्रमाण गरम जलके साथ सेवन करनेसे वातकफज्वर और शीतज्वर नाश होते हैं।

नोट—पारा, गन्धक, सुहागा, जमालगोटेके बीज कभी बिना शोधे मत लेना। शोधनेकी विधि पुस्तकके अन्तमें लिखी है। प्रथम तो रस किसीको देनाही नहीं। जब ऊपर लिखे १३ नुसखोंमें से किसी से भी रोग काबूमें आता न दीखे, तब इसको जरूर देना चाहिये। मात्रा २ रत्ती न देकर, कम देना अच्छा होगा। औषधिकी मात्राका कोई नियम नहीं हो सकता। वैद्यको दोष, अग्नि, बल, अवस्था, व्याधि, औषधि और कोठेका विचार करके मात्रा नियत करनी चाहिये।

पसीने बन्द करनेके उपाय।

—***—

वातकफज्वर और सन्निपात ज्वरोंमें प्रायः पसीने बहुत आते हैं। उनको शीघ्रही बन्द करना ज़रूरी है। इस तरह आये हुए पसीनोंमें पिच्छिलता बहुत होती है। इसलिये शीत आने से रोगी झट मर

जाता है। नीचे लिखे उपायों से पसीनोंका आना निश्चय ही बन्द हो जाता है।

(१) कुलथीको भुनवाकर और पीसकर, पसीने आते हों जहाँ, मालिश करो।

(२) चूल्हेकी जली हुई मिट्टी पीसकर मालिश करो।

(३) गायका पुराना गोवर और नमक रखनेका मिट्टीका वासन,—इन दोनोंको मिलाकर पीस डालो और शरीर पर मलो।

(४) चिरायता, कालीज़ीरी, कुटकी, वच और कायफल—इन पाँचोंको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर और कपड़छन करके शरीर पर मलो। लगातार वहता हुआ पसीना वन्द हो जावेगा।

(५) कालीमिर्च, पीपल, सोंठ, हरड़, लोध, पोहरकमूल, चिरायता, कुटकी, कूट, कचूर, शिवलिङ्गी और कपूरकचरी,—इन बारह दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, खूब महीन पीसकर, शरीर पर मलनेसे, नदीके प्रवाहकी तरह बहता हुआ पसीना भी बन्द हो जाता है।

(६) बच, अजवायन और सोंठ,—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर और सूखे ही पीसकर, शरीर पर मलने से ज्वर और पसीना शान्त हो जाता है।

(७) पीपल, देवदारू, सोंठ, कुटकी और अजवायन—इनको बराबर-बराबर लेकर,महीन पीसकर, शरीर पर मलने से पसीने दूर होते हैं और शरीर शीतल होता है।

नोट—आयुर्वेदमें पसीना बन्द करनेकी क्रियाको "उद्धूलन" कहते हैं।

बालूका स्वेद ।

पीनस, श्वास, बहरापन ; जाँघ, पसली और हड्डीके दर्द सहित वातकफज्वरमें "बालुका स्वेद" करना चाहिये। "बालुका स्वेद" शरीर

के स्रोतोंको नरम करता है; यानी साफ करता है, अगन्याशयको उसके स्थानमें स्थापित करता है, वातकफके स्तम्भको नाश करता है तथा ज्वरको हरता है।

तरकीव—एक ठीकरेमें वालू भरकर उसको खूब गरम करो और उसे रोगीके पास रक्खो। पीछे रोगीको कपड़ा उढ़ा दो और आगसे लाल हुई वालूपर काँजीके छींटे मारो। इस तरह बारम्बार करो। इससे रोगीके शरीरसे पसीने निकलेंगे और वातकफके रोग, सिरका दर्द और सारे शरीरकी पीड़ा शान्त हो जायगी।

नोट—बालूको ठीकरेमें खूब लाल करके, पीछे उसे गरमही पोटलीमें बाँधकर, उस पोटलीको काँजीमें भिगोकर स्वेद देना चाहिये। इसको भी "बालुका स्वेद" कहते हैं। इसके सम्बन्धमें वातज्वरमें लिख आये हैं; क्योंकि वातज्वरमें भी बालुका स्वेदका काम पड़ता है। बालुका स्वेदका अर्थ बालूको तपाकर और उस पर काँजीके छींटे मार कर पसीने निकालना है। यह भी एक तरहका बफारा ही है। साधारणतया, तवे को लाल करके, उस पर पानीके छींटे मारते हैं और रोगीको उढ़ा देते हैं। तवेकी भाफ से रोगीके शरीरसे पसीने निकालते हैं। इसी तरह "बालुका स्वेद" भी पसीने निकालनेका एक उपाय है।

कवल।

विजौरे नीबूकी केशर, सेंधानमक और कालीमिर्च—इन तीनों-को एकत्र पीसकर, मुखमें रखनेसे वातकफसे हुआ मुखशोष (मुँह (सूखना), मुखकी जड़ता, विरसता और अरुचि ये सब नाश होते हैं।

पानी।

औटाकर शीतल किया हुआ जल देना चाहिये। (देखो पृष्ठ १११—१२१)।

पथ्य।

वातकफज्वरमें सातवें दिन, वृहत्पञ्चमूलके क्वाथमें पकाया हुआ अन्न, विशेषकर पेया देनी चाहिये।
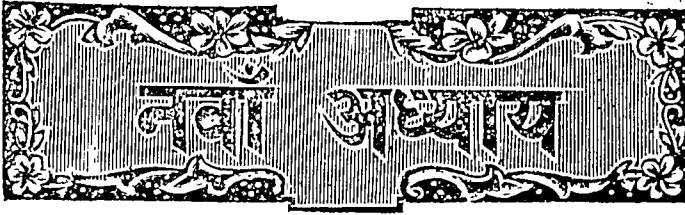
पित्तकफज्वरकी चिकित्सा ।

पित्तकफज्वर कैसे होता है ?

—※✱※—

पित्तकारक और कफकारक आहार विहारोंके कारणसे कुपित हुए पित्त और कफ आमशयमें जाकर, रसको दूषित करके, कोठेकी अग्निकी गरमीको बाहर निकालकर, पित्तकफज्वर करते हैं ।

पित्तकफज्वरके पूर्व्वरूप ।

—✱※✱—

पित्तकफज्वरमें पित्तज्वर और कफज्वर दोनोंके पूर्वरूप—नेत्रोंमें जलन और अन्नपर अरुचि—ये होते हैं ।

पित्तकफज्वरके लक्षण ।

—✱※✱—

लिप्ततिक्तास्यता तंद्रा मोहः कासोऽरुचिस्तृषा ।
मुहुर्दाहो मुहुः शीतं श्लेष्मपित्तज्वराकृतिः ॥

पित्तकी वजहसे मुँह कड़वा हो और कफके कारण कफसे लिहसा हो, तन्द्रा, मोह—बेहोशी, खाँसी, अरुचि और प्यास,—ये हों तथा बारम्बार गरमी लगे और बारम्बार सरदी लगे—ये पित्त-कफज्वरके लक्षण हैं ।

"हारीत"ने कहा है,—"नींद बहुत आवे, सन्धियों और सिरमें दर्द हो, जोड़ टूटें, आवाज़ बीचकी हो, आँखोंमें सन्ताप हो, श्वास हो, सुननेमें रुचि हो, कण्ठ सूखता हो, तन्द्रा हो, मोह हो, अरुचि हो और भ्रम हो—ये सब लक्षण हों, तो पित्तकफज्वर समझना चाहिये।"

"चरक"में लिखा है,—"पित्तकफज्वर में बारम्बार दाह हो, बारम्बार जाड़ा लगे, बारम्बार पसीने आवें; स्तम्भ, मोह, खाँसी, अरुचि, प्यास ये हों तथा कफ और पित्त गिरें, मुख कफसे लिहसा हुआ और कड़वा रहे तथा तन्द्रा हो।

नोट—द्वन्द्वज ज्वरोंको डाक्टरीमें रेमिटेण्ट फीवर (Remittent fever) कहते हैं। वातपित्त रेमिटेण्ट ज्वर सवेरे और शामको कुछ विश्राम लेता है ; वातकफका दोपहर और आधीरातको विश्राम लेता है। पित्तकफज्वर दिनके तीसरे पहरमें और रातके शेषमें विश्राम लेता है। मतलब यह कि, इन-इन समयोंमें ये तीनों ज्वर कुछ हलके होते हैं।

पित्तकफज्वरमें नाड़ी प्रभृति ।

पित्तकफज्वरमें नाड़ी नर्म चलती है। कभी ज़ियादा शीतल और कभी कम शीतल और पतली रहती है। पित्तकफज्वरमें नाड़ी सूक्ष्म, शीतल और मन्द वेगसे चलती है। कफपित्तके कोपसे पाख़ाना पीला, काला, कुछ नीला और चीकट सा होता है।

पित्तकफज्वरमें लंघन ।

इस ज्वरमें पीछे पृष्ठ ८७-११० में लिखी हुई विधिसे लङ्घन कराने चाहियें। कच्चे या आमज्वरमें औषधि न देनी चाहिये।

पित्तकफज्वरमें औषधिका समय ।

"भावप्रकाश"में लिखा है,—"पित्तश्लेष्मज्वरे देयमौषधं दशमेऽहनि" यानी पित्तकफज्वरमें दसवें दिन दवा देनी चाहिये। किन्तु बङ्गसेन लिखते हैं,—"पित्तश्लेष्मज्वरे देयमौषधं सप्तमेऽहनि" ; अर्थात पित्तश्लेष्मज्वरमें सातवें दिन दवा देनी चाहिये।

पित्तकफज्वरमें पाचन-काढ़ा।

गिलोय, नीमकी छाल, धनिया, लालचन्दन और कुटकी—इन पाँचोंका काढ़ा पाचन, अग्निदीपक, प्यास, दाह, अरुचि, वमन और पित्तकफज्वरको नाश करनेवाला है। इसका नाम "गुडूच्यादि काथ" है।

पित्तकफज्वर नाशक नुसख़े।

(१) गिलोय, नीमकी छाल, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, पटोल-पत्र और लालचन्दन—इन आठ दवाओंका काढ़ा करके और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे पित्तकफज्वर नाश होता है तथा वमन, अरुचि, प्यास, उबाकी आना और दाह,—ये उपद्रव भी नाश हो जाते हैं। इसका नाम "अमृताष्टक" है। वङ्गसेन, शार्ङ्गधर और भावमिश्र ने इसकी ख़ासी तारीफ की है। यह है भी इसी लायक़। परीक्षित है।

(२) पटोल, चन्दन, मूर्वा, कुटकी, पाढ़ और गिलोय—इन ६ दवाओं का काढ़ा पीनेसे पित्तकफज्वर, वमन, दाह, खुजली और विष-बाधा—ये सब नाश होते हैं। यह "पटोलादि क्वाथ" है।

(३) परवल, मोथा, नेत्रवाला, लालचन्दन, कुटकी, पित्तपापड़ा, सोंठ, ख़स और अडूसा—इनका काढ़ा करके पीनेसे प्यास सहित कफपित्तज्वर नाश होता है। यह भी "पटोलादि क्वाथ" है। परीक्षित है।

(४) कटेरी, गिलोय, भारङ्गी, सोंठ, इन्द्रजौ, अडूसा, चिरायता, लाल चन्दन, नागरमोथा, पटोलपत्र और कुटकी,—इन ग्यारह औषधियोंका काढ़ा पीनेसे पित्तकफज्वर दाह, तृषा, अरुचि,

वमन, खाँसी और शूल (दर्द) नाश होता है। इसको "कण्ट-कार्यादि क्वाथ" कहते हैं, ।

(५) सोंठ, खस, बेलगिरी, नागरमोथा, धनिया, मोचरस और सुगन्ध-वाला—इन ७ दवाओंका काढ़ा भी पित्तकफज्वरको नाश करता है। यह मलरोधक है ; यानी दस्तको बाँधता है। जिस पित्त-कफज्वर रोगीको दस्त होते हों, उसे यह देना चाहिये। इसका नाम "नागरादि क्वाथ" है। परीक्षित है।

(६) एक तोले भर कुटकी और खाँड़ दोनोंको पीसकर कल्क बना लो और गरम जलके साथ पी जाओ। इसके पीनेसे पित्तकफज्वर नाश होता है। इसका नाम "कुटकी कल्क" है।

नोट—चरकने लिखा है,—१ तोला कुटकी और ४ माशे खाँड़ लेनी चाहिये ; पर वैद्य लोग तो दोनोंको बराबर- बराबर ६।६ माशे लेकर १ तोला करते हैं।

(७) अड़ूसेके पत्ते और फूल दोनों लेकर रस निकाल लो। पीछे उस रसमें शहद और मिश्री मिलाकर सेवन करो। इससे अम्लपित्त और कामला सहित पित्तकफज्वर नाश होता है। इसका नाम "वासारस" है।

नोट—अड़ूसेका रस २ तोला और मिश्री ३ माशे तथा शहत ३ माशे लेकर, तीनोंको मिलाकर पीजाना चाहिये। "वासारस" से कफ, पित्तज्वर, रक्तपित्त और पित्तकफ, ये सब नाश होते हैं। अगर इसमें चीनी या खाँड़ न मिलाई जाय, केवल शहद मिलाया जाय,तो इस "वासारस" से श्वास और खाँसी भी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) अदरख और पटोलपत्रका काढ़ा बनाकर पीनेसे, पित्तकफज्वर, वमन, दाह, और खुजली नाश होती है। इसका नाम "शृङ्ग-वेरादि क्वाथ" है।

(९) कटेरी, गिलोय, सोंठ, पोहकरमूल और चिरायता—इन पाँचोंका काढ़ा आठों प्रकारके ज्वरोंको नष्ट करता है। इसका नाम "पञ्चतिक्तकाथ" है। परीक्षित है।

(१०) इन्द्रजौ, पित्तपापड़ा, धनिया, पटोलपत्र, और नीमकी

छाल—इन पाँचोंके काढ़ेमें मिश्री और शहत मिलाकर पीनेसे पित्तकफज्वर नष्ट होता है।

(११) भारङ्गी, पोहकरमूल, नागरमोथा, कटेरी, गोखरू, कटाई, शालपर्णी, पृश्निपर्णी और सोंठ—इनको "भारङ्ग्यादिगण" कहते है। ये पित्तकफज्वर नाशक तथा उबकाई, अरुचि, वमन, प्यास, दाह और विबन्ध नाशक हैं।

(१२) कुड़ेकी छाल, पद्माख, सोंठ, लालचन्दन, गिलोय, पटोलपत्र, और धनिया—इन सातोंके काढ़ेमें शहद डालकर पीनेसे कफ-पित्तज्वर, शूल और हाथ पैरोंकी जलन आराम होती है।

पानी।
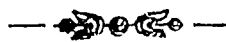
पीछे पृष्ठ १११-२१ में लिखी हुई विधिसे औटाकर शीतल किया हुआ जल देना चाहिये।

पथ्य।

पटोलपत्र और धनिये के यूष से सिद्ध किया हुआ अन्न पित्त-कफज्वर नाशक है। वंगसेन ने लिखा है,—धनिया और पटोलपत्र का यूष कफपित्तज्वर नाशक है। नीमकी छाल और पटोलपत्रका यूष भी पित्तककज्वरमें हितकारी है। (देखो पृष्ठ ७७—८६)

काढ़ा बनाने और पीनेकी विधि।

—**—

काढ़ा बनाने और पीनेकी तरकीब के लिये पृष्ठ १३१—१३५ तक देखिये और काढ़ेकी मात्राके लिये पृष्ठ १७३—१७४ देखिये।

दसवाँ अध्याय।
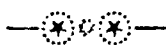
सन्निपात ज्वरकी चिकित्सा।

सन्निपात ज्वरके कारण।

—✲✲—

समय-विरुद्ध, संयोग-विरुद्ध, स्वभाव-विरुद्ध, देश-विरुद्ध अन्न-पानके सेवन करने, ; अजीर्णमें भोजन करने, भोजन पर भोजन करने, विना समय के खाने और अनेक प्रकारके मिश्रित पदार्थों के सेवन करनेसे सन्निपात कुपित होता है। और भी लिखा है,—कभी कम और कभी ज़ियादा खाने, उपवास करने, ऋतुओंके पलटने, ऋतुओंके बिगड़ने, विषैले पदार्थ सेवन करने, दुर्गन्धित पदार्थों के सूँघने, वमन विरेचनादि ठीक तौर से न होने, स्त्रियोंके बे-समय बालक जनने या ठीक समय पर जनकर अपथ्य सेवन करने प्रभृति कारणोंसे त्रिदोष कुपित होते हैं।

अम्लस्निग्धोष्णातीक्ष्णैः कटुमधुराधुरातापसेवाकषायैः।
कामक्रोधातिरुक्षैर्गरुतरपिशिताहारनीहारशीतैः॥

शोकव्यायामचिन्ताग्रहगणवनितात्यंतसंगप्रसंगैः।
प्रायःकुप्यन्ति पुंसां मधुसमयशरद्वर्षणोसन्निपाताः॥

और भी लिखा है,—खट्टे, चिकने, गरम, तीखे, कड़वे और मीठे रसके सेवन; शराब, सूरज की धूप या आगके सेवन; कषैले पदार्थों के सेवन, रूखे और भारी पदार्थों के सेवन, काम, क्रोध, सरदी, शोक, कसरत, मिहनत, चिन्ता—इन सबके बे-क़ायदे या अति सेवन करनेसे, भूतपिशाचकी बाधा से और बहुत ही स्त्री-प्रसंग करने से—चैत, वैशाख, क्वार, कातिक और सावन, भादोंमें, अक्सर, त्रिदोष कुपित होकर "सन्निपात ज्वर" होता है। यह ज्वर कष्ट-साध्य * होता है। अगर एक दोष को शान्त करते हैं, तो दूसरा कुपित हो जाता है।

सन्निपातज्वर कैसे होता है ?

—***—

त्रिदोषकारक आहार विहारोंके कारण से (जो ऊपर लिखे हैं), वात, पित्त और कफ आमाशयमें जाकर, रसको दूषित करके, कोठे की अग्नि की गरमी को बाहर निकाल कर, ज्वर करते हैं।

आहारके दोष से—अपथ्य सेवन करने से—पहलेका इकट्ठा हुआ आमरस—कच्चा रस—शरीर की अग्नि को शान्त कर देता है। इसके बाद यानी अग्निके शान्त होनेके बाद—मनुष्य जो खाता है, वह सब कफ हो जाता है। उस कफ को वायु दूषित करता है, तब वह कफ वायु या हवाके बहनेवाली नसोंमें जाकर उनको बन्द कर देता है, तब वायु—हवा पित्तको कुपित करती है। इस तरह वात, पित्त और कफ—तीनों दोष—एक दूसरे से कुपित होकर, प्रबल सन्निपात रोग करते हैं।

* "चरक"में लिखा है,—दोषोंके बढ़ जाने, जठराग्निके नष्ट होने और सारे लक्षणोंके पूरे हो जाने से सन्निपातज्वर असाध्य हो जाता है। अगर दोष और जठराग्नि सर्वथा नष्ट न हुए हों, तो कष्टसाध्य समझना चाहिये।

सन्निपात ज्वरके पूर्वरूप ।

सन्निपातज्वरमें वातज्वर, कफज्वर और पित्तज्वर तीनोंके पूर्व-रूप —जँभाई आना, अन्नमें अरुचि होना और नेत्रोंमें जलन होना,—ये होते हैं ।

क्षणे दाहः क्षणे शीतमस्थिसंधिशिरोरुजा ।
सस्रावे कलुषे रक्ते निर्भुग्ने चापि लोचने ॥
सस्वनौ सरुजौ कर्णौ कंठः शूकैरिवावृतः ।
तन्द्रा मोहः प्रलापश्च कासः श्वासोऽरुचिर्भ्रमः ॥
परिदग्धा खरस्पर्शा जिह्वा स्रस्तांगता परम् ।
ष्ठीवनं रक्तपित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्य च ॥
शिरसो लोठनं तृष्णा निद्रानाशो हृदि व्यथा ।
स्वेदमूत्रपुरीषाणां चिराद्दर्शनमल्पशः ॥
कृशत्वं नातिगात्राणां सततं कण्ठकूजनम् ।
कोठानां श्यावरक्तानां मण्डलानां च दर्शनम् ॥
मूकत्वं स्रोतसां पाको गुरुत्वमुदरस्य च ।
चिरात्पाकश्च दोषाणां सन्निपातज्वराकृतिः ॥

ज़रासी देरमें गरमी लगने लगे और ज़रासी देरमें सरदी लगने लगे ; हड्डियों, जोड़ों और सिरमें दर्द हो ; आँखोंसे आँसू गिरें ; आँखें काली, लाल, फटीसी अथवा भीतर को खड्डोंमें घुसी हुई अथवा टेढ़ी सी मालूम हों ; कानोंमें दर्द हो या उनमें शब्द हो ; गले में काँटे पड़ जायँ ; तन्द्रा * हो यानी आधी आँखें खुली हों और आधी वन्द हों ; वेहोशी हो, रोगी प्रलाप करे यानी आनतान बके ; खाँसी हो ; श्वास हो ; खानेकी इच्छा न हो ; शरीर घूमें ;

---

* सन्निपातज्वरमें "तन्द्रा" सबसे बुरा उपद्रव है । वैद्यको इसका पहले ख़याल रखना चाहिये । ज्वरोंमें सन्निपात बुरा है और सन्निपातज्वरके उपद्रवोंमें "तन्द्रा" बुरी है ।

जीभ आग से जले हुए के समान हो अथवा गायकी जीभ की तरह खरदरी हो ; सारा शरीर ढीलासा हो जाय ; थूक में सुर्खी आवे या कफ मिला हुआ रक्तपित्त थूकमें निकले ; सिरमें इतने ज़ोरका दर्द हो कि, रोगी सिरको इधरसे उधर और उधरसे इधर हिलावे अथवा माथेको धर-धर पटके ; श्वासका ज़ोर हो ; नींद न आवे ; हृदय या छातीमें दर्द हो ; पसीना बहुत कम आवे ; पाख़ाना पेशाब देर देर में हों और थोड़े-थोड़े हों ; शरीर बहुत दुबला न हो * ; कंठ में बराबर आवाज़ हो ; पीले लाल और गोल-गोल चकत्ते शरीरमें हो जायँ अथवा सारे शरीर में फुन्सियाँ निकल आवें ; रोगी कम बोले—धीरे बोले या बोले ही नहीं ; कान नाक आदि शरीर के छेद पक जायँ ; पेट फूलासा रहे तथा वातादिक दोषोंकी उत्तम चिकित्सा होने पर भी देर में पाक हो अर्थात् ये बहुत समय में पकें—ये लक्षण सन्निपात ज्वरके हैं ।

वाग्भट्टने लिखा है,—दिनमें घोर नींद आती है, रातमें नींद आती ही नहीं, अथवा दिन-रात में कभी नींद नहीं आती ; पसीने ज़ोर से आते हैं अथवा आते ही नहीं ; रोगी नाचता, हँसता और गाता है और रोगी की सारी चेष्टायें बदल जाती हैं इत्यादि ।

हारीत ने लिखा है,—रोगी रात में जागता हैं, दिनमें तन्द्रा रहती है, बारम्बार थूकता है और नेत्र काले हो जाते हैं इत्यादि ।

सन्निपातोंके भेद ।

—☆❋☆—

सुश्रुत और वाग्भटके मतसे सन्निपात एक ही प्रकारका होता है ; किन्तु महर्षि चरकने कमज़ोर दिमाग़वालोंके सुभीतेके लिये, उल्बण आदि भेदों से, तेरह प्रकारके सन्निपात लिखे हैं । कोई सज्जन सन्निपात को १३ प्रकारका, कोई ३ प्रकारका और कोई

* सन्निपातज्वरमें शरीर अत्यन्त दुबला क्यों नहीं होता ?
उत्तर—यह व्याधिका प्रभाव है ।

५२ प्रकारका मानते हैं। उन सबके लिखने से ग्रन्थ बढ़ जानेका भय है और साधारण लोगों को वे आफत से मालूम होंगे ; इसलिये हम तेरह सुप्रसिद्ध सन्निपात ज्वरोंके नाम और लक्षण लिखते हैं। इनसे चिकित्साकर्ममें सारा काम निकल सकता है।

संधिकश्चांतकश्चैवरुग्दाहश्चित्तविभ्रमः।
शीतांगतंद्रिकः प्रोक्तः कंठकुब्जश्चकर्णकः॥
विख्यातोभुग्ननेत्रश्चरक्तष्ठीवी प्रलापकः।
जिह्वकश्चेत्यभिन्यासस्सन्निपातास्त्रयोदश॥

सन्निपातज्वर की किस्में।

१ सन्धिक। २ अन्तक। ३ रुग्दाह।
४ चित्तविभ्रम। ५ शीताङ्ग। ६ तन्द्रिक।
७ कंठकुब्ज। ८ कर्णक। ९ भुग्ननेत्र।
१० रक्तष्ठीवी। ११ प्रलापक। १२ जिह्वक।
१३ अभिन्यास।

सन्धिक सन्निपातके लक्षण।

पूर्वरूपकृतशूलसम्भवं शोपवातबहुवेदनान्वितम्।
श्लेष्मतापबलहानिजागरंसन्निपातमितिसन्धिकंवदेत्॥

जिस ज्वर के पूर्व्वरूप में ही शूल हो, शोप हो, सन्धियों या जोड़ों में वादी का दर्द हो ; कफ गिरना, बल-हानि—कमज़ोरी, सन्ताप और रात में जागना—ये लक्षण हों, उसे “सन्धिक” सन्निपात कहते हैं।

नोट —सन्धिक सन्निपात के पूर्वरूप में ही वात पीड़ा का ज़ोर होता है। जोड़ों में दर्द होना ही इसकी ख़ास पहचान है। किसी-किसी ने सन्धियों में सूजन और अत्यन्त पीड़ा तथा खाँसी वग़ैरः का होना भी लिखा है। इस सन्निपात की परमायु ७ दिन की है; यानी इसका ज़ोर ७ दिन तक रहता है।

सन्धिक सन्निपात में न तो गर्म चिकित्सा करनी चाहिये न शीतल ही; यानी मातदिल इलाज करना चाहिये। इस में हलके लंघन कराना, पसीने न आते हों, तो पसीने निकाल कर शरीर हलका करना, यवागू का पथ्य देना और उत्तम परीक्षित दवा देना उचित है। किसीने इस सन्निपात को साध्य और किसीने कष्टसाध्य कहा है। सच तो यह है कि, कोई भी सन्निपात सुखसाध्य नहीं है। जो साध्य समझा जाता है, वह भी कष्टसाध्य है। अच्छा इलाज और ईश्वर की दया होने से "सन्धिक" सन्निपातवाला बच सकता है।

अन्तक सन्निपात के लक्षण।

दाहंकरोतिपरितापनमातनोति
मोहंददातिविदधाति शिरःप्रकंपम्।
हिक्कां करोति कसनं च समा जुहोतिजानी
हिंसं विबुधवर्जितमंतकाख्यम्॥

बहुत दाह हो, सन्ताप हो, शरीर आग की तरह जले, बेहोशी हो, सिर में दर्द हो, कँपकँपी आवे, हिचकियाँ चलें, खाँसी का ज़ोर हो,—ये लक्षण हों तो "अन्तक" सन्निपात समझना चाहिये। बुद्धिमान् इस को त्याज्य या असाध्य कहते हैं।

नोट—यह सन्निपात अपने नाम के माफ़िक़ काम करता है। जिसे होता है, उसका अन्त ही कर देता है। इसीसे चतुर लोग इस सन्निपातवाले का इलाज हाथ में नहीं लेते। यह सन्निपात साक्षात् मृत्यु है। जिस ज्वरमें हिचकी और श्वास हों, उसे मौतका वारण्ट ही समझना चाहिये। इसकी अवधि दस दिनकी है। ईश्वर की दया होने से कोई-कोई रोगी बच भी जाता है। इसलिये रोगी के घरवालों से कह सुन कर इलाज करना चाहिये। पर, सच्ची दवा तो सदाशिव का ध्यान है। इस में "रोटिका बन्धन" अच्छा काम देता है।

किसी-किसी ने लिखा है,—अन्तक सन्निपातवाला निरन्तर सिर को हिलाया करता है। सारे शरीर में भयानक वेदना होती है। इसमें हिचकी, श्वास, खाँसी, दाह, बेहोशी, अत्यन्त सन्ताप, घबराहट और वृथा बकवाद—ये लक्षण होते हैं। इस में शरीर का आग की तरह जलना ख़ास लक्षण है।

रुग्दाह सन्निपातके लक्षण।

प्रलापपरितापनप्रबलमोहमान्द्य---श्रमः
परिभ्रमणवेदनाव्यथितकण्ठमन्याहनुः।
निरन्तरतृषाकरःश्वसनकासहिक्काकुलः-
सकष्टतरसाधनोभवतिहन्तरुग्दाहकः॥

रुग्दाह सन्निपातवाला अनर्थ भाषण करता है; यानी आनतान बकता है, बुख़ार का ज़ोर होता है, बेहोशी बहुत होती है, निरन्तर प्यास लगती है, मन्दता, अनायास थकान, पीड़ा, मन्या नाड़ी—गर्दन और ठोढ़ी में दर्द, खाँसी, श्वास और हिचकी,—ये लक्षण होते हैं।

नोट—इसकी अवधि २० दिन की है। यह सन्निपात कष्टसाध्य है। अच्छा इलाज होने से रोगी बच सकता है। रुग्दाह का इलाज पित्तज्वर के समान होता है। भीतरी दाह के नाश करने में "षड़ङ्गपानीय" अच्छा काम करता है। शरीरके ऊपर लेप करने के लिये नीम के झाग अच्छे हैं। बेरके पत्ते दही में पीस कर लगाने से भी अच्छा चमत्कार नज़र आता है। मिश्री और शहत मिला कर धान की खीलों का रस या गाय के दूध में मिश्री मिला साबूदाना अच्छा पथ्य है। इस ज्वर में रोगी का बहुत बकना ख़ास लक्षण है।

चित्तभ्रम सन्निपातके लक्षण।

यदिकथमपिपुंसांजायतेकायंपीडा
भ्रममदपरितापोमोहवैकल्यभावः।
विकलनयनहासोगीतनृत्यप्रलापी
ह्यभिदधतिग्रसाध्यंकेपिचित्तभ्रमाख्यम्॥

जिस के शरीर में किसी तरह की पीड़ा हो, भ्रम (धतूरा खाने की सी हालत), सन्ताप, मोह—बेहोशी, विकलता—घबराहट, आँखों में बेकली, हँसना, गाना, नाचना, बकना—ये लक्षण हों, उसे कोई असाध्य "चित्तभ्रम" सन्निपात कहते हैं।

नोट—किसी-किसी ने लिखा है,—इस सन्निपातवाला नाचता, गाता हँसता और वृथा बकता है, बुरी तरह से देखता है, बेहोश हो जाता है तथा दाह—जलन, तकलीफ और भय के मारे दुखी रहता है। इस ज्वर में रोगी को होश नहीं रहता, उसके चित्त में भ्रम हो जाता है और बुख़ार के ज़ोरके मारे मतवालासा हो जाता है।

इसे कोई-कोई असाध्य कहते हैं, पर अच्छा इलाज होने से रोगी आराम हो जाता है। इसमें रोगी को तसल्ली देना, उस के दिलको शान्त रखना ज़रूरी है। इसकी अवधि २४ दिनकी हैं। इसमें पहले साधारण उपायों से बेहोशी नष्ट करनी चाहिये। नस्य, अञ्जन और धूप से काम लेना और काढ़ा पिलाना चाहिये। इस में रोगी का मतवालासा हो जाना ख़ास लक्षण है।

शीतांग सन्निपातके लक्षण।

हिमसदृशशरीरोवेपथूः श्वासहिक्का
शिथिलितसकलांगःखिन्ननादोग्रतापः।
क्लमथुदवथु—कासच्छर्द्यतीसारयुक्त—
स्त्वरितमरणहेतुः शीतगात्रप्रभावात्॥

शरीर बर्फके समान शीतल हो, शरीर काँपे; श्वास और हिचकी हों, सारे अङ्ग ढीले हों, आवाज़ धीमी हो, शरीर के भीतर उग्र सन्ताप हो, अनायास थकान हो, मन में सन्ताप हो, खाँसी, वमन और अतिसार— पतले दस्त—हों,—ये लक्षण "शीताङ्ग" सन्निपात के हैं।

नोट—किसीने लिखाहै,—इस शीताङ्ग सन्निपात में शरीर बर्फ के समान शीतल हो जाता है; श्वास, खाँसी, हिचकी, मोह—बेहोशी प्रलाप—आनतान बकना और ग्लानि—ये लक्षण होते हैं; कफ बहुत गिरता है, वायु का कोप अधिक होता है, दाह होता है, कय होती हैं, सारे शरीरमें दर्द होता है और आवाज़ बैठ जाती है।

शरीर का बर्फ की तरह ठण्डा हो जाना, इस सन्निपात का ख़ास लक्षण है। अगर शरीर में जल्दी गरमी न पहुँचाई जाय,

भीतर दाह और प्यास का ज़ोर हो ; तो रोगी का बचना नामुमकिन है ; क्योंकि भीतर दाह होना और ऊपर सरदी लगना,—मौत की निशानी है। जब शरीर के भीतर पित्त और बाहर वायु और कफ होते हैं, तब शरीर के भीतर दाह और शोष होता है तथा बाहर पसीने और शीतलता होती है। जब भीतर वात कफ और बाहर पित्त का दौरदौरा होता है, तब शरीर गरम रहता है और हाथ पैर शीतल रहते हैं। इसकी अवधि १५ दिन की है ; पर यह अवधि कहने भर की है। शरीर में गरमी न पहुँचे, तो रोगी निश्चय ही मर जाय। इसलिये इस सन्निपात में जैसे भी हो, खून में गरमी पहुँचानी चाहिये। अगर भीतर दाह और प्यास हो, तथा बाहर सरदी हो ; तो इलाज हाथ में लेकर बदनामी का ठीकरा लेना है।

तन्द्रिक सन्पातके लक्षण ।

प्रभूततंद्रार्त्तिज्वरकफ------पिपासाकुलतरो
भवेच्छ्यामाजिह्वापृथुलकठिनाकंटकावृता ।
अतीसारः श्वासःक्लमथुपरितापः-श्रुति----
रुजोभृशंकंठेजाड्य-शयनमनिशंतंद्रिकगदे ॥

तन्द्रा बहुत हो, शूल, ज्वर, कफ और प्यास से रोगी घबरा रहा हो, जीभ काली हो गई हो तथा मोटी, कठोर और काँटों से युक्त हो, अतिसार हो, ग्लानि हो, सन्ताप हो, कानोंमें दर्द हो, कंठ में जड़ता हो और रात-दिन नींद आती हो—अगर ये लक्षण हों, तो "तन्द्रिक" सन्निपात ज्वर समझना चाहिये।

नोट—किसीने इस सन्निपात में श्वास की अधिकता, खाँसी, गले में सूजन, खुजली और बहरापन प्रभृति लक्षण लिखे हैं। तन्द्रिक की

अवधि २१ दिन की है। अगर सद्वैद्य चिकित्सा करे, तो रोगी बच सकता है। इस सन्निपात में ख़ास बात यह होती है कि, रोगी टकटकी लगा कर एक तरफ देखा करता है, उसकी आधी पलकें ढकी रहती हैं या आँखों के सामने अँधेरा रहता है। बारम्बार गले में कफ भर-भर आता है। गले में इतनी खुश्की रहती है कि, बोला नहीं जाता। इस में तन्द्रा का बड़ा ज़ोर रहता है; क्योंकि इसका नाम ही "तन्द्रिक" है। "तन्द्रा" सन्निपात में सबसे बुरा उपद्रव है। नस्य देने और अञ्जन लगाने से तन्द्रा नाश होती है। पीने को काढ़ा देना चाहिये।

कंठकुब्ज सन्निपातके लक्षण।

शिरोर्तिकण्ठग्रहदाहमोहकंपज्वरारक्तसमीरणार्त्तिः।
हनुग्रहस्तापविलापमूर्च्छास्यात्कण्ठकुब्जःखलुकष्टसाध्यः॥

सिर में दर्द, गले में दर्द, दाह, मोह, कम्प (कँपकपी आना), वातरक्त की पीड़ा, ठोड़ी जकड़ जाना, सन्ताप, प्रलाप-आनतान बकना और मूर्च्छा—ये लक्षण "कंठकुब्ज" सन्निपात ज्वर में होते हैं। यह निश्चय ही कष्टसाध्य है।

नोट—इस सन्निपात में सैकड़ों धान के छिलकों की तरह कंठ में काँटे पड़ जाते हैं। इस में गले की तकलीफ बड़े ज़ोर से होती है। पहले ही गला रुक जाता है, इसलिये पानी पीते समय भयानक पीड़ा होती है। एक घूँट जल पीने में छुरियाँ सी लगती हैं—दम सा निकलता है। इस में श्वास का ज़ोर बहुत रहता है। रोगी बकता भी बहुत है। सिर में घोर वेदना, मूर्च्छा और गला रुकना, इस के ख़ास लक्षण हैं। इस की अवधि १३ दिन की है; पर यह बड़ी कठिनाई से आराम होता है। सब

से पहले गला खोलने की तजवीज करनी चाहिये, दोनों समय काढ़ा पिलाना चाहिये और ताक़त कम न हो, इसलिये ताक़त लानेवाला कोई यूष देना चाहिये।

कर्णक सन्निपातके लक्षण।

प्रलापश्रुतिहासकंठग्रहांगव्यथाश्वासकासप्रसेकप्रभावम्।
ज्वरं तापकर्णांतयोर्गल्लपीड़ाबुधाःकर्णकंकष्टसाध्यंवदन्ति॥

आनतान बकना, बहरा हो जाना, गले में दर्द होना, अङ्गों में पीड़ा होना, श्वास, खाँसी, पसीना, लार गिरना ज्वर, सन्ताप, कान और गाल में दर्द,—ये लक्षण जिस में हों, वह "कर्णक" सन्निपात-रोगी है। बुद्धिमान लोग इस ज्वर को कष्टसाध्य कहते हैं।

नोट—इस में रोगी का बहरा हो जाना, कानों और गालों में दर्द होना और लार बहना—ख़ास लक्षण हैं। एक जगह लिखा है, दोषोंके अत्यन्त कुपित होनेसे कानकी जड़में अत्यन्त सूजन और दर्द होता है, मल रुक जाता है तथा बहरापन, प्यास और बेहोशी प्रभृति लक्षण होते हैं। इस ज्वरमें "कर्णमूल" अवश्य होता है।

सन्निपात ज्वरके अन्तमें कानकी जड़में एक प्रकारकी भयानक सूजन होती है, उसे ही "कर्णमूल" कहते हैं*। अगर वह न पकी हो, तो लेप करना चाहिये। पक गई हो, तो जोंक लगवाकर नीमके पत्ते

---

* वात, पित्त और कफ, इन तीनों दोषों से "त्रिदोष ज्वर" होता है। जब वह ज्वर रक्त में मिल जाता है, तब उसी को "सन्निपातज्वर" कहते हैं। जब तक ज्वर का और खून का मेल न हो, सन्निपातज्वर नहीं समझना चाहिये। "त्रिदोष-ज्वर" और "सन्निपातज्वर" में यही भेद है। क्वाथ और पाचन से वातादिक तीनों दोष शान्त हो जाते हैं, पर रक्त या खून शान्त नहीं होता; इसी से कान की जड़ में भयंकर सूजन—कर्णमूल—होती है।

बाँधने चाहिये अथवा नश्तर द्वारा ख़राब खून निकलवाकर, घावकी तरह इलाज करना चाहिये। तत्काल खून निकलवा देनेकी सभीने राय दी है। ख़राब खून रहकर रोगीको मार डालता है। 'पंचतिक्त घृत' प्रभृति कफपित्तनाशक घी पिलाना, कफपित्तनाशक लेप करना, सन्निपातक नाशक नस्य देना और मुखमें कवल रखाना,—ये सब उस सूजनके नाश करनेमें हितकारी हैं। ऐसे मौक़ पर, "दशमूलकी औष-धियोंका लेप" अथवा स्वेद अथवा "प्याज़का स्वेद" दर्द को जल्दी आराम करता है। दोनों समय काढ़ा पिलाना चाहिये। इस सन्नि-पातकी अवधि ६० दिन या ३ मासकी है।

भुग्ननेत्र सन्निपात के लक्षण।

ज्वरवलापचयःस्मृतिशून्यताश्वसनभुग्नविलोचनमोहितः।
प्रलपनभ्रमकम्पनशोफवांस्त्यजतिजीवितमाशुसभुग्नदृक्॥

ज्वर, वलनाश—कमज़ोरी, स्मृतिनाश—याद न रहना, श्वास, टेढ़ी दृष्टि, वेहोशी, आनतान वकना, भ्रम, शरीर घूमना, कँपकँपी और सूजन—ये लक्षण 'भुग्ननेत्र" सन्निपातके हैं। यह रोगी जल्दी मरता है।

नोट—किसीने लिखा है,—इस सन्निपातज्वरमें नेत्र अत्यन्त टेढ़े हो जाते हैं; श्वास, खाँसी, अत्यन्त प्रलाप—वकना, मद—नशासा रहना, शरीर काँपना और कानोंमें वहरापन तथा वेहोशी ये होते हैं।

इस सन्निपातकी अवधि ८ दिनकी है। नेत्रोंका टेढ़ा होजाना अथवा नज़रका तिरछा होजाना और स्मरण-शक्तिका नाश होजाना,—इसके ख़ास लक्षण हैं। इसकी अवधि आठ दिनकी है; पर रोगी चट-पट ही ख़तम होता है। अञ्जन और नस्य द्वारा दृष्टि ठीक करनी चाहिये। दोनों समय काढ़ा पिलाकर, स्मरणशक्ति वगैरः दुरुस्त करनी चाहिये।

रक्तष्ठीवी सन्निपात के लक्षण ।

रक्तष्ठीवीज्वरवमितृषामोहशूलातिसारा
हिक्काध्मानभ्रमणदवथुश्वाससंज्ञाप्रणाशाः ।
श्यामारक्ताधिकतररसनामण्डलोत्था-
नरूपारक्तष्ठीवीनिगदितइहप्राणहन्ताप्रसिद्धः ॥

खूनकी कय होना, ज्वर, वमन, प्यास, मूर्च्छा - बेहोशी', शूल—दर्द, अतिसार—पतले दस्त, हिचकी, पेटपर अफारा, भौंर आना, सन्ताप, श्वास, संज्ञानाश, जीभ काली और लाल हो जाना, शरीरमें खूनके विकारसे चकत्ते होना—ये सब लक्षण "रक्तष्ठीवी" सन्निपात ज्वरके हैं। यह प्रसिद्ध प्राणनाशक सन्निपात ज्वर है।

नोट—किसीने लिखा है, इस ज्वरमें रोगी खून थूकता है, शरीरमें खूनकेसे चकत्ते हो जाते हैं, नेत्र लाल हो जाते हैं, रोगी अचेत होजाता है, बारम्बार गिर पड़ता है और होश नहीं रहता है इत्यादि।

इस सन्निपातमें जीभका काला और लाल हो जाना तथा उससे खून बहना और उस पर चकत्ते हो जाना ख़ास लक्षण हैं। बहुत करके थूकके साथ खून आता है और वमन भी होती हैं। काढ़े वगेरःसे खून बन्द करना चाहिये और नस्य देनी चाहिये। इस सन्निपातमें बहुत गरम इलाज करना ख़राब है। यह सन्निपात असाध्य है। इसकी अवधि १० दिनकी है।

प्रलापक सन्निपात के लक्षण ।

कम्पप्रलापपरितापनशीर्षपीड़ा प्रौढ़प्रभावपवमानपरोऽन्यचिन्ता ।
प्रज्ञाप्रणाशविकलप्रचुरप्रवादः क्षिप्रं प्रयातिपितृपालपदंप्रलापी ॥

प्रलापकमें—कम्प, बड़बड़ाहट, सन्ताप और सिरदर्दका अधिक ज़ोर होता है। रोगी परचिन्तामें आसक्त रहता है, दूसरोंकी चिन्ता करता है, बुद्धिका नाश हो जाता है, विकलता और बकवादकी अधिकता रहती है। "प्रलापक" सन्निपातवाला शीघ्रही यमराजके यहाँ जाता है।

नोट—इस सन्निपातज्वरमें अत्यन्त सिरदर्द, बकना और बुद्धिका नाश होना—मुख्य लक्षण हैं। सभी दोषोंका अत्यन्त कोप होनेसे रोगी बहुत बकता है, उठ-उठकर भागता है और गिर गिर पड़ता है। दाह और अत्यन्त बेहोशी होती है। रोगी का दिन-रात बकना, अपनी तारीफ करना और पराई चिन्ता करना विशेष लक्षण हैं। इसकी अवधि १४ दिनकी है, पर रोगी हर घड़ी यमालयकी राह देखता है। इस सन्निपातज्वरको थोरज देने, अञ्जन लगाने, तेज़ नस्य देने और अन्धकार सेवनसे जीतना चाहिये।

जिह्वक सन्निपात के लक्षण।

—★★★—

श्वसनकासपरितापविह्वलः कठिनकंटकपरीतजिह्वकः।
बधिरमूकबलहानिलक्षणोभवति कष्टतरसाध्यजिह्वकः॥

श्वास, खाँसी, सन्ताप, विह्वलता, कठोर और काँटोंसे व्याप्त जीभ, बहरापन, गूँगापन और बलहानि—कमज़ोरी—ये "जिह्वक" सन्निपातज्वरके लक्षण हैं। यह कष्टसाध्य है।

नोट—जीभमें काँटे पड़जाना, रोगीका गूँगा और बहरा हो जाना, भयानक सन्ताप होना—इसके ख़ास लक्षण हैं। इसकी मर्यादा १६ दिन की है। इसमें जीभको ऊपरी इलाज से नर्म करना चाहिये। इस ज्वरका इलाज रक्तष्ठीवीसे मिलता-जुलता है।

अभिन्यास सन्निपातके लक्षण ।
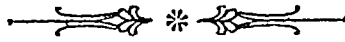
दोषत्रयस्निग्धमुखत्वनिद्रा वैकल्यनिश्चेष्टनकष्टवाग्मी ।
बलप्रमाणःश्वसनादिनिग्रहोऽभिन्यासउक्तोनुमृत्युकल्पः ॥

त्रिदोषके कोपके समान मुँहपर चिकनाई, नींद, बेकली, चेष्टा-हीनता, तकलीफ से बोलना, बलनाश—कमज़ोरी, श्वास प्रभृतिका रुकना—ये सब चिह्न "अभिन्यास सन्निपात" के हैं। यह सन्निपात महा असाध्य और मृत्युतुल्य है।

नोट—किसीने लिखा है, इस ज्वरमें सभी दोष अति बलवान और तेज़ होते हैं। अत्यन्त बेहोशी, गूँगापन अधिक और मुँहपर चिकनाई होती है। रोगी बहुतही बेचैन रहता है, दाह भी होता है, अग्नि मन्दी हो जाती है। ज़रा भी चेष्टा नहीं रहती और श्वासका ज़ोर रहता है।

अभिन्यास सन्निपात ज्वरमें मुखपर चिकनाई होना, श्वासका रुक-रुककर आना और बोला न जाना खास लक्षण हैं।

नोट—सुश्रुत से सन्निपात के विशेष लक्षण—चूँकि जगत् अग्नि और सोमात्मक है, इसलिये सन्निपात के दो भेद माने हैं,—(१) अभिन्यासात्मक, (२) हतौजस। जिस रोगीके कफ का अंश अधिक बढ़ जाता है, उसे "अभिन्यासात्मक" सन्निपात होता है और जिसके वायु और पित्त अधिक बढ़ जाते हैं और कफ के भाग—सौम्य धातु को नष्ट कर देते हैं, उस को "हतौजस" सन्निपात होता है। जिस सन्निपात में रोगी को नींद या तन्द्रा बहुत होती है, उसे "अभिन्यास" कहते हैं और जिस में क्षीणता जियादा होती है, उसे "हतौजस" कहते हैं। जिस में शरीर काठकी तरह पड़ा रहता है, उसे "संन्यास" कहते हैं। जिस में सारे लक्षण होते हैं, वह असाध्य होता है और जिस में कम लक्षण और कम उपद्रव होते हैं, वह कष्टसाध्य होता है।

शरीर न बहुत गरम हो और न अति शीतल हो, संज्ञा कम हो जाय, रोगी भ्रम में पड़ा हुआ सा देखे, स्वर—आवाज नाश हो जाय, जीभ खरदरी हो जाय, कंठ सूखे, पसीना और मल मूत्र बन्द हो जायँ, भोजन से वैर हो, कान्ति नाश हो जाय, रोगी श्वास लेता हुआ जिधर गिर पड़े उधर ही बेहोश पड़ा रहे और बेहोश

पड़ा हुआ ही आनतान बके,—ये लक्षण "अभिन्यास" सन्निपात के हैं। जिसके पित्त और वायु उल्वण होते हैं, उसका 'ओज' नष्ट हो जाता है। वह अचेतन की तरह पड़ा रहता है, जागता या सोता हुआ बकता है, रोएँ खड़े हो जाते हैं, शरीर शिथिल हो जाता है और सन्ताप और वेदना कम होती है उसे चतुर वैद्य "हतौजस" कहते हैं; यानी उस में ओज का निरोध समझते हैं।

उक्त सन्निपातोंमें साध्यासाध्य-विचार।

सन्धिकस्तन्द्रिकश्चैव कर्णकःकण्ठकुब्जकः।
जिह्वकश्चित्तविभ्रंशः षट् साध्याः सप्त मारकाः॥

सन्धिक, तंद्रिक, कर्णक, कंठकुब्ज, जिह्वक, चित्तभ्रम	ये छै सन्निपात साध्य हैं।
अन्तक, रुग्दाह, शीताङ्ग, भुग्ननेत्र, रक्तष्ठीवी, प्रलापक और अभिन्यास	ये सात सन्निपात मारक हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

सन्धिगस्तेषु साध्यः स्यात्तन्द्रिकश्चित्तविभ्रमः।
कर्णको जिह्वकः कंठकुब्जः पंचापि कष्टकाः॥
रक्तष्ठीवी भुग्ननेत्रः शीतगात्रः प्रलापकाः।
अभिन्यासोऽन्तकश्चैते षडसाध्यः प्रकीर्त्तिताः॥

इन तेरह सन्निपातोंमें एक "सन्धिक" साध्य है। तंद्रिक, चित्त-विभ्रम, कर्णक, जिह्वक, कंठकुब्ज और रुग्दाह कष्टसाध्य हैं। रक्तष्ठीवी, भुग्ननेत्र, शीताङ्ग, प्रलापक, अभिन्यास और अन्तक असाध्य हैं।

नोट—सन्निपात ज्वरोंकी साध्यासाध्यताके सम्बन्धमें बड़ा मतभेद है। किसी-किसीने सन्धिक, तन्द्रिक, कर्णक, कंठकुब्ज, जिह्वक और चित्तविभ्रमको साध्य कहा है, पर ये कष्टसाध्य हैं। रुग्दाहको किसीने कष्टसाध्य, किसीने अति कष्टसाध्य और किसीने

मारक कहा है। शेष अन्तक आदिको सभीने मारक कहा है; पर ईश्वरकी दया हो, भाग्य अच्छा हो, अच्छा वैद्य मिल जाय, रोगीकी टूटो न हो; तो असाध्य भी साध्य हो जाता है।

असाध्य कृच्छ्र साध्यके लक्षण।

"सुश्रुत" उत्तरतन्त्रमें लिखा है:—

दोषेविवृद्धे नष्टेऽग्नौ सर्वं सम्पूर्णलक्षणः।
सन्निपातज्वरोऽसाध्यः कृच्छ्रसाध्यस्ततोऽन्यथा॥

कितनेही वैद्य कष्टसाध्य सन्निपातको भी असाध्य कहते हैं, अगर वातादि दोषोंकी वृद्धि हो, जठराग्नि नष्ट होगई हो और दाह शीत प्रभृति सारे लक्षण हों, तो सन्निपातज्वरको असाध्य समझना चाहिये। अगर दोष पक गये हों, अग्निदीपन हो और थोड़े-थोड़े लक्षण हों, तो सन्निपातज्वरको कष्टसाध्य समझना चाहिये।

सन्निपात ज्वरोंकी अवधि।

सन्निपातज्वरोंकी अवधि इस भाँति है:—

सन्धिक की ७ दिनकी, अन्तककी १० दिनकी, रुग्दाहकी २० दिनकी, चित्तविभ्रमकी २४ दिनकी, शीताङ्गकी १५ दिनकी, तन्द्रिक की २५ दिनकी, कंठकुब्जकी १३ दिनकी, कर्णककी ६० दिनकी, भुग्ननेत्रकी ८ दिनकी, रक्तष्ठीवीकी १० दिनकी, प्रलापककी १४ दिनकी, जिह्वककी १६ दिनकी और अभिन्यासकी १६ दिनकी अवधि होती है। अर्थात् ये सन्निपातज्वरोंकी परमायुके दिन हैं; परन्तु रोगी शीघ्र भी मर जाता है।

और भी कहा है:—

सद्यस्त्रिपंचसप्ताहाद्दशाहाद्द्वादशादपि।
एकविंशद्दिनैःशुद्धःसन्निपातीतुजीवति॥

सन्निपात होने पर तत्काल तीन, पाँच, सात, दश और बारह दिन से २१ दिन तक सन्निपातज्वर रोगी शुद्ध होकर जीता है।

और भी कहा है :—

सप्तमी द्विगुणा यावन्नवम्येकादशी तथा।
एषा त्रिदोषमर्यादा मोक्षाय च वधायच॥

सन्निपातज्वर अपने आनेके दिन से चौदहवीं, बीसवीं अथवा चौबीसवीं रातमें शान्त हो जाता है या मार देता है। यह सन्निपात ज्वरकी परम मर्य्यादा है; परन्तु रोगी जल्दी भी मर जाता है; यानी इस अवधिसे पहले या तत्काल भी मर जाता है।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

सप्तमे दिवसे प्राप्ते दशमे द्वादशोपि वा
पुनर्घोरतरो भूत्वा प्रशमं याति हन्ति वा

वात प्रधान सन्निपात सातवें दिन, पित्तप्रधान दसवें दिन और कफप्रधान बारहवें दिन, फिर घोरतर होकर शान्त हो जाता है अथवा मनुष्यको मार देता है। मतलब यह है कि "मलपाक" होता है, तो शान्त हो जाता है और "धातुपाक" होता है, तो मार देता है। पित्तकी, कफकी और वायुकी वृद्धिसे क्रमपूर्व्वक १० दिन, १२ दिन और ७दिनमें जो धातु पक जाते हैं, तो सन्निपात रोगीको मार डालता है और अगर मल पक जाता है, तो शान्त हो जाता है।

नोट—शुभ कर्मोंका उदय होनेसे "मलपाक" होता है और अशुभ कर्मोंका उदय होनेसे "धातुपाक" होता है। धातुओंका पाक रससे लगाकर वीर्य तक होता है। सन्निपात रोगीके जीवन-मरणमें "मलपाक" और "धातुपाक" सच्चे कारण हैं।

धातुपाकके लक्षण ।

निद्रानाशो हृदि स्तंभो विष्टंभो गौरवारुची ।
अरतिर्बलहानिश्च धातुनां पाकलक्षणम् ॥
नाभेरूर्द्ध्वं हृदोऽधस्तात्पीड़ित चेद्व्यथा भवेत् ।
धातोः पाकं विजानीयादन्यथा तु मलस्य च ॥

नींदका न आना, हृदयका जकड़ जाना, मलका रुकना, शरीरका भारी रहना, अरुचि, बेचैनी और बलका नाश—ये धातुपाकके लक्षण हैं। नाभिके ऊपर और हृदयके नीचे दबाने या छूनेसे दर्द हो, तो धातुओंका पाक हुआ समझो ; यदि दर्द न हो, तो मलपाक हुआ समझो। और भी कहा है,—ज्वरसे पीड़ित मनुष्यके हृदयमें, नाभिके ऊपर, पाकके कारण, दुखते हुए अङ्गोंमें अङ्गुलियोंसे दबानेसे पीड़ा हो, तो धातुपाक हुआ समझो। इसीलिये अच्छे जानकर वैद्य और डाक्टर, नाभिके ऊपर, उँगलियोंसे दबा-दबाकर धातु-पाक और मलपाकको मालूम कर लेते हैं ; क्योंकि सन्निपात रोगीका मरण-जीवन विशेषकर इसी उपायसे मालूम होता है।

मलपाकके लक्षण ।

दोषप्रकृतिवैकृत्यंलघुताज्वरदेहयोः ।
इन्द्रियाणांचवैमल्यं दोषाणांपाकलक्षणम् ॥

दोषोंका स्वभाव बदल गया हो यानी वातादिक दोषोंके कारणसे होनेवाले दाह, तन्द्रा, प्यास, आदि उपद्रव न हों या उनका ज़ोर घट गया हो ; ज्वर और शरीर हलके हों तथा इन्द्रियोंमें निर्मलता हो, तो

मलपाक समझो। और भी कहा है,—पाँचों इन्द्रियाँ निरन्तर अपना काम करती हों, जठराग्नि दीप्त हो, प्यास वगैरः शान्त हों, ज्वर हलका हो, तो दोषोंका पाक हुआ समझो। अगर हृदय और नाभिमें घोर पीड़ा हो, अधिकतर पतला दस्त हो, ज्वर ज़ोरसे हो, प्यास, मद, श्वासका वढ़ाव हो, वेचैनी और अरुचि हो, तो धातुपाक हुआ समझो। मलपाक ईश्वरकी कृपा और पुण्यफलसे होता है। जिसको मृत्यु निश्चित होती है, उसेही धातुपाक होता है।

सन्निपातज्वरका भयंकर उपद्रव।

सन्निपातज्वरस्यांतिकर्णमूलेसुदारुणः।
शोथःसंजायतेतेनकश्चिदेवप्रमुच्यते ॥
ज्वरस्यपूर्वं ज्वरमध्यतोवाज्वरान्ततोवाश्रुतिमूलशोथः।
क्रमादसाध्यःखलुकष्टसाध्यःसुखेनसाध्योमुनिभिःप्रदिष्टः॥

सन्निपात होनेके पीछे कानकी जड़में भयानक सूजन होती है; उस सूजनसे कोई ही रोगी वचता है। ज्वरके पहले, ज्वरके वीचमें और ज्वरके अन्तमें कानकी जड़में शोथ (सूजन) होता है, वह क्रमसे असाध्य, कष्टसाध्य और सुखसाध्य होता है।

ज्वरके अन्तमें सूजन होती है; पर ज्वरके आरम्भ और वीचमें भी होना लिखा है। ज्वरके आदिकी सूजन असाध्य, वीचकी कष्ट-साध्य और अन्तकी सुखसाध्य होती है। इस सूजनको रोगीकी मृत्युही समझना चाहिये। असलमें, यह सूजन रोगीके प्राणनाश करनेके लिये ही पैदा होती है। जव सन्निपातज्वरोंमें वातपित्तकी गरमी वहुत वढ़ जाती है और वह उचित चिकित्सा न होनेसे शान्त नहीं होती, तव वही गरमी मस्तिष्कमें पहुँचकर, वहाँके खूनको एक-दम से गरम करके पतला कर देती है, फिर वही खून वहाँसे चलकर कानके नीचेकी नस में आकर जम जाता है; क्योंकि गाढ़ा

होने के कारण खून का वहना वन्द हो जाता है; उससे जो सूजन पैदा हो जाती है, उसेही "कर्णमूल" कहते हैं।

इस सूजनका खून अवश्य निकलवा देना चाहिये। जौंक लगवा कर अथवा सींगी या तूम्बी लगवाकर या नश्तर लगवाकर खून निकलवाना चाहिये। वङ्गसेनने लिखा है—रूधिरस्राव—खून निकाल कर, दागकर, घृतपान कराकर, कफपित्त नाशक वमन और कवल वगैरः देकर उसे जीतना चाहिये। "चरक"में लिखा है,—सन्निपात ज्वरके अन्तमें, कर्णमूलमें दारुण सूजन पैदा होती है। इसके होनेसे कोई ही रोगी वचता है। तत्काल खुन निकलवाना, कफपित्तनाशक लेप करना और कवल धारण कराना—इस सूजनके नाशके उपाय हैं। जोंकों द्वारा खून निकलवाया जाय, तो एक दिन नीमके पत्ते वाँधकर फिर कोई लेप करना चाहिये। यही इसकी सर्वोत्तम चिकित्सा है।

सामान्य सन्निपातोंके तेरह भेद।

वातोल्वण

१ विस्फारक सन्निपात।

श्वास, खाँसी, भ्रान्ति, मूर्च्छा, प्रलाप, कम्प, बेहोशी, पसलियोंमें दर्द, जँभाई आना और मुखमें कसैलापन—ये वातोल्वण सन्निपात ज्वरके लक्षण हैं। इस दारुण सन्निपातको "विस्फारक" कहते हैं।

पित्तोल्वण

२ आशुकारी सन्निपात।
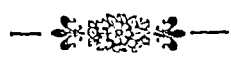
पतले दस्त, भ्रान्ति, मूर्च्छा, मुँह पकना, शरीरमें लाल-लाल विन्दुओंका होना और अत्यन्त दाह—ये पित्तोल्वण सन्निपातके लक्षण हैं। इसको "आशुकारी" कहते हैं।

कफोल्वण

३ कंपन सन्निपात ।

जड़ता, गद्गद बोली, रातमें नींदका भी आना, नेत्रोंमें स्तब्धता, और मुखमें मधुरता—ये कफोल्वण सन्निपातके लक्षण हैं । इसे ऋषि लोग "कम्पन" कहते हैं ।

वातपित्तोल्वण

४ बभ्र सन्निपात ।

ज्वर, मद, प्यास, मुंह सूखना, आँखोंका मिचीसी मालूम होना, अफारा, अरुचि, तंद्रा, खाँसी, श्वास, भ्रम, श्रम—थकान—ये सब लक्षण वातपित्तोल्वण या वात और पित्तकी अधिकतावाले "बभ्र" या "बभ्रु" सन्निपात के हैं ।

वातकफोल्वण

५ शीघ्रकारी सन्निपात ।

शीतज्वर, मूर्च्छा, भूख, प्यास, पसलियोंमें दर्द, शूल, पसीनोंका न आना, तंद्रा और श्वास—ये सब लक्षण वातकफोल्वण या वात कफाधिक सन्निपात के हैं । यह सन्निपात असाध्य है । इसका नाम "शीघ्रकारी" है । इस सन्निपातवाला एक दिन भी नहीं जीता ।

पित्तकफोल्वण

६ भल्लु सन्निपात ।

शरीरके भीतर दाह और ऊपरसे सरदी, प्यासका बढ़ाव, दाहनी पसलीमें दर्द ; हृदय, मस्तक और कंठमें वेदना, कफ और पित्त अत्यन्त कठिनतासे थूका जाय, शरीरमें चकत्ते हो जायँ, दस्त आने लगें, श्वास, हिचकी और आँखोंका मिचासा जाना—ये लक्षण पित्त-कफोल्वण या पित्तकफाधिक सन्निपातके हैं । इसको भल्लु या फल्गु सन्निपात कहते हैं ।

वातपित्तकफोल्वण

७ कूटपाकल सन्निपात।

जब त्रिदोषोल्बण या तीनों दोषोंकी अधिकतासे सन्निपात कुपित होता है, तब उसमें तीनों दोषोंके लक्षण दिखाई देते हैं। यह सन्निपात सब बीमारियोंसे बढ़कर वज्र और शस्त्रकी समान भयङ्कर है। इसमें रोगी केवल ऊँचा श्वास लेता है। सारा शरीर जकड़ जाता है, नेत्र पत्थरके समान हो जाते हैं। यह सन्निपात ३ दिनमें मनुष्योंके प्राण हर लेता है। इसको मूर्ख लोग राक्षस और भूतादि की बाधा समझते हैं। वैद्य इसे "कूटपाकल" कहते हैं।

अधिकवात, मध्यपित्त, हीनकफ

८ संमोहक सन्निपात।

अधिक वात, मध्यकफ और हीनकफ के कोपसे जो सन्निपात होता है, उसमें इन्हीं दोषोंके अनुसार क्रमसे अधिक, मध्य और हीन रोग होते हैं। यथा—दर्द, कम्प, निद्राका न आना और कब्ज आदि ये वात-सम्बन्धी रोग होते हैं, दाह, प्यास, गरमी और पसीना आदि पित्त-सम्बन्धी रोग होते हैं। भारीपन, अग्निकी मन्दता, खाँसी और नाक तथा मुखसे पानी गिरना आदि कफ-संबन्धी रोग होते हैं। इस सन्निपातमें प्रलाप, परिश्रम, बेहोशी, कम्प, मन न लगना, भ्रम और पक्षाघात यानी एक तरफके शरीरका रह जाना—ये विशेष लक्षण होते हैं।

नोट—जो लोग इन सन्निपातोंको आसानीसे समझा चाहें,—उन्हें वायु, पित और कफकी वृद्धि क्षय और कोपके लक्षण कंठाग्र रखने चाहियें। जो दोषोंके इन लक्षणोंको अच्छी तरह याद नहीं रखते, उनको चिकित्सामें सफलता नहीं हो सकती। उनका काम अन्धे की तरह है। देखो, पहला भाग पृष्ठ १२७-१३६। उनके याद करने में जो कष्ट होगा, उससे बहुतसे कष्टोंसे बचोगे। वह असल कुञ्जी है।

दोष क्षीण होनेपर भी बीमारी करते हैं। वायुके क्षय होनेसे चेष्टा अल्प हो जाती है, आवाज़ मन्दी हो जाती है और संज्ञाका नाश हो जाता है।

पित्तके क्षय होनेसे कफ ज़ियादा बढ़ जाता है, अग्नि मन्द हो जाती है और कान्ति नष्ट होजाती है।

कफके क्षय होनेसे सन्धियाँ (जोड़) शिथिल होजाती हैं; बेहोशी, रूखापन और दाह उत्पन्न होता है। याद रक्खो, दोष बढ़ कर भी रोग करते हैं और घटकर भी। दोषोंके समान रहनेसे ही सुख, बल और पुष्टि होती है।

मध्यवात, अधिकपित्त, हीनकफ

९ पाकल सन्निपात।

इन दोषोंके बल अनुसार कम्प, दाह, भारीपन आदि लक्षण होते हैं तथा मोह, प्रलाप, मूर्च्छा, गर्दनका जकड़ जाना, सिरमें दर्द, खाँसी, श्वास, भ्रम, तन्द्रा, संज्ञानाश, हृदयमें व्यथा, इन्द्रियोंके सूराखोंसे खून गिरना, आँखोंमें सुर्खी और उनका जड़ होजाना—ये लक्षण विशेष कर होते हैं। इस सन्निपातमें रोगी ३ दिनके भीतर मर जाता है। इसका नाम "पाकल" है।

हीनवात, अधिकपित्त, मध्यकफ

१० याम्य सन्निपात।

इन दोषोंके बलानुसार कम्प, दाह और भारीपन आदि सब लक्षण होते हैं; तोभी हृदयमें दाह होता है, यकृत—कलेजा, तिल्ली, आँतें और फेंफड़े पक जाते हैं, मुख और गुदासे खून और राध निकलते हैं, दाँत गिर जाते हैं और मरण होता है। ये लक्षण विशेष होते हैं। इसका नाम "याम्य" है।

अधिकवात, हीनपित्त, मध्यकफ

११ क्रकच सन्निपात।

इन दोषोंके बलानुसार कम्प, दाह और भारीपन आदि लक्षण होते हैं; तोभी बकवाद, परिश्रम, मोह, कम्प, मूर्च्छा, बेचैनी, भ्रम, मन्यानाड़ी (गर्दन)के जकड़ जानेसे मृत्यु—ये लक्षण विशेष होते हैं, इसको "क्रकच" कहते हैं।

मध्यवात, हीनपित्त, अधिककफ

१२ कर्कटक सन्निपात।

इन दोषोंके बल-अनुसार कम्प, दाह और भारीपन आदि लक्षण होते हैं; तोभी शरीरके भीतर दाह-जलन हो, बोला न जाय, चेहरा आलसे रँगे हुएकी तरह लाल होजाय, पित्तसे खिंचा हुआ कफ छातीके बाहर न आवे, पसलियोंमें तीर छेदनेका सा दर्द हो, हृदय में खोदनेकीसी पीड़ा हो, आँखे' मिचीसी हो जायँ, श्वास और हिचकी हर रोज़ बढ़ें, जीभ जलीसी काली और खरदरी हो जाय, कंठमें धानके तूरकी तरह काँटे पड़ जायँ, बेहोशीमें पाखाना पेशाब निकल जाय, कबूतरकी तरह गलेमें कूजन हो, कंठ कफसे भरा रहे, मुख होठ और तालू सूख जायं, तंद्रा और निद्रा अधिक हो, आवाज़ भारी हो जाय, कान्ति नाश होजाय, किसी तरह कहीं चैन न पड़े, विपरीत पदार्थों'की चाहना हो, बारम्बार खाँसनेसे थोड़ा-थोड़ा खून थूकमें आवे—ये लत्तण विशेष होते हैं। इस अत्यन्त घोर सन्निपात को "कर्कटक" कहते हैं।

हीनवात, मध्यपित्त, अधिककफ

१३ वैदारिक सन्निपात।

इन्हीं दोषोंके बलानुसार कंप, दह और भारीपन आदि होते हैं तथा अल्प शूल, कमरमें तोड़नेकासा दर्द, छातीमें दाह, जलन और

दर्द. भ्रान्ति, अत्यन्त ग्लानि, सिर, मूत्राशय, गर्दन, हृदय और बोलनेमें दर्द हो ; आँखें मिची जायँ, श्वास, खाँसी, हिचकी, जड़ता और अत्यन्त बेहोशी ये लक्षण होते हैं। इस सन्निपातके पैदा होतेही यदि इलाज किया जाय, तो शायद आराम होजाय। देर होनेसे आराम होनेकी आशा नहीं। इस सन्निपातके शान्त होनेपर कानकी जड़में बहुत बड़ी फुड़िया होती है। इसके निकलनेपर कोई ही बचता है ; इस घोर सन्निपातको "वैदारिक" कहते हैं। इसके उत्पन्न होनेपर ३ रात बीत जायँ, तो औषधिकी कल्पना करना वृथा है।

सन्निपातज्वरोंकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।
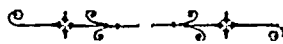
(१) बढ़े हुए दोषको घटाकर और घटे हुएको बढ़ाकर तथा कफके स्थानसे आरम्भ करके, सन्निपातकी चिकित्सा करनी चाहिये। हीनको बढ़ाकर, बढ़े हुएको घटाकर अथवा अत्यन्त बढ़े हुए को हीन करके और हीनको बढ़ाकर सन्निपातोंमें दोषोंकी विरेचना करनी चाहिये।

(२) सन्निपातमें पहले आम और कफकी चिकित्सा करनी चाहिये। हारीतने कहा है,—"सन्निपातज्वरमें पहले वात कफको नाश करनेवाली क्रिया करनी चाहिये। जब कफ क्षय हो जाता है या सूख जाता है, तब वात और पित्त आपही शान्त हो जाते हैं। त्रिदोषज्वर प्राणनाशक होता है, इसलिये यशकामी वैद्यको पहले कफके सुखाने की तदबीर करनी चाहिये—पित्तको शान्त न करना चाहिये ; क्योंकि कफ और वातकी अधिकतावाले रोगी को ज्वर मार देता है। जब कफ सूखजाय, तब वातको निवारण करना चाहिये ; पित्तके

कोपको समझकर पित्तको भी शान्त करना चाहिये। वात और कफको सुखाना परमावश्यक है; पर पित्तको नष्ट करना उचित नहीं है।

तात्पर्य्य यह है, सन्निपातज्वरमें पहले कफनाशक औषधि देनी चाहिये। उसके बाद पित्तकी शान्तिके लिये, देवदारू, कायफल, त्रिफला, लालचन्दन, फालसे, कुटकी, पद्माख और खसका काढ़ा देना चाहिये। यह काढ़ा त्रिदोष, दाह और प्यासको शान्त करता तथा बहुत दिनोंके ज्वरमें अमृत-समान है।

(३) सन्निपातज्वरमें पहला काम क़ायदेसे लंघन कराना है। ज्वरमें सात दिन तक लंघन करानेका मामूली क़ायदा है; किन्तु सन्निपातमें ख़ास नियम है। वह यह कि, जबतक आरोग्यके लक्षण न दीखें, तीन रात, पाँच रात या दस रात तक लंघन कराने चाहियें। वायु शीघ्र गतिवाला है, पित्त मध्य गतिवाला है और कफ मन्द गतिवाला है। वायु जल्दी पचता है, पित्त उससे देरमें और कफ उससे भी देरमें पचता है। इसलिये इन तीनों दोषोंकी उल्बणता या प्रधानताका ख़याल करके ३, ५ या १० लंघन कराने चाहियें; अर्थात् वातोल्बण सन्निपातमें ३ रात, पित्तोल्बणमें ७ रात और कफोल्बणमें १० रात तक लंघन कराने चाहियें। तीन रातकी अवधि ही पर न जम जाना चाहिये; जबतक आरोग्यके लक्षण न दीखें, लंघन कराने चाहियें।

"सुश्रुत"में लिखा है,—"सातवें, दसवें अथवा बारहवें दिन तक सन्निपात ज्वर स्वाभाविक रीतिसे अत्यन्त घोर होकर शान्त हो जाता है या मार डालता है; पित्त, कफ और वायुकी वृद्धिसे क्रमपूर्व्वक दस बारह या सात दिनमें धातुपाक होनेसे मार डालता है और मल-पाक होनेसे शान्त हो जाता है। धातुपाक और मलपाकमें पूर्व्व जन्म के शुभाशुभ कर्म्म ही कारण हैं। धातुपाक और मालपाकके लक्षण पीछे २४२ वें पृष्ठमें लिख आये हैं।

कुपथ्यके कारण, ज्वर बिगड़नेसे सन्निपातज्वर हुआ हो, तो लंघन

न कराने चाहियें, वल्कि हलका पथ्य देना चाहिये और बढ़े हुए दोषोंको मृदु चिकित्सासे शान्त करना चाहिये। अगर आरम्भसेही सन्निपातज्वर हुआ हो, तो तीन, पाँच या दस दिन तक पहले लंघन कराने चाहियें। मतलब यह है, दस दिनके अन्दर फायदा दीखे, तो पथ्य दे देना चाहिये; क्योंकि लंघनोंसे कमज़ोरी और वेहोशी होती है और वेहोशीसे मनुष्य मर जाता है। ज्वरके आदिमें वलकी रक्षा करनी चाहिये। वल-विरोधी लंघन हरगिज़ न कराने चाहियें। यद्यपि त्रिदोषज्वरमें लंघन हितकर हैं, तोभी रोगी और रोगके वला-वलको विचारकर लंघन कराने चाहियें। वङ्गसेनने कहा है,—"तीन, पाँच, सात या दस रात तक लंघन कराने चाहियें। कफ और पित्त पतले होनेके कारण वहुत लंघन सह सकते हैं; आमके क्षय होनेपर केवल वात रहजाता है, वह एक क्षण भी लंघन नहीं सह सकता।"

सन्निपातज्वरमें जो वैद्य कफसे भरे हुए रोगीको पथ्य देता है, वह रोगीका शत्रु है। इसलिये कफके सूखे विना पथ्य और औषधि न देनी चाहिये, किन्तु लंघन कराने चाहियें।

(४) सन्निपात ज्वरमें उत्तम लंघन करनेवाले रोगीको पहले कवल देना चाहिये।

(५) जो नराधम सन्निपात-रोगीको भूखके समय मांस और भात खानेको देता है, वह वैद्य नहीं है। जो सन्निपातमें वकते हुए रोगीको घी पिलाता है या भोजनमें घी देता है, वह रोगीको मार डालता है।

(६) सन्निपात-रोगीके दोषोंके शान्त करनेके लिये, वल और जठराग्नि को वढ़ानेवाला जवासा, गोखरू और कटेरीके काढ़ेसे सिद्ध किया हुआ आहार देना चाहिये।

कोई-कोई वैद्य कहते हैं, सन्निपातज्वरवालेको खीलोंका सत्तू

सेंधा नमक डालकर देना चाहिये। अगर सत्तू निर्विघ्न पचजाय, तो समझना चाहिये कि रोगी जीवेगा; परन्तु खीलोंका सत्तू रक्तपित्त, प्यास और दाहज्वरमें हितकारी होनेकी वजहसे शीतल है और शीतल पदार्थ सन्निपातमें हानिकारक हैं; इसलिये सन्निपात ज्वरमें सत्तू न देना चाहिये।

सन्निपातज्वरमें दशमूल आदि औषधियोंके द्वारा बनाया हुआ माँड देना चाहिये; क्योंकि यह माँड़ गरम है, दीपन और पाचन है तथा पसीने लानेवाला है।

पञ्चमुष्टिक यूषमें गोखरू डालकर वही त्रिदोष शमन करनेको देना चाहिये। (देखो पृष्ठ ८४)। अथवा सप्तमुष्टिक यूष देना चाहिये। यह यूष वातकफनाशक है तथा सन्निपात ज्वर, कफ, वात और आम दोषको नष्ट करता एवं कण्ठ, हृदय और मुखको शोधता है।

नोट—जौ, बेर, कुलथी, मूँग, आमले, धनिया और सोंठ,—इन सातोंके यूषको "सप्तमुष्टिक यूष" कहते हैं।

(७) सेंधानोन, सोंठ, गोलमिर्च और पीपल—इन चारोंके चूर्णको अदरखके रसमें मिलाकर मुखमें रखना चाहिये और जो कफ आवे, उसे बारम्बार थूकना चाहिये। इस उपायसे हृदय, गर्दन, पसली, सिर और गलेमें लिहसा हुआ कफ बाहर निकल आता है। इससे सन्धियोंका दर्द, ज्वर, मूर्च्छा, निद्रा, श्वास, गलरोग, मुँह और आँखोंका भारीपन, शरीरकी जड़ता और उबकाई ये सब आराम हो जाते हैं। दोषोंका बलाबल विचारकर २।३ या ४ बार ऐसा करना चाहिये। सन्निपातज्वर रोगियोंके लिये यह परमोत्तम परीक्षित उपाय है।

बड़े नीबूका रस, अदरखका रस, सेंधानोन, कालानोन और संचरनोन—इन सबको मिलाकर बारम्बार नस्य लेनेसे भी कफ पतला होकर निकल जाता है।

(८) शहद, घी और दाख—इन तीनोंको एकत्र पीसकर, जीभपर लेप करना चाहिये। इस उपायसे जीभ नर्म और ठीक हो जाती है।

जीभकी कठोरता नाश करनेके लिये यह उपाय परीक्षित है। जब वात और कफ कम होजाते हैं, तब खुश्की होती है। उस समय जीभ खरदरी और फटीसी हो जाती है, उसी समय यह उपाय करना चाहिये। अगर जीभ जड़ होजाय, तो सेंधानोन और त्रिकुटेके चूर्ण को अमलबेद मिलाकर जीभ पर घिसना चाहिये।

(६) सन्निपातज्वर रोगीको बिना औटाया कच्चा जल हरगिज़ न देना चाहिये। सन्निपात-रोगीको प्यास लगने, तालू सूखने और पसलीके दर्द होनेकी हालतमें जो कच्चा—बिना औटाया जल देता है, वह तो रोगीको मारना चाहता है।

(१०) सन्निपात ज्वरवालेको दाहसे पीड़ित देखकर, जो उस पर शीतल जल सींचता या सिरपर बर्फ रखता है, वह रोगीको मारता है। ज्वरमें गरमी प्रधान होती है। उस गरमीसे और मस्तिष्कसे सम्बन्ध है। उस गरमीको शीतल जल या बर्फ़से शान्त करना भूल है।

नोट—हृद्दाह सन्निपातमें शीतल जलसे सींचनेकी मनाही नहीं है।

(११) सन्निपात रोगीके होशहवास दुरुस्त हों, तो थोड़ी-थोड़ी देरमें उसका भीतरी हाल पूछ लेना चाहिये। अगर रोगी बेहोशीके मारे या गला बन्द होनेके कारण न बोल सकता हो, तो पहले बेहोशी और गलेका इलाज करना चाहिये। गला खुलनेसे रोगी अपना हाल कह सकेगा और हाल मालूम होनेसे वैद्य ठीक इलाज कर सकेगा।

(१२) ध्यान रखना चाहिये, सिरमें ज़ियादा गरमी पहुँचनेसे ही रोगी बेहोश होता है और उसका गला रुकता है। पहले मामूली उपायोंसे बेहोशी दूर करनी चाहिये। आरम्भमें ही रसोंसे काम न लेना चाहिये। रोगी बकता हो, बेहोश हो, काँपता हो, तो पहले "पुराने घी"की मालिश कराना अथवा बलादि, रास्नादि या गुड़ूच्यादि तेलकी मालिश कराना और अग्नि अनुसार बटेर, लवा, ख़रगोश, चिड़ा

प्रभृतिका मांस देना हितकर है। लाभ न दीखे तो साधारण अञ्जन या नस्यसे रोगीको होश कराना चाहिये। जब साधारण अञ्जन या नस्यसे काम न हो, तब "उन्मत्त रस" या "सूचिकाभिरण रस" प्रभृति रसों का प्रयोग करना चाहिये। गर्मी, सोज़ाक, बवासीर, प्रमेह, उन्माद या गरम मिज़ाजवालोंको इन रसोंसे उपकारके बदले अपकार होता है। जब नर्म और मातदिल उपायोंसे काम न हो, तब निराशता की दशामें इन रसोंको काममें लाना ज़रूरी है। बाज़ बाज़ वक्त ये रस मरे हुएको भी होशमें ले आते हैं।

कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पीपल, धमासा और अजमोदका चूर्ण—शहदमें मिलाकर चटानेसे भयंकर सन्निपात, हिचकी, श्वास, खाँसी और कण्ठरोग मिटता है।

समन्दरफल पानीमें घिसकर आँजनेसे बड़ा उपकार होता है।

चिरायता, कुटकी, कूट, अजवाइन, इन्द्रजौ और कचूर—इनका चूर्ण शरीरपर मलने और ख़ासकर जोड़ोंपर मलनेसे, कफ के कारण से रुका हुआ गला खुल जाता है।

मैनसिल और बचको लहसनके रसमें पीसकर आँजनेसे होश हो जाता है।

(१३) सन्निपातज्वर-रोगीको साफ हवादार मकानमें रखना चाहिये। रोगीके पास भीड़ न रहनी चाहिये। बाहरी हवासे बचनेको पर्दे लगा देने चाहियें। बिस्तरे साफ होने चाहियें। गन्दी हवाके निकलने और ताज़ा हवाके आनेको राह अवश्य रखनी चाहिये।

(१४) कह चुके हैं कि, सन्निपातमें पहले कफको जीतना चाहिये। त्रिदोषज्वरमें दो दोषोंकी उल्बणता रहती है। जो दोष बलवान हो, पहले उसीको जीतना चाहिये। अगर वैद्य दोषोंके अंशांशको न जान सके, तो साधारण चिकित्सा करनी चाहिये। सन्निपातज्वर में पहले लंघन, बालुकास्वेद, नस्य, ष्ठीवन, अवलेह, और अञ्जनसे काम लेना चाहिये।

(क) लंघनोंके सम्बन्धमें पहले लिख आये हैं।

(ख) कालीमिर्च, मुलहठी, सेंधानोन, खस, कायफल और पीपल—
इनको गरम जलमें पीसकर, मृदु नस्य देनेसे त्रिदोष नाश होता है। यही "नस्य" है।

(ग) बिजौरे नीबूकी केसर, अदरख, सेंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपल— इनको मिलाकर मुखमें रखने और इसीसे दाँत, जीभ, मुख और तालूको घिसने और बारम्बार थूकनेसे कंठ और जीभ साफ होते तथा कफ दूर होकर श्वास और खाँसी नाश होते हैं। यही "निष्ठीवन" है।

(घ) कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिङ्गी, सोंठ, मिर्च, पीपलामूल, जवासा और कलौंजी—इनके चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे महादारुण सन्निपात, हिचकी, श्वास और कण्ठरोग आराम होते हैं। यही "अवलेह" है।

(ङ) लहसन, पीपल, कालीमिर्च, वच, सोनापाठाके बीज और सेंधा-नोन—इनको गोमूत्रमें पीसकर आँजनेसे सारे दुष्ट सन्निपात भाग जाते हैं। यही "अञ्जन" है।

(च) बालुका स्वेदके लिये पृष्ठ १७० और २१६ देखिये।

(१५) वात और कफकी अधिकतावाले ज्वरमें रूखे पदार्थोंका स्वेद देना चाहिये। वातज्वरके सिवा और सभी ज्वरोंमें चिकने पदार्थोंका स्वेद देना चाहिये।

(१६) एक समयमें ही एकसी दो क्रियाएँ न करनी चाहियें; किन्तु अलग-अलग करनेमें हर्ज नहीं। एक समयमें जो एकसी दो क्रियाएँ की जाती हैं, उसे "संकर क्रिया" कहते हैं।

(१७) दृढ़ सन्निपातज्वरमें, आमाशयमें कफके संचित होनेसे, सन्नि-पातके शान्त होने पर, तन्द्रा उत्पन्न होती है। तन्द्रावालेकी

आँखें आधी बन्द और टेढ़ीसी मालूम होती हैं, तारे इधर-उधर फिरते हैं, पलक स्थिर हो जाते हैं, नेत्र गिरे हुएसे मालूम होते हैं, होठ ऊपरको सिमट आते हैं और दाँत बाहरको दीखते हैं, रोगी बारबार सोधा सोता है, गाढ़े--गाढ़े कफके अण्ठे मुँहमें लाता है। उस कफसे रोगीका गला रुक जाता है। इस तरहके अनेक विकार होते हैं। यह तन्द्रा तीन दिन तक साध्य समझी जाती है और इसके बाद असाध्य।

पतले रस और और दूध प्रभृति पतले पदार्थोंके सेवन तथा, दिनमें सोनेसे दुर्बल और अल्पायु मनुष्योंका कफ कुपित हो कर, वायुकी राहोंको रोककर, धमनियोंमें घुसकर, घोर तन्द्रा उत्पन्न करता है। सेंधानोन, सहँजनेके बीज, सरसों और कूट—इनको एकत्र पीसकर नाश लेनेसे तन्द्रा नाश होती है।

(१८) सन्निपातज्वर में पसीना बहुत आता हो, तो उसे शीघ्रही बन्द करना चाहिये। ऐसे पसीनेमें पिच्छिलता बहुत होती है, इसलिए शीत आनेका भय रहता है और शीत आनेसे रोगी झट मर जाता है।

भुनी हुई कुल्थीका चूर्ण पीसकर शरीर पर मलनेसे पसीना आना बन्द होजाता है। और उपाय पृष्ठ २१५--१६ में देखिये।

(१९) सन्निपातज्वरके अन्तमें कानकी जड़में सूजन उठती है। इस सूजनसे कोई ही भाग्यवान बचता है। उस पर लेप लगाकर उसे बैठाना चाहिये अथवा पकाकर फोड़ना और घाव भरना चाहिये। अलसीकी पुल्टिशमें घी डालकर, दिनमें ५।६ दफा गरम--गरम बाँधनेसे सूजन पक जाती है। पीछे पकनेपर या तो किसी तेज़ दवासे फोड़ देना चाहिये या चीरा देकर मवाद निकाल देना चाहिये। सर्व्वोत्तम उपाय "जौंक" लगवाकर खून निकलवाना है। जौंक लगवाकर, पहले नीमके पत्ते बाँधने चाहियें; पीछे कोई लेप लगाना चाहिये।

(२०) जिस तरह अथाह जलमें गिरे हुए बर्तनको तलीमें पहुँचनेसे पहले ही पकड़ लेना चाहिये; उसी तरह "अभिन्यास सन्निपातरोगी" का यत्न भी शीघ्रही करना चाहिये। इसमें नींद आने पर रोगी तत्काल हतवीर्य्य हो जाता है। इस सन्निपातमें सात, दस या बारह दिनमें धातुपाक होनेसे रोगी मर जाता है और दोष पाक होनेसे बच जाता है। कोई-कोई कहते हैं,—धातु, दोष और धातुओंके भेदसे १४, ९ या ११ दिनमें सन्निपात रोगीको मार देता है। अभिन्यास सन्निपातमें फँसकर कोई ही रोगी बचता है।

(२१) ज्वरनाशक काढ़े द्वारा पुराने लाल शालि चाँवलोंका भात या यूष आदि बनाकर रोगीको देना चाहिये। अगर ये निर्व्विघ्न पच जायँ, तो रोगी निश्चय ही बच जाय।

(२२) अगर अञ्जन और नस्य आदिसे बेहोशी नाश न हो, तो लोहे की सलाईको आगमें तपाकर, रोगीके दोनों पाँवों और ललाट में दाग देना चाहिये।

(२३) अगर शरीर शीतल और हाथ पैर गरम हों, तो पीपलका चूर्ण मिलाकर "रास्नादि क्वाथ" पिलाना चाहिये। जिसका शरीर गरम और हाथ पैर शीतल हों, उसे गुड़ मिलाकर "द्राक्षादि क्वाथ" देना चाहिये। अगर भीतर दाह हो और बाहर पसीना तथा शीतलता हो, तो गिलोयके काढ़े में शहत और पीपल मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा अतीस, नेत्रवाला, सोंठ, नागर-मोथा और पित्तपापड़ेका क्वाथ पिलाना चाहिये। इस काढ़े से भीतरका दाह शान्त हो जाता है। अगर आधा ऊपरका शरीर शीतल हो और आधा नीचेका गरम हो, तो गरमागरम "रास्नादि क्वाथ" पिलाना चाहिये। अगर ऊपरका शरीर गरम और नीचेका शीतल हो, तो "शुंठ्यादि क्वाथ" पिलाना चाहिये।

(२४) जिसके सिरपर शीतल पसीना आता हो, सारा शरीर शीतल हो, रोगी शीतसे घबरा रहा हो, कफका ज़ोर हो, कण्ठ तक पसीना आता हो, पर छातीपर पसीना न आता हो, वह रोगी निश्चयही मर जाता है।

सन्निपात ज्वरनाशक नुसखे।

सर्व सन्निपातज्वरनाशक।

(१) दशमूल क्वाथ*। बेल, श्योनाक, कुम्भेर (खँभारी), पाढ़ल, अरणी, शालिपर्णी, प्रश्निपर्णी, बड़ी कटेरी; कटेरी और गोखरू,—इन दसों को "दशमूल" कहते हैं। यह दशमूल का काढ़ा सन्निपातज्वरों पर परमोत्तम औषधि है।

(१) दशमूलके काढ़ेमें "पीपरका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे हृदय और कण्ठका अवरोध (गला रुकना), तंद्रा, वातकफके रोग, श्वास, पसलियोंका दर्द और खाँसी समेत सन्निपातज्वर आराम होता है। यह नुसखा तंद्रा

---

* बेल, श्योनाक, कुम्भेर, पाढ़ल और अरणी (अगेथ)—इन पाँचोंको "वृहत् पंचमूल" कहते हैं। ये पित्तनाशक और वातकफको हरनवाली हैं।

शालिपर्णी, प्रष्ठिपर्णी बड़ी कटेरी, कटेरी और गोखरू,—इन पाँचोंको 'लघु-पंचमूल' कहते हैं। ये वात और पित्तनाशक हैं।

वृहत्पंचमूलकी ५ और लघु पंचमूलकी ५—दसों दवाओंको 'दशमूल' कहते हैं। दश-मूलकी औषधियोंमें जिनकी बड़ी जड़ें होती हैं यानी जो छालसे लिपटी हुई रहती हैं, उनकी 'जड़की छाल' लेनी चाहियें और जिनकी छोटी जड़ें होती हैं वे सारीही लेनी चाहियें।

और मोह सहित सन्निपातज्वर नाश करनेमें निश्चयही रामवाण है।

(२) दशमूलके काढ़ेमें "पोहकरमूल और पीपरका चूर्ण" डालकर पीनेसे श्वास, खाँसी और प्यास समेत सन्निपातज्वर आराम होता है। इन्हीं १२ दवाओंको "द्वादशाङ्ग क्वाथ" कहते हैं।

(३) दशमूलका काढ़ा करके, उसमें उतनाही अदरखका रस और कायफल, पोहरकमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पीपर, जवासा और अजवायनका चूर्ण मिलाकर पीनेसे मृत्यु-तुल्य सन्निपात ज्वर भी नाश होता है।

(४) दशमूलके काढ़ेमें "गिलोय" मिलाकर पीनेसे तेरहों प्रकारके सन्निपात आराम हो जाते हैं।

नोट—ये चारों नुसखे सब तरहके सन्निपातोंको नाश करते हैं। परीक्षित हैं।

(२) चतुर्दशाङ्ग क्वाथ। दशमूलकी दसों औषधियाँ, तथा चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ*—इन १४ दवाओंके काढ़ेको "चतुर्दशाङ्ग क्वाथ" कहते हैं। इस काढ़ेसे पुराना ज्वर, वात कफोल्वणज्वर अथवा त्रिदोषज ज्वर आराम होता है। अगर दस्त करानेकी इच्छा हो, तो इसमें "निशोथका चूर्ण" मिला देना चाहिये।

(६) अष्टादशाङ्गक्वाथ। दशमूलकी दशों औषधियाँ तथा कचूर, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, धमासा, भारङ्गी कुड़ेके बीज, पटोलपत्र और कुटकी—इन १८ दवाओंको "अष्टादशाङ्ग" कहते हैं। इन अठारह दवाओंके काढ़ेसे सन्निपातज्वर नाश

---

* चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ—इन चारोंको "किराततिक्तादि गण" कहते हैं और "चातुर्भद्रक" भी कहते हैं।

हो जाता है तथा साथही खाँसी, हृदयका रुकना, पसलियोंका दर्द, श्वास, हिचकी और वमन—ये भी नाश हो जाते हैं ।

(४) दूसरा अष्टादशाङ्ग क्वाथ—दशमूलकी दशों औषधियाँ, चिरायता, देवदारू, सोंठ, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजौ, धनिया और गज-पीपल—इन १८को भी "अष्टादशाङ्ग" कहते हैं । यह अष्टादशाङ्ग क्वाथ तन्द्रा, प्रलाप, खाँसी, अरुचि, दाह, मोह, श्वास और त्रिदोषज्वरको नाश करता है । वंगसेनने कहा है, यह काढ़ा मृत्यु-समान ज्वरको भी हरता है ।

नोट—यह काढ़ा भी परीक्षित है ।

(५) ग्रन्थ्यादिक्वाथ । पीपलामूल, इन्द्रजौ, देवदारू, वायविड़ङ्ग, भारङ्गी, भाँगरा, चित्रक, सोंठ, मिर्च, पीपल, कायफल, पोहकर मूल, हरड़ जङ्गी, चिरायता, बड़ी कटेरी, जटामासी, रास्ना, वच, चव्य, अजवायन, पहाड़मूल (पाठा) और गूगल—इन २३ दवाओंका काढ़ा सब तरहके सन्निपात, भ्रम, श्वास, शीत, प्रलाप, अफारा, शूल, प्रसूतिका रोग, अनेक प्रकारके विद्रधि, गोला, सूजन तथा कफवातके रोग नाश करता है ।

महाकवि लोलिम्बराज महोदय भी कहते हैं,—इन २३ दवाओंका काढ़ा उन सन्निपातोंको नाश करता है, जिनमें मोह, पसीना, शीत, प्रलाप—बकना, शूल, अफारा, विद्रधि (हृदयका फोड़ा) और कफ वात हों । इसी तरह यह काढ़ा वातव्याधि और प्रसूतिके रोगको भी नाश करता है ।

नोट—यह काढ़ा सन्निपातज्वर नाश करनेमें रामबाण है । कितनी ही बार सफलता हुई है ।

(६) आककी जड़, जवासा, चिरायता, देवदारू, रास्ना, सँभालू, वच, अरणी, सहँजना, पोपरामूल, पीपल, चव्य, चीता, सोंठ, अतीस, और भाँगरा—इन १६ औषधियोंका काढ़ा ऐसे भयङ्कर सन्निपा-

तको आराम करता है, जिसमें देह धनुषकी तरह नव जाती है, दाँती भिच जाती है, तथा शीत, श्वास और खाँसीका ज़ोर होता है। यह काढ़ा प्रसूती स्त्रियोंकी वातव्याधिको भी आराम करता है। यह नुसख़ा वैद्यवर लोलिम्बराजने लिखा है।

नोट—परीक्षित है।

(७) कुटकी, चिरायता, पित्तपापड़ा, गिलोय, कचूर, रास्ना (जैतके बीज), पीपल, पोहकरमूल, त्रायमाण, भटकटैया, देवदारू, सोंठ, हरड़, जवासा और भारङ्गी—इन पन्द्रह औषधियोंका काढ़ा दिन में सोना, रातको जागना, प्यास, मुँह सूखना, शरीरका दाह, खाँसी और पाँचों प्रकारके श्वासोंको नष्ट करता है।

नोट—जिस सन्निपात ज्वरमें दिनमें सोना, रातको जागना, श्वास, खाँसी प्रभृति उपद्रव हों, उसको यह काढ़ा आराम करता है। यह भी महाकवि लोलिम्ब-राजने कहा है।

(८) बेल, श्योनाक, कुम्भेर, पाढ़ल और अरणी—इन पाँचोंको "वृहत्पञ्चमूल" कहते हैं। पित्ताधिक सन्निपातमें इसके काढ़ेको "शहत"के साथ पीना चाहिये। कफाधिक्यमें "पीपल"के साथ पीना चाहिये। वातोल्वण या वाताधिक्य सन्निपातमें इसे बहुत गरम या थोड़ा गरम, दोषोंका बलाबल विचारकर, पीना चाहिये।

(९) बड़ी कटेरी, कटेरी, पोहकरमूल, भारङ्गी, काकड़ासिंगी, धमासा, इन्द्रजौ, पटोलपत्र और कुटकी—इन औषधियोंको "वृहत्यादि-गण" कहते हैं। ये सन्निपातज्वरनाशक हैं तथा श्वास आदि सब उपद्रव सहित त्रिदोषज्वरमें हितकारी हैं।

नोट—यह काढ़ा "चिरायता" मिलानेसे खाँसी आदि उपद्रव सहित सन्निपात ज्वर, शूल और तन्द्राके नाशमें श्रेष्ठ है। कफाधिक सन्निपातमें यह काढ़ा बहुत उत्तम है।

(१०) कचूर, पोहकरमूल, कटेरी, काकड़ासिंगी, धमासा, गिलोय, सोंठ, पाढ़, चिरायता और कुटकी—इन सब औषधियोंके समूहको

"शठ्यादिवर्ग" कहते हैं। यह वर्ग सन्निपातज्वरनाशक है। यह श्वास, खाँसी, हृदयरोग, पसलियोंकी पीड़ा और तंद्राको भी नाश करता है।

नोट—यह काढ़ा पित्ताधिक्य सन्निपातमें बहुत उत्तम है।

(११) कायफल, नागरमोथा, बच, पाढ़, पोहकरमूल, ज़ीरा, पित्तपापड़ा, देवदारू, हरड़, काकड़ासिंगी, पीपल, चिरायता, सोंठ, भारंगी, इन्द्रजौ, कुटकी, कचूर, सुगन्धवाला और धनिया—इन १६ दवाओंको समान भाग लेकर, काढ़ा बनाकर, हींग और अदरखका रस मिलाकर पीनेसे कर्णमूलसे पैदा हुई सूजन, गलेकी सूजन, कफवातज्वर, खाँसी, श्वास, हिचकी और हनुस्तम्भ (ठोडी रह जाना) गलगण्ड, गण्डमाला, कफका स्वरभेद तथा संज्ञानाश आदि रोग नाश होते हैं।

नोट—यह नुसखा परीक्षित है। इसमें अगर "दशमूलका काढ़ा" मिलाकर पिया जावे, तो सब तरहके सन्निपातज्वर और अभिन्यास ज्वर नाश हो जायँ।

(१२) गिलोय, लालचन्दन, पद्माख, सोंठ, इन्द्रजौ, अड़ूसा, हरड़, अमलताश, खस, पाढ़, धनिया, नागरमोथा, और कुटकी—इन १३ दवाओंके काढ़ेमें "पीपलका चूर्ण" डालकर पीनेसे—तन्द्रा, खाँसी, ज्वर, श्वास, प्यास, दाह, त्रिदोषके कुपित होनेसे मलमूत्र और वायु की रूकावट ये सब दूर होते हैं। ये "गूडूच्यादि गण" पाचन और दीपन हैं।

(१३) त्रिकुटा, दशमूल, सोंठ, भारङ्गी और गिलोय—इनका काढ़ा पीनेसे शीघ्रही सन्निपातज्वर दूर होता है।

(१४) दशमूल, बच, सोंठ, बेर और झड़बेर (किसीके मतसे कौआठाड़ी और मकोय)—इन १४ औषधियोंका काढ़ा सन्निपातज्वर को नष्ट करता है।

(१५) अड़सा, पित्तपापड़ा, नीम, मुलेठी, धनिया, सोंठ, देवदारू,

वच, इन्द्रजौ, गोखरू और पीपलामूल—इन ११ दवाओं का काढ़ा पीनेसे सन्निपातज्वर, श्वास, अतिसार, खाँसी, शूल और अरुचि दूर होती है।

(१३) कायफल, त्रिफला, देवदारू, लालचन्दन, फालसा, त्रिकुटा, पद्माख और खस—इन ८ दवाओंका काढ़ा पीनेसे सन्निपातज्वर और उसका दाह और प्यास नाश होता है।

नोट—बहुत दिनके ज्वर रोगीको यह काढ़ा अमृत है। यह काढ़ा परीक्षित है।

(१७) पञ्चमूल और नागरमोथा—इनका काढ़ा, दोषोंके बलाबलको विचारकर, ज़ियादा गरम या सुहाता गरम, वातोत्तर सन्निपात में देना चाहिये।

(१८) त्रिकुटा, त्रिफला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, कुटकी, इन्द्रजौ, चिरायता, गिलोय और पाढ़—इनका काढ़ा त्रिदोषके ज्वरको नाश करता है।

(१६) बेलगिरी, निशोथ, दन्ती और अमलताश—इन चारोंके काढ़े में नीलीका चूर्ण और घी मिलाकर पीनेसे, सन्निपात रोगीको अच्छी तरहसे विरेचन होजाता है।

(२०) सोंठ, धनिया, भारङ्गी, पद्माख, लालचन्दन, पटोलपत्र, नीमकी छाल, त्रिफला, मुलेठी, खिरेंटी, मिश्री, कुटकी, नागरमोथा, गजपीपल, अमलताश, चिरायता, गिलोय, दशमूल और कटेरी इनका काढ़ा त्रिदोषोल्बण सन्निपातको नष्ट करता है तथा सन्निपातकी मृत्युको भी जीतता है। इसका नाम "योगराज क्राथ" है।

नोट—परीक्षित है।

(२१) कुटकी, पित्तपापड़ा, पोहकरमूल, गिलोय, त्रायमाण, कटेरी, रास्ना, चिरायता, कचूर, सोंठ, हरड़, भारङ्गी और जवासा—इन १३ दवाओंका काढ़ा त्रिदोष, भ्रम, प्यास, श्वास, हृद्रोग, दाह,

अरोचक, गलरोग और सब तरहकी खाँसीको दूर करता है। इसका नाम "त्रिक्तादि क्वाथ" है।

(२२) भारङ्गी, रास्ना, पटोलपत्र, देवदारू, हल्दी, सोंठ, मिर्च, पीपल, अडूसा, इन्द्रवारुणी, ब्राह्मी, चिरायता, नीम, नेत्रवाला, कुटकी, वच, पाठा, सोनापाठा, दारूहल्दी, कटेरी, गिलोय, निशोथ, हपुषा, पोहकरमूल, त्रायमाण, नागरमोथा, जवासा इन्द्रजौ, त्रिफला और कचूर—इन ३२ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे खाँसी, गलरोग, श्वास, सन्धिकी हड्डियोंमें दर्द, हिचकी और अफारा आदि उपद्रवों समेत सब तरहके सन्निपात आराम होते हैं।

नोट—यह बत्तीसा काढ़ा प्रसिद्ध है। अनेक बारका आज़माया हुआ है।

(२३) आक, सोंठ, मिर्च, पीपल, चीता, चव्य, देवदारू, पीला सहँजना, कुटकी, भाँगरा, अतीस, रास्ना, जवासा, निर्गुण्डी, वच, और अरणी—इन १७ दवाओंका काढ़ा पीनेसे सब तरहके सन्निपात, शीत, श्वास, सूतिका रोग और वातरोग सब निश्चय ही नाश होते हैं। इस काढ़ेका नाम "अर्कादि क्वाथ" है। परीक्षित है।

पित्ताधिक्य सन्निपात नाशक क्वाथ।

(२४) कचूर, पोहकरमूल, गिलोय, सोंठ, गोखरू, त्रायमाण, पीपल, धमासा, कटेरी, पित्तपापड़ा रायसन, हरड़, कुटकी, देवदारू वच और भारङ्गी—इन १६ औषधियोंके समुदायको "बृहच्छ-ठ्यादि वर्ग" कहते हैं। यह वर्ग सन्निपात ज्वर, खाँसी, श्वास, दिनमें सोना, रातमें जागना, मुखशोष, प्यास, दाह और त्रिदोष को नष्ट करता है।

नोट—पित्ताधिक्य सन्निपातमें यह काढ़ा परीक्षित है।

कफाधिक्य सन्निपातज्वर नाशक क्वाथ।

(२५) बड़ी कटेरी, कटेरी, पोहकरमूल, भारङ्गी, कचूर, काकड़ासिंगी,

धमासा, इन्द्रजौ, पटोलपत्र और कुटकी—तथा दशमूल की दश औषधियां—तथा फालसे, त्रिफला, देवदारू और कायफल—इन २४ औषधियोंका काढ़ा कफाधिक्य सन्निपातमें देना चाहिये। यह श्वासादि उपद्रव सहित सन्निपातका नाश करता है।

पित्ताधिक्य सन्निपातज्वर नाशक क्वाथ।

—*—

(२६) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खस, देवदारू, सोंठ, हरड़, बहेड़ा, आमला, धमासा, नीली, कबीला, निशोथ, चिरायता, पाढ़, खिरेंटी, कुटकी, मुलेठी और पीपरामूल—इन १८ औषधियों के समूहको "मुस्ताद्यगण" कहते हैं। इनका काढ़ा सन्निपात-ज्वरको नाश करता है। विशेषकर यह पित्तोल्वण या पित्ता-धिक्य सन्निपातमें हितकारी है तथा मन्यास्तम्भ, ऊरुघात, हनु-स्तम्भ और शिरोरोगमें अत्यन्त हितकारी है।

पित्तोल्वण सन्निपात नाशक क्वाथ।

—*—

(२७) फालसे, हरड़, बहेड़े आमले, देवदारू, कायफल, लालचन्दन, पद्माख, कुटकी और पृष्ठपर्णी (पिथवन),—इन दसोंका काढ़ा बनाकर, बासी करके शीतल होनेपर, पीनेसे पित्तोल्वण सन्नि-पात नष्ट हो जाता है।

(२८) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, सुगन्धवाला और कमल की नाल—इन ७ दवाओंका काढ़ा पीनेसे पित्तोल्वण सन्निपात नाश होता है।

वातपित्तोल्वण सन्निपात नाशक क्वाथ।

—*—

(९) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ—इनको "चातुर्भद्रक" कहते हैं। इन चारोंका काढ़ा "वातपित्तोल्वण" सन्निपातमें हितकारी है।

पित्तकफोल्वण सन्निपातज्वर नाशक क्वाथ।

—*—

(३०) पित्तपापड़ा, कायफल, कूट, खस, लालचन्दन, सुगन्धवाला,

सोंठ, नागरमोथा, काकड़ासिंगी और पीपल—इन दसोंका काढ़ा पित्तकफोल्वण सन्निपातमें हितकारी है। यह प्यास, दाह और मन्दाग्निको नष्ट करता है। इसको "पर्पटादिक्वाथ" कहते हैं।

नोट—यहाँ वातकफोल्वण सन्निपातज्वरकी चिकित्सा इसवास्ते नहीं लिखी कि, वह शीघ्रही असाध्य हो जाता है।

पञ्चवक्र रस।

—*★*—

(३१) शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, शुद्ध सुहागा, कालीमिर्च और शुद्ध वच्छनाग विष—इन पाँचोंको बराबर-बराबर लेकर, धतूरेके रसमें, एक दिनभर खरल करके सुखा लो। यही "पञ्चवक्र रस" है। इस रसकी १ रत्तीकी मात्रा, अदरखके रसमें, देनेसे घोर सन्निपात-ज्वर भी नष्ट हो जाता है।

नोट—कोई कोई इस में पीपल भी मिलाते हैं और धतूरे के बीजों के रस में खरल करते हैं। यह शहद में मिलाकर भी दिया जाता है। परीक्षित है। इस पर पथ्य दही और भात है।

अमृत बटी।

—***—

(३२) शुद्ध मीठा विष २ भाग, कौड़ीकी भस्म पाँच भाग और काली मिर्च ६ भाग—इन सबको एकत्र खरल करके, मूँगकी बराबर गोलियाँ बनालो। यह "अमृतबटी" कफ, त्रिदोष और मन्दाग्निको नाश करती है।

सन्निपात ज्वरोंकी चिकित्सामें क्या क्या करना चाहिये ?

—★★★—

सन्निपाते त्विदं सर्वं कुर्यादामकफापहम्।
अवलेहोऽञ्जनं नस्यं गण्डूषं चायसक्रिया॥

पादयोर्हस्तयोर्मूले कंठकूपेचशंखयोः।
स्वेदो भ्रष्टकुलत्थानां कणानां चूर्णावर्षणम्॥

सन्निपातज्वरमें—तरुणज्वरमें कही हुई सब क्रियाएँ करनी चाहियें तथा आम और कफको नाश करनेवाली क्रिया करनी चाहियें एवं अवलेह, अञ्जन, नस्य, गण्डूष—कुल्ले और दागनेका काम करना चाहिये। हाथ पाँवोंकी जड़, कंठकूप और कनपटीमें पसीना आता हो, तो भुनी हुई कुलथीके चूर्णकी मालिश करनी चाहिये।

सच तो यह है, यह श्लोक सन्निपात-चिकित्साकी कुञ्जी है। सन्निपातज्वरोंके इलाजमें अवलेह, नस्य, अञ्जन, दागना, गण्डूष, कुल्ले कराना, कवल धारण कराना, निष्ठीवन कर्म कराना, उद्धूलन कर्म करना, दागना और एकदम नाउम्मेदीकी हालतमें कालसर्पसे कटाना—इन उपायोंको चतुराईके साथ करनेसे खासी कामयाबी होती है। जो वैद्य सन्निपातोंको ठीक पहचानकर, आगे लिखी रीतिसे काम करेंगे, उन्हें जगदीशकी दयासे अवश्य सफलता होगी।

सन्निपातज्वर नाशक नस्य।

(१) वच, महुएके पेड़का सार, सेंधानमक, मिर्च और पीपल—इनको पानीमें महीन पीसकर नस्य देनेसे होश होता है तथा तंद्रा नाश होकर संज्ञा आजाती है। इसका नाम "मधूकसारादि नस्य" है।

(२) पारा और गन्धक समान-समान लेकर, धतूरेके फलके रसमें, एक दिन खरल करने और इस कजलीके वज़नके बराबर सोंठ, मिर्च और पीपलका चूर्ण मिलानेसे "उन्मत्त रस" तैयार होता है। इसकी नस्य देनेसे त्रिदोष दूर हो जाता है। परीक्षित है।

(३) काली मिर्च, मुलहटी, सेंधानोन, खस कायफल और पीपल —इनको गरम पानीमें पीसकर मृदु नस्य देनेसे त्रिदोष नाश होता है।

(४) से'धानमक, सहँजनेके वीज, सरसों और कूट—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर नाश देनेसे तन्द्रा नष्ट हो जाती है।

(५) विजौरे नीवू और अदरखके रसको ज़रा गरम करके, उसमें से'धानोन, विरिया संचरनोन और कचिया नमक—तीनों नमक मिलाकर, ज़रा गरम करके, नास देनेसे कफ फटकर और पतला होकर मुख और नाकके द्वारा वाहर निकल जाता है तथा मस्तक, हृदय, कंठ, मुख और पसलियोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(६) कल्पतरुरसकी नास देनेसे कफसम्बन्धी रोग, वातसम्बन्धी सिरका दर्द, प्रलाप, मोह, छींकोंका रुकना—ये सब आराम होते हैं। मोहरूपी रोगसे मनुष्यको जगानेके लिये जैसा "कल्पतरु रस" उत्तम है, वैसी और कोई दवा नहीं है। देखो पृष्ठ १६८-१६९।

(७) मिर्च, सुगन्धवाला, दारूहल्दी, वच, कूट, वायविड़ङ्ग, सोंठ, हल्दी और इन्द्रायन—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर, नास देनेसे तन्द्रिक सन्निपात दूर हो जाता है।

(९) असगन्ध, से'धानोन, बच, महुएका सार, कालीमिर्च, पीपल, सोंठ और लहसन—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर, नस्य देनेसे "भुग्ननेत्र" सन्निपात नाश होता है।

(१०) गुड़, सोंठ ओप पीपल—इन तीनोंके चूर्णको अगस्तियाके कल्कके रसमें मिलाकर, नास देनेसे "चित्तविभ्रम" सन्निपात नाश होता है।

(११) मिर्च, पीपल, ज़ीरा और से'धानोन—इनको गरम जलमें पीस कर, तत्काल नस्य देनेसे "कर्णक" की पीड़ा शान्त होती है।

(१२) दूबके रसकी नास देनेवे खून आना बन्द हो जाता है। अनारके

फूलके रसकी नास देनेसे खून आना बन्द होजाता है। लिफ-लेका काढ़ा और दूबका रस मिलाकर नास देनेसे खून बन्द हो जाता है। रक्तष्ठीवी सन्निपातमें जो मुँहसे खून गिराता है, उसमें इन तीनों नस्योंमेंसे किसी न किसी नस्यसे अवश्य लाभ होता है।

(१३) महुएका सार, सोंठ, वच, मिर्च और सेंधानोन—इनको गोमूत्र या गरम पनीमें पीसकर, नाकमें चढ़ानेसे वेहोश मनुष्य जाग उठता है।

(१४) सहँजनेकी जड़के रसमें काली मिर्चोंका चूर्ण मिलाकर, नाकमें चढ़ानेसे संज्ञारहित मनुष्यको शीघ्र ही ज्ञान हो जाता है।

(१५) रोगी वेहोश हो तो पीपलामूल, सेंधानोन, पीपल और महुएके फूल—इन चारोंको ६।६ माशे लेकर पीस लो। पीछे उस पिसे चूर्णमें २ तोला कालीमिर्चका चूर्ण मिला लो। इस चूर्ण में से ज़रासा चूण गरम जलमें मिलाकर नास दो। इससे रोगीको होश हो जायगा।

(१६) मालकाँगनीका तेल और पिंडारकी जड़,—दोनोंको एकत्र पीसकर, नस्य देनेसे तन्द्रा नाश होती है।

(१७) सेंधानोन, सँहजनेके बीज, सरसों और कूट—इनको एकत्र वकरेके मूतमें पीसकर नस्य देनेसे तन्द्रा दूर होती है।

नोट—कोई-कोई सहँजनेके बीजोंकी जगह सफेद मिर्च लेते हैं।

(१८) चमेलीके फूल, मूँगा, कालीमिर्च, कुटकी, वच और सेंधानोन —इन सबको एकत्र वकरेके मूतमें पीसकर, नास देनेसे तंद्रा नाश होती है।

(१९) कालीमिर्चको अदरखके रसमें पीसकर सूँघनेसे होश हो जाता है।

(२०) पारा और गन्धककी कजली करके, उसे लहसनके रसमें मिला कर, नास देनेसे होश हो जाता है। अगर रोगीको तंद्रा हो और वह बकवाद करता हो; तो उसी कजलीको मिर्चके साथ मिलाकर नास देनी चाहिये। इसका नाम "सन्निपात ज्वरारि रस" है।

(२१) शुद्ध पारा, सीसा-भस्म, ताम्रभस्म, मैनशिल, शुद्ध नीलाथोथा—इनको बराबर-बराबर लेकर, खरलमें डालकर, इन्द्रायनके रस के साथ खरल करो और चने-समान गोलियाँ बनालो और सुखा कर शीशीमें रख लो। इस गोलीको पानीमें घिसकर सुँघाने सेही सन्निपात भाग जाता है। इसका नाम "कुलवधूरस" है।

(२२) बड़ी करेलीका १ सूखा फल, पीपल और सोंठ—इनको महीन पीसकर, काग़ज़की नली द्वारा नाकमें फूँकनेसे छींक आती हैं और मूर्च्छा नाश हो जाती है। समय पर काम लेने योग्य परीक्षित नुसख़ा है।

नाना प्रकार के रोगों पर नस्य।

—☆☆☆—

(२३) वातविकारवालेको गुड़ और सोंठ मिलाकर नास दो। (२) पित्तविकारमें मिश्री, घी और मुलहठीको मिलाकर नास दो। (३) कफके विकारमें तुलसीके और अडूसेके रसको मिलाकर नास दो। (४) अगर सिरमें कीड़ा हो तो बायबिड़ङ्ग, हींग और पीपलको मिलाकर नास दो। (५) अगर खून भर जानेसे सिर भारी हो, तो खाँड़ और केशर को घीमें भूनकर नास दो। (६) षड्विन्दुतेलकी नास देनेसे सिरके सभी रोग आराम होते हैं; परीक्षित है। (७) दूबके रस और अनारके फूलके रसकी नास देनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है। (८) स्त्रीके दूध,

महावरका रस या मक्खीकी विष्ठाकी नास देनेसे हिचकी दूर हो जाती है। (६) दूबके रसमें आमकी गुठली पीसकर मिलाने और नास देनेसे बहती हुई नकसीर आराम हो जाती है। ये सभी नुसखे परीक्षित हैं; कभी फेल होनेवाले नहीं। विचारपूर्व्वक जहाँ जिसकी ज़रूरत हो, काममें लानेसे सिद्धि होगी।

नस्य लेनेकी विधि।

जिसे नस्य देनी हो, उसे सीधा सुलाओ। माथा ऊँचा रखो, सिर लम्बा कर दो और हाथ पैर फैला दो। रोगीकी आँखों पर कपड़ा ढक दो। पीछे नाक ऊँची करके नस्य दो। नस्य लेनेवाला नस्य लेनेके समय सिरको न हिलावे, न क्रोध करे, न हँसे और न किसीसे बोले। पीछे उठकर छींक ले। नाक और मुँहसे पानी गिरेगा। नस्य लेनेवालेको चाहिये कि, दाहिने बायें थूके, सामने न थूके।

नस्यका समय।

कफ नाश करनेको सवेरेके समय नस्य दो। पित्त नाश करनेको दोपहरके समय नस्य दो। वायुनाश करनेको साँझके समय नस्य दो। अगर रोगका ज़ोर हो तो रातको नस्य दो।

नस्यके भेद।

इसके दो भेद हैं (१) रेचन (२) स्नेहन। रेचन नस्य वातादि दोषों को निकाल देता है और स्नेहन धातु बढ़ता है। रेचन नस्य भी दो तरह की होती है, (१) अवपीड़न (२) प्रधमन। सोंठ, मिर्च, बच प्रभृति तीक्ष्ण दवाओंको पानीके साथ पीसकरकर लुगदीसी बनाकर, उसको कपड़ेमें रख और निचोड़कर रस निकाल लेते हैं। उसकी ४।६ या ८

बूँद नाकके दोनों छेदोंमें टपकाते हैं। इसे "अवपीड़न नस्य" कहते हैं। अवपीड़न नस्य गलेके रोग, सन्निपात, अत्यन्त नींद, विषमज्वर, मनके विकार और कृमिरोगमें देनी चाहिये। दूसरी प्रधमन नस्यका यह कायदा है, कि एक ६ अङ्गुल लम्बी नली ऐसी बनानी चाहिये, जिसके दो मुँह हों। उस नलीमें सोंठ, मिर्च आदि जिस दवाकी नस्य देनी हो, भरलो और उसका एक सिरा रोगीकी नाकमें लगाकर दूसरा अपनी ओर रखकर फूँक मारो। आजकल कागज़की नलीही बना लेते हैं और उससे काम निकल जाता है। बहुत ही उत्कट दोषोंमें यह प्रधमन नस्य देनी चाहिये। बेहोशी, मूर्च्छा, संज्ञा-नाश तथा मृगी वगैरःमें ऐसी नस्य देते हैं।

सन्निपातज्वरोंमें इन्हीं नस्योंसे काम पड़ता है। धातु बढ़ानेवाली नस्य—मस्तक-रोग, नाकके रोग, नेत्ररोग, आधाशीशी, मुखशोष, कर्णनाद, पलितरोग (असमयमें बाल पकना) प्रभृति रोगोंमें देते हैं। इनमें घी वगैरः चिकने और खाँड़ वगैरः मीठे पदार्थों से नस्य देते हैं; जैसे, घीमें केशर मिलाकर नस्य देनेसे अथवा दूधमें खाँड़ डालकर नस्य देनेसे वातरक्तकी पीडा शान्त होती है। षड्विन्दु तेल से सिरका दर्द और समलवायु शान्त होती है। नारायणतेल या माषादितेल वगैरःकी नस्य देनेसे भौं, कनपटी, मस्तक और आँख प्रभृतिके रोग नाश होते हैं।

सन्निपातनाशक अञ्जन।

(१) लोहका चूर्ण, सफेद लोध, अञ्जन, कालीमिर्च और गोरोचन—इन सबको एकत्र पीसकर, आँखोंमें आँजनेसे तन्द्रा दूर होती है।

(२) सिरसके बीज, पीपल, कालीमिर्च और कालानोन—इन सबको

एकत्र गोमूत्रमें पीसकर अञ्जन बना लो। इस अञ्जनके आँखोंमें आँजनेसे चैतन्यता होती है।

नोट—कोई सेंधानोन लेते हैं। कोई बीजों की जगह सिरसकी छाल लेते हैं।

(३) लहसुन, मैनसिल और वचको महीन पीसकर छान लो। इसका अञ्जन नेत्रोंमें लगानेसे होश होता है। अथवा मैनसिल और घोड़ावचको लहसनके रसमें घिसकर आँजना चाहिये। ये उपाय परीक्षित हैं।

(४) सिरसके बीज और कालीमिर्च—इन दोनोंको बकरेके पेशाबमें पीसकर आँखोंमें आँजनेसे संज्ञा उत्पन्न होती है।

(५) लहसन, पीपल, कालीमिर्च, वच, सोनापाठाके बीज और सेंधा-नमक—इनको गोमूत्रमें पीसकर आँजनेसे समस्त दुष्ट सन्निपात भाग जाते हैं। परीक्षित है।

(६) पीपल, मिर्च, वच, सेंधानोन, करञ्जके बीज, हल्दी, आमले, हरड़, बहेड़ा, सरसों, हींग और सोंठ—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर गोली बना लो और छायामें सुखा लो। इस गोलीके जलमें घोटकर आँखोंमें आँजनेसे चेतना उत्पन्न होती है; इसीसे इसको "प्रचेतना" कहते हैं। इस गोलीसे चित्तभ्रम, स्मृति-नाश—याद न रहना, भूतबाधा सरदीका सिर दर्द, आँखका दर्द और भ्रम नाश होता है। यह गोली "चित्तभ्रम" सन्नि-पातमें अच्छा काम देती है। परीक्षित है।

(७) सेंधानमक, कपूर, मैनशिल और छोटी पीपर—इन चारोंको घोड़ेकी लार और शहदमें महीन घोटकर, नेत्रोंमें आँजनेसे "तन्द्रिक सन्निपातका नाश होता है। परीक्षित है।

(८) सोंठ, मिर्च, पीपल, करञ्जके बीज, हरड़, बहेड़ा, आमला, देव-दारु, सेंधानोन और तुलसी—इनको पानीमें पीसकर बत्ती सी बना लो। इस बत्तीको आँखोंमें आँजनेसे तन्द्रा नाश होती है।

(९) सेंधानोन और छोटी पीपर पानीमें खूब महीन पीसकर आँजने से "भुग्ननेत्र" सन्निपातमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(१०) शहत, सेंधानोन, मैनसिल और कालीमिर्च—इन सबको एकत्र पीसकर आँखोंमें आँजनेसे अत्यन्त बेहोशी नाश होजाती है। यह अञ्जन दण्डपाणिने कहा है।

(११) गन्धक और विड लवणके चूर्णको शहतमें मिलाकर, काँसीके बर्तनमें घिसकर नेत्रोंमें आँजनेसे रोगीको होश हो जाता है और तन्द्रा नाश होजाती है।

(१२) समन्दरफल पानीमें घिसकर आँजने से सन्निपात में लाभ होता है।

(१३) शुद्ध जमालगोटे की मींगी ४० माशे, कालीमिर्च ४ माशे और पीपलामूल ४माशे—इन सब को पीसकर, पीछे खरल में डालकर, जँभीरी नीबू के रस की भावना सात दिन तक देकर गोलियाँ बना लो। इस रस के आँखों में आँजने से सन्निपात नाश हो जाता है। इस को "दन्तबीजादि अञ्जन" कहते हैं। परीक्षित है।

सन्निपातनाशक अवलेह।

(१) कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पीपल, जवासा और कलौंजी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस लो। पीछे शहतमें मिलाकर चाटो। इसका नाम "अष्टाङ्ग अवलेह" है। इस अवलेहसे महादारुण सन्निपात, हिचकी, श्वास, खांसी और कंठरोग आराम होते हैं।

नोट—(१) अगर कफ की उल्बणता हो यानी कफ का ज़ोर जियादा हो, तो इन दवाओं के चूर्ण को अदरखके रस में चाटना चाहिये। ग्रन्थों में लिखा है,—इस अष्टाङ्ग चूर्ण को शहद या अदरख के साथ चाटने से तन्द्रा और खाँसी सहित दारुण मोह नाश हो जाता है। अष्टांग अवलेह कंठ के ऊपर के रोगों को नाश करता है, इसलिये इसे सन्ध्या के समय सेवन कराना चाहिये। जो अवलेह कंठ से नीचे के रोग नाश करनेवाला हो, उसे भोजन के पहले सेवन कराना चाहिये।

नोट—(२) कितने ही वैद्य "जवासे" के स्थान में "अजवायन" डालते हैं। वङ्गसेन में "काकड़ासिंगी" की जगह "भारंगी" लिखी है।

(२) उसीजे हुए आमलों को पीसकर, उन में दाख और सोंठ का चूर्ण मिला कर, शहत के साथ चाटने से श्वास, खाँसी, मूर्च्छा और अरुचि नष्ट हो जाती है।

(३) वेल की जड़, कूट, शहद और शंखाहुली (कौड़िल्ला)—इन के साथ ब्राह्मी का सेवन करने से जीभ शुद्ध होती है। इस का नाम "शाल्लूरपर्ण्यादि अवलेह" है। "जिह्वक सन्निपात" में इसे देते है।

(४) तेल के साथ या घी के साथ अथवा शहद के साथ हरड़ को चाटने से दाह नाश होता है। इसका नाम "पथ्यावलेह" है "रुग्दाह" का दाह नाश करनेको इसे अकसर देते हैं।

(५) तुलसी का स्वरस, शहत, राल, त्रिकुटा और सेंधानोन—इन सब को एकत्र मिला कर चाटने से बढ़ा हुआ कफ नष्ट हो जाता है और चैतन्यता होती है।

सन्निपात पर कवल।

—★★★—

(१) अदरखके रस में सेंधानमक और त्रिकुटे का चूर्ण मिलाकर, मुख में रखने से चैतन्यता होती है। इनकी गोली बना कर मुखमें रखनेसे भी यही लाभ होता है। इस गोली से कण्ठमें रुका

हुआ कफ बाहर निकल कर शरीर को हलका कर देता है तथा ज्वर, मूर्च्छा, श्वास, गलरोग और मुँहसे जल गिरना,—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२) चिरायता, अकरकरा, कुलीजंन, कचूर, पीपल और सरसों का तेल—इनको एकत्र पीसकर कवल बनावे और इसमें बिजौरे नीबू का रस डाल कर मुख में रखे, तो "जिह्वक सन्निपात" के दोष इस कवलके धारण करनेसे उसी तरह नाश हो जाते हैं; जिस तरह स्तुति करनेसे जन्मजन्मान्तर के दोषों को दशरथनन्दन रामचन्द्रजी दूर कर देते हैं।

(३) बिजौरे नीबूकी केसर, सेंधानोन और कालीमिर्च—इन को मिलाकर मुँह में रखनेसे जड़ता, मुँह सूखना और अरुचि नाश हो जाती है।

सन्निपातनाशक

उद्धूलन।

(१) त्रिकुटा, हरड़, लोध्र, पोहकरमूल, चिरायता, कुटकी कूट, अजवायन और कायफल—इनको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस कर, चूर्ण कर लेना चाहिये। इसको शरीर में मलनेसे अधिक पसीनों का आना, कण्ठरोध—गला रुकना और सन्धियों की पीड़ा शान्त होती है।

(२) भुनी हुई कुलथी को महीन पीसकर शरीरमें मलनेसे बहुत पसीनोंका आना बन्द हो जाता है।

(३) कायफल, कालाज़ीरा, लोध्र, पुराने आरने उपले, कुटकी, हरड़, निमक और अञ्जन – इन सब को महीन पीस कर शरीर में मलने से बहुत पसीना आना बन्द हो जाता है।

(४) चिरायता, कालाज़ीरा, कुटकी, वच और कायफल,—इन सब को बारीक पीस कर, शरीर में उद्धूलन करने यानी मलने से त्रिदोषज्वर और अभिष्यन्दिज्वर में हित होता है।

(५) ककोड़े (खेखसा) की जड़ का चूर्ण, कुलथी, पीपल, वच, कायफल, कालाज़ीरा, चिरायता, चीता, कायफल का पानी और हरड़—इनको पीस कर शरीर में मलने से "शीतांग सन्निपात" दूर होता है।

(६) पारा १ भाग, वत्सनाभ विष १ भाग, कालीमिर्च ४ भाग और धतूरे के फलों की भस्म ८ भाग—सब को एकत्र कर के, देह में मलने से, अत्यन्त ज़ोर से पसीना निकलता और शीत का वेग दूर हो जाता है।

(७) पीपल, कायफल, काकड़ासिंगी, वच, कूट, अजवायन, पोहकरमूल, सोंठ, कुटकी, पीपलामूल, देवदारू, मूँगका आटा, उड़द का आटा, पुरानी गच का चूना, पुरानी ईंटका कूकुआ (ईंट का घिसा हुआ चूर्ण), तूम्बेका चूर्ण, वच्छनाग विष और सिरस की राख,—इन १८ चीज़ों को बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर खूब महीन कर लो। पीछे एक गाढ़े कपड़े में तीन चार दफा छानो और शीशी में रख लो। इस चूर्ण के शरीर पर मलने से शीतांग सन्निपात दूर हो जाता है। यह उद्धूलन बड़ा अच्छा है।

नोट—मकान के फर्श में जो चूना लगा रहता है, उसी को गच का चूना कहते हैं ऐसे फर्श का चूना लेना चाहिये, जो ज़ियादा से ज़ियादा सालों का बना हुआ हो। ईंट को पत्थर पर घिसने से जो लाल-लाल सफूफ—चूर्ण तय्यार होता है, उसे ही कूकुआ कहते हैं। ईंट भी पुरानीसे पुरानी खोज कर लेने चाहिये।

(८) चिरायता, अजमोद, कुटकी, पीपल, कायफल और वच—इन को पीस छान कर चूर्ण बना लो। इस उद्धूलन या धुरे से

उस सन्निपात में काम लेना चाहिये, जिस में बहुत ही पसीने आते हों। परीक्षित है।

सन्निपातनाशक

निष्ठीवन।

(१) दाखको शहत में पीस कर, घी में मिलाकर, जीभ पर मलने से जीभ रसीली और नरम हो जाती है। जब जीभ, तालू, गला, और प्यास लगने का स्थान वात और पित्त से दूषित हो जाते हैं, तब शोष और जीभ में विरसता होती है तथा जीभ फटने लगती है। उसी विरसता और जीभ का फटना दूर करने के लिये इस दाख के निष्ठीवन से काम लेते हैं। परीक्षित है।

(२) अदरख के रस में सेंधानोन, सोंठ, मिर्च और पीपल को मिला कर, मुँह में कंठ तक भर लो और बारबार थूको। इस से मुख, तालू, कोठा, कन्धे, गर्दन, पसली, मस्तक और गला—इन में से छिपा हुआ भी कफ निकल कर चला आता है, शरीर हलका हो जाता है तथ सन्धियों का टूटना, ज्वर, मूर्च्छा, निद्रा, श्वास, गले की पीडा, मुख और नेत्रों का भारीपन, जड़ता और कफ का उत्क्लेश ये सब दूर हो जाते हैं। दोषों का बला-- बल विचार कर, इस को एक बार, दो बार, तीन और चार बार भी करना चाहिये। विद्वान् कहते हैं,—सन्निपात रोगियों के लिये यह परमोत्तम औषधि है।

(३) बिजौरे की केसर, अदरख, सेंधानोन, सोंठ, मिर्च और पीपल—को मिलाकर मुख में रखने से तथा ज़रा देर बाद दाँत, जीभ, मुख और तालू को घिसने और बारम्बार थूकते जाने से कंठ

और जीभ साफ़ होते हैं और कफ दूर होता है तथा रुचि होती है एवं खाँसी और श्वास शान्त होते हैं।

४) सोंठ, मिर्च, पीपल, चव्य, हरड़ और सेंधानमक—इन के चूर्ण से दाँत, जीभ और तालू को घिसने से गला साफ होता है, रूचि होती है, कफ नाश होता है, थुकथुकी दूर होती है और मुँह का स्वाद सुन्दर होता है।

—— ——

सन्निपात पर दागना।

शंखयोश्च भ्रुवोर्मध्ये दशमद्वार एव च।
ग्रीवायां दम्भयेच्छीघ्रं प्रलापे सन्निपातके॥
धनुर्वाते मृगीवाते ऽन्तके चित्तविभ्रमे।
अभिन्यासे च उन्मादे निश्चैतन्येतथावमौ॥
एतेषां चैव रोगाणां तप्तलोहशलाकया।
भ्रुवौशंखौ च पादौ च कृकाटी मूलरंध्रयो॥

प्रलापक सन्निपात में कनपटियों, भौंओं, दशम द्वार—ब्रह्मरंध्र और गर्दनमें कहीं दाग देना चाहिये ; धनुर्वात, मृगी, अन्तक, चित्तभ्रम, अभिन्यास, उन्माद वेहोशी और वमन में—लोहेकी शलाकासे—भौं, कनपटी, पैर, ठोडी और गुदा—इनमें से कहीं दाग देना चाहिये। एक जगह लिखा है :—

एवं विधेऽस्मिन् विहिते विधाने न याति संज्ञां यदियश्चजन्तुः।
तंपादमूले भ्रूकुटी ललाटे शलाकया लोहजया दहेत्तु॥

अञ्जन और नस्यादि से भी अगर सन्निपात ज्वरवालेको होश न हो, तो उसकी पगथली, भौं या ललाटको लोहेको गरम की

हुई शलाकासे दाग देना चाहिये। यह बात सभी सन्निपातोंके लिये कही गई है।

ज्वरों में औषधियों के जल ।

(१) **कटफलादि पान**—कायफल, हरड़, वहेडा, आमला, देव-दारू, चन्दन, फालसे, कुटकी, पद्माख और खस—इन दसों को १ तोला लेकर ६४ तोले जल में पकाओ। आधा जल रह जाने पर उतार लो। यह जल त्रिदोष, दाह और प्यास को नाश करता है। यह पान सब पानों में उत्तम है और बहुत दिनोंके ज्वरोंवालों के लिये अमृत है।

(२) **षड़ङ्गपान**—खस, लाल चन्दन, सुगन्धवाला, दाख, आमले और पित्तपापड़ा—इन छहोंको १ तोला लेकर, ६४ तोले जलमें पका कर, आधा जल रहने पर उतार लो। शीतल कर के इस के पिलाने से दाह, प्यास और ज्वर शान्त होता है। इस को "षड़ङ्गपान" कहते हैं। इस को "रुग्दाह" सन्निपात में देने से बड़ा लाभ होता है।

(३) **षड़ङ्गपान**—नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, सोंठ,खस और लाल चन्दन—इन छहों को १ तोला लेकर ६४ तोले जल में औटाओ। आधा जल रहने पर, उतार कर खूब शीतल कर लो। इसजल से दाह, प्यास और ज्वर शान्त होता है। इस को भी "षड़ङ्गपान" कहते हैं। पित्तदोष, मद्य विकार और विष से पीड़ितों के लिये, यह जल औटा कर और खूब शीतल करके देने से बड़ा हित होता है।

(४) कुम्भेर के फल, चन्दन, खस, महुए के फूल, फालसे, सारिवा और मिश्री,—इन से बनाया हुआ पान पित्तज्वर को नष्ट करता है।

सन्निपात नाशक लेप प्रभृति।

मूर्च्छानाशक लेप।

(१) पारा, वत्सनाभ, कालीमिर्च, नीलथोथा और नौसादर—इन पाँचों को एकत्र धतूरे के रस में और लहसन के रस में खरल करो। पीछे सिरके बीचके भाग के बाल सफाचट करा कर, वहाँ इस का लेप करो। इस से सन्निपातज्वर की बेहोशी नाश होती है। अगर कहीं हड्डी में दर्द हो, तो वहाँ भी इसका इसी तरह लेप करना चाहिये।

लघुसूचिकाभरण रस।

(२) बच्छनाग विष ४ तोले और शुद्ध पारा ४ माशे—इन दोनों को मिलाकर खरल कर लो। पीछे रेह से पुते हुए दो मिट्टी के शकोरे लेकर, एकमें इस खरल किये चूर्ण को रख दो और ऊपर से दूसरा शकोरा ढक दो। इसके बाद उनका मुँह मिला कर, कपड़मिट्टी कर दो। कपड़मिट्टी की पाँच छः तह करो, ताकि साँस न रहे। पीछे उनको धूप में सुखा कर, किसी ऐसे स्थान में जहाँ हवा न हो, चूल्हे पर चढ़ा कर, मन्दी-मन्दी आग ६ घण्टे तक बराबर लगाओ; पीछे उनको नीचे उतार लो और मुँह खोल लो। यह काम बहुत ही आहिस्ते और हलके हाथ से करना चाहिये। ऊपर के शकोरे में जो पारा लगा हो, उसे अचक-अचक उतार कर शीशी में रख लो और फौरन कागसे मुँह बन्द कर दो; हवा न लगने पावे। यही "सूचिकाभरण रस" है।

नोट—आजकल सौदागरों की दूकानों पर काँच की रकाबियाँ मिलती हैं उनमें भी यह रस तैयार किया जाता है ।

अगर सन्निपात रोगी बेहोश हो, पुराने घी की मालिश कराने अथवा और और उपाय करनेसे होशमें न आता हो ; तो आप सन्निपात रोगीके सिर के बाल, तालुए के स्थान पर, उस्तरे से मुँड़वा दो और किसी तेज़ पैनी चीज़ से या बारीक नश्तर से उस जगह की खाल छील कर घाव कर दो । जब खून निकलने लगे, तब आप उस शीशी में से सूई के अग्र भाग में जितना रस लगे, उतना रस निकालकर उस घावमें भर दो और अँगुलीसे तब तक मलते रहो, जबतक कि वह रस खूनमें न मिला जाय । जब वह रस खून में मिल जायगा, तब जमे हुए खून और कफ को दुरुस्त कर देगा और उसी समय बेहोश रोगी की मूर्च्छा नाश हो जायगी । इसी तरकीब से साँप के काटने से बेहोश हुआ आदमी भी होश में आजाता है । शेष में मस्तक को ज़रा से दूध से धो डालना चाहिये । इस रस से बेहोश तो होश में आजाता है ; पर दाह पैदा हो जाता है ; इसलिये उस समय गुलकन्द या दाख प्रभृति मीठे पदार्थ उसे देने चाहियें ।

रोटिका बन्धन ।

—✲✲—

लहसन, राई और सहँजना—इन तीनोंको गोमूत्रमें पीसकर रोटी बना लो । तवेपर रोटी सेकनेसे पहले, ज़रासा घी तवे पर लगा देनेसे रोटी आसानीसे सिक जायगी । रोटी सिक जाने पर, ब्रह्मरन्ध्र या मस्तकके तालुएको चाकू वगैरः से खुरच कर, सींगिया विष मलो और उसके बाद वह सिकी हुई रोटी गरम-गरम रोगी के सिरपर बाँध दो । उस रोटीको सिर पर उस समय तक रक्खो, जबतक रोगीको होश न हो जाय । अगर एकवार रोटी रखनेसे २।३ घण्टों

में चेत न हो, रोटी सूख जाय, तो दूसरी रोटी वैसीही बनाकरा बाँध दो। इस रोटीसे भी होश न हो, तो समझ लो कि, रोगी मौतके पञ्जेमें है। होश हो जानेपर, अगर रोगी रोटीको न सह सके, तो फौरन रोटीको खोल लो

भयानक सन्निपातमें जब किसी तरह होश नहीं होता, तब साँप और बिच्छुओंसे रोगीको कटाते हैं। कहा है—"दंशनैर्वृश्चिकैः सर्पैः सन्निपाते सुदारुणे इत्यादि।"

सन्धिक सन्निपातज्वरकी चिकित्सा।

क्काथ।

(१) कचूर, देवदारु, हरड़, बहेड़ा, आमला, विधारा, रास्ना, सोंठ, गिलोय और शतावर—इन दसों दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, मन्दी-मन्दी आगसे काढ़ा बनाकर, और "गूगल" डालकर पिलानेसे सन्धिक "सन्निपात"की पीड़ा दूर हो जाती है। शीतल पदार्थों को सेवन न करना चाहिये।

(२) बच, पित्तपापड़ा, जवासा, कटसरैया, गिलोय, अतीस, देवदारू नागर मोथा, सोंठ, विधारा, रास्ना, गूगल, बृहत्दन्ती (अभावमें दन्ती) और शतावर—इन १४ दवाओंका काढ़ा सन्धिक सन्निपातकी पीड़ा, जाँघोंकी जड़ता, ग्लानि, भ्रमण और पक्षाघात (एक तरफका अङ्ग मारा जाना) को नष्ट करता है।

नोट—घोड़ा बच, धमासा, गिलोय, भारंगी की जड़, कटसरैया, देवदारु, नागरमोथा, सोंठ, विधारा, रासना, गूगल, असगन्ध, अरंड की जड़ और शतावर—इतका काढ़ा सन्धिक सन्निपात, जड़ता, ग्लानि, भ्रम और पक्षाघात को नाश करता है। परीक्षित है। इस में और ऊपर के नुसखे में ३।४ दवाओं का भेद है। हमने इस तरह कई दफा आजमाया है।

(३) देवदारु, कचूर, दूनी गिलोय, रास्ना और सोंठ—इन पाँचोंके काढ़ेमें गूगल मिलाकर पीनेसे सन्धिक सन्निपात और सन्धिगत वायु नाश होती है। परीक्षित है।

(४) नागरमोथा, अरण्डीकी जड़, हरड़, काले फूलका पियावाँसा, देवदारु, गिलोय, रास्ना, शतावर, कचूर, कुटकी, अडूसा, सोंठ पञ्चमूलकी पाचों दवाएँ और असगन्ध—इन १८ दवाओंका काढ़ा गलेकी नसोंका जकड़ना और सन्धियोंकी पीड़ाको दूर करता है।

(५) रास्ना, हरड, गिलोय, कुटण्टक (सहचर कटसरैया), नागरमोथा शतावर, सोंठ, देवदारु, कुटकी, कचूर, अडूसा, अरण्डीकी जड़ और दशमूल—इन २२ दवाओंका काढ़ा सन्धिक सन्निपात, मन्यास्तम्भ (गर्दन जकड़ना), अंतवृद्ध, सब तरह के ज्वर, अरुचि और सन्धियोंकी सब तरहकी पीड़ाको दूर करता है। परीक्षित है।

(६) रास्ना, देवादारु, कचूर, वृद्धदारु, सोंठ, गिलोय, त्रिफला और शतावर,—इनका काढ़ा "गूगल" डालकर पीनेसे सन्धिक सन्निपात नाश होता है। परीक्षित है।

(७) नागरमोथा, गिलोय, रास्ना, देवदारु और शतावर—ये पाँचों एक-एक तोला ; अरण्डीकी जड़की छाल, कचूर, कुटकी, रूसेके पत्ते और सोंठ—ये पाचों सात-सात माशे ; दशोंका वज़न कुल आठ तोले ; कुल वज़न आठ तोलेके चार भाग करके, दो दो तोलेकी चार खूराक बना लो। पीछे कोई डेढ़ पाव जलमें एक मात्रा औटाओ ; चौथाई पानी रहनेपर उतारलो। पीछे मल छानकर शीतल करलो और ३ माशा शहद मिलाकर पिला दो। इस तरह दोनों समय इस काढ़ेके पिलानेसे सन्धिक सन्निपात आराम हो जाता है। यह नुसखा परीक्षित है।

(८) गिलोय, अरण्ड की जड़, सोंठ, देवदारु, रास्ना और हरड़ का काढ़ा, सवेरेके समय, देने से सन्धिक सन्निपात और सब तरह के वात रोग नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस सन्निपातमें लंघन बहुत हलका कराना चाहिये। सन्निपातनाशक धूप देनी चाहिये। औटाकर शीतल किया हुआ जल पिलाना चाहिये। पसीने न आते हों, तो पसीने निकालने चाहियें। सन्निपातनाशक पेया देनी चाहिये। वालुका स्वेद वात और कफके रोगोंको, मस्तकके शूलको और शरीरके टूटने आदिको दूर करता है, शरीर के छेदोंको नरम करता है, जठराग्निको आमाशयमें स्थापित करता है और वातकफके स्तम्भको तोड़कर ज्वरको नाश करता है।

वालुका स्वेद।

—※★※—

एक ठीकरेमें वालू भरकर उसे खूब गरम करलो। उस ठीकरेको रोगीके सामने या नीचे इस तरह रखो कि, उसकी भाफ रोगीको लगे। रोगीको कपड़ा उढ़ा दो और गरम वालू पर काँजीके छींटे दो, इस तरह वारम्वार करनेसे रोगीके शरीरसे पसीना निकलेगा। वालुका स्वेदकी और तरकीब वातज्वर और वातकफज्वरकी चिकित्सामें (पृष्ठ १७० और २१६-२१७ में) लिख आये हैं।

धूप।

—※—

गूगल, राई, कड़वे नीमकी पत्ती और राल—इनकी धूप सन्धिक सन्निपातको नाश करती है।

अन्तक सन्निपातकी चिकित्सा।

—★★★—

इसकी चिकित्सा नहीं है। इसीसे अनेक वैद्योंने इसकी कोई दवा ही नहीं लिखी है। "भावप्रकाश"में लिखा है :—"अन्तक सन्नि-

पातमें—ज्वरमें लंघन आदि नियमोंको, ज्वरनाशक काथोंको और रोगनाशक यूष आदिको छोड़कर, ज्वरको हरनेवाले और प्राणोंके रक्षक मृत्युञ्जय सदाशिवका ध्यान करना चाहिये। कहा है :—

> भिषग्भिरिति निर्णीतं सन्निपातेऽन्तकाभिधे।
> भेषजं जाह्नवीनीरं वैद्योगोविन्द एवहि॥

अन्तक सन्निपातमें गङ्गाजल तो दवा है और विष्णु भगवान् ही वैद्य हैं, ऐसा वैद्योंने निश्चय किया है।

वैद्योंने इस सन्निपातज्वर रोगीकी चिकित्सा न करनेकी राय दी है; क्योंकि इस सन्निपातवाला रोगी बचता नहीं।

रुग्दाह सन्निपातकी चिकित्सा।

काथ।

—※—
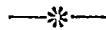
(१) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, सोंठ, खस और लाल-चन्दन—इन छै औषधियोंको चार-चार माशे लेकर काढ़ेकी रीतिसे औटाओ, किन्तु आधा जल रहनेपर उतार लो। शीतल होनेपर, मलछानकर, ३ माशे मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इसी तरह सवेरे शाम दोनों समय पिलानेसे यह काढ़ा "रुग्दाह सन्निपात" को नाश करता है। इसके पीनेसे पित्तज्वर, दाह, प्यास और वमन ये सब नाश होते हैं। यह नुसख़ा पित्तज्वर और रुग्दाह दोनोंमें लाभदायक है। परीक्षित है।

नोट—ये षड़ङ्गपानीयकी औषधियाँ हैं। इसमें कोई सोंठ लेते हैं और कोई धनिया लेते हैं। यहाँ सोंठ लेना ही ठीक है। "चरकके चिकित्सास्थान" में लिखा है,—सब तरहके ज्वरों में, विशेषकर पैत्तिक और मद्यपानजन्य ज्वरोंमें, प्यास और

ज्वर शान्त करनेके लिये—नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खस, लालचन्दन, सुगन्धवाला और सोंठ इनके साथ सिद्ध किया हुआ जल शीतल करके पीनेको देना चाहिये। जिस तरह वातकफात्मक ज्वरमें रोगीको तृषा लगनेपर गरम जल देना चाहिये, उसी तरह पैत्तिक और मद्यपानजनित ज्वरमें तिक्त औषधियोंके साथ सिद्ध किया हुआ जल देना चाहिये। गरम जल और यह षड़ङ्गपानीय दोनों ही जल ज्वरनाशक, स्रोतोंको शोधनेवाले, बलकारी, रुचिकरनेवाले, पसीना लानेवाले और मंगल करनेवाले हैं। जब यह षड़ङ्गपानीय जलकी तरह पीनेको देना हो, तब एक तोला सब दवायें लेकर ६४ तोला जलमें औटानी चाहिये और आधा जल रहनेपर उतार लेनी चाहिये। अगर रोगीके भीतर दाह जियादा हो, तो नीचेका नुसखा पिलाना चाहिये।

(२) खस, लाल चन्दन, सुगन्धवाला, दाख (बीज निकालकर), सूखे आमले और पित्तपापड़ा—इन छहों दवाओंको २ तोला लेकर काढ़ा बनाओ। खूब शीतल होजानेपर, ३ माशे मिश्री मिलाकर पिलाओ। इस काढ़ेके दोनों समय पिलानेसे—दाह, प्यास और रुग्दाहका ज्वर शान्त हो जाता है।

नोट—इस नुसखेकी दवा १ तोला लेकर ६४ तोला जलमें पकाकर, आधा जल रहनेपर उतार लो और इस जलको पिलाओ। इस षड़ङ्गपानीयसे दाह, तृषा और ज्वर शान्त होते हैं।

(३) धनियेके चाँवलोंको, रातके समय, कोरी हाँड़ीमें भिगोदो। सवेरे जलको छानकर मिश्री मिलाकर, पीनेसे भीतरका दाह और पित्तज्वर थोड़े ही समयमें शान्त हो जाता है। धनिया भिगोकर, सवेरे चीनी मिलाकर पीनेसे पित्तज्वरका पुराना दाह भी आराम हो जाता है।

(४) हरड़, पित्तपापड़ा, कुटकी, देवदारु, अमलताश, दाख और नागरमोथा—इन सातोंको बराबर-बराबर चार-चार माशे लेकर काढ़ा बनाकर, सवेरे शाम पिलानेसे रुग्दाहका महानज्वर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) नागरमोथा, कुटकी, घोड़ावच, अमलताशका गूदा, त्रिफला, कड़वा नीम, कड़वी तोरई, दशमूल और चिरायता—इनका

काढ़ा सब तरहकी वातव्याधि और रुग्दाह सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

दाहनाशक उपाय ।

पथ्यावलेह ।

दाहके नष्ट करनेके लिये घी या शहतके साथ "हरड़"को चाटना चाहिये। इससे दाह, ज्वर, खाँसी, रक्तपित्त, विसर्प, श्वास और वमन, ये सब नाश होते हैं। परीक्षित है।

लेप ।

बेरके पत्तोंको दहीमें पीसकर शरीरपर लेप करनेसे शरीरकी जलन या दाह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

कपूर, सफेदचन्दन और नीमके पत्ते दहीमें पीसकर लेप करनेसे दाह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर सारे शरीरमें दाह न हो, हाथ पैरोंमें ही दाह हो ; तो जहाँ दाह हो वहीं लेप करना चाहिये।

जलधारा ।
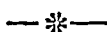
रुग्दाह सन्निपातज्वर रोगीको सीधा सुलाकर, उसकी नाभिपर एक ताम्बे या काँसीका गहरा वासन रखो। पीछे उसमें अत्यन्त शीतल जलकी धारा छोड़ो। इस उपायसे तत्काल दाह शान्त हो जायगा।

अवगुन्ठन ।

कपड़ेको काँजीमें भिगोकर, रोगीके शरीरपर डालनेसे दाह नाश हो जाता है।

तर्पण।

दाह और वमनसे पीड़ित, दुबले, निराहार रहनेवाले प्यासे मनुष्यको मिश्री और शहद मिलाकर खीलोंका सत्तू खिलाओ।

दाहनाशक और उपाय।

चन्दन आदिका लेप किये हुए, मोतियोंकी माला पहने हुए, जवान स्त्रीको रोगीकी छातीसे लगाओ ; पर मैथुन न करने दो। फव्वारेवाले मकान या बागमें रोगीको रखो। और दाहनाशक उपाय पृष्ठ २८४-२८८ में देखिये।

धूप।
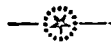
काली अगर, कपूर, कुंदरुका वृक्ष, नखद्रव्य, तगर, खस, सफेद चन्दन और राल,—इन सबकी धूप देनेसे रुग्दाह सन्निपात नाश होता है। परीक्षित है।

चित्तभ्रमकी चिकित्सा।

क्वाथ।

(१) दाख, देवदारु, कुटकी, नागरमोथा, आमले, हरड़, अमलताश, चिरायता, पित्तपापड़ा और पटोलपत्र—इन दसों दवाओंको बराबर-बराबर अढ़ाई-अढ़ाई माशे लेकर, काढ़ेकी रीतिसे काढ़ा बनाकर, दोनों समय, पिलानेसे,—"चित्तभ्रम सन्निपात" आराम होता है। यह नुसख़ा "भावप्रकाश"का है ; पर हमारा परीक्षित है।

नोट—कभी-कभी "कुटकी" के स्थानमें "गिलोय" भी लेते हैं।

(२) ब्राह्मी, पाढ़, पटोलपत्र, सुगन्धबाला, हरड़, पित्तपापड़ा, अमलताश, कुटकी और शंखाहुली—इन ६ दवाओंको उसी तरह बराबर-बराबर तीन-तीन माशे लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे चित्तभ्रम सन्निपात आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—अगर रोगीको दस्त होते हों; तो हरड़ और अमलताशका गूदा निकाल लेना चाहिये।

(३) ब्राह्मी, वच, शतावरी, हरड़ वहेड़ा, आमला, कुटकी, नागबला, आरग्वध, चिरायता, नीम, नागरमोथा, कोशातकी, दाख और दशमूल—इन २४ दवाओंको एक एक माशे लेकर, काढ़ा बना कर पीनेसे चित्तभ्रम और रुग्दाह दोनों सन्निपात ज्वर आराम होते हैं।

(४) हरड़, पित्तपापड़ा, कुटकी, दाख, दारूहल्दी, नागरमोथा, चिरायता, ब्राह्मी और पटोलपत्र—इन ६ दवाओंका काढ़ा भी चित्त-विभ्रम सन्निपातको आराम करता है। परीक्षित है।

अंजन।

—※—

(५) पीपल, घोड़ा वच, कालीमिर्च, सेंधानमक, करञ्जके बीज, हल्दी, आमले, हरड़, वहेड़ा, सरसों, हींग और सोंठ—इन १२ दवाओंको वकरेके मूत्रमें पीसकर, गोली बनाकर और छायामें सुखा कर, नेत्रोंमें आँजनेसे चेतना उत्पन्न होती है; इसीसे इस गोली को "प्रचेतना" कहते हैं। इस गोलीसे चित्तका भ्रम, स्मरण न रहना, भूतबाधा, सिरका दर्द, आँखका दर्द और भ्रम नाश होता है। परीक्षित है।

नस्य।

—※—

(६) गुड़, सोंठ और पीपल—इनको पीसकर, अगस्तियाके रसमें मिलाकर नास देनेसे चित्तभ्रम दूर होता है। परीक्षित है।

धूप।

—※—

(७) कपूरकचरी, सुगन्धवाला, नागरमोथा, महुआ, चन्दन, देवदारू, शहद, गूगल और नखद्रव्य—इन ६ दवाओंका चूर्ण तथा अगर लामज्जक (अभावमें खस) और इलायची—मिलाकर इन १२ की धूप बनाकर देनेसे "चित्तभ्रम" नाश होता है, ग्रहदोष दूर होता है, लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है और सौभाग्य की वृद्धि होती है। परीक्षित है।

शीताङ्ग सन्निपातकी चिकित्सा।

क्वाथ।

—※—

(१) आककी जड़, ज़ीरा, काली मिर्च, पीपल, भारङ्गी, कटेरी, सूना सोंठ और पोहकरमूल—इनको गोमूत्रमें पकाकर सेवन करने से तत्काल ही शीताङ्ग सन्निपातकी पीड़ा, मोह—बेहोशी, श्वास, कफकी अधिकता और खाँसी नाश हो जाती है।

नोट—इसनुसखेमें "काकड़ासिंगी" भी कोई-कोई मिलाते हैं; और अवश्य मिलानी चाहिये। इसकी प्रत्येक दवा तीन-तीन माशे लेकर, काढ़ेकी रीतिसे काढ़ा बनाकर, दोनों समय पिलानेसे शीताङ्ग सन्निपात आराम होता है। आककी और भारङ्गीकी जड़की छाल लेनी चाहिये तथा कटेरी का पञ्चाङ्ग लेना चाहिये। परीक्षित है।

उद्धूलन।

—※—

(२) कर्कोड़ा (खेखसा) की जड़का चूर्ण, कुलथी, पीपल, वच, कायफल, काला ज़ीरा, चिरायता, चीता, कायफलका पानी और हरड़—इन दसोंको एकत्र पीसकर मलनेसे शीतांग सन्निपात दूर होता है।

कड़वी तूँबीके बीज, कुलथी, चीता, चिरायता, हरड़, पीपल, घोड़ावच, कायफल, काला ज़ीरा और पित्तपापड़ा—इन दसों को बराबर-बराबर लेकर पीस कूटकर, कपड़ेमें छानकर शरीरमें मलनेसे, शीतांग सन्निपात आराम होता है। परीक्षित है।

पारा १ भाग, वत्सनाभ विष १ भाग, काली मिर्च ४ भाग और धतूरेके फलकी भस्म ८ भाग—इन सबको एकत्र खरल करके देहमें मलनेसे, अत्यन्त पसीना आना और शीतका वेग दूर हो जाता है।

नोट—और उद्धूलन पृष्ठ २१५-२१६ में लिखे हैं।

(३) मस्तकमें टोप बाँधना - कलौंजी, पोहकरमूल, कूट, असगन्ध, वच, एलुआ और खुरासानी अजवायन—इन सातोंको महीन पीस, गेहूँकी रोटीमें रखकर और गरम करके, मस्तक पर बाँधनेसे शीत नाश हो जाता है। जब जी घबराय, शीत नाश हो जाय, रोटीको खोल लेना चाहिये।

तन्द्रिक सन्निपातकी चिकित्सा।

काढ़े।

(१) कटेरी, गिलोय, पोहकरमूल, सोंठ और हरड़—इन पाँचोंका काढ़ा बनाकर पोनेसे तन्द्रिक सन्निपात दूर हो जाता है।

(२) भारंगी, गिलोय, नागरमोथा, भटकटैयाका पञ्चाङ्ग, हरड़, पोहकरमूल और सोंठ—इन सातोंका काढ़ा पीनेसे, ३ दिनमें, घोर तन्द्रिक सन्निपात आराम होता है। परीक्षित है।

(३) नीमकी ताज़ा गिलोय १ तोला, परवलके डाल पत्ते ६ माशे और रूसेकी पत्ती ३ माशे—इन तीनोंका काढ़ा पिलानेसे भी

तन्द्रिक सन्निपात आराम होता है। यह नुसख़ा उस दशामें देना चाहिये, जब कि नं० १ और नं० २ के नुसख़ोंसे रोगीको ज़ियादा गरमी मालूम हो।

नोट—कभी-कभी ज़रूरत होनेसे इस में त्रिकुटा भी मिला लेते हैं।

नस्य।

(४) कालीमिर्च, सुगन्धवाला, दारूहल्दी, वच, कूट, वायबिड़ङ्ग, सोंठ, हल्दी और इन्द्रायन—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर, नास देनेसे तन्द्रिक सन्निपात दूर हो जाता है।

अञ्जन।

—※※—

सेंधानोन, कपूर, मैनसिल और पीपल—इन चारोंको घोड़ेकी लार और शहत में पीसकर, आँखोंमें आँजनेसे तन्द्रिक सन्निपात नाश हो जाता है।

नोट—ये सब नुसखे परीक्षित हैं। अगर और भी नस्य या अञ्जनकी ज़रूरत हो, तो पीछे पृष्ठ२७२-२७४ में देखिये।

कंठकुब्ज सन्निपापातकी चिकित्सा।

क्वाथ।
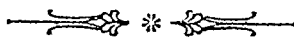
(१) हरड़, बहेड़ा, सोंठ आमला, मिर्च, पीपर नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजौ, अडूसा और हल्दी—इन ११ दवाओंका काढ़ा कण्ठकुब्जको इस तरह नाश करता है, जिस तरह सिंह हाथीको नाश करता है।

नोट—त्रिकुटा, त्रिफला, कुटकी, इन्द्रजौ, हल्दी और दारूहल्दी—इनका काढ़ा भी कंठकुब्ज को नाश करता है। यह और ऊपरवाला काढ़ा दोनोंही परीक्षित हैं।

(२) चिरायता, कुटकी, पीपल, इन्द्रजौ, कटेरी, कचूर, बहेड़ा, हरड़, देवदारू, मिर्च, कायफल, नागरमोथा, अतीस, आमला, पोहकरमूल, चीता, काकडासिंगी, अडूसा और सोंठ—इन १९ दवाओंका काढ़ा कण्ठकुब्ज सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

(३) काकड़ासिंगी चीता, हरड, अडूसा, कचूर, चिरायता, भारङ्गी हलदी, बडी कटेरी, पोहकरमूल, मोथा, इन्द्रजौ, कुटकी और कालीमिर्च—इन १४ दवाओंका काढ़ा दाह, मोह, अरूचि, श्वास गलग्रह, (गला-रुकना), अग्निमांद्य, अफारा, अभिन्यास सन्निपात और खाँसी—इनसे युक्त कण्ठकुब्ज सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

नोट—नुसखोंमें अडूसेकी पत्ती, हरड़का वक्कल और कटेरीका पञ्चाङ्ग लेना चाहिये। रोगीको ताक़तवर यूष देते रहना चाहिये, जिससे ताक़त न घटे और गला न सूखे।

नस्य।

(४) चिरचिरेका विना जल डाले निकाला हुआ रस और पीपरका चूर्ण—इन दोनोंको एकत्र करके, इसकी नास देनेसे कण्ठकुब्ज सन्निपातमें खूब फायदा होता है। और नस्यों के लिये पृष्ठ २६७-२७२ देखिये।

कर्णक सन्निपातकी चिकित्सा।

क्वाथ।

(१) भारङ्गी, अरणी, पोहकरमूल, कटेरी, सोंठ, मिर्च, पीपल, बच, नागरमोथा, गिलोय, काकडासिंगी, कुटकी, और रास्ना—इन १३ दवाओंका काढ़ा पीनेसे अन्तक की पीडा शान्त होती है।

(२) दशमूल, कुटकी, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, सोंठ, चिरायता,

और मिर्च—इन ६ दवाओंका काढ़ा पीनेसे कर्णक सन्निपात की तकलीफ ज़बर्दस्ती दूर हो जाती है। परीक्षित है।

(३) रास्ना, असगन्ध, नागरमोथा, कटेरी, भारङ्गी, वच, पोहकरमूल, कुटकी, काकड़ासिंगी और हरड़—इन दसोंका काढ़ा पीनेसे कर्णक सन्निपात निस्सन्देह आराम हो जाता है। यह नुसख़ा भी परीक्षित है।

लेप।

(४) अगर सूजन हलकी या भारी हो, पर वह न पकी हो तो उसको नीचे लिखे हुए लेपों से नष्ट करो। अगर पक गई हो, तो नश्तर से चिरवाकर उसकी राध निकलवा दो। पीछे घावका इलाज घावकी तरह करो।

हल्दी, इन्द्रायण, कूट सेंधानोन, देवदारू और हिंगोटकी जड़ इन छहोंको आकके दूधमें पीसकर लेप करनेसे कर्णक नाश हो जाता है। इन सब दवाओं या इनमेंसे कम दवाओंके लेप से भी कर्णक नष्ट हो जाता है।

कुलथी, कायफल, सोंठ और कालीज़ीरी—इन सबको समान भाग लेकर, जलमें पीसकर, सुहाता-सुहाता गरम करके, बार-म्बार कान की जड़में लेप करनेसे कर्णक नष्ट हो जाता है।

गेरु, खड़िया, सोंठ, कायफल और अमलताश—इन सबको काँजीमें पीसकर, गरम करके, लेप करनेसे कर्णमूलकी सूजन नाश हो जाती है।

सहँजना और राई—इनको जलमें पीसकर, कानकी जड़में लेप करनेसे कानकी जड़की सूजन शान्त हो जाती है।

बिजौरेकी जड और अरनी—इन दोनोंको जलमें पीसकर लेप करनेसे कर्णमूल नाश हो जाता है।

गेरू, धूल, सोंठ, वच और कायफल—इन सबको एकत्र काँजीमें

पीसकर और गरम करके कानकी जड़में लगानेसे कर्णशोथ—कानकी सूजन आराम हो जाती है।

हल्दी, गोंदी, सेंधानोन, देवदारू, कूट, दारूहल्दी और इन्द्रवारूणी—इन सातोंको आकके दूधमें पीसकर, कानकी जड़की सूजन पर लेप करनेसे अवश्य लाभ होता है ; पर जौंक लगवाना सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

गेरू, पांगानोन, सोंठ, वच और राई—बराबर-बराबर लेकर, काँजीमें पीसकर, लेप करनेसे कर्णमूलकी सूजन नाश हो जाती है।

लोलिम्बराज महाशय कहते हैं :—

> यः सोफः श्रुतिमूलजः सुकठिनः शांते त्रिदोषज्वरे
> रक्तं तत्र जलौकया परिहरेत्सर्पिः पिबेच्चातुरः॥
> रास्नानागरलुंगहुतभुग्दार्व्यग्निमन्थैः समैर्लेपः
> स्यादरविंदवंधनयने शोथव्यथाध्वंसनः॥ ४९ ॥

सन्निपात ज्वरके नाश होने पर, कान की जड़ में जो कड़ी सूजन होती है, जौंक लगवा कर उसका खून निकलवा देना चाहिये और रोगी को घी पिलाना चाहिये। हे कमल को भी लज्जित करनेवाले नेत्रोंवाली ! रास्ना, सोंठ,, बिजौरे की जड़, चीतेकी जड़, दारूहल्दी और अरणी—इन सबको समान-समान ले कर और जलमें पीसकर, लेप करने से कान की जड़ की सूजन नाश हो जाती है।

नस्य।
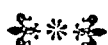
(५) गोलमिर्च, पीपल, ज़ीरा और सेंधानोन—इनको गरम जलमें पीसकर, तत्काल, नस्य देनेसे कर्णककी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

सेंधानोन और छोटी पीपर गरम पानीमें पीसकर सुँघानेसे भी लाभ होता है।

स्वेद।

०

(६) दशमूलका लेप करने या स्वेद देनेसे अथवा प्याज़का स्वेद या वफारा देनेसे तत्काल पीड़ा शान्त हो जाती है।

जौंक लगवाना।

—*★*—

(७) अगर २।३ लेप करनेसे फायदा न दीखे, तो जौंक लगवाकर तत्काल खून निकालवा देना सर्वश्रेष्ठ उपाय है। जौंक लगवानेके बाद एक दिन नीमके पत्ते बाँधकर हारीत मुनिका कहा हुआ प्रसिद्ध लेप लगाना चाहिये। वह लेप यह है,—घर का धूआँ, हल्दी, सोंठ, पीली सरसों, सेंधानोन और वच—इन छहों को दूधमें पीसकर लेप करनेसे खूनका विकार, सूजन और घाव शान्त हो जाते हैं। गलेमें सूजन हो, तो वह भी इस लेप से आराम हो जाती है।

पकाना और चीरना।

—*★*—

(८) अगर किसी कारणवश सूजन पकानी हो, तो दिनमें ५।६ वार वदल वदल कर "अलसी"के आटेकी पुल्टिश* "घी" मिलाकर बाँधनी चाहिये। अगर पुल्टिशसे ही फोड़ना हो, तो पुल्टिशमें जंगली कबूतरकी बीट मिलानी चाहिये। गिद्ध, कबूतर और सफेद

* अलसीकी पुल्टिश शीतल जलसे अच्छी नहीं बनती। अलसीके आटेमें खूब उबलता हुआ पानी डालकर हिलानेसे अच्छी पुल्टिश बनती है। अथवा अलसीके आटमें गरम दूध या पानी डालकर और जरासी हल्दी मिलाकर अच्छी तरह पकानेसे उमदा पुलटिश बन जाती है। यह सुहाती-सुहाती गरम बाँधनी चाहिये।

चीलकी विष्ठायें इस कामके लिये प्रसिद्ध हैं। सज्जीखार और जवाखारका लेप करनेसे भी फोड़ा फूट जाता है। चीरनेका प्रवन्ध हो, तो सबसे अच्छा, रोगीको जल्दी चैन मिलता है। चीरने या दवासे फूटनेके बाद—घाव भरनेवाली कोई औषधि लगानी चाहिये।

घाव भरनेके उपाय।

अगर सूजन पक गई हो, तो धवकी छाल, अर्जुन वृक्षकी छाल और कदमकी छाल—इन तीनोंको पीसकर लेप करनेसे घाव भर जाता है।

अथवा

नीमकी छाल, अमलताशकी छाल और हल्दी—इन तीनोंका लेप, राध और दुर्गन्धको नाश करके, घावपर अङ्कुर ले आता है।

अथवा

नीमके पत्ते, तिल और मुलहटीको पीसकर, शहद और घीमें मिलाकर लेप करनेसे घाव शुद्ध हो जाता और भर जाता है। मवाद निकल जानेके बाद लगानेसे, यह लेप बड़ा फायदा करता है।

अथवा

मवाद निकल जानेके बाद, हमारी "स्वास्थ्यरक्षा"के पृष्ठ ३२३में लिखी "क्षतारि मल्हम" लगाने से घाव बहुत ही जल्दी भर जाता है। वह मल्हम घाव भरने के लिये रामवाण है। कम से कम हज़ार वार आज़माई गई है। उस से हर तरह के घाव आराम हो जाते हैं। हम उस मल्हम को काम में लाने की ज़ोर से सिफारिश करते हैं। उसके बनाने की तरकीव यह है:—

सफेद कत्था २ तोला, कपूर १ तोला, सिन्दूर आधा तोला और गाय का घी १०० वार धुला हुआ आधा पाव। ये सब चीज़ें तैयार कर लो। पहले कत्था और कपूर को अलग-अलग पीस कर महीन कपड़े में छान लो। पीछे घी को १०० वार काँसी की थाली में धो लो। फिर उसी घी में कत्था, कपूर और सिन्दूर मिला कर खूब फेंट लो, जिस से दवा और घी एक-दिल हो जायँ। वस, यही तरकीब है। इस मलहम से और भी कितने ही रोग आराम होते हैं। उनके लिये "स्वास्थ्यरक्षा" मँगाकर खिये। मूल्य ३॥) ।

अपथ्य।

कर्णमूलवालेको दिनमें सोना, वहुत जल पीना, शीतल जल सेवन करना, रातमें जागना, मिहनत करना, चिन्ता करना, उड़द, जौ, गेहूँ, तिल, मसूर, मटर और तेल खाना, स्त्री-प्रसङ्ग करना—ये सब अपथ्य हैं। कर्णमूलवालेको १ मास तक मैथुन न करना चाहिये और १५ दिन तक ज़ियादा न खाना चाहिये।

भुग्ननेत्र सन्निपातकी चिकित्सा।

काथ।

(१) दारूहल्दी, परवल, नागरमोथा, कटेरी, कुटकी, हल्दी, नीम और त्रिफला—इन आठों दवाओंका काढ़ा प्रबल भुग्ननेत्रमें चैतन्यता करानेके लिये देना चाहिये। परीक्षित है।

(२) पीपल, कड़वे परवल, नागरमोथा, कुटकी, कटेरीका पञ्चाङ्ग, नीम और देवदारूका काढ़ा पित्तज्वर और उग्र सन्निपातज्वर को नाश करता है।

अवलेह ।

(३) चिरायता, शहत, बच, पीपल, मिर्च, लहसन, और राई—इन सातोंका बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस और छानकर रखलो। भुग्ननेत्रवालेको, दिनमें ३।४ दफा, छै-छै रत्ती इस चूर्णको शहत में मिलाकर चटाओ। इससे बहुत लाभ होता है। परीक्षित है।

नस्य ।

(४) असगन्ध, सेंधानमक, बच, महुएका सार, मिर्च, पीपल, सोंठ, और लहसन—इन आठोंको बकरेके पेशाबमें पीसकर, नास देनेसे भुग्ननेत्र शान्त होता है।

बच, मिर्च, हींग और मुलेठी—इन चारोंको मीठे अनारके रसमें महीन घोटकर, नास देनेसे भुग्ननेत्रमें बड़ा लाभ होता है।

अंजन ।

(५) सेंधानोन और छोटो पीपल, इनको पानीमें खूब महीन पीसकर अञ्जनकी तरह कर लो और रोगीकी आँखोंमें आँजो, इससे दृष्टिमें बहुत लाभ होता है। परीक्षित है।

रक्तष्ठीवी सन्निपातकी चिकित्सा ।

क्वाथ ।

(१) रोहिषतृण (घास), धमासा, अडूसा, पित्तपापड़ा, फूलप्रियंगू और कुटकी—इन ६ दवाओंके काढ़ेमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे—रक्तष्ठीवी सन्निपात नष्ट हो जाता है।

(२) रोहित घास, पित्तपापड़ा और जवासा—इन तीनोंके काढ़ेमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे भी रक्तष्ठीवी आराम होजाता है; पर

इससे ऊपरका नुसखा उत्तम है। यह भी परीक्षित है और वह भी।

(३) पद्माख, लालचन्दन, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चमेलीकी पत्ती, जीवक, सफेदचन्दन, सुगन्धवाला, मुलेठी और नीमकी छाल— इन दसों दवाओंका काढ़ा करके पीनेसे रक्तष्ठीवीका खून आना बन्द हो जाता है।

(४) नागरमोथा, पद्माख, पित्तपापड़ा, लालचन्दन, मुलहटी, नेत्रवाला, शतावर, मलयचन्दन, मालतीके पत्ते और कमल—इन दसोंके काढ़े में "शहद" मिलाकर पीनेसे—रक्तष्ठीवीमें मुँह खून गिरना बन्द हो जाता है।

(५) मुलहटी, महुआ, फालसेकी छाल, सुगन्धवाला, लालचन्दन, तेजपात, देवदारु और कुम्भेरके फल—इन आठों दवाओंका काढ़ा बनाकर, अत्यन्त शीतल करके, मिश्री मिलाकर पीनेसे,—रक्तष्ठीवी में मुँहसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

नोट—नं० १, २, ३ और ४ के काढ़ोंकी दवाओंका वजन २ तोला होना मामूली बात है। नं० ३ के काढ़ेको पकाकर खूब शीतलकर लेना; पीछे २ माशे शहत मिलाकर पिला देना। नं० ४ की भी यही विधि है। जब नं० ३ या ४ से भी लाभ न दीखे, खून आना बन्द न हो, तब नं ५ का नुसखा देना चाहिये। इसके बनानेकी विधिमें जरा फर्क है। जो विधि ऊपर लिखी है वह ठीक है। हमने जिस विधिसे आजमाया है, वह भी लिखे देते हैं। मुलहठी महुआ आदि आठों दवाओंको ६।६ माशेके हिसाबसे चार तोले लेना। चार तोले दवाको आध सेर जलमें पकाना। जब डेढ़पाव जल रह जाय, सिर्फ आध पाव जले, उतार लेना। पीछे मलछान कर, दो तोला मिश्री मिलाकर, पत्थर या काठके ढक्कनदार वर्तनमें रख लेना और एक एक छटाँक जल अन्दाज से दो दो घण्टेमें उसी बरतनसे निकाल-निकाल कर रोगीको पिलाना। इन सभी नुसखोंमें अधिक जल मत जलाना और सभी को शीतल करके पिलाना। पाँचों नुसखे आजमाये हुए हैं। रक्तष्ठीवी सन्निपात पर ये कभी फेल नहीं होते। हाँ, कभी-कभी एक नुसखा काम नहीं देता, तो दूसरा अवश्य देता है।

नस्य।
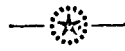
(६) रोगीको दूबका रस निकालकर नास देनी चाहिये। इससे मुखसे खून आना बन्द हो जाता है।

अनारके फूलोंके रसकी नास देनेसे भी खून बन्द हो जाता है।

त्रिफलेका काढ़ा और दूबका रस मिलाकर नास देनेसे भी खून बन्द हो जाता हैं। खाली त्रिफलेके काढ़ेकी नस्यसे भी फायदा होता है।

शीतलचीनीके चूर्णकी नास देनेसे भी इस सन्निपातमें बड़ा लाभ होता है।

नोट—ये सब नस्य परीक्षित हैं।

प्रलापक सन्निपातकी चिकित्सा।

काथ।

(१) तगर, पित्तपापड़ा, अमलताश, नागरमोथा, कुटकी, लामजाक, (न मिलनेपर "खस") असगन्ध, ब्राह्मी, दाख, लालचन्दन, दशमूल और शंखाहुली (कौड़िल्ला)—इन २२ दवाओंका काढ़ा बनाकर पीनेसे बहुत जल्दी प्रलापक सन्निपात आराम हो जाते है।

(२) नागरमोथा, नेत्रवाला, दशमूल, सोंठ, पित्तपापड़ा, लालचन्दन, धवकी छाल और अडूसा—इन १७ दवाओंका काढ़ा पीनेसे प्रलापक सन्निपात आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) नागरमोथा, नेत्रवाला, पित्तपापड़ा, लालचन्दन और धवकी छाल,—इन पाँचोंके काढ़ेसे भी प्रलापक सन्निपात आराम हो जाता है।

नोट—तीनों नुसखे परीक्षित हैं। दोषोंको विचारकर जो उचित समझो वही देना। प्रत्येक नुसखा दोनों समय पिलाना चाहिये और रोगीको धीरज, अञ्जन, तेज नस्यसे तथा अन्धकार सेवन कराकर आरोग्य करना चाहिये। नस्य और अञ्जन पीछे पृष्ठ २६७—२७४ में लिख आये हैं। इस सन्निपातमें किसी तरह आराम न दीखनेपर दागते भी हैं। देखो पृष्ठ १६६—६७

जिह्वक सन्निपातकी चिकित्सा।

काढ़े।
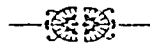
(१) कटेरी, सोंठ, पोहकरमूल, गिलोय, ब्राह्मी, वच, गन्धपलाशी, भारङ्गी, अड़ूसा, जवासा, सुगन्धवाला और तुलसी—इन १३ दवाओंका काढ़ा "जिह्वक" सन्निपातको नाश करता है।

(२) सोंठ, पित्तपापड़ा, हल्दी, दारुहल्दी, हरड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय, नागरमोथा, कटेरी, नीम, पटोलपत्र, पोहकरमूल वालछड़, कूट और देवदारू,—इन १६ दवाओं का काढ़ा जिह्वकको नाश करता है।

(३) वच, कटेरी, जवासा, रास्ना, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ, कुटकी, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, ब्राह्मी, भारङ्गी, चिरायता, अड़ूसा और कचूर—इनका काढ़ा जिह्वक सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

(४) कटेरी, सोंठ, पोहकरमूल, कुटकी, रासना, गिलोय, भारङ्गीकी जड़, काकड़ासिंगी, कचूर, धमासा, वासा, नागरमोथा, ब्राह्मी, घोड़ा वच और चिरायता—इन १५ दवाओंका काढ़ा "जिह्वक सन्निपात"का अवश्य आराम करता है। परीक्षित है।

नोट—इस जिह्वक की चिकित्सा प्रायः रक्तष्ठीवीके समान की जाती है। ऊपरी इलाजोंसे जीभको नरम करना परमावश्यक है।

अवलेह ।

(५) बेलकी जड़, कूट, शहत और शङ्खाहुली (कौड़िल्ला),—इन चारके साथ ब्राह्मीको चाटनेसे वाणीकी शुद्धि होती है; यानी जीभ नर्म हो जाती है। शहद, घी और दाखको पीसकर जीभप लेप करनेसे भी जीभ नर्म हो जाती है। परीक्षित है।

कवल

(६) चिरायता, अकरकरा, कुलीञ्जन, कचूर, पीपर और सरसोंका तेल—इनको एक जगह पीसकर कवल बनाओ। पीछे बिजौरे आदिका रस मिलाकर मुँहमें रखो। इस कवलसे जिह्वक सन्निपातके दोष उसी तरह नाश होते हैं, जिस तरह रामचन्द्रजी की स्तुतिसे जन्मजन्मान्तरके पाप नाश होते हैं। इसका नाम "किरातादि कवल" है।

अभिन्यास सन्निपातकी चिकित्सा ।

क्वाथ ।

(१) काकड़ासिंगी, भारङ्गी, हरड़, ज़ीरा, पीपल, चिरायता, पित्तपापड़ा, देवदारु, घोड़ावच, कूट, जवासा, कायफल, सोंठ, नागरमोथा, धनिया, कुटकी, इन्द्रजौ, पाढ़, रेणुका, गजपीपल, चिरचिरा, पीपलामूल, चीता, कड़वी इन्द्रायन, अमलतास, नीम, कचूर, बावचीके बीज, बायबिड़ङ्ग, हल्दी, दारुहल्दी, अजवायन और अजमोद— इन ३३ दवाओंका काढ़ा बनाकर उसमें हींग और अदरखका रस मिलाकर पीनेसे तत्काल भयङ्कर अभिन्यास सन्निपात ज्वर

तन्द्रा, प्रमेह, कानकी पीड़ा, तेरह प्रकारके सन्निपात, हिचकी, श्वास, खाँसी और सब तरहके उपद्रव नाश होते हैं। परीक्षित है।

(२) कटेरी, धमासा, भारंगीकी जड़, कचूर, काकड़ासिंगी और पोहकरमूलका काढ़ा अभिन्यास सन्निपातमें लाभदायक है। इससे कफ और पेटका दर्द भी मिटता है।

(३) त्रिफला, कुटकी और अमलताशके गूदेका काढ़ा "जवाखार" मिलाकर पिलानेसे बड़ा लाभ होता है। यह अभिन्यास प्रभृति सब ज्वरोंका नाशक और रोचक है। परीक्षित है।

नोट—अभिन्यास सन्निपात मृत्युतुल्य है। इस सन्निपात पर यह नुसखा परमोत्तम है। ३२ दवाइयोंवाला भारङ्ग्यादि क्वाथ भी इस पर उत्तम योग है। देखो इसी भाग का पृष्ठ—२६४ नं० २२.

तेरहों सन्निपातों पर कुछ हिदायतें।

पथ्य।

धमासा, गोखरू और कटेरीके काढ़ेसे सिद्ध किया आहार सब तरहके सन्निपातोंमें दिया जा सकता है। इससे दोषोंकी शान्ति होकर बल और अग्निकी वृद्धि होती है। देखो पृष्ठ ८४ और ७७—८६ तक।

जल।

मामूली तौरसे औटाया हुआ जल शीतल करके पिलाना चाहिये; कच्चा जल न पिलाना चाहिये। दोष और ऋतुका ध्यान रखकर जल औटाना अच्छा है। देखो पृष्ठ-१११-१२१ तक।

लंघन

लंघन किस सन्निपात ज्वर रोगीको कराने और कितने कराने, कब दवा देनी और कब पथ्य देना—ये सब जाननेके लिये पृष्ठ ८७-११० तक देखिये ।

नस्य ।

नस्य किस तरह देनी, कब देनी, कब न देनी—इन बातोंके जाननेके लिये पृष्ठ २७१-२७२ देखिये ।

काढ़ा बनाने और पीनेकी विधि ।

काढ़ेके सम्बन्धमें अगर जानना हो, तो पृष्ठ १३१-१३५ तथा १७३-१७३ देखिये ।

सूचना ।

अगर इन तेरहों सन्निपातोंमें लिखे हुए अञ्जन, नस्य और निष्ठीवन या कवल वगैर: से काम न चले (यद्यपि प्रायः सभी परीक्षित योग लिखे हैं), तो पीछेके पृष्ठ २६७ से २८३ तक देखिये । अगर हिचकी श्वास आदि उपद्रवोंके नाशके लिए और नुसखे देखने हों, तो पुस्तकके अन्त में देखिये । अगर सन्निपातकी क़िस्म समझमें न आवे, तो ऐसा काढ़ा दीजिये, जो तेरहों प्रकारके सन्निपातों पर मुफीद हो । देखो पृष्ठ २५८-२६२

आगन्तुक ज्वरोंके लक्षण और चिकित्सा।
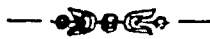
अभिघाताभिचाराभ्यामभिषंगाभिशापतः।
आगन्तुर्जायतेदोषैर्यथास्वंतंविभावयेत् ॥

शस्त्र, मुक्का, घूँसा, लाठी आदि अथवा तलवार, तीर आदिकी चोट लगनेसे जो ज्वर होते हैं, उन्हें "अभिघातज" कहते हैं। विपरीत मन्त्र जपने या मूठ वगैरः चलानेसे जो ज्वर होते हैं, उन्हें "अभिचारज" कहते हैं। काम, शोक, भय, क्रोध और भूतादिकोंके आवेशसे होनेवाले ज्वरोंको "अभिषंगज" कहते हैं। वृद्ध, गुरु, सिद्ध, महात्मा प्रभृतिके शापसे हुए ज्वरको "अभिशापज" ज्वर कहते हैं। इस तरह चार प्रकारके आगन्तु ज्वर होते हैं।

नोट (१) कोई-कोई लिखते हैं—विषैले वृक्षकी पवन लगनेसे अथवा किसी और विषैली वस्तुके संसर्गसे भी अभिषंग ज्वर होता है। जैसेः—शीतलाज्वर और मलेरिया ज्वर। ऐसे स्थल में विषनाशक चिकित्सासे लाभ होता है।

नोट (२) दोष आगन्तु ज्वरको उत्पन्न नहीं करते ; किन्तु आगन्तुक ज्वरके पैदा हो जानेके बाद उसके सहायक हो जाते हैं। आगन्तु ज्वर पहले व्यथासे उत्पन्न होता है, पीछे अपने-अपने दोषोंसे उसका सम्बन्ध हो जाता है। ज्वर होनेके पहले किसी दोषका प्रकाश नहीं होता। जैसे ;—काम, शोक और भयसे वायु कुपित होता है। साफ तौरसे यह मतलब है कि, आगन्तु ज्वर स्वयं पैदा होता है। इसके बाद उससे वात पित्त और कफका मेल होता है। जो ज्वर चोट लगनेसे होता है, उसमें वायु—दूषित रुधिरका आश्रय करके मिल जाता है ; यानी

चोट लगते ही पहले ज्वर होता है, पीछे वात और रुधिर दूषित हो जाते हैं। काम, शोक, भय और क्रोध आदिसे होनेवाले अभिषंगज ज्वरोंमें वात पित्त की सहायता होती है। अभिचारज और अभिशापज ज्वरोंमें वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंका अनुबन्ध रहता है अर्थात ये सन्निपातसे होते हैं।

विषज्वर ।

स्थावर जंगम विष खानेसे जो ज्वर होता है, उससे मुख श्याम-वर्ण हो जाता है, दाह होता है, दस्त होते हैं, अन्नमें अरुचि हो जाती है, प्यास लगती है, सूई चुभाने कीसी पीड़ा और मूर्च्छा—ये लक्षण होते हैं।

औषधिगन्ध ज्वर ।

तेज़ दवाके सूंघनेसे जो ज्वर होता है, उसमें मूर्च्छा, सिरदर्द, वमन और छींक—ये लक्षण होते हैं। किसी-किसीने छींकके बजाय हिचकीका चलना लिखा है। असलमें यह ज्वर दुर्गन्धित पदार्थोंकी गन्धसे होता है। इसके लक्षण अँगरेज़ीके टाइफोइड (Typhoid fever) फीवरसे मिलते हैं। क्योंकि उसकी और इसकी उत्पत्ति बद-बूदार पदार्थोंकी गन्धसे है। डाक्टरीमें लिखा है,—टाइफोइड ज्वर जानवरोंकी सड़ाँदसे पैदा हुए ज़हरसे होता है, जो नाक या श्वास द्वारा हवामें मिलकर शरीरमें पहुँचता है। उसके लक्षण डाक्टरीमें इस प्रकार लिखे हैं—टाईफोइड ज्वर शुरूमें बहुधा सरदी लगकर चढ़ता है। चेहरा फीका और सुकड़ासा हो जाता है। रातको गरमी, घबराहट और प्यास बढ़ जाती है। नाड़ीकी चाल ६० से १२० तक हो जाती है। तिल्ली और यकृत बढ़ जाते हैं। कभी-कभी लाल चकत्ते हो जाते हैं। रोगी बकवाद करता है। कभी-कभी वमन, हिचकी और खूनके दस्त भी होते हैं। इस ज्वर में २०से ३० दिन तक भय रहता है। डाक्टरीमें पहले "रेंडीके तेल"का जुलाब देते

हैं। वैद्यकके मतसे "सर्वगन्धका काढ़ा" पिलाना और "अष्टगन्धकी धूनी" देना लाभदायक है।

कामज्वर।

किसी सुन्दरीके देखनेसे मनुष्यके मनमें घोर कामकी बाधा हो, उससे हुए ज्वरमें ये लक्षण होते हैं—चित्तकी अस्थिरता, तन्द्रा, आलस्य, अरुचि, हृदयमें दर्द और शरीर सूखना। "चरक"में लिखा है,—"इस ज्वरमें जिस चीज़पर ध्यान लग जाय, उसीपर लगा रहे और श्वास अधिक चले।"

भयज्वर।

इस ज्वरमें डर बहुत लगता है और रोगी आनतान बकता है।

क्रोधज्वर।

क्रोधज्वरमें क्रोध बहुत आता है और शरीर काँपता है।

भूतज्वर।

इस ज्वरमें मनुष्य अमानुषी कर्म करता है; यानी ऐसे काम करता है, जिनको मनुष्य नहीं कर सकता। चित्तमें उद्वेग, रोदन और कम्पन ये लक्षण होते हैं। कोई लिखते हैं,—भूतज्वरमें भूत लगनेके से लक्षण होते हैं। चित्तका उचाट हँसना, रोना और काँपना प्रभृति लक्षण होते हैं।

अभिचार और अभिघातज्वर।

उलटे मन्त्र जपने, मूठ चलाने या लकड़ी तलवार प्रभृतिकी चोट लगनेसे जो ज्वर होता है, उसमें बेहोशी और प्यास—ये लक्षण होते हैं। "चरक"में लिखा है,—चोट लगनेसे उत्पन्न हुई वायु—रक्तको दूषित करके—सूजन, विवर्णता और वेदनायुक्त ज्वर पैदा करती है।

चिकित्सा-विधि।

"सुश्रुत"में लिखा है,—श्रम, क्लम तथा अभिघात—चोटसे हुए ज्वरोंमें, उनकी मूल व्याधिका यत्न करो। जैसे;—श्रमज्वरमें श्रम निवारक; क्षतमें क्षतनाशक और चोट लगनेसे हुए ज्वरमें चोटका उपाय करो। असमयमें बच्चा जननेवाली स्त्रीके ज्वरमें अथवा स्तनोंमें दूध भर जाने और बालकके न पीनेके कारणसे हुए ज्वरमें* दोषोंके अनुसार शमन यत्न करो। भूतज्वर को भूतविद्या या ताड़ना प्रभृतिसे शान्त करो। मानसज्वरको नसीहत और उपदेशोंसे शान्त करो। थकानसे हुए ज्वरमें तेलकी मालिश कराओ और मांसरस तथा भात खिलाओ। अभिशापज और अभिचारज ज्वरोंको हवन और जप आदिसे शान्त करो। उत्पात और ग्रह पीड़ाके ज्वरको दान, स्वस्तिवाचन और आतिथ्यसे जीतो। घावसे हुए ज्वरमें घाव का इलाज करो। चोटसे हुए ज्वरमें चोटके स्थानपर सेंक आदि करो तथा दोषानुसार कसैली, मधुर और चिकनी क्रिया करो। विषैले गन्ध या विषसे हुए ज्वरमें विषशामक और पित्तशामक क्रियायें करो।

काम, शोक और भयसे उत्पन्न हुए ज्वरमें वायु कुपित होती है। क्रोधसे हुए ज्वरमें पित्त कुपित होता है। भूतज्वरमें तीनों दोष कुपित होते हैं। क्रोधज्वरमें पित्त कुपित होता है। विदेह कहते हैं,—"क्रोध और शोकसे वात पित्त और रुधिर कोप करते हैं।"

क्रोधज्वरमें पित्तशामक क्रिया करनी चाहिये। कामज्वरमें सुगन्ध-वाला, कमल, चन्दन, खस, दालचीनी और बालछड़का काढ़ा

---

* प्रसूति ज्वर और दूध ज्वरके कारण और लक्षण तथा चिकित्सा इसी भाग में आगे लिखी है।

पिलाना चाहिये। कामसे क्रोधज्वरका नाश होता है और क्रोधसे कामज्वर का नाश होता है। काम और क्रोध दोनोंको मनमें रोकनेसे कामज्वर और क्रोधज्वर दोनोंका नाश होता है।

भूतज्वरको भूतविद्या और ताड़ना आदिसे जीतना चाहिये। सहदेई की जड़को विधिपूर्व्वक कण्ठमें बाँधनेसे एक, दो तीन या ४ दिनमें भूतज्वर नाश हो जाता है। हुरहुजको जड़ कानमें रखनेसे भी भूतज्वर नाश हो जाता है। पुष्प संक्रान्तिमें सफेद काकमाचीकी जड़ लाकर, लाल डोरेमें लपेटकर, बाजूपर बाँधनेसे अथवा गले या सिरमें बाँधनेसे भूतज्वर भाग जाता है। भाँगके पेड़को रात में न्यौत कर, सवेरे उसकी जड़ लाकर सिर में बाँधने से भी भूतज्वर दूर हो जाता है। तुलसी की आठ पत्तियाँ ले कर, उस के रस में सोंठ, कालीमिर्च और पीपर का चूर्ण मिला कर नाक में सुँघाने से भी भूतज्वर भाग जाता है। शोधी हुई गन्धक और आमलों का चूर्ण "घी" में मिलाकर देनेसे भी भूतज्वर नाश होजाता है। औषधिकी गन्ध या विषसे हुए ज्वरमें विष और पित्तको शमन करनेवाला नीचे लिखा "सर्वगन्ध का काढ़ा" पिलाना चाहिये—तज, तेजपात, बड़ी इलायची, नागकेसर, कपूर, शीतलचीनी, अगर, केसर और लौंग —६ सर्वगन्ध हैं। इनका काढ़ा पिलानेसे औषधिकी गन्ध और विषसे हुआ ज्वर नाश हो जाता है। औषधिगन्धज्वरमें बेहोशी होती है। बेहोशीके लिये हित पदार्थ सेवन कराने चाहिये।

नोट—औषधिगन्ध ज्वरके लक्षण और कारण अँगरेजी टाइफॉइड ज्वरसे मिलते हैं। इसमें अष्टगन्धकी धूनी देना हित है। टाइफोइड ज्वरके लक्षण आगे विस्तारसे लिखे हैं।

मार्ग चलनेसे हुए ज्वरमें तेलकी मालिश कराना और दिनमें सुलाना अच्छा है। शोरवा या दूध पीनेको देना चाहिये।

मारने, बाँधने, बहुत मिहनत करने और पेड़से गिरनेसे हुए ज्वरमें भी शोरवा और दूध हित है। साथ ही मूल व्याधिका उपाय करना

भी ज़रूरी है। चोटसे हुए ज्वरमें गरमी रहित क्रिया करनी चाहिये। कषैले, मीठे और चिकने पदार्थ देने चाहिये तथा दोषानुसार क्रिया करनी चाहिये। घी पिलाने, घी मलने, खून निकालने और मांसरस तथा भात खिलानेसे चोटका ज्वर नाश होता है।

आगन्तु ज्वरोंमें लंघन नहीं कराने चाहियें। वाग्भटने लिखा है,—"शुद्ध वातज्वर, क्षयज्वर, आगन्तुज्वर और जीर्णज्वरमें लंघन नहीं कराने चाहियें।" और भी लिखा है,—कामसे, शोकसे, भयसे, चिन्ता से, चोटसे, भूतावेशसे, श्रमसे, क्रोधसे और लंघनोंसे उत्पन्न हुए ज्वरोंमें उपवास नहीं कराने चाहियें।

आगन्तु ज्वर, शुद्ध वातज्वर, क्षयज्वर, जीर्णज्वर, कामज्वर, शोकज्वर, क्रोधज्वर और भयज्वर प्रभृतिमें मांसोदन (मांसरस और भात) देना हित है।

विषमज्वरोंकी चिकित्सा।

विषमज्वर कैसे होता है ?

—⁂—

दोषोऽल्पोहितसम्भूतो ज्वरोत्सृष्टस्य वा पुनः।
धातुमन्यतमं प्राप्य करोति विषमज्वरम्॥

ज्वरमुक्त मनुष्यके बाकी रहे हुए थोड़ेसे दोष भी, अहितकारक आहार विहार करनेसे, सम्पूर्ण होकर, रसरक्त आदि किसी धातुको दूषित करके, पीछेसे, विषमज्वर पैदा करते हैं।

खुलासा—मानलो, किसीको पहले वातज्वर या पित्तज्वर आदि मेंसे कोई ज्वर आया। उसने औषधि सेवन की। ऐसा करनेसे ज़ाहिरा बुखार चला गया; परन्तु कुपथ्य करनेसे अथवा सम्मूल नाश हुए बिन दवा छोड़ देनेसे कुछ दोष रह गये। रोगीको ऊपरसे मालूम हुआ, ज्वर चला गया। रोगीने अपने तईं ज्वरमुक्त समझ कर, इच्छानुसार अहितकारी आहार विहार सेवन करना आरम्भ

कर दिया । कुपथ्य के कारणसे थोड़ेसे दोष या दोषोंने अपना पूरा रूप धारण कर लिया ; यानी वे बलवान होगये । उन्होंने रस रक्त आदि किसी धातुको दूषित करके ज्वर कर दिया ; यानी फिर ज्वर चढ़ आया। ऐसे ज्वरको "विषमज्वर" कहते हैं ।

ऐसे ज्वरोंमें पहले ज्वर छूटा हुआ जान पड़ता है ; पर वास्तव में थोड़े बहुत दोष रह जाते हैं । उनसे शरीरमें ज़रा-ज़रा हरारत रहती है । मनुष्य उस हरारतका ख़याल नहीं रखता ; मनमें आता है सो खाता पीता है । उन बाक़ी रहे हुए दोषोंको जब कुपितकारक आहार विहार मिल जाते हैं, तब वह हल्की-हल्की हरारत तेज़ हो जाती है ; यानी ज़ोरसे बुख़ार चढ़ने लगता है ; किन्तु इस लौटकर आये हुए ज्वरका रूप विषम होता है। कभी बुख़ार किसी समय चढ़ता है और कभी किसी समय ; कोई नियम नहीं रहता । इसमें सरदी और गरमी दोनों रहती हैं। बुख़ार कभी तेज़ हो जाता है और कभी कम ; इसीलिये इसे "विषमज्वर" कहते हैं ।

किसीने लिखा है कि,—मनुष्यको पहले किसी तरहका ज्वर आवे और वह दवासे छूट जाय । इसके बाद २१ दिन बीतने पर या जीर्ण अवस्था होनेपर, अपथ्य सेवन करनेसे, वातादिक दोष फिर कुपित होकर, रसरक्त आदि धातुओंमेंसे किसीमें प्राप्त होकर और उनको दूषित करके ज्वर उत्पन्न कर दें ; यानी इकतरा तिजारी और चौथैया प्रभृति पैदा कर दें, तो उसे "विषमज्वर" कहते हैं । अगर दोष कमज़ोर होते हैं, तो कालान्तरमें ज्वर करते हैं और अगर दोष ज़ोरावर होते हैं, तो रोज़ ज्वर करते हैं ।

"भालुकी आचार्य लिखते हैं—"अनियत समयमें—यानी कभी किसी समय और कभी किसी समय, सरदी गरमी लगकर, कम और ज़ियादा ज़ोरके साथ जो ज्वर आता है, उसे "विषमज्वर" कहते हैं । कोई कहते हैं,—जो ज्वर चला जाय और फिर लौटकर आजाय, उसे "विषमज्वर कहते हैं ।

नोट—किसीने लिखा है, विषम ज्वर आरम्भसे भी होता है; यानी विना किसी ज्वरके हुए पहलेसे ही विषमज्वर होता है। जो विषमज्वर आरम्भसे ही होता है, वह मनुष्यको मार डालता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—मनुष्यको जब ज्वर छोड़ देता है, तब वह शीघ्र ही मिथ्या आहार विहार करता है; तब कमज़ोर आदमीका ज़रासा भी रहा हुआ दोष बढ़कर और वायुसे प्रेरित होकर, कफके पाँचों स्थानों—आमाशय, हृदय, कंठ, सिर और सन्धियों—में घुसकर सतत, अन्येद्युः, तृतीयक, चातुर्थिक और प्रलेपक नामके विषमज्वर पैदा कर देता है; यानी आमाशयमें जाकर सततज्वर, हृदयमें, जाकर अन्येद्युः, कंठमें जाकर तृतीयक, सिरमें जाकर चातुर्थिक और सन्धियोंमें जाकर प्रलेपक ज्वर करता है। जब दोष अपने स्थानों—सिर कंठ आदिसे आमाशयमें पहुँचते हैं, तब ज्वर ज़ोरसे चढ़ता है। आमाशयसे दोष जितनी दूर होता है, उतने ही समयका अन्तर ज्वरके चढ़नेमें पड़ता है। दोष ज़ोरदार होता है, तो ज्वर ज़ोरसे चढ़ता है; दोष कमज़ोर होता है, तो ज्वर भी हलका चढ़ता है।

आमाशयमें रहनेवाले दोषको अधिक राह तय नहीं करनी होती; इसलिये वह दो बार ज़ोर करता है; इसीसे दिन-रातमें दो बार चढ़नेवाला "सततज्वर" होता है। हृदयमें ठहरा हुआ दोष चलकर एक दिनमें आमाशय तक पहुँचता है, इसीसे रोज़ आनेवाला "अन्येद्युः" ज्वर होता है। कंठवाला दोष दो दिनमें आमाशयमें पहुँचता है, इसीसे तीसरे दिन चढ़नेवाला "तृतीयक" ज्वर या तिजारी होता है। सिरमें गया हुआ दोष तीन दिनमें आमाशय तक पहुँचता है, इसीसे चौथे दिन आनेवाला "चातुर्थिक" या "चौथैया" ज्वर होता है। सारे शरीरकी सन्धियोंमें प्राप्त हुआ दोष, सदा, धीरे धीरे आमाशयकी ओर जाता रहता है; इसीसे मन्दा-मन्दा बना रहनेवाला "प्रलेपकज्वर" होता है। जब दूषित दोषके परमाणु आमाशयमें पहुँचते हैं; तब वहाँ वे गरम भाफके रूपमें बदलकर, रस और पसीना

बहानेवाली शिराओं द्वारा, चमड़ेकी ओर चलते हैं, उस समय ज्वर चढ़ता है। जब तक दूषित दोषके परमाणु आमाशयमें नहीं पहुँचते, अपने सजातीय दूषित परमाणुओंको अपने स्थानमें जमा करते रहते हैं, तब तक ज्वर नहीं होता।

इन्हीं ऊपर कहे हुए कफ-स्थानोंमें बीजरूपसे रहा हुआ दोष उपरोक्त ज्वरोंके "विपर्य्यय ज्वर" भी उत्पन्न करता है। जब कफस्थानों में दूषित दोष का बीज कम होता है, तब वह अपने सजातीय दूषित परमाणुओंको कम जमा करता है; इसलिये थोड़ी देर ठहरनेवाले सतत, अन्येद्युः, तृतीयक प्रभृति ज्वर करता है; किन्तु जब कफ-स्थानोंमें दूषित दोषका बीज ज़ियादा और ज़ोरावर होता है, तब वह अपने सजातीय दूषित परमाणु ज़ियादा इकट्ठे करता है और बहुत समय तक रहनेवाले और थोड़ी देरको पीछा छोड़नेवाले विपर्य्यय विषमज्वर पैदा करता है। मामूली चौथैया चौथे दिन आता है, तीन दिन रोगी आराम करता है। किन्तु उसका विपर्य्यय—उलटा केवल चौथा दिन छोड़कर तीन दिन बना रहता है; केवल एक दिन रोगी आराम पाता है। तृतीयक या तिजारीका विपर्य्यय—उलटा तीसरे दिन थोड़ी देरको उतर जाता है। अन्येद्युः का विपर्य्यय ज़रा सी देर छोड़कर हर समय बना रहता है। सततका विपर्य्यय, दिन-रातमें दो बार ज़रा-ज़रा देरको छोड़कर हर समय बना रहता है। किसीने लिखा है,—चौथैयाका विपर्य्यय—उलटा—विषम ज्वर वह है, जो पहला और अन्तका दिन छोड़कर, बीचके दो दिन आवे। तिजारीका उलटा वह है, जो बीचके एक दिन ज्वर आवे; आदि अन्तके दिन न आवे। इकतराका उलटा वह है, जो एक समय छोड़कर रातदिन बना रहे। इन ज्वरोंके सम्बन्धमें बहुत मत-भेद ह।

कफके स्थान-विभागके अनुसार, दोष अनुक्रमसे सतत, अन्येद्युः, तृतीयक, चातुर्थिक और प्रलेपक ज्वर करते हैं। दोष एक दिन-

रातमें एक स्थानसे दूसरे स्थानमें पहुँचता है ; तो अपने अनुक्रमसे, आमाशयमें पहुँचकर, विषमज्वर करता है। आमाशय हृदय, कंठ, मस्तक और सन्धि—ये पाँच कफके स्थान हैं। इनमें ठहरे हुए दोष अनुक्रमसे सतत, अन्येद्युः, तृतीयक, चातुर्थिक और प्रलेपक ज्वर करते हैं।

आमाशयमें रहनेवाला दोष सतत ज्वर करता है,क्योंकि एक दिन-रातमें उस दोषका दो बार कोप होता है। हृदयमें रहनेवाला दोष आमाशयमें प्राप्त होकर अन्येद्युः करता है। कंठमें ठहरा हुआ दोष एक दिन रातमें हृदयमें पहुँचता है, वहाँसे दूसरे दिन-रातमें आमाशयमें पहुँचता है। वहाँ पहुँचकर, अपने कोपके समयमें ही, तृतीयक ज्वर करता है। इसी तरह मस्तकमें रहनेवाला दोष एक दिनरातमें मस्तकसे कंठ तक आता है ; दूसर दिन-रातमें कंठसे हृदयतक पहुँचता है और तीसरे दिन-रातमें हृदयसे आमाशयतक पहुँचता है। वहाँ पहुँचकर, अपने कोपके समय, चातुर्थिक ज्वर करता है। ये दोष यद्यपि आमाशयमें १ दिन-रात रहते हैं ; तथापि अपने कोपके समयोंमें दो बार ज्वर नहीं करते—एकही बार करते हैं, यह उनका स्वभाव है। एक बात और भी है कि, दोषोंको मस्तकसे आमाशय तक आनेमें ३ दिन, कंठसे आमाशय तक आनेमें २ दिन और हृदयसे आमाशयतक आनेमें एक दिन लगता है ; किन्तु अपने स्थान तक वापिस जानेमें इतना समय नहीं लगता। वजह यह है कि, ज्वर चढ़नेके दिन दोषोंमें बड़ा ज़ोर रहता है, इसलिये उस दिन वे शीघ्र ही अपने स्थानपर पहुँच जाते हैं। अगर ऐसा न होता, तो चौथैया ज्वर होनेके बाद, ३ दिनमें दोष मस्तकमें पहुँचता और तीन ही दिनमें आता, तो ६ दिन लग जाते। ६ दिन बीचमें देकर चौथैया ज्वर चढ़ता। प्रलेपकके सम्बन्धमें लिखआये हैं कि, सन्धियोंमें ठहरा हुआ दोष प्रलेपक ज्वर करता है। सन्धियाँ आमाशयमें हैं, इसलिये उनमें ठहरे हुए दोष सदा "प्रलेपक ज्वर" करते हैं।

विषमज्वरके सामान्य लक्षण ।

—※※※—
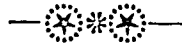
जो ज्वर अनियमित समयमें यानी बेसमय होता है, जो सरदी लगकर या गरमी लगकर चढ़ता है और जिसका वेग भी विषम होता है ; यानी कभी ज़ियादा ज़ोरसे चढ़ता है और कभी कम ज़ोरसे चढ़ता है, उसे "विषम ज्वर" कहते हैं ।

जिस तरह वातज्वर ७ दिन तक, पित्तज्वर १० दिन तक और कफ ज्वर १२ दिन तक रहता है और अगर दोषोंका ज़ोर ज़ियादा होता है, तो वातज्वर १४ दिन तक, पित्तज्वर २० दिन तक रहता है और कफज्वर २४ दिन रहता है ; उस तरह विषमज्वर नियमित काल तक नहीं रहता । इस ज्वरमें गरमी और सरदी भी नियमित समय तक नहीं रहतीं और इस ज्वरका वेग भी विषम होता है—कभी बहुत तेज़ और कभी शान्त होता है । हारीतने कहा है,—"देहकी धातुओं में ज्वर घर करले, तो विषमज्वर समझना चाहिये ।"

विषमज्वरोंका धातुओंसे सम्बन्ध ।

—※※※—

जब कुपित हुए दोष मनुष्योंकी रस धातुमें प्राप्त होते हैं, तब "सन्तत" ज्वर करते हैं ; जब रक्तमें स्थित होते हैं, तब "सतत" ज्वर करते हैं ; जब मांसमें स्थित होते हैं "अन्येद्युः" ज्वर करते हैं ; जब मेदमें स्थित होते हैं "तृतीयक" ज्वर करते हैं ; जब हड्डी और मज्जामें स्थित होते हैं, तब घोर कालके समान प्राणनाशक रोगोंके समूह "चातुर्थिक" ज्वरको करते हैं ।

नोट—सुश्रुतमें लिखा है,—रस और रक्तमें ठहरा हुआ दोष "सतत" ज्वर करता है ।

विषम ज्वरोंके भेद ।

—※※—

विषम ज्वरोंके पाँच भेद हैं :—

१ सन्तत ज्वर ।

२ सतत ज्वर।

३ अन्येद्युः ज्वर।

४ तृतीयक ज्वर।

५ चातुर्थिक ज्वर।

सन्तत ज्वरके लक्षण।

जो ज्वर सात दिन, दस दिन अथवा बारह दिन, निरन्तर एकसा बना रहता है—उतरता नहीं, उसे "सन्ततज्वर" कहते हैं। यह ज्वर त्रिदोषसे होता है। वातप्रधान सन्तत ज्वर सात दिन, पित्त-प्रधान सन्तत ज्वर दस दिन और कफप्रधान सन्तत ज्वर बारह दिन तक रहता है। इस ज्वरमें बारह चीज़ोंका साथ होता है,—३ दोष+७ धातु+१ मल+१ मूत्र=१२; यानी वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष—रस, रक्त मांस, मेद अस्थि, मज्जा और शुक्र इन सात धातुओं तथा मल और मूत्र को ग्रसकर "सन्तत ज्वर" करते हैं।

कोई कोई कहते हैं,—विषमज्वर तो वह होता है, जो चढ़कर उतर जाता है और फिर चढ़ आता है; किन्तु यह ज्वर तो हर समय बनाही रहता है, इसलिये यह विषमज्वर नहीं है। खरनाद पाँच विषम ज्वरोंमेंसे संततको छोड़कर, शेष चारको विषमज्वर मानते हैं। सुश्रुतने भी सन्तत ज्वरको विषम ज्वरोंसे अलग लिखा है। क्योंकि भावमिश्रने लिखा है,—"जो ज्वर छोड़-छोड़कर नियत समयपर आवे, उसे विषमज्वर कहते हैं।" चरक ऋषि कहते हैं,—"सन्तत-ज्वर बारहवें दिन अच्छी तरहसे उतरकर फिर चढ़ आता है और बहुत समय तक रहता है, इसलिये इसे विषमज्वर कह सकते हैं।"

नोट—इस ज्वरको अंग्रेजीमें रेमिटेण्ट फीवर कहते हैं। चरकने इसके सम्बन्धमें लिखा है, कि यह ज्वर १२,१० या ७ दिनतक रहता है। या तो यह शीघ्र ही उतर जाता है या रोगीको मार डालता है। अष्टाङ्गहृदय—वाग्भट्टके निदान-स्थानमें लिखा है:—

वातपित्तकफैः सप्तदश द्वादश वासरान् ।
प्रायऽनुयाति मर्यादां मोक्षाय च वधाय च ॥
इत्यग्निवेशस्य मतं हारीतस्य पुनः स्मृतिः ॥
द्विगुणा सप्तमी यावन्नवम्येकादशी तथा ।
एषा त्रिदोष मर्यादा मोक्षाय च वधाय च ।

वातपित्त और कफके कारणसे सन्ततज्वर ७।१० या १२ दिन तक रहता है। इस अवधिमें रोगीको छोड़ जाता है या मार डालता है। यह अग्निवेश का मत है। हारीत मुनिको ऐसी याद है कि, सन्ततज्वर १४।१८ या २२ दिनों तक रहता है। इस बीचमें छोड़ जाता है या मार डालता है। यही त्रिदोषकी मर्यादा है।

यह दुःसह ज्वर है। बड़ी बड़ी तकलीफें देता है—शीघ्रकारी होनेकी वजहसे शीघ्र उतर जाता है या मार डालता है। धातुओं और मलोंकी शुद्धि होनेसे यह सात दिनमें नष्ट हो जाता है और अशुद्धि रहनेसे मार डालता है। कोई कोई सन्ततज्वर बारह दिन बराबर रहकर, गुप्त रूपसे बहुत समय तक बना रहता है। यह ज्वर कष्टसाध्य है। चिकित्सक इन बातोंको विचारकर इसकी चिकित्सा करें। प्रायः लंघन द्वारा इसकी चिकित्सा करनी चाहिये। यह ज्वर त्रिदोषज होता है; पर जिस दोषकी प्रधानता होती है, उसी दोषका उल्लेख होता है।

डाक्टरीसे सन्तज्वरके लक्षण।

इस ज्वरके लक्षण अङ्गरेज़ोंके रेमिटेण्ट फीवरसे मिलते हैं। रेमिटेण्ट फीवर उसे कहते हैं, जो उतरता नहीं। यह बुखार जब चढ़ता है, तब ज़रासी सगसगीसी लगती है, रोएँ खड़े हो जाते हैं। इसमें ज़ियादा गरमी या सरदी नहीं लगती। यह कई दिनों तक बराबर बना रहता है। इसमें जीभ मैली हो जाती है, कभी दस्त लग जाते हैं, कभी क़य होती हैं, बेहोशी हो जाती है, कभी-कभी हाथ पाँव एँठने और शरीर अकड़ने लगता है और कभी-कभी रोगी बकवाद करने लगता है।

इसमें भी मलेरिया होता है और बारीसे आनेवाले ज्वरोंकी अपेक्षा अधिक होता है। इसीसे यह बुखार बहुत दिनों तक

शरीरमें रहता है और कठिनाईसे आराम होता है। इसके इलाजमें अनुभवी डाक्टर या वैद्य हकीमकी ज़रूरत है।

हिकमतसे सन्ततज्वरके लक्षण।

इस बुखारको दायमो तप कहते हैं। जब यह आता है, तब थोड़ी-थोड़ी सरदी लगती है, जी मिचलाता है, कयमें पित्त निकलता है, सिर और कमरमें दर्द होता है, जीभ सफेद हो जाती है, चमड़ा गर्म और खुश्क हो जाता है। इसमें १०६ डिग्री तक ताप हो जाता है। ६ घण्टे ज़ोर करके ज्वर धीमा हो जाता है और पसीने आकर फिर चढ़ने लगता है। यह दस बारह दिन तक रहता है। मस्तिष्क और हृदयमें कभी-कभी वरम या सूजन हो जाती है। किसी-किसीको मूर्च्छा भी होती है। इसमें सन्निपात होनेका भय रहता है और किसी-किसी को हो भी जाता है।

सततज्वरके लक्षण।

जो ज्वर दिन-रातमें दो बार आता है, उसे "सततज्वर" कहते हैं। मतलब यह कि, सतत ज्वर दिन-रातमें दो बार चढ़ता और दो बार उतरता है। ईशान देव कहते हैं, यह ज्वर दिनमें दो बार या रातमें दो बार अथवा दिनमें एक बार और रातको एक बार आता है। अमुक समय ज्वर आवेगा, यह नियम नहीं है।

नोट—यह ज्वर भी प्रायः त्रिदोषज होता है। अङ्गरेजीमें इसे "डबल क्यूटीडन" कहते हैं। दिन-रातमें प्रत्येक दोषके कोप करने का समय होता है, इसीलिये यह दिनरातमें दो बार आता है। वाग्भटने लिखा है,—"दिनके अन्तमें वायु, मध्यमें पित्त और आदिमें कफ प्रबल होता है; इसी तरह रातके अन्तमें वायु, मध्यमें पित्त और आदिमें कफ प्रबल होता है।" "चरक" में लिखा है,—"दोष प्रायः रक्त धातुके आश्रय से सततज्वर करते हैं। यह सतत ज्वर काल, प्रकृति और दूष्यके बलसे दिनरातमें दो बार आता है।

अन्येद्युः ज्वर ।

—⁂—
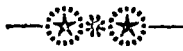
यह ज्वर दिन-रातमें एक बार रोज़ आता है। मांसमें ठहरा हुआ दोष इसे पैदा करता है। दोष दोषवहा नाड़ियोंको रोककर इसे उत्पन्न करता है। यह आता रोज़ है; किन्तु अपने चढ़नेके पहले समयको छोड़कर दूसरे समयमें आता है। क्योंकि पहले समयमें दोषकी स्थिति हृदयमें होती है।

नोट—चरकने सभी विषमज्वरोंमें प्रायः त्रिदोषका होना लिखा है; किन्तु सुश्रुतने अन्येद्युः और सतत ज्वरका होना "पित्त" से लिखा है। हारीतने लिखा है:—जिसमें पहले जाड़ा लगे और पीछे गरमी आवे, वह साध्य होता है—वह झट आराम हो जाता है। जो भयंकर रूपसे होता है और जिसमें पीछे दाह होता है, वह शीघ्र नहीं जाता—वह धातुओं को क्षय करता है।

तृतीयक ज्वर ।

—⁂—

अगर तृतीयक ज्वरमें कफ-पित्तका ज़ोर होता है, तो वह त्रिक-स्थान—कमरमें दर्द करके चढ़ता है। अगर वात-कफका ज़ोर होता है, तो वह पीठमें दर्द करके चढ़ता है। अगर वातपित्तका ज़ोर होता है, तो वह सिरमें पीड़ा करके चढ़ता है। इसको इस तरह भी समझिये,—अगर कमरके पीछे जहाँ तीन हड्डी हैं वहाँ दर्द होकर यह बुख़ार चढ़े, तो इसे कफ-पित्तसे समझो अथवा कफपित्तोल्बण समझो। अगर पीठमें दर्द या जकड़न होकर चढ़े, तो इसे वात-कफसे समझो अथवा वातकफोल्बण समझो। अगर सिरमें दर्द होकर बुख़ार फैल जाय, तो इसे वातपित्तसे समझो अथवा वात-पित्तोल्बण समझो। जब तिजारीमें वातपित्त प्रधान होते हैं, तब पहले माथेमें दर्द होता है, और पीछे ज्वर चढ़ आता है। इसी तरह जब वातकफ प्रधान होते हैं, तब पहले पीठमें दर्द होता है या पीठ जकड़

जाती है ; इसके बाद ज्वर चढ़ आता है। इसी तरह जब कफपित्त प्रधान होते हैं, तब त्रिकस्थान—जहाँ तीन हाड़ पीठके नीचे मिले हैं—में दर्द या जकड़नसी होती है और ज्वर चढ़ आता है। इस तरह ; एक तृतीयक ज्वर तीन तरहका होता है। उसमें किन-किन दोषोंकी प्रधानता है, यह जान लेनेसे इलाजमें सुभीता होता है।

त्रिक वातका स्थान है। कफपित्त पराये स्थानमें यानी वादीके स्थानमें जानेसे कमज़ोर हो जाते हैं ; इसलिये तीसरे दिन ज्वर करते हैं। अगर कफ पित्त अपने स्थानमें रहते हैं, तो सन्तत ज्वर करते हैं। इसी तरह मस्तक कफका स्थान है और पीठ पित्तका स्थान है। वातपित्त कफके स्थान—मस्तक—में पहुँचकर और वात-कफ पित्तके स्थान—पीठमें—पहुँचकर कमज़ोर हो जाते हैं और इसी लिये तीसरे दिन ज्वर करते हैं।

शङ्का—त्रिक वातका स्थान है, वहाँ कफ पित्त कैसे जा सकते हैं ?
समाधान—यह स्थानका नियम प्रकृतिस्थ दोषोंका है, कुपित दोषोंका नहीं। कुपित दोष चाहे जहाँ जा सकते हैं।

चातुर्थिक ज्वर।

चौथैया ज्वर चौथे दिन आता है ; यानी बीचके दो दिन छोड़कर आता है। दोष अस्थि या मज्जामें स्थित होकर इस ज्वरको करता है। चौथैया दो तरहका होता है,—(१) कफाधिक्य (२) वाताधिक्य। कफप्रधान चौथैया दोनों जाँघों (पिण्डरियोंमें)में पीड़ा करके चढ़ता है और वातप्रधान चौथैया सिरमें दर्द करके चढ़ता है। अथवा यों समझिये,—जिसमें कफकी अधिकता होती है, वह पहले जाँघोंमें व्याप्त होकर, पीछे सारी देहमें व्याप्त होता है और जिसमें वातकी अधिकता

होती है, वह पहले मस्तकमें व्याप्त होकर सारी देहमें व्याप्त होता है।

नोट—चरकके मतसे पाँचों विषमज्वर सन्निपातसे होते हैं। "हारीत" कहते हैं,—"चौथैया ज्वरमें पित्तप्रधान होता है।" "सुश्रुत"में कहा है, कोई-कोई वैद्य कहते हैं, कि तिजारी और चौथैया वायुकी प्रधानतासे होते हैं।

प्रलेपक ज्वर।

तथा प्रलेपको ज्ञेयः शोषिणां प्राणनाशनः।
दुश्चिकित्स्यतमो मन्दः सुकष्टो धातुशोषकृत्॥

प्रलेपक ज्वर मन्दा-मन्दा बना ही रहता है। यह कष्टसाध्य और कठिनतासे चिकित्सा योग्य है। यह सब धातुओंको सुखाता है और जिनकी धातुएँ सूख जाती हैं, उनके प्राण नाश करता है। "माधवनिदान"में लिखा है,—"जिस ज्वरमें पसीनोंसे और सूरजकी धूप से अथवा शरीरके भारीपनसे शरीरकी चमड़ी लिप्तसी मालूम हो, इसी कारणसे मन्दा-मन्दा ज्वर हो, जाड़ा लगे, वह ज्वर "प्रलेपक" है। यह ज्वर कफपित्तसे होता है। कोई-कोई इसे त्रिदोषजनित कहते हैं। यह ज्वर राजयक्ष्मा रोगमें होता है। "सुश्रुत उत्तरतन्त्र"में लिखा है,—"प्रलेपक और वातबलासक ज्वर कफ की प्रधानता से होते हैं।"

नोट—यद्यपि सभी विषमज्वर शोषवाले मनुष्योंको अत्यन्त दुःख देते हैं; किन्तु प्रलेपक तो उनके प्राणनाश ही कर डालता है, इसीसे सुश्रुतने प्रलेपकको विषम-ज्वर माना है।

नोट—जिसको यूनानी हकीम तपेदिक कहते हैं, उससे इसके लक्षण मिलते हैं। तपेदिक में थोड़ीसी सरदी लगकर ज्वर चढ़ता है, हथेली और तलवे जियादा गरम रहते हैं, ज्वर धीमा-धीमा बना रहता है, भूख बहुत कम लगती है, जीभ मैली रहती है। दिनमें कभी पसीने बहुत आते हैं, कभी दस्त बहुत लग जाते हैं।

जब किसी अङ्गमें पीप पैदा होती है, तब तपेदिक होता है, पर कहते हैं कि कभी-कभी बिना पीप पैदा हुए भी दिक हो जाती है। जहाँ पीप होती है, वहाँ कुल-मुलाहटसी होती है तथा थकान और दर्द भी रहता है। कमजोरी, क्षीणता, क्षयी, धातुक्षीणता, प्रमेह, मन्दाग्नि और अधिक मैथुन आदि इसके कारण हैं।

डाक्टरीमतसे धीरे-धीरे बल बढ़ाना और ताकतवर दवा जैसे ;—कुनैन या कारबोनेट आव् आयर्न देना अच्छा समझते हैं। दूध देना भी अच्छा समझा जाता है। वैद्यकमें ऐसे ज्वर में "वर्द्धमानपिप्पली", या "सितोपलादि चूर्ण" देना हितकर है। दूधकी मनाही वैद्यकमें भी नहीं है, क्योंकि यह पुराना हो जाता है और पुराने ज्वरमें दूध देना परम हितकर है।

वातबलासकज्वरके लक्षण।

—***—

नित्यं मंदज्वरो रूक्षः शूनः कृच्छ्रेण सिद्ध्यति।
स्तब्धांगः श्लेष्मभूयिष्ठो नरो वातबलासकी॥

रोज़ मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहे, शरीर रूखा (सफेद) हो जाय, सूजन आ जाय, शरीर रुका हुआसा रहे और कफकी अधिकता हो—ये लक्षण "वातबलासक" ज्वरके हैं। यह कष्टसाध्य है।

नरसिंहज्वर या अर्द्धनारीश्वर।

आहारसे उत्पन्न हुआ रस दुष्ट होता है, तब शरीरमें कफ और पित्त दुष्ट होकर रहते हैं। इस कारण आधा शरीर शीतल और आधा गरम रहता है ; यानी जिस तरह अर्द्धनारीश्वरके शरीरका एक भाग स्त्रीका और एक भाग पुरुषका होताहै ; उसी तरह इस रस-ज्वरवालेका आधा शरीर शीतल और आधा गरम रहता है। इसलिये इस ज्वरको "अर्द्धनारीश्वर" कहते हैं। जिस तरह नरसिंहके शरीर का एक भाग मनुष्यका और एक भाग सिंहका होता है ; उसी

तरह इस ज्वरवालेका एक भाग शीतल और एक भाग गरम रहता है ; इसीसे इसे "नरसिंह ज्वर" भी कहते हैं ।

जब दूषित पित्त कोठेमें रहता है और दूषित कफ हाथ पैरोंमें रहता है ; तब शरीर गरम रहता है और हाथ पाँव शीतल रहते हैं । जब दूषित कफ कोठेमें रहता है और दूषित पित्त हाथ पाँवों में रहता है, तब शरीर शीतल और हाथ पाँव गरम रहते हैं ।

रात्रिज्वर के लक्षण ।

जिस मनुष्यके वात और कफ समान होते हैं तथा पित्त क्षीण होता है, उसको विशेष करके रातमें ज्वर होता है ; जिसके वात पित्त समान होते हैं और कफ क्षीण होता है, उसको विशेषकर दिन में ज्वर होता है ।

विषम ज्वरोंमें सरदी और गरमीका कारण ।

"सुश्रुत"में लिखा है,—जब चमड़ेमें कफ और वायु स्थित होते हैं, तब ज्वरके आरम्भमें जाड़ा लगता है ; यानी जाड़ा लगकर बुख़ार चढ़ता है ; लेकिन जब कफ और वायुका वेग शान्त हो जाता है ; तब पित्त बलवान होकर दाह—गरमी—पैदा करता है । इस तरह बुख़ारमें पहले ठण्ड लगती है और पीछे गरमी लगती है । उसी तरह चमड़े में रहनेवाला पित्त पहले अत्यन्त दाह—गरमी करता है ; पीछे जब पित्तका वेग शान्त हो जाता है, तब वात और कफ बलवान होकर हाथ पाँव आदिमें शीत करते हैं ।

खुलासा यह है कि, जब वायु कफके साथ मिलकर रगोंमें बहती है ; तब ज्वरके आदिमें जाड़ा लगता है । जब पीछे वायु कफसे अलग हो जाती है, तब कफ शान्त हो जाता है ; उस समय वायु पित्त

के साथ रगोंमें बहने लगती है ; तब पित्तके कारणसे दाह पैदा हो जाता है ; इसीसे जाड़ेके बुख़ारके अन्तमें प्यास बहुत लगती है। इसी तरह जब वायु पित्तके साथ रगोंमें बहती है, तब ज्वरके आदिमें दाह होता है ; और पीछे पित्तके शान्त होनेपर, वायु कफके साथ नसों में बहने लगती है, तब कफ अपने स्वभावज गुणसे शीत पैदा करता है।

शीतपूर्वक और दाहपूर्वक दोनों प्रकारके ज्वर संसर्गज होते हैं यानी त्रिदोष या सन्निपात से होते हैं। कफ, वायु या पित्त का जैसा संसर्ग होता है, वैसे ही होते हैं। जिस ज्वरके आदिमें दाह होता है, वह कष्टसाध्य होता है और जिसके आदिमें जाड़ा लगता है, वह सुखसाध्य होता है।

जिस तरह वायुके झकोरोंसे समुद्रमें झालें उठती हैं और फैल जाती हैं, उसी तरह वायुके कारणसे दोष ज्वरको करते हैं। जिस तरह समुद्रके उथलपुथल होनेसे जल किनारोंके ऊपर तक छा जाता है और उभारके उतर जाने पर वह जल उसीमें फिर लीन हो जाता है ; उसी तरह दोषोंके वेगके समय ज्वर प्रचण्ड हो जाता है और दोषोंके शान्त होतेही ज्वर भी शान्त हो जाता है। ज्वर आदि सब रोगोंका असल कारण "वायु" ही है ; यानी वायुसे ही ज्वर आदि सब रोग होते हैं।

विषमज्वर शरीरमें हर समय रहते हैं।
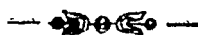
स चापि विषमो देहं न कदाचिद्विमुंचति।
ग्लानिगौरवकार्श्येभ्यः स यस्मान्न प्रमुच्यते॥
वेगेतु समतिक्रान्ते गतोयमिति लक्ष्यते।

धात्वंतरस्थो लीनत्वान्न सौक्ष्म्यादुपलभ्यते ।
अल्पदोषेन्धनः क्षीणः क्षीणेन्धन इवानलः

मामूली तौरपर देखनेसे ऐसा मालूम होता है कि, ज्वर उतर गया, अब अपने समय पर आवेगा ; पर असलमें विषमज्वर शरीर को नहीं छोड़ता । जब हम उसे शरीरसे गया हुआ समझते हैं, तब भी वह शरीरमें होता है । "सुश्रुत"में लिखा है,विषम ज्वर कभी शरीर को नहीं छोड़ता, कुछ न कुछ शरीरमें बना ही रहता है, क्योंकि विषमज्वरवाला ग्लानि, भारीपन और कृशता से शून्य नहीं रहता । हाँ, ज्वरका वेग शान्त हो जानेपर ज्वर चला गया, ऐसा मालूम होता ह, परन्तु वह जाता नहीं । वह और धातुओंमें गुप्तरूपसे छिपकर रह जाता है । अत्यन्त सूक्ष्म होनेकी वजहसे मालूम नहीं होता । मालूम भले ही न हो, पर उसके अंशांश शरीरमें बनेही रहते हैं । थोड़े दोषोंके कारण ज्वर उसी तरह दबा रहता है, जिस तरह ईंधनके कम होनेसे आग मन्दी हो जाती है, उसकी वह तेज़ी नहीं रहती, राखसे ढकी हुई मालूम तक नहीं होती ; अथवा जिस तरह बीज ज़मीनमें पड़ा रहता है, समय पर उगता है ; उसी तरह दोष धातुओंमें बने रहते हैं और समय पर ज़ोर करते हैं ।

चातुर्थिक विपर्य्यय आदिके कारण ।

दोषोंका स्वभाव ही कारण रूप होनेसे, कफस्थानोंके विभागकी अपेक्षा रक्खे बिना भी, चातुर्थिक विपर्य्यय आदि अन्य विषमज्वर अपने-अपने समयमें प्रकट होते हैं । जिस तरह बीज पृथ्वीमें पड़े रहते हैं और अपने नियत समयके आनेपर उगते हैं ; उसी तरह दोष धातुओंमें रहते हैं और अपना ठीक समय आनेपर ही कुपित होते हैं । "सुश्रुत"में लिखा है:—

परो हेतुः स्वभावो वा विषमे कैश्चिदीरितः।
आगन्तुश्चानुबन्धो हि प्रायशो विषमज्वरे॥

कोई आचार्य विषमज्वरका हेतु स्वभाव ही कहते हैं; यानी वे अपने स्वभावसे ही नियत समयपर आ जाते हैं। कोई इसमें प्रायः आगन्तुक को कारण मानते हैं। ध्यान रखना चाहिये, यह बात चातुर्थिक विपर्यय आदि अन्य ज्वरोंके सम्बन्धमें कही है।

विषमज्वरों की चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) वङ्गसेनने कहा है,—सभी विषमज्वर सन्निपातसे उत्पन्न होते हैं, उनमें जो दोष अधिक हों, उन्हीं दोषोंकी चिकित्सा करनी चाहिये।

(२) वाताधिक्य विषमज्वरको घृतपान और अनुवासन वस्ति तथा स्निग्ध और उष्ण अनुपानोंसे शान्त करना चाहिये; यानी वात-प्रधान विषम ज्वरको घी पिला कर, अनुवासन वस्ति करके तथा चिकने और गरम पदार्थ सेवन कराकर जय करना चाहिये।

(३) पित्ताधिक्य विषमज्वरमें गरम दूध घी मिलाकर विरेचन— दस्त करानेके लिये देना चाहिये तथा तिक्त और शीतल पदार्थोंसे उसे नष्ट करना चाहिये।

(४) कफाधिक्य विषमज्वरमें वमन, पाचन, रूखे अन्न-पान, लंघन और गरम दवाओंके काढ़े—ये सब हितकारी हैं।

(५) वातोल्वण विषमज्वरको नष्ट करनेके लिये, काढ़ेमें "मधु" सोल-हवाँ भाग डालना चाहिये; पित्तोल्वण विषमज्वरके नष्ट करनेके

लिये काढ़ेमें "शहद" आठवाँ भाग डालना चाहिये। कफोल्वण विषम ज्वरको नष्ट करने के लिये "शहद" चार भाग डालना चाहिये और मिश्री इससे विपरीत डालनी चाहिये।

(६) वमन और विरेचन द्वारा शुद्ध करनेसे विषमज्वर दूर होता है। निशोथ, पीपल या हरड़—इनमेंसे किसी एकको शहतके साथ चाटनेसे विषमज्वर दूर होते हैं। सब तरहके विषमज्वरोंमें वमन या विरेचन कराना चाहिये। निशोथके चूर्णमें शहत मिलाकर चाटनेसे विषमज्वर निश्चयही नाश हो जाते हैं। लोलिम्बराज महाशय अपनी स्त्रीसे कहते हैं,—

> यो भजेत्समधुश्यामां हे हेमकलशस्तनि ॥
> विषमेषु व्यथास्तस्य न भवंति कदाचन ॥

हे सोनेके घड़ोंके समान स्तनोंवाली! जो शहदके साथ निशोथ या पीपलके चूर्णको चाटता है अथवा जो कामी पुरुष शराब और सोलह वर्षकी स्त्रीका सेवन करता है, उसे विषम ज्वरकी तकलीफ कभी नहीं होती।

(७) विषमज्वरमें रोगीके पीनेको सुरा (शराब) और माँड देना चाहिये। भोजनके लिये मुर्गा, तीतर और मोरका मांस देना चाहिये। ये पदार्थ हित हैं। छाछके साथ मांस, दूधके साथ मांस, दहीके साथ मांस अथवा उड़दके साथ मांस खानेसे विषमज्वर नष्ट हो जाता है।

(८) क्षीण मनुष्यके बहुत दिनोंका सतत या विषमज्वर बढ़ आय, तो उसको ज्वरनाशक पथ्य या भोजनसे जीतना चाहिये। रूखे मनुष्यका ज्वर अगर वमन, लंघन और हलके पदार्थोंसे शान्त न हो; तो उसे घी (दवाओंका बना घी) पिलाकर जीतना चाहिये। जैसे चन्दनादि घृत, कल्याणघृत, महाकल्याणघृत, षट्पलघृत और अमृतषट्पलघृत इत्यादि।

(९) अगर रोगीको शीतके कारण तकलीफ हो, तो शीतनाशक चिकित्सा करनी चाहिये। यदि दाहसे पीड़ा हो, तो दाहनाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

(१०) प्रलेपक ज्वरोंमें सब क्रियायें कफनाशक करनी चाहियें।

(११) शीतज्वरों, मलेरिया ज्वरों, इकतरा और तिजारी चौथैया प्रभृति पारीसे आनेवाले ज्वरोंमें जो दवाएँ बिना ज्वरकी हालतमें दी जाती हैं, उन्हें ज्वर चढ़नेकी हालतमें न देना चाहिये। इन ज्वरोंमें अक्सर दवाएँ ज्वर रोकनेके लिये, ज्वर चढ़नेसे पहले ही दी जाती हैं और ज्वर चढ़ आने पर बन्द कर दी जाती हैं; फिर दूसरे दिन या पारीके दिन, ज्वर चढ़नेसे पहले, फिर दी जाती हैं। हाँ, लोबान या आककी छाल प्रभृतिके चूर्ण ज्वर उतारनेके लिये दिये जा सकते हैं।

(१२) बहुत दिनोंके सततज्वर और विषमज्वरोंमें हितकारक भोजन देना चाहिये। सतत और विपर्य्यय आदि ज्वरोंका इलाज भी सतत और सन्तत आदि ज्वरोंकी तरहही करना चाहिये।

(१३) तिजारी और चौथैया ज्वरमें वमन विरेचन साधारण कर्म करके चिकित्सा करनेसे जल्दी सिद्धि होती है।

(१४) तिजारी और चौथैयामें साधारण चिकित्सा करनी चाहिये, क्योंकि विषम ज्वरोंमें प्रायःही आगन्तुकका अनुबन्ध होता है; अतः ये ज्वर बलि, हवन, टोने, टोटके, जंत्र-मन्त्र और दवा दोनोंसे आराम होते हैं। इनकी चिकित्सा उन्माद रोगकी चिकित्सासे बहुत मिलती है। विषमज्वरोंमें उन्माद और मृगीकी तरह धूप, धूनी और अञ्जन तथा नस्यका प्रयोग करना अच्छा है।

(१५) अगर विषमज्वर रोगी बहुत दुबला हो, तो वाताधिक्य विषम ज्वर अनुमान करना चाहिये। ऐसी दशामें घृत और आस्थापन तथा अनुवासनसे इलाज करना चाहिये।

अगर रोगीकी आँखें, नाखुन प्रभृति हल्दीकी तरह पीले होगये हों, तो पित्त-प्रधान ज्वर समझना चाहिये। ऐसी हालतमें विरेचन—जुल्लाब, दूध, दवाओंके बने घी तथा कड़वे और शीतल नुसख़ोंसे इलाज करना चाहिये।

अगर कफप्रधान विषमज्वर हो; तो वमन, पाचन, रूक्ष अनुपान—विशेष करके लंघन (हल्के भोजन) तथा काढ़े और गरम योगों—नुसख़ोंसे इलाज करना चाहिये।

(१६) विषमज्वरमें घी की प्रधान मात्रा देकर या खूब खिला-पिलाकर वमन करा देनी चाहिये।

(१७) रसस्थ ज्वरमें यानी उस ज्वरमें जो खानेके बाद आता हो, वमन और लंघन हितकारी हैं

विषमज्वरों की सामान्य चिकित्सा।

पाचन क्वाथ।
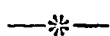
(१) सोनामक्खी, छोटी हरड़, काले दाख और ज़ीरा—इनका पाचन काढ़ा विषमज्वरोंमें देना चाहिये। परीक्षित है।

विषमज्वरनाशक नुसखे।

(१) इन्द्रजौ, पटोलपत्र और कुटकी (१)पटोलपत्र, सारिवा (गौरीसर), नागरमोथा, पाढ़ और कुटकी (२) नीम, पटोलपत्र, त्रिफला, दाख, नागरमोथा और इन्द्रजौ (३) चिरायता, गिलोय,लाल चन्दन और सोंठ (४) गिलोय, आमले और नागरमोथा (५)—ये पाँचों प्रकारके काढ़ेपाँचों प्रकारके विषमज्वरोंको तत्काल शान्त करते हैं।

लोलिम्बराज महोदय कहते हैं :

> अबले कमलातनुरक्तकले चलदृक्कमले धृतकामकले।
> अमृताब्दगिवं मधुमद्विषमे विषमे विषमेषु विलासरते॥

हे अबले! हे लक्ष्मीके समान शरीरकी कलावाली! हे कमलके समान चञ्चल दृष्टिवाली! कामदेवकी इच्छासे मधुर ध्वनिवाली! कामकलामें प्रवीणा! गिलोय, नागरमोथा और आँवलेका काढ़ा शीतल करके और शहत मिला कर पीनेसे विषम ज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—गिलोय गीली लेनी चाहिये, पर दूनी न लेनी चाहिये।

(२) कंघीकी जड़ और सोंठका काढ़ा बनाकर सेवन करनेसे शीत, कम्प और दाहयुक्त विषमज्वर मात्र दो तीन दिनमें नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) नागरमोथा, आमले, गिलोय, सोंठ और कटेरी—इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और शहत मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

लोलिम्बराज महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं :—

> वाङ्माधुर्यजितामृतेऽमृतलता लक्ष्मीशिवाभे शिवा
> विश्वं विश्ववरे घनो घनकुचे सिंही च सिंहोदरि॥
> एभिः पंचभिरौषधैर्मधुकणामिश्रः कषायः कृतः पीत-
> श्चेद्विषमज्वरः किमु तदा तन्वंगि न जीयते॥ ६२॥

हे अपनी मीठी बोलीसे अमृतको जीतनेवाली! हे लक्ष्मी और पार्वतीके समान कान्तिवाली! हे सारी स्त्रियोंमें श्रेष्ठ! हे सघन कुचोंवाली और सिंहके समान उदरवाली! गिलोय, आमला, सोंठ, नागरमोथा और कटेहली—इन पाँचोंके काढ़ेमें शहत और पीपलका

चूर्ण मिलाकर पीनेसे, हे नाज़ुक-बदन ! क्या विषमज्वर नष्ट नहीं होता ? अवश्य होता है ।

(४) लहसनके कल्कको* तिलके तेल और नमकके साथ मिलाकर, सवेरेके समय, सेवन करनेसे विषमज्वर और वात-सम्बन्धी सब रोग नाश हो जाते हैं ।

नोट—यद्यपि भावमिश्रने इस योगको सामान्यतया विषमज्वरनाशक लिखा है, पर इससे वायु और वायुसे उत्पन्न घोर विषमज्वर निश्चयही नाश होता है । वंगसेनने लिखा है,—"इसके सेवनसे बहुत दिनका पुराना घोर विषमज्वर और वातरोग नाश होता है ।" सुश्रुतने सवेरेके समय घी और लहसनके सेवन करनेसे विषमज्वरका जाना लिखा है ।"

लोलिम्बराज महोदय भी कहते हैं :—

> नान्यानि मान्यानि किमौषधानि परन्तु कान्ते न रसोनकल्कात् ।
> तैलेन युक्तादपरः प्रयोगो महासमीरे विषमज्वरेऽपि ॥ ६७ ॥

हे सर्व्वाङ्गसुन्दरी ! क्या और सब दवाएँ मान करने योग्य नहीं हैं ? अवश्य ही मान करने योग्य हैं । परन्तु महान वातरोग और विषमज्वरमें तेल मिले हुए लहसनके कल्कसे बढ़कर दूसरा नुसख़ा नहीं है ।

वाग्भट महोदयने भी कहा है—"प्रातः सतैलं लशुनं प्राग्भक्तम् वा तथा घृतम्........विषमज्वर जित्परम् ।" सवेरे के समय तेलके साथ लहसन या पुराना घी सेवन करनेसे विषम ज्वर नाश हो जाता है । लहसन के कल्ककी सभी शास्त्रकारोंने भरपूर तारीफ की है ।

(५) एक तोले कलौंजीको आगमें भूनकर, पीछे उसमें तोला भर गुड़ मिलाकर खानेसे विषमज्वर नाश होता है ।

(६) तुलसीके पत्तोंके रसमें कालीमिर्च का चूर्ण डालकर पीनेसे विषम ज्वर नाश हो जाता है ।

---

* कल्क की परिभाषा पृष्ठ १५० के फ़ुटनोट में देखिये ।

(७) द्रोणपुष्पी (गूमा) के रसमें कालीमिर्चोंका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नाश हो जाता है।

(८) कालाज़ीरा और गुड़ समान भाग लेकर, उसमें ज़रासा कालीमिर्चका चूर्ण मिलाकर खानेसे विषमज्वर अवश्य नष्ट हो जाता है।

नोट—जीरेको गुड़में मिलाकर खानेसे विषमज्वर, वातरोग और मन्दाग्नि,—ये नाश हो जाते हैं। गुड़, घी, शहद, बायविड़ङ्ग और चाँवल सदा पुराने लेने चाहियें।

(९) सोंठ, ज़ीरा और गुड़— इनको एक जगह पीसकर, गरम जलके साथ पीनेसे अथवा पुरानी शराबके साथ पीनेसे अथवा माठेके साथ पीनेसे तत्काल शीतज्वर नाश होता है।

(१०) परवल, हरड़, नागरमोथा, कुटकी, चिरायता, मुलेठी और गिलोय,—इन सातोंका काढ़ा सम्पूर्ण विषमज्वरोंपर उत्तम है। इससे खाँसी और अरुचिका भी नाश होता है।

(१२) द्रोणपुष्पीके रसमें मिश्री और ज़ीरा मिलाकर, चार तोले रस पीनेसे प्रवल विषमज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) चिरायता, हरड़, नागरमोथा, कटेरी, त्रायमाण, सोंठ, जवासा, कुटकी, वाट्याल (चिकणा), वला, कचूर, पीपल, परवल, कटेरी, नेत्रवाला, पीपलामूल और पित्तपापड़ा—इन सबको कूट पीसकर चूर्ण करले। इसका नाम "षोड़षाङ्ग चूर्ण" है। यह सब तरहके विषम ज्वरोंको नाश करता है। परीक्षित है।

(१३) चिरायता, कुटकी, निशोथ, नेत्रवाला, पीपल, बायविड़ङ्ग, सोंठ, कड़वी तूम्बी और हरड़—इनका काढ़ा सब तरहके ज्वरोंको नाश करता है और जठराग्निको वढ़ाता है। परीक्षित है।

(१४) कचूर, सोंठ, पित्तपापड़ा, देवदारू, जवासा, भटकटैया, मोथा, कुटकी और चिरायता—इन ९ दवाओंके काढ़ेको, शहत और

पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सन्निपात, विषमज्वर और जीर्ण-ज्वर भी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) चौलाईकी जड़ सिरमें बाँधनेसे विषमज्वर शीघ्र ही भाग जाता है।

क्षणमपि चलतां जहीहि मुग्धे शृणु वचनं मम तन्वि सावधाना ॥
वसति शिरसि मेघनादमूले व्रजन्तितरां विषमो विलासदृष्टे ॥ ६९ ॥

हे यौवनावस्थामें क़दम रखनेवाली नाज़नी ! उछल-कूद छोड़ कर मेरी बात ध्यान लगाकर सुन ! चौलाईकी जड़ सिरमें बाँधने से विषमज्वर शीघ्र ही भाग जाता है।

(१६) उत्तम गिलोयका कपड़ेमें छना हुआ चूर्ण १०० तोले, गुड़ १६ तोले, शहद १६ तोले, घी १६ तोले—इन सबको एक जगह मिलाकर लड्डू बना लो। अपनी अग्निके बलाबलका विचार करके इसको खाओ। हितकारी और हलका तथा परिमित भोजन करो। इसके सेवन करनेवाले को कोई रोग नहीं होता, न बुढ़ापा आता है, न बाल सफेद होते हैं। इसके खानेवालेको विषमज्वर, मोह, वातरक्त और नेत्ररोग कभी नहीं होते। यह परमोत्तम रसायन, मेधाजनक और त्रिदोषनाशक है। इसके सेवन करनेवाला सौ बरससे अधिक जीता है और देवके समान बली रहता है। इसका नाम "गुड़ूची मोदक" है। इसके सेवन करनेसे पाँचों प्रकारके विषमज्वर नाश होते हैं।

नोट—हमारी रायमें घी २० तोले लेना अच्छा होगा। इसको "अमृत रस" भी कहते हैं। यह नुसखा परमोत्तम है। इसके सेवनसे विषमज्वर, प्रमेह, वात-रक्त और नेत्ररोगमे निश्चयही लाभ होता है। वास्तवमें यह अमृत ही है।

(१७) गिलोय, कुटकी, नीमकी छाल, धनिया, पटोलपत्र, पित्तपापड़ा, सनाय और बड़ी हरड़—इन सब दवाओंको चार-चार माशे लेकर, सबको एकत्र कूटकर, आधा सेर जलमें पकाओ।

जब आधापाव जल रह जाय, उतार कर छानलो। इस काढ़े को निवाया-निवाया, दो दो घण्टेमें, ३ बार, सेवन करनेसे सब तरहके विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—अगर पित्तका जोर जियादा हो, तो इस काढ़े में ४ माशे लालचन्दन मिला देना। अगर खाँसी हो, तो ४ माशे कटेरी मिला देना। अगर कब्ज हो, तो हरड़ औरभी बढ़ा देना। छोटे बालकोंको अवस्थानुसार कम मात्रा देना। यह नुसखा एक वैद्यराजने परीक्षा करके लिखा है।

(१८) पीपल, मिश्री, शहद, औटा हुआ दूध और नौनी घी—इन सब को कलछीसे मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नाश हो जाता है।

नोठ—दूधके शीतल होने पर शहद मिलाना चाहिये ; गरममें न मिलाना चाहिये तथा घी और शहद बराबर न लेना चाहिये।

(१९) घी, दूध, मिश्री, पीपल और शहत—इनको एकमें मिलाकर सेवन करनेसे विषमज्वर दूर हो जाता है। इस नुसख़ेका नाम "पंचसार" है। इससे क्षतक्षीण, क्षय, खाँसी और हृदय-रोगमें बहुत लाभ होता है। पुराने ज्वरमें यह अच्छा काम करता है। परीक्षित है।

नोट—शहद १ भाग, घी दो भाग, पीपल ४ भाग, मिश्री ८ भाग और दूध ३२ भाग—इस हिसाब से इन दोनों (नं १८ और १९) नुसखों में ये सब पदार्थ लेने चाहियें। जिनको कच्चा दूध माफिक न हो, उन्हें दूध औटा लेना चाहिये ; परन्तु औटते या गरम दूध में शहद न मिलाना चाहिये। कच्चा दूध सदा "धारोष्ण" यानी थनों से निकलते ही, तत्काल, विना हवा लगे पीना चाहिये। धारोष्ण दूध बलकारक, हलका, शीतल, अमृत के समान, अग्नि-दीपक और त्रिदोषनाशक है। अगर दूध दुहने के वाद शीतल हो गया हो, तो उसे आग पर गरम करके काम में लाना चाहिये। गाय का दूध धारोष्ण और भैंस का दूध दुहकर शीतल हो जाय, तब काम में लाना चाहिये। गाय और भैंस के दूधके सिवाय और सब दूध कच्चे नुक़सानमन्द होते हैं। गरम किया हुआ दूध कफ तथा वातनाशक होता है और गरम करके शीतल किया हुआ पित्तनाशक होता है। दूध में आधा जल डाल कर औटाया हुआ और पानी पानी जल जाने पर शेष रहा दूध कच्चे दूध से भी अधिक हलका होता है।

(२०) "सुश्रुत"में लिखा है,—घी, दूध, मिश्री और शहतके साथ, यथा—बल, पीपल सेवन करनेसे विषमज्वर जाते हैं। अथवा दश मूलके काढ़ेमें पीपल मिलाकर पीनेसे भी विषमज्वर नाश होते हैं। मुर्गेके मांसके साथ उत्तम मदिरा (शराब) पीनेसे भी विषम ज्वर जाते हैं। वर्द्धमान पीपलोंका सेवन करने और दूध शोरवा खानेसे भी विषमज्वर जाते हैं।

लोलिम्बराज महाशय कहते हैं :—

भवति विषमहन्त्री चेतकी क्षौद्रयुक्ता
भवति विषमहन्त्री पिप्पलीवर्द्धमाना ॥
विषमरुजमजाजी हन्ति युक्ता गुडेन
प्रशमयति तथोग्रा सेव्यमाना गुडेन ॥

शहतमें "हरड़का चूर्ण" मिलाकर चाटनेसे अथवा "वर्द्धमान पिप्पली" सेवन करनेसे अथवा हरड़, ज़ीरा और अजवायनका चूर्ण सेवन करनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—हमने वर्द्धमान पीपलको जीर्णज्वर पर रामबाणके समान फलदायी देखा है। वर्द्धमान पीपल सेवन करनेकी विधि हमने आगे जीर्णज्वर की चिकित्सामें लिखी है, वहीं देख लेनी चाहिये।

(२१) धनियाँ, लौंग, निशोथ और सोंठ—इनका चूर्ण गरम जलके साथ लेनेसे अग्निमान्द्य, श्वास, अजीर्ण और विषमज्वर नाश हो जाते हैं। उत्तम नुसखा है।

(२२) हरी चाय, सोंठ और मिश्रीका काढ़ा बनाओ। आठवाँ भाग जल रहनेपर उतार लो। मलछान कर पीजाओ और ओढ़कर सोजाओ। इसके पीनेसे पसीने आकर सरदी निकल जाती है और शरीरमें फुरती आ जाती है। यह काढ़ा गरम है। अगर मातदिल करना हो, तो इसमें दूध मिला देना चाहिये।

(२३) छुहारेकी गुठली और औंगेकी जड़को शीतल जलमें चन्दनकी तरह घिस लो। पीछे खानेके पानमें—इसमेंसे ४ रत्ती लगाकर ऊपरसे लौंग, सुपारी, इलायची और कत्था वगैरः रखकर ऐसे ही तीन पान तैयार करो। ज्वर आनेके टाइमसे डेढ़ घण्टे पहले—आधे आधे घण्टेके अन्तरसे—एक-एक करके तीनों पान खा जाओ। इस तरह ३ दिन तक, हर रोज़ तीन-तीन पान खानेसे इकतरा आदि शीतज्वर भाग जाते हैं।

(२४) कड़वे नीमके पत्ते ४० तोले, सोंठ ४ तोले, पीपर ४ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, हरड़, ४ तोले, बहेड़ा ४ तोले, आमले ४ तोले, सेंधानोन ४ तोले, विरिया नोन ४ तोले, विड़नोन ४ तोले, जवाखार ४ तोले, सज्जीखार ४ तोले और अजवाइन २० तोले —इनका चूर्ण बनाकर, रोज़ सवेरे सेवन करनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—सफेद कनेरकी जड़ रविवारको कानपर बाँधनेसे सभी विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(२५) पटोलपत्र, इन्द्रजौ, देवदारु, त्रिफला, नागरमोथा, दाख, मुलेठी, गिलोय और वासा – इनका काढ़ा बनाकर और शीतल होनेपर शहद मिलाकर पीनेसे नवीन ज्वर विषमज्वर प्रभृति सब तरहके ज्वर आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—यह काढ़ा सभी तरहके ज्वरोंको आराम करता है; विशेषकर सब तरहके विषम ज्वरों पर तो रामवाण ही है। परीक्षित है।

विषमज्वर नाशक
धूप, नस्य, यन्त्रमन्त्र और टोटके प्रभृति।

---

(१) सेंधानोन, पीपलके चाँवल और मैनसिल—इनको एकत्र तेलमें पीसकर आँजनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(२) नीमके पत्ते, बच, कूट, हरड़, सफेद सरसों और गूगल—इन सबको एकत्र पीसकर, घीमें मिलाकर धूप देनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं ।

(३) बिलावकी विष्ठाकी धूनी देनेसे विषमज्वरमें काँपना दूर हो जाता है ।

(४) सहदेई, बच, अपराजिता और नाई—इनकी शरीरमें धूप देनेसे अथवा इनका उबटन करनेसे सब तरहके ज्वर शान्त हो जाते हैं ।

(५) मोरकी पूँछके चँदोवेकी धूप देनेसे सब तरहके ज्वर और ग्रह-बाधा दूर होती है ।

(६) गूगल, बच, कूट, नीमके पत्ते, जौ, घी, हरड़ और सफेद सरसों—इनकी धूप देनेसे सब तरहके ज्वर नाश हो जाते हैं ।

(७) गूगल, रोहिषतृण, बच, राल, नीमके पत्ते, आकके पत्ते, अगर और देवदारू—इनकी धूप देनेसे सब तरहके ज्वर आराम होते हैं । इसका नाम "अपराजिता" धूप है ।

(८) इन्द्रजटा, गायका सींग, बिलावकी विष्ठा, साँपकी काँचली, मैनसिल, भूतकेशी, बाँसकी छाल, शिवका निर्माल्य, घी, जौ, मोरकीचाँद, बकरेके रोम, सरसों,बच हींग, गोरोचन और काली मिर्च—इनको बराबर-बराबर लेकर, बकरेके मूत्रमें पीस कर, विधि सहित धूप देनेसे सब तरहके ज्वर, डाकिनी, पिशाच, प्रेत आदि बाधा दूर होती हैं । इसको "महेश्वर धूप" कहते हैं ।

(९) नीमके पत्ते आँवला, बच, इन्द्रजौ, घी और लाख—इनकी धूप ज्वर को हरती है ।

अयि कुशाग्रसमानमते मते मतिमतामतिमन्मथमंथरे ॥
ज्वरहरं रुगरिष्टशिवावचायवहविर्जतुसर्षपधूपनम् ॥ ७२ ॥

हे कुशाग्र बुद्धिवाली ! हे पण्डितोंसे मान पाने योग्य ! हे कामदेवके ज़ोरके मारे धीरे-धीरे चलनेवाली ! कड़वे नीमके पत्ते, आँवला, वच, इन्द्रजौ, घी, लाख और सफेद सरसों—इन सबको एकत्र करके, इनकी धूप देनेसे ज्वर भाग जाते हैं।

(१०) वच, हरड़ और घी,—इन तीनोंको आगपर डालकर, धूआँ देनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(११) "सुश्रुत"में लिखा है,—बकरी और भेड़का चमड़ा और उनके रोएँ वच, कूट, लाख या गूगल तथा नीमके पत्ते—इनमें शहद मिलाकर रोगीको धूनी देनेसे विषमज्वर और जीर्णज्वर नाश हो जाते हैं। अगर कम्प भी हो, तो बिलावकी विष्ठाको धूनी देनी चाहिये।

(१२) पीपल, सेंधानोन, तेल और मैनसिल—इनको घिसकर आँखोंमें आँजनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(१३) जिस समय ज्वर चढ़नेवाला हो, उस समय रोगीको विषरहित साँपोंसे या पालतू हाथियोंसे या बनावटी तस्करोंसे डराना चाहिये और उस दिन खानेको न देना चाहिये।—सुश्रुत।

किन्तु घोर सन्निपातमें, जब किसी तरह आराम होनेकी उम्मीद न रहे, रोगीको साँपसे कटवानेकी विधि है। कहा है :—

> कालीयके गदंदद्यादंशयोश्च प्रकोष्ठयो।
> ब्रह्मस्थाने शंखयोश्च सन्निपात निवृत्तये॥

सन्निपातकी निवृत्तिके लिये साँपसे कटाना चाहिये तथा कलाई, कनपटी और बीच मस्तकमें दाग देना चाहिये।

(१४) हीरा, पन्ना आदि रत्न, मंगलीक द्रव्य, सींगिया विष प्रभृति धारण करनेसे भी विषमज्वर नष्ट हो जाते हैं।

(१५) एक मक्खी, आधी कालीमिर्च और ज़रासी हींग—इन तीनोंको

पानीमें पीसकर आँखमें आँज दो, जूड़ीज्वर भाग जायगा। जादू है।

(१६) उल्लूका पंख और गूगल, काले कपड़ेमें लपेटकर यानी बत्तीसी बनाकर, घीमें तर करलो और उसे जलाकर काजल पाड़ लो। इस काजलके आँखोंमें लगानेसे चौथैया ज्वर भाग जाता है। इसका अजीब असर होता है। सच पूछो तो जादू है।

(१७) सफेद धतूरा, रविवारको उखाड़कर, दाहिने हाथमें बाँधो। एकही दिनमें पारीका शीतज्वर भाग जायगा।

(१८) करंजुवेकी गिरी पानीमें पीसकर, नाकमें टपकानेसे जुड़ीज्वरसे छुटकारा हो जाता है। करंजुवेकी ३ कोंपल और २ काली मिर्च जलमें पीसकर पिलानेसे भी लाभ होता है।

(१९) आककी जड़ २ तोले और कालीमिर्च १ तोले—इनको बकरी के दूधमें पीसकर, चने-बराबर गोलियाँ बनालो। ज्वरकी पारीसे पहले १ गोली खिलाओ। इससे भी जाड़ेका ज्वर काफूर हो जाता है।

(२०) आकके पीले-पीले पत्ते लाकर, उनको कोयलोंकी आगपर रखकर, उनकी राख करलो। उस राखमेंसे ४ रत्ती राख शहतमें मिलाकर, सवेरे चाटो। इस उपायसे भी जाड़ेका ज्वर चला जाता है।

विषमज्वरनाशक मंत्र।

(२०) ओं ह्रां ह्रीं क्रीं सुग्रीवाय महाबल पराक्रमाय सूर्य्यपुत्रायामिततेजसे एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक महाज्वर भूतज्वर भयज्वर क्रोधज्वर वेलाज्वर प्रभृति ज्वराणां दह दह पच पच अवत अवत वानरराज ज्वराणां बन्धबन्ध ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा। नास्तिज्वरः। ज्वरापगमनसमर्थज्वरस्त्रास्यते॥ इस मन्त्रसे विषमज्वर दूर होता है ——हारीत।

जड़ियासे बन्दरकी शकल बनाकर, गन्ध, पुष्प और चाँवलों से पेचवर पूजा करते हैं। सुग्रीव नामक बन्दरोंके राजाका दिव्य रूप देखनेसे ओर एकाहिक ज्वर नष्ट हो जाता है।

(२१) पार्वती. नन्दी आदि गण और मातृगण सहित श्रीसदाशिव को पूजन करनेसे विषमज्वर नाश होते हैं। महाभारतके तेरहवें—अनुशासन पर्व्व में कही—विष्णुभगवान्की स्तोत्रसे स्तुति करनेसे सब तरहके ज्वर नष्ट होते हैं। माता पिता गुरु आदि के पूजन, महात्माओंके दर्शन, तप, सत्य, जप, होमदान और ब्रह्मचर्य्यव्रत पालन आदिसे भी विषमज्वर चले जाते हैं।

(२२) निर्गुण्डी यानी सम्हालूके पत्तोंमें ज्वर नाश करनेकी अपूर्व शक्ति है। निर्गुण्डीके ६ माशे हरे पत्ते लेकर, हाथसे खूब मलकर, एक मलमलके कपड़ेमें बाँधकर, पोटलीसी बना लो। ज्वर चढ़नेसे चार पाँच घण्टे पहले, इसको बारम्बार सूँघो और इसके रसकी ३।४ बूँद नाकमें टपकाकर, नस्यकी तरह ऊपर चढ़ाओ। इस उपायसे आश्चर्यजनक फल होता है। इसका मलेरिया या विषमज्वर पर कुनैनके समान फल होता है। वैद्यराज पं० नाथूरामजी शर्म्मा "वैद्य" मुरादाबादमें लिखते हैं,—यह हमारा बीसों बारका आज़माया हुआ है।

एक और वैद्य महाशय भी लिखते हैं,—"सम्हालूके पत्तोंका स्वरस, कपड़ेमें निचोड़ कर, उसकी नस्य लेनेसे ज्वरका वेग रुकता है।"

(२३) ज्वरके चढ़नेसे तीन चार घण्टे पहले, हुलहुलके पत्तोंका रस सूँघनेसे और उसे हाथ पैरके नाखूनों पर लगानेसे ज्वरका वेग रुकता है।

(२४) ज्वरके बढ़नेके समय, ज्वरकी याद करनेसे जिसका ज्वर बढ़ता है, उसको इष्ट पदार्थों से या अद्भुत बातोंसे भुलाकर नष्ट कर देना चाहिये। रोगीका ध्यान बटाने, ज्वर आनेकी बात भुला

देनेसे—याद आनेसे चढ़नेवाला ज्वर, निश्चयही, नाश हो जाता है। हमने कितनीही बार परीक्षा की है। "चरक"में लिखा है,—हम को अमुक समय ज्वर आवेगा, इसी जगह हमारे ज्वर आनेका समय हो गया इत्यादि प्रकारसे ज्वरका समय और स्थानकी चिन्ता करनेसे जिसको ज्वर आ जाता हो, उसके चित्तको अभीष्ट चित्र-विचित्र विषयों—क़िस्से-कहानियों में भुलावा देकर, वक्त को निकाल देनेसे ज्वर नहीं आता।

सन्तत ज्वरनाशक नुसख़े ।

(हर समय चढ़े रहनेवाले ज्वरके लिये)

(१) त्रायमाण सारिवा, जवासा और कुटकी—इनका काढ़ा सन्तत ज्वरमें वातादि दोषोंकी निवृत्तिके लिये हित है। परीक्षित है।

(२) त्रायमाण, कुटकी, अनन्तमूल और गौरीसर (सारिवा)—इनका काढ़ा पीनेसे सन्तत-सततादि ज्वर और वातादि रोग दूर होते हैं।

(३) पटोलपत्र, नागरमोथा, वृहद्दन्ती (अभावमें दन्ती या जमालगोटेकी जड़), कुटकी और सारिवा—इनका काढ़ा पीनेसे सन्तत ज्वर नाश होता है।

(४) कड़वे परवलके पत्तोंका रस निकालकर, कलेजे पर और सारे शरीरपर मलनेसे सन्ततज्वर और शीतज्वरमें लाभ होता है। इसी तरह, कड़वे करौंदेकी जड़ पानीमें घिसकर शरीरपर लगानेसे भी विषमज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—यह ज्वर बहुत ज़हरीला होता है। इसमें आरम्भमें लंघन कराने चाहियें ; दवा या अन्न न देना चाहिये। इसमें सन्निपात

होनेका बहुत डर रहता है ; इसलिये दवा और पथ्य खूब सोच-समझ कर देना चाहिये। पुराना पड़नेपर हलका जुलाब देना हित है। मुनक्केके साथ सत गिलोय देना अच्छा उपाय है। मुनक्के सेककर और कालीमिर्च नमक लगाकर देना भी अच्छा है। भूखमें मूँगका यूष देना चाहिये।

हिकमतसे

सन्ततज्वर या दायमी तापका इलाज।

—*—

(१) मुनक्का और सत्त गिलोय मिलाकर दो।

(२) गुलक़न्द और सौंफ मिलाकर सवेरे शाम दो।

(३) गुलक़न्द, अनीसूँ, मस्तगी—तीनों ६।६ माशे मिलाकर रोगीको खिलाओ। उत्तम दवा है।

(४) शर्बत गावज़बान भी इस ज्वरमें अच्छा है।

सततज्वरनाशक नुसख़े।

—*—

(दिनरातमें दो बार चढ़नेवाले ज्वरके लिये)

(१) परवल, हरड़, नीम, इन्द्रजौ, गिलोय और जवासा—इनका काढ़ा खाँसी प्रभृति युक्त सततज्वरको नाश करता है। परीक्षित है।

(२) परवल (पटोलपत्र), इन्द्रजौ, अनन्तमूल, हरड़, नीम, गिलोय और सुगन्धवाला—इनका काढ़ा पीनेसे सततज्वर नष्ट होता है।

(३) कुटकी, खस, खिरेंटी, धनिया, पित्तपापड़ा और नागरमोथा—इन औषधियोंका काढ़ा उस ज्वरको शीघ्र नष्ट करता है, जो एक दिनमें दो बार आता है। परीक्षित है।

(४) ज्वर उतर जानेकी हालतमें, ज्वर आनेसे पहले दो दो घण्टोंपर "महाज्वरांकुश बटी" ताज़ा जलसे निगलवा देनेसे, एकही पारीमें या २।३ पारीमें, यह ज्वर तथा एकाहिक, अन्येद्युः, तृतीयक और चातुर्थिक ज्वर निश्चयही चले जाते हैं। देखो पृष्ठ १५८ १६१।

अन्येद्युः ज्वरनाशक नुसखे।

(रोज़ रोज़ आनेवाले ज्वरके लिये)

(१) दाख, परवल, नीमकी छाल, नागरमोथा, इन्द्रजौ और त्रिफला, —इनका काढ़ा, शीतल करके, सवेरेही पीनेसे, अन्येद्युः ज्वर (दिनरातमें एकबार चढ़नेवाला) आराम होता है। इस ज्वरके लिये यह काढ़ा परमोत्तम है। परीक्षित है।

(२) पटोलपत्र, नीमकी छाल, दाख, अमलताश, त्रिफला और अडूसा, इनके काढ़ेमें मिश्री और शहत मिलाकर पीनेसे एकाहिक ज्वर दूर होता है। परीक्षित है।

(३) पीपल, आमले, हींग, दारूहल्दी, बच, राई और लहसन—इनको एकत्र बकरीके दूधमें पीसकर, नस्य लेनेसे एकाहिक ज्वर नाश होता है। परीक्षित है।

(४) सरस्वती नदीके तीर पर जो पुत्रहीन तपस्वी मरा, उसके लिये तिलाञ्जलि देनेसे एकाहिक ज्वर दूर होता है। अथवा "योऽसौ सरस्वती तीरे" इत्यादि इस मन्त्रसे हाथमें पीपलका पत्ता लेकर तर्पण करना चाहिये।

(५) मकड़ीके जालेको जलाकर, काजल बनाकर, आँजनेसे द्व्याहिक ज्वर दूर हो जाता है।

(६) काकजंघा (चकसेनी या मसी), बरियारा, काली तुलसी, अपामार्ग या चिरचिरा, पिठवन (पृष्ठिपर्णी) और भाँगरा—इनमेंसे किसी

एक को, पुष्यनक्षत्रमें, पवित्र होकर उखाड़ लाओ। इनकी जड़को लाल धागेमें लपेट कर हाथ या गलेमें बाँध दो। इस उपायसे एकाहिक ज्वर भाग जाता है।

(७) उल्लूके दाहनी तरफके परको सफेद सूतमें बाँधकर, कानमें बाँधनेसे एकाहिक ज्वर भाग जाता है।

(८) केंकड़ेके बिलकी मिट्टीका तिलक करनेसे भी एकाहिक ज्वर भाग जाता है।

तृतीयक और चातुर्थिक ज्वर नाशक नुसख़े।

नियम—तिजारी और चौथैयामें वैद्यको पहले वमन और विरेचन साधारण कर्म कराकर, पीछे विशेष चिकित्सा करनी चाहिये।

(१) खस, लालचन्दन, नागरमोथा, गिलोय, धनिया और सोंठ,—इनके काढ़ेमें मिश्री और शहद डालकर पीनेसे प्यास और दाहयुक्त तृतीयक ज्वर (तिजारी) नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—लोलिम्बराज महोदय "गिलोय" के स्थानमें "पीपल" लिखते हैं।

(२) रविवारके दिन, चिरचिरेकी जड़को सात लाल धागोंमें लपेट कर, कमरमें बाँधनेसे तृतीयक ज्वर (तिजारी) नष्ट हो जाता है।

(३) शालिपर्णी, आमला, देवदारू, हरड़, अडूसा और सोंठ—इनका काढ़ा बनाकर और उसमें शहत और मिश्री मिलाकर पीनेसे चौथैया ज्वर नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(४) अगस्तके पत्तोंके स्वरसकी नास देनेसे चौथैया नाश हो जाता है। परीक्षित है*।

नोट—इस रसके नाकमें डालनेसे आधाशीशीका दर्द भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) सिरसके फूल, हल्दी और दारुहल्दी—इनके कल्कमें घी मिला कर नास देनेसे घोर चौथैया ज्वर नाश होता है।

(६) हींगको पुराने घीमें पीसकर नास देनेसे चौथैया नाश हो जाता है*। परीक्षित है।

(७) बेलका गूदा और मधुमाधवीके चूर्णको, सफेद और तरुण बछड़ेवाली गायके दूधके साथ, रविवारके दिन अथवा पारीके दिन, पीनेसे बहुत दिनोंका चौथैया नष्ट हो जाता है।

(८) सहदेवीकी जड़को विधिपूर्व्वक कण्ठमें बाँधनेसे, एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक और चातुर्थिक ज्वर दूर हो जाते हैं।

नोट—रविवारको हाथ या गलेमें बांधनेसे अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(९) सफेद चिरचिरेकी जड़को, दूधके साथ, पीनेसे अथवा पानमें रखकर खानेसे बहुत दिनोंका चौथैया नष्ट हो जाता है।

(१०) अश्मन्तक वृक्षके एक हज़ार पत्तोंको, घीमें चुपड़कर, जलमें पीसकर पीनेसे चौथैया और तिजारी नाश हो जाते हैं।

लोलिम्बराज महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं :—

अखण्डित शरत्काल कलानिधि समानने।
चातुर्थिकहरं नस्यं मुनिविद्रुमदलाम्बुना॥

हे शरत्कालके पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाली! अगस्त वृक्षके पत्तोंका स्वाभाविक (बिना जल मिलाया) रस सूँघनेसे चौथैया नाश हो जाता है।

* चातुर्थिको नश्यति रामठस्य घृतेन जीर्णेन युतस्य नस्यात्।
लीलावतीनां नवयौवनानां मुखावलोकनादिव साधुभावः॥

पुराने घीमें मिली हुई हींगके सूँघनेसे चौथैया इस तरह नाश हो जाता है, जिस तरह क्रीड़ा करनेवाली नवयौवना स्त्रियोंके मुख देखनेसे साधुजनोंकी सज्जनता नष्ट हो जाती है। (एक वर्ष का घी पुराना होता है)।

(११) कुमारीके काते हुए सूतसे, रविवारके दिन, चिरचिरेकी जड़ रोगीके हाथमें बाँधनेसे चौथैया नहीं आता। परीक्षित है।

(१२) रविवारको चिरचिरेकी पत्ती लाकर और पीसकर गुड़में मिला कर गोली बनालो। ज्वर चढ़नेसे पहले १ गोली खाओ। इस उपायसे एक या दो पारीमें चौथैया भाग जायगा। परीक्षित है।

(१३) बराही बेलकी टहनी या जड़, पचरङ्गे सूतसे भुजामें या गलेमें बाँधनेसे तिजारी चला जाता है।

(१४) गिलोय. आमले और नागरमोथेका काढ़ा पीनेसे चौथैया चला जाता है।

नोट—लगातार कुछ दिन पीनेसे जाता है ; जल्दबाजीसे नहीं जाता। परीक्षित है।

(१५) कानका मैल निकालकर, रूईमें लपेट कर, बत्ती बनालो। एक मिट्टीके दीपकमें काले तिलोंका तेल भरकर, उसमें उस बत्ती को रखकर, दीपकको जला लो और काजल पार लो। उस काजलके आँखोंमें आँजनेसे तिजारी भाग जाता है। परीक्षित है।

(१६) नौसादर ३ रत्ती और कालीमिर्च २ दाने—कूटपीसकर, पारीके दिन खिलानेसे चौथैया चला जाता है। परीक्षित है।

नोट—नौसादर को कालीमिर्चके साथ सेवन करनेसे ज्वर अवश्य रुक जाता है। यह पसीना और पेशाब लानेवाली है। दो दो रत्ती नौसादर दिनमें दो तीन बार खानेसे तिल्ली गल जाती है। यकृतकी सूजन और दर्दमें भी यह बड़ी उत्तम है। दस्त भी खुलासा लाती है। बवासीरकी भयंकर पीड़ा इसके खानेसे मिट जाती है। शीतल जलमें मिलाकर, इसका लेप करनेसे जमा हुआ खून पिघलकर सूजन नाश होजाती है। स्त्रियोंके स्तनोंकी सूजन और बालकके फोते बड़े हो जाने, लाल होजाने और पीड़ा होनेपर, इसको शीतल जलमें घोलकर लेप करनेसे अवश्य लाभ होता है। इसकी मात्रा १०।१५ रत्ती तक है।

(१७) कलौंजी ४ माशे महीन करके, शहदमें मिलाकर खिलानेसे चौथैया चला जाता है। जिस दिन पारी हो, उस दिनसे ४ दिन तक बराबर खिलानी चाहिये।

(१८ कुछ धतूरेके पत्ते, पानके पत्ते और २॥ कालीमिर्च—इनको पीसकर कालीमिर्चकी बराबर गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली गरम जलके साथ खिलानेसे चौथैया चला जाता है।

(१६) समन्दरफलकी गिरी, कालीमिर्च और तुलसीके सूखे पत्ते—इनको बराबर बराबर लेकर कूट-छानकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णकी मात्रा आध माशेसे दो माशे तक है। रोगीके मिज़ाज और उम्रका ख़याल करके मात्रा देनी चाहिये। चौथैया आनेके समयसे आध घण्टे पहले, एक खूराक चूर्ण जलके साथ खिलादो।

(२०) कंजेके फलोंकी मींगी और कालीमिर्च—दोनों बराबर-बराबर लेकर, महीन कूट पीसकर चूर्ण बना लो। १ माशेसे दो माशे तक इसकी मात्रा है। इसके खिलानेसे पारीसे आनेवाले तिजारी चौथैया आराम हो जाते हैं। ज्वर छूट जानेपर, ताक़त लानेके लिये, ३ रत्तीसे ६ रत्ती तक खिलाना चाहिये। गर्भवती स्त्रियोंको यह दवा न देनी चाहिये। बड़ी अच्छी दवा है। परीक्षित है।

नोट—नीबूके रसमें इस चूर्णकी गोलियाँ बनाकर खिलानेसे भी तिजारी चौथैया आराम हो जाते हैं। पारीके दिन, ज्वर आनेसे पहलेही, चूर्ण या गोली देना।

(२१) अतीसकी जड़को महीन पीसकर चूर्ण कर लो। १॥-१॥ माशे या दो दो माशे यही चूर्ण, जिस दिन ज्वर आनेकी बारी न हो उस दिन, ४ बार, तीन-तीन घण्टे पर खिलानेसे तिजारी चौथैया आदि बारीके ज्वर रुक जाते हैं। ज्वर आराम हो

जानेपर, ताक़त लानेके लिये तीन या चार रत्ती यही चूर्ण रोज़ खिलाना चाहिये। गर्भवतीको यह चूर्ण भी न देना चाहिये।

कोई-कोई लिखते हैं,—और ज्वरनाशक दवाएँ गर्भवतीको गरमी करती हैं, पर "अतीस" बुख़ारको नाशकर देता है। इससे गर्भवतीका ज्वर, अतिसार और मन्दाग्नि आदि आराम होजाते हैं। बालकोंकी तो यह दवाही है, इसीसे इसे "शिशुभैषज्य" कहते हैं। अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी और पोपलका चूर्ण शहदमें चाटनेसे बालकोंके ज्वर, अतिसार, खाँसी और वमन अवश्य आराम हो जाते हैं। ज्वर चढ़नेके तीन चार घण्टे पहले, डेढ़ या दो माशे अतीस सेवन करनेसे ज्वर रुक जाता है। यह चढ़े ज्वरमें देदेने से भी कुनैनकी तरह हानि नहीं करता।

(२२) पोस्त खशखाश जितनेकी ज़रूरत हो उतना ले लो। इसमें दस कालीमिर्च मिलाकर और काढ़ा बनाकर पिलानेसे कई दिनमें चौथैया चला जाता है।

(२३) काबुली हरड़का बक्कल ३ तोले, कसौतके बीज १०॥ माशे, कासनीके बीज १०॥ माशे, आलूबुखारा २० दाना, उन्नाव बिलायती २० दाना, सौंफकी जड़की छाल ७ माशे और शाहतरा २ तोले—इन सबका काढ़ा बनाओ और चौथाई जल रहनेपर उतारकर छान लो। पीछे इस काढ़ेमें अमलताशका गूदा ४ तोले ४॥ माशे और माजून वर्द ४ तोले ४॥ माशे मिलाकर, फिर मलकर छान लो। इस काढ़ेके कई दिन तक पीनेसे चौथैया चला जाता है। अमीरो नुसख़ा है।

(२४) फ़िटकरीको भूनकर और उसके बराबर मिश्री मिलाकर, आधे माशेसे दो माशे तक खिलानेसे तिजारी ज्वर चला जाता है।

यह नुसखा परीक्षित है। जिसे खाँसी हो, उसे न देना चाहिये।

(२५) अफीम १ माशे, कालीमिर्च २ माशे और बबूलका कोयला ६ माशे—इन सबको महीन पीसकर, एक माशे या कम ज़ियादा चूर्ण, ज्वर आनेसे डेढ़ दो घण्टे पहले, खिलानेसे तिजारी ज्वर भाग जाता है। खानेको दवा खानेसे ६।७ घण्टे बाद देना चाहिये। यह नुसखा परीक्षित है।

(२६) गिलोय, धनिया, लालचन्दन, कमलगट्टेकी मींगी (हरी पत्ती निकाल फेंकना) प्रत्येक पाँच पाँच माशे लेकर, तीन पाव जल में काढ़ा करो। जब आधा पाव जल बाक़ी रहे, मल छान कर, उसमें २ तोला शर्बत नीलोफर मिलाकर पिला दो। इस यूनानी नुसख़ेके कई दिन पिलानेसे, सुखसे तिजारी ज्वर चला जाता है। परीक्षित है।

(२७) नीलोफर १ तोला और खूबकला ६ माशे—डेढ़पाव जलमें औटा कर काढ़ा बनाओ। जब आधापाव पानी शेष रहे, तब मल छानकर और मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इस नुसख़े से भी तिजारी चला जाता है। परीक्षित है।

(२८) पुराने बोरेकी राख शहतमें या घीमें मिलाकर चटानेसे इकतरा, तिजारी और चौथैया तथा दिनमें दो बार आनेवाले ज्वर भाग जाते हैं। परीक्षित हैं।

(२९) सफेद चम्पेकी कली डण्ठल समेत पानमें रखकर, ज्वर आनेसे पहले, आध-आध घण्टेमें ३ बार खानेसे इकतरा, तिजारी और चौथैया ज्वर नाश हो जाते हैं।

(३०) भाँग और गुड़की बेरके बराबर गोली बनाकर, ज्वर चढ़नेसे दो घण्टे पहले खानेसे चौथैया नष्ट हो जाता है।

शीतज्वर नाशक नुसखे।

—*✻✻✻*—

(१) इन्द्रजौ, पँवारके बीज, अडूसा, गिलोय, सम्हालू, भृङ्गराज, सोंठ, भटकटैया और अजवायन—इन ९ औषधियोंका काढ़ा शीतज्वर रूपी वनके लिये अग्निके तुल्य है; यानी यह शीतज्वरको नष्ट करता है।

(२) हरताल और सीपका चूर्ण नौ-नौ भाग और नीलाथोथा १ भाग लेकर, तीनोंको खरलमें डालकर, घीग्वारके रसमें खरल करो। जब सूख जाय, तब आरने उपलोंके गजपुटमें रखकर पकाओ। पकनेके बाद जब खूब शीतल हो जाय, पीसकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णका नाम "भूतभैरव चूर्ण" है। इसमेंसे आधी रत्ती चूर्ण सफेद खाँड़के साथ मिलाकर, सवेरेके समय, सेवन करनेसे शीतज्वर नाश हो जाता है। इस रसके खानेसे किसी मनुष्य को वमन होती है और किसीको नहीं भी होती है। यह रस एक दिनमें ही शीतज्वरको अवश्य नष्ट करता है। इसके ऊपर दोपहरके समय शिखरन और भातका पथ्य देना चाहिये।

नोट—इसीको "शीतभञ्जीरस" भी कहते हैं। हरताल प्रभृति को शोध लेना।

(३) शुद्धपारा ३ माशे, शुद्ध आमलासार गंधक ३ माशे, शुद्ध विष ३ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज ९ माशे और चूक ३६ माशे—सबको महीन घोटकर, मोटी सरसोंके बराबर गोलियाँ बना लो। अगर चूक सूखा हो, तो जँभीरी नीबूके रसमें गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंका नाम "महाज्वरांकुश वटी" है। ज्वर आनेके समयसे ६ घण्टे पहले, या १२ घण्टे पहले, दो दो घण्टेपर एक एक गोली शीतल जलके साथ निगलनेसे इकतरा, तिजारी, चौथैया प्रभृति सब तरहके जाड़ा लगकर चढ़नेवाले ज्वर निश्चय ही आराम हो जाते हैं। चढ़े बुखारमें तथा जिन बुखारोंमें जाड़ा न

लगता हो, उनमें ये गोलियाँ न देनी चाहियें। शीतपूर्व्वक ज्वरोंके लिये ये गोलियाँ काल हैं। इनके सम्बन्धमें हमने अनेक बातें पीछे पृष्ठ १५८—१६१ में लिखी हैं। यह हमारा सैकड़ों बार का परीक्षित नुसखा है; कभी फेल नहीं होता। पारीके दिन, ज्वर आनेसे पहले, ६ गोलियाँ पेटमें पहुँच जानेसे निश्चय ही एकही पारीमें शीतज्वर भाग जाता है। अगर ज्वरमें ज़हर ज़ियादा होता है, तो दो पारीमें तो ज्वर उड़ही जाता है।

(४) पाढ़की जड़का काढ़ा कालीमिर्च मिलाकर पिलानेसे शीतज्वर नाश हो जाता है।

(५) शतावर और ज़ीरा—इन दोनोंको ६।६ माशे लेकर, पीसकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णको छटाँक-भर जलमें घोलकर पीनेसे जाड़ेका बुख़ार चला जाता है।

(६) तीन माशे खुरासानी अजवायन और ६ माशे मुलहटीका काढ़ा पिलानेसे पारीका ज्वर चला जाता है।

(७) शोधा हुआ कुचला ३ भाग और लौंग १ भाग—इनको अदरखके रसमें घोटकर रत्ती रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। हर बार एक गोली शहतमें मिलाकर देनेसे शीतज्वर, आम-मरोड़ी और संग्रहणीमें लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—ज्वर बढ़नेसे पहले १।१ गोली तीन-तीन घण्टे पर देनेसे अच्छा फल होगा। १ दिनमें दो गोलीसे जियादा न देनी चाहियें।

(८) कुचलेके शोधे हुए बीजोंका चूर्ण १ रत्ती या २ रत्ती, शहतमें मिला कर चटानेसे शीतज्वर और प्रसूतिका रोगमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(९) अफीम १ रत्ती और नीमके पत्ते अढ़ाई—इन दोनोंको खूब पीसकर, गुड़में मिलाकर, चने-बराबर गोलयाँ बना लो। जूड़ी आनेसे ३ घड़ी या सवा घण्टे पहले १ गोली निगलवा दीजिये।

ज्वर शुरू होनेको हो, उससे ज़रा पहले १ गोली फिर निगलवा दें। परमात्मा चाहेगा, तो तीसरी गोलीकी ज़रूरत ही न होगी और जूड़ी आराम हो जायगी।

(१०) हुलहुलके पत्ते, दाहिने हाथकी कलाईके जोड़पर, बाहरकी ओर रखकर, उसपर ज़रासी फिटकरीकी डली रखकर मज़बूत बाँध दो। वहाँ एक फफोला पैदा होगा और बारीके दिन जूड़ी ज्वर न आवेगा।

(११) भुनी फिटकरी और मिश्री दोनों पीसकर रोगीको खिला दो। इससे जाड़ेका ज्वर आराम होता है। इसकी मात्रा ४ रत्तीसे २ माशे तक है। रोगीका बलाबल विचार कर मात्रा नियत करना। यह नुसखा जाड़ेका बुखार आराम करनेमें अच्छा है; पर छातीमें घाव या खाँसी हो, उसे न देना चाहिये।

(१२) तुलसीके पत्ते ६ माशे, कालीमिर्च ४ दाने और पीपल १ दाना—इन सबको पीसकर और एक तोला मिश्री मिलाकर पीनेसे जाड़ेका ज्वर बन्द हो जाता है। ४।५ दिन पीना चाहिये।

(१३) अफीम १ माशे, कालीमिर्च २ माशे और कीकरकी लकड़ीका कोयला ३ माशे—सबको पीसकर एक-दिल कर लो। रोगीके बलाबल और मिज़ाजको देखकर, एक माशे या कम ज़ियादा ज्वर आनेके समयसे दो घण्टे पहले खिला दो। किन्तु निहार मुँह इस दवाको न देना; यानी कुछ हलकासा खाना खिला कर देना। अगर कोरे कलेजे दोगे तो क़य हो जायगी। दवा खानेके ६।७ घण्टे बाद या ज़ियादा देर बाद खानेको देना, इससे पहले न देना। परमात्मा चाहेगा, तो एकही मात्रामें काम हो जायगा; दूसरी खूराक न खिलानी पड़ेगी और ज्वर न आवेगा।

(१४) कुछ धतूरेके बीज एक कुल्हड़े में भरकर, उसके मुँहपर एक मिट्टीका ढकना देकर बन्द कर दो। पीछे उस पर कपड़ा चढ़ा-चढ़ाकर मुलतानी मिट्टी लगा दो—ऐसा बन्द करदो कि साँस न रहे। इसके बाद, उस कुल्हड़ेको तन्दूर या तेज़ भाड़में रख दो। कुछ देर बाद, कुल्हड़ेके लाल हो जानेपर निकाल लो। शीतल हो जानेपर उसे खोल डालो। भीतर जो राखसी निकले, उसमेंसे चार माशे या २ माशे राख पूरे जवानको खिला दो। बालकको २ या ४ रत्ती देना। इस उपाय से जाड़ेका ज्वर चला जाता है।

(१५) मकड़ीका एक सफेद जाला साफ करके, गुड़में लपेटकर, बारीसे पहले निगल जानेसे जाड़ा नहीं चढ़ता और ज्वर दूर हो जाता है; पर ३ दिन तक खाना चाहिये।

(१६) आककी कली, जो खिली न हो, गुड़में लपेटकर और गोली बनाकर निगल जानेसे तीन दिनमें जूड़ी ज्वर चला जाता है।

(१७) धतूरा ४ तोले, रेवन्दचीनी २ तोले ८ आशे, सोंठ १६ माशे और बबूलका गोंद १६ माशे—इन सबको कूट छानकर चने-बराबर गोलियाँ बनालो। जाड़ा बुखार चढ़नेके पहले, बलाबल अनुसार १ या २ गोली खिलानेसे शीतज्वर जाता रहता है।

(१८) ज्वरोंकी बारी रोकनेके लिये जिस तरह कंजेका चूर्ण उत्तम है; उसी तरह रसौत भी उत्तम है। ज्वरकी बारी रोकनेके लिये २ माशे रसौत जलमें घोलकर, जिस दिन ज्वरकी बारी न हो उस दिन पिलाओ। इसी तरह दो दो माशे रसौत घोल-घोलकर दिन में तीन चार बार पिलानी चाहिये। इस-तरह २।३ दिन पिलानेसे ज्वर नाश हो जाता है। इसके पीनेसे आमाशयमें गरमी मालूम होती है, भूख बढ़ती है और अजीर्ण नाश हो जाता है। यह नुसख़ा उत्तम है।

(१९) खस, लालचन्दन, धनिया, नरकचूर, सोंठ और गिलोय हरी—ये सब बीस बीस माशे लो। सबको अधकचरा करके ३ पुड़िया बनालो। एक पुड़ियाको आधसेर जलमें औटाओ; जब डेढ़ छटाँक जल रहजाय, मलछानकर पिला दो। इस काढ़ेसे जाड़ेका ज्वर आराम हो जाता है।

(२०) ककड़ी खाकर, ऊपरसे खट्टी छाछ पीने और बिछौना बिछा कर धूपमें जा बैठनेसे या सेक करनेसे या वफ़ारा लेनेसे शरीर से पसीना निकलेगा और शीतज्वर भाग जायगा। जब धूप न हो, तब सेक करनेकी ज़रूरत है; नहीं तो धूपमें बैठनेसेही काम हो जायगा।

(२१) करेलेके पत्तोंके रसमें ज़ीरा मिलाकर देनेसे, शीतपूर्व्वक कफ-पित्तज्वर आराम हो जाता है।

ज्वरहर बटी।
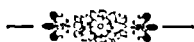
आयुर्वेदमें अनेक रामबाण औषधियाँ वर्णित हैं, उनमें यह "ज्वरहर बटी" भी एक तत्काल फलप्रद महौषध है। पुराने ढँगके वैद्य इसको अधिकतासे व्यवहार करते हैं। इसमें ज्वर-नाशक शक्ति तीव्र है, विशेषकर पालीके ज्वर और शीतज्वरोंमें यह अक्सीरका काम करती है। यद्यपि यह विषाक्त—ज़हरीली औषधि है; परन्तु कुनैनके समान उतनी हानिकारक नहीं है। इसके प्रस्तुत करनेकी विधि इस प्रकार है:—

शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, शुद्ध गोदन्ती हरताल और सोमल खार (संखिया),—इन चारों औषधियोंको समान भाग लेकर, पहले पारे और गन्धक दोनोंको एकत्र खरल करके कज्जली बनाले; फिर उसमें गोदन्ती हरताल और सोमल डालकर एक पहर तक खरल करके धूपमें सुखादे। फिर दूसरे दिन इसी प्रकार अदरखके रसमें खरल

करके धूपमें सुखा दे। इस प्रकार सात दिन तक बराबर अदरख के रसमें खरल करे और धूपमें सुखावे। फिर उसकी सरसोंके समान गोलियाँ बनाले।

यह ज्वरकी उत्कृष्ट औषध है। नवीन ज्वर और साम ज्वर एवं निराम ज्वरमें यह बहुत अच्छा फल करती है। कुनैनके समान इसमें इमली आदि खट्टे पदार्थोंको सेवन करनेसे किसी प्रकारकी हानि नहीं होती। इसके द्वारा ज्वर के बन्द होनेपर रोगी यथेच्छ आहार कर सकता है; किन्तु कुनैन को सेवन करने पर रोगी यथारुचि भोजन नहीं कर सकता।

इस औषधिकी मात्रा रोगीके बल और अवस्थानुसार १ से ४ गोली तक है, किन्तु यह अत्यन्त उग्र है; इस कारण छोटे-छोटे बालकोंको, पित्तकी प्रकृतिवाले और अति दुर्बल मनुष्योंको एवं गर्भवती स्त्रियों को यह नहीं देनी चाहिए। एक माशे या दो माशे मिश्रीके साथ यह औषधि पीसकर, थोड़े शीतल जलके साथ सेवन करनी चाहिए। कोई-कोई वैद्य इसको अदरखके रसके साथ सेवन कराते हैं, किन्तु अदरखके रसके साथ इसके और भी तीक्ष्ण और गरम हो जानेकी सम्भावना है; यदि ज्वरमें कफकी अधिकता हो, तो दूसरी बात है। परन्तु तोभी खूब सावधानीके साथही इसे व्यवहार करना चाहिए।

औषधि सेवनके अन्तमें, रोगीके शिर पर बढ़िया चमेलीका तेल या मगजकद्दूका तेल मलना चाहिए और रोगीको खानेके लिये अनार, अँगूर, शन्तरा, ईखका रस, नारङ्गीका शर्बत आदि पदार्थ देने चाहिये। जो ज्वर बराबर एकसाही चढ़ा रहता है, कभी विच्छेद नहीं होता यानी कभी नहीं उतरता, उसमें यह औषधि नहीं देनी चाहिये। किन्तु सविराम (जो घटता बढ़ता है) नवीन मलेरियादि ज्वरोंमें दो तीन दिनमें ही यह अपना बिलक्षण गुण दिखाती है। एक दिन में यह दो बार सेवन करानी चाहिये।

यदि भूलसे यह औषधि अधिक मात्रामें सेवन की जाय, तो नीचे लिखे लक्षण होते हैं :—जैसे नाड़ीकी गति अत्यन्त तीव्र हो जाती है, शरीरमें रोमांच हो आते हैं, बार बार जम्हाई आती हैं और बारम्बार वमन होने लगती हैं। और भी बहुतसे हानिकारक लक्षण होते हैं। इसलिये इसको उपयुक्त मात्रासे ही व्यवहार कराना चाहिए। इसको अधिक मात्रासे सेवन करानेपर, रोगीके शरीरपर शीतल उपचार करने चाहिएँ। रोगीके शिर पर माखन या कच्चा दूध मलना चाहिए और उसको बरफ मिलाकर दूध या मलाईकी बरफ, अनार, शन्तरा आदि पदार्थ खानेको देने चाहिएँ। इस औषधिमें सोमल - संखिया अत्यन्त तीक्ष्ण विष है। यह बहुत थोड़ी ही मात्रासे मनुष्योंको मार देता है। उसी प्रकार गोदन्ती हरताल भी एक तीक्ष्ण पदार्थ है ; किन्तु यह दोनों पदार्थ पारे और गन्धककी कज्जलीके साथ मिलकर और अदरखके रसके साथ खरल होनेसे—रासायनिक प्रक्रिया द्वारा—एक औरही नवीन प्रभाव उत्पन्न करते हैं। उस प्रभाव या उस शक्तिके द्वारा औषधि शीघ्रही अनेक उपद्रवों सहित नवीन ज्वरको दूर कर देती है। * कृष्णलाल वैद्य

शीतनाशक उपाय

(जाड़ेके ज्वरोंके लिये)

(१) शीतसे पीड़ित ज्वररोगीको भारी कम्बल उढ़ाओ और तोशक लिहाफ, गरम ऊनी कपड़ोंसे जाड़ा दूर करो। पुष्ट जाँघोंवाली और बड़े बड़े नितम्बोंवाली तथा कठोर कुचोंवाली स्त्रीसे आलिंगन कराओ। इन उपायोंसे जाड़ा नाश हो जाता है। आलिंगन

* यह नुसखा हमने मुरादाबादके "वैद्य" नामक मासिकपत्रसे लोकोपकारार्थ लिया है। "वैद्य" प्रत्येक आयुर्वेदप्रेमीके देखने लायक पत्र है। उसमें वैद्यक-सम्बन्धी अनेक उत्तमोत्तम लेख और अनुभूत योग छपते हैं। मँगानेका पता,—
—मैनेजर "वैद्य" मुरादाबाद, यू०पी०।

करनेसे जब जाड़ा लगना बन्द हो जाय और रोगीका कामदेव चैतन्य हो, तब स्त्रीको रोगीके पाससे हटालो । पीछे ; जब दाह पैदा हो, तब दाहनाशक उपाय करो ।

(२) हरड़, नाई, कुटकी, गिलोय, गूगल, भटेऊ (अभावमें गठिवन), सहदेई, वच और कूट—इन सब दवाओंकी धूप बनाकर देनेसे अथवा इन सबको पीसकर, इनका शरीर पर लेप करनेसे शीतका नाश होता है । अथवा हरड़ आदि नौ दवाओंको पीसकर,—उनमें लवण, जवाखार और नीबूका रस मिलाकर तेल पकानेसे और उस तेलकी मालिश करनेसे भी शीत (ज़ाड़ा लगना) नाश हो जाता है । इस लेपका नाम "कायस्थादि लेप" धूपका नाम कायस्थादि धूप और तेलका नाम कायस्थादि तेल है । (तेल पकाने की विधि पुस्तकके अन्तमें देखिये) ।

"सुश्रुत"में भी लिखा है, कफवातजनित ज्वरमें शीत-पीड़ित मनुष्यको उष्णवर्गों की औषधियों (जैसे कटफलादि) के लेपसे या और गरम उपाय करनेसे शीत शान्त हो जाता है । "आरग्वधादि-गण"का काढ़ा करके पिलानेसे भी लाभ होता है ।

(३) लोलिम्बराज महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं,—शीतज्वरसे दुखी मनुष्य को अगर अधिक जाड़ा लगे, तो नीचे लिखे उपाय करने चाहिये :—

(१) सोंठ, मिर्च और पीपल मिलाकर माठा या छाछ पिलाओ ।

(२) शराब पीनेसे परहेज़ न हो, तो शराब पिलाओ ।

(३) जिसमें धूआँ न हो, ऐसी आगकी भरी अँगीठी से रोगी को तपाओ ।

(४) कम्बल या नैपाली कम्बल अथवा रुईकी सौड़ उढ़ाओ ।

(५) जिस मृगनयनीकी देहमें यौवनके मदका आलस्य हो और जिसकी बड़ी-बड़ी कुचोंपर केशर और अगरका लेप हो रहा हो, उसका खूब आलिंगन कराओ ।

(४) बंगसेनने लिखा है,—शीतपूर्वक ज्वरवाले रोगीकी वातनाशक चिकित्सा करो। उसे सुखोष्ण (निवाये) जलमें डुबाकर स्नान कराओ और रेशमी तथा ऊनी गरम कपड़े पहनाओ-उढ़ाओ और हवा न हो, ऐसे स्थानमें बैठाकर "काली अगर" की धूप दो अथवा पीछे लिखी हुई "कायस्थादि धूप" दो।

(५) तुलसी, वनतुलसी और सहँजनेके पत्तोंको दहीके तोड़ और गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे भी शीतज्वर नाश हो जाता है।

दाहनाशक उपाय।

(जाड़ेके ज्वरोंके लिये)

(१) शीत मिटते ही जब दाह होने लगे, तब अरण्डके शीतल पत्ते धारण करनेसे दाह शान्त हो जाता है। लिपी हुई ज़मीन पर अरण्डके पत्तोंको बिछा दो। पीछे दाहज्वरवालेके शरीर पर, उन पत्तोंको धारण करो; तो दाह और ज्वर दोनों शान्त हो जायँगे।

(२) मृगनयनी, कठोर कुचों और मोटे-मोटे नितम्बोंवाली, यौवनके मदसे माती युवतीके स्तनोंपर चन्दन, कपूर और केसर लगाकर दाहवालेसे आलिंगन कराओ। जब दाह शान्त होजाय और रोगीकी इच्छा मैथुन करनेकी हो, स्त्रीको हटालो।

(३) नीमके पत्तोंके काढ़ेमें शहद और राब मिलाकर, दाहवालेको कंठ तक पिलादो और पीछे उँगली डालकर वमन कराओ। इस उपायसे दाह अवश्य नाश हो जाता है।

(४) दाहवालेको चित्त सुलाकर, उसकी नाभिपर काँसी या ताम्बेका औंडा बासन रखकर, उसमें ऊपरसे अत्यन्त शीतल जलकी धारा छोड़ो। इस उपायसे दाह अवश्य नाश हो जाता है।

(५) जिन बाग़ों या मकानोंमें फव्वारे लग रहे हों, उनमें रोगीको रख-

नेसे, स्त्रियोंका आलिंगन करानेसे और खस़के पंखेकी हवा करनेसे दाह शान्त हो जाता है ।

(६) नीचे लिखे उपायोंमेंसे कोईसा उपाय करनेसे दाह अवश्य नाश हो जाता है :—

(१) सौ वार या हज़ार वार धुले घीकी मालिश कराओ * ।

(२) जौके सत्तूको जलमें सानकर लेप करो ।

(३) बेर और आमलोंके पत्तोंको काँजी या दहीमें पीस कर लेपकरो ।

(४) बेरके पत्तोंको पीसकर और झाग बनाकर लेप करो ।

(५) नीमके पत्तोंके झागोंका लेप करो * ।

(६) अनारकी छाल, बेरकी छाल, लोध्र, कैथ और बिजौरा,— इनको जलमें पीसकर और घीमें मिलाकर, सिर पर लेप करो। इससे प्यास और दाह दोनों शान्त हों जायँगे ।

(७) कलम्बक, गेरीकी छाल, अनन्तमूल, मुलैठी और चन्दन— इनको काँजीमें पीसकर, घीमें मिलाकर, सिरपर लेप करनेसे प्यास और दाह शान्त हो जाते हैं ।

(८) बिजौरे नोबूके स्वरसको,शहत और घीमें मिलाकर सेवन करने

---

* लोलिम्बराज महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं :—

सहस्रधौतेन घृतेन कर्तुभ्यंगमोपः कृशतां बिभर्ति ।
अन्यांगनासंग सादरस्य स्वीयेषु दारेषु यथाभिलाषः ॥

हज़ार बार धोये हुए घीसे दाह इस तरह नाश हो जाता है ; जिस तरह परायी स्त्रीको चाहनेवाले पुरुषकी अभिलाषा अपनी स्त्रीमें नष्ट हो जाती है ।

* लोलिम्बराज महोदय कहते हैं—

तृड् दाहमोहाः प्रशमं प्रयान्ति निम्बप्रवालोत्थितफेन लेपात् ।
यथा नराणां धनिनां धनानि समागमाद्वारविलासिनीनाम् ॥

नीमके पत्तोंके झागोंके लगानेसे प्यास, दाह और मोह इस तरह नाश हो जाते हैं ; जिस तरह वेश्याओंके संङ्गसे धनवानोंके धन नाश होजाते हैं ।

से तालुशोष (तालवा सूखना) दूर होता है। अगर सिरमें दाह हो, तो इन्हीं चीज़ोंमें सेंधानोन और मिलाकर सिर पर लेप करो।

(९) प्याससे व्याकुल मनुष्यको, शीतल जलमें शहत मिलाकर कंठ तक पिलाओ और फिर वमन करा दो। इस तरह कई बार कंठ तक पिलाकर वमन करानेसे प्यास शान्त हो जाती है।

षट्तक्रतैल।

(१०) षट्तक्र तैल भी दाह सहित ज्वरको नाश करता है; यह परीक्षित है।

सज्जी, सोंठ, कूट, मूर्वा, लाख, हल्दी, सफेदचन्दन और मँजीठ, इन सबको बराबर-बराबर लेकर और पीसकर लुगदी बना लो अथवा काढ़ा बनाकर, इनके बराबर तेल और तेलसे छः गुनी छाछमें तेल पकालो। यही "षट्तक्रतैल" है।

बनानेकी विधि—सज्जी आदि आठों दवाओंको आध-आध पाव ले लो। पीछे इनको जौकुट करलो। रातके समय इन दवाओंको १६ सेर जलमें भिगोदो। सवेरे काढ़ा पकाओ। जब चार सेर जल रह जाय, उतार कर मल-छान लो। पीछे इस काढ़ेको तथा १ सेर काले तिलोंके तेलको तथा ६ सेर गायके माठेको मिलाकर, कलईदार कड़ाहीमें आगपर चढ़ा दो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। तेलमात्र रहनेपर उतार लो; पर तेल ज़रा भी जलने न पावे। पाव आधपाव पानी रह जाय, तो हर्ज नहीं। शीतल होनेपर तेलको नितारकर बोतलमें भरलो। इस तेलसे दाह और शीत दोनोंमें लाभ होता है। विषमज्वरों और जीर्णज्वरीके दाह नाश करनेमें यह तेल अक्सीर है। परीक्षित है।

महाषट्तक्र तैल।

(११) रायसन, सोंठ, कूट, चन्दन, हल्दी, मुलेठी पीपल, खिरेंटी, लाख, सेंधानमक, सारिवा, मूर्वा, देवदारु, बहेड़ा, खस, सम-

न्दरफेन, सुगन्धित तृण और सुगन्धवाला—इन औषधियोंके साथ ६ गुने तक्र यानी माठेमें सिद्ध किया हुआ तेल, दाहपूर्व्वक और शीतपूर्व्वक घोर ज्वर को नष्ट करता है। यह "महाषट्‌तक्र तेल" है।

नोट—इन १८ दवाओंको एक-एक छटाक लेकर, रातको १८ सेर जलमें भिगोदो; सवेरे काढ़ा बना लो और ४॥ सेर पानी रहनेपर उतार लो। पीछे काले तिलोंके १ सेर तेल, ६ सेर माठा और इस काढ़ेको कलईदार कड़ाहीमें पकाकर तेल बना लो।

लाक्षादि तेल ।

(१२) लाक्षादि तेल ज्वर नाश करनेमें मशहूर है। इस तेलसे विषम ज्वर और जीर्णज्वरमें बहुत लाभ होता है।

(क) लाखका रस ४ सेर, साफ काले तिलोंका तेल १ सेर और माठा ४ सेर—इन तीनोंको अलग-अलग तैयार रक्खो।

(ख) शतावरी, हल्दी, मुलेठी, रास्ना, असगन्ध, कुटकी, मरोड़फली, रेणुकाबीज, चन्दन, नागरमोथा, देवदारू और कूट—इन बारह दवाओंको एक-एक तोला लेकर, पानीमें सिलपर भाँगकी तरह पीसकर लुगदी बनालो।

(ग) चूल्हेके नीचे मन्दी-मन्दी आग जलाओ। ऊपर क़लईदार कड़ाही चढ़ाकर उसमें लुगदी, रखा हुआ १ सेर तेल, लाखका रस ४ सेर और माठा ४ सेर सबको डाल दो और धीरे-धीरे पकाओ। जब तेलमात्र रहजाय, माठा और लाखका रस जल जाय, उतार लो। शीतल होनेपर, छानकर बोतलोंमें भर लो।

यह "लाक्षादि तेल" सब तरहके विषमज्वरोंको, जीर्णज्वरको तथा पीठ, त्रिकस्थान और देहकी हड़फूटन तथा पीड़ाको शान्त करता है। इनके सिवाय दुर्गन्ध, खुजली, भ्रम तथा वातरोगोंको नाश करता है।

लाखका रस बनानेकी विधि ।

पहले लाखका रस तैयार कर लेना चाहिये, तब तेल पकानेकी तैयारी करनी चाहिये।

जितनी लाख लो, उसका दसवाँ भाग लोध लो और लोधका दसवाँ भाग सज्जी लो तथा थोड़ी सी बेरकी पत्तियाँ लो। पहले लाखको धोकर साफ करलो। रातके समय लाखको उसके वज़नसे १६ गुने जलमें भिगोदो। सवेरे उसे कड़ाहीमें चढ़ाकर ऊपरसे लोध, सज्जी और बेरकी पत्तियाँ डाल दो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब ४ सेर जल रह जाय, उतार लो। बस, यही "लाखका रस" है। इसे तेल बनाते समय काममें लाओ।

नोट—वज़न इस तरह रखना ठीक होगा। लाख १ सेर लो, लोध ८ तोले लो, सज्जी १० माशे लो और बेरकी पत्तियाँ आध पाव लेलो। १ सेर लाखको १६ सेर जलमें भिगो दो। चौथाई पानी रहनेपर उतार लो। आपको ४ सेर लाखका रस चाहिये और इस हिसाबसे उतना ही रह जायगा।

प्रलेपक ज्वरकी चिकित्सा।

(१) इस ज्वरमें "स्वर्ण मालिनी वसन्त" २ रत्ती, गिलोयका सत्त २ माशे, छोटी पीपर २ रत्ती और छोटी इलायची १ रत्ती—इन सबको शहदमें मिलाकर चटानेसे इस ज्वरमें लाभ होता है। यह नुसखा ताक़त भी बढ़ाता है और जीर्णज्वरको भी नाश करता है। मात्रा कम या ज़ियादा रोग और रोगीका बलाबल विचार कर देनी चाहिये।

(२) "सितोपलादि चूर्ण"के सेवन करनेसे भी यह ज्वर नाश हो जाता है। इस चूर्णसे मेद बढ़ता है और जीर्णज्वर तथा क्षय आदि नाश होते हैं। इसे शहदमें मिलाकर चाटना चाहिये।

(३) "वर्द्धमान पिप्पली"के सेवन करनेसे भी यह ज्वर नाश हो जाता है। यह जीर्णज्वर और विषमज्वर पर अमृत है।

नोट—इन तीनों नुसखोंके बनाने और सेवन करनेकी विधि, आगे जीर्णज्वरकी चिकित्सामें लिखी है।

(४) पाव भर गायके दूधमें ६ माशे शहद ८ माशे घी, १५।२० काली-मिर्च और तोले भर मिश्री मिलाकर पिलानेसे खून बढ़ता है। आरम्भमें इतनाही देना चाहिये ; पच जानेपर इसी निस्बतसे बढ़ाकर देना चाहिये।

निरोग गायका दूध जल मिलाकर औटाना चाहिये। औटते समयही मिश्री और घी मिला देना चाहिये। दूध मात्र रह जानेपर उतार कर शीतल कर लेना चाहिये। शीतल होनेपर, शहद और कालीमिर्च मिलाकर पी जाना चाहिये।

नोट—ये चारों नुसखे परीक्षित हैं। और उपाय जीर्णज्वरमें लिखे हैं। ध्यान रखना चाहिये, यह ज्वर प्रायः राजयक्ष्मामें ही होता है।
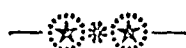
मलेरिया ज्वर।

(विषम शीतज्वर)।
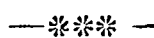
सब तरह के पुराने ज्वरों में मलेरिया ज्वर प्रधान है। इसको आयुर्वेद में "विषमशीतज्वर" कहते हैं। इसे डाक्टरी में इन्टरमिटेन्ट फीवर (Intermittent fever), मार्श फीवर (Marsh fever) अथवा एग्यु (Ague) कहते हैं। यूनानी हिकमत में इस को "तपे नौबती" कहते हैं। उर्दू पढ़े-लिखे लोग इसे "तपे लर्ज़ा" कहते हैं। साधारण लोग जूड़ी ज्वर या जाड़े का ज्वर कहते हैं। मारवाड़ी इसे "सिया ताप" कहते हैं। इसका कारण मलेरिया यानी ज़हरीली हवा है, जो वृक्षों की पत्तियों वगैरः के सड़ने से पैदा होती है। पोखरों

या डबोकरों में पानी रह जाता है ; पीछे उस में पत्तियाँ और घास-फूस पड़ कर सड़ते हैं, उस से विष पैदा होता है और वही विष हवा और पानी में मिल कर "मलेरिया ज्वर" पैदा करता है। मलेरिया इन ज्वरों का प्राकृत कारण है और सरदी लगना, अधिक मिहनत, खराब जल पीना, दूषित या भारी भोजन करना आदि निमित्त कारण हैं। यों तो यह ज्वर सब अवस्थाओं में आता है, पर जवानी में विशेष-कर आता है। जिस साल गरमी अधिक पड़ती है, उस साल वर्षाकाल के बाद मलेरिया बहुत फैलता है। यों तो आजकल मलेरिया सारे भारत में रहता है ; पर बङ्गाल और आसाम इस के मुख्य निवास-स्थान हैं।

इन्टरमिटेन्ट फीवरके भेद।

इन्टरमिटेन्ट फीवर का असल मतलब बारी का ताप या ज्वर है। इसे यूनानी में "हुम्मा खिलती" भी कहते हैं। इस में पहले जाड़ा लग कर बुखार चढ़ता है। इसके तीन भेद हैं :—

(१) कोटीडियन फीवर। इसे वैद्यक में अन्येद्युः-ज्वर, नित्य शीतज्वर या एकाहिक ज्वर कहते हैं। यह २४ घन्टे बाद आता है।

(२) टरशियन फीवर। इसे वैद्यक में तृतीयक ज्वर कहते हैं। बोल-चाल में तिजारी कहते हैं। यूनानी में "हुम्मा गिब खालस" कहते हैं। यह ४८ घन्टे बाद चढ़ता है। इसे "तप्या" भी कहते हैं।

(३) कारटन फीवर। इसे वैद्यक में चातुर्थिक ज्वर और बोलचाल में चौथैया कहते हैं। यह ७२ घन्टे बाद चढ़ता है।

नोट—२४ घण्टे बाद चढ़नेवाले ज्वर में मलेरिया-विष बहुत होता है। ४८ घण्टे बाद चढ़नेवाले में उस से कुछ कम, और ७२ घण्टे बाद चढ़नेवाले में उस से भी कम मलेरिया-विष होता है।

इन्टरमिटेन्ट फीवरकी तीन अवस्थायें।

इसकी तीन अवस्थायें होती हैं—(१) शीत की अवस्था।

(२) गरमी की अवस्था, (३) पसीनों की अवस्था। पहली अवस्था में रोगी को जाड़ा लगता है, रोगी शीत के मारे थरथर काँपने लगता है; दाँत से दाँत बजने लगते हैं, घरके सारे कपड़े उढ़ाने पर भी शीत नहीं दबता। जाड़े की कँपकँपी के मारे खाट हिलने लगती है। यह हालत ५ मिनट से ३ घण्टे तक रहती है। किसी को ५ मिनट तक ही जाड़ा लगता है, किसी को ३० मिनट और किसी को दो या तीन घण्टे तक। ३ घण्टे से अधिक देर तक जाड़ा किसी को नहीं लगता। दूसरी अवस्थाके आरम्भ होते ही जाड़ा लगना बन्द हो जाता है और गरमी का ज़ोर होता है। इस अवस्था में प्यास बढ़ जाती है। रोगी को शुरु शुरु में तो जाड़ेके बाद गरमी बड़ी प्यारी लगती है; परन्तु थोड़ी देर बाद ही वह गरमी से बेचैन हो जाता है—दाह से विकल हो जाता है। यह अवस्था १५ मिनट से १ घण्टे तक रहती है। इस के बाद पसीने आने लगते हैं। यही तीसरी और अन्तिम अवस्था है। पहले ललाट—पेशानी और चेहरे पर पसीना आता है और थोड़ी ही देर में सारे शरीर में पसीना आने लगता है। इस हालतमें बाहरी हवा लगना बहुत बुरा है। पसीना आने से ज्वर उतर जाता है और रोगी उठ बैठता है। बहुत से बलवान रोगी तो अपना काम करने लगते हैं, पर यह पहली हालत में ही होता है। जब ज्वर पुराना हो जाता है, रोगी निर्बल हो जाता है; तब वह उठकर काम करने लायक़ नहीं रहता।

नोट—बहुधा यह ज्वर पसीने आकर ही उतरता है; पर किसी-किसी का ज्वर बिना पसीने आये भी उतर जाता है।

कोटीडिएन फीवर।

(नित्य शीतज्वर)

कोटीडिएन ज्वर रोज़ आता है। इसे ही अन्येद्युः ज्वर कहते हैं। यह ज्वर अक्सर बहुत दिनों तक आया करता है। यह बहुधा सवेरे

मालूम होता है। सावन, भादों और क्वार इस के आने के समय हैं। यह रोज़-रोज़ आता है, लेकिन कभी-कभी तीसरे और चौथे दिन भी आने लगता है। रोज़-रोज़ आने से तीसरे चौथे दिन आना शीघ्र आराम होने की निशानी है ; पर एक दिन में दो वार चढ़ना ; यानी वैद्यकका सतत ज्वर हो जाना ख़राबी की निशानी है। जो ज्वर दिन-रात में दो वार आता है, उसे वैद्यक में सतत ज्वर और अँगरेज़ी में "डबल कोटीडियन" कहते हैं; जब यह रेमिटेण्ट फीवर (Remittent fever) यानी हर समय चढ़े रहनेवाले ज्वर का रूप धारण कर लेता है ; यानी "सन्तत ज्वर" हो जाता है, तब और भी ख़राबीकी अलामत है।

इस ज्वर की पहली अवस्था में,—पहले पीठ पर ठण्ड लगती है और ज़रा देर बाद सारे शरीरमें ठण्ड लगने लगती है। कभी-कभी एकदम से शीत चढ़ आता है, रोगी काँपने लगता है, दाँत कड़-कड़ बजने लगते हैं। उस समय जीभ तर, साफ, ठण्डी और फीकी रहती है ; भूख नाश हो जाती है, प्यास लगती है, जी मिचलाता है, सिर में दर्द होता है, तशन्नुज या वाँइटे आने लगते हैं, पेशाब बारबार होता है। खून की चाल मन्दी होने से नाड़ी की गति भी मन्दी रहती है। रोएँ खड़े हो जाते हैं, कान, होठ और गालों तथा उँग-लियों के पोरुओं में खून अच्छी तरह नहीं पहुँचता, इससे ये नीले से दीखने लगते हैं। खून शरीर के भीतर इकट्ठा हो जाता है। अगर सिर में खून इकट्ठा हो जाता है, तो बोझासा जान पड़ता है ; तन्द्रा और मूर्च्छा—बेहोशी होने लगती है। अगर खून आमाशय में जमा हो जाता है, तो जी मिचलाने लगता है और क़य होती हैं। आँतों में खून के इकट्ठा होने से दस्त लग जाते हैं, पर ज़ियादातर अजीर्ण रहता है। जाड़ा लगने से शरीर का ताप कम नहीं हो जाता। अनेक बार देखने में आया है, इस हालत में टेम्परेचर १०५ या १०६ डिग्री तक रहता है। शरीर में खून जमा हो जाने से चार और पाँच घन्टे तक

जाड़ा लगता रहता है। ज्यों-ज्यों यह ज्वर पुराना होता जाता है, जाड़ा लगने का समय भी घटता चला जाता है। कितनी ही बार ज्वर आ लेने पर, पाँच सात मिनट जाड़ा लगने पर ही गरमी आ जाती है।

दूसरी अवस्थामें, जाड़ा धीरे-धीरे कम होता जाता है और गरमी बढ़ती जाती है। गरमी बढ़नेसे खूनकी चाल तेज़ हो जाती है और नाड़ी भी शीघ्रगामिनी हो जाती है, चेहरा तमतमा आता है, कनपटीकी नसें फड़कने लगती हैं, सिरमें दर्द बढ़ जाता है, रोगी प्रलाप या बकवाद करने लगता है। चमड़ा रूखा, लाल और गरम हो जाता है। प्यासकी डाफी लग जाती है। रोगी क्षण-क्षण में जल माँगता है। गिलासको होठोंसे अलग करना नहीं चाहता। इस समय ओकियाँ आती हैं, वमन होती हैं, घबराहट बढ़ जाता है। सरदीकी हालतमें पेशाब हलका और ज़ियादा होता है ; किन्तु इस समय लाल, भारी और कम होने लगता है।

तीसरी अवस्थामें, पहले ललाट और चेहरेपर पसीने आने लगते हैं और फिर सारे शरीरमें पसीने आते हैं। पसीने ज्यों ज्यों आते हैं, बुख़ार त्यों त्यों कम होता जाता है। बुख़ार बड़ी जल्दी-जल्दी उतरने लगता है, बहुधा १५ मिनटमें २ दरजे ज्वर घट जाता है। जब रोगी आराम होनेवाला होता है, तब किसीको जाड़ा लगता है ; पर गरमी नहीं लगती अथवा पसीना नहीं आता—बिना पसीना आये ही ज्वर उतर जाता है।

टरशियन फीवर।

(तिजारी)

यह ज्वर तीसरे दिन ४८ घन्टेके अन्तरसे आता है। यूनानीमें इसे "हुम्मा गिब स्वालस" कहते हैं और वैद्यकमें "तृतीयक ज्वर" कहते हैं।

बोलचालकी भाषामें इसे तिजारी और तय्या कहते हैं। इस ज्वरमें गर्मी ज़ियादा रहती है। इसका ज़ोर ४ घण्टे तक रहता है। अङ्गरेज़ी मतानुसार यह २३ घण्टों तक चढ़ा रहता है।

इसका दौरा प्रायः दोपहरके समय, शीतकालमें, होता है। जिनकी तिल्ली बढ़ जाती है, उनको भी यह ज्वर दोपहरके समय जाड़ेके मौसममें सताता है। यह ज्वर भी रूप बदलता रहता है। अगर नित्य आने लगजाय, तो रोगकी वृद्धि समझनी चाहिये और अगर चौथे दिन आने लगजाय, तो रोगकी घटती समझनी चाहिये। कभी-कभी इसकी बारी एक दिनमें दो बार आने लगती है। एक बार सवेरे ज्वर चढ़ता है; दूसरी बार शामको चढ़ता है। दूसरे दिन ज्वर बिलकुल नहीं आता। फिर तीसरे दिन उसी तरह दिनमें दो बार चढ़ता है। इस हालतमें इसको डुपलिकेटेड टरशिअन फीवर (Duplicated Tertian fever) कहते हैं।

क्वारटन फीवर।

(चातुर्थिक ज्वर)

इस ज्वरको वैद्यकमें चातुर्थिक ज्वर, बोलचालकी भाषामें चौथैया और अङ्गरेज़ीमें "कारटन फीवर" कहते हैं। यह बुख़ार एक दिन आकर दो दिन बीचमें नहीं आता; यानी चौथे दिन आता है। यह ७२ घन्टेके विरामके बाद आता है और तीसरे पहरके समय; यानी कोई दो तीन बजेके समय चढ़ा करता है। कभी-कभी इसकी दो बारी बराबर आती हैं। तीसरे दिन ज्वर नहीं आता; चौथे पाँचवें दिन फिर आता है। इसको डबल कारटन फीवर कहते हैं। कभी-कभी हर चौथे दिन यह दिन-भरमें दो बार चढ़ता है; बीचके दो दिन ज्वर नहीं आता। उस दशामें इसे डबल कारटन फीवर (Double Quartan fever) कहते हैं। इस ज्वरमें जाड़ा बहुत देर तक रहता है और

गरमी थोड़ी देर रहती है। यह ज्वर पाँच घण्टे तक ज़ोर करता है। यह बड़ा ख़राब ज्वर है। कभी-कभी बरसों तक पीछा नहीं छोड़ता और बड़ी मुश्किलसे आराम होता है।

रोगकी घटती-बढ़तीकी पहचान

अगर ये ज्वर अपने आनेके समयको बदलने लगें, अपने समयको छोड़कर दूसरे समय आने लगें, तब रोग की कमी समझनी चाहिये। अगर बुख़ार अपने समयसे पहले चढ़ने लगे, तो रोगकी बढ़ती समझनी चाहिये। जब दवासे फायदा होने लगता है, तब यह पहले समय बदलता है और पीछे एकदम बन्द हो जाता है।

ख़राबीके लक्षण।

अगर इन ज्वरोंका सम्बन्ध रस रक्त मांस मेद आदि धातुओंसे हो जाय ; यानी ज्वरका प्रवेश धातुओंमें हो जाय, तो ख़राबी समझनी चाहिये। ऐसा ज्वर धातुसे अलग करनेसे ही जाता है। जब तक यह प्रबन्ध नहीं किया जाता, गरम-सर्द अनेक तरहकी उत्तमोत्तम औषधियोंसे कोई लाभ नहीं होता।

नोट—हमारे यहाँ सन्तत ज्वरको विषमज्वरोंमें माना है, पर असल में उसके लक्षण विषमज्वरसे मिलते नहीं। इसलिये हमारे यहाँ भी कितने ही आचार्य्य सन्ततज्वरको विषमज्वर नहीं मानते। डाकृर लोग इसको रेमिटेण्ट फीवर (Remittent fever) कहते हैं। यूनानीवाले इसे दायमी ताप कहते हैं। यह ज्वर बराबर चढ़ा रहता है। सात, दश या बारह दिनमें उतरता है। जब यह आता है, तब ज़रा सरदी लगती है, जी मिचलाता है और किसी-किसीको पित्तकी क़यहोती है। इसमें टेम्परेचर १०६ डिग्री तक होता है। यह बुख़ार ६ घण्टेतक ज़ोर करके हलका हो जाता है। पीछे पसीने आने बाद फिर चढ़ने लगता है। यह ज्वर बिना १२ दिन पीछा नहीं छोड़ता। इसमें

मस्तिष्क और दिलमें सूजन आजाती है, तब बेहोशी होने लगती है। इस ज्वरमें सन्निपातका बड़ा डर रहता है। चिकित्सामें गड़बड़ होनेसे किसी-किसीको सन्निपात हो भी जाता है।

चिकित्सा विधि।

इन शीतज्वरोंमें दो तरहसे चिकित्सा होती है :—(१) जिस दिन ज्वरकी बारी होती है ; यानी ज्वरकी हालतमें (२) जिस दिन ज्वर नहीं चढ़ता —रोगी ज्वरसे ख़ाली रहता है।

ज्वर होनेकी हालतमें।

अगर खाना खानेके बाद बुख़ार आजाय और जी मिचलाता हो, तो किसी वमनकारक औषधिको पिलाकर वमन करा देनी चाहिये। पीछे शीतके समय गरम कपड़े उढ़ा देने चाहियें, शीतनाशक लेप करना चाहिये, गरम-गरम चाय पिलानी चाहिये, गरम पानी बोतलमें भरकर उसपर कपड़ा लपेटकर सेक करना चाहिये और बफारा देना चाहिये।

जब जाड़ा लगना बन्द होजाय, तब प्यासका और दाहका इलाज करना चाहिये। प्यास और दाहनाशक उपाय हमने, ज्वरके उपद्रवोंमें, पुस्तकके अन्तमें लिखे हैं। समयपर जो मुनासिब जँचे, वही उपाय करना चाहिये। पसीने निकालने या दस्त करानेकी चेष्टा करनी चाहिये। इस अवस्था में अरण्डीका तेल पिलाना या काले दानेकी १।२ मात्रा देना हितकर है।

पसीना आने लगे, तब किसी प्रकारके इलाजकी ज़रूरत नहीं। इस समय रोगीको हवासे बचाना चाहिये। बाहरी हवाके पसीनोंमें लगनेसे रोगीके प्राणान्तकी सम्भावना है।

पसीना लानेकी विधि।

गरम-गरम चाय पिलाने या गरम गरम (निवाया) जल पिलानेसे पसीना आने लगता है। बफारा देनेसे भी पसीना आता है। एन्टी-

फेवरिनकी दो एक खूराक देनेसे या लोबान अथवा आककी जड़की छालका चूर्ण गुड़में मिलाकर (आगे लिखी हुई विधिसे) २।३ बार देनेसे भी पसीना आकर ज्वर उतर जाता है ।

दस्त करानेका उपाय ।

इस अवस्थामें अरण्डीका तेल (काष्टर आयल Castor oil) दो तीन तोले पिलानेसे दस्त साफ हो जाता है। अरण्डीका तेल योंही या पाव डेढ़पाव गरम दूधमें या त्रिफलेके काढ़ेमें मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा ६ या ६ माशे काला दाना (हब्बुलनील) घीमें भूँजकर ४ या ६ माशे सोंठ का सफूफ या चूर्ण मिलाकर, रोगी को फँका देनेसे और ऊपरसे थोड़ा गरम जल पिलानेसे ४।५ दस्त साफ आ जाते हैं। इस जुलाबसे बहुत जल्दी दस्त आते हैं। यह कालेदानेका जुलाब जैलप या जमालगोटेसे कम नहीं है। इतनी विशेषता है, कि इसमें जमालगोटेके अवगुण नहीं हैं। अगर कोठा नर्म हो और दस्त कम कराने हों, तो ६ माशे कालाइाना घीमें भूँज और पीसकर फँका देना चाहिये और ऊपरसे गरम जल पिलाना चाहिये ; पर सोंठ न मिलानी चाहिये। मात्रा कम और ज़ियादा करना वैद्य का काम है ; रोगीकी ताकृत देखकर मात्रा देनी चाहिये । ६ या ८ अथवा दश माशे काली निसोत शहतमें मिलाकर चटानेसे भी बड़ा उपकार होता है ; दस्त हो जाते हैं ; बल्कि इस उपायसे ज्वरही चला जाता है ।

इन ज्वरोंमें निसोत और शहत चटाना सर्वोत्तम और सुखदायी उपाय है। इसी तरह काष्टर आइल या रेण्डीके तेलका जुलाब भी नरम है, गर्भवतीको देनेसे भी हानि या खतरा नहीं है। ताकृतवर रोगीको काले दानेका ६ माशे तक जुलाब देना चाहिये। इस तरह जुलाब देनेसे कोठा साफ होकर ज्वर टूट जाता है। ये जुलावकी बात हम शीतज्वरोंके लिये ही लिख रहे हैं। जुलाब कमज़ोर रोगीको न देना चाहिये। अगर सख्त ज़रूरत हो, तो हलका देना चाहिये ।

प्यास रोकनेके उपाय।

—※—

ज्वरकी अवस्थामें प्यास रोकनेके नुसखे ज्वरके उपद्रवोंमें आगे लिखेंगे, वहाँ देखकर जो जँचे सो करना चाहिये। अङ्गरेज़ी कायदेसे सोडावाटर पिलाते हैं और बर्फ़ के छोटे-छोटे टुकड़े मुँहमें रखाते हैं। हकीमलोग मुखमें अकरकरा या आलूबुखारा रखाते हैं।

ज्वर उतरजानेकी हालतमें।

इन ज्वरोंमें ज़ियादातर दवाएँ, ज्वर उतर जानेकी हालतमें, ज्वरकी वारी रोकनेको देते हैं। डाक्टरीमें वारी रोकनेकी सबसे अच्छी दवा कुनैन (Quinine) या सिनकोना फेब्रीफ्यूज (Cincona febrifuge) है। दस्त हो जानेके बाद, टेम्परेचर ९८॥ या ९९ डिग्री होने पर, सलफेट आव् कुनैन १ या २ रत्तीकी मात्रासे, तीन-तीन घन्टेमें, दूसरी वारी आने तक देना चाहिये। १५।२० ग्रेन या १० रत्ती कुनैन ज्वर चढ़नेसे पहले पेटमें पहुँच जानेसे अच्छा असर होता है। जवानोंको इसकी २ या अढ़ाई रत्तीकी मात्रा है ; कमज़ोरोंको १ रत्ती देनी चाहिये। कभी जल्दी आराम करनेकी इच्छासे अधिक कुनैन न खिलानी चाहिये। ज़ियादा कुनैन खानेसे बड़ी गड़बड़ होती है। 'सबसे अच्छी रीति यही है कि, ज्वर के समयसे पहले ३।४ खूराक कुनैन, तीन-तीन घण्टे में खिलाकर, जल की घूँट पिला देनी चाहिये और एक खूराक ज्वर आनेके समयसे १ या १॥ घण्टे पहले अवश्य देनी चाहिये। अगर शीत बहुत लगता हो, तो कुनैन की मात्रा या कुनैनकी गोली केवल ताज़ा जलमें खिलानी चाहिये। अगर सरदी कम लगती हो, तो कुनैनकी गोली खिलाकर ऊपरसे थोड़ासा शर्बत बनफ़शा अथवा मिश्रीका शर्बत पिला देना चाहिये।

अगर ज्वर आनेके समयका पता न हो, तो सवेरेसे दो-दो घन्टों पर कई मात्रा या गोलियाँ खिलवा देनी चाहिये'। अगर कुनैन देते-देते ज्वर चढ़ आवे, तो कुनैन देना बन्द कर देना चाहिये। ज्वर उतर जाने

पर, फिर ऊपरकी विधिसे कुनैनका सफूफ या गोलियाँ देनी चाहियें। जिस दिन ज्वरकी वारी न हो, उस दिन भी २ या १ मात्रा कुनैनकी देनी चाहियें। २४ घण्टेके अन्दर १०।१२ ग्रेन या ५।६ रत्ती कुनैन देनी चाहिये। अगर ज्वर पुराना हो, तो कुनैनकी मात्रा अधिक देनी चाहियें। चौथैया वुखारमें भी अधिक कुनैन देनी चाहिये, किन्तु अँधाधुन्ध न देनी चाहिये। कमज़ोर रोगीको ज़ियादा कुनैन देनेसे शीत आ जाता है। पहले कुनैन की अधिक मात्रा देनी चाहिये, पीछे रोग का वल ज्यों-ज्यों घटता जाय, कुनैनकी मात्रा भी कमती करनी चाहिये। एकही वारीमें कुनैन से ज्वर चला जाता है। अगर विषकी अधिकतासे १ वारीमें नहीं भी जाता, तो उसका वल तो घटही जाता है। २।३ वारीमें तो प्रायः ज्वर छूटही जाता है। कुनैन निहार मुँह देनेसे अच्छा लाभ करती है।

कुनैनसे हानि।

—*—

कुनैन वारीके ज्वरोंमें परमोत्तम दवा है। तिल्लीके वढ़ जानेकी दशामें भी इससे बड़ा उपकार होता है; यह ताक़त भी लाती है; मगर ज़ियादा कुनैन सेवन करनेसे सिरमें दर्द होने लगता है, सिर घूमने लगता है, चक्कर आते हैं, आँखोंके आगे पतंगेसे उड़ते हैं, कानोंमें सनसनाहट होती है, ओकारियाँ आती हैं, जी घवराता है। अगर कुनैन देते-देते ऐसे लक्षण नज़र आवें, तो कुनैनका देना बन्द कर देना चाहिये।

कुनैनके अभावमें

"सिनकोना" देना चाहिये। इसमें भी कुनैनके समानही गुण हैं। यह भी ज्वरोंका नाश करता है। इसकी गोलियाँ शहत या गुड़में मिलाकर दी जाती हैं। इसकी मात्रा भी १ या २ रत्तीकी है।

सिनकोनेकी गोलियाँ।

सिनकोनाफेब्रीफ्यूज ६० ग्रेन, नीबूका रस १ फ्ल्यूड ड्राम—दोनों को मिलाकर रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लेनी चाहिये। इनको भी कुनैनकी तरह दो दो या तीन तीन घन्टेमें देना चाहिये।

कुनैनकी गोलियाँ।

सलफेट आफ कुनैन २ ग्रेन, एक्स्ट्रैक्ट आफ कलमिया १ ग्रेन—दोनोंको मिलाकर १ गोली बनानी चाहिये। इसी तरह चाहे जितनी गोलियाँ बना ली जा सकती हैं। सलफेट आफ कुनैन६० ग्रेन(३०रत्ती) और एक्सट्रैक्ट आफ कलमिया ३० ग्रेन (१५ रत्ती)— इन दोनोंको मिलानेसे ३० गोलियाँ तैयार होंगी। बलाबल देखकर पूरी या आधी गोली देनी चाहिये। कुनैनकी गोली देनेकी विधि ऊपर लिख आये हैं। कुनैनकी गोलियोंपर चाँदीके वरक चढ़ा देनेसे रोगी कुनैन समझकर घृणा नहीं कर सकता।

कुनैन मिक्सचर।

सलफेट आफ कुनैन ४ ग्रेन, डिल्यूटेड सलफ्यूरिक एसिड १० बूँद, सीरप आफ आरेंज १ ड्राम—पानी १ औन्स,—इन सबको मिलाकर रोगीको पिलाना चाहिये। यह १ खूराक है। इस तरह तीन तीन घन्टेके अन्तरसे, ज्वर न होनेके हालतमें, इस मिक्सचरके देनेसे ज्वरमें लाभ होता है। ज्वरकी बारी रुक जाती है।

नोट—कुनैन सलफ्यूरिक ऐसिड यानी गन्धकके तेज़ाबके साथ अच्छा फायदा करती है। पर यह तेज़ाब १० बूँदसे ज़ियादा न देना चाहिये: सीरप आफ आरेंज–नारङ्गीका शर्बत मिला देनेसे स्वाद अच्छा हो जाता है। अगर यह नहीं होता, तो सीरप आफ लेमन—

नीबूका शर्बत भी मिलाकर देते हैं। हमने ऊपर १ खुराक कुनैन मिक्स्चरका नुसखा लिखा है। अगर ३ खुराक दरकार हों, तो सब चीज़ोंको तिगुना कर लेना चाहिये। अगर चार खूराक दरकार हों, तो चौगुना कर लेना चाहिये। कमज़ोर या बालकोंको मात्रा कम करके देना।

कुनैन और सिनकोनाके अभावमें

आगे लिखी रीतिसे भुनी फिटकरी ४।५ रत्ती मिश्री मिलाकर देनी चाहिये। इससे भी ज्वरकी बारी रुक जाती है। खाँसीवालोंको फिटकरी न देनी चाहिये। जिन्हें फिटकरी न देनी हो, उन्हें तुलसी के पत्ते और कालीमिरचोंकी गोलियाँ बनाकर खिलानी चाहियें। ये गोलियाँ कुनैनसे कम नहीं हैं। इन गोलियोंसे फौरन बारी रुक जाती है। अगर गरमीका ज़ोर ज़ियादा हो, तो कुनैन न देकर गिलोयका सत्त २ माशे देना चाहिये, अथवा शीतज्वरनाशक अनेक नुसखे लिखे हैं, उनमेंसे कोई नुसखा विचारपूर्व्वक देना चाहिये।

मलेरियाज्वर नाशक नुसखे।

(१) पित्तपापड़ा, करञ्जके पत्ते, गिलोय, कुड़ेकी छाल, घीग्वारकी जड़, काली मिर्च, सनाय, नीम की निबौली, तुलसी के पत्ते, चिरायता, हरड़, पीपल, शुद्ध सिंगरफ,—इन १३ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर पीस लो। पीछे ३ दिन तक नीबूके रसमें खरल करो। खरल हो जानेपर, जब गोलियाँ बनाने लायक़ होजाय, माशे-माशे-भरकी गोलियाँ बनालो। बुख़ार चढ़नेसे पहले, दो-दो घण्टेपर, एक-एक गोली सेवन करो। एक दिनमें ३ गोली

सेवन करो। इन गोलियोंसे सब तरहके मौसमी या मलेरिया ज्वर आराम हो जाते हैं।

नोट—चढ़े बुखारमें मत लेना। यह नुसखा पं० वंशीधरजी, आयुर्वेद विशारद, बलेटो प्रागपुर ज़िला काँगड़ाने परीक्षा करके मुरादाबादके "वैद्य" नामक मासिक-पत्रमें लिखा था।

(२) निरगुण्डीके पत्ते ४ तोले, द्रोणपुष्पी या गूमाके पत्ते ४ तोले, गिलोय ४ तोले और अड़ूसा ४तोले—इनको मिट्टीके बासनमें डाल कर, ऊपरसे १ सेर जल मिलाकर, आगपर पकाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतार लो और साफ कपड़ेमें छान लो। पीछे इस पानीको फिर हाँडीमें डालकर, इसमें हरड़का चूर्ण ४ तोला, पीपलोंका चूर्ण २ तोला और मिला दो और फिर मन्दी-मन्दी आगपर पकाओ। जब खूब गाढ़ा हो जाय, यानी खोये सा हो जाय, तब उसको उतारकर तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो। तीन-तीन घण्टेमें एक-एक गोली शहतके साथ पीसकर खिलाओ। इस दवासे सब तरहका मलेरिया ज्वर, यकृत और प्लीहा ज्वर, पुराना ज्वर, बार बार आनेवाला मन्दज्वर, खाँसी, श्वास आदि निश्चयही आराम हो जाते हैं।

नोट—यह नुसखा भी किसी वैद्य सज्जनका आज़माया हुआ है। हमने 'वैद्य" मुरादाबादसे ही लिया है।

(३) मंडूरकी भस्म, नौसादर और पीपल—इनको बराबर-बराबर लेकर, एकत्र पीसकर रखलो। इस चूर्णको ४ रत्ती सवेरे और ४ रत्ती शामको, गरम जलके साथ खानेसे यकृत सहित मलेरिया ज्वर चला जाता है।

(४) जवाखार ३ रत्ती और पीपलका चूर्ण ३ रत्ती—दोनोंको ६ माशे पुराने गुड़में मिलाकर, दिनमें दो बार रोज़ खानेसे यकृत और प्लीहा सहित मलेरिया ज्वर नाश हो जाता है।

नोट—मलेरिया ज्वरमें, यकृतकी सूजन या यकृतमें दर्द होनेपर, अलसीकी पुलिटश बना कर गरमागरम बाँधो। जब पहली पुल्टिश शीतल हो जाय, तब दूसरी पुल्टिश बनाकर गरमागर्म बाँधो। इस तरह दिनमें २।३ बार करना चाहिये।

तिल या सरसोंकी खलीको पानीमें पीसकर, उसकी पोटली बना कर और उसे गरम करके, उससे बारम्बार यकृतको सेंको। इससे भी लाभ बहुत होता है।

अगर पेटमें कब्ज हो और यकृतमें भारीपन हो ; तो "त्रिफलेके काढ़ेमें पुराना गुड़ मिलाकर पिलाओ। इससे लाभ होगा।

अगर मलेरिया ज्वरमें प्लीहा या तिल्ली हो, तो यकृत की तरह तिल्ली पर भी वही अलसीकी पुल्टिश बाँधो अथवा खलकी पोटलीको गरम करके सेक करो। याद रखो, यकृत दाहिनी ओर होता है और तिल्ली बाईं तरफ होती है।

(५) सोडा और सफेद काशगरीको एकत्र पीसकर, चार चार-रत्ती की मात्रासे, बताशेमें रखकर, बुखार चढ़नेसे पहले, दो-दो घण्टेमें ३ बार एक दिनमें खिलाओ। इससे इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि सब तरहके पारीसे आनेवाले ज्वर नाश हो जाते हैं।

(६) दूध ३ तोले, दही ३ तोले, शहत १ तोले, तुलसीके पत्तोंका रस ४ माशे और कालीमिर्चका चूर्ण २ रत्ती—सबको मिलाकर ज्वर चढ़नेसे पहले, दो बार चटानेसे शीतज्वरका दौरा रुक जाता है ; यानी जाड़ा लगकर आनेवाला ज्वर नहीं आता।

(७) करंजवेकी मींगी ३ माशे, कालीमिर्च ३ माशे और सम्हालूके हरे पत्ते ३ माशे,—इन सबको एकत्र पीसकर ८।१० गोलियाँ बनालो। ज्वरके चढ़नेसे आठ दश घण्टे पहले, एक-एक घण्टेमें एक-एक गोली ताज़ा पानी के साथ निगलवाओ। बालकको चार या पाँच गोलियाँ दो। पूरी उम्रवालेको ८।१० गोली दो। इनसे मलेरिया ज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—अगर पेटमें दर्द हो, तो यह गोली न देनी चाहिये।

(८) नीमकी छाल, करंजुएके पत्ते नारङ्गीका छिलका, प्रत्येक औष-

विष छै माशे लेकर, पाव भर जलमें पकाओ। जब १ छटाँक या चौथाई जल रह जाय, उतारकर मल-छान लो और १ तोला मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इस नुसखेको ज्वर चढ़ने से पहले, चार-चार घण्टेपर, दिनमें दो बार पिलाओ। इससे मलेरिया ज्वर आराम हो जाता है।

(९) गिलोय, नीमकी छाल, पित्तपापड़ा, कुटकी, नागरमोथा, धनिया, खस, निर्गुण्डी और चिरायता—इन ९ दवाओंको समान भाग लेकर, भभकेमें अर्क खिंचवा लो। इस अर्ककी मात्रा जवानके लिये ५ तोलेकी है। १ मात्रामें १ तोला शहद मिलाकर ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, दो दो घण्टेमें ३ मात्रा पिलाओ। इस नुसखेसे सब तरहके पारीसे आनेवाले इकतरा, तिजारी, चौथैया वगैरः ज्वर आराम हो जाते हैं।

नोट—ये नं० ७, ८, और ९ के नुसखे पं० नाथूरामजी वैद्यने आज़माकर मुरादाबादके "वैद्य" नामक मासिकपत्रमें लिखे हैं।

(१०) अभ्रक भस्म १ माशे, लोह भस्म १ माशे, शुद्ध वत्सनाभ विष १ माशे, पीपल २ माशे और करंजुएकी मींगी २ माशे—इन सबको एकत्र नीबूके रसमें खरल करके, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, हर दो दो घण्टेमें, एक-एक गोली गरम जलके साथ खिलाओ। इन गोलियोंसे सब तरहके विषमज्वर इकतरा, तिजारी और चौथैया नाश हो जाते हैं।

(११) वंसलोचन ४ माशे, छोटी इलायचीके दाने ४ माशे, गिलोयका सत्त ४ माशे, पीपल ४ माशे और अभ्रक भस्म ४ माशे—इन पाँचोंको अर्क गुलाबमें खरल करो और तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो। ज्वरके चढ़नेसे पहले, हर दो दो घण्टेमें, एक-एक गोली शहदमें मिलाकर खिलाओ। इन गोलियोंसे

मलेरिया, विषम ज्वर, विशेषकर पित्तप्रधान विषमज्वर शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(१२) कुनैन १ तोला, बंसलोचन १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, मूँगेकी भस्म १ तोला और टार्टरिक एसिड (इमलीका सत्त) १ तोला—इन पाँचोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे गुलाबका अर्क दे-देकर खूब खरल करो। पीछे दो-दो रत्तीको गोलियाँ बना लो। ज्वर चढ़नेसे ३ घण्टे पहले, एक-एक घण्टेमें एक एक गोली अर्क गावज़बाँ या जलके साथ खिलाओ। अगर गोली देते-देते ज्वर चढ़ आवे, तो गोली देना बन्द करो। दूसरी पारी के दिन ज्वर न होनेकी हालतमें, फिर इसो तरह गोली दो। वैद्यराज पं० रघुनाथजी शर्म्मा, जम्बू काश्मीरसे मुरादाबाद के "वैद्य"में लिखते हैं, इन गोलियोंसे फसली ज्वर आना बन्द हो जाता है।

नोट—यद्यपि हमने इस नुसखेको आज़माया नहीं है, तथापि हम कह सकते हैं कि, यह नुसखा शीतज्वर या पारीसे आनेवाले ज्वरोंमें अच्छा होगा। इसी तरह हमने भी एक कुनैनका नुसखा आजमाया है, उसे नीचे लिखते हैं :—

(१३) कुनाइन २ रत्ती, इमलीका सत्त या टार्टरिक एसिड १० रत्ती और मिश्री आधी छटाँक—इन तीनोंको डेढ़ छटाँक जल में घोलकर, ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, हर दो-दो घण्टेमें ३ वार पिलानेसे, हर तरहका शीतज्वर, फसली बुख़ार, मलेरिया बुख़ार, पारीसे आनेवाले इकतरा, तिजारी, चौथिया वगैरः नाश हो जाते हैं। पहले मिश्रीको सिलपर पीसकर पानीमें घोल लो। जब मिश्री और जल एक-दिल हो जायँ, तब उस शर्बतमें कुनैन २ रत्ती और इमलीका सत्त १० रत्ती मिला दो और पिलादो। अगर दवा पिलाते-पिलाते ज्वर चढ़ आवे, तो फिर दूसरी पारीके दिन इसो तरह दो बार और ज़ियादा-से-ज़ियादा तीन बार इसे पिलाओ। ज्वर चढ़ आनेकी हालतमें यह दवा

हरगिज़ न देना। अगर रोगीका जी घबरावे या प्यास लगे, तो मिश्री खिलाकर जल पिलाना या मीठा नीबू चूसनेको देना। ज्वरका समय टल जाने पर, साबूदाना और मिश्री दूधमें या जलमें पकाकर खिलाना। महाज्वरांकुश वटियों और इस नुसख़ेसे हमने शीतज्वर (जाड़ा लगकर चढ़नेवाले ज्वर) के अनेक रोगी शर्त्तिया आराम किये हैं।

(१४) नीमकी छाल, चिरायता, पटोलपत्र, हरड़, नागरमोथा, करञ्ज के पत्ते, लालचन्दन और कुटकी—इन आठ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर अठगुने जलमें रातके समय भिगोदो; सवेरे भभकेसे अर्क़ निकाल लो। ज्वर चढ़नेसे पहले, दो-दो तोला अर्क़, तीन-तीन घण्टेके बाद, तीन बार रोगीको पिलाओ। इस अर्क़से एकही पारीमें फसली बुख़ार आराम हो जाता है। यह मलेरियाके नाश करनेमें कुनैनसे विशेष गुणदायक है। चढ़े हुए ज्वरमें देनेसे ज्वरका वेग तत्काल कम होजाता है। अगर ज्वरका वेग अत्यन्त तीव्र हो और दिमाग़की तरफ ज्वर की गरमी ज़ियादा बढ़ गई हो, तो लोबानको बारीक पीस कर, दो दो रत्ती की मात्रासे, २।३ बार जलके साथ खिलाओ। इससे चढ़ा हुआ ज्वर उतर जाता है। ज्वरकी गरमी तत्काल कम होजाती है और रोगीको चैन आजाता है। लेकिन जब बुख़ार ९९ या ९८॥ डिग्री रहजाय, तब यह लोबानकी मात्रा भूलकर भी मत देना। इस दवामें यह विशेष गुण है कि, यह एन्टीफेबरिनकी तरह शीत नहीं लाती और रोगीको कमज़ोर नहीं करती।

नोट—यह नुसखा लाला-घनश्यामलाल वैश्यने "वैद्य" में आजमाकर लिखा है। लाला बाँकेलाल अग्रवाल, बिसौली वाले चढ़े ज्वरको उतारनेका एक और उपाय लिखते हैं। आपका कहना है,—पहले १ छटाक सौंफको लेकर घीके साथ कढ़ाईमें भूनलो। पीछे दूनी चीनी मिलाकर, किसी मोटे कपड़ेमें बाँधकर, ऊपरसे

मिट्टीका लेप करके और धूपमें सुखाकर, भाड़की गरम वालूमें दाब दो। दो घण्टे बाद निकालकर और खोलकर, बारीक पीस लो। इसमेंसे तोले-तोले भर चूर्ण गरम जलके साथ एक-एक घण्टेमें २।३ बार देनेसे चड़ा हुआ ज्वर तत्काल कम हो जाता है।

आककी छालको सुखाकर, पीस कूटकर चूर्ण करलेने और दो-दो रत्ती चूर्ण गुड़के साथ खानेसे भी चढ़ा हुआ ज्वर उतर जाता है; परन्तु ऐसे उपाय, हमारी समझमें मलेरिया ज्वरोंमें जो जाड़ा लग कर चढ़ते हैं करने चाहियें। जो ज्वर स्वभावसे अपनी अवधि तक बने रहते हैं, उनको ज़बरदस्ती इस तरह उतारना ठीक नहीं है। प्रथम तो वे इन दवाओंका असर मिटतेही फिर उसी तरह चढ़ आते हैं; दूसरे औरभी ख़तरोंकी सम्भावना रहती है। पर जाड़ेके ज्वरोंमें, जो आपही अपने समय पर उतरते हैं, समयसे पहले उतारने में हानि नहीं। इस तरह ज्वर उतारनेसे रोगीको सुख होता है। हमने इस तरह सैकड़ों बार ज्वर उतारे हैं और पीछे रोकनेकी दवाएँ देकर ज्वर आराम कर दिये हैं। इस तरह पर उतारा हुआ ज्वर फिर अपने समय पर आता है, इन दवाओं से रुकता नहीं। रुकता है—रोकने की दवासे। ऐसी दवाओंसे यही फायदा है, कि रोगीको पीड़ा कम होजाती है, उसे विशेष कष्ट नही भोगना होता। यही हाल एण्टीफेबरिनका है।

(१५) शुद्ध वत्सनाभ विष ५ माशे, रससिन्दूर २ माशे करञ्जवेकी गिरी ६ माशे और सत्तगिलोय १ तोला—इन सबको एकत्र खरल में डाल कर, नीबूके रस में घोट कर, दो दो रत्तीकी गोलियाँ बनालो। ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, हर दो दो घण्टेमें, एक-एक गोली शहतमें पीसकर खानेसे इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि सब प्रकारके पुराने ज्वर दूर हो जाते

हैं। यह नुसखा लाला शालिग्राम वैश्यका आज़माया हुआ है। हमने "वैद्य" मुरादाबादसे लिया है।

(१६) घीग्वारका कन्द १० माशे, ज़रा गरम जलमें पीसकर पिलाने से वमन होकर कफ सूख जाता है और विषमज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) नीमकी छालके काढ़ेमें, धनिया और सोंठका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषमज्वर या मलेरिया ज्वरमें कुनैनसे अधिक लाभ होता है। परीक्षित है।

(१८) काली तुलसीके ४ पत्ते, बबूलके ४ पत्ते और अजवयान १ माशे—इन सबको जलमें पका और शीतल करके, ज्वर चढ़नेसे पहले बालकको पिलानेसे बालकोंका मलेरिया ज्वर चला जाता है।

(१९) कालाज़ीरा, एलुआ, सोंठ, कालीमिर्च, बकायनकी निबौली और करञ्जवेकी मींगी—इन सबको जलमें पीसकर चने-बराबर गोलियाँ बनालो। तीन-तीन घण्टेके अन्तरसे दिन-भरमें ३ गोली खानेसे आनेवाला ज्वर रुकता है और चढ़ा हुआ ज्वर उतर जाता है।

नोट—यह नुसखा परीक्षित है। इसे केवल मलेरिया ज्वरोंमेंही इस्तेमाल करना चाहिये।

(२०) गिलोय, धनिया, नीमकी छाल, पद्मकाष्ठ और लालचन्दन—इनका काढ़ा पीनेसे जठराग्नि प्रदीप्त होकर ज्वर नाश होता है; दाह, मुँहसे लार गिरना, प्यास, वमन और अरुचि ये सब विकार इस से नाश होते हैं। इसको "अमृतादि क्वाथ" कहते हैं। यह सब तरहके बुख़ारोंको नाश करता है। परीक्षित है। अगर इसका भभकेसे अर्क़ खींच लिया जाय, तब तो कहना ही क्या? हमने अर्क़ से बहुत लाभ उठाया है।

(२१) छिली मुलहटी ६ माशे और खुरासानी अजवायन ३ माशे— इनका काढ़ा, ज्वरकी पारी आनेसे पहले, पीनेसे पारीका ज्वर निश्चयही आराम हो जाता है।

(२२) शतावर ६ माशे और ज़ीरा ६ माशे - इनका चूर्ण १ छटाँक जलमें घोलकर पीनेसे, कई दिनमें, जाड़ेका ज्वर ज़रूर चला जाता है। उत्तम नुसखा है।

प्लीहानाशक नुसखे।
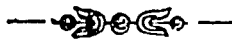
बुखार के बहुत दिन शरीरमें रहने से, मलेरिया के बुखार में या मलेरिया की जगह में रहने से अथवा मीठे और चिकने प्रभृति पदार्थों से खून बढ़ कर प्लीहा होती है। पेट में बायीं तरफ ऊपर की ओर प्लीहा या तिल्ली होती है। जब उस में कुछ विकार नहीं होता, तब वह हाथ से मालूम नहीं होती ; पर बड़ी होने से कोख के बायीं ओर हाथ लगाते ही मालूम होती है। इस रोग में सदा मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहता है या रोज़ किसी न किसी समय ज्वर आया करता है। बहुधा शीत ज्वर होता है। उस समय तिल्ली की जगह में दर्द होता है, दस्त साफ नहीं होता, शरीर दुर्बल हो जाता है, प्यास लगती है, वमन होती है, मुँह का ज़ायका खराब हो जाता है, आँखों के सामने अंधेरी आती है, आँख और उँगलियाँ पीली-पीली सी हो जाती हैं, पेशाब कम और लाल होता है, भूख मारी जाती है, बढ़ जाने पर बेहोशी प्रभृतिके भी लक्षण होते हैं। इस में ज्वर और तिल्ली की दवा मिलाकर देनी चाहिये। अगर ज्वर का ज़ोर हो, तो तिल्ली की दवा बन्द करके ज्वर का इलाज करना चाहिये। पीछे ज्वर जाने पर तिल्ली का इलाज करना चाहिये।

(१) नागफनीके पत्तोंको चाकूसे अच्छी तरह छीलकर, छोटे छोटे टुकड़े कर लो। एक तोला टुकड़ा सवेरे और एक तोला शामको नमकके साथ खाओ। इस उपायसे प्लीहा शीघ्रही कम हो जाती है। एक परमहंस बाबा कहते हैं कि, आसाममें मलेरियाके सबबसे हमारी तिल्ली बढ़ गई, अनेक उपाय किये, पर लाभ न हुआ। इस उपायसे ५।७ दिनमें हमें बिल्कुल आराम होगया।

(२) आकके पत्तोंमें नमक मिलाकर राख करलो। पीछे उस राखको बलाबल अनुसार शहदके साथ सेवन करो। इससे घोर तिल्ली भी घटकर ठीक हो जाती है।

(३) शहतमें पीपरका चूर्ण मिलाकर कुछ दिन लगातार खानेसे ताप-तिल्ली, हिचकी, श्वास, खाँसी और ज्वर निश्चयही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) अगर गरमी या रक्तकोपसे तिल्ली हो ; तो "इस्लीम" नामकी नसका बाईं ओरसे खून निकलवा दो, आराम हो जायगा।

(५) दो तोला अञ्जीर सिरकेमें डुबोकर, सवेरे-शाम लगातार कुछ दिन खानेसे तिल्ली अवश्य आराम हो जाती है।

(६) हमारा "अकबरी चूर्ण" ७।१४ या २१ दिन खानेसे तिल्ली निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(७) दो रत्ती नौसादर रोज़-रोज़ खानेसे तिल्ली गल जाती है। परीक्षित है।

(८) जामुनका सिरका पिलानेसे भी तिल्ली नष्ट हो जाती है।

(९) अगर तिल्लीवाले रोगीके बदनमें खून बहुत ही कम हो, तो पावभर गायका दूध औटाकर, नीचे उतारकर, उसमें ६ माशे घी, १० माशे शहद, २ तोले मिश्री, १ रत्ती पीपर और ५ कालीमिर्च—सबको मिलाकर पिलानेसे खून भी बढ़ेगा और तिल्ली भी आराम होगी। परीक्षित है।

धातुगत ज्वरों के लक्षण* ।

रसगत ज्वरके लक्षण ।

गुरुता हृदयोत्क्लेशः सदनंछर्द्यरोचकौ ।
रसस्थे तुज्वरोलिंगंदैन्यं चास्योपजायते ॥

शरीरमें भारीपन, हृदय में रहनेवाले दोष के बढ़ने से जी मिचलाना, ग्लानि, ओकारी, अरुचि और दीनता—ये रसगत ज्वर के लक्षण हैं। "चरक"में—शीत, उद्वेग, शरीर का रहजाना, अँगड़ाई और जम्भाई आदि लक्षण लिखे हैं।

नोट—इस धातु में ज्वर हो तो लंघन कराना हित है।—सुश्रुत।

रक्तगत ज्वरके लक्षण ।

रक्तनिष्ठीवनं दाहोमोहश्छर्दनविभ्रमौ ।
प्रलापःपिड़िका तृष्णारक्तप्राप्तेज्वरे नृणाम् ॥

खून थूकना, दाह होना, बेहोशी, वमन, भ्रम, प्रलाप, शरीर में फुन्सी वगेरः होना और प्यास ज़ियादा लगना—ये रक्तगत ज्वर के

* "भावप्रकाश"में लिखा है,—यद्यपि रस नामक धातुमें रहनेवाला ज्वर पहले कहा हुआ सन्तत ज्वर ही है और इसी तरह अन्य धातुओं में रहनेवाले ज्वर भी विषम ज्वरों में कहे गये हैं, तथापि उन धातुओं में रहनेवाले ज्वरों के लक्षण और चिकित्साको अनुक्रम से कहने के लिये यहाँ लिखते हैं।

लक्षण हैं। "चरक"में बारम्बार फुन्सियों का होना और देह का रंग लाल होना अधिक लिखा है।

नोट—रक्तगतज्वर में सेचन, शमन, लेपन तथा खून निकलवाना हित है। सुश्रुत। "चरक"में लिखा है, ज्वर रक्तस्थ होनेसे (रक्तपित्तज्वरमें) शीतल परिषेक, लेप और संशमन औषधि हितकर हैं।

मांसगत ज्वरके लक्षण।

—**—

पिंडिकोद्वेष्टनं तृष्णासृष्टमूत्रपुरीषता।
ऊष्मांतर्दाहविक्षेपौग्लानिःस्यान्मांसगेज्वरे॥

पिंडलियों में दण्डे वगैरः लगने की सी पीड़ा होना, प्यास लगना, मल मूत्र ज़ियादा उतरना, शरीर के भीतर गरमी और दाह का होना, हाथ पाँव इधर उधर फेंकना और ग्लानि,—ये मांसगत ज्वर के लक्षण हैं। "चरक"में अत्यन्त अन्तर्दाह, मलकी रुकावट और दुर्गन्ध मारना ये लक्षण अधिक लिखे हैं।

नोट—सुश्रुतने मांसगत ज्वर में तीक्ष्ण विरेचन—तेज जुलाब देनेकी राय दी है। चरक ने लिखा है,—ज्वर मांसस्थ हो और मेदस्थ हो (पिड़िका जनित ज्वर हो) तो विरेचन देना और उपवास कराना चाहिये।

मेदोगतज्वरके लक्षण।

—*—

भृशं स्वेदस्तृषामूर्च्छाप्रलापश्छर्दिरेवच।
दौर्गन्ध्यारोचकौग्लानिर्मेदःस्थेचासहिष्णुता॥

अत्यन्त पसीने आना, अधिक प्यास लगना, मूर्च्छा, प्रलाप, वमन, देह में बदबू आना, ग्लानि, अन्न में अरुचि, सहन शक्ति का अभाव,—ये लक्षण मेदोगत ज्वरके हैं।

नोट—मेदोगत ज्वर में पसीने इसलिये जियादा आते हैं कि, पसीना मेदका मैल है। दुर्गन्ध ऐसी खराब आती है, जो स्वयं अपने तईं बुरी मालूम होती है। सुश्रुतमें कहा है,—इसमें मेदनाशक यानी शोषण उपाय हितकर हैं।

अस्थिगतज्वरके लक्षण ।

भेदोऽस्थ्नांकूजनंश्वासोविरेकश्छर्दीरेवच ।
विक्षेपणंचगात्राणामेतदस्थिगतेज्वरे ॥

हड्डियों में भेदने की सी पीड़ा, कंठ में गरमी, पेट बोलना, श्वास, दस्त, वमन, हाथ पैर इधर उधर पटकना—ये लक्षण अस्थिगत ज्वर के हैं ।

नोट—सुश्रुतने कहा है,—अस्थिगत ज्वरों में वातनाशक विधि, तेल की मालिश पसीने दिलाना और मर्दन वगेरः करना चाहिये। चरकने कहा है,—अस्थि और मज्जागत ज्वरों में (धनुस्तंभ पक्षाघात प्रभृति वातसंसृष्ट ज्वरों में) निरूह और अनुवासन वस्ति का प्रयोग करना चाहिये ।

मज्जागतज्वरके लक्षण ।

तमःप्रवेशनंहिक्काकासःशैत्यंवमिस्तथा ।
अन्तर्दाहोमहाश्वासोमर्मच्छेदश्चमज्जगे ॥

अँधेरी आना, हिचकी, खाँसी, जाड़ा लगना, वमन, भीतर दाह का होना, महाश्वास और मर्म्मस्थानों में फोड़ने की सी पीड़ा—ये लक्षण मज्जागत ज्वरों के हैं ।

नोट—यह ज्वर असाध्य या अचिकित्स्य—लाइलाज है। इस में बाहर शीत और भीतर दाह रहता है। इस रोगवाला रोगी नहीं बचता। अगर किसी तरह बच भी जाता है, तो शेष में पक्षाघात रोग से मर जाता है। सुश्रुतने कहा है,—मज्जा और शुक्रगत ज्वरवाले का इलाज न करना चाहिये ।

शुक्रगतज्वरके लक्षण ।

मरणं प्राप्नुयात्तत्रशुक्रस्थानगतेज्वरे ।
शेफसःस्तब्धतामोक्षःशुक्रस्यचविशेषतः ॥

रक्तादि धातुगत ज्वर के शुक्र-स्थान में पहुँचने से रोगी की मृत्यु होती है*। इस ज्वर में लिंग जकड़ जाता है या जड़ हो जाता है और वीर्य अधिकतासे बहता है।

नोट—"सुश्रुत" में लिखा है,—रक्त आदि पदार्थोंका थोड़ा-थोड़ा स्राव होता है।

साध्यासाध्यता।

"चरक" में लिखा है,—ज्वर—रस और रक्त के आश्रय होने से साध्य होता है। मेद, मांस, अस्थि और मज्जागत होने से कृच्छ्र-साध्य होता है। शुक्र में होने से असाध्य होता है।

चिकित्सकके ध्यान देने योग्य विषय।

"चरक" में लिखा है,—शीतल, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष आदि क्रिया करने से अगर ज्वर न छूटे; तो जानना चाहिये कि, यह ज्वर केवल दोषाश्रित ही नहीं है, शाखाश्रित भी है; अर्थात् इसका सम्बन्ध रक्त आदि धातुओं से भी है। इस प्रकारका ज्वर फस्त खुलाने से जाता है।

जब आप गरम और सर्द, चिकना और रूखा प्रभृति सब तरह का इलाज कर हारें, पर ज्वर न जाय; तब तो कम-से-कम आपको इस बात पर नज़र दौड़ानी चाहिये कि, कहीं ज्वर का सम्बन्ध धातुओं से तो नहीं हो गया है; क्योंकि किसी धातु से पूरा सम्बन्ध किये बिना ज्वर बहुत दिनों तक नहीं रह सकता। जिस धातु में ज्वर हो, उस धातु से उसका सम्बन्ध अलग करने से ही वह भाग जायगा।

---

* वीर्यके स्थान में ज्वर के जाने से मृत्यु होती है, यह बात ठीक नहीं है; क्योंकि वीर्य तो सारे शरीर में रहता है। वीर्यके रहने के मुख्य स्थानों में जो वीर्य है, उसमें ज्वरके जाने से मृत्यु होती है, यह मतलब है।

चिकित्सा ।

सप्त धातुगत ज्वरनाशक नुसखे ।

(१) आमला, ज़ीरा, पीपल, चीतेकी जड़, कौंच के बीज और हरड़—इन सबको एक-एक तोले लेकर कूट पीस कर छान लो। पीछे इस चूर्ण में गिलोय का सत्त १ तोले मिला कर, शीशी में रख दो। इस चूर्ण को शहद में मिलाकर चटाने और ऊपर से गायका दूध पिलाने से सब तरह के धातुगत ज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—एक सालके पुराने गुड़ में चूर्ण मिलाकर गोलियाँ बना लेने और गोली खिलाकर, ऊपर से गाय का दूध पिलानेसे भी लाभ होता है।

(२) शहद ३ माशे, घी ६ माशे, पीपल १ तोले, चीनी २ तोले और दूध ८ तोले, दालचीनी ६ रत्ती, तेजपात ६ रत्ती, छोटी इलायची ६ रत्ती और नागकेशर ६ रत्ती—इन में से शहद को अलग रख कर, बाक़ी सब को मिला और पका कर खोआसा कर लो। खोआ हो जाने पर उतार कर, उस में शहद मिला कर लड्डू बना लो। अपने बलके अनुसार हर दिन एक लड्डू खाने से वीर्यगत ज्वर, दमा, खाँसी, पीलिया, वीर्यक्षय और अग्नि की मन्दता—ये आराम होते हैं। परीक्षित है।

नोट—वीर्यगत ज्वर आराम नहीं होता, पर इस नुसखे के कुछ दिन पच जाने से कई रोगी आराम होते देखे गये हैं।
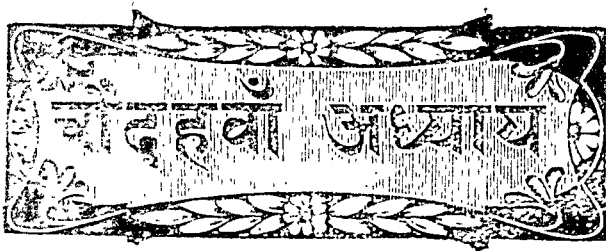
जीर्ण ज्वरके लक्षण।

"भावप्रकाश" में लिखा है,—

> यो द्वादशभ्यो दिवसेभ्यो उर्द्ध्वं दोषत्रयेभ्यो द्विगुणेभ्य उद्ध्वम्।
> नृणां तनौ तिष्ठति मन्दवेगो भिषग्भिरुक्तो ज्वर एष जीर्णः॥

जो ज्वर बारह दिन के बाद और तीनों दोषों की अवधि के दूने दिनों के उपरान्त मनुष्यों के शरीर में मन्दा-मन्दा रहता है, उसे वैद्य "जीर्ण ज्वर" कहते हैं।

खुलासा यह है, जो ज्वर बारह दिन के उपरान्त रहे, वात-ज्वर चौदह दिन के बाद रहे, पित्त-ज्वर २० दिन के बाद रहे और कफज्वर २८ दिन के बाद रहे और ज्वरका वेग मन्दा हो; तो वह "जीर्ण ज्वर" है।

"वङ्गसेन"में लिखा है,—

> न शाम्यति ज्वरो यस्य पक्षादूर्ध्वं शरीरिणाम्।
> मन्दवेगानुचारी च स ज्ञेयो जीर्णतां गतः॥

जो ज्वर पन्द्रह दिन के पीछे भी शान्त नहीं होता और मन्द वेग से बना रहता है, वह पुराना हो जाता है; यानी पन्द्रह दिन के बाद ज्वर जीर्ण हो जाता है।

"वैद्यविनोद"में लिखा है,—

सप्तत्रय दिनादूर्ध्वं तनुतां प्राप्य तिष्ठति ।
प्लीहाग्निमान्द्यं तनुते स जीर्णज्वर उच्यते ॥

जो ज्वर २१ दिन के बाद सूक्ष्म होकर शरीर में रहता है और प्लीहा तथा मन्दाग्नि को बढ़ाता है, वह "जीर्ण ज्वर" कहलाता है ।

जो ज्वर रोज़ मन्दा-मन्दा बना रहता है, जिस में रूखापन, सूजन, शरीर की जकड़न और अत्यन्त कफ होता है, उसे "वातबलासक जीर्णज्वर" कहते हैं । यह ज्वर कष्टसाध्य होता है ।

नोट—जीर्णज्वर रोगीको कभी भी लंघन न कराने चाहियें, क्योंकि लंघन या उपवास से रोगी कमजोर हो जाता है और ज्वर बलवान् हो जाता है । हाँ, अगर जीर्णज्वर में कुपथ्य सेवन करने से दोष फिर कुपित हो जायँ, तो पहले लंघन कराकर, फिर पूर्व्वोक्त ज्वरकी चिकित्सा करनी चाहिये । ऐसे मौके पर भी जियादा लंघन न कराने चाहियें । कहा है—

जीर्णज्वरी नरः कुर्य्यान्नोपवासं कदाचन ।
ज्वरक्षीणस्य नहितं वमनं न विरेचनं ॥
कामंतु पायसंतस्य निरुहैर्वाहरेन्मलान् ॥

जीर्णज्वर-रोगीको उपवास न कराना चाहिये । ज्वर से क्षीण हुए रोगीको वमन और विरेचन भी हितकारी नहीं हैं । उसे इच्छानुसार दूध पिलाना चाहिये और निरुह वस्ति (पिचकारी या एनीमा) से मल को निकाल देना चाहिये ।

धातुगत और जीर्णज्वरकी चिकित्सामें याद रखनेयोग्य बातें ।

(१) रसगत ज्वरमें वमन और लंघन कराने चाहियें । रक्तगत ज्वरमें जलसे सींचना, संशमन औषधि, लेप और रक्तमोक्षण

वाली फस्द आदिसे खून निकलवाना हित है। मांसगत ज्वरमें तीक्ष्ण विरेचन कराना चाहिये। मेदगत ज्वरमें मेद-नाशक चिकित्सा करानी चाहिये। अस्थिगत ज्वरमें वात-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये तथा वस्तिकर्म, अभ्यङ्ग—तैल मर्दनादि एवं उद्वर्तन—ये सब करने चाहियें। मज्जा और शुक्रगत ज्वररोगियोंकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये। ये रोगी मर जाते हैं। रस, रक्त, मांस और मेदगत ज्वर साध्य हैं; अस्थिगत और मज्जागत कष्टसाध्य हैं; शुक्रगत ज्वर असाध्य है। जब शुक्रके स्थान में ज्वर पहुँच जाता है, तब प्राय: रोगी मरही जाता है।

(२) जीर्ण ज्वरमें शिरोविरेचन करने यानी नास देनेसे सिरका भारीपन और सिरका दर्द नाश हो जाता है, इन्द्रियोंमें चैतन्यता और रुचि होती है; इसलिये जीर्ण ज्वरमें शहद या तेलके द्वारा नस्य अवश्य देनी चाहिये। जैसे;—हींग और सेंधेनोनको पुराने घीमें मिलाकर नास लेनेसे जीर्णज्वरीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(३) नस्य, लंघन, चिन्ता, मैथुन, भय, शोक और क्रोध प्रभृति कारणों से तथा कफके अत्यन्त क्षय हो जानेसे निद्रानाश हो जाती है। जीर्ण ज्वरमें रोगी का कफक्षय हो जाता है, रूखेपनके मारे वायु कुपित रहता है, इसलिये रोगीकी नींद मारी जाती है। उस दशामें रोगीको नींद लानेके लिये ऊपरी उपायोंसे काम लेना चाहिये। नींद लानेवाले अनेक परीक्षित उपाय हम पहले पृष्ठ १२५—१२६ में लिख आये हैं।

(४) क्षीणकफवाले जीर्ण ज्वरवाले, अल्पदोषवाले, प्यास और दाहसे पीड़ितको दूध पिलाना अत्यन्त हितकारी है, परन्तु वही दूध नवीनज्वरमें विष है। जीर्ण ज्वरमें ज्वरकी गरमी और शरीरको

रूखेपनके कारण वायु कुपित हो जाता है, उसके शान्त करनेके लिये उसी तरह घृत पिलाना चाहिये ; जिस तरह जलते हुए घरकी आग बुझानेको जल सींचते हैं ।

(५) ज्वरसे क्षीण मनुष्यको न वमन हित है न विरेचन हित है। ऐसे रोगी को इच्छानुसार दूध पिलाना चाहिये अथवा निरूह बस्ति द्वारा मल निकालना चाहिये। ज्वरके शान्त हो जानेपर भी यदि अरुचि, अङ्गग्लानि और विवर्णता हो तथा अङ्गमें मलादिक जम गये हों ; तो अनुवन्धके भयसे वमन विरेचन द्वारा सफाई कर देनी चाहिये ।

(६) सब तरहके जीर्णज्वरोंमें जब वातादि दोष पक्वाशयमें प्राप्त हो जायँ, तब स्नेहबस्ति का प्रयोग करना चाहिये ।

(७) चन्दनादि तैल, नारायणतेल और लाक्षादितेल ये तीनों तेल जीर्णज्वरमें अच्छे हैं। इनकी मालिशसे बहुत फायदा होता है। "चन्दनादितेल" शोषमें बड़ा लाभदायक है। "नारायणतेल" बादी के रोग नाश करनेमें रामबाण है। "लाक्षादितेल" विषमज्वरोंपर अच्छा है। हमने लाक्षादि तेलको जीर्णज्वर रोगियोंके मलवा कर बहुत लाभ उठाया है। जीर्णज्वरी रोगीके इनमेंसे, विचार कर, किसी तेलकी मालिश अवश्य करानी चाहिये ।

(८) आप पहले जो क्रिया करें उससे लाभ न दीखे, तो सिरपर हाथ रख कर न बैठे रहें, दूसरी क्रिया करें ; परन्तु जब पहली क्रियाका वेग शान्त हो जाय, तब दूसरी क्रिया करें ; क्योंकि संकर या मिली हुई क्रिया रोगीके हक़में हानिकारक होती है।

(९) जीर्णज्वरमें कुपथ्य सेवन करनेसे अगर वातादिक दोष फिर बढ़ जावें, तो पहले लंघन कराकर ज्वरका इलाज करना चाहिये ; पर जीर्णज्वरसे क्षीण हुए रोगीके बलका ध्यान अवश्य रखना चाहिये ।

(१०) अगर रोगी बलवान हो, दोष थोड़े हों और उपद्रव न हों ; तो ज्वर को साध्य समझकर इलाज करना चाहिये। ऐसा रोगी बिना कष्टके आराम हो जाता है।

शरीरके बाहर अत्यन्त सन्ताप हो और प्यास वगैरः उपद्रव कम हों, तो बहिर्वेग ज्वरके लक्षण समझने चाहियें. यह ज्वर सुखसाध्य है।

अगर शरीरके भीतर दाह हो, प्यास बहुत ही हो, रोगी व्यर्थ बकता हो, श्वास हो, भ्रम हो, सन्धियों और हड्डियोंमें दर्द हो, पसीने न आते हों, वायु अच्छी तरह न सरती हो और मल न उतरता हो ; तो अन्तर्वेग ज्वरके लक्षण समझने चाहियें।

(११) जिस तरह कालके कारणसे दोषोंकी प्रवृत्ति और वृद्धि होती है ; उसी तरह उपशय और अनुपशय को भी समझना चाहिये। जिन आहार विहारादिसे दोष नष्ट हो, वह उपशय है और जिन आहार विहारादिसे दोष बढ़े वह अनुपशय है। उपशय और अनुपशय का ख़याल रखनेसे चिकित्सकको बड़ा भारी सुभीता होता है। रोगीको किस वस्तुसे लाभ होता है, किससे हानि होती है, इसपर नज़र रखनेसे रोगनाशकी चाबी मिल जाती है,—भूल-सुधार हो जाता है।

(१२) ज्वरमें ऋतुके अनुसार दूष्यता और प्रमेहमें दोषोंके समान दूष्यता और रक्तगुल्ममें पुरानापन—ये सुखसाध्यता के चिह्न हैं।

(१३) जीर्णज्वरवालेको दाह हो, तो "षट्‌तकतैल"की मालिश करानी चाहिये ; इससे दाह और शीत दोनों नाश हो जाते हैं। "प्रह्लादन तेल" भी दाह नाश करनेमें उत्तम है। ये दोनों तेल दाहपर आज़माये हुए हैं। सिरमें दर्द हो, तो नस्य या लेप करना चाहिये। अगर दस्त होते हों, तो ज्वरातिसारके नुसख़ेसे काम लेना चाहिये, न कि अतिसार नाशकसे। हिचकी, खाँसी, श्वास

प्रभृति उपद्रव हों, तो उनका यथोचित उपाय करना चाहिये। ज्वरके दशों उपद्रवोंके नाश करनेके उपाय हम पुस्तकके अन्तमें लिखेंगे। अपनी बुद्धिसे विचारकर, जहाँ जो उचित हो वहाँ वही नुसख़ा काममें लाना चाहिये। हमने जीर्णज्वरके छोटे-बड़े जितने नुसखे लिखे हैं, प्राय: सभी परीक्षित हैं ; पर किस रोगी को कौनसा नुसख़ा देना चाहिये, यहाँ थोड़ी अक़्लकी ज़रूरत है।

(१४) जो जीर्णज्वरी रोगी काढ़े तथा वमन विरेचनसे आराम न हो, उसे औषधियोंके बने घी पिलाकर आराम करना चाहिये और "लाक्षादि तेल"की मालिश करानी चाहिये। अगर जीर्णज्वर वाला दाह से दुखी हो, हाथ पैरके तलवे जले जाते हों, तो उसके बदनमें या जहाँ-जहाँ दाह हो "षट्तक्र" तेलकी मालिश करानी चाहिये। "षट्तक्रतेल"में तेलसे तक्र छैगुना गिरता है, इसी से उसे "षट्तक्र तेल" कहते हैं ; षट्तक्र तेल जीर्णज्वर वालेके दाह और शीत दोनोंको आराम करता है। उसके बनानेकी विधि पीछे लिख आये हैं।

(१५) ज्वर किसी धातुसे अपना पूरा सम्बन्ध किये बिना बहुत दिनों तक नहीं रह सकता है। इसलिये जब देखो कि, गरम सर्द उत्तमोत्तम औषधियाँ देनेसे भी ज्वर नहीं जाता, तब पता लगाओ कि, ज्वरका सम्बन्ध रस, रक्त माँस, मेद आदि किस धातुसे है। पता लगनेपर ऐसी चिकित्सा करो, जिससे ज्वर का सम्बन्ध धातुसे छूट जाय। धातुसे सम्बन्ध छुटतेही ज्वर आराम हो जायगा।

जीर्णज्वरकी चिकित्सा।

वर्द्धमानपिप्पली।
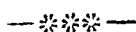
(१) पहली विधि—गायके दूधमें पाँच पीपल डालकर, कलईदार बर्तनमें पकाओ, जब दूध औटजाय, तब पीपल खाकर ऊपर से दूध पीजाओ अथवा पीपल न खाकर खाली दूध पीजाओ। दूसरे दिन ३ पीपल बढ़ाओ यानी ८ पीपल डालकर दूध औटाओ और दूधको पीजाओ। तीसरे दिन ११ पीपल, चौथे दिन१४पीपल, पाँचवें दिन १७ पीपल, छठे दिन २० और सातवें दिन २३ पीपल औटाकर पीओ। पीछे आठवें दिनसे तीन-तीन पीपर घटाकर दूधमें डालो; यानी पहले दिन २० पीपर, दूसरे दिन १७, तीसरे दिन १४, चौथे दिन ११, पाँचवें दिन ८, छठे दिन ५ और सातवें दिन ३ पर आजाओ। सात दिन ५ से आरम्भ करके, तीन-तीन पीपल रोज़ बढ़ाकर दूधमें डालो और २३ तक पहुँचनेपर फिर तीन-तीन पीपर रोज़ घटाकर दूधमें डालो। यही "वर्द्धमान पिप्पली" है। इसके सेवनसे जीर्णज्वर, खाँसी, पीलिया, गुल्म, बवासीर, प्रमेह, अग्निमांद्य और वातरोग—ये रोग दूर हो जाते हैं। परीक्षित है।

दूसरी विधि—पहले दिन १० पीपल दूधमें औटाकर दूध पीओ। दूसरे दिन २०, तीसरे दिन ३०, चौथे दिन ४०, पाँचवें दिन ५०, छठे दिन ६०, सातवें दिन ७०, आठवें ८०, नवें दिन ९०, और दसवें दिन १०० पीपल औटाओ। इसके बाद घटा-घटाकर पीओ। पहले दिन ९०, दूसरे दिन ८०, तीसरे दिन ७०, चौथे दिन ६०, पाँचवें दिन ५०, छठे दिन ४०, सातवें दिन ३०,

आठवे' दिन २० और नवे' दिन १०, पीपल डालकर दूध औटाकर पीओ। यह प्रयोग सबसे उत्तम है। ६।६ पीपल बढ़ाना मध्यम है और तीन-तीन बढ़ाना कनिष्ठ है; पर आजकल के लोगों को तीन-तीन का योग ही ज़ियादा हितकर है।

नोट—वर्द्धमान पीपलका योग पाण्डु रोग पर है, पर यह जीर्णज्वरको, जिसमें कफ-प्रधान हो अवश्य आराम करता है। अगर रोगीका मिजाज गरम हो, तो एक-एक पीपर रोज बढ़ाकर भी दे सकते हो, पर तीन तीन बढ़ाना साधारण तौरसे अच्छा है। यह बात रोगीके मिजाज और ताक़त पर मुनहसिर है। अगर रोगीको इस नुसखेसे गरमी या जलन मालूम होने लगे, तो बन्द कर देना चाहिये।

तीसरी विधि—गायका दूध ४ तोला, जल १६ तोला और पीपल तीन तोला—सबको क़लईदार बर्तनमें डालकर औटाओ। जब सब पानी जलकर दूधमात्र रहजाय उतार लो। पीपल चबाकर खा जाओ और ऊपरसे दूध पी जाओ।

पञ्चमूली क्षीरपाक।

(२) सरवन, पिथवन, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और बड़ा गोखरू—इन पाँचोंकी जड़ोंको २॥ तोला लेकर, ज़रा कुचल लो। पीछे एक मिट्टीके बर्तनमें अठगुना दूध और दूधसे चौगुना पानी डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब पानी जलकर दूध मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और रोगीको पिला दो। यह दूध सब तरहके जीर्णज्वरों पर उत्तम है। इससे श्वास, खाँसी सिरका दर्द, पसलीकी पीड़ा और जुकाम—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

सितादि क्षीर।

—*—

(३) चीनी, घी, सोंठ, छुहारे और काली दाख—इन सबको अढ़ाई तोला लेकर पाव-भर दूध और एक सेर जलमें मिलाकर औटा-

ओ। जब पानी जलकर दूध मात्र रहजाय, उतारकर मल छान लो और शीतल करके, ३।४ माशे शहद डालकर, रोगीको पिलाओ। इस नुसखेसे प्यास, दाह और जीर्णज्वर शान्त होता है और इससे दस्त भी साफ हो जाता है। परीक्षित है।

वासादि घृत।

-*-

(४) (क) अडूसेके पत्ते, गिलोय, त्रिफला, त्रायमाण और धमासा—इन पाँचोंको पाँच-पाँच तोले लेकर, रातको मिट्टीके बर्तनमें डालकर, ऊपरसे ५ सेर जल डालकर भिगो दो। सवेरे आगपर रखकर पकाओ, जब सेर सवा सेर जल रहजाय, उतारकर रखलो। शीतल होने पर मल छानकर इस काढ़ेको १ साफ मिट्टीके बर्तनमें पास रख लो।

(ख) पीपल, नागरमोथा, मुनक्का-दाख, लालचन्दन, कमलगट्टेकी गिरी और सोंठ—इन छहोंको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ भाँगकी तरह पीसकर लुगदी सी बनालो।

(ग) गायका दूध २॥ सेर और घी १। सेर तैयार रखो।

(घ) कलईदार कड़ाहीमें, दूध, घी, काढ़ा और लुगदी चारोंको चढ़ा कर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब दूध और काढ़ा जल जाय, केवल घी रह जाय, उतारकर शीतल करलो। पीछे घीको किसी अच्छे मिट्टीके या चीनीके बर्तन में निकालकर रख दो। यही "वासादि घृत" है।

"वङ्गसेन"में लिखा है, इस घृतसे जीर्णज्वर नाश होता है। जिस जीर्णज्वर-रोगीको ज्वरके साथ खाँसी हो और शरीर दिन-दिन क्षीण होता जाता हो, उसे यह घृत पिलानेसे अवश्य फायदा होता है।

इस घीकी मात्रा बलाबल पर निर्भर है। फिर भी कमज़ोर रोगीके लिये कम-से-कम ८।६ माशे घी खिलाकर देखना चाहिये। अगर पच

जाय, तो धीरे-धीरे बढ़ाकर आधी छटाँक तक ले जाना चाहिये। अगर घी पीनेसे जो ख़राब होने लगे, तो पान इलायची खिलाना चाहिये। घी पिलाकर, जल कभी न पिलाना चाहिये; अन्यथा खाँसी बढ़ जायगी। आधा घण्टा बाद जल पिलाने में हर्ज नहीं है।

नोट—इसके साथ-साथ खाँसीकी गोलियाँ भी चूसनेको दी जायँ तो अच्छा हो। यदि घी पीनेसे जरा खाँसी बढ़ने भी लगे, तो घबराना मत। गोलियाँ चूसनेको देते रहना। कुछ दिन बाद खाँसी बिल्कुल जाती रहेगी। यह नुसखा भी परीक्षित है।

पिप्पल्यादि घृत।

(५) (क) पीपल, लालचन्दन नागरमोथा, खस, कुटकी, इन्द्रजौ, आमले, सारिवा, अतीस, शालिपर्णी, दाख, इमलीके बीज, त्रायमाण और कटेरी—इन १४ दवाओंको दो-दो तोले लेकर कुचलकर, रातको मिट्टीके बर्तनमें पाँच सेर जलमें भिगोदो और सवेरे काढ़ा बना लो। चौथाई जल रहनेपर मल-छानकर रख लो।

(ख) इन्हीं १४ दवाओंको और लेकर पानीमें पीसकर लुगदी बना लो।

(ग) गायका दूध १२॥ सेर और गायका घी ऽ१ सेर लेकर रखलो।

(घ) काढ़ा, लुगदी और दूध तथा घी को कलईदार कड़ाहीमें चढ़ा कर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब दूध और काढ़ा जल कर घृत मात्र रहजाय, उतारकर शीतल कर लो। पीछे घीको निकालकर अमृतबान या चीनीके बर्तनमें रखलो।

बङ्गसेनने लिखा है,—यह घृत तत्कालही जीर्णज्वरको नाश करता है। इसको भी ४ या ६ अथवा ८ माशे रोगीको प्रतिदिन सवेरे पिलाना चाहिये और ऊपरसे जल न पिलाना चाहिये। यह भी परीक्षित है। जीर्णज्वर और पुरानी खाँसीमें अवश्य लाभदायक है।

नोट—परन्तु बहुतही कमजोर रोगियोंको, जिनमें जरा भी दम न हो, घी दूध आदि

न पिलाने चाहियें। जिन्हें कुछ भी न पचता हो, उन्हें "दुग्धफेन" खिलाने चाहियें। जीर्णज्वर और अतिसारमें दुग्धफेन बहुत फायदेमन्द हैं।

दुग्धफेन।

(६) गायका या बकरीका दूध दुहाकर तत्काल दो लोटोंमें लेकर, ऊँचेसे एक दूसरेमें उड़ेलो। इस तरह जो झाग आते जायँ, उन्हें निकाल-निकालकर रखते जाओ। जब झाग आने बन्द हो जायँ, तब दूधको अलग रख दो। उन झागोंमें ज़रासी मिश्री मिला कर रोगीको सवेरे-शाम खिलाओ। इन झागोंको अग्निमांद्य, जीर्णज्वर और अतिसारमें अवश्य खिलाना चाहिये।

(७) ६६ तोले गायका दूध मीठी आगसे अधऔटा करो। शीतल होनेपर उसमें चीनी और शहद दो-दो तोले, घी १॥ तोले और पीपलका चूर्ण एक तोले मिलाकर पीनेसे हृद्रोग, जीर्णज्वर, खाँसी और क्षय ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) शहद, घी, दूध, पीपल और चीनी—इन पाँचोंको एकत्र मथकर पिलानेसे विषमज्वर, हृद्रोग, खाँसी, दमा और क्षय नाश हो जाते हैं। इसे "पंचसार" कहते हैं। परीक्षित है।

(६) घीग्वारका लुआव हर दिन ४ माशेसे १ तोले तक निकाल कर, उसमें ४ रत्ती ज़ीरा और कालीमिर्च पीसकर मिला लो और खाओ। इससे शरीरमें भिनी हुई गरमी, प्रमेह और जीर्णज्वर, आराम हो जाते हैं। इस नुसखेके सेवन करनेसे कच्ची धातु भी निकल जाती है। परीक्षित है।

(१०) गिलोयके काढ़ेमें चौथाई शहद या ३ माशे पीपलका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे जीर्णज्वर चला जाता है। अथवा गिलोयको रातके समय कुचलकर जलमें भिगो देने और सवेरे छानकर पी लेनेसे जीर्णज्वर आराम हो जाता है।

(११) कुटकी, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापड़ा और गिलोय—इन पाँचोंका काढ़ा, विश्वास रखकर, लगातार सेवन करनेसे असाध्य जीर्णज्वर भी आराम होजाता है । परीक्षित है ।

नोट—जीर्णज्वरके सिवाय अन्य ज्वरोंमें भी यह नुसखा अनेक बार अच्छा साबित हुआ है ।

(१२) नागरमोथा, कुटकी, कचूर, कायफल, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल और कूट—इनका चूर्ण बनाकर, अदरखके रसमें या शहदमें सेवन करनेसे जीर्णज्वर, खाँसी, दमा, अरुचि, शूल, कय होना, क्षय और वायु—ये सब अवश्य नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—जिस जीर्ण ज्वरीको ज्वरके साथ श्वास और खाँसी वगेरः उपरोक्त शिकायतें, हों, उसे यह चूर्ण अवश्य सेवन करना चाहिये ।

(१३) तालीसपत्र १ तोले, सोंठ ३ तोले, पीपल ४ तोले, वंशलोचन पाँच तोले, इलायचीके बीज ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, वंगभस्म ८ तोले, ताम्बेकी भस्म ८ तोले और मिश्री ३२ तोले—पहलेकी दवाओंको कूटपीस और छानकर चूर्ण बना लेना चाहिये । पीछे, वङ्गभस्म और ताम्रभस्म तथा मिश्री मिलानी चाहिये । इसका नाम "तालीस चूर्ण" है । यह चूर्ण रोचक और पाचक है । इससे श्वास, खाँसी, जीर्णज्वर, वमन, अतिसार, शोष, अफारा, तिल्ली, संग्रहणी और पीलिया ये सब नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

इस चूर्णकी मात्रा ज़ियादा-से-ज़ियादा एक माशेकी समझनी चाहिये । एक माशेमें प्रायः २ रत्ती वङ्गभस्म और ताम्बेकी भस्म आजाती हैं ; इसलिये ज़ियादा मात्रा न देनी चाहिये । बनाते समय यही ज़रूरी नहीं है कि, इतनी ही चीज़ें ली जायँ, कमकी ज़रूरत हो तो कम बनाना चाहिये । अगर आठवाँ भाग बनाना हो, तो सबकाही आठवाँ भाग कर लेना चाहिये । जैसेः—तालीसपत्र १॥ माशे, सोंठ ४॥ माशे, पोपल ६ माशे,

वंशलोचन ७॥ माशे, इलायची ६ रत्ती, दालचीनी ६ रत्ती, वंगभस्म १ तोले, ताम्रभस्म १ तोले और मिश्री ४ तोले।

(१४) गिलोयके रस (स्वरस)में पीपर और शहद डालकर पीनेसे जीर्णज्वर, कफ, तिल्ली, खाँसी और अरुचि ये आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) गिलोयका सत्त २ माशे पावभर गायके दूधमें पीनेसे प्रमेह नाश हो जाता है; घी और मिश्रीके साथ लेनेसे जीर्णज्वर जाता रहता है; शहद और पीपरके साथ अथवा गुड़ और कालेज़ीरेके साथ लेनेसे भी जीर्णज्वर नाश होता है; ज़ीरे और मिश्रीके साथ लेनेसे दाह नाश होता है। परीक्षित है।

(१६) पीपरके चूर्णमें दूना गुड़ मिलाकर देनेसे अरुचि, हृद्रोग, दमा, खाँसी, क्षय, अग्निमान्द्य, पीलिया, कृमिरोग, मिरगी और जीर्ण-ज्वर ये आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७) पीपलका चूर्ण शहदमें मिलाकर देनेसे मेद, कफ, श्वास, खाँसी हिचकी, जीर्णज्वर, पीलिया, उदररोग, तिल्ली और नवीनज्वर ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) गिलोयके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर और कफ नाश होता है। परीक्षित है।

(१९) पञ्चमूलके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर जाता है।

(२०) गिलोयके काढ़ेको शीतल करके, उसमें चौथाई भाग शहत डालकर पीनेसे जीर्णज्वर जाता है। परीक्षित है।

(२१) आमले, चीता, हरड़, पीपल और सेंधानमक—इन सबका चूर्ण करके सेवन करनेसे सब तरहके ज्वर नष्ट हो जाते हैं। यह नुसख़ा दस्तावर, रुचिकारक, कफनाशक और दीपन तथा

पाचन है। यह नुसखा जीर्णज्वर और विषमज्वर पर बहुत उत्तम है।

(२२) दाख, गिलोय, कचूर, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, लालचन्दन, सोंठ, कुटकी, पाढ़, चिरायता, धमासा, खस, धनिया, कमल, सुगन्धवाला, कटेरी, पोहकरमूल और नीमकी छाल—इन सब दवाओंको समान भाग लेकर काढ़ा बनाकर सेवन करनेसे जीर्णज्वर, अरुचि, श्वास, खाँसी और सूजन ये नाश हो जाते हैं। इसका नाम "द्राक्षादि काथ" है।

(२३) पीपल, मुलेठी, दाख, खिरेंटी, चन्दन और सारिवा—इनके काढ़ेमें दूध मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर नाश हो जाता है।

(२४) सफेद जैतीकी जड़को चोटीमें बाँधनेसे जीर्णज्वर उस तरह नाश होता है; जिसतरह दुर्जन अपने आत्माको नष्ट करता है।

(२५) कुटकी, पित्तपापड़ा, चिरायता, नागरमोथा और गिलोय—इनका काढ़ा नित्य पीनेसे असाध्य जीर्णज्वरी भी आराम हो जाता है।

(२६) ज़ीरेका चूर्ण पुराने गुड़में मिलाकर देनेसे जीर्णज्वरमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(२७) जीर्णज्वरमें—दूधमें ५।७ पीपल डालकर और औटाकर लगातार पीनेसे जीर्णज्वर नाश हो जाता है। जीर्णज्वरमें पीपल डालकर औटाया हुआ दूध पीना अमृत है।

(२८) तुलसीका रस, कालीमिर्च और शहद—इन तीनोंको मिलाकर पीनेसे—जीर्णज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२९) दाख, गिलोय और सोंठ—इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण डाल कर पीनेसे जीर्णज्वर, श्वास, शूल और प्यास तथा अग्निकी मन्दता—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(३०) कटेरी, गिलोय और सोंठ—इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण डालकर पीनेसे जीर्ण ज्वर, अरुचि, खाँसी, शूल, श्वास, मन्दाग्नि, अर्दित और पीनस रोग नष्ट होते हैं। अगर उर्ध्वगत रोगोंको नष्ट करना हो, तो इसे सन्ध्या समय पीना चाहिये।

नोट—यह नुसखा परीक्षित और उत्तम है। यह काढ़ा बहुधा कंठके ऊपरके रोगोंको हरता है। इसलिये शामके समयही पिलाना ठीक है। अगर रातको ज्वर आता हो, तो काढ़ा शामको न पिलाकर, सवेरे पिलाना चाहिये। अगर ज्वरमें पित्तका जोर हो, तो पीपलका चूर्ण मत मिलाना; उसके बदलेमें शहत मिलाना।

(३१) अनन्तमूल, नागरमोथा, सुगन्धवाला, सोंठ और कुटकी,—इनका काढ़ा बनाकर ज़रा गरम-गरम पीनेसे सब तरहके ज्वर नाश हो जाते हैं तथा अग्नि दीपन होती है।

(३२) कचूर, पित्तपापड़ा, सोंठ, देवदारु, रास्ना, नागरमोथा, कुटकी, कटेरी और चिरायता इनके काढ़ेमें पीपल और शहद डाल कर पीनेसे जीर्णज्वर और विषमज्वर आराम हो जाते हैं।

(३३) एक भाग भुने हुए ज़ीरेका चूर्ण और दो भाग पुराना गुड़—इनको बलानुसार सेवन करनेसे विषमज्वर, मन्दाग्नि और वात रोग ये नाश हो जाते हैं। पुरानेज्वरमें परीक्षित है।

(३४) पुनर्नवेके तेलकी मालिशसे कामला, पीलिया, हलीमक, श्वास, तिल्ली, जीर्णज्वर और मलरोग आदि आराम होते हैं। यह तेल परीक्षित है। बनानेकी तरकीब—पहला काम यह है कि, पुनर्नवे की ५ सेर जड़ लाकर, उसे २५ सेर साढ़े नौ छटाँक जलमें औटाओ। चौथाई जल रहनेपर उतारकर रख लो। दूसरा काम यह है कि, सोंठ, मिर्च, पीपर, त्रिफला, काकड़ासिंगी, धनिया, कायफल, कचूर, देवदारु, प्रियंगू, रेणुका, कूट, विषखपरा, अजवायन, कालाज़ीरा, इलायची, दालचीनी, पद्माख, तमालपत्र और नागकेशर—इन २० दवाओंको

एक-एक तोले लाकर पानीमें पीसकर लुगदी करलो। तीसरा काम यह है कि, कलईदार कड़ाहीमें लुगदी रखकर, तेल एक सेर डाल दो और काढ़ेको जो कि बना हुआ तैयार रखा है मिला दो। पीछे चूल्हेपर चढ़ाकर मन्दी-मन्दी आग से तेल पका लो। जल छीज जानेपर, तेलको उतार कर नीचे रख लो और शीतल हो जाने पर नितारकर बोतलमें भर लो।

(२५) कौरैयाकी जड़की छाल और गिलोय—इनके काढ़ेसे जीर्णज्वर आराम होता है।

(३६) ३ माशे चिरायता, २ तोले जलमें रातको भिगोदो। सवेरे उसे मल-छानकर, उसमें २ रत्ती कपूर और २ रत्ती शुद्ध शिला-जीत और ६ माशे शहत मिलाकर ७ दिन पीओ। इससे जीर्ण-ज्वरमें अवश्य लाभ होता है। यह नुसख़ा नहीं चूकता। इससे रोग नाश होकर ताक़त भी आती है। यह नुसख़ा आज़मूदा है।

(३७) छुहारा, दाख, सोंठ, मिश्री और घी—इनको दूधमें डालकर और औटाकर पीनेसे जीर्णज्वरमें लाभ होता है। बलाबल देखकर मात्रा देनी चाहिये।

स्वर्णमालती वसन्त।

(३८) सोनेके वरक १ माशे, अबीध मोती (बूका) २माशे, शुद्ध सिम-रख (हिंगलू) ३ माशे, साफ कालीमिर्च ४ माशे, शोधा हुआ सूरती खपरिया ८ माशे और चाँदीके वरक ८ माशे—इन सबको तैयार रखो। पहले सबको महीन पीस लो; पीछे पिसी हुई दवाओंको खरलमें डालकर, ऊपरसे इतना मक्खन डालो, जो दवाओंमें समाजाय। (प्रायः १ तोला मक्खन काफी होगा)। इसके बाद ३।४ घण्टे तक खरल करो।

जब मक्खन बराय नाम रहजाय, तब नीबूका रस डाल-डाल कर खरल करो। जब मक्खनकी चिकनाई बिल्कुल न रहे, तब खरल करना बन्द कर दो और एक-एक रत्ती की गोलियाँ बनालो। इसको "वसन्तमालती रस" या "स्वर्ण मालती वसन्त" कहते हैं। कम-से-कम इसकी मात्रा १ रत्ती की है। अगर रोगी बलवान हो, तो २ या ३ रत्ती भी दे सकते हो। इसके खानेसे ताकत आती है तथा विषम ज्वर और जीर्ण ज्वर निश्चयही आराम हो जाते हैं।

सेवन विधि—२ माशे गिलोयका सत्त, २ रत्ती छोटी पीपर तथा २ रत्ती छोटी इलायचीका चूर्ण और १ रत्ती वसन्त-मालती—इन सबको मिलाकर ४ माशे शहतमें चटानेसे जीर्ण ज्वर निश्चयही आराम हो जाता है। सवेरे-शाम दोनों समय चटाना चाहिये। परीक्षित है।

दूसरी सेवन विधि—१ रत्ती वसन्तमालती, २ पीपरका चूर्ण और ३ माशे शहदको मिलाकर चटानेसे भी लाभ होता है।

नोट—खपरियाको गोमूत्रमें दोलायंत्रसे शोध लेना चाहिये। सिंगरफ मकसूदाबादी शोधकर काममें लाना चाहिये। खपरिया सूरती लेना चाहिये।

सितोपलादिचूर्ण।

(३१) मिश्री १६ तोले, वन्सलोचन ८ तोले, पीपल ४ तोले, छोटी इलायचीके दाने २ तोले और तज १ तोले—इन सबको कूट-पीस और छानकर १ शीशीमें रख लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे श्वास, खाँसी, हाथपाँवोंकी जलन, मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, जीभ का सूखना, पसलीका दर्द, अरुचि, पित्तविकार आदि रोग अवश्य आराम होते हैं। जीर्णज्वर और उसके साथ मन्दाग्नि खाँसी और दाह पर यह चूर्ण अनेक बार परीक्षा किया हुआ है।

नोट—बंसलोचन वह लेना जो भीतरसे नीला-नीला हो। पीपरोंको २४ घण्टों तक गायके दूधमें भिगो रखना ; पीछे दूधसे निकालकर छायामें सुखा लेना। सूखने पर सब दवाओंके साथ कूटकर चूर्ण बना लेना।

सेवन-विधि—इस चूर्णकी मात्रा जवानके लिये ३ माशेकी है। सवेरे शाम एक-एक मात्रा चूर्ण शहदमें मिलाकर चटाना और ऊपरसे आधा पाव धारोष्ण दूध पिलाना। इस तरह करनेसे धीरे-धीरे जीर्णज्वर अवश्य आराम हो जायगा। अगर रोगीको पतले दस्त लगते हों, तो इस चूर्णको शर्बत अनारके साथ चटाना और ऊपरसे दूध मत पिलाना। साथही "लाक्षादि" तेलकी मालिश कराना। अगर खाँसी हो, तो "स्वास्थ्यरक्षा"के पृष्ठ ३३१में लिखी "कासमर्दन वटी" चुसाना। अगर ये तीनों काम लगातार कुछ दिनों तक पथ्यके साथ कीजियेगा, तो जीर्णज्वर या तपेदिक रोगी अवश्य आराम हो जायगा। अगर रोगी को पतले दस्त लगते हों, तो वृद्ध या लघु "गङ्गाधर चूर्ण" बीच-बीच में देते रहना ; दस्तोंके बन्द न करने से रोगी मर जायगा। अगर कब्ज रहता हो, तो हलकी सी दस्ताकर दवा दे-दे कर बीच-बीच में दस्त करा देना अथवा एनीमा* से संचित मल निकाल देना। यह जीर्णज्वर की परीक्षित चिकित्सा है।

---

* एनीमा—एक तरह की विलायती पिचकारी होती है। इस के द्वारा गुदा से मल निकाला जाता है।

दुर्जल जनित ज्वरकी चिकित्सा।

(१) छोटी हरड़, नीमके पत्ते, सोंठ, सेंधानोन और चीता—इनका चूर्ण बनाकर, चार चार या छे-छै माशे चूर्ण, सवेरे-शाम दोनों समय, रोज़ खानेसे ख़राब जलके कारण से हुआ ज्वर नाश हो जाता है।

नोट—कोई कोई सोंठके स्थानमें पीपल लेते हैं। परीक्षित है।

(२) सोंठके ४ तोले काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे अरुचि, मन्दाग्नि, पीनस, श्वास, बवासीर, पेटके रोग और जलसे होनेवाले सब विकार नाश हो जाते हैं। शरीरमें कान्ति होती है तथा चित्त और आँखोंको सुख होता है। परीक्षित है।

(३) शुद्ध वत्सनाभ विष २ भाग, कौड़ी की भस्म ५ भाग, कालीमिर्च ५ भाग और सोंठ ५ भाग—इन सबको एकत्र पीसकर और अदरखके रसमें खरल करके मूँगके बराबर गोलियाँ बनालो। सवेरे-शाम एक-एक गोली जलके साथ खानेसे आमज्वर, दूषित जलसे-हुआ ज्वर, अजीर्ण, अफारा, मलबन्ध, शूल, श्वास, और खाँसी ये सब आराम होते हैं। इन रोगोंमें यह "दुर्जलजेता रस" अवश्य देना चाहिये।

(४) पटोलपत्र, नागरमोथा, गिलोय, अड़ूसा, सोंठ, धनिया और चिरायता,—इनको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर, शीतल होनेपर, शहद मिलाकर, पीनेसे दुष्ट जलसे उत्पन्न हुए सब रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५) चिरायता, निशोथ, सुगन्धवाला, पीपल, वायविड़ङ्ग, सोंठ और कुटकी—इनको कूट पीसकर चूर्ण बनालो। रोज़ शहद मिला कर, इस चूर्णके चाटनेसे ख़राब जलसे उत्पन्न हुआ दुस्तर ज्वर बहुत जल्दी आराम हो जाता है। इन दवाओं को बराबर-बराबर लेकर कूट पीसकर छान लो। इसमेंसे दो-दो माशे चूर्ण, दिनमें ४ दफा शहतके साथ चाटो। इससे दूषित जलजनित ज्वर निश्चयही आराम होगा। परीक्षित है।

(६) सोंठ, ज़ीरा और हरड़,—इन तीनोंका कल्क, भोजन करनेसे पहले, रोज़ सेवन करनेसे अनेक देशोंका जल पीनेसे पैदा हुआ ज्वर नाश हो जाता है। इन तीनोंको दो दो माशे लेकर, सिल पर जलसे पीसलो। इस लुगदीको भोजनसे पहले खाकर ज़रासा जल पी लिया करो। इसको तन्दुरुस्तीकी हालतमें रोज़ परदेशमें खानेसे कोई रोग नहीं हो सकता। परीक्षित है।

(७) अदरख और जवाखारका कल्क बनाकर, ज़रा गरम करके, जल के साथ पीनेसे, अनेक देशोंके जल पीनेसे हुए रोग शान्त हो जाते हैं। अथवा २ माशे सोंठ और १ माशे जवाखार को गरम जलके साथ सवेरे और इसी तरह शामको पीनेसे भी लाभ होता है। अगर यह नुसखा तन्दुरुस्तीकी हालतमें रोज़ सवेरे शाम सफरमें सेवन किया जाय, तो रोग ही न हो। परीक्षित है।

(८) हल्दी और जवाखारका चूर्ण—गरम जलके साथ सेवन करनेसे दुर्जल जलसे हुआ ज्वर आराम हो जाता है।

दूषित वायु जनित ज्वर की चिकित्सा।

(१) पित्तपापड़ा, ब्राह्मी और हंसराज—इन तीनोंके काढ़ेसे दूषित हवासे हुआ ज्वर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

शोथ ज्वरकी चिकित्सा।
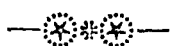
(१) दशमूलकी दसों दवाओंको २॥ तोले लेकर काढ़ा बनाओ। चौथाई पानी रहनेपर मल छान लो और ज़रासा शहद मिलाकर रोज़ सवेरे पिलाओ। इस नुसख़ेसे सूजन सहित ज्वर नाश हो जाता है। शोथज्वरके सिवा, इस काढ़ेसे अनेक तरहके वातरोग, प्रसूत रोग और सब तरहके सन्निपातज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

अगर रोगीको खाँसी हो, तो काढ़ेमें ३ रत्ती पीपलका चूर्ण डालकर देना चाहिये। अगर श्वास हो, तो १ माशे बहेड़ेका चूर्ण और ६ माशे शहद मिलाकर काढ़ा पिलाना चाहिये। अगर सूजनपर लेप लगानेकी ज़रूरत हो, तो पुनर्नवा और मकोय को एकत्र पीसकर और गरम करके सूजनके स्थानों पर लेप करना चाहिये। काढ़ा पिलाने और लेप करनेसे सूजन जल्दी नाश होगी। अगर पानीके बजाय मकोयका अर्क़ पिलाया जाय तो उत्तम हो।

शोथ रोगमें औटाकर या लोहा बुझाकर जल देना चाहिये। सूजनके रोगमें बहुत जल पीना हानिकारक है। नमक भी न देना चाहिये।

(२) दशमूल और सोंठके काढ़ेके पीनेसे भी ज्वर, सूजन, अतिसार,

संग्रहणी, अरुचि, कंठरोग और हृदय रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

अजीर्ण ज्वरकी चिकित्सा।

(१) पित्तपापड़ा और कटेहलीके काढ़ेसे अजीर्ण ज्वर नाश होता है।

(२) अजमोद, हरड़, कचूर और संचल नमक—इनका चूर्ण खानेसे अजीर्ण ज्वर नाश होता है।

(३) नागरमोथा और सोंठके काढ़ेसे अजीर्ण ज्वर नाश होता है।

(४) आमला, चीता, छोटी हरड़, पीपल और सेंधानोन—इनका चूर्ण गरम जलके साथ सेवन करनेसे अजीर्ण ज्वर आराम हो जाता है। अन्यान्य ज्वरोंमें भी यह चूर्ण लाभदायक सिद्ध हुआ है।

(५) गिलोय, सोंठ, नागरमोथा, पीपल और चिरायता—इनका काढ़ा अजीर्ण ज्वरको नाश करता है।

जाकर फिर आनेवाले ज्वरों की चिकित्सा।

(१) कुटकी, खस और नागरमोथा—इनका काढ़ा पिलानेसे जाकर आया हुआ ज्वर नाश हो जाता है।

नोट—रोगीमें ताकृत हो, तो २।३ लंघन करा देना अच्छा है; कमजोरको लंघन न कराने चाहियें।

(२) नागरमोथा, पीपल, कुटकी, अहलताशका गूदा और छोटी हरड़—इनके काढ़ेसे भी जाकर फिर आया हुआ ज्वर नाश हो जाता है।

(३) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, गिलोय और कुटकी,—इन चारोंके काढ़े से भी जाकर आया हुआ ज्वर नाश हो जाता है।

मोतीज्वरे का वर्णन।

वैद्यकमें मौक्तिकज्वर या मोतीज्वरेका कहीं ज़िक्र नहीं पाया जाता। इसके वहुतसे लक्षण "मसूरिकासे" मिलते हैं। हमारी समझमें तो यह मसूरिका का ही भेद है। लक्षणोंसे तो यही जान पड़ता है कि, खूनमें गरमी पहुँचनेसे यह रोग होता है। वहुत लोग आजकल इसे रक्तगत पित्तज्वर भी मानते हैं। केवल "योग-चिन्तामणि"में जो "मधूरक ज्वर"के लक्षण लिखे हैं, वे मोती-ज्वरेके लक्षणोंसे वेशक मिलते हैं।

ज्वरो दाहो भ्रमो मोहो अतिसारो वमिःतृषा।
अनिद्रा च मुखं रक्तं तालुजिह्वाच शुष्यति॥
ग्रीवामध्येच दृश्यन्त स्फोटका सर्षपोपमा।
एतच्चिह्नं भवेद्यस्य समधूरक उच्यते॥

ज्वर, दाह, भौंर, मोह, अतिसार, वमन, प्यास, निद्रानाश,—ये हों तथा चेहरा लाल हो, तालू और जीभ सूखते हों, गर्दनमें सरसोंके दाने जैसी फुन्सियाँ हों,—उसे मधूरक या मधूरा ज्वर कहते हैं। क़रीब-क़रीब यही लक्षण "मन्थर ज्वर"के हैं।

डाक्टरी मत से
मोतीज्वरा या पानीज्वरा के लक्षण ।

—※※※—

सामान्य लक्षण—इसमें ज्वर बड़े ज़ोरसे चढ़ता है और वह उतरता नहीं। गरमीका बड़ा ज़ोर रहता है, प्यास बहुत लगती है, मुँह आ जाता है, छाती, गले और सारे शरीर पर महीन-महीन बहुत ही छोटे मोतियोंके समान दानेसे दीखते हैं। पहले २। रोज़ बुखार चढ़ा रहता है; पीछे आई ग्लाससे देखनेपर गलेमें बाहरकी ओर सफेद मोतीसे चमकते हैं। यह दाने बहुत छोटे होते हैं, इसलिये किसी-किसी को बिना आई ग्लास (Eye-glass)के नहीं दीखते। गलेपर दीखनेके बाद छातीपर, इसके बाद जाँघों और पैरोंपर दाने दीखते हैं। अगर छाती पर दाने नहीं होते हैं या बग़लाऊ होते हैं, तो रोगी को कष्ट कम होता है। अगर छाती पर बीचमें होते हैं, तो प्यास और दाहका ज़ोर रहता है।

मोती ज्वरे के भेद ।

—※—

डाक्टरीमें इसके चार भेद माने हैं :—
(१) समपकसल (२) इनजाइनोजा (३) मैलिगना (४) लेटिन्ट ।

समपकसलके लक्षण ।

इसमें बुख़ार रहता है, मुँह आजाता है और हलकी सूजन रहती है। यह सुखसाध्य है।

इनजाइनोजाके लक्षण ।

इसमें ज्वर, गलेका सूजना, कव्वा धसकना, नाक और कानोंसे पीव बहना—ये लक्षण होते हैं। यह ख़राब है।

मैलिगनाके लक्षण ।

इसमें ज्वर रहता है, मुख और गलेमें घाव हो जाते हैं। इसका नतीजा बुरा है।

लेटिन्टके लक्षण।

इसमें ज्वर रहता है, नाक कानमें घाव हो जाते हैं, हाथ पैर फूल जाते हैं और सन्धियोंमें पीड़ा होती है। यह भी बुरा है।

उत्पत्तिका कारण।

यह भी उसी किस्मके ज़हरसे पैदा होता है, जिस किस्मके ज़हर से चेचक या शीतला निकलती है। गरमीकी ज़ियादती तथा मल और खूनका जोश या उफान भी इसके हेतु हैं।

चिकित्सा-विधि।

डाक्टरी मतसे १ बोतल पानीमें अर्क सिलफोरस मिलाकर रोगी को कुल्ले कराने चाहियें।

मोतीज्वरनाशक नसखे।

योगचिन्तामणिमें ही लिखा है :—

(१) सहस्रवेधी पाषाण, कछुएका कपाल, बड़ी इलायची, तुलसीके पत्ते, नारियलकी नयी जटा और खसखसके दाने—इन सबको गोबर के रसमें पीसकर देनेसे मधूरक ज्वर शान्त होजाता है।

नोट—आजकल तो इस रोगके होते ही दवा बन्द कर दी जाती है। केवल लौंगें ११ से लेकर १०१ तक घोट-घोट कर और गरम करके पिलाई जाती हैं। सेर का आध पाव जल दिया जाता है। सत्ताईस-सत्ताईस दिन तक अन्न दिखाया भी नहीं जाता। यह मारवाड़ियों के घरू इलाज की बात है, जिनकी टूटी नहीं होती है, वे उठ भी खड़े होते हैं। अब कुछ लोग डाक्टरों को बुलाने लगे हैं।

(२) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, मुलेठी और काली दाखोंका काढ़ा, शहद मिलाकर पीनेसे मोतीज्वरा आराम होता है। परीक्षित है।

(३) बड़के वृक्षकी कोंपल और बाजरेका काढ़ा पीनेसे मोतीज्वरा नाश होता है। परीक्षित है।

(४) पोदीनेके पत्ते, तुलसी और काली तुलसी—इनको विना जल मिलाये पीसकर, कपड़ेमें रस निकाल लेना चाहिये और उस रसको मिश्री मिलाकर पीना चाहिये । परीक्षित है ।

(५) अजमोदको पीसकर और शहदमें मिलाकर चाटनेसे मोतीज्वरा नाश होता है ।

(६) गिलोयके काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे मोतीज्वरा नाश होता है । परीक्षित है ।

(७) मुनक्का, दाख, वासा और हरड़के काढ़ेमें शहद और मिश्री डालकर पीनेसे रक्तपित्त ज्वर, दमा, खाँसी और मोतीज्वरा—ये सब आराम होते हैं । परीक्षित है ।

(८) गलेमें मोतियोंकी माला पहननेसे मोतीज्वरे में होनेवाली गलेकी और छातीकी फुन्सियोंमें बड़ा लाभ होता है ।

सत्रहवाँ अध्याय

गर्भिणीके ज्वर की चिकित्सा।

गर्भकी हालतमें औरतोंको ज्वर, सूजन, अतिसार, वमन, सिर घूमना, खून गिरना, गर्भकी पीड़ा प्रभृति अनेक प्रकारके रोग होते हैं। और सब रोगियोंकी तरह गर्भवतीकी चिकित्सा करनेसे लाभ नहीं होता, वलिक अनेक स्थलोंमें हानि की सम्भावना रहती है। गर्भवतीको कष्ट होनेसे गर्भगत शिशुको भी कष्ट हो सकता है। यहाँ हम गर्भवतीके ज्वर नाश करनेवाले चन्द उपाय लिखेंगे, जिससे कोई अज्ञानतावश गर्भिणीके ज्वरमें सब रोगियोंको दी जानेवाली दवाएँ न दे दे।

गर्भिणीके ज्वरको नाश करनेवाले नुसखे।

(१) "भावप्रकाश"में लिखा है,—मुलेठी, लालचन्दन, खसकी जड़, सारिवा (अनन्तमूल) और कमलके पत्ते—इन पाँचोंका काढ़ा वनाकर, शीतल होनेपर, शहत और खाँड़ मिलाकर, पिलानेसे गर्भिणीका ज्वर आराम होजाता है।

(२) लालचन्दन, सारिवा (अनन्तमूल); लोध और दाख—इन चारों के काढ़ेमें मिश्री मिलाकर देनेसे ज्वर निश्चयही शान्त होता है।

(३) अरण्डकी जड़, गिलोय, मँजीठ, लालचन्दन, देवदारू और पद्माख,—इन छहोंका काढ़ा गर्भवतीके ज्वरको नाश करता है।

नोट—ये तीनों नुसखे गर्भवतीके ज्वरमें परमोत्तम हैं। न० २ और ३ तो कितनीही बारके परीक्षित हैं। पहलेवाला भी परीक्षित ही है।

(४) बकरीके दूधके साथ सोंठ पीनेसे गर्भिणी स्त्रियोंका विषमज्वर आराम हो जाता है।

(५) धनिया, नागरमोथा, खस, सुगन्धवाला, श्योनाक, गिलोय, अतीस, बरियारा, पित्तपापड़ा, जवासा और लालचन्दन—इन ग्यारह दवाओंका काढ़ा गर्भिणी और प्रसूताके रुधिर-विकार, रक्तातिसार (खूनके दस्त), आमातिसार (आँव और मरोड़ीके दस्त) और ज्वर इन सबको आराम करता है। इस नुसखेकी उत्तमता के लिये लोलिम्बराज महोदय का नाम ही काफी है।

गर्भिणीके अतिसार आदि को नाशकरनेवाले नुसखे।

(६) सोंठ और बेलगिरीके काढ़ेमें जौका सत्तू मिलाकर पिलानेसे, वमन और अतिसार आराम हो जाते हैं। यह नुसखा गर्भिणीके दस्तोंपर उत्तम पाया गया है।

(७) सुगन्धवाला, अतीस, नागरमोथा, मोचरस और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा पीनेसे गर्भिणीका गिरता हुआ गर्भ, अतिसार, प्रदर और पेटका दर्द ये सब शान्त हो जाते हैं।

(८) पिठवन, बरियारा और अड़ूसेका काढ़ा रक्तपित्तको आराम करता है और साथ ही गर्भिणीके कामला (पीलियेका भेद) सूजन, श्वास और ज्वरको आराम करता है।

(९) आम और जामुनकी छालके काढ़ेमें खीलोंका सत्तू मिलाकर खानेसे गर्भिणीका ग्रहणी रोग तत्काल शान्त होता है।

(९) सुगन्धबाला, अरलू, लालचन्दन, खिरेंटी, धनिया, गिलोय, खस, नागरमोथा, जवासा, पित्तपापड़ा और अतीस—इनका काढ़ा पीनेसे गर्भिणी स्त्रियोंके अनेक रोग पीड़ा, अतिसार, रुधिरस्राव और गर्भस्रावकी पीड़ा भी दूर होती है।

नोट—मैथुन करने, राह चलने, मिहनत करने, ज्वर चढ़ने, उपवास करने, कूदने, गिरने, दौड़ने, विषम आसन पर बैठने और डरने प्रभृति कारणोंसे गर्भ-स्राव या गर्भपात होता है। जब गर्भस्राव या गर्भपात होनेवाला होता है, तब शूल या दर्द होता है और खून निकलता है। चौथे मास तक जो गर्भ गिरता है, उसे गर्भस्राव कहते हैं; इसके बाद गर्भपात कहते हैं। गर्भपात वगैरः का इलाज हम चौथे भागमें लिखेंगे।

गर्भिणीकी वमन, श्वास और खांसी नाशक नुसख़े।

(१०) चाँवलके धोवनमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे गर्भिणीकी वमन बन्द हो जाती हैं। धनियाका चूर्ण खाकर मिश्री मिला हुआ चाँवलोंका पानी पीनेसे निश्चय ही गर्भवतीकी क़य बन्द हो जाती है।

(११) भारङ्गी, सोंठ और पीपल—इनका चूर्ण गुड़के साथ खिलानेसे खाँसी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(१२) सोंठ का काढ़ा शीतल करके पिलानेसे गर्भिणीका वात रोग आराम हो जाता है।

(१३) शालिधानोंकी जड़, डाभकी जड़, काँसकी जड़ और सरपतेकी जड़—इन सबकी जड़ें बराबर-बराबर लेकर, पानीके साथ पीस-कर लुगदीसी बनालो। पीछे उस लुगदीको दूधमें डालकर दूध को औटाओ और उस दूध को गर्भवती को पिलाओ। उस दूध से रुका हुआ पेशाब खुल जाता है तथा प्यास, दाह और रक्त-पित्त भी आराम होता है। गर्भवतीका पेशाब रुकजाय, तो यह नुसख़ा देना चाहिये।

प्रसूत ज्वरका वर्णन।

धन्वन्तरिके मतसे बालक जननेके डेढ़ मास बाद या रजोदर्शन होनेके बाद, स्त्रीका "प्रसूता" नाम नहीं रहता। इसके पहले, बच्चा जननेके बाद, उसे "प्रसूता" कहते हैं।

ज्वर, खाँसी, प्यास, शरीर भारी होना, सूजन, शूल और अतिसार ये रोग विशेष करके प्रसूता को होते हैं। जब ये प्रसूताको होते हैं, तब इन्हें "प्रसूति रोग" कहते हैं। अत्यन्त वातकारक स्थान, अयोग्य आचरण विषम भोजन और अजीर्ण प्रभृति,—ये प्रसूति रोगोंके कारण हैं।

"बङ्गसेन"में लिखा है :—प्रसूति रोगमें ज्वर, अतिसार, सूजन, शूल, अफारा, बलनाश, तन्द्रा, अरुचि, मुँहसे जल गिरना प्रभृति कफ और वातसे पैदा होनेवाले अनेक रोग होते हैं। ये सब मांस और बलकी क्षीणतासे होते हैं। इन सबको "सूतिका रोग" कहते हैं। इनमेंसे कोई एक रोग मुख्य होता है; शेष सब उसके उपद्रव कहलाते हैं।

सूतिका रोग नाश करनेके लिये वातनाशक क्वाथ देने चाहियें और सभी काम वातनाशक करने चाहियें। वातनाशक स्वेद, उपानह, मालिश और अवगाहन (स्नान) इसमें हितकारी हैं।

प्रसूतिज्वर के लक्षण।

—※※—

बालक पैदा होनेके प्रायः दूसरे तीसरे दिन यह ज्वर चढ़ता है। इस ज्वरमें ताप या टेम्परेचर १०२ डिग्रीसे १०६ डिग्री तक हो जाता है। गर्भाशयमें कम या ज़ियादा पीड़ा होती है। पीछे वह वेदना सारे शरीरमें फैल जाती है। रोगिणी प्रलाप करती है, आँखें भीतर घुस जाती हैं, भ्रम होता है, पतले दस्त लगते हैं, कमज़ोरी आजाती है, कय होती हैं, जीभ मैली रहती है, छातियोंका दूध नष्ट हो जाता है। अच्छा इलाज न होनेसे रोगिणी शीत आकर मर जाती है। मरनेके समय जीभ रूखी और काली हो जाती है।

इस ज्वरमें गर्भाशयमें सूजन आ जाती है। वह सुकड़ जाता है या उसकी दीवार ढीली हो जाती है। अगर बालकके बाहर आते समय योनि बालकके सिरसे छिल जाती है, तो वहाँ पीप पैदा हो जाती है। अच्छा इलाज न होनेसे १५ दिन बाद जगह-जगह पीप पड़ जाती है, बार बार जाड़ा लगता है, जोड़ोंमें सूजन आकर उनमें भी पीप पैदा हो जाती है, यहाँतक कि आँखोंमें भी पीप पैदा हो जाती है। ऐसा होनेसे प्रसूता अन्धी हो जाती है।

असल बात यह है कि, बालक पैदा होते समय अगर बालकके सिरसे कोई रसौली छिल जाती है, या जेर-नाल भीतर रह जाता है अथवा मैला खून या और कोई पदार्थ, जिसका गर्भाशयसे निकलना ज़रूरी है, गर्भाशयमें रह जाता है, तो गर्भाशय में एक तरहका विष पैदा हो जाता है और समय पर इलाज न होने या ठीक इलाज न होनेसे वह ज़हर सारे शरीरमें फैलकर ज्वर आदि भयानक रोग करता है। इस रोगमें गर्भाशय, फेफड़े और जिगर प्रभृति कई स्थानों में सूजन पैदा हो जाती है।

डाक्टरीमें इस ज्वरको "प्योर पर्ल फीवर" कहते हैं। डाक्टर लोग इसका उपाय गन्दे या मैले खूनको सुखाना कहते हैं। वे लोग

प्रसूताको गरम कपड़े पहनाना-उढ़ाना, ज्वरनाशक दवा देना और शरीर पर गरम जलकी बोतल फेरकर पसीने निकालना अच्छा समझते हैं। वैद्य लोग भी गर्भाशयका मल सुखानेके लिये "दशमूलका काढ़ा" देते हैं और रोगिणीको गरम रखनेकी सलाह देते हैं। इसीसे भारतमें ज़च्चा-घरके द्वारों पर और शीत कालमें भीतर भी आगकी अङ्गीठियाँ रखते हैं और हवाकी राहें बन्द करा देते हैं। इसमें हिन्दुस्तानी बड़ी भूल भी करते हैं। हवाको इतना रोक देते हैं कि, प्रसूताके घरमें बदबू मारने लगती है और उसका साँस घुटने लगता है। कभी-कभी इस बेहूदगीकी वजहसे भी प्रसूतायें बेमौत मर जाती हैं।

प्रसूतज्वर नाशक नुसखे।

(१) दशमूलके गरमागर्म काढ़ेमें घी मिलाकर पिलानेसे ज्वर प्रभृति सूतिका रोग नाश हो जाते हैं।

(२) दशमूल की दसों दवाओंको दूधमें पकाकर और मिश्री मिला कर पिलानेसे प्रसूताके सब रोग नाश हो जाते हैं।

(३) दशमूलके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहद मिलाकर पिलानेसे सूतिका ज्वर और सूजन तथा वातरोग नाश हो जाते हैं। अगर खाँसी भी हो, तो ३ रत्ती पीपलोंका चूर्ण मिला देना चाहिये। अगर श्वास हो, तो १ माशे बहेड़ेका चूर्ण और ६ माशे शहद मिलाकर काढ़ा पिलाना चाहिये।

(४) देवदारु, बच, कूट, पीपल, सोंठ, चिरायता, कायफल, कुटकी, धनिया, हरड़, गजपीपल, कटेरी, गोखरू, जवासा, कटाई, अतीस, गिलोय, काकड़ासिंगी और कालाज़ीरा—इन १९ दवाओं को बराबर-बराबर डेढ़ डेढ़ माशे लेकर, काढ़ा बनाओ; जब

आठवाँ भाग पानी रहजाय, उतारकर छान लो। पीछे उसमें भुनी हींग और सेंधानोन मिलाकर प्रसूताको पिलाओ। इस काढ़ेसे ज्वर, खाँसी, शूल—दर्द, बेहोशी, कँपकँपी, सिरदर्द आनतान बकना, प्यास, दाह—जलन, तन्द्रा, पतले दस्त, कय वगैरः वात और कफसे हुए प्रसूताके सब रोग नाश हो जाते हैं। यह "दार्वादि" क्काथ प्रसूताके लिये परीक्षित दवा है।

(५) गिलोय, सोंठ, पियाबाँसा, गन्धप्रसारिणी, पंचमूल की पाँचों दवाएँ, नागरमोथा और सुगन्धवाला—इन ११ दवाओंका काढ़ा भी प्रसूताके ज्वर आदि रोगोंको अवश्य नाश करता है।

(६) पियाबाँसा, कुलथी, पोहकरमूल, कटेरी, देवदारू और बेंत—इनके काढ़ेमें भुनी हींग और सेंधानोन डालकर पीनेसे सूतिका का शूल और ज्वर नाश हो जाता है।

(७) पियाबाँसा, नागरमोथा, गिलोय, गन्धप्रसारिणी, सोंठ और सुगन्धवाला—इनके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहत डालकर पीनेसे प्रसूताका ज्वर तत्काल नाश होता है।

(८) तपाया हुआ लोहा मूँगके यूपमें बुझाकर, वही पिलानेसे सूतिका रोग नाश हो जाता है।

(९) गिलोय, सोंठ, सहचर, आककी जड़, बृहत्पंचमूल और नागरमोथा—इन दसोंके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहद मिलाकर पीनेसे सूतिका रोगकी शान्ति होती है।

पसीना निकालनेकी विधि।

नीमकी अन्तरछाल लाकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। पीछे उन्हें तीन हाँड़ियोंमें डालकर, ऊपरसे पानी भरकर, उन्हें अलग अलग तीन चूल्होंपर चढ़ा दो। ऊपरसे ढकना भी लगा दो। जब पानी खूब खौल जाय, पहिले एक घड़ेको चूल्हेसे उतार लो।

प्रसूताको एक खरहरी (बिना बिस्तरकी) खाटपर लिटा दो। उस आगसे उतारे हुए घड़ेको ढकना खोलकर प्रसूताके सिरके नीचे रख दो, ताकि भाफ सिर वगैर: को लगे और पसीना निकले। जब उस घड़ेकी भाफ कम हो जाय, तब उसे कमरके नीचे सरका दो और दूसरा घड़ा चूल्हेसे उतारकर, ढकना उतारकर, फिर प्रसूताके सिरके नीचे रख दो। जब इस दूसरे घड़ेकी भी भाफ कम हो जाय, तब इसे कमरके नीचे सरका दो और कमरके नीचेके घड़ेको पैरोंके नीचे सरका दो और तीसरे घड़ेको चूल्हेसे उतारकर सिरके नीचे रख दो। जब इसकी भी भाफ कम हो जाय, तब इसे कमरके नीचे सरका दो और कमरके नीचेवाले को पैरोंके नीचे सरका दो। शेषमें आखिरी घड़ेको सरकाते हुए पैरों तक ले जाओ।

इस तरह ३ दिन तक करनेसे प्रसूताके शरीरका सारा रोग पसीनों द्वारा निकलकर नाश हो जाता है, पर यह काम ऐसी जगहमें करना चाहिये, जहाँ हवा न आती हो। उस समय हवा लगना हानिकर है। इस बफारेका काम हो जानेपर, पसीने पोंछ डालने चाहियें। पसीनोंके सूख जानेपर, मन्दी-मन्दी पंखेकी हवा लगे तो हर्ज नहीं। यह परीक्षित उपाय है। ज़रूरतके समय काम लेना चाहिये।

पथ्यापथ्य ।

—*—

कम-से-कम एक मास तक, ख़राब खून निकल चुकने पर, प्रसूता को चिकना, अग्निदीपक, वातकफनाशक, हितकारी और हलका भोजन करना चाहिये। जैसे ; पुराने चाँवल का भात, परवल, कच्चा केला, मसूर, बैंगन और अनार प्रभृति ; नित्य पसीना लेना चाहिये ; तेलकी मालिश करानी चाहिये ; दश दिन तक वातकफनाशक दवाओंके साथ औटाया दूध पीना चाहिये ; दस दिन माँसरसके साथ भात खाना चाहिये और सिरसकी लकड़ी

से शुरु करनी चाहिये। यह तो मामूली हालतके पथ्यापथ्य हैं। ज्वरकी हालतमें या अन्यरोगकी हालतमें जैसा रोग हो वैसा ही पथ्य देना चाहिये और अग्नि, मिहनत, शीतल आहार और मैथुन प्रभृति से परहेज़ करना चाहिये।

नोट—"पंचजीरक पाक" और "सौभाग्यशुंठीपाक" प्रसूताओंके लिये अमृत हैं। उन्हें हम तीसरे भागमें लिखेंगे।

दूधज्वर के लक्षण।

अक्सर नाज़ुक-बदन औरतोंको, बालक जननेके कुछ दिन बाद, सरदी लग जाने, अपथ्य आहार विहार करने, चूचियोंमें दूध रुक जाने अथवा घरके लड़ाई झगड़ोंके कारण चिन्ता-फिक्र और रंज करने अथवा कच्ची अवस्थामें ही ज़च्चाके चलने फिरने और परिश्रम करने वगैरः कारणोंसे यह ज्वर होता है; पर असल कारण इसका दूध का छातियोंमें रुकना है। पहले-पहल बालक जनने वाली स्त्रीके स्तनोंमें दूध देरसे आता है। अगर विना दूध आये ही बच्चा स्तनोंसे लगा दिया जाता है, तो दूध आनेके सूराख़ बन्द हो जाते हैं। बहुतसी औरतोंके इतना दूध आया करता है कि, कभी-कभी अपने-आप धाराएँ छूट पड़ती हैं। बालक अगर इतना दूध नही पी सकता, तो स्तन भारी हो जाते हैं। स्तनोंके भारी होनेसे औरतोंको बड़ी तकलीफ होती है। अनेक औरतें तो अपने हाथोंसे बीठनी भींच-भींचकर दूध निकाल फेंकती हैं। जो ऐसा नहीं कर सकतीं, वे बड़ी पीड़ा भोगती हैं। बाज़-बाज स्त्रियोंके स्तन बहुत ही कठोर और बीठनियाँ मोटी होती हैं; कमज़ोर बालक उन बीठनियोंको मुखमें दबाकर दूध नही पी सकता। उस हालतमें दूध स्तनोंमें भर जाता है। दूध रुकनेके कारणोंसे अथवा और किसी वजहसे या सरदी-गरमीसे खूनका बहना बन्द हो जानेसे स्तनोंपर सूजन आ

जाती है; उससे स्त्रियोंको कँपकँपी लगकर जाड़ेका बुख़ार आ जाता है। इस ज्वरको बोलचालमें दूधका ज्वर और अङ्गरेज़ीमें मिल्क फीवर (milk fever) कहते हैं।

इस ज्वरवाली स्त्री उदास हो जाती है, हाथ पाँव सिर और पीठ में वेदना होती है, स्तनोंमें भी पीडा होती है, वे पके फोड़ेकी तरह दूखते हैं और तनकर लाल हो जाते हैं। जाड़ेके बुख़ारोंकी तरह इस ज्वरमें पहले जाड़ा लगता है,पीछे गरमी आती है, प्यासकी अधिकता होती है; शेषमें पसीने आकर ज्वर उतर जाता है। इसमें औरतें प्रलाप भी करती हैं। बदहज़मी और जी मिचलना आदि लक्षण भी देखे जाते हैं।

स्तनपीड़ानाशक नुसखे।
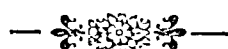
(१) अगर गरमी-सरदीसे खूनकी चाल बन्द हो जानेके कारण छातियों पर सूजन आगई हो, उनमें मीठा-मीठा दर्द होता हो; तो गीदड़ दाखके पत्ते दो तोले और बाकला दो तोले,—इनको खूब महीन पीसकर और सिकंजबीनमें मिलाकर, छातियोंपर लेप करनेसे पीड़ा शान्त होगी। जबतक वरम—सूजन न उतर जाय, तीन चार बार लेप करना चाहिये।

(२) अगर बालकके दूध पीते-पीते माथेकी चोट मारनेसे सूजन आगई हो; तो स्त्रीको चाहिये कि कंगीको ऊपरसे नीचे-धीरे धीरे स्तन पर फेरती जाय और ऊपरसे दूसरे औरत सुहाता-सुहाता गरम जल स्तनपर ढालती जाय। कंगी नीचेसे ऊपर न लानी चाहिये, बार-बार ऊपरसे नीचेको फेरनी चाहिये और ऊपरसे गरम जल पड़ना चाहिये। ३ दिनमें निश्चयही आराम हो जायगा।

(३) अगर खुश्की और गरमीके कारण स्तनोंमें दूध जम गया हो, तो

नूँन और साँठी चाँवल दोनोंको पीसकर कुछ गरम जलमें लगाना चाहिये।

(४) अगर कुचों पर सूजन हो ; तो मकोय, गुलबैरू, गोखरु, निरविसी, अफीम और गेरू—इन छहोंको एक-एक माशे लेकर, जलमें पीस लो और कुछ गरम करके सुहाता-सुहाता लेप कर दो।

(५) शीशमकी पत्तियोंको एक हाँड़ीमें डालकर, ऊपरसे गरम जल भरकर औटाओ। जब पौन या आधा पानी रह जाय, उतारकर उस पानीसे स्तनोंकी सूजनको धोओ।

(६) इन्द्रायणकी जड़का लेप करनेसे स्तन-रोग नष्ट हो जाता है।

(७) हल्दी और धतूरेके पत्ते—इनका लेप करनेसे स्तनकी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(८) तपाये हुए लोहेको जलमें बुझाकर, वह पानी पिलानेसे स्तनरोग नाश हो जाता है।

(९) बाँझ-ककोड़ेकी जड़का लेप करनेसे भी स्तन-पीड़ा शान्त हो जाती है।

(१०) मुलेठी, नीम, हल्दी, सम्हालू और धायके फूल—इन सबको महीन पीस-छानकर, स्तनके घावोंपर बुरकनेसे घाव भर-जाते हैं।

(११) प्रसूति अवस्थामें अक्सर पहले-पहल दूध आते समय दर्द होने लगता है तथा सूजन आ जाती है। उस समय ८ माशे नौसादरको आधी छटाँक जलमें घोलकर एक-दिल कर लेना चाहिये और उसे स्तनोंपर लगा देना चाहिये। इसके लेपसे स्तनोंमें पड़ी हुई गाँठ शीघ्र ही नर्म हो जाती है। गाँठके पिघलाने और सूजन नाश करनेमें यह लेप बड़ा ही उपकारी है। अगर पैरमें मुरड़ आजाय या बादीसे सूजन आजाय, तो

यही लेप करनेसे अवश्य फायदा होता है। स्तनोंकी पीड़ा और सूजन मिटानेमें यह उपाय सबसे उत्तम है।

नोट—अगर स्तन पक जायँ, तो नशतर लगा कर या किसी दवा से पीप वगेरः मवाद निकाल कर, घाव भरने के लिये मरहम प्रभृति से काम लेना चाहिये।

(१२) अगर दूध स्तनोंमें बहुतही आता हो और बालक उतना न पी सकता हो और इस वजहसे स्त्रीको कष्ट रहता हो; तो काहूके बीज, मसूर और ज़ीरा—इनको सिरकेमें पीसकर स्तनोंपर लेप करो, दूध कम हो जायगा।

नोट—(१) अगर दूध सूख गया हो, तो बच, मोथा, अतीस, देवदारू, सोंठ, शतावर और अनन्तमूल—इन सब का काढ़ा पिलाना चाहिये।

नोट—(२) 'भावप्रकाश''में लिखा है,—स्तनरोगोंमें पित्तनाशक शीतल पदार्थोंका प्रयोग करना चाहिये। जोंक लगवाकर खून निकलवा देना चाहिये; किन्तु स्तनोंपर सेंक वगेरः करके पसीना कभी न निकालना चाहिये। स्तनकी पीड़ा मिटतेही ज्वर नाश हो जाता है। अगर जरूरत हो, तो ज्वरनाशक दवा देनी चाहिये। अगर प्रसूतावस्था हो, तो वैसा ही नुसखा देना चाहिये और सूतिका रोगका ही पथ्यापथ्य प्रतिपालन करना चाहिये। अगर प्रसूतावस्था न हो, तो वैसा ज्वरनाशक नुसखा देना चाहिये। पर मुख्य उपाय कारणको मिटाना है, जिससे कि ज्वर हुआ हो।

चिकित्सा।

स्तन-पीड़ा के शान्त होने से ही दूध-ज्वर या स्तन-पीड़ा से हुआ ज्वर आराम हो जायगा। अगर ज़रूरत हो, तो ज्वरनाशक औषधि भी दी जा सकती है।

उन्नीसवाँ अध्याय

शीतला ज्वरका वर्णन ।

मसूरिका ।

वैद्यकके मतसे शीतला या चेचक मसूरिकाका भेद है। माधवाचार्यने माता, शीतला, ओरी आदिका मसूरिकाके नामसे अलगही निदान किया है। वाग्भट प्रभृति प्राचीन आचार्योंने इसका विस्फोटक रोगके अन्तर्गत समावेश किया है। विस्फोटकका कारण बाहरकी विषैली हवा है, इसलिये विस्फोटक नाम लिखा है। इसमें ज्वर होनेके कारण, अङ्गरेज़ डाकृरोंने मसूरिका (चेचक) की गणना संक्रामक ज्वरोंमें की है।

यूनानी हकीमोंने भी इसे ज्वरोंमें लिखा है और इसका नाम "हुम्माजदरी" लिखा है। हमारे यहाँ यह रोग ज्वरसे अलग लिखा है; तथापि हम इसे ज्वरके साथ ही लिखना मुनासिब समझते हैं; इसलिये इसके निदान, लक्षण और चिकित्सा यहीं लिखते हैं।

मसूरिकाके पूर्वरूप ।

माता निकालनेके पहले ज्वर होता है, खुजली चलती है, देहमें फूटनी होती है, भूख बन्द हो जाती है, चमड़ेमें सूजन होती है, शरीरका रंग बदल जाता है और आँखें लाल हो जाती हैं।

वातज मसूरिकाके लक्षण ।

वादीकी मसूरिका (माता) के फोड़े काले, लाल और सूखे तथा कड़े होते हैं और उनमें तीव्र वेदना होती है। ये जल्दी नहीं पकते। उनके कारणसे जोड़ों, हड्डियों और पोरुओंमें फोड़नेकी सी पीड़ा होती है, खाँसी आती है, शरीरमें कँपकंपी आती है, चित्त स्थिर नहीं रहता, बिना मिहनत थकान मालूम होती है, तालू, होठ और जीभमें खुश्की होती है एवं प्यास और अरुचि होती है।

पित्तज मसूरिकाके लक्षण ।

पित्तकी मसूरिकाका मुख लाल, पीला और सफेद होता है। उसमें दाह और पीड़ा बहुत होती है, परन्तु यह माता जल्दी पकती है। इस चेचकमें दस्त पतला होता है, शरीर टूटता है, दाह और प्यासका ज़ोर होता है। अरुचि नेत्रपाक और मुखपाक ये लक्षण भी होते हैं तथा ज्वर बहुत तेज़ होता है।

रक्तज मसूरिकाके लक्षण ।

इसके सब लक्षण पित्तज मसूरिकाके से होते हैं।

कफज मसूरिकाके लक्षण ।

इसमें मुँहसे कफ निकलता है, शरीर गीलासा और भारी रहता है, सिरमें दर्द होता है, वमन सी आती है ; अरुचि, निद्रा, तन्द्रा, आलस्य, ये लक्षण होते हैं। इसके फोड़े, सफेद, चिकने और बहुत मोटे होते हैं। उनमें खुजली बहुत चलती है, पीड़ा मन्दी-मन्दी होती है और वे देरमें पकते हैं।

त्रिदोष मसूरिकाके लक्षण।
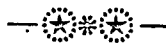
इसके फोड़े नीले, चपटे और बीचमेंसे दबे हुएसे होते हैं। उनमें दर्द बहुत होता है और वे बहुत दिनोंमें पकते हैं। उनसे बदबूदार चेप निकलता है। त्रिदोषके फोड़े बहुत होते हैं।

चर्मपिड़िका के लक्षण।

इसके फोड़ोंके होनेसे कंठ रुक जाता है, अरुचि तन्द्रा, प्रलाप और चैन न पड़ना ये लक्षण होते हैं। इनकी चिकित्सा नहीं हो सकती।

रोमान्तिका के लक्षण।

पित्तसे बालोंके छेदोंके समान बारीक और लाल मसूरिकायें होती हैं। खाँसी और अरुचि होती है। सबसे पहले ज्वर होता है। इनको "रोमान्तिका" या "कसुमी माता" कहते हैं।

धातुगत मसूरिकाके लक्षण।

१ रसगत मसूरिका पानीके बुलबुलेके समान होती हैं। इनके फूटने से पानीसा बहता है। यह चमड़ेमें होती हैं, क्योंकि इनमें स्वल्प दोष होता है। इसको लोकमें "दुलारी माता" कहते हैं।

२ रक्तगत मसूरिका ताम्बेके रंगकी होती हैं। ये जल्दी पकती हैं। इनके ऊपरकी चमड़ी पतली होती है। इनके फूटनेसे इनमेंसे खून निकलता है। यह अत्यन्त दूपित होनेसे साध्य नहीं होती।

३ मांसगत मसूरिका कड़ी और चिकनी होती हैं। ये बहुत

दिनोंमें पकती हैं। इनकी चमड़ी पतली होती है। शरीरमें दर्द और बेचैनी होती है, खाज चलती है, मूर्च्छा, दाह—जलन और प्यास ये लक्षण होते हैं।

४ मेदोगत मसूरिका गोल, नरम, ज़रा ऊँची-ऊँची, मोटी और काली होती हैं। इनके होनेपर भयङ्कर ज्वर, पीड़ा, इन्द्रियों और मनको मोह, चित्तकी चंचलता और सन्ताप ये लक्षण होते हैं। यह कृच्छ्रसाध्य हैं। इनसे कोई ही भाग्यवान् बचता है।

५।६ अस्थिमज्जागत मसूरिका बहुत छोटी, रूखी, चपटी और ज़रा ऊँची होती हैं। इनके होनेसे अत्यन्त चित्तभ्रम, वेदना और बेचैनी होती है। यह मर्म्मस्थानोंको भेदकर शीघ्र प्राण हरण करती हैं। सारी हड्डियोंमें भौंराके काटनेकीसी पीड़ा होती है।

७ शुक्रगत मसूरिका पके हुएके समान चिकनी और अलग-अलग होती हैं। इनमें अत्यन्त पीड़ा होती है। गोलापन, बेचैनी, मोह, दाह, उन्माद ये उपद्रव साथ होते हैं। यह असाध्य होती हैं। कोई नहीं बचता।

साध्य मसूरिका।

रसगत, रक्तगत, पित्तज और कफज और पित्तकफज मसूरिकायें साध्य होती हैं। ये बिना किसी दवाके आराम हो जाती हैं

कष्टसाध्य मसूरिका।

वातज, वातपित्तज, वातकफज मसूरिकाये' कष्टसाध्य होती हैं। इनकी चिकित्सा चतुराईसे करनी चाहिये।

असाध्य मसूरिका।

सन्निपातज मसूरिका असाध्य होती है। कोई मूँगेके समान लाल होती हैं, कोई जामुनके समान, कोई लोहजालके समान और

और अलसीके दानेके जैसी होती हैं। दोषोंके भेदसे ये अनेक रङ्गकी होती हैं।

सब मसूरिकाओंके अवस्था विशेषके लक्षण।

खाँसी, हिचकी, बेहोशी, तेज़ ज्वर, बकवाद, असन्तोष, मोह, प्यास, दाह, नेत्रोंका टेढ़ा-तिरछा और बाँकापन तथा फटेसे होजाना ये लक्षण होते हैं। मुँह, नाक और आँखोंसे खून गिरता है, कंठमें घुरघुर शब्द होता है, रोगी भयङ्कर श्वास लेता है। जो मसूरिका-रोगी केवल नाकसे श्वास लेता है, वह वायु और प्याससे तत्काल मर जाता है।

मसूरिका के अन्तमें कठिनाई।

मसूरिका—शीतलाके अन्तमें कोहनी, पहुँचे और कन्धोंमें सूजन होती है। इसका इलाज कठिनाईसे होता है।

मसूरिकाके कारण।
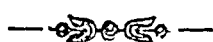
चरपरे, खट्टे, खारी और परस्पर विरुद्ध पदार्थोंके खाने, अधिक खाने, लोबिया, उड़द, तथा खट्टे सागोंके खाने, विषैले फूलोंके संसर्ग से दूषित हुई हवा और जलके योगसे, देशमें राहु तथा शनैश्चर आदि क्रूर ग्रहोंकी दृष्टि पड़नेसे वातादि दोष कुपित होकर, रुधिरके साथ मिलकर, मसूरके समान फुन्सियाँ उत्पन्न करते हैं, उनको "मसूरिका" कहते हैं।

मसूरिकाका भेद

शीतला।

"भावप्रकाश"में लिखा है,—जो मसूरिकामें ही शीतला देवीका

आवेश हो जाय, तो उसे "शीतला" कहते हैं। जिस प्रकार भौतिक विषम ज्वर होता है, उसी तरह इस शीतलामें ज्वर होता है।

शीतलाके सात भेद ।

बड़ी माता ।

—*—

अगर ज्वर आनेके बाद, शरीरमें बड़ी-बड़ी फुन्सियाँ पैदा हो जायँ, तो उसे बड़ी शीतला कहते हैं। वह शीतला पहले सप्ताहमें निकलती है, दूसरे सप्ताह (सातदिन) में भर जाती है और तीसरे सप्ताहमें सूख जाती है। इस तरह २१ दिनमें बड़ी शीतला शान्त हो जाती है।

एक जगह लिखा है :—

> अग्निदग्धानिभास्फोटाः सज्वरारक्त पित्तजाः ।
> क्वचित सर्व्वत्र वा देहे विस्फोटा इति ते स्मृताः ॥

रक्त और पित्तके दोषसे ज्वर होता है और एक स्थानमें अथवा सारी देहमें जो आगसे जले हुए फफोलेकी तरह बहुतसे फफोले हो जाते हैं, उसे "बड़ी माता" कहते हैं।

वाताधिक्यमें सिरमें दर्द, कालापन, ज्वर, प्यास और जोड़ोंमें वेदना होती है। पित्ताधिक्यमें ज्वर, दाह, शरीरमें पीड़ा और प्यास, ये लक्षण होते हैं। फफोले जल्दी ही पककर बहने लगते हैं और रंगमें पीले या लाल होते हैं। कफाधिक्यमें वमन, अरुचि और फफोलोंमें खुजली चलती है। फफोलोंका रंग पीला होता है। उनमें दर्द नहीं होता, पर वे बहुत दिनोंमें पकते हैं।

दूसरा भेद ।

कोद्रवा माता ।

—०—

वात और कफसे जो शीतला निकलती है और कोदोंके समान होती हैं, उसे "कोद्रवा" कहते हैं। अनजान मनुष्य इसको पकने

वाली कहते हैं, पर वास्तवमें यह पकती नहीं ; पर विना पके पकीसी मालूम होती है। यह शीतला, विशेष करके, जलके शूक नामक कीड़ेकी तरह अङ्गोंको वींधती है। यह सातसे लगाकर वारह दिन के भीतर, विना किसी दवा-दारूके, आपही शान्त हो जाती है।

नोट—अगर किसी वजहसे इस कोद्रवा शीतलामें दवा देनेकी ज़रूरत हो जाय, तो "खदिराष्टक" क्काथ देना चाहिये।

तीसरा भेद।

पाणिसहा माता।

जो शीतला गरमीके कारणसे राईके दानों-जैसी निकले, जिसमें खाज चले, जिसपर हाथ फेरना अच्छा मालूम हो, उसे "पाणि-सहा" कहते हैं। यह शीतला सात दिनमें अपने-आप सूख जाती है।

नोट—कदाचित यही पानीज्वरा हो। उसमें भी छोटी-छोटी अलाइयाँ होतीं और ज्वर होता है और इसमें भी ज्वर और अलाई सी होती हैं।

चौथा भेद।

सर्षपिका माता या खसरा।

—※—

जो शीतला सरसोंके दानोंके आकारकी हो और उसका रङ्ग भी पीली सरसों जैसा हो, उसे "सर्षपिका" कहते हैं। इस शीतलामें अभ्यङ्ग-तेलकी मालिश आदि न करनी चाहिये। साधारण लोग इसे "खसरा" कहते हैं।

पाँचवाँ भेद।

दुःखकोद्रवा माता।

—※—

जो शीतला गरमीकी वजहसे बालकोंके मुँहपर राईके समान निकलती है, उसे लोकमें "दुःखकोद्रवा" कहते हैं। वह भी अपने-आप सूख जाती है।

छठा भेद ।

हाम माता ।

पहले ज्वर आता है, पीछे उर्दकी तरह लाल और ऊँचे मंडल वाली शीतला निकलती है ; यानी लाल उभरे हुए चकत्तेसे हो जाते हैं और उनमें पीड़ा होती है। उसे विहार या मगध में "हाम" कहते हैं। इस शीतलाका ज्वर ३ दिन तक रहता है।

सातवाँ भेद ।

चमरगोटी माता ।

इसमें वहुतसी फुन्सियाँ एकमें मिली रहती हैं ; यानी छत्तासा हो जाता है और यह रंगमें काली होती हैं। इसे चमंजा या चमर-गोटी कहते हैं।

शीतलाकी साध्यासाध्यता ।
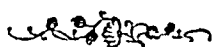
कितनी ही शीतलायें तो विना इलाजके सहजमें मिट जाती हैं। कितनी ही अत्यन्त कष्टसाध्य होती हैं, कितनी ही समय पर आराम होती हैं, कितनीही समय पर भी आराम नहीं होतीं और कितनी ही अच्छेसे अच्छे उपाय करनेपर भी आराम नहीं होतीं।

यूनानी मतसे माताके सम्बन्धमें दो चार बातें ।

माताकी बीमारी वालकोंको तो होती ही है, पर जवानोंको भी होती है। इस बीमारीमें शरीरपर छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकल आती हैं। इसमें बुख़ार होता है, खाँसी होती है तथा गला बैठ जाता है। अगर माताके दाने सब्ज रङ्गके और काले रङ्गके हों, तो

रोगीके बचनेकी उम्मीद न समझनी चाहिये। अगर दाने गोल हों, उनमें शीघ्र ही पानी भर जाय और वे फैलजायँ, तो आराम हो जानेकी सूरत समझनी चाहिये।

माता या चेचक कई तरहकी होती हैं। एक छोटी चेचक होती है, उसे "खसरा" कहते हैं। यूनानीमें उसे "हुसबाह" कहते हैं। इस रोगमें बारीक-बारीक दाने सारे शरीरमें निकलते हैं, बुखार रहता है, सिरमें दर्द और पीठमें वेदना होती है। अगर हरे काले या पीले रंगके दाने हों, तो रोगीके हकमें बुराई समझनी चाहिये। अगर इसमें बेहोशी और दस्तोंका फितूर हो, तो रोगीके बचनेकी कम उम्मीद रखनी चाहिये। हां, अगर गोल-गोल और लाल रंगके दाने निकलें तथा बेहोशी और दस्त न होते हों, तो कोई बुराई नहीं, रोगी आराम हो जायगा। मातामें दस्तोंका होना खराब समझा जाता है। अगर दाने बड़े बड़े और अच्छे हों, तो उसे "मोतिया" कहते हैं।

डाक्टरी से शीतलाका वर्णन।

म्येरला (खसरा)

इसमें भी जुकाम होकर ज्वर चढ़ता है। छोटे छोटे-दाने निकलते हैं, आँखें दुखती हैं, नाक बहती है, साँस लेनेमें तकलीफ होती है, प्यास बहुत लगती है, क़य होती हैं, और रोगी बहुत सुस्त हो जाता है। इसमें भीतरका गुब्बार कम निकलता है, इससे दाने कम निकलते हैं और गरमीका ज़ोर रहता है। इसकी उत्पत्तिका कारण एक प्रकारका विष है।

चिकन पाक्स।

(दूसरा खसरा)

इसमें भी पहले बुखार चढ़ता है और पीछे छोटी-छोटी मरोड़ी

जैसी फुन्सियाँ पीठपर निकलती हैं। ये चौथे पाँचवें दिन आपही मुरझा जाती हैं। इनकी उत्पत्तिका कारण भी वही ज़हर है।

स्मालपाक्स।

(मसूरिका—शीतला)

—※—

पहले बुख़ार चढ़ता है, पीछे सारे शरीरमें मसूर जैसी फुन्सियाँ निकलती हैं। कभी फुन्सियाँ छोटी-छोटी होती हैं और कभी बड़ी-बड़ी होती हैं। दूर-दूर पर और सफेद रङ्गकी फुन्सियाँ अच्छी होती हैं, लेकिन गहरी, चपटी, काली, लाल या ऊदे रङ्गकी फुन्सियाँ अच्छी नहीं होतीं।

इसकी पैदायश एक क़िस्मके ज़हरसे होती है, जो माद्देमें होता है। इसके सिवाय यह रोग छुतहा भी है। एकसे दूसरेके उड़कर लगता है। इसीलिये औरतें अपने बालकोंको चेचकवाले बालकोंसे अलग रखती हैं।

चिकित्सा।

—※—

डाकृरी मतानुसार इस रोगका उत्तम इलाज टीका लगवाना है। इसीसे आजकल अङ्गरेज़ सरकारने गाँव-गाँवमें वैक्सीनेटर (टीका लगानेवाले) मुक़र्रर कर दिये हैं। लोगोंको अपने बालकोंके ज़बर्दस्ती टीका लगवाना होता है। कहते हैं, टीका लगानेसे चेचक नहीं निकलती; अगर निकलती है, तो बहुत हल्की। पर आजकल अमेरिका आदि देशोंके डाकृर टीकेको हानिकारक बताते हैं। परमात्मा जाने कौनसी बात ठीक है। इतना तो हमने भी देखा है, कि टीका लगानेपर भी चेचक निकलती ही है।

मसूरिका और शीतलाकी चिकित्सामें याद रखनेयोग्य बातें।

—❀—

(१) कुष्ठ रोगमें जो लेप आदि चिकित्सा की जाती है, वही मसूरिकामें भी हित है।

(२) अगर मसूरिका पहले बाहर निकलकर, पीछे भीतर समा जाय; तो कचनारकी छालका काढ़ा बनाकर उसमें सोनामक्खी का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिये अथवा और किसी उपायसे उसे बाहर निकलना चाहिये।

(३) अगर आँखोंमें मसूरिकाकी पीड़ा हो, तो लिसोढ़ेकी छालको पीसकर, उसका लेप आँखों पर करना चाहिये अथवा और कोई लेप करना चाहिये अथवा दवाओंके काढ़ेसे आँखोंको धोना चाहिये।

(४) माताके रोगमें रूक्ष क्रिया या शीतल क्रियाका अधिक प्रयोग हानिकर है। अधिक रूखी क्रिया करनेसे माता अच्छी तरह नहीं निकलती और कष्ट बढ़ जाता है; इसी तरह अधिक शीतल चिकित्सासे भी खाँसी वगैर: रोग होते हैं, तो वे औरभी बढ़ जाते हैं। माता निकल आने पर गरम और शीतल चीज़ें देना यूनानी हिकमत से भी मना है।

(५) अगर माता पकती न हो, तो माताके उपयुक्त उपायोंसे माताको पकाना चाहिये। अगर दाह बहुत हो, तो उसका उपाय करना चाहिये। अगर पीव बहता हो, तो उस पर कोई दवा का सफूफ वगैर: लगाकर उसे सुखाना चाहिये। पकी माताके जल्दी सूखनेसे ज्वर भी जल्दी उतर जाता है।

(६) मातामें अगर कीड़े पड़ जायँ, तो आगे लिखी हुई धूप देनी चाहिये।

(७) रोगीके रहनेका कमरा साफ, लम्बा-चौड़ा और विस्तरे साफ-सुथरे रखने चाहियें। अच्छा हो, अगर रोज़ चादर बदलकर धोबीको दे दी जाया करे। रोगीको साफ और मोटा कपड़ा पहनाना चाहिये।

(८) रोगीको तेलकी मालिश, मछली, मांस, गरम पदार्थ, भारी पदार्थ और हवासे बचाना चाहिये; रोगीके कमरेमें भीड़भाड़ न रखनी चाहिये। रोगीका पिया जल या वर्तन या कपड़ा दूसरेको काममें न लाना चाहिये। रोगीसे भरसक दूर रहना चाहिये; कम-से-कम अन्य बच्चोंको रोगीके पास न आने देना चाहिये; क्योंकि यह रोग एकसे उड़कर दूसरेको लगता है।

(९) अगर रोगीकी सेवा-शुश्रूषा करनेवाला, इस रोगके हमलेसे बेखौफ रहना चाहे, तो हरड़के बीजको हाथमें बाँधले। पुरुष दाहिने हाथमें बाँधे और स्त्री बायें हाथमें बाँधे। इसके सिवाय आगे लिखे हुए उपायोंसे भी अपनी रक्षा करे।

(१०) भारतमें बहुधा चैतमें माताका कोप होता है। उस समय वैद्य को दूध पीनेवाले बच्चेकी माँको पहलेसेही खून साफ करनेवाली दवाएँ पिलानी चाहियें। जौंक लगवाकर खून निकलवाना चाहिये; चिकनाई, मांस और मिठाईके त्याग देनेकी सलाह देनी चाहिये।

(११) अगर चेचक निकलनेका सन्देह हो और बच्चा दूध पीनेवाला हो; तो ऐसा उपाय करना चाहिये कि, चेचक ज़ोर न करे; क्योंकि छोटे बालक तड़फड़ा जाते हैं। अगर ज़ोर कम करना हो; तो बालककी माँको चार तोले खोपरा रोज़ खिलाना चाहिये। अगर बालक दो सालका हो; तो दो तोले रोज़ खिलाना चाहिये

और अगर तीन सालका हो ; तो तीन तोले रोज़ खिलाना चाहिये। अगर चार सालका हो, तो चार तोले रोज़ खिलाना चाहिये। परमात्माकी दयासे चेचक बिलकुल ज़ोर न करेगी। बड़ा बालक हो, तो उसे भी कोई ऐसी दवा देनी चाहिये, कि जिससे नेहनसे उस पर चेचक का ज़ोर न हो। ये काम उस मौसममें करने चाहियें, जब कि चेचकका दौरदौरा हो।

(१२) चेचक निकल चुकने और सूख जानेके बाद—रोगीको ऐसी कोई दवा लगाने या मुँह धोनेकी देनी चाहिये, जिससे उसका रङ्ग निखर आवे और बेचारेकी खूबसूरती न मारी जाय। ऐसे-ऐसे उपाय बताना वैद्यका काम है। गृहस्थ बेचारे, जिन्होंने चिकित्साशास्त्र नहीं देखा, क्या जानें।

(१३) वैद्यको चाहिये कि, रोगीसे माताकी हालतमें शोच फिक्र या रञ्ज करने अथवा स्त्री-प्रसङ्ग करनेकी मनाही कर दे। बहुतसे मूर्ख इन बातोंको नहीं समझते।

(१४) मातावालेको सबसे अलग रखना चाहिये। उसके पास स्त्रियों तथा नीच मनुष्योंको न आने देना चाहिये। मकान शीतल रखना चाहिये। दर्द होनेसे मालिश या तैल-मर्दन हरगिज़ न करना चाहिये और पसीने भी न निकालने चाहियें।

(१५) अगर रोगीका मुँह आ जाय, छाले हो जायँ अथवा गलेमें घाव हो जायँ ; तो कुल्लोंकी दवासे कुल्ले कराकर उन्हें आराम करना चाहिये। अगर प्यास और अतिसार आदि उपद्रव हों, तो उन्हें भी शान्त करना चाहिये।

(१६) मातावालेके घरमें जगह-जगह नीमके ताजा पत्ते मँगाकर रख देने चाहियें। हर दरवाज़े पर नीमकी ताज़ा पत्तियों-की घनी वन्दनवार सी बाँध देनी चाहियें। रोगीके ऊपर नीमके पत्तोंका बङ्गला सा रोज़ छा रखना चाहिये। हर रोज़

नये पत्ते मँगाकर पुराने फेंक देने चाहियें। रोगी और रोगीके परिचारकको नीमकी टहनी हाथमें लेकर उसीसे मक्खियाँ भगानी चाहियें। नीमकी पत्तियोंकी हवासे मातामें बहुत कुछ शान्ति होगी।

(१३) जिस घरमें मातावाला हो, उस घरमें जूठे पदार्थ वगैरः न ले जाने चाहियें। शीतला में, ज्वर होने पर भी, शीतल जल देना चाहिये। गरम किया हुआ जल ज्वरोंमें हितकर है, पर शीतलाके ज्वरमें अहित यानी नुकसानमन्द है। शीतलावालेका कमरा एकान्त, शान्त और रमणीक होना चाहिये—शोर-गुल और बहुत आदमियोंकी भीड़भाड़का होना खराब है। रजस्वला स्त्री अथवा और अपवित्र मनुष्य जैसे कोढ़ी, उपदंश-रोगी अथवा खून-फिसादवालोंको रोगीके पास न जाने देना चाहिये।

(१८) हमारे यहाँ शीतलामें जो कुछ क्रियाएँ की जाती हैं, वे गरम ही की जाती हैं। निकलनेके समय और भरनेके समय गुड़ प्रभृति गरम पदार्थ दिये जाते हैं, क्योंकि शीतल पदार्थों से उसके ठिठरा जानेका खतरा रहता है; परन्तु "भावप्रकाश"में लिखा है।

शीतलासु क्रिया कार्या शीतला रक्षयासह।
वध्नीयात् निम्बपत्राणि परतो भवनान्तरे॥

शीतलाके रोगमें सम्पूर्ण शीतल क्रिया करनी चाहियें। मन्त्र वगैरः से भूतादिको दूर करके, रोगीकी रक्षा करनी चाहिये। चारों ओर नीमके पत्ते बाँधने चाहियें।

एक यूनानी हकीम महाशय लिखते हैं,—"हिन्दूस्थानमें जब बालकोंके चेचक निकलती है, तब लोग उनको गरम चीजें देते हैं। भोजनके लिये गुड़ और चने देते हैं। परमात्मा

देने उपायोंसे रक्षा करे। चेचकमें केवल खिचड़ी या मूँगकी दाल खिलानी चाहिये। मसूरकी दाल भी गुणकारी है।"

हमारी समझमें गरम और अधिक शीतल दोनोंही क्रियाएँ हानिकारक हैं। ऊपरी कामोंके शीतल होनेमें ज़रा भी हानि नहीं। जैसे घरको हर तरह शीतल रखना, माता की फुन्सियोंके भर जानेपर,—उनमें पानी भर जानेपर, लाल चन्दन या सफेद चन्दन पीस-पीसकर लगाना और नीमकी भर-मार रखना वगैरः वगैरः। बहुत लोग डरते हैं, पर हमने माताकी भरी हुई फुन्सियों पर चन्दनका लेप कराकर बड़ा फायदा उठाया है। बालककी तकलीफ एकदम मिट जाती है, शान्ति आ जाती है और फुन्सियाँ बहुत ही जल्दी बैठ जाती हैं; पर चन्दन भूलकर भी निकलती मातापर न लगाना चाहिये। जब वे भरकर मोतीसी हो जायँ, तभी लगाना चाहिये।

(१६) "भावप्रकाश"में लिखा है,—मातावालेको नमकीन और चरपरे पदार्थ न देने चाहिये'। अगर नमक दिये बिना न सरे, तो सेंधानोन देना चाहिये और वह भी कम। अगर पेटमें दर्द या अफारा हो अथवा वायुका कोप हो; तो जङ्गली जानवरोंका मांसरस—शोरवा ज़रासा सेंधानोन मिलाकर देनेकी सलाह वङ्गसेन भी देते हैं।

(१६) माताकी तीन अवस्थायें होती हैं—(१) निकलनेकी (२) भरनेकी (३) ढलनेकी। कभी माता तीन दिनमें निकल आती है, तीन दिनमें भर जाती है और तीन ही दिनमें ढल जाती है। कभी ये तीनों काम पाँच-पाँच या सात-सात दिनोंमें होते हैं; पर अक्सर २१ दिनसे ज़ियादा नहीं लगते। पहली और दूसरी अवस्था में घी तेल आदि कभी न देने चाहिये'।

(२०) शीतलाकी शान्तिके लिये शीतला-स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। "शीतला-स्तोत्र"में आठ श्लोक हैं। आजकल लोग पाठ तो प्रायः नहीं कराते, पर औरतोंने अपने गानोंमें स्तोत्र बना लिये हैं। वे माताके दिनोंमें रोगीके पास बैठकर गाया करती हैं। जप, होम, दान-पुण्य, गौ ब्राह्मण और महादेव पार्वती का पूजन करना चाहिये। विषनाशक कोई औषधि और हीरा पन्ना आदि रत्नोंमेंसे जो रत्न इसमें शान्तिकारक हो, रोगी को धारण करना चाहिये।

(२१) वंगसेनने लिखा है, मसूरिकामें यदि दुष्ट व्रण हो जायँ; तो जोंक लगवाकर ख़राब ख़ून निकलवा देना चाहिये। अगर सख़्त ज़रूरत हो, तो इस कामको शेषमें करना चाहिये।

अगर खून-फिसाद हो, तो शरद् और वसन्तकालमें अवश्य ख़ून निकलवा देना चाहिये। जौंक, सींगी, तूम्बी, फस्त और नश्तर इनसे ख़ून निकाला जाता है। जौंक हाथभरका ख़ून खींचती है, फस्त सारे शरीरका ख़ून निकालती है, सींगी दश अङ्गुल का और तूम्बी बारह अङ्गुलका ख़ून निकालती है।

फोड़ा, फुन्सी, गाँठ, किसी ख़ास स्थानकी सूजन, दाह, शरीरका कहीं से लाल हो जाना अथवा पके फोड़ेकी तरह हो जाना, वातरक्त, कोढ़, सिरदर्द, तिल्ली, उपदंश, रक्तपित्त और स्तनरोग वगैरः में खून निकलवानेसे बहुत जल्दी फायदा होता है। दुष्ट वात भी जब क़ाबूमें नहीं आता, ख़ून निकालकर आराम करते हैं। हिकमत में फस्द खोलनेकी चाल बहुत है। कमज़ोर, गर्भवती, प्रसूता, नपुंसक, बालक, बूढ़े, अति मैथुन करनेवाले और डरपोक प्रभृति मनुष्योंका खून फसद द्वारा न निकलवाना चाहिये। अगर सख़्त ज़रूरत हो, तो जौंक लगवाकर खून निकलवा देना चाहिये।

जौंक लगवानेमें खतरा नहीं रहता, पर ज़हरी जौंक न होनी चाहिये।

अगर फस्त वगैरःसे खून इतना बहने लगे, जो वन्द न हो, तो जौका आटा, गेहूँ का आटा, साँपकी काँचली, रेशमी कपड़ेकी राख, इनको पीसकर ज़ख़्म या फोड़ेके मुँहपर दवा देने और वाँध देनेसे खून वन्द हो जाता है। पीछे चन्दन वगैरः का शीतल लेप करना चाहिये। इन उपायोंसे खून वन्द हो जाता है। अगर इन उपायोंसे खून वन्द न हो, तो व्रणके मुखपर सुहागे आदि खारोंका लेप करना चाहिये अथवा वहाँ दाग देना चाहिये।

(२२) आजकल माता रोगमें चिकित्सा का नाम लेना ही बुरा समझा जाता है। मूर्ख लोग समझते हैं, कि अगर इसमें दवा कराई तो रोगी नहीं बचनेका, क्योंकि माता कुपित हो जायगी। यह उनकी भूल है। वेशक ऐसी कई माता होती हैं, जिनमें ज़रा भी दवाकी दरकार नहीं ; वे विना किसो दवाके अपने-आप शान्त हो जाती हैं ; पर कितनी ही अवस्थाओंमें बिना इलाजके रोगी विना मौत मर जाता है। मूर्खोंका शीतलाष्टकके इस मन्त्रपर विश्वास जमा हुआ है—

न मन्त्रो नौषधं किंचित पाप रोगस्य विद्यते।
त्तमेका शीतले धात्री नान्यां पश्यामि देवताम्॥

हे शीतले! इस पापरोग (मसूरिका-चेचक) की न कोई दवा है और न कोई मंत्र है, इससे वचानेवाली तूही एक है, इससे वचानेवाला और कोई देवता मेरी नज़रमें नहीं आता।

यह मूर्खोंका खयाल है और उन्होंने इसे भारतके घर-घरमें फैला दिया है, जिससे लाखों जानें वृथा ज़ाती हैं।

आयुर्वेदके रचनेवाले महर्षियोंने शीतलाके प्रत्येक उपद्रवकी शान्तिके उपाय लिखे हैं। जान खोनेकी अपेक्षा उनसे काम लेनेमें ही भलाई है। बंगालमें इस रोगके इलाज करनेवाले, जिन्हें वसन्त-चिकित्सक कहते हैं, बहुतायतसे हैं। उनको इसी चिकित्साके करते रहनेसे अच्छा अनुभव रहता है। लोग यदि इलाज नहीं भी कराते हैं, तो उनको बुलाकर रोगीको दिखाते और उनसे सलाह लिया करते हैं। माताके ढल जानेके बाद, कितने ही रोगी तो एकदम चंगे हो जाते हैं और कितनोंही को भयंकर ज्वर, श्वास, खाँसी और तृषा तथा अतिसार रोग पीड़ित करते हैं। अगर उस दशामें इलाज नहीं कराया जाता है, तो रोगी कलेजेमें सूजन आकर निश्चय ही मर जाता है। अगर माताके मौसममें पहले ही कोई दवा दे दी जाय, तो माता नहीं निकलती और निकलती है तो ज़रा भी कष्ट नहीं होता। इसलिये जहाँ तक हो, पहले रोकनेका उपाय करना चाहिये। कहा है,—"Prevention is better than cure" अर्थात इलाज करनेसे पहले ही रोकना भला है। अगर पहले रोक न की जाय, तो समय पर तो जीवनरक्षा और रोगनाशका उपाय करना ही चाहिये। अगर मातामें कोई उपद्रव न हो, तो इलाज की ज़रूरत नहीं।

(२३) माताके ज्वरमें ज्वरकी तरह ही रोगीको अपथ्योंसे बचाना चाहिये। इसमें भी शीतल हवा, परिश्रम, तेलकी मालिश, चन्दनादि का लेप, स्नान, चिकनाई खाना-पीना, क्रोध करना, भारी भोजन करना, मैथुन करना, चिन्ता-फिक्र करना, वमन, विरेचन आदि सब अपथ्य हैं। इनसे रोगीको बचाना चाहिये।

नोट—हमने जो चन्दनके लेपकी बात पहले लिखी है, वह माताके भर जाने

बाद, ढलते समयकी लिखी है। चन्दनका लेप सारे शरीरमें न कराना चाहिये। जो फुनूसियाँ पककर भयानक रूप धारण करलें, उनमें अँगुलीमें चन्दन भरकर टिपकियाँ लगा देनी चाहियें। ज्वरमें शीतल जल मना है, पर माताके ज्वरमें शीतल जल हितकर है। वमन विरेचन भी ज़रूरत होनेसे अवस्था विशेषमें कराया जाता है और उससे माता जल्दी सूख जाती है; पर सभी अवस्थाओंमें नहीं।

२४) अगर बालकके शरीरमें माताके समय खुजली चल जाय, तो उसके हाथोंमें कपड़ा लपेट देना चाहिये और पोस्तके डोड़ोंको रातको भिगोकर और सवेरे मल-छानकर (औटाना मत) उसमें मिश्री मिलाकर दोनों समय पिलाना चाहिये अथवा और उपाय करना चाहिये। हम अनेक परीक्षित उपाय आगे लिखेंगे। अगर हाथ पैरोंके तलवोंमें माताके वर्नोंके मारे दाह यानी जलन होती हो, तो चाँवलोंको भिगोकर और उनका पानी नितार या छानकर उसे हाथ पैरोंके तलवोंपर ढालना चाहिये; इससे जलन कम हो जाती है। इसी तरह आबदस्तके लिये दवाका जल बना देना चाहिये। आँखोंको भी कोई जल बना देना चाहिये, जिससे आँखोंके नष्ट होनेका भय मिट जाय; क्योंकि माता शरीरके हर हिस्सेमें निकलती है। इसमें अनेक आदमी लँगड़े लूले अन्धे या बहरे हो जाते हैं। हम ऊपर लिख आये हैं, कि जिस मातामें उपद्रव न हों, उसमें भूलकर भी दवा दारू न करनी चाहिये; क्योंकि वैसी माता स्वयं, बिना किसी प्रकारके कष्टके, ढल जाती है। ये सब उपाय उपद्रवयुक्त मातामें करने चाहिये।

(२४) "वैद्यविनोद"में लिखा है, - सातवें दिन गोबरकी रज सिरपर डाल कर, हल्दी और चावलोंके चूर्णका लेप करना चाहिये। घटोत्कचकी प्रतिमा बनाकर और पूजकर, पाँवमें कौड़ी बाँध देनी चाहिये। ऐसा करनेसे रोगीका मंगल होता है। माताके शान्त होनेपर भी यदि दाह, ताप और ज्वर की शान्ति न हो, तो

गिलोय, धनिया, पद्माख, नीम, नेत्रवाला आदि कफपित्त-नाशक औषधियोंका शीघ्र प्रयोग करना चाहिये। मसूरिका के आरम्भमें केवल मांसरस न पिलाना चाहिये। व्रणकी सूजन दूर करनेवाले और वातरोग नाशक उपचार करने चाहिये। अगर घाव दूषित हो जायँ, तो जौंक लगवाकर खून निकलवा देना चाहिये।

शीतला की चिकित्सा।

शीतलाके रोकने या उसका ज़ोर
कम करनेवाले उपाय।

(१) चैतके महीनेमें दूध पीनेवाले बच्चोंकी माताओंको और दाँतवाले बालकोंको खून साफ करनेवाली औषधियाँ पिलानी चाहियें। पहलेसे ही ऐसी औषधियोंका सेवन करनेसे माता ज़ोर नहीं करती। शाहतरे का अर्क, सरफोंकेका अर्क, खूबकला और सादे उन्नावोंका शर्बत, काहूके बीजोंका हलवा—ये सब चीज़ें इस कामके लिये उत्तम हैं। शाहतरे या पित्तपापड़ेका अर्क ही बड़ी उत्तम चीज़ है। इसका या सरफोंकेका अर्क भभकेसे खिंचवा लेना चाहिये। तेल घी मांस मिठाईसे परहेज़ रखना चाहिये।

रसो निम्बस्य मंजर्य्या पीतश्चैत्रे हितावहः।
हन्ति रक्तविकारांश्च वातपित्तं कफं तथा॥

चैत मासमें नीमकी नरम-नरम कोंपलें पानीमें घोट-छानकर पीनेसे रक्त-विकार (खून फिसाद) तथा वात, पित्त और कफके रोग नाश हो जाते हैं। इस नुसखेकी सचाईमें ज़रा भी सन्देह नहीं। नीम हमारे देशमें सच्चा अमृत है। इससे अनन्त रोग नाश होते हैं। हम इसके चन्द परीक्षित प्रयोग पाठकोंके उपकारार्थ लिखते हैं—(१) नीमके पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाकर सात दिन पीनेसे भयंकर गरमी भी

शान्त हो जाती है। (२) नीमके पत्तोंका रस ३ मास तक लगातार पीनेसे, नीमके वृक्षकी छायामें सोनेसे और नीमके पत्ते डालकर औटाये हुए जलसे रोज़ स्नान करनेसे भयंकर रक्तपित्त और कोढ़ रोग नाश हो जाता है। परहेजसे रहना शर्त्त है। (३) नीमके पत्तोंके झाग दाह-स्थानपर मलनेसे दाह—जलन नाश हो जाती है। (४) नीमकी छालके काढ़ेमें धनिया और सोंठका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे जाड़ेके ज्वरोंमें कुनैनसे जियादा फायदा होता है (५) पंचनिम्बके चूर्णसे कोढ़ तो नाश हो ही जाता है, पर औरभी अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं। (६) जो शख्स सदा सवेरेकी सवेरे कड़वे नीमके पत्ते खाता रहता है, उसका सर्प कुछ नहीं कर सकता। (७) कड़वे नीमके पत्ते पीसकर और उसमें शहद मिलाकर लगानेसे, भयंकर बहता हुआ घाव आराम हो जाता है। (८) पुराने नीमकी लकड़ी घिस-घिसकर लगानेसे खुजली नाश हो जाती है। छालको घिस-घिसकर लगानेसे पकी हुई या भरी हुई फुन्सियां नष्ट हो जाती हैं और जलन मिट जाती है। (९) गरमी के मौसममें दस्त होते हों, तो नीमके पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे दस्त बन्द हो जाते हैं और जलन मिटकर शान्ति हो जाती है। नीमके सैकड़ों प्रयोग हैं। हम उन्हें किसी अगले खण्डमें लिखेंगे। उपरोक्त सभी प्रयोग परीक्षित हैं।

(२) अगर बालक दूध पीता हो और चेचकका मौसम हो तथा चेचक निकलनेका शुबह हो, तो बालककी माँको हर रोज़ चार तोले खोपरा—नारियलकी गिरी खानेकी सलाह दो। इस उपाय से माता या तो निकलेगी ही नहीं ; अगर निकलेगी तो ज़ोर नहीं करेगी। परमात्माकी दयासे यह उपाय अच्छा काम देता है।

(३) चेचकके मौसममें बालकोंको घोड़ीका दूध पिलाना, ३ ४ सेमल के बीज निगलवा देना अथवा छिली हुई मुलहटी ६ माशे और अनारदाने ६ माशे दोनोंको औटाकर और मल-छानकर पिलाना और ऊपरसे शाहतरेका एक तोले अर्क़ पिलाना—बहुत मुफीद है। इनमें से कोई न कोई उपाय अवश्य करना चाहिये। मुलेठी आदिका काढ़ा शाहतरेके अर्क़के साथ पिलाना सबसे अच्छा परीक्षित उपाय है।

(४) नीमके बीज, बहेड़ेके बीज और हल्दीको बराबर-बराबर लेकर, शीतल जलमें पीस छानकर, कुछ दिन पीनेवालेको शीतलाका

भय नहीं रहता। रोटी खानेवाले वालकोंको इस नुसखे को हर मौसममें महीने दो महीने या जितने दिन हो सकें अवश्य पिलाना चाहिये। वहुतही उत्तम नुसख़ा है। इसके पीनेसे या तो माता नहीं निकलती या कम निकलती है. इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं; पर और भी शिकायतें नहीं होतीं।

(५) स्त्रीके वायें और पुरुषके दाहने हाथमें हरड़का वीज वाँध देनेसे माताका भय वहुत कम रहता है।

(६) शीतलाका ज़ोर कम करनेके लिये, वनकेलेके वीज भैंसके दूधमें पीस छानकर पिलाने चाहियें।

शीतलाके पूर्वरूपकी चिकित्सा।

(१) शीतलाके पूर्वरूपमें ज्वर आवे, तो अड़ूसेके रसके साथ शहद पिलानेसे शीतलाका विकार नष्ट हो जाता है।

(२) मसूरिकाके आरम्भमें हुलहुलके रसमें सफेद चन्दनका कल्क डालकर पीनेसे या केवल नीमका रस पीनेसे मसूरिका या माता का डर जाता रहता है। मसूरिकाके निकलतेही, केवल हुलहुल का स्वरस पीनेसे भी बड़ा लाभ होता है।

(३) बाँसकी छाल, तुलसी, लाख, विनौले, मसूर, जौका आटा, अतीस, घी, वच और ब्राह्मी—इन सवको या इनमें से जो जो मिलें उनकी धूप बनाकर, मसूरिकाके आरम्भमें, धूप देनेसे मसूरिका (माता) शीघ्रही नष्ट हो जाती है।

शीतलाकी शान्तिके उपाय।

(१) लघुपंचमूल, वृहत्पञ्चमूल, रास्ना, आमले, खस, धमासा, गिलोय, धनिया और नागरमोथा—इनको जलमें पीसकर पीनेसे वातज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(२) पटोलपत्र, सारिवा, नागरमोथा, पाढ़, कुटकी, खैर, नीम,

खिरेंटी, आमले और कटाई -इनका काढ़ा पीनेसे वातज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(३) दशमूल, रायसन, आमले, खस, धमासा, गिलोय, धनिया और नागरमोथा,—इनका काढ़ा पीनेसे वातज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(४) गिलोय, मुलेठी, रास्ना, लघुपंचमूल, लालचन्दन, कुंभेरके फल, खिरेंटी की जड़ और कटाई—इनका काढ़ा, वातजनित मसूरिकामें, पकने या भरनेके समय, पीना अच्छा है।

(५) पित्तकी मसूरिकामें पहले नीम, पटोलपत्र, पित्तपापड़ा, चन्दन, लालचन्दन, अड़ूसा, धमासा, आमले त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपर) और कुटकी—इनके काढ़ेको, शीतल करके, उसमें मिश्री शहत मिलाकर पीना लाभप्रद है।

(५) पित्तकी मसूरिकामें दाह, ज्वर, विसर्प, व्रण और पित्तकी अधिकता हो; तो दाख, कुम्भेरके फल, खजूर, पटोलपत्र, नीम, अड़ूसा, खीलें, आमले और धमासा—इनके काढ़ेमें मिश्री डालकर पीना हित है।

(६) अनन्तमूल, पित्तपापड़ा, नीमकी छाल, चन्दन, लालचन्दन, मूली, आमले, कुटकी, अड़ूसा खस और जवासा—इनका काढ़ा पीनेसे पित्तकी मसूरिका, दाह समेत, नष्ट हो जाती है।

(७) क्षीरमोरट और कुंभेरके फल—इनका काढ़ा बनाकर, शीतल करके, मिश्री और खीलोंका चूर्ण डालकर पीनेसे पित्तकी मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(८) धमासा, पित्तपापड़ा, पटोलपत्र और कुटकीका काढ़ा—कफज और पित्तज मसूरिकामें पीना चाहिये।

(९) पित्तकी मसूरिकामें, पहले पटोलकी जड़का काढ़ा अथवा पटो-

लपत्रका काढ़ा, ईखकी जड़के स्वरसके साथ पीना हितकारी है।

(१०) नीम पित्तपापड़ा, पाढ़, परवल, सफेदचन्दन, लालचन्दन, खस, कुटकी, आमले, अड़ूसा और धमासा—इनको एकत्र पीसकर, खाँड़ मिलाकर, इस शीतल पनेको पीनेसे पित्तकी मसूरिका नष्ट हो जाती है। इसके सिवा दाह, पित्तज्वर, पित्तव्रण और पित्तविसर्प पर यह पानक हितकारी है।

नोट—वास्तवमें यह पानक इन रोगोंपर परम हितकर है।

(११) अड़ूसा, नागरमोथा, चिरायता, हरड़, बहेड़ा, आमला, इन्द्रजौ, जवासा, कड़वे परवल और नीम—इनका काढ़ा पीनेसे कफकी मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(१२) अड़ूसेके स्वरसमें शहत मिलाकर पीनेसे कफज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(१३) नीम पित्तपापड़ा, पाढ़, कड़वे परवल, कुटकी, सफेदचन्दन, लालचन्दन खस, आमले, अड़ूसा और लाल धमासा—इनका काढ़ा बनाकर और खाँड़ या मिश्री मिलाकर पीनेसे सब दोषोंसे पैदा हुई तथा ज्वर और विसर्पवाली मसूरिका भी नष्ट हो जाती है।

(१४) पटोलपत्र, गिलोय, नागरमोथा, अड़ूसा, धनिया, जवासा, चिरायता, नीम, कुटकी और पित्तपापड़ा—इनका काढ़ा बना कर पीनेसे अपक्व (बिना पकी) मसूरिका नष्ट हो जाती है और पकी मसूरिका शुद्ध होती है। इससे अच्छी दवा विस्फोटक ज्वरको शान्त करनेवाली और नहीं है।

(१५) पटोलपत्र, नागरमोथा, श्योनाक और चौलाई—इनके काढ़ेमें हल्दी और आमलोंका कल्क डालकर पीनेसे मसूरिका, विस-

स्फोटक, विसर्प, रोमान्तिका, वमन और ज्वर—ये सब नाश हो जाते हैं।

(१६) करेलेके पत्तोंके स्वरसमें, हल्दीका चूर्ण डालकर पीनेसे रोमान्तिका, ज्वर, विसर्प और मसूरिका रोग नाश होते हैं।

(१७) चिरायता, नागरमोथा, अड़ूसा, त्रिफला, इन्द्रजो, जवासा, नीमकी छाल और पटोलपत्र—इनका काढ़ा बनाकर और शहत डालकर पीनेसे मसूरिका रोग शमन होता है।

(१८) धमासा, पित्तपापड़ा, पटोलपत्र और कुटकी—इनका काढ़ा कफपैत्तिक मसूरिकामें पीना चाहिये।

(१९) दुर्गन्ध करञ्जके रस और आमलोंके रसमें मिश्री और शहत मिलाकर पीनेसे सूजन और कफपैत्तिक मसूरिका नाश हो जाती हैं।

(२०) अमृतादि काथ पीनेसे पित्तकफजनित मसूरिका नाश हो जाती है।

नोट—रक्तज मसूरिका रक्तमोक्षण—खून निकलवानेसे शान्त होती है।

मसूरिका नाशक लेप।

—*—

(२१) मँजीठकी छाल, बड़की छाल, पिलखनकी छाल, सिरसकी छाल और गूलरकी छाल—इनको एकत्र पीसकर, चारों ओर लेप करनेसे वातज मसूरिका नष्ट होती है।

(२२) सिरसकी छाल, गूलरकी छाल, खैरके पत्ते और नीमके पत्ते,—इनका लेप करनेसे कफ-सम्बन्धी और पित्त-सम्बन्धी मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(२३) सिरसकी छाल, पीपरके पेड़की छाल, लसौढ़ेके पेड़की छाल और गूलरके पेड़ की छाल—इनको कूट-पीस और छानकर,

गायके घीमें मिलाकर, चेचकके दानोंपर लगाना चाहिये। अगर चेचकके दानोंमें दाह या जलन हो, तो अवश्य ही लगाना चाहिये। इससे दाह निश्चयही शान्त हो जाता है।

(२४) सिरसकी छाल, गूलर, पीपल, पीलू और बड़की छाल—इन सब दरख़्तोंकी छालोंको लाकर, खूब महीन पीसकर, घीमें मिलाकर, लेप करनेसे शीघ्रही व्रण, विसर्प और दाह नष्ट हो जाता है।

(२५) जिस मसूरिकामें पीव बहता हो, जो चारों ओर फैली हुई हो, उस पर दशाङ्ग चूर्णको बुरकना चाहिये अथवा उसका लेप करना चाहिये।

(२६) आरने ऊपलोंकी राख चेप पर छिड़कनेसे लाभ होता है। इसको सब स्त्रियाँ जानती हैं। मसूरिकामें, क्लेदकी अवस्थामें, यह बड़ी लाभदायक है। सूखे गोबरका चूर्ण छिड़कने की बात लोग कहते हैं, पर इसका हाल हमें ज़रा भी नहीं मालूम। "भावप्रकाश"में भी लिखा है, शीतलाकी फुन्सियोंमें दाह हो, तो सूखे गोबरकी राख हितकारी है। इस राखसे फुन्सियाँ सूख जाती हैं और पकती भी नहीं।

(२७) मसूरिकामें क्लेद और स्राव हो यानी वह बहती हो; तो उस पर पञ्च वल्कल (छाल) का चूर्ण यानी बड़, गूलर, पीपल, पाकर और मौलसरीकी छालको पीसकर घावोंपर बुरकना चाहिये; अथवा दशाङ्ग लेपकी दवाओंका चूर्ण बुरकना चाहिये।

(२८) मसूरिकामें कीड़े वगैरः पड़नेका डर हो या पैदा हो जायँ, तो सरल आदि औषधियोंकी धूप देनी चाहिये। धूना, चन्दन, अगर, गूगल और देवदारू प्रभृतिकी धूनी देनी चाहिये।

(२९) हल्दी, दारूहल्दी, खस, सिरस, नागरमोथा, लोध, चन्दन

और नागकेसर,—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे स्वेद, विस्फोटक, विसर्प, कोढ़, दुर्गन्ध और रोमान्तिका मसूरिका नाश हो जाती है।

(३०) मुलेठी, बहेड़ा, आमला, मूर्वा, दारुहल्दीकी छाल, नीलकमल, खस, लोध और मजीठ—इन सबको पीसकर, इनका लेप आँखों पर करनेसे या इनको आँखोंके अन्दर लगानेसे मसूरिका नष्ट हो जाती है और फिर कभी नहीं होती।

(३१) आँखोंमें मसूरिका की पीड़ा हो, तो लिसौढ़ेकी छालको पीस कर, आँखोंपर उसका गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे पीड़ा शान्त हो जाती है।

(३२) गवेधु धान्य और मुलेठी—इनका जल आँखोंमें सींचनेसे मसूरिका से दूषित हुई आँखें अच्छी हो जाती हैं।

(३३) मुलेठी और गदापूर्नाको पीसकर और उसे जलमें घोलकर, उसी पानीसे रोज़ आँखोंके सींचनेसे आँखोंको किसी तरहकी हानि पहुँचने का खटका नहीं रहता। यह उपाय मातावालोंको अवश्य करना चाहिये; क्योंकि उपाय न करने या राम-भरोसे बैठे रहनेसे अनेक बालक मातामें नेत्रहीन हो जाते हैं। यह उपाय आज़मूदा है।

(३४) खैर और विजयसारकी लकड़ीको लेकर, दो अढ़ाई सेर जल में औटाकर, शीतल करलो; पीछे छानकर १ मिट्टीकी साफ कोरी हाँड़ीमें पानी भरकर रोज़ रख दिया करो। रोगीको यही जल शीतल करके पीनेको दिया करो।

(३५) खैर और लिसौढ़ेकी छालको जलमें औटाकर और छानकर, एक हाँड़ीमें भरकर रख दिया करो। माता-रोगी पाखाने जाय, तो इसी शीतल जलसे आबदस्त लिवाया करो। शौचकर्मके लिये यह जल बड़ा उपकारी है। किसी समय यह जल न

हो, तो ऊपरके नं० ३४ जल से भी आबदस्तका काम लिया जा सकता है ।

(३६) पैरोंकी फुन्सियोंमें बहुत दाह हुआ करता है, इसके लिये चाँवलोंका पानी तैयार करके, उसी पानीसे पाँवोंकी फुन्सियों को बारम्बार सींचना चाहिये। आधा पाव चाँवल, पानीमें भिगो दिया करो। सवेरे उस जलको छान कर काम में लाया करो। २।३ घण्टे चाँवल भीगनेसे भी चाँवलोंका जल तैयार हो जाता है।

(३७) चमेलीके पत्ते, मँजीठ, दारुहल्दी, सुपारी, आमले, मुलेठी और छोंकरेकी छाल (शमी),—इन सबको समान भाग लेकर, सोलह गुने जलमें डालकर औटा लो। पीछे मल-छानकर, इस काढ़ेमें शीतल होने पर शहत मिलाकर, इसके कुल्ले कराओ। इससे मुँहके छाले और गलेकी तकलीफ रफा हो जाती है। आमले और मुलेठीके काढ़ेके कुल्ले करानेसे भी गलेके घावोंमें फायदा होता है। काढ़ेमें शहद अवश्य मिला लेना चाहिये।

(३८) अगर माताके स्राव (चेप या पीव) को धोनेकी ज़रूरत हो, तो नीम, बबूल, अशोक, कन्दूरी और बेंतकी छाल—इनको समान-समान लेकर, काढ़ा बना और शीतल करके, इसीसे ज़ख़्म् और चेप आदि को धोओ।

निकली हुई माता रुक जाय

उसके निकालनेके उपाय।

(१) चना भूनकर खिलानेसे या तूम्बरोका जल औटाकर पिलानेसे माता बाहर निकल पड़ती है और मद तथा ज्वर आदि शान्त हो जाते हैं।

(२) तुलसीके पत्तोंके रसके साथ अजवायन पीसकर लगानेसे भी माता निकल आती है।

(३) नीम, पित्तपापड़ा, पटोलपत्र, कुटकी, अडूसा, धमासा, आमले, खस, चन्दन और लालचन्दन—इनका काढ़ा बनाकर और उसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे सब शरीरगत मसूरिका रोग, ज्वर और विसर्प आराम हो जाते हैं तथा निकलकर भीतर चली गई हुई मसूरिका बाहर निकल आती है। इसका नाम निम्बादि क्वाथ है। यह बड़ा उत्तम काढ़ा है।

(४) ज़रा-ज़रासी जावित्री कई दफा खिलानेसे भी माता निकल आती है।

(५) अगर मसूरिका (शीतला) बाहर निकलकर फिर भीतर समा-जाय, तो कचनारकी छालका काढ़ा बनाकर और उसमें सोना-मक्खीका चूर्ण डालकर पिलाओ; माता फिर बाहर निकल आवेगी।

मसूरिका (माता) के पकानेके उपाय।

(१) बेरोंका चूर्ण गुड़के साथ खानेसे वात, पित्त और कफ सब तरह की मसूरिका पक जाती हैं। यह नुसखा परीक्षित है। तत्काल माता पकती है।

(२) बादामके दो दाने पानीमें भिजोकर और छीलकर, पीछे पीसकर और जलमें घोलकर पिलानेसे अथवा योंही एक बादाम खिलानेसे माता भर आती है।

(३) पटोलपत्र, गिलोय, नागरमोथा, अडूसा, धनिया, जवासा, चिरायता, नीम, कुटकी और पित्तपापड़ा,—इनका काढ़ा पिला-

नेसे माता अवश्य पक जाती है। यह नुसख़ा इस कामके लिये निश्चयही उत्तम है। इससे पकी हुई माता भी शीघ्रही सूख जाती है।

(४) गिलोय, मुलैठी, मुनक्का, ईखकी जड़ और मीठे अनारका छिलका—इनको एकत्र पीसकर और गुड़ डालकर पीनेसे, वायुका कोप नहीं होता और माता पक जाती है। यह परीक्षित उपाय है।

नोट—इन सबमेंसे ईखकी जड़ छोड़कर शेष सबको दूधमें डालकर औटाने और पीछे उस दूधमें ज़रासी नमककी डली डालकर फाड लेनेसे. जो पानी-सा रह जाता है, उस पानीके पिलानेसे भी माता जल्दी पकती है। पर यह सब पकते समय ही देने चाहियें।

(५) गिलोय, मुलेठी रासना, लघुपञ्चमूल, लालचन्दन, कुँभेर के फल, खिरेंटी की जड़ और कटाई,—इन का काढ़ा भी वातज मसूरिकामें, पाक-कालमें (पकनेके समय) सेवन करना चाहिये।

(६) बङ्गसेनमें लिखा है, कफजनित और और विशेषकर कठिन मसूरिकाओंमें दही और सत्तूको मिलाकर लेप करना चाहिये।

नोट—पकने के समय सब तरह की माताओंको वायु सुखा देता है, इसलिये पाककाल में (पकते समय) बृंहण—पुष्टिकर पथ्य देना चाहिये, शोषण—सुखानेवाला पथ्य न देना चाहिये।

माताको सुखाने के उपाय।

(१) आरने कंडों की राख या गोबरका महीन चूर्ण पीप निवारण करनेके लिये बुरकना चाहिये। अथवा पञ्चवल्कल का चूर्ण बुरकना चाहिये अथवा दशांग चूर्ण बुरकना चाहिये। देखो पृष्ठ ४५६ के नं० २६।२७ प्रभृति।

माताका दाह नाश करनेके उपाय।

(१) पीछे पृष्ठ ४५५ में लिखा नं० २३ सिरस, पीपल, लिसौढ़े आदिका लेप करना चाहिये। यह लेप बड़ा अच्छा है। नं० २४ का लेप भी अच्छा है।

(२) पाँवोंके तलवोंकी फुन्सियोंमें जलन हो, तो चाँवलोंका पानी बना कर उनपर सींचना चाहिये।

नोट—आँखोंमें सींचनेके जल, लेप तथा शौचकर्मके लिये जल अथवा माताके उपद्रवोंके उपाय हम पीछे लिख आये हैं।

माता रोगीको पथ्य।

मातावालेको अरुचि हो, तो अनार और अमूरससे युक्त यूप बनाकर देना चाहिये। यूप बनानेकी विधि—पहले लिख आये हैं। इस यूपसे अरुचि नाश हो जाती है।

आजकल दूधका साबूदाना, पानीका साबूदाना या दूध बारली, चाँवलोंको खील और कूटूकी खीलें भी दी जाती हैं। बेदाना, अनार, किशमिश और परवल तथा कच्चे केलेकी तरकारी देना भी पथ्य है।

जल शीतलही पिलाना चाहिये। अगर खैर और विजयसारके साथ औटाया जल शीतल करके दिया जाय, तो सर्वोत्तम हो।

माताके बाद।

कहते हैं, फौजकी अगाड़ी और माताको पिछाड़ी भारी होती है; इसलिये माता ढल जानेपर भी, रोगीके पथ्यापथ्यका ख़याल

रखना चाहिये। ज्वर शान्त हुए विना स्नान न करना चाहिये। जो ज्वरकी चिकित्सामें विधि कही गई है, उसी तरह इस रोगमें भी करना चाहिये।

अगर शीतलाका ज्वर रह जाय और माता ढलजाय (ऐसा बहुत कम होता है) तो लालचन्दन, अड़ूसा, गिलोय, नागरमोथा और दाखका काढ़ा पिलाना चाहिये। इससे माताका ज्वर नष्ट हो जाता है।

माताके बिल्कुल शान्त हो जानेपर,—आमाहल्दी, सरकंडेकी जड़ और जलाई हुई कौड़ी—इन तीनोंको कूट-छानकर, भैंसके दूधमें मिलाकर, रातको चेहरेपर लगाकर सो जाना चाहिये। भूसी पानीमें भिगो देनी चाहिये और सवेरे उसी से मुख धोना चाहिये। इससे चेहरेके दाग़ मिट जाते हैं।

छिले मसूर और खरबूज़ेकी गिरी—दोनोंको बराबर-बराबर ले कर और पीसकर इनका उबटन करना चाहिये तथा नागरमोथेको औटाकर उसके जलसे मुख धोना चाहिये। यह नुसख़ा सुन्दर बनानेमें बहुत अच्छा है।

अगर शरीरमें शीतलाकी गरमी हो ; तो उसके निकालनेके लिये, धनिया और ज़ीरा बराबर-बराबर लेकर, रातको चौगुने पानीमें भिगो देना चाहिये और सवेरे पीस-छान मिश्री मिलाकर रोगीको देना चाहिये। परन्तु जब तक माता अच्छी तरह न निकल जाय, रोगी खाने पीने न लगे, स्नान वगैरः न कर ले, तब तक यह नुसख़ा कभी न देना चाहिये। अगर माताके कुछ भी अंश रहनेकी हालत में दिया जायगा, तो भयानक उपद्रव खड़े कर देगा। अगर माता अच्छी हो जानेके कुछ दिन बाद दिया जायगा, तो गरमीके निकाल-नेमें अमृत का काम करेगा। यह नुसख़ा परीक्षित है।

बालरोग चिकित्सा ।

बालकोंकी किस्में ।

—※—

बालक तीन तरहके होते हैं :—(१) दूध पीनेवाले ।
(२) दूध और अन्न दोनों खानेवाले
(३) अन्न खानेवाले ।

बालकोंके रोग होनेके कारण ।

—※—

दूध और अन्नके दूषित न होनेसे बालक निरोग रहते हैं और इनके दूषित होनेसे बालक रोगी हो जाते हैं ।

भारी विषम तथा दोषोंको बढ़ानेवाले भोजनोंसे माताके शरीरमें दोष कुपित होते हैं । उन दोषोंसे दूध ख़राव हो जाता है और दूषित दूधके पीनेसे बालक बीमार हो जाते हैं ।

वातसे दूषित दूध पीनेसे बालकको वात-सम्बन्धी रोग हो जाते हैं, स्वर क्षीण हो जाता है—आवाज़ बैठ जाती है, शरीर दुवला हो जाता है, मल मूत्र और वायु रुक जाते हैं । अगर बालकको यही रोग हों, तो जान लेना चाहिये कि, दूध वायुसे दूषित है ।

पित्तसे दूषित दूध पीनेसे बालकके शरीरमें पसीने आते हैं,

पतले दस्त लगते हैं, कामला रोग होता है, प्यास लगती है, सारे शरीरमें गरमी लगती है तथा पित्तकी औरभी तकलीफें होती हैं।

कफसे दूषित दूध पीनेसे बालकके मुँहसे लार ज़ियादा गिरती है, नींद बहुत आती है, शरीर भारी रहता है, सूजन होती है, नेत्र टेढ़े होते हैं और वह वमन करता है ।

क्या बालकोंको भी बड़ोंकी तरहही रोग होते हैं ?

—**—

ज्वर वगैर: जो रोग बड़ोंको होते हैं, वही बालकोंको भी होते हैं ; किन्तु चन्द रोग ऐसे हैं, जो बालकोंको ही होते हैं और बड़ोंको नहीं होते ।

बालकोंके रोगोंके नाम

(१) तालुकण्टक (२) महापद्मक, (३) कुकूण (४) तुण्डी (५) गुदपाक (६) अहिपूतन (७) अजगल्ली (८) पारिगर्भिक (६) दन्तोद्भेदक,—ये रोग बालकोंको अधिक होते हैं। इनके सिवाय ज्वर, खाँसी आदि रोग जो बड़ोंको होते हैं, सो बालकोंको भी होते हैं।

तालुकण्टकके लक्षण

कुपित हुआ कफ तालूके मांसमें तालुकंटक रोग पैदा करता है। इस रोगमें तालुआ नीचेको लटक जाता है। इस कारण बालक माँका दूध नहीं पी सकता ; अगर पीता है, तो ज़रा-ज़रा पीता है ; दस्त पतले होते हैं, प्यास लगती है ; आँखोंमें, गलेमें और मुँहमें पीड़ा होती है, बच्चा गर्दनको गिरा देता है और वमन करता है।

नोट—इस रोगमें ज्वर आता है. कानकी जड़ और नाक नरम तथा ढीली हो जाती है, मलद्वारसे बारम्बार पानी गिरता और प्यास बहुत लगती है ।

महापद्मकके लक्षण।

—✲❋✲—

बालकके मस्तक और मूत्राशयमें, तीनों दोषोंके कोपसे, लाल रङ्गका प्राणनाशक विसर्प राग होता है। इसको "महापद्मक" कहते हैं। मस्तकमें पैदा हुआ विसर्प कनपटियोंमें होकर हृदयमें जाता है और हृदयसे गुदामें जाता है; उसी तरह मूत्राशयमें उत्पन्न हुआ विसर्प गुदामें जाता है; गुदासे हृदयमें और हृदयसे मस्तकमें जाता है।

नोट—विसर्परोग रक्तमांस और चमड़े प्रभृतिके दूषित होनेसे आठ तरहका होता है। किसीमें लाल-लाल लम्बी मोटी और खरदरी गाँठोंकी क़तार पैदा होती है, किसीमें जहाँ यह होता है वहाँ शरीर नीला, लाल या बुझे हुए अङ्गारसा हो जाता है। आगसे फूँकनेके समान फफोले हो जाते हैं। यह जल्दी फैलता है। इसमें रोगीकी संज्ञा नाश हो जाती है, उसे कहीं चैन नहीं पड़ता। किसीमें पीली-पीली लाल और सफेद फुन्सियाँ और सूजन होती है; किसीमें कुलथीके दानों जैसी फुन्सियाँ और सूजन वगैरः होती है। इसके साथ ज्वर, अतिसार, वमन, चमड़ेका फटना, मांस का फटना, पकना, ग्लानि और अरुचि आदि उपद्रव होते हैं।

कुकूणकके लक्षण।

—✲❋✲—

दूधके दोषसे, बालकोंकी आँखोंके पलकोंमें, कुकूणक रोग होता है, जिससे नेत्रोंमें व्यथा—पीड़ा, खुजली और अत्यन्त जल-स्राव होता है। इस रोगके कारण बालक अपने मस्तक, आँखोंके हिस्सों तथा नाकको रगड़ता है, सूर्य्यकी रोशनीको देख नहीं सकता और आँखोंको बन्द रखता है।

तुंडीके लक्षण।

—❋—

वायुसे नाभि फूल जाती है। उसमें व्यथा—पीड़ा होती है। इसी को "तुण्डी" कहते हैं।

गुदपाकके लक्षण।

पित्तसे बालककी गुदा पक जाती है। इसीको "गुदपाक" कहते हैं।

अहिपूतनके लक्षण।

मलमूत्र से लिहसी हुई गुदाके न धोनेसे अथवा पसीनोंके न पोंछनेसे वे वहाँ जम जाते हैं; फिर खून और कफके कोपसे खुजली पैदा होती है। खुजानेसे तत्काल फोड़े होते हैं और उनसे मवाद बहने लगता है। इस तरह घोर व्रण हो जाता है, उसीको "अहि-पूतन" कहते हैं।

अजगल्लीके लक्षण।
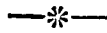
बालकके शरीरमें, कफ और वायुके कोपसे, चिकनी-चिकनी, शरीरके रङ्गकी, गुँथीसी, पीड़ा रहित मूँगके समान फुन्सी होती है, उसको "अजगल्लिका" कहते हैं।

पारिगर्भिकके लक्षण।

बालक गर्भवती माता या धायका दूध अधिक पीता है, तो उस के विशेष करके खाँसी, मन्दाग्नि, वमन, तन्द्रा, दुर्बलता, अरुचि, भ्रम और पेटका बढ़ना—ये होते हैं। इसीको "परिगर्भिक" और "परिभव" कहते हैं। इस रोगमें अग्निको दीपन करनेवाले उपाय करने चाहियें।

दन्तोद्भेदक के लक्षण।

बालकके दाँत निकलते समय सब रोग आ मौजूद होते हैं; यानी दाँत निकलनेके कारण अनेक रोग हो जाते हैं। इस समय

विशेषकर ज्वर, दस्त होना, खाँसी, वमन, सिर दर्द, आँख दुखना, पोथकी रोग (पलकोंका एक रोग) और विसर्प ये रोग होते हैं ।

दूध डालता ।

वालक दूध पीकर उलटी कर देते हैं ; पर जव वे वहुत ही दूध डालते हैं ; तव वह दूध डालनेका रोग समझा जाता है । पहले-पहल तो फटा हुआ दूध या दही सा निकला करता है, उसमें खट्टी-खट्टी वदवू आया करती है । पीछे कुछ दिनों वाद पानीकी तरह पतली-पतली वमन होती है । वालक जो खाता या पीता है, वही निकल जाता है, पेट फूल जाता है और उसमें गोंगों आवाज़ होती है । कभी दस्त कब्ज़से होता है, कभी ज़ियादा दस्त लगता है, शरीर कमज़ोर और उसका रङ्ग पीला हो जाता है, चमड़ा रूखा और शीतल रहता है और वालक ज़िद्दी स्वभावका हो जाता है ।

वालकोंकी चिकित्सा-विधि ।

वड़े आदमियोंके लिये ज्वर आदि रोगोंमें जो दवाएँ दी जाती हैं, वही वालकोंको देनी चाहियें ; परन्तु दागना, क्षार कर्म करना, वमन, विरेचन और फस्त खोलना प्रभृति काम न करने चाहियें । अगर वालकको सख़्त तकलीफ हो, तो वमन विरेचन आदि भी कराना उचित है ; क्योंकि सुश्रुत महाशय कहते हैं कि, प्राणनाशक संकट उत्पन्न हुए विना, वालकोंको वमन विरेचन और वस्ति,—ये नहीं कराने चाहियें ।

वालकोंके लिये मात्रा ।

वालकोंको दोष और दूष्य तथा ज्वर वगैरः रोग वड़े आदमियों के समान नहीं होते हैं ; इसलिये जिस रोगमें वड़ोंके लिये जो दवायें

लिखी हैं, वही बालकोंको दी जा सकती हैं ; पर मात्रा थोड़ी होनी चाहिये।

विश्वामित्र कहते हैं,—बालकको उसके जन्मदिनसे १ महीने तक बायविड़ंगके दाने-बराबर दवा देनी चाहिये। फिर आगे दूसरे महीने में २ दाने बायविड़ंगके बराबर और तीसरे महीनेमें ३ दाने बायविडङ्गके बराबर देनी चाहिये। इसी तरह हर महीने दवा बढ़ानी चाहिये। पहले महीनेमें १ बायबिड़ंगके दानेके बराबर दवा लेकर, उसका चूर्ण बनाकर अथवा कल्क या अवलेह बनाकर देना चाहिये।

वङ्गसेन कहते हैं,—१ वर्ष तक तो वायविड़ंगके दानोंके हिसाब-से मात्रा देनी चाहिये ; किन्तु १ साल बाद झाड़ीबेर (छोटा लाल बेर) की गुठलीके समान मात्रा देनी चाहिये। जब तक बच्चा दूध पीवे, तब तक यही मात्रा रखनी चाहिये। जब बच्चा दूध भी पीवे और अन्न भी खाय, तब झाड़ी बेरके समान मात्रा देनी चाहिये। जब दूधको छोड़कर, केवल अन्न खाने लगे ; तब बेरके समान मात्रा कर देनी चाहिये।

और जगह लिखा है,—बालकको पहले महीनेमें एक रत्ती दवा देनी चाहिये और वह शहत या माँके दूध या घीमें मिलाकर चटनी की तरह चटानी चाहिये। फिर दूसरे महीनेमें दो रत्ती देनी चाहिये और तीसरे महीनेमें ३ रत्ती देनी चाहिये। इसी तरह १२ महीनों तक एक-एक रत्ती बढ़ानी चाहिये। पहला वर्ष पूरा होने पर, सोलह सालकी उम्रतक, हर साल पाँच-पाँच रत्ती बढ़ानी चाहिये। सोलह से सत्तर साल तक एक मात्रा स्थिर हो जाती है। सत्तर साल के बाद, बालकोंकी तरह मात्रा धीरे-धीरे घटानी चाहिये।

एक रत्तीकी मात्रा चूर्ण, कल्क और अवलेहकी कही गई है ; यानी चूर्ण देना हो या कोई दवा पीसकर लुगदीकी तरह बनाकर देनी हो या शहत वगैरः में चटानी हो ; तो उसे पहले मासमें १ रत्ती,

दूसरे मासमें २ रत्ती, तीसरेमें ३ रत्ती और १२ वें महीनेमें १२ रत्ती देनी चाहिये। काढ़ा देना हो, तो इन मात्राओंसे चौगुना देना चाहिये। जिस बालकको पहले मासमें १ रत्ती चूर्ण दिया जाय, उसे काढ़ा चार रत्ती देनी चाहिये।

जो बालक माँका दूध पीता हो, उसे माँके दूध या घीमें मिलाकर दवा देनी चाहिये। अगर माँको दवा खिलानी हो, तो दूध और घीमें मिलाकर नहीं देनी चाहिये; जिस विधिसे देनेको कहा हो, उसी विधिसे देनी चाहिये। जो बालक दूध भी पीता हो और अन्न भी खाता हो, उसको भी दूध या घीमें दवा मिलाकर देनी चाहिये।

सुश्रुत महाराज और ही तरकीब बताते हैं,—वे कहते हैं, जो दवा जिस रोगमें देनी हो, उसका कल्क बनाकर उसे माँके स्तनोंके लगा देना चाहिये; यानी जो दवा बालकको देनी हो, उसे गीली पीसकर, उसकी माँके स्तनोंमें उसका लेप कर देना चाहिये। बच्चा दूध पियेगा, तब वह दवा उसके पेटमें चली जायगी।

बङ्गसेन कहते हैं,—दूध पीनेवाले बच्चोंकी धायको दवा देनी चाहिये, किन्तु बालकको न देनी चाहिये; जो बालक दूध भी पीता हो और अन्न भी खाता हो, उसकी धायको दवा देनी चाहिये और उस बच्चेको भी दवा देनी चाहिये। जो बालक केवल अन्न खाता हो, धायका दूध न पीता हो, अगर उसे रोग हो जाय; तो उसे ही दवा देनी चाहिये, उसकी दूध पिलानेवाली धाय या माको दवा देनेकी ज़रूरत नहीं।

अगर बालकको लंघन करानेकी ज़रूरत हो, तो उसकी धायको लंघन कराने चाहियें—हलका, जल्दी पचनेवाला, थोड़ा, पथ्य भोजन देना चाहिये—साफ निराहार न रखना चाहिये। बालकको कभी भी लङ्घन न कराने चाहियें। बालककी सारी चीज़ें बन्द करदें, पर उसका दूध हरगिज़ न बन्द करना चाहिये। अगर माके दूध

न आता हो या लङ्घनोंकी वजहसे न आवे ; तो बालकको बकरीका दूध पिलाना चाहिये, क्योंकि बकरीका दूध परमोत्तम होता है। हाँ, अगर बकरीका दूध न मिले, तो बकरीकेसे गुणवाली गायका दूध देना चाहिये ।

मुँह से कहकर न बता सकनेवाले छोटे बालकों के भीतरी रोगों के पहचानने की तरकीबें ।

(१) अगर बालक के किसी अङ्ग प्रत्यङ्ग में वेदना होती है, तो वह अपने हाथ से उस जगह को बारम्बार छूता है। अगर कोई दूसरा आदमी वहाँ हाथ लगाता है, तो बालक रोने लगता है ।

(२) अगर बालक के सिर में दर्द होता है, तो बालक अपनी आँखें बन्द रखता है। इसके सिवा वह अपने मस्तक को खड़ा नहीं रखता, गर्दन को गिराये रखता है तथा सिरको धुनता और टकराता भी है। सिरमें दर्द होने से सिरका चमड़ा सिकुड़ जाता है। बालक बारबार सिर में हाथ लगाता और कान खींचता है।

(३) अगर बालक के मूत्राशय में पीड़ा होती है, तो बालक पेशाब रुकने से दुखी रहता है और खाता-पीता नहीं ।

(४) अगर बालक के मल और मूत्र दोनों रुक गये हों, विह्वलता और पेट पर अफारा हो, आँतें बोलती हों ; तो समझना चाहिये कि, बालक के पेट में रोग है।

(५) अगर बालक हर समय रोता ही रोता हो, तो उसके सब शरीरमें रोग समझना चाहिये ।

(६) बालक के कम या ज़ियादा रोने से तकलीफ की कमी और ज़ियादती समझनी चाहिये। अगर बालक कम रोवे या धीरे

धीरे रोवे, तो कम तकलीफ समझनी चाहिये। अगर ज़ियादा रोवे और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला कर रोवे, तो अधिक पीड़ा समझनी चाहिये।

(८) अगर बालक अपने होठ और जीभ को डसे तथा मुट्ठियोंको भींचे, तो उसके हृदय में पीड़ा समझनी चाहिये।

(९) अगर बालक का पाख़ाना पेशाव वन्द हो तथा वह उद्वेग से दिशाओं को देखे, तो उसकी वस्ति (पेड़) और गुदा में पीड़ा समझनी चाहिये।

(१०) अगर बालक को पेशाव न हो, प्यास अधिक लगे और मूर्च्छा हो, तो बालकके पेड़ू में पीड़ा समझनी चाहिये।

(११) अगर तन्दुरुस्त बालक रह-रहकर बार-बार रो उठे, तो उसके पेट में दर्द समझना चाहिये।

(१२) अगर दूध पीनेवाले बालक को प्यास लगती है, तो वह अपनी जीभ बाहर निकालता है।

(१३) अगर बालक को जुकाम हो जाता है, उसकी नाक बन्द हो जाती है, तो वह मुँह से साँस लेने के लिये, बारम्बार स्तनको छोड़ देता है और साँस लेकर फिर दूध पीने लगता है।

(१४) अगर साँस लेते समय बालक की नाक का छेद बड़ा हो जाय और नाक हिले, तो समझना चाहिये कि, बालक को साँस लेने में बड़ा कष्ट होता है और उसको खाँसी से बड़ी तकलीफ है।

(१५) अगर बालक के ज्वर की परीक्षा करनी हो, तो थर्मामीटर लगाना चाहिये। बालक की नाड़ी स्वभाव से ही बहुत तेज़ चला करती है, इसलिये धोखा होने का डर रहता है। जो अनुभवी वैद्य होते हैं, वे तो धोखा नहीं खाते, पर

नौसिखिये धोखा खा सकते हैं। थर्मामीटर से किसी तरह का धोखा नहीं हो सकता ।

(१६) बालकों का पेट स्वभाव से ही कुछ बड़ा होता है। अगर हद से ज़ियादा मोटा हो, तो समझना चाहिये कि यकृत या प्लीहा का विकार है अथवा अजीर्ण है। जो हो, उसका निश्चय करके चिकित्सा करनी चाहिये ।

बाल-चिकित्सा ।

ज्वरनाशक नुसखे ।

(१) भद्रमोथा, हरड़, नीम, कड़वे परवल और मुलहटी—इन पाँचों का काढ़ा पीने से सब तरह के ज्वर आराम हो जाते हैं; परन्तु यह काढ़ा सुहाता-सुहाता पिलाना चाहिये। इसको "भद्रमुस्तादि-क्काथ" कहते हैं। यह नुसखा परीक्षित है।

(२) नागरमोथा, पीपल, अतीस* और काकड़ासिंगी—इन चारोंको महीन कूट-पीस और छान कर रखलो। इस चूर्ण को शहत में मिलाकर चटाने से बालकों का ज्वरातिसार, खाँसी, वमन और श्वास ये सब आराम होते हैं। असल में यह "चतुर्भद्रिका चूर्ण" ज्वरातिसार (ज्वर और अतिसार) नाश करनेवाला है। अगर ज्वरातिसारके साथ खाँसी, श्वास और वमन ये उपद्रव

---

* नं० २ नुसखे से बालकोंके ज्वर, अतिसार और खाँसी निश्चय ही आराम हो जाते हैं। अगर खाँसी का ही जोर हो और आराम न होता दीखे, तो इसी में "जवासा" मिला देना चाहिये। अगर दस्तों का जोर हो, तो "नागरमोथा" निकाल कर "धनिया" मिला देना चाहिये।

भी हों, तो वे भी इसी से नाश हो जाते हैं। ये नुसख़ा बालकों के लिये अमृत है। अनेक बार का परीक्षित है।

नोट—इस नुसखे को पेटेण्ट दवा समझिये। इस में प्रधान दवा "अतीस" है। इसका दूसरा नाम "शिशु भैषज्य" यानी बच्चों की दवा है। अतीस अकेला ही ज्वर में बड़ा काम करता है। यह चढ़े हुए ज्वरमें देनेसे भी हानि नहीं करता। अतीस को तुलसीके रसके साथ देनेसे मलेरिया ज्वर नाश हो जाता है। बालकोंको मलेरिया ज्वर हो, तो यह अवश्य देना चाहिये। अगर ज्वर चले जाने पर हलका ज्वर या हरारत रह जाय; तो अतीस, नीमकी छाल और गिलोय का काढ़ा उचित मात्रासे पिलानेसे शेष रहा हुआ ज्वर नष्ट हो जाता है और बदनमें ताक़त आती है तथा भूख लगती है। अतीस पुष्टिकारक भी है। गर्भवती स्त्रियोंको जबकि ज्वरनाशक और दवाएँ गरमी करती हैं, यह ज्वरको नाश करता है तथा गर्भको किसी तरहकी हानि नहीं करता।

(३) हल्दी, दारुहल्दी, मुलहटी, कटेरी और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा बना कर सेवन करनेसे बालकोंका ज्वरातिसार, श्वास, खाँसी और वमन ये नाश हो जाते हैं।

(४) धायके फूल, बेलगिरी, धनिया, लोध, इन्द्रजौ और सुगन्धवाला,—इन सब को महीन पीसकर, शहतमें मिलाकर, अवलेह की तरह, चटानेसे बालकोंका ज्वरातिसार और वात-विकार नाश हो जाता है।

(५) लोध, इन्द्रजौ, धनिया, आमले, सुगन्धवाला और नागरमोथा,—इनको महीन पीसकर, शहतमें मिलाकर, चटानेसे ज्वरातिसार नाश हो जाता है।

(६) कुटकी का चूर्ण बनाकर, उसे मिश्री और शहदके साथ चटानेसे बालकों का ज्वर नाश हो जाता है। यह अवलेह परीक्षित है।

(७) कुटकी को जलमें पीसकर, बालकोंके शरीर पर उसका लेप करने से बालकों का ज्वर शान्त हो जाता है।

(८) नागरमोथा, काकड़ासिंगी और अतीस—इन तीनोंको महीन पीस-छानकर, शहतमें मिलाकर, चटानेसे दूध पीनेवाले बालकोंके ज्वर, खाँसी और वमन निश्चयही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

बाल अतिसार नाशक नुसखे।

(१) मँजीठ, धायके फूल, सिरवाली (सारिवा) और पठानी लोध—इन चारोंका काढ़ा, शीतल करके, शहत मिलाकर, पिलानेसे बालकोंका अतिसार (दस्तोंका रोग) आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) धायके फूल, लोध, बेलगिरी, नागरमोथा, मँजीठ और नेत्रवाला—इनका काढ़ा बनाकर पिलानेसे अथवा इन सबको पीस कूट छानकर, इनके चूर्णको शहदमें मिलाकर चटनीकी तरह चटानेसे बालकोंका अतिसार निश्चय ही आराम हो जाता है। यह नुसखा बालकोंके दस्त आराम करनेमें रामबाण है। बहुत बारका परीक्षित है।

(३) बेलगिरी, धायके फूल, नेत्रवाला, लोध और गजपीपल—इनका काढ़ा, शीतल होनेपर, शहत मिलाकर, पिलानेसे बालकोंका अतिसार अवश्य आराम हो जाता है। इन दवाओंको कूट-पीसकर, शहदमें मिलाकर, अवलेहकी तरह, चटानेसे भी बालकोंका अतिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है। अव्वल दरजे का नुसखा है।

(४) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, सुगन्धवाला और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा बनाकर, सवेरेही, पिलानेसे बालकोंके सब तरहके दस्त

बन्द हो जाते हैं। इसको "नागरादि क्वाथ" कहते हैं। बालकोंके अतिसार पर अव्यर्थ है। परीक्षित है।

(५) लजालू, धायके फूल, लोध और सारिवा—इनके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहद मिलाकर पिलानेसे, दुर्धर अतिसार भी आराम हो जाता है। कई बारका परीक्षित है।

नोट—लजालू या लज्जावतीकी जड़ लेनी चाहिये। यह नुसखा भी प्रथम श्रेणीका है। कैसे ही दस्त लगते हों बन्द हो जाते हैं।

(६) वायविड़ङ्ग, अजमोद और पीपलके चाँवल या दाने—इन तीनों का चूर्ण निवाये जलके साथ पिलानेसे बालकोंका आमातिसार (आँव मरोड़ीके दस्त) आराम हो जाता है।

(७) मोचरस, लज्जावतीकी जड़ और कमलकी केशर—इनको मिलाकर सवा तोले लो और चाँवल भी सवा तोले लो। पीछे ग्यारह तोले जलमें इन सबको मिलाकर, यवागूके कायदेसे, यवागू बनाकर बालकको खिलाओ। इससे रक्तातिसार या खूनके दस्त आराम हो जायँगे। इसको "मोचरसादि यवागू" कहते हैं। यह यवागू अन्न खानेवाले बड़े बालकको दी जाती है।

(८) धानकी खील, मुलहटी, खाँड और शहद—इनको एकत्र मिलाकर, चाँवलोंके पानीके साथ पीनेसे, बालकोंका प्रवाहिका रोग आराम हो जाता है।

(९) धनिया, अतीस, काकड़ासिंगी और गजपीपल—इनका चूर्ण बनाकर, शहतके साथ मिलाकर, चटानेसे बालकोंका अतिसार और वमन नाश हो जाती है।

(१०) सुगन्धवाला, मिश्री और शहद—इन तीनोंको एकत्र मिलाकर, चाँवलोंके जलके साथ पिलानेसे बालकोंके सब तरहके अतिसार, प्यास, वमन और ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

(११) सफेद कमलकी केशरको पीसकर, उसमें मिश्री और शहद

मिला कर, चाँवलोंके जलके साथ, सेवन करानेसे, वालकोंका प्रवाहिका रोग आराम हो जाता है।

(१२) बेलकी जड़का काढ़ा वनाकर, उसमें खीलोंका चूर्ण और मिश्री डालकर सेवन करानेसे, वालकोंकी वमन और अतिसार,—ये आराम हो जाते हैं।

(१३) कुलींजनको छाछमें घिसकर और थोड़ीसी हींग डालकर कढ़ी वना लो और वही खिलाओ। इससे वालकोंका अतिसार नाश हो जाता है।

(१४) काकड़ासिंगीका माशे या डेढ़ माशे चूर्ण, शहदके साथ, चटाने से बालकोंका अतिसार आराम हो जाता है।

(१५) ज़रासे प्याज़के रसमें बाजरे बराबर अफीम घोलकर देनेसे दस्त बन्द हो जाते हैं।

बालकोंकी हिचकीपर नुसखे।

(१) जामुन, तेंदूके फल और फूल—इन तीनोंको पीसकर घी और शहद में चटानेसे वालकोंकी हिचकी नाश हो जाती है।

नोट—जहाँ घी और शहद एक साथ लेने हों, वहाँ इनको बराबर-बराबर मत लेना। एक कम और एक जियादा लेना। जैसे, घी १ माशे और शहद २ माशे।

(२) पीपल और मुलेठी—इनको महीन पीसकर, शहद और मिश्री के साथ मिलाकर, बिजौरे नीबूके रसके साथ सेवन करनेसे हिचकी और वमन दूर होती हैं।

(३) कुटकीके चूर्णको शहतमें मिलाकर चटानेसे हिचकी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(४) हींग, काकड़ासिंगी, गेरू, मुलेठी, सोंठ और नागरमोथा—इन

का चूर्ण बनाकर, शहतमें चटानेसे हिचकी और श्वास आराम हो जाते हैं। यह अवलेह परीक्षित है।

बालकोंकी प्यास पर नुसखे।

(१) प्रियंगू, रसौत और नागरमोथा—इनको महीन पीसकर, शहद में मिलाकर चटानेसे बालकोंको बढ़ी हुइ प्यास, वमन और दस्त तीनों आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२) अगर ख़ाली प्यासका रोग हो, तो अनारके दाने, ज़ीरा और नागकेशर—इन तीनोंको महीन पीसकर, इनका चूर्ण मिश्री और शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी प्यास कम हो जाती है। परीक्षित है।

(३) सफेद प्याज़को भूँजकर खूब महीन पीस लो ; पीछे उसमें घी डालकर गोली बना लो और उसे भेजेपर लगा दो। ऊपरसे अरण्डका ताज़ा पत्ता रखकर कपड़ेसे बाँध दो। रोज़ शामको यह गोली निकाल फेंको और सिरको खूब धोकर तालुवेपर गाय का घी लगा दो। साथ ही सफेद प्याज़का रस, थोड़ी सी मिश्री और ज़ीरा मिलाकर, पिलाओ। इस तरह करनेसे बालकोंका प्यास-रोग अवश्य मिट जाता है।

बालकोंकी खाँसी आराम करनेवाले नुसखे।

(१) काकड़ासिंगी, नागरमोथा और अतीस—इन तीनोंका चूर्ण बनाकर और शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी खाँसी, ज्वर

और वमन,—ये नाश हो जाते हैं। अथवा अकेले अतीसके चूर्णको ही शहद मिलाकर चटानेसे बालकोंकी खाँसी, ज्वर और वमन आदि आराम हो जाते हैं। खाँसीपर तो यह रामबाण ही है। साथमें ज्वर आदि हों, तो उन्हें भी यह आराम करता है। परीक्षित है।

(२) नागरमोथा, अतीस, जवासा, पीपल और काकड़ासिंगी—इनका चूर्ण बनाकर, शहतमें मिलाकर चटानेसे, बालकोंकी पाँचों प्रकारकी खाँसी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३) धनिया और मिश्री—इनको पीसकर, चाँवलोंके जलके साथ पीनेसे बालकोंकी खाँसी और श्वास दूर हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) दाख, अड़ूसा, हरड़ और पीपल—इनका चूर्ण करके, शहतमें मिलाकर, तीन या पाँच दिन तक चटानेसे, बालकोंका श्वास, खाँसी और तमक श्वास आराम हो जाता है।

(५) अगर दूध पीनेवाले बालकको भयानक सूखी खाँसी हो, तो उसकी दूध पिलानेवालीको पीपल और घीसे भुना हुआ उड़दोंका यूष पिलाओ

(६) दाख, पीपल और सोंठ—इनका चूर्ण बनाकर, शहद और घीमें मिलाकर, चटानेसे बालकोंकी पाँचों तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

(७) कटेरीके फूलोंकी केशरको पीसकर, उसे शहदमें मिलाकर, चटानेसे बालकोंकी बहुत दिनोंकी पुरानी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(८) सोंठ, कालीमिर्च, सेंधानोन और गुड़—इनका काढ़ा, सुहाता-सुहाता गरम-गरम, पिलानेसे बालककी खाँसी अवश्य आराम हो जाती है। परीक्षित है।

———

बालकोंकी वमन नाश करनेवाले नुसखे ।

(१) दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागरकेशर—इन को महीन कूटपीस और छानकर, गायके गोबरके रस और शहद में मिलाकर चटानेसे बालकोंकी वमन (क़य) नाश हो जाती है ।

(२) कुटकीको महीन पीस-छानकर, शहदमें मिलाकर, चटानेसे बालकोंकी बहुत पुरानी वमन और हिचकी आराम हो जाती हैं ।

नोट—कुटकीका चूर्ण मिश्री और शहतमें मिलाकर चटानेसे बालकोंका ज्वर आराम हो जाता है । केवल शहदमें मिलाकर चटानेसे कय और हिचकी अवश्य आराम हो जाती हैं । यह "कटुक रोहिणी अवलेह" वास्तवमें इन तीनों रोगोंमें बच्चोंके लिये मुफीद है ।

(३) आमकी गुठली, धानकी खील और सेंधानमक—इन तीनोंका चूर्ण बनाकर, शहदमें मिलाकर चटानेसे, बालकोंकी दूधकी वमन आराम हो जाती है ; यानी बच्चोंका दूध गेरना बन्द हो जाता है ।

(४) कटेरीके फलोंका स्वरस, बड़ी कटेरीके फलोंका स्वरस, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन सबको एकत्र मिला कर चटानेसे, बालकका दूध डालना अवश्य आराम हो जाता है ।

(५) बेरके पत्ते, चाँगेरीके पत्ते, मकोयके पत्ते और कैथके पत्ते—इन को एकत्र पीसकर, इनकी लुगदीका बालकके सिरपर लेप करनेसे बालकके वमन और अतिसार (दस्त लगना) आराम हो जाते हैं ।

(६) मुलेठी और पीपलको पीसकर, बिजौरे नीबूके रसमें मिलाकर चटाने या पिलानेसे बालकोंकी वमन आराम हो जाती है ।

(७) पीले गेरूको महीन पीसकर, शहतमें मिलाकर सेवन करनेसे

बालकोंकी वमन आराम हो जाती है। इससे बच्चेको अवश्य सुख होता है।

नोट—इसे सोना गेरू भी कहते हैं। इस नुसखेसे खाँसी भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

विसर्प महापद्मक नाशक नुसखे ।

(१) सारिवा, लालकमल, नीलकमल, नागरमोथा, उशीर (खस), सफेद चन्दन, कमल, मँजीठ, मुलहटी और सरसों—इन सब को महीन पीसकर विसर्प पर लेप करने से विसर्प आराम होती है। परीक्षित है।

(२) बड़, गूलर, पीपल, पाखर, बेंत और जामुन की छाल, मुलेठी, मँजीठ, चन्दन, खस और पद्माख,—इनको महीन पीस कर लेप करने से बालकों के व्रण की जलन, लाली, विस्फोटक, पीड़ा और व्रण—ये आराम हो जाते हैं।

(३) घरका धूआँ, हल्दी, कूट, राल और इन्द्रजौ—इनको पीस कर लेप करने से बालकों का विसर्प रोग शमन होता है।

(४) कड़वे परवल, हरड़, बहेड़े, आमले, नीम और हल्दी,—इनका काढ़ा पीने से क्षत, विसर्प, विस्फोटक तथा ज्वर नाश हो जाते हैं।

बालकों का अफारा और वातशूल नाशक नुसखे ।
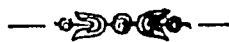
(१) सेंधानोन, सोंठ, हींग और भारंगी—इनका चूर्ण बनाकर, घीके साथ मिलाकर, खाने से बालकों के पेट का अफारा और बादी का दर्द मिट जाता है।

बालकों के मूत्राघात पर नुसख़ा।

(१) पीपल, सोंठ, मिश्री, शहद, छोटी इलायची और सेंधानोन,—इन सब को पीसकर और चटनी सी बनाकर चटानेसे बालकों के पेशाब की जलन वगैरः सब तकलीफें आराम होती हैं।

बालकोंकी खुजली प्रभृति नाशक नुसख़े।

(१) घरका धूँआँ, हल्दी, कूट, राई और इन्द्रजौ इनको छाछ या माठेमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म, पामा तथा विचर्चिका नामक कोढ़ दूर होता है।

(२) चन्दन, खस और पदमाख—इनको पीस कर लेप करने से भी सिध्म, पामा और विचर्चिका ये आराम होते हैं।

(३) वच, कूट और वायविडंगका काढ़ा बनाकर, उसमें कन्धों पर्य्यन्त बालक को स्नान करानेसे, कष्टसाध्य विचर्चिका, खुजली और दाद आराम हो जाते हैं।

(४) तिल और चाँवलोंको एक जगह पीसकर नाभि पर लेप करने से अथवा भारंगी और मुलेठी को पीसकर नाभि पर लेप करने से बालकों के सारे रोग नाश हो जाते हैं।

बालकोंका भय और रोदन बन्द करनेवाले उपाय।

—✳✳✳—

(१) अगर बालक बहुत ही रोता हो, तो पीपल और त्रिफलेका चूर्ण

करके, उसे घी और शहद में मिलाकर बालक को चटाओ। इससे बालकका बहुत रोना और डरना आराम हो जायगा।

(२) छछूंदर की लैंड़ी, उड़द, हल्दी, बेलके पत्ते, इन्द्रजौ और सिरस के पत्ते—इन सब की आग पर धूनी देनेसे बालकोंका रात को रोना और डरना मिट जाता है।

बालकोंके मुखस्राव पर नुसखा।

—०—

(१) सारिवा, तिल, लोध और मुलेठी—इन का काढ़ा बनाकर, रोज़ मुँहमें लगानेसे या मुँह धोनेसे स्राव आराम हो जाता है। परीक्षित है।

बालकोंके मुखपाक पर नुसखे।

(१) आमकी मींगी, लोह चूर्ण, सोना गेरू और रसौत—इन सबको पीसकर और शहतमें मिलाकर लेप करनेसे बच्चोंका मुख-पाक आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) पीपल की छाल और पीपल के पत्तोंको पीसकर और शहत में मिलाकर लेप करनेसे बालकोंका मुखपाक रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

तालुकंटक नाशक नुसखे।

---

(१) हरड़, वच और कूट—इनको जलमें पीस कर, लुगदीसी बनाकर और उसे शहतमें मिलाकर, माता के दूधके साथ पिलाने से

तालुकण्टक रोग—यानी वह रोग जिसमें तालुआ नीचे लटक जाता है और सिरमें गड्ढा पड़ जाता है तथा जिस रोगके मारे बालक दूध नहीं पीता—अवश्य आराम हो जाता है।

नोट—इस कल्कको माके दूधके साथ भी देते हैं और चाँवलोंके जलके साथ भी देते हैं। परीक्षित है।

कुकूणक नाशक नुसखे।

-*-

(१) हरड़, बहेड़ा, आमला, लोध, पुनर्नवा (साँठ), अदरख, कटेरी, और कटाई—इनको जलमें पीस कर, कुछ-कुछ गरम करके, सुहाता-सुहाता पलकों पर लेप करनेसे कुकूणक रोग नाश हो जाता है।

नोट—यह रोग पलकों पर होता है। नेत्रोंमें अत्यन्त पीड़ा, स्राव और खुजली होती है। बालक अपने माथे और नाक-आँखों को घिसता है, सूरजकी चमक बुरी लगती है और आँखें बन्द रखता है।

नाभि की सूजन और पाक आराम करनेवाले नुसखे।

—*—

(१) मिट्टी के ढेलेको आगमें गरम करके और पीछे दूधमें बुझा कर, उससे नाभि पर सुहाता-सुहाता सेक करनेसे नाभि (सूँडी) की सूजन नाश हो जाती है।

(२) हल्दी, लोध, फूल प्रियंगू और मुलेठी—इनको जलमें पीस कर, लुगदी सी बना लो और पीछे कलईदार बर्तनमें काले तिलका तेल और लुगदी मिलाकर तेल पकालो। इस तेलको नाभि

पर आहिस्ते-आहिस्ते लगाने और इन्हीं चारों दवाओंको महीन पीसकर बुरकनेसे नाभिपाक (सूंडी का पकना) आराम हो जाता है ।

(३) चन्दनका महीन बुरादा नाभि पर बुरकने से भी नाभि का पकाव आराम हो जाता है ।

(४) बकरी की मैंगनी जलाकर, उसकी राख नाभि पर लगानेसे भी नाभिका पकना मिट जाता है । परीक्षित है ।

(५) अगर नाभि उथल गई हो, तो हरा धनिया पीसकर लगाना चाहिये ।

गुदपाक नाशक नुसखे ।

वालकोंकी गुदा के पकाव में पित्तनाशक चिकित्सा करनी चाहिये । विशेष करके रसौत पिलाने और रसौतका लेप करनेसे गुदपाक आराम होता है ।

(२) शंख, मुलहटी और रसौत -इन औषधियों को पानीमें पीसकर लेप करनेसे गुदपाक आराम होता है । परीक्षित है ।

नोट—उत्कट गुदपाक रोगमें जौंक लगवाकर खून निकलवाना हितकारी है ।

अहिपूतन नाशक नुसखे ।

(१) गुदाके मल मूतको अच्छी तरह साफ न करनेसे खुजली और घाव हो जाते हैं तथा मवाद वहने लगता है,—उस रोगमें शङ्ख, सफेद सुरमा और मुलहटी—इनको पानीमें महीन पीसकर लेप करनेसे आराम होता है । परीक्षित है ।

पारिगर्भिककी चिकित्सा ।

इस रोगमें वालकको अग्निदीपन करनेवाली दवाएँ देनी चाहियें।

व्रणपश्चातककी चिकित्सा ।

इस रोगमें पित्तके कुपित होनेसे, जौंकके पेटकी समान, गुदामें लाल रङ्गका दाह, ज्वर और खाँसीयुक्त व्रण उत्पन्न होता है। इसमें मलका रङ्ग पीला होता है तथा मलस्तम्भ—कब्ज होता है। इसको व्रणपश्चातक रोग कहते हैं। यह अत्यन्त दारुण रोग है।

इस रोगमें चतुराईसे जौंक लगानी चाहियें और पञ्चक्षीर वृक्षोंके सुहाते-सुहाते गरम काढ़ेसे गुदाको धोना चाहिये।

(१) मुलेठीको पानीमें पीसकर लेप करनेसे यह रोग आराम होता है।

(२) चन्दन, दोनों सारिवा और शङ्खनाभि,—इनको पानीमें पीसकर इनका लेप करनेसे तथा इन्हीं दवाओंको सूखी पीसकर शहदमें मिलाकर चटानेसे व्रणपश्चातक आराम हो जाता है।

(३) विजयसारके फूलोंको महीन पीसकर, भातके माँड़में गोली बना कर सेवन करनेसे व्रणपश्चातक रोग आराम हो जाता है।

वालकोंकी सूजन पर नुसखे।

(१) नागरमोथा, पेठेके वीज, देवदारु और इन्द्रजौ—इनको जलमें पीस-कर पीनेसे वालकोंकी सूजन दूर हो जाती है।

(२) कालीमिर्चको नौनी घीमें मिलाकर सेवन करनेसे बालकोंकी सूजन दूर हो जाती है ।

बालकोंके सूखापाई रोग नाशक नुसखे ।

(१) जो बालक अच्छा खाने और जठराग्नि दीपन होनेपर भी सूखता चला जाय अथवा जो बालक दुर्बल हो, पर जठराग्नि अत्यन्त तेज़ हो, निरन्तर भूखा हो भूखा चिल्लाता हो, उसको विदारीकन्द, गेहूँ और जौका आटा—इन तीनोंको घीमें मिलाकर खिलाना चाहिये और ऊपरसे शहद और मिश्रीके साथ दूध पिलाना चाहिये ।

नोट—अगर दूध कच्चा माफिक़ हो, तो शहद और मिश्री मिलाकर पिला देना चाहिये । अगर कच्चा नुक़सान करे, तो दूध गरम करके, शीतल होनेपर, उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये ।

(२) सेंधा नमक, त्रिकुटा, बड़ो करञ्ज, पाढ़ और पहाड़ी करञ्ज—इनको एकत्र पीसकर, शहत और घीमें मिलाकर, सेवन करनेसे बालकोंका सूखना बन्द हो जाता है ।

दाँतोंका इलाज ।

(१) चूना और शहत मिलाकर दन्तपालीमें लगानेसे दाँत सहजमें जम जाते हैं ।

(२) धायके फूल, पीपल और आमलोंका रस—इनको एकत्र मिलाकर लगानेसे भी दाँत सहजमें जम जाते हैं ।

(३) काकड़ासिंगी और सागोनके द्वारा दूध पकाकर, उस दूधको

पाँवोंके तलवोंमें लेप करनेसे, शीघ्रही, वालकोंका सोते समय दाँत चवाना वन्द हो जाता है।

(४) केलेके फूलोंसे जो महीन-महोन तन्तुसे गिरते रहते हैं, उनको इकट्ठे करके रस निकाल लेना चाहिये। पीछे उस रसमें मिश्री और ज़ीरा मिलाकर, रोज़ एकवार, चार या ६ माशे वालकोंको पिलाना चाहिये और यही रस दिनमें १५।२० दफा मसूड़ोंपर लगाना चाहिये। इस उपायसे वालकका दाँत निकलनेका रोग मिट जाता है और बुख़ार वगेरः भी आराम हो जाते हैं।

(५) वालकके गलेमें सीप लटकानेसे भी दाँत जल्दी निकल आते हैं।

वालकोंके अन्यान्य रोग नाशक नुसख़े।

—⁂—

घावका इलाज।

(१) कड़वे नीमके पत्ते, दारुहल्दी, मुलहटी और घी—इनको पीस-कूट घीमें मिलाकर मलहम वना लो। इस मरहमके लगा-नेसे घाव भीतरसे भर जाता है। अगर घावमें ख़रावी हो, वहुत दवाओंसे आराम न हुआ हो; तो नीमके पत्ते डालकर, पानी औटा लेना और उससे घाव धोकर, ऊपरकी मरहम लगानी चाहिये। कैसाही घाव, फोड़ा नासूर आदि हो, लगातार कुछ दिन यह मरहम लगाने और धोनेसे आराम हो जायगा। अगर फोड़ा फूटकर वहता हो, तो कड़वे नीमके पत्ते पीसकर और शहदमें मिलाकर लगाने चाहियें। ये सव उपाय परीक्षित हैं।

होठ फटना ।

अक्सर बालकोंके और बड़े लोगोंके होठ खुश्कीकी वजहसे फट जाते हैं। उनके लिये नीचे लिखे उपाय करने चाहियें :—

(१) घीमें नमक मिलाकर, हर रोज़ दिनमें तोन दफा, नाभि पर मलना चाहिये ।

(२) तरबूज़की मींगी पानीमें पीसकर होठों या जीभपर मलनेसे होठ और जीभका फटना आराम हो जाता है।

पसलीका रोग !

—*—

इस रोगमें बुख़ार और खाँसी होती है और पसली दब जाती है। यह रोग दो तरहका होता है :—(१) वह जो मलकी गरमीसे होता है। इसमें ज्वर भी होता है। यह चिन्ताजनक नहीं है। इसमें भीतरके जोड़ छीलनेवाली चीज़ें जैसे,—तूतिया या जमालगोटा वगैरः न देने चाहियें ; बल्कि अमलताशका गूदा, उन्नाव, दाख या बनफशा प्रभृतिसे शीघ्र ही मल निकालना चाहिये। (२) वह होता है, जिसमें कफका ज़ोर होता है। यही भयदायक है। इसमें ज्वर और उर्द्ध्वश्वास होता है। इसीको डब्बेका रोग भी कहते हैं।

(१) कमीला आठ माशे और हींग एक माशे—इनको पीसकर और दहीके तोड़में खरल करके, गोलमिर्च-समान गोली बनाकर, दूध पीनेवाले बालकको एक गोली गरम जलके साथ देनी चाहिये और बड़े बालकको अन्दाज़से ज़ियादा देनी चाहिये। इससे डब्बेका रोग आराम हो जाता है।

(२) बालकके पेटपर रेंड़ीका तेल मलकर, उसपर बकायनकी पत्ती गरम करके सुहाती-सुहाती बाँधनेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है।

(३) सम्मग़ अरबी १ तोला और एलुआ ६ माशे—इनको कूट-छान कर, घीग्वार के रसमें मिलाकर, पेटपर लगानेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है।

(४) करेलेके पत्ते, अड़ूसे के पत्ते, पके नागरपान और जामुनकी छाल—इन सबका रस निकालकर और एकत्र करके, उस रसमें "वच" घिसकर, सात दिन तक पिलानेसे और पथ्य रखनेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

सिरमें जूँ ।

—※—

अगर लड़की या लड़केके सिरमें जूँ पड़ जायँ, तो कड़वे नीमके बीज पानीमें पीसकर सिरमें लगाओ या दाबो।

कानमें कीड़ा ।

—★—

अगर बालकके कानमे कीड़ा या मच्छर घुस जाय, तो मकोयके पत्तोंका रस कानमें टपकाओ। अथवा कसौंदीके पत्तोंका रस कान में टपकाओ। अगर कानमें कनखजूरा घुस गया हो, तो मरोड़-फली की जड़को रेंड़ीके तेलमें घिसकर, १०।१५ बूँद कानमें टप-काओ। इससे जानवर मरकर और फूलकर ऊपर आजायगा।

बिच्छू प्रभृति का इलाज ।

—★—

अगर डाँस काट खावे, तो काटे स्थानपर प्याज़का रस लगा दो।

अगर बिच्छू काट खाय, तो प्याज़के दो टूकड़े करके लगाओ। अथवा सफेद कनेरको घिसकर, डङ्कपर लगाओ अथवा कनेरकी जड़ घिसकर पिलाओ। इसके लगाने और पिलानेसे साँप और बिच्छू दोनोंका ज़हर उतर जाता है। हुरहुजके पत्तोंका रस नाकमें टप-काने और उसी रसको डंकपर लगानेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता

है। सेंधानोन घीमें मिलाकर वारवार लगाने अथवा तिलके तेलका तरड़ा देनेसे विच्छूका ज़हर उतर जाता है। सत्यानाशीको जड़की छाल, पानमें रखकर, खानेसे विच्छूका ज़हर उतर जाता है। घीमें सेंधानोन मिलाकर पीनेसे विच्छूका ज़हर उतर जाता है। ज़ीरेको जलमें पीसकर, लुगदी सी वनाकर, उसमें घी और सेंधानोन मिलाकर गरम करो और शेषमें शहद मिलाकर विच्छूके काटेपर लेप करो, तो ज़हर उतर जायगा।

साँप काट खाय, तो सिरसके पत्तोंके रसमें सात दिन तक भावना दी हुई सफेद मिर्चोंकी नस्य दो या आँखोंमें आँजो; अवश्य लाभ होगा। घरका धूआँ, हल्दी, दारुहल्दी और जड़ समेत चौलाई—इन सव को दहीमें पीसकर और घी मिलाकर पिलाओ।

वड़का अङ्कुर, मंजीठ, जीवक, ऋषभक, वला, गँभारी और मुलहटीको महीन पीसकर पोनेसे सव तरहका ज़हर उतर जाता है।

सफेद चिरमिटीकी जड़ घिसकर पिलानेसे साँप का ज़हर उतर जाता है।

नीमके पत्ते और निमक अथवा नीमके पत्ते और कालीमिर्च चवानेसे भी साँपका ज़हर उतर जाता है। जव तक ज़हर न उतर जाय, इनका चवाना वन्द न करना चाहिये। जव ज़हर उतर जायगा, तव ये कड़वे लगने लगेंगे।

सफेद कनेरके सूखे फूल और कड़ी तमाखू बराबर-बराबर लेकर और थोड़ासा इलायचीका चूर्ण मिलाकर, पीस-छानकर सुँघानेसे साँपका ज़हर उतर जाता है।

पिठवनके पत्तोंका रस पिलानेसे साँपका ज़हर उतर जाता है।

सिरसकी जड़ वकरेके मूतमें पीसकर लेप करने या पिलानेसे चूहेका ज़हर उतर जाता है।

इन्द्रायणकी जड़, अङ्कोलकी जड़, तिलकी जड़ और मिश्री,—

इन को पीसकर और शहद तथा घीमें मिलाकर पीनेसे भयानक चूहेका विष भी उतर जाता है।

हल्दी, दारुहल्दी, समंगा, पतंग और नागकेशर—इनको जलमें पीसकर लेप करनेसे मकड़ीका ज़हर उतर जाता है।

हल्दी, दारुहल्दी और गेरूको जलमें पीसकर लेप करनेसे नाखून और दाँतोंका ज़हर उतर जाता है। आदमीको उस स्थानपर पेशाब करानेसे भी लाभ होता है।

नहरू या वाला।

अगर नहरू या वाला निकल आवे, तो कड़वे नीमके पत्ते पीस कर उसका लेप करनेसे नहरू आराम हो जाता है।

बाल न आना।

अगर कहीं बाल न आते हों, तो कड़वे परवलके पत्तोंका रस उस जगह लगाओ।

अगर सिरमें गञ्ज हो, तो अरीठेके पत्तोंसे सिर धोओ और करञ्जेका तेल, नीबूका रस और कड़वे कैथके बीजोंका तेल मिलाकर लगाओ।

हाथीदाँतकी राख और रसौत लगानेसे फौरन बाल आ जाते हैं।

लू या आगकी लपक लगना।

अगर बालकको लू से बचाना हो, तो एक प्याज़का गट्ठा हर समय उसके पास रक्खो।

अगर लू या आगकी लपक लग जाय, तो एक प्याज़को भूँजलो और एकको कच्चा रखो ; पीछे उनको सिलपर पीसकर और साथ ही दो माशे ज़ीरा और दो तोले मिश्री मिलाकर खिलाओ।

धनिया जलमें पीसकर और मिश्री मिलाकर पिलानेसे—न लू लगती है और न आम खानेसे गरमी होती है।

अगर आगकी लपक लग जावे, तो ख़रबूज़ेके वीज पीसकर सिर पर लगाओ और रस शरीर पर मलो।

पेटका रोग।

अगर वालकके पेटमें कीड़े हों या वदहज़मीका रोग हो, तो प्याज़का रस निकालकर पिलाओ।

अगर वालकके पेटमें दर्द हो, तो करेलेके पत्तोंका रस एक पैसे भर ज़रा सी हल्दी मिलाकर पिला दो; कय और दस्त होकर पेट साफ हो जायगा।

अगर अजीर्ण हो, तो नीवूके रसमें केशर घिसकर चटा दो। अगर पेटमें मल रुक रहा हो, तो नीवूके रसमें जायफल घिसकर चटा दो।

अगर वालकके पेटमें कीड़े हों, तो केशर और कपूर एक-एक चाँवल भर या कम-ज़ियादा खिलाकर दूध पिला दो।

अगर पेटपर अफारा हो, तो गधेकी लीद गरम करके पेट पर बाँधो अथवा सरसोंकी खल गरम करके बाँधो अथवा आकके पत्ते घीसे चुपड़कर और सेककर बाँध दो अथवा हींगको जलमें पीसकर और गरम करके सूँडीके आसपास और सूँडीपर लेप कर दो।

वालकके पेटमें से मिट्टी निकालना।

अगर वालकके पेटमें मिट्टी हो, तो पका केला शहदमें मिलाकर खिलाओ।

केशर, मुलहटी, पीपर और निशोथ-इनका काढ़ा वनाकर, चिकनी मिट्टीको काढ़ेमें डुवाकर सुखादो। इस तरह चार वार डुवाओ और सुखाओ; पीछे उसी मिट्टीको वालकको खिलाओ। उसके खानेसे खाई हुई मिट्टी निकल आवेगी।

बालककी आँखमें रोग।

अगर वालककी आँखमें मातासे फूला पड़ जाय, तो दूधमें चिरमिटी घिसकर आँजो।

अगर वालककी आँखमें गरमी हो, तो प्याज़के रसमें मिश्री मिला कर आँजो। अथवा लालचन्दन घिसकर आँखके ऊपर लगाओ।

अगर वालककी आँख दुखती हो, तो प्याज़का रस आँखमें डालो।

धनियाको एक कपड़ेकी पोटलीमें वाँध कर पानीमें भिगो दो। पीछे उसे वारम्वार दुखती आँख पर लगाओ। इससे सुख मालूम होगा।

अगर आँखोंमें जलन हो, तो गुलाव-जलके छींटे आँखोंमें मारो अथवा केशरको घोटकर शहदमें आँजो।

लोध १ माशे, भूनी फिटकरी १ माशे, अफीम आध माशे और इमलीकी पत्तियाँ ४ माशे—सवको पीसकर पोटली वनालो और पानीमें भिगो-भिगोकर आँखोंपर फेरो। इससे आँखोंकी पीड़ा निश्चय ही कम हो जाती है। इमलीकी पत्तियाँ, सिरसकी पत्तियाँ, हल्दी और फिटकरी,—सवको वरावर-वरावर सवा दो-दो माशे लेकर, महीन कूट कर, पोटली वनाकर और पानीमें भिगोकर आँखों पर फेरनेसे और कुछ आँखोंमें टपकानेसे आँखोंकी पीड़ा और समल वायु आराम हो जाती है।

कपूर ३ माशे और पठानी लोध १ माशे—दोनोंको पीसकर पोटली वाँधकर और १ घण्टे पानीमें भिगोकर, आँखोंपर फेरनेसे और भीतर टपकानेसे दुखती आँखमें लाभ होता है।

फिटकरी १ माशे और अलसी दो माशे—विना पीसे पोटलीमें वाँधकर, पानीमें भिगोकर, आँखोंपर फेरनेसे आँखोंकी ललाई जाती रहती है।

जिस दिन आँख दुखनी आवे, उसी दिन धतूरे की पत्तियों का रस निकालकर और कुछ गरम करके कान में टपकाओ। अगर बाईं आँख में पीड़ा हो, तो दाहने कान में टपकाओ और अगर दाहनी आँख में दर्द हो, तो बायें कान में टपकाओ।

नीमकी कोंपलें पीसकर रस निकाल लो और ज़रा गरम कर लो। अगर दोनों आँखों में दर्द हो, तो दोनों कानों में टपकाओ। अगर दाहनी आँख में ही दर्द हो, तो बांयें कान में टपकाओ। अगर बाईं आँख में दर्द हो, तो दाहने कान में टपकाओ। दुखती आँख में लाभ होगा।

बड़ का दूध आँखों में लगानेसे नेत्र-पीड़ा फौरन आराम हो जाती है।

कटाई के पत्तों का रस आँखों में टपकाने और कटाई के पत्ते पीस कर आँखों पर बाँधने से दुखती आँख में अवश्य लाभ होता है, पर लगता बहुत है।

अगर रतौंधी हो, तो प्याज़ का रस आँखों में लगाओ अथवा समन्दर-फलका गूदा बकरी के मूत्र में पीसकर आँजो अथवा लाहौरी नमक की सलाई आँखों में फेरो अथवा दही के पानी में थूक मिलाकर आँजो अथवा अदरख का रस आँखों में टपकाओ अथवा हुक्के के नेचे की कीट आँखों में आँजो अथवा कालीमिर्च थूक में घिस कर आँजो।

बालकके तुतलानेका इलाज।

अगर बालक तुतलाता हो, तो "लघु ब्राह्मी" के ताज़ा पत्ते कुछ रोज़ लगातार खिलाओ। इनसे जीभ नर्म और पतली हो जायगी।

बालकको जल्दी बढ़ानेका उपाय।

अगर बालकको जल्दी बढ़ाना हो, तो प्याज़ और गुड़ मिलाकर कुछ दिन खिलाओ। अगर बालककी चैतन्यता बढ़ानी हो, तो मक्खन और छुहारे खिलाओ।

बहरापन का इलाज।

अगर किसी कारण से कान से कम सुनाई देता हो, तो सफेद कत्था कपड़े में छान कर, गरम पानी में मिलाकर, पिचकारी द्वारा कानमें पहुँचाना चाहिये और पीछे कानको धोकर साफ कर लेना चाहिये। अगर किसी ज़ख़्म वगैरः के कारण से बहरापन होगा या माता के पीछे बहरापन हो गया होगा, तो आराम हो जायगा।

मुबारकी रोग का इलाज।

अगर बालक के पेटमें मल की गाँठ बँध गई हो, पेट फूल रहा हो, पसली दुखती हो, गालों पर सूजन हो, पेशाब पीला हो, कमज़ोरी हो; तो समझ लेना चाहिये कि "मुबारकी" रोग है। अगर मुबारकी रोग हो, तो खैर की अन्तर छाल ३ माशे और गौरोचन आधे उड़दके बराबर—गायके दूधमें घिस कर, रोज़ सवेरे, ३ दिन तक, सेवन करानेसे अवश्य लाभ होगा।

मुख के घावों का इलाज।

अगर बड़े बालक के मुँह मे घाव हों, तो सफेद चिरमिटीके पत्ते, शीतलचीनी और मिश्री मुँहमें रख कर चूसनी चाहिये। अथवा चिरमिटी की जड़ चबानी चाहिये अथवा शहद और शीतल जल मिलाकर गरगरे करने चाहियें।

पेटके दर्दका इलाज ।

अगर पेटमें दर्द हो, तो एलुआ, हल्दी, फिटकरी, नौसादर और सुहागा—इन को गोमूत्रमें पीसकर पेट पर गरम-गरम लेप करो ।

बड़े पेट के घटाने का उपाय ।

अगर पेट बहुत बढ़ गया हो और उसे छोटा करना हो; तो शहद में शीतल जल मिलाकर रोज़ सवेरे पिलाओ ।

पैर फटना ।

अगर पैर फट गये हों, तो औरत का दूध, गुड़, घी, शहद और गेरू बराबर-बराबर लेकर और मिलाकर लेप करो, पैर कमल-जैसे हो जायँगे ।

फुन्सियोंका इलाज ।

अगर बालकके शरीर पर फुन्सियाँ हों, तो रेवन्दचीनी की लकड़ी पानीमें घिस कर लेप करो। अगर फोड़ा हो, तो आमले की राख घीमें मिलाकर लेप करो। अगर फोड़े-फुन्सी बहुत हों, तो आमलोंको दहीमें भिगोकर लगाओ या नीम की छाल जलमें घिस कर लगाओ ।

बालकको दस्त करानेका सहज उपाय ।

अगर बालकको दस्त कराने हों, तो रातको छुहारा पानी में भिगो दो। सवेरे उसे उसी पानी में मसल कर निचोड़ लो और छुहारे को फेंक दो। पीछे वही पानी पिलाओ, दस्त होंगे। अथवा थोड़ेसे गुलाबके फूल और चीनी खिलाकर ऊपरसे पानी

पिला दो, दस्त होंगे। रेवन्दचीनी की जड़ या शीरा बालक के बल-माफिक दूध में घिस कर पिला दो, दस्त होंगे। बड़े आदमी को १॥ माशे शीरा चीनी या शहत में मिलाकर चाटने से दस्त होंगे। दो भाग दाख और १ भाग हरड़ को कूट-पीसकर, ८ माशे रोज़ खाने से कब्ज़ मिट जाता है। यह जवान की माता है।

कमज़ोर बालक को ताक़तवर बनाने का उपाय।

अगर बालक कमज़ोर हो, तो बलाबल अनुसार ६ माशे से ३ तोले तक छुहारे लेकर, पानी में धोकर साफ कर लो और गुठली निकाल कर दूध में भिगो दो। थोड़ी देर बाद छुहारों को निकाल कर, सिल पर पीस लो और कपड़ेमें रख कर रस निचोड़ लो। इस तरह दिन में ३ बार, हर बार ताज़ा रस निकाल कर, बालक को पिलाओ। बालक में खूब ताक़त आ जायगी। एक महीनेसे कम उम्र के बालक को यह रस न पिलाना चाहिये।

ज्वरके उपद्रव और उनकी चिकित्सा।

सभी ग्रन्थकारोंने ज्वर रोगके उपद्रव और उनके उपाय ज्वरकी चिकित्साके शेषमें लिखे हैं। हम भी उसी तरह उनका लिखना यहीं मुनासिब समझते हैं। यद्यपि ज्वरकी सामान्य चिकित्सा करते समय और विशेष चिकित्सा करते समय—दोनों ही समय इसकी ज़रूरत होती है। ज्वरके दश उपद्रव ये हैं—

श्वासोमूर्च्छाऽरुचिच्छर्दिस्तृष्णातीसार विड्ग्रहाः।
हिक्काकासांगदाहश्च ज्वरस्योपद्रवादश॥

श्वास, बेहोशी, अरुचि, कय होना, प्यास लगना, पतले दस्त होना, दस्तक़ब्ज़, हिचकी, खाँसी और दाह*—ये ज्वरके दश उपद्रव हैं। इनमेंसे दो-एक उपद्रव तो प्रायः ज्वरमें होते ही हैं।

---

* कहीं कहीं ऐसा भी लिखा है,—

तृष्णा मूर्च्छारुचिः श्वासच्छर्द्यतीसार विड्ग्रहाः।
कासोहिक्कांगभेदश्च ज्वरस्योपद्रवा दश॥

और तो वेही नौ उपद्रव लिखे हैं। यहाँ शरीरमें दाह होनेकी जगह शरीरमें फूटनी होना लिखा है। ज्वरमें दाह भी होता है और शरीर में फूटनी भी होती है।

उपद्रवोंका न होना सबसे अच्छा है, कम होना कम कष्टकर है और बहुत होना बहुत बुरा है। बढ़े हुए उपद्रव बड़ी तकलीफ देते हैं; इस लिये उपद्रवोंका शान्त करना आवश्यक है। उपद्रवोंके शान्त करनेसे रोगीको आराम मिलता है। उपद्रवोंके शान्त करनेकी चेष्टा करनी चाहिये; परन्तु कोई भी क्रिया ज्वर-विरोधी न करनी चाहिये। उपद्रवों पर कम नज़र रखना और मूल रोग परही नज़र रखना नादानी है। मूल रोगसे उपद्रव ज़ियादा ख़राब होते हैं। इनसे बहुत जल्दी प्राण नाश होते हैं। इसलिये उपद्रवोंको तत्काल नाश करना जरूरी है। भावमिश्र लिखते हैं,—"अनेक वैद्य कहते हैं कि, रोगके शान्त होनेसे उपद्रव आपही शान्त हो जाते हैं, इसलिये पहले असल रोगको जीतना चाहिये; परन्तु हमारी रायमें पहले उपद्रवोंको जीतना चाहिये और उपद्रवोंमें भी जो ज़ियादा तकलीफ देनेवाला हो, उसे सबसे पहले जीतना चाहिये। अगर मूल रोग बलवान हो और उपद्रव बलहीन हों, तो पहले मूल रोगको ही जीतना चाहिये। उपद्रव और रोगकी विरोधी न हो, ऐसी चिकित्सा एकही समय करनी चाहिये; अर्थात् उपद्रव—और रोग दोनोंका इलाज साथ-ही-साथ करना चाहिये; पर विरोधी चिकित्सा कभी न करनी चाहिये। जैसे;—सन्निपात ज्वरकी ठीक चिकित्सा करते-करते, दाहका ज़ोर देखकर, रोगीको शीतल जलमें ग़ोते लगवा देना; इससे रोगी मर जायगा।

श्वास।

—*—

ज्वरके उपद्रवोंमें पहले श्वास लिखा है। ज्वरमें यह उपद्रव बड़ा ख़राब है। ज्वरमें हिचकी और श्वासका होना बहुत बुरा है।

जिन कारणोंसे हिचकी रोग होता है, उन्हीं कारणोंसे श्वास होता है। वायु कफके साथ मिलकर प्राण, जल और अन्नके बहनेवाली राहोंको रोक देता है; तब कफके मारे उसकी आपकी राह भी रुक जाती है; तब वह श्वास पैदा करता है। श्वासमें वायुका कुपित होना ही मुख्य कारण है। श्वास पाँच प्रकारके होते हैं। उनके लक्षण और चिकित्सा हम किसी अगले भाग में लिखेंगे। यहाँ हम ज्वरमें यदि श्वासका उपद्रव हो, तो उसके दबानेके चन्द उपाय लिखते हैं; क्योंकि यह ऐसा उपद्रव है कि, शीघ्रही उपाय न करनेसे फौरन प्राण नाश करता है। यह बहुधा छाती पर कफके सूखनेसे होता है। कफको पतला करना और हवाके आने-जानेकी राह साफ करना ही इसका उत्तम उपाय है।

श्वासनाशक उपाय।

—*—

(१) छोटी पीपर, कायफल और काकड़ासिंगी—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर, चूर्ण कर लेना चाहिये। इनका ४।६ या ८ रत्ती चूर्ण शहतमें मिलाकर चाटनेसे श्वास दब जाता है। यह चूर्ण सुबह शाम दो बार चाटना चाहिये और कम-से-कम दो रोज़ देखना चाहिये। यह हमारा आजमूदा नुसखा है। अवश्य फायदा करता है। अगर दो रोज़ में फायदा न करे या दवा चटानेपर भी रोग बढ़े ही बढ़े—घटे नहीं, तो दूसरा उपाय करना चाहिये।

(२) अदरखके रसमें शहद मिलाकर चटानेसे श्वास, खाँसी और जुकाम में अवश्य लाभ होता है। जुकामके कारणसे हुए श्वास खाँसीमें तो निश्चय ही यह फायदा करता है। अनेक बार आज़मा चुके हैं।

(३) सोंठका काढ़ा बनाकर, उसमें शहद मिलाकर पिलानेसे भी श्वास में लाभ होता है।

(४) काकड़ासिङ्गी, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपर), त्रिफला; कटेरी, भारङ्गी, पोहकरमूल और पाँचों नमक—इन सबको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लेना चाहिये। इस चूर्णको १।२ या ३ माशे, रोगीके बलाबल अनुसार, गरम जलके साथ खिलानेसे अवश्य लाभ होता है। यह चूर्ण हिचकी, श्वास, ऊर्ध्वघात, खाँसी, अरुचि और पीनसमें बड़ा गुण करता है।

(५) अगर गलेमें कफका घरघराहट बहुत हो, यानी कफका ज़ोर हो; तो अदरखका रस निकालकर, उसमें २ चाँवल या ४ चाँवल या १ ही चाँवल-भर कस्तूरी घोटकर पिलानेसे बहुत लाभ होता है। जब तक श्वास न दबे तबतक, हलकी मात्रा कस्तूरीकी दिनरातमें ३।४ बार अदरखके रसमें पिलानी चाहिये। परीक्षित है।

(६) सोंठको तवेपर अधभूँजी करके और उसको महीन पीसकर, छातीपर मलनेसे श्वासमें बहुत जल्द लाभ नज़र आता है। परीक्षित है।

(७) कुलथी, काकड़ासिंगी, अड़ूसा और सोंठ—इनका काढ़ा करके उसमें पोहकरमूलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे श्वास, खाँसी, हिचकी और अरुचि शीघ्रही आराम होते हैं।

(८) दशमूलके काढ़ेमें पोहकरमूलका चूर्ण (अथवा अरण्डकी जड़) मिलाकर पीनेसे श्वास में अवश्य लाभ होता है, खाँसी और पसलीके दर्दमें भी फायदा होता है। श्वासवालेको यह परमोत्तम उपाय है। परीक्षित है।

(९) बिना धूएँकी आगमें की हुई मोरपंखकी राख २ रत्ती और पीपलका चूर्ण २ रत्ती—इनको शहद में मिलाकर चाटनेसे भी श्वासमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(१०) हल्दी, कालीमिर्च, दाख, गुड़, रास्ना, पीपल और कचूर—इन को बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर चूर्ण करके १।२ या ६ माशे चूर्ण शहतके साथ चाटनेसे श्वास नाश होता है।

(११) साहस करने, भयङ्कर पदार्थ दिखाने, अति हर्ष, अति क्रोध या डरानेसे जिस तरह हिचकीमें लाभ होता है; उसी तरह श्वासमें भी अनेक बार लाभ होते देखा गया है।

(१२) दोनों पसवाड़ोंमें तथा हाथोंकी बीचकी उँगलियोंमें गरम लोहेसे दागनेसे घोर श्वास भी दब जाता है। किसी-किसीने कंठ-कूपको भी गरम लोहेसे दागना अच्छा लिखा है।

(१३) आरने ऊपलोंकी आगमें दरांतको गरम करके, उसकी नोकसे हड्डी पञ्जर—पसवाड़ेमें दाग देनेसे श्वास रोग अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१४) धतूरेके जड़की छालको छायामें सुखा लो। पीछे कोई चार आने-भरके अन्दाज़से चिलममें रखकर, रोगीको तमाखूकी तरह पिलाओ। इससे भी श्वास दब जाता है; पर यह भी गरम ही उपाय है। अगर रोगी चिलम न पीसके, तो न पिलाना चाहिये।

(१५) हिचकी और श्वासमें पोहकरमूल, जवाखार और कालीमिर्च—इनका चूर्ण गरम जलके साथ लेनेसे बड़ा फायदा होता है।

वमन नाशक उपाय।

(१) पित्तपापड़ेके काढ़ेमें शहद मिलाकर पिलानेसे ज्वर समेत वमन नाश हो जाती है। पित्तपापड़ा २ तोले लेकर, आधसेर जलमें औटाना चाहिये और चौथाई जल रहनेपर उतार लेना चाहिये।

(२) छोटी हरड़के चूर्णको शहदमें मिलाकर चटानेसे अनेक तरहकी वमन या कय नाश हो जाती हैं। इस उपायसे दोष नीचे जाता है, इसीसे वमन झट आराम हो जाती है।

(३) गिलोय, नीम, परवल और त्रिफला—बराबर-बराबर छै-छै माशे लेकर काढ़ा बनाने और उसमें शहद मिलाकर पिलाने से पित्त-प्रधान त्रिदोषजन्य दुर्जय वमन तथा अम्लपित्त भी आराम हो जाता है।

(४) चन्दन उबालकर उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पिलानेसे पित्तकी वमन आराम हो जाती है।

(५) मक्खीका गू शहदमें मिलाकर चटानेसे पित्तकी वमन आराम हो जाती है। अगर शहद न हो, तो चीनीके साथ भी चटा सकते हो।

(६) पानीमें पुराने चाँवल भिगो दो। पीछे कोई घण्टेभर बाद मल कर पानी निकाल लो। उसमें ज़रासी मिश्री मिलाकर पिलाओ। इससे भी वमन आराम होती है।

(७) गिलोयके काढ़ेमें शहद मिलाकर पिलानेसे वमन आराम होती है; परन्तु काढ़ेको शीतल करके शहद मिलाना चाहिये।

(८) पीपलकी छालको जलाकर राख करलो और उसी समय पानीमें भिगोदो। उसी पानीको थोड़ा-थोड़ा रोगीको पिलाओ। इस उपायसे कठिन-से-कठिन वमन शान्त होगी। परीक्षित हैं।

(९) बरफका टुकड़ा मुँहमें रखनेसे वमन और हिचकी तथा प्यासमें लाभ होता है।

(१०) बायबिड़ङ्ग, हरड़, बहेड़ा, आमला और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करलो। इस चूर्णमेंसे माशे-माशे भर चूर्ण शहद मिलाकर चटानेसे कफकी वमन आराम हो जाती है।

(११) इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरका गूदा, धानकी खीलें, फूल-प्रियंगू, मोथा, चन्दन और पीपल—इनको बराबर-बराबर लाकर, कूटपीस-छानकर चूर्ण बनालो। इसको "एलादि चूर्ण" कहते हैं। इसको शहद और खाँड़ मिलाकर चटानेसे कफ, वायु तथा पित्तसे उत्पन्न हुई वमन निश्चय ही नाश हो जाती है। वमन बन्द करनेको रामबाण है। ज्वरमें दिया जा सकता है।

(१२) मिश्री, चन्दन और शहद —इनको एकत्र करके, उसमें मक्खी की विष्ठा मिलाकर सेवन करनेसे उपद्रवयुक्त पित्तकी वमन नाश हो जाती है।

(१३) वमनके साथ प्यास और दाह हो ; तो दाखके रसमें शहत मिलाकर पिलाओ।

(१४) पीपलके पेड़की सूखी छाल जलाकर जलमें बुझा दो और उस जलको वमनवालेको पिलाओ। इस उपायसे मुश्किलसे आराम होने योग्य वमन भी तत्काल आराम होती है। परीक्षित है।

(१५) कमलगट्टे लाकर छिलका उतार डालो और साथही भीतरकी पत्ती भी निकाल डालो। पीछे १ तोले गुलो लेकर डेढ़पाव जलमें औटाओ ; जब आधा पानी रह जाय, मल-छानकर निकाल लो और उसमें ८ माशे मिश्री मिला दो। जिस रोगीको उल्टियाँ होती हों या सूखी ओकारियाँ आती हों, उसे एक-एक चम्मच आध-आध घण्टेमें पिलाओ ; निश्चयही आराम होगा। परीक्षित है।

(१६) अगर ज्वरवालेको पतले दस्त भी हों और वमन भी होती हों ; तो आमकी गुठली और बेलगिरी दोनों ६।६ माशे लाकर काढ़ा बनाओ। शीतल होनेपर कायदेसे शहत और खाँड

मिला दो। इसके पीनेसे वमन और पतले दस्त दोनों इस तरह आराम हो जाते हैं, जिस तरह आहुति अग्निसे नाश हो जाती है।

(१७) गाँठवाले पीपलामूलको लाकर कूटपीस कर महीन छान लो। फिर उसमें बराबरका सोंठका पीसा-छना चूर्ण मिला दो। इसमें से ३ माशे चूर्ण ६ माशे शहदके साथ चटाओ। इससे वमनमें बड़ा लाभ होता है। परीक्षित है।

(१८) चाँवलके धोवनमें ज़रासा जायफल घिसकर पिलानेसे कय बन्द हो जाती है। परीक्षित है।

(१९) मक्खियोंके गूको और चन्दनको शहद या मिश्रीके साथ चाटनेसे ज्वरकी वमन मिट जाती है। परीक्षित है।

(२०) गिलोयकाका काढ़ा बनाकर, शीतल करके, शहत मिलाकर पीनेसे वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(२१) पीपरका चूर्ण और मोरके पङ्ख (चन्दोये) की राख, शहतमें मिलाकर, बारम्बार चाटनेसे वमन, खाँसी, दमा और हिचकी ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२२) चाँवलोंके धोवनमें जायफल घिसकर पिलानेसे हिचकी और वमन निश्चय ही नाश हो जाती हैं। खाली जायफलका टुकड़ा सुपारीकी तरह मुखमें रखनेसे प्यास नाश हो जाती है।

तृष्णा या प्यास नाशक उपाय।

पित्त और वातके, ऊपर आकर, तालुएको दूषित करनेसे प्यास पैदा होती है। तृष्णा रोग सात प्रकारका होता है। उसके अलग-अलग लक्षण और चिकित्सा हम अगले भाग में लिखेंगे। यहाँ ज्वरमें

जो प्यासका उपद्रव होता है, उसीके चन्द उपाय लिखते हैं। जब प्यास का ज़ोर होता है ; तब गला, होंठ, मुँह और तालू ये सूखने लगते हैं और इससे मोह, भ्रम, दाह, सन्ताप और बकवाद ये लक्षण बहुधा होते हैं। सभी लक्षण हमेशा नहीं होते ; कभी कम और कभी सभी लक्षण होते हैं।

(१) बड़की जटा, महुआ, धानकी खील, कूट और कमलगट्टेकी गिरी—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करलो। पीछे छान कर शहदमें गोली बना लो। इन गोलियोंके मुँहमें रखनेसे प्यास शान्त होती है। कोई-कोई महुएकी जगह "आमला" लेते हैं। प्यास नाश करनेके लिये यह नुसख़ा उत्तम और परीक्षित है।

(२) बिजौरा, कैथ, अनार, लोध्र और बेर—इनको बराबर-बराबर लेकर और जलमें पीसकर, मस्तकपर लेप करनेसे दाह और शोष सहित प्यास आराम होती है।

(३) जीभ, तालू और कण्ठ सूखते हों और प्यास बहुतही हो ; तो बिजौरे नीबूके रसको घी और सेंधे नमकके साथ पीसकर, मस्तक पर लगानेसे तत्काल शान्ति होगी।

(४) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, धनिया, खस और सफेद-चन्दन—इनको बराबर-बराबर लेकर हाँड़ीमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतार लो। पीछे छानकर शीतल करलो। इस "षडङ्ग पानीय"के पीनेसे प्यास, दाह और ज्वर शान्त हो जाते हैं।

नोट—इस नुसख़ेमें कुछ आमले भी डाल दो, तो और भी उत्तम हो।

(५) अगर प्यास बहुत ही बढ़ी हो और पहले लिखे ज्वरमें वमन विरेचनके नियमोंके अनुसार गड़बड़ी न होती हो, रोगी इस लायक़ हो ; तो पीपलका काढ़ा पिलाकर अथवा शीतल जलमें शहद मिलाकर, गले तक पिलाकर और अङ्गुली डालकर

कय करा दो। कफकी प्यासमें नीमका काढ़ा पिलाकर वमन करा देना अच्छा है। तत्काल फायदा होगा।

नोट—जब प्यासका जोर तो घटे नहीं और पानी पीते-पीते पेट फूल जाय—अफारा हो जाय, तब इन उपायोंसे काम लेना चाहिये।

(६) आमले, कमल, कूट, धानकी खीलें और वड़के अङ्कुर—इन सबको बराबर-बराबर लेकर और एक जगह पीसकर, शहतमें गोली बनाकर, मुँहमें रखनेसे महा उग्र प्यास और दारुण शोष फौरन आराम होता है।

(७) सोने, चाँदी या मिट्टीके ढेलेको आगमें लाल करके, पानीमें बुझा देनेसे और वही पानी रोगीको पिलाते रहनेसे वादीकी प्यास शान्त हो जाती है। इस जलको सुहाता-सुहाता पिलानेसे बहुत लाभ देखा गया है।

(८) कुंभेर, चन्दन, खस, धनिया, दाख और मुलेठी—इनके काढ़ेमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे पित्तकी प्यास दूर होती है।

(९) चाँवलोंको साफ करके जलमें भिगो दो। १ घण्टे बाद मलकर पानी निकाल लो। इस चाँवलोंके जलमें शहद मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलानेसे पित्तकी प्यास नाश होती है। परीक्षित है।

(१०) शहदको मुँहमें कुछ देर रखने और कुल्ला कर देनेसे प्यास और दाह शान्त हा जाते तथा मुँहके छाले भी मिट जाते हैं।

(११) औटाकर शीतल किये हुए जलमें, कपड़ेकी पोटलीमें सौंफ बाँधकर छोड़ दो और वही जल रोगीको पिलाओ। अथवा सौंफ और पुदीनेका अर्क थोड़ा-थोड़ा दो। अथवा पानीमें भिगोई हुई सौंफकी पोटली बारम्बार रोगीको चुसाओ।

(१२) कुछ शीतलमिर्चें कूटकर रखलो। उसमेंसे ज़रा-ज़रासा

चूर्ण रोगीको खिलाकर पानी पिला दो। इससे प्यास निश्चयही कम हो जाती है। हमने इससे प्लेगज्वर तकमें देकर लाभ उठाया है।

(१३) धानकी खील २ तोले, बड़की जटा १ तोला और कमलगट्टे-की गिरी आधे तोला—इनको रोगीके पानीमें पोटरीमें रखकर डाल दो। प्यास लगनेपर यही जल पिलाओ; प्यास कम हो जायगी।

(१४) आलूबुखारा चूसने को दो, इससे भी प्यास कम हो जाती है।

(१५) बिजौरा नीबू, जम्भीरी नीबू, अनार, बेर और चूका—इनको एकत्र पीसकर मुखपर लगानेसे प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१६) मुखके भीतर रूपेकी गोली रखनेसे प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१७) शीतल दूधमें शहद मिलाकर गले तक पी लो; फिर उङ्गली डालकर वमन कर दो। इस तरह कई दफा करनेसे प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१८) शहत, बड़का अग्रभाग और खील—इनको पीसकर और गोलीसी बनाकर मुँहमें रखनेसे प्यास शान्त हो जाती है।

(१९) पोदीना १ तोला, बड़ी इलायचीके दाने ६ माशे, लौंग ५ दाने और कालीमिर्च ६ दाने—सबको अढ़ाई पाव जलमें पकाकर शीतल कर लो और छानकर रखलो। रोगीको थोड़ा-थोड़ा जल इसमें से पिलाओ। इससे वमन बन्द हो जाती और प्यासमें भी तस्कीन होती है।

अरुचि नाशक नुसखे।

अरुचि रोग पाँच प्रकारका होता है। उसके लक्षण और चिकित्सा हम किसी अगले भाग में लिखेंगे ; तोभी इतना जान लेनेमें हर्ज नहीं, कि वातकी अरुचिमें दाँत खट्टे और मुँह कषैला होता है। पित्तकी अरुचिमें मुँह कड़वा, गरम, बदबूदार और नमकीन होता है। कफ की अरुचिमें मुँह मीठा, लिबलिबा, भारी, शीतल, बँधा हुआसा और कफसे लिहसासा होता है। शोक, भय, क्रोध, अति लोभ आदि से मन बिगड़नेपर जो अरुचि होती है, उसमें मुखका स्वाद स्वाभाविक होता है और त्रिदोषजमें मुखका स्वाद अनेक तरह का होता है। जो मनुष्य मुंहमें दिये हुए अन्नको नहीं खाता अथवा मुँहमें देनेपर भी अन्न आगे नहीं जाता, उसे अरुचि कहते हैं।

(१) अदरखके रसमें शहद मिलाकर चटानेसे खाँसी, श्वास, अरुचि, जुकाम और कफ—इनका नाश होता है। कफकी अरुचि, कफकी खाँसी और सर्दीके जुकाममें यह नुसखा रामबाण है। सैंकड़ों बारका आज़माया हुआ है।

(२) अदरखके रसमें ज़रासा सेंधानोन मिलाकर चटानेसे भी अरुचिमें बहुत बार लाभ देखा है।

(३) कागज़ी नीबूकी फाँक करके उसमें ज़रासा काला नोन और कालीमिर्च पीसकर बुरक दो और उसे आगपर खड़काकर चूसने को दो। इससे तबियत खुश हो जाती है और ज़बानका ज़ायका सुधर जाता है ; पर खाँसीका ज़ोर हो, तो इसे न देना चाहिये।

(४) भोजनसे पहले अदरखके टुकड़ोंमें सैंधानमक लगाकर खानेसे अरुचि नाश होती और भूख लगती है। यह बिना रोगके अगर सदा खाया जाय तो क्या कहना। यह सदा पथ्य है, जीभ

और कंठको शोधता है, अग्निको दीपन करता है और हृदयको हितकारी है।

(५) वायबिडङ्गको पीसकर, शहतमें मिलाकर, ऊपरसे अनारका रस डालकर, मुँहमें कवलकी तरह रखने से असाध्य अरुचि भी नाश हो जाती है।

(६) आमलों और मुनक्कोंको पीसकर मुँहमें रखनेसे भी अरुचि चली जाती है।

नोट—जबतक ज्वर नहीं जाता, अरुचि नहीं जाती ; ज्वर जानेपर अरुचि नहीं रहती। इसलिये ज्वर चल गया हो अथवा कुछ अंश हो और मुख बहुत ही खराब हो रहा हो, अन्न पर मन न चलता हो या स्वाद न मालूम होता हो ; तो इन नुसखोंसे काम लो। ये सभी परीक्षित नुसखे हैं।

(७) अगर ज्वर ज़ाहिरा चला गया हो, पर कुछ अरुचि रहनेसे ज्वरांशके रहनेका वहम हो ; तो सवेरे शाम एक या आधा माशा "गिलोयका सत" शहदके साथ चटाओ। इससे ज्वर चला जायगा और इसी गिलोयके सतकी एक या आधे माशेकी मात्रा अनारके रसके साथ दो, तो अरुचि नाश हो जायगी। आज़मूदा नुसखा है। अगर पित्त शेष हो ; तो गिलोयका सत्त आधा माशा बूरेके साथ देना अच्छा है।

(८) अदरखके रसको गरम करके, उसमें सेंधानमक डालकर, उसका कवल बनाकर मुखमें रक्खो। इससे अवश्य अरुचि नाश होगी। परीक्षित है।

(९) बिजौरे नीबूकी केसर, सेंधानमक डालकर मुखमें रखनेसे अरुचि अवश्य नाश हो जाती है। परीक्षित है।

हिचकी नाशक उपाय ।

हिचकी बड़ा भयंकर रोग है। हिचकी रोग पाँच प्रकार का होता है। उसके लक्षण और चिकित्सा किसी अगले भाग में लिखेंगे। ज्वरमें हिचकी चलना, मौतका वारण्ट समझना चाहिये। श्वास और हिचकी मनुष्यके प्राण बड़ी जल्दी नाश करते हैं। कहा है:—

कामंप्राणहरारोगा बहवो न तु ते तथा।
यथाश्वासश्च हिक्का च हरतःप्राणमाशुवै ॥

ज्वर प्रभृति रोग प्राय: प्राणोंको हरनेवाले हैं; परन्तु श्वास और हिचकीके समान तत्काल प्राणोंको नाश करनेवाला कोई भी रोग नहीं है। और भी कहा है:—

यथाग्निरिक्षोः पवनानुवृद्धो वज्रं यथा वा सुरराजमुक्तम्।
रोगास्तथैते खलुदुर्निवाराःश्वासः सहिक्काचविलम्बिकाच ॥

जिस तरह हवासे बढ़ी हुई ईखकी आग और इन्द्रके हाथसे छूटा हुआ वज्र दुर्निवार है; उसी तरह श्वास, हिचकी और विलम्बिका ये रोग दुर्निवार हैं; इसलिये इन रोगोंके होते ही ग़फ़लत छोड़ कर शीघ्रही उपाय करना ज़रूरी है।

(१) बकरीके दूधमें ६ माशे सोंठ डालकर औटाओ; पीछे उस दूध को रोगीको पिलाओ। इस उपायसे हिचकी शान्त हो जाती है।

(२) मुलेठीको शहतमें मिलाकर सुँघाओ। पीपलके चूर्णको चीनी में मिलाकर सुँघाओ। सोंठको गुड़में मिलाकर नास दो। ज़रासे पानीमें ज़रासा सेंधानोन घोटकर नास दो। नाकमें हींग की धूनी दो। इनमेंसे किसी न किसी उपायसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(३) समयपर बकरीका दूध न मिले तो आधा पाव पानीमें ६ माशे सोंठ औटाकर, मलछानकर, ऊपरसे एक तोला मिश्री मिलाकर पन्द्रह-पन्द्रह मिनिटमें, ज़रा-ज़रासा पानी पिलाओ। इस उपाय से और साथही नास भी देनेसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(४) मक्खीके गूको दूधमें पीसकर, उसकी नास दो अथवा चन्दन को दूधमें पीसकर उसकी नास दो अथवा पीपल और मिश्री पीसकर उसकी नास दो। इनमेंसे किसी न किसी उपायसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(५) हींग और उर्दोंको पीसकर, विना धूएँके अङ्गारे या लाल कोयलों पर डालकर धूनी देनेसे, निश्चयही, पाँचों तरह की हिचकियाँ आराम हो जाती हैं।

(६) हिचकी शान्त करनेके लिये चिलममें तमाखूकी तरह रखकर "मैनसिलका धूआँ" पीना चाहिये। इससे लाभ न हो, तो "गायके सींगका धूआँ" पीना चाहिये। कूट, राल अथवा कुशा, इनमेंसे किसी एकका धूआँ पीनेसे भी हिचकी आराम होती है।

(७) अनेक बार ख़ाली शहद चाटनेसे हिचकी आराम होती देखी गई है।

(८) शहद और काला नोन मिलाकर बिजौरेका रस पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(९) सोंठ, धायके फूल और पीपल—इन तीनोंका चूर्ण चार-चार रत्ती लेकर शहतमें मिलाकर चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१०) पीपल, आमले, मिश्री और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। पीछे आध-आध माशे चूर्ण शहतमें

मिलाकर चटाओ। ज़रूरत होनेसे पाव-पाव या आध-आध घण्टेमें चटाओ। इस योगसे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(११) उड़दोंका बारीक चूर्ण लेकर, बिना धूएँके अङ्गारोंपर डालकर, चिलममें रखकर, तमाखूकी तरह धूआँ पीनेसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(१२) पीपलके काढ़ेमें हींग डालकर पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१३) स्त्रीके दूधकी नास लेने अथवा उसके पीनेसे हिचकी नाश हो जाती है। स्त्रीके दूधमें मक्खीकी विष्ठा पीसकर नास लेनेसे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(१४) मैनसिल, बबूर, कूट, राल, कुशा और अड़ूसा—इनको एक जगह पीसकर और घीमें मिलाकर, चिलममें रखकर, धूआँ पीनेसे हिचकी आराम होती है।

(१५) अगर सन्निपात रोगमें श्वास और हिचकीका ज़ोर हो ; तो "दशमूल"का काढ़ा बनाकर, उसमें जवाखार और सेंधानमक मिलाकर दो। अगर बेहोशी और तन्द्रा हो, तो पीपलका चूर्ण मिला दो। ये नुसखे परीक्षित हैं। अगर हिचकी और श्वासमें प्यास भी हो, तब तो "दशमूलका काढ़ा" ही देना चाहिये।

(१६) हिचकी रोगमें सोंठ, पीपल और आमले,—इनको कूट-पीसकर शहतमें चाटनेसे निश्चयही लाभ होता है।

(१७) स्त्रीके दूध या लाखके रसमें मक्खीका गू उबालकर सुँघाओ ; अथवा सोंठको उबालकर, उसमें गुड़ मिलाकर नस्य दो। अवश्य लाभ होगा।

(१८) काँसकी जड़का चूर्ण शहदमें मिलाकर चाटनेसे भयङ्कर हिचकी आराम हो जाती है।

(१६) मोरके पंखको जलाकर उसकी राख करलो। पीछे २।३ रत्ती राख शहदमें मिलाकर चाटो। इससे हिचकी अवश्य नाश होती है।

(२०) बिजौरेके रसमें सेंधानोन मिलाकर चाटनेसे भी हिचकी आराम होती है।

(२१) ग्वारपाठेके रसमें सोंठका चूर्ण मिलाकर पीते ही हिचकी बन्द हो जाती है।

(२२) पोहकरमूल, जवाखार और कालीमिर्च—इनका चूर्ण गरम पानीके साथ पीनेसे अत्यन्त बढ़ी हुई हिचकी भी आराम हो जाती है।

(२३) बिना धूएँके अङ्गारेपर हल्दी और उड़दका चूर्ण डालकर, धूआँ पीनेसे अति भयङ्कर हिचकी शान्त हो जाती है।

(२४) सेंधे नमकको अत्यन्त बारीक पीस-छानकर, पानीमें मिलाकर, नास देनेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२५) खाँड़में सोंठ मिलाकर नास देनेसे हिचकी बन्द हो जाती है। परीक्षित है।

(२६) हींगकी धूनी देनेसे हिचकी बन्द हो जाती है। परीक्षित है।

(२७) उड़दोंको चिलममें रखकर, ऊपरसे आग रखकर धूआँ पीनेसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२८)-दो माशे गिलोयका सत्त शहदके साथ चाटनेसे हिचकी आराम होती है। परीक्षित है।

(२९) सोंठको गुड़में मिलाकर खानेसे अथवा २ माशे सोंठ ६ माशे गुड़में मिलाकर नास देनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(३०) घोड़ेकी सूखी लीदका धूआँ लेनेसे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(३१) पीपलके वृक्षकी सूखी छाल जलाकर, तत्काल पानीमें बुझा दो। उसी बुझे हुए पानीको रोगीको पिलाओ। इससे हिचकी, वमन और प्यास तीनोंमें निश्चयही लाभ होता है। परीक्षित है।

(३२) पेटके ऊपर मामूली तेल लगाकर, गरम पानीसे सेक करो या "नारायण तेल" पेटपर धीरे-धीरे मलकर, बोतलमें गरम पानी भर कर, काग बन्द करके, ऊपरसे कपड़ा लपेटकर, उससे सेक करो। इन उपायोंसे अक्सर लाभ होता है।

नोट—जो चीजें कफ और वातनाशक हैं, गरम हैं और वातको अनुलोम करनेवाली हैं,—वे हिचकी और श्वासमें हितकारी हैं।

(३३) ज्वर न हो और योंही हिचकी रोग खड़ा हो गया हो; तो आप पुराने चाँवलोंका भात बनवाकर, उसमें गरम करके घी मिला दें और उस भातको रोगीको खिलावें; फौरन हिचकी बन्द होगी; पर ज्वरकी "अवस्थामें यह उपाय न करना चाहिये। हाँ, ज्वरकी अवस्थामें दशमूलके काढ़ेसे सिद्ध की हुई पेयाका देना अच्छा है। इस पेयासे खाँसी, श्वास और हिचकी तीनोंमें फायदा होता है।

(३४) साधारणतया हिचकी प्राणायाम करने; यानी प्राणवायुको रोकने, ताड़ना करने, विस्मयजनक बात कहने, भयभीत करनेवाली बात कहने, विचित्र कहानी कहने, मन पर घोर सदमा या चोट लगनेवाली बात कहने, शरीरपर शीतल जल छिड़कने, सहसा डराने, भुलाने, गुस्सा दिलाने, अत्यन्त हर्षकी बात कहने, जली हुई गरम मिट्टीके सुँघाने, नाभि पर सहता-सहता दबाने, पैरोंसे दो अंगुल ऊपर या नाभिसे दो अंगुल ऊपर दागने अथवा दीपकपर हल्दीकी गाँठ जलाकर, उससे

दागनेसे हिचकीमें निश्चय ही लाभ होता है। इन उपायोंसे हमने अनेक वार लाभ उठाया है।

खाँसीनाशक उपाय।

(१) पीपल, कचूर, पोहकरमूल, हरड़, सोंठ और नागरमोथा—इनको वारीक पीसकर और गुड़ में मिलाकर गोली वनालो। इन गोलियोंके सेवन करनेसे भयानक श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं। इन गोलियों को "कणादि गुटी" कहते हैं।

(२) वहेड़े और पीपलका चूर्ण, शहतमें मिलाकर चाटने से सव तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं।

(३) कटेरीका काढ़ा पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सव प्रकारकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

(४) काकड़ासिंगी, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, पोहकरमूल, हरड़, वहेड़ा, आमला, कटेरी, भारंगी और पाँचों नमक—इन सव को वरावर-वरावर लेकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णको गरम जलके साथ फाँकनेसे खाँसी, श्वास, अरुचि और पीनस—ये रोग आराम होते हैं। इस चूर्णको "शृंग्यादि चूर्ण" कहते हैं।

(५) गिलोय, सोंठ, भारङ्गी और शालिपर्णी—इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण डालकर सेवन करनेसे खाँसी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(६) अदरखके रसमें शहद डालकर पीनेसे श्वास, खाँसी, जुकाम और कफका नाश होता है।

(७) अकेले वहेड़ेको मुँहमें रखनेसे सब तरहकी खाँसी और श्वासमें लाभ होता है।

(८) हरड़, सोंठ, नागरमोथा और गुड़—इनकी गोली मुखमें रखने से सब तरहकी खाँसी और श्वासमें फायदा होता है।

(९) मैनसिलको पानीके साथ पीसकर, बेरीके पत्तोंपर लेप करके धूपमें सुखालो। पीछे चिलममें रखकर, उपरसे बिना धूएँ की आग रखकर पीओ। इससे भयानक खाँसी आराम हो जाती है; परन्तु ऊपरसे दूध पीना ज़रूरी है। यह नुसख़ा परीक्षित है। सब तरहकी खाँसियों पर दे सकते हो।

(१०) निशोथ, धतूरेकी जड़, त्रिकुटा और मैनसिल—सबको एकत्र पीसकर कपड़ेपर लेप कर दो; सूखने पर चिलममें रखकर इसका धूआँ पीओ। इस उपाय से ३ दिनमें खाँसी जाती रहती है।

(११) कालीमिर्च १ तोला, पीपल २ तोला, अनारके छिलके ४ तोला, गुड़ ८ तोला और जवाखार आधा तोला,—इन सबको एक जगह पीसकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे वह खाँसी भी आराम हो जाती है, जो सैकड़ों दवाओंसे आराम न हुई हो, जो वैद्योंने असाध्य कहकर छोड़ दी हो अथवा जिसमें थूकते समय रांध निकलती हो। इन गोलियोंको "मरिचादि वटी" कहते हैं। परीक्षित है।

(१२) खैरसार १ भाग, छायामें सुखाये हुए अड़ूसेके पत्ते २ भाग, पीपल और त्रिकुटा ३ भाग—इन सबको पीसकूट और छानकर चूर्ण बनालो। इस चूर्णको शहदके साथ चाटनेसे सब तरहकी खाँसी आराम होती हैं।

(१३) पीपल, पीपलामूल, इन्द्रजौ, पित्तपापड़ा और सोंठ—इन सब को समान भाग लेकर, कूट-पीसकर चूर्ण करलो। पीछे ३।४ माशे चूर्ण शहतमें मिलाकर चाटो। इससे ज्वरकी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१४) पोहकरमूल, त्रिकुटा, सोंठ, मिर्च, पीपल, काकड़ासिंगी, कायफल, जवासा और कलौंजा—इनको बराबर-बराबर लेकर, चूर्ण करके, शहतके साथ चाटनेसे खाँसी और कफ-सम्बन्धी रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) गिलोयका सत्त २ माशे, सोंठ, कालीमिर्च और पीपलका चूर्ण दो माशे—सबको मिलाकर, शहतके साथ चाटनेसे खाँसी और श्वासमें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(१६) गठौना पीपरामूल, सोंठ और बहेड़ेका बक्कल—इन तीनोंके चूर्णको शहतमें मिलाकर चाटनेसे खाँसी बहुत जल्दी आराम होती है। परीक्षित है।

(१७) अगर खाँसी पुरानी हो, यकृत या लिवरमें सूजन या मवाद आगया हो, ज्वर बना रहता हो यानी तपेदिक़ हो, रोगीको दाहिनी करवट लेनेसे कष्ट होता हो या खाँसी बढ़ जाती हो; तो नीचेके उपायोंसे काम लेना चाहिये। लिवरसे सम्बन्ध रखने वाली खाँसी बड़ी कठिनसे आराम होती है।

तुख़्म ख़तमी	४ माशे
तुख़्म ख़ुब्बाज़ी	४ माशे
तुख़्म पालक	४ माशे
सरे बनफ़शा	३ माशे
छिली मुलहटी	४ माशे
ख़ाकसीर	३ माशे
गुलेसुर्ख़	६ माशे

इन सब दवाओंको १ पाव जलमें सबेरेही भिगोदो। शामको आगपर चढ़ाकर जोशदो। जब आध पाव जल रहजाय, मल छानकर उतार लो और शीतल करके पिलादो। इस तरह ये दवायें रातको भिगोकर, सवेरे जोश देकर पिलादो। इसके साथ ही आगेका नुसख़ा नं० १८ अलसी और बिहीदानेवाला भी बीच-बीचमें रोगी को पिलाते रहो।

(१८) अगर छातीमें बलग़म—कफ जम गया हो या फेफड़े सूज गये

हों, तो अलसीको पीसकर चूर्ण सा करलो और उसे तवेपर भूनलो। उससे गरमागरम रहते हुए सेक करो अथवा अलसीके सफूफ—चूर्णकी पुल्टिश बनाकर, गरमागरम रहते उससे सेक करो। इन उपायोंसे जमा हुआ बलग़म छूट जायगा और फैंफड़ोंकी सूजन नष्ट हो जायगी। परीक्षित है।

अलसी ४ माशे	
बिहीदाना ४ माशे	

इन दोनोंको १ पाव जलमें पकालो। जब आध पाव पानी रहजाय, चूल्हेसे उतारते ही १ तोला मिश्री मिला दो। पीछे कपड़ेमें छानकर इसका लुआब सा निकाल लो। इस लुआबका एक-एक चमचा घण्टेमें ३।४ बार देते रहो। सवेरेका बनाया शाम तक पिलाओ और शामको तैयार करके रातको पिलाओ। इन दोनों नुसख़ोंसे यकृतकी अथवा बलग़म जमी हुई पुरानी खाँसीमें बड़ा लाभ होता है। आज़माया हुआ नुसख़ा है। जब जीर्णज्वरी रोगीको या केवल खाँसीवालेको खुश्की बहुत पहुँच जाती है, तब कंठ सूखने लगता है और गलेमें काँटेसे पड़ जाते हैं; उस हालतमें भी यह नुसख़ा राम-बाण है। छातीपर जमा हुआ बलग़म बिना साफ हुए खाँसी आराम नहीं होती और जमे हुए बलग़मको छातीसे छुड़ानेमें अलसी और बिहीदानेका लुआब अक्सीर है। इसे ऊपरके नं० १७के साथ बीच-बीचमें दो।

गुलबनफ़शा	... ४	माशे
छिली मुलहटी ...	३	,,
ख़तमीके बीज ...	३	,,
अलसी (कुचलीहुई)	३	,,
बिहीदाना	... ३	,,
उन्नाव	... ४	दाने

इन सब दवाओंको १ पाव जलमें पकाओ। जब पानी आध पाव रहजाय, मलछानकर गज़ीके कपड़ेसे लुआब निकाल लो। चूल्हेसे उतारते ही १ तोला मिश्री मिला दो। इसको सवेरे शाम पिलानेसे पुरानी खाँसी

और ज्वर दोनोंमें लाभ होता है। खाँसी तो अवश्य ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

जिस रोगीको पुरानी खुश्क खाँसी हो, बुखारकी हरारत हो, सिरमें दर्द हो और खाँसते-खाँसते वमन या क़य हो जाती हो, उसे ऊपरका नुसखा बहुत ही लाभदायक है—

नोट—छातीपर बलग़म जमा हो, तो ऊपरवाला अलसी और बिहीदानेका लुआब भी थोड़ी-थोड़ी देरमें देना चाहिये। सोडा बाइकार्ब ३ माशे और मिश्री ३ माशे दोनोंको फँकाकर, ऊपरसे जल पिला देनेसे भी ३।४ दिनमें छातीका बलग़म छूट जाता है।

(१६) अगर कौआ बैठ जानेसे खाँसी हो, तो कव्वा उठवा देना चाहिये। अगर दवा देते-देते खाँसी आराम न हो, हर समय खस-खस लगी रहती हो; तो वैद्यको कौए का ख़याल ज़रूर करना चाहिये। काष्ठिकसे दाग देनेसे कौआ ठीक-ठिकाने आजाता है और ऐसी खाँसी फौरन आराम हो जाती है।

(२०) सूखी खाँसीमें जो पुरानी हो, जिसमें बलग़म आताही न हो, रातको सोते समय मलाई मिश्री खाना अच्छा है। इससे बलग़म तर हो जाता है। पर इस पर जल भूलकर भी न पीना चाहिये। पुराने ज्वर की सूखी खाँसीमें हमने इससे लाभ उठाया है। नये ज्वरकी सूखी खाँसीमें इसे न देना चाहिये।

(२१) बड़ी इन्द्रायणकी छालको चिलममें रखकर पीनेसे कफ पतला हो जाता और वमन होकर कण्ठ साफ हो जाता है। यह नुसख़ा परीक्षित है; पर कुछ ताक़तवालेको देना चाहिये।

(२२) बहेड़ेको घी सें चुपड़ लो; पीछे उसे गोबरके भीतर रखकर गोलासा बनालो। उस गोबरके गोलेको कण्डोंकी आगमें रख-कर पकालो। पीछे उस गोलेसे बहेड़ा निकालकर, ज़रा-ज़रासा टुकड़ा मुखमें रक्खो, इससे निश्चय ही खाँसी आराम हो जाती है। बहुत उत्तम उपाय है। अनेक बारका परीक्षित है।

(२३) अड़ूसेके रसमें शहत मिलाकर चटानेसे भी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

दस्तक़ब्ज मिटाने के उपाय।

ज्वरोंमें—ख़ासकर वातज्वर और वातप्रधान ज्वरोंमें बहुतही क़ब्ज रहता है, मल सूखकर गाँठसी हो जाती हैं। उस समय रोगीको बड़ा कष्ट होता है और पाख़ाना हुए बिना ज्वर हलका नहीं पड़ता। उस दशामें एकाध दस्त करा देना बहुत ज़रूरी है।

(१) बलाबल देखकर, ३।४ माशे काली निशोथका चूर्ण ६ माशे शहदमें मिलाकर चटा दो। अगर दस्त न होता दीखे—कोठा कड़ाहो, तो ६ या ८ माशे निशोथका चूर्ण भी शहतमें मिलाकर दे सकते हो। ज्वरोंमें दस्त करानेके लिये निशोथ सर्वोत्तम है। निशोथकी मात्रा अधिक है, पर ज़ियादा देना अच्छा नहीं और ख़ासकर ज्वर-रोगीको। अनेक बार निशोथके चूर्ण और शहत के चाटनेसे विषमज्वर आरामही हो जाता है; इसलिये विषम ज्वरमें, क़ब्ज़ होनेपर, इस नुसख़ेको काममें लाना बहुतही हितकर है।

(२) अरण्डीके तेल या साफ कैस्टर आयलसे भी दस्त साफ हो जाते हैं। यह जुलाब बड़ा हलका है। गर्भवती स्त्री तक को इसे दे सकते हैं। इसको चार पाँच तोले तक पिला सकते हैं। पर ज्वर की हालतमें अगर दस्त कराना हो, तो दो तोला अरण्डीका तेल १ पाव गर्म दूधमें मिलाकर पिला दो। इससे ज़ियादा न देना।

(३) हरी सनाय, सोंठ, सौंफ, बड़ी हरड़ और कालानोन—इनको

बराबर-बराबर लेकर कूटपीस और छानकर रखलो। इस चूर्ण में से ४ या ६ माशे चूर्ण, रातको सोते समय, फँकाकर, निवाया पानी पिला दो। इससे एक या दो दस्त निश्चय ही साफ हो जायँगे। अगर मिज़ाज गरम हो ; तो दो तोला गुलक़न्द गुलाब, १०।१५ दाना मुनक्का (बीज निकालकर) और ६ माशे ऊपरका चूर्ण, सबको एक मिट्टीकी छोटी हाँड़ीमें डालकर, ऊपरसे डेढ़ पाव जल डालकर, आग पर पकाओ। आधपाव जल रहजाने पर, मल छानकर रोगीको पिला दो। इससे अवश्य दस्त होगा और गरमी भी कम करेगा।

(४) अगर रोगीका कोठा नर्म हो, पर दस्त न होता हो ; तो मुरब्बे की बड़ी हरड़ (गुठली निकालकर) एक या दो खिलाकर, ऊपरसे पावभर गर्मागर्म दूध पिला दो। नाज़ुक-मिज़ाजको एक हरड़से ही ३।४ दस्त हो जाते हैं।

(५) अगर २।३ दस्त कराने हों, तो चार तोले त्रिफलेको अधकचरा करके, आधसेर जलमें रातको भिगोदो ; सवेरे मिट्टीकी हाँड़ीमें औटाओ। चौथाई पानी रहनेपर उतार लो और शीतल होने पर मलछानकर १ तोला गुलक़न्द गुलाब मिलाकर पी जाओ। भरोसा है, २।३ दस्त होंगे।

(६) अमलताशका गूदा, पीपरामूल, नागरमोथा, कुटकी और जङ्गी हरड़—इन पाँचोंको ६।६ माशे लेकर, आधसेर जलमें औटाकर, चौथाई जल रहनेपर उतार लो। नवीन ज्वरमें यह "आरग्वधादि क्वाथ" पिलाना अच्छा है। इससे वातकफज्वर और आमशूल नाश होता है तथा दस्त साफ होकर अग्निदीप्त होती है। इसे "आरोग्य पञ्चक" भी कहते हैं।

नोट—हमने ऊपर दस्त करानेके लिये ६ नुसखे लिखे हैं। सभी नुसखे हमारे परीक्षित हैं। बलाबल देखकर, मात्रा घटा बढ़ा लेना—लेने या देनेवालेका काम है।

अगर मल और अधोवायु रुक गये हों और दस्त कराना मुनासिब न हो, तो नीचे लिखी बत्ती या पहले पृष्ठ ८४—८५में लिखी हुई बत्तियोंसे काम लेना चाहिये।

(७) समन्दरनोन, अदरख, सरसों और काली मिर्च—इनको बराबर-बराबर लेकर और पीसकर महीन करलो। पीछे जलके साथ पीस कर, मोटी अँगुलीके समान कपड़ेकी बत्ती बनाकर, उसपर इसका लेप कर दो। शेषमें उस बत्तीपर ज़रासा घी लगाकर या गुदामें भी घी चुपड़ कर बत्तीको गुदामें प्रवेश करो। इससे दस्त साफ होकर हवा खुलेगी।

(८) अगर जीर्णज्वरमें कब्ज़ हो; तो हरड़, अमलताश, कुटकी, निशोथ और आमला—इनको बराबर-बराबर लेकर और काढ़ा बनाकर पिलाओ। इससे तत्काल मलबन्ध—दस्तका कब्ज शान्त होगा।

(९) रेवन्दचीनीका शीरा १ माशे पीसकर गुड़, चीनी या शहद इन मेंसे किसी एकमें मिलाकर चटानेसे दस्त होंगे। जब दस्त बन्द करने हों, घी और भात खिला दो। यह नुसख़ा परीक्षित और उत्तम है; पर ज्वरकी सब हालतोंमें देने योग्य नहीं है। अगर रोगी बलवान हो, ज्वर पुराना हो, घी और चाँवल खानेमें हर्ज न हो; तब इससे काम लेना चाहिये। हमने तो जाड़ेके ज्वरवालोंको, खासकर ताकतवर रोगियोंको, देकर इससे बहुत फायदा उठाया है। जब महीना-महीना भर ज्वर आता है और नहीं छोड़ता, तब इससे एक दिन दस्त कराकर, "महाज्वरांकुश बटी" खिलानेसे ज्वर फौरन छोड़ जाता है। कमज़ोरको ४ या ६ रत्ती रेवन्दचीनीका शीरा बहुत है। बलवान १॥ माशे तक ले सकता है।

ज्वरातिसार नाशक नुसख़े ।

(पतले दस्त)

ज्वरमें दस्त भी होने लगते हैं। चटपटही उनको रोकना ठीक नहीं है। अगर बहुत दिनों तक बन्द न हों, दस्त होते ही रहें ; तो अतिसारकी तरह चिकित्सा करनी चाहिये। "सुश्रुतमें" लिखा है :—

च्यवमानं ज्वरोत्क्लिष्टमुपेक्षेत मलं सदा ।
अतिप्रवर्त्तमानं च साधयेदतिसारवत् ॥

ज्वरके वेगसे चलायमान मलको कुछ समयतक बन्द न करना चाहिये। अगर बहुत ज़ोर हो या कई दिन तक दस्त बन्द न हों, तो अतिसारकी तरह साधना करनी चाहिये।

नोट—बलवान ज्वरमें अगर अतिसार हो, तो लंघनके सिवाय और दवा नहीं है ; क्योंकि लंघन बढ़े हुए दोषोंको शमन और पाचन करता है। अगर जरूरत हो, तो नीचेके नुसखोंसे काम लें :—

(१) गिलोय, इन्द्रजौ, नागरमोथा, चिरायता, नीम, अतीस और सोंठ—इन सातोंको बराबर-बराबर लेकर, इनका काढ़ा बना कर पीनेसे ज्वरातिसार आराम होता है।

(२) सोंठ, गिलोय इन्द्रजौ और नागरमोथा—इनको समान भाग लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे, ज्वरमें पैदा हुआ अतिसार आराम होता है।

(३) पाढ़, गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, सोंठ, चिरायता और इन्द्रजौ—इन सातोंको बराबर-बराबर लेकर और काढ़ा बनाकर पीनेसे, ज्वरमें उत्पन्न हुआ घोर अतिसार भी अवश्य आराम हो जाता है।

(४) धनिया, सोंठ, कच्ची बेलगिरी, खस और नागरमोथा—इन पाँचों को बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे, शूल (मरोड़ी) समेत आमातिसार आराम होता है। यह काढ़ा ज्वरमें हित-कारी तथा दीपन और पाचन है।

(५) गिलोय, पाठा, खस, बेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला, सोंठ, पद्माख, लालचन्दन, कुड़ेकी छाल, धनिया, चिरायता और अतीस—इन १३ दवाओंको समान-समान लेकर, काढ़ा बना-कर और शीतल करके पीनेसे, ज्वर, प्यास, अरुचि, ग्लानि, दाह, उबकाई, मरोड़ो और शोफ समेत अतिसार आराम हो जाता है।

(६) पीपल, गजपीपल और खील—इनके काढ़ेमें शहद और मिश्री मिलाकर पीनेसे ज्वरातिसार, वमन और प्यास नाश होती हैं।

(७) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय और इन्द्रजौ—इनको समान भाग लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे सब तरहके अतिसार और सब तरहके ज्वर आराम हो जाते हैं। मतलब यह है, किसी प्रकारके ज्वरमें अतिसार होनेसे इस काढ़ेको देनेसे लाभ होगा ; केवल ज्वर आराम करनेके लिये इसे नहीं देना चाहिये।

नोट—ज्वरनाशक औषधियाँ प्रायः भेदक होती हैं और अतिसारनाशक औषधियाँ मलस्तम्भक यानी मलको रोकनेवाली होती हैं। इसलिये दोनों परस्पर रोग बढ़ानेवाली हैं। अतः ज्वरमें अतिसार होने पर, ज्वरातिसारमें खास तौरपर लिखी औषधियोंसे काम लेना चाहिये। ज्वर और अतिसारमें लिखी अलग-अलग दवाओंको मिलाकर हरगिज न देना चाहिये।

(८) धायके फूलका काढ़ा, सोंठका चूर्ण और अनारका रस—इनसे सिद्ध को हुई पेया ज्वरातिसार और शूलको नाश करती है।

(९) दशमूलके काढ़ेके साथ सोंठके चूर्णको सेवन करनेसे ज्वर,

अतिसार, सूजन और संग्रहणी आराम हो जाते हैं। वङ्गसेनमें दो तोले सोंठका चूर्ण लिखा है। बलाबल देखकर मात्रा नियत करनी चाहिये।

मूर्च्छा नाशक उपाय।

क्षीण मनुष्योंके बहुत दोषोंके संचित होनेसे, विरुद्ध आहार विहार करनेसे, मलमूत्र आदि वेगोंके रोकनेसे, लकड़ी प्रभृतिकी चोट लगनेसे और सतोगुण के नष्ट होनेसे, मनके बहनेवाली ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियोंमें जब वातादिक दोष प्रवेश करते हैं, तब मनुष्यको मूर्च्छा आती है। उस समय सतोगुणके कम होनेसे तमोगुण पैदा होता है। इससे सुख-दुःख का ज्ञान नहीं रहता। सुख-दुःख का ज्ञान न रहनेसे मनुष्य लकड़ीसा मालूम होता है। उस अवस्थाको मूर्च्छा या मोह कहते हैं। यह मूर्च्छा रोग वात, पित्त, कफ, रक्त, मद्य और विष—इन भेदोंसे ६ तरहका होता है; परन्तु इन छहों तरहकी मूर्च्छाओंमें पित्तकी प्रधानता रहती है। कहा भी है:—"मूर्च्छा पित्ततमः प्रायेति।" अर्थात् मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण अधिकतासे होते हैं।

मूर्च्छा, भ्रम, तन्द्रा और निद्रामें जो भेद है, वह भी ज़रूरही समझ लेना चाहिये। मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण अधिक रहते हैं। भ्रम—रजोगुण, पित्त और वायुसे होता है। तन्द्रा तमोगुण, कफ और वायुसे होती है। निद्रा-कफ और तमोगुणसे होती है।

भ्रम—जिस तरह घूमते हुए चाकपर सब पदार्थ घूमते हुए दीखते हैं, उसी तरह भ्रमवालेको अपना शरीर और सब चीज़ें घूमतीं नज़र आती हैं।

तन्द्रा—नींदसे घिरे हुएकी तरह जिसमें विषयोंका ज्ञान नाश हो जाय, शरीरमें भारीपन, जँभाई, ग्लानि या बिना मिहनत थकान मालूम हो, उसे "तन्द्रा" कहते हैं। तन्द्रामें आधे नेत्र खुले रहते हैं। निद्रासे जागनेपर क्लम या थकान नहीं रहती, किन्तु तन्द्रामें तो जागने पर भी थकान बनी रहती है। निद्रामें इन्द्रियों और मनमें मोह होता है; किन्तु तन्द्रामें केवल इन्द्रियोंको मोह होता है, मनको मोह नहीं होता। यही तन्द्रा और निद्रामें भेद है।

यों तो रोगोंके बढ़ जानेसे मूर्च्छा कितने ही रोगोंमें होती है; किन्तु ज्वरका तो यह उपद्रव ही है। ज़ियादातर मूर्च्छा या बेहोशी सन्निपात ज्वरोंमें होती है। ज्वरके वेगके कारण मस्तिष्कका खून गरम हो जाता है और वह श्लेष्मा या कफके साथ मिलकर जम जाता है। ऐसा अक्सर सन्निपात ज्वरोंमें होता है। इस दशामें डाक्टरोंकी तरह सिरपर बर्फ रखना या शीतल जलका कपड़ा सिर-पर रखना या सिरपर पानी डालना—रोगीको मारना है। इस दशा-में जमे हुए खून और कफको अलग करना चाहिये।

दूसरी मूर्च्छा योंही वात पित्तकी गरमीके सिरमें पहुँच जानेसे हो जाती है। ऐसी मूर्च्छा होनेसे कहते हैं कि, सिरपर, गरमी चढ़ गई है। इसमें वातपित्तको शान्त करनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये।

सामूली तौर से; रोगीके शरीर पर पानी छिड़कना, जलमें घुस-कर स्नान करना, मोती हीरे पन्ने प्रभृतिके हार पहनना, चन्दनादिका लेप करना, शीतल पंखेकी हवा करना, गुलाब केवड़ा प्रभृति शीतल और सुगन्धित अर्कोंका पीना, मीठे पदार्थोंके साथ औटाया हुआ दूध, अनारके रसके साथ जंगली जीवोंका मांस, जौ, लाल चाँवल, मटर और मूँग—ये सब मूर्च्छामें हितकारी हैं।

अगर मलमूत्रके रुकने और उनमें गरमी पहुँचनेसे बेहोशी हो, तो एनीमा पिचकारी द्वारा या जैसे भी उचित समझो दस्त करा

देना अच्छा है ; क्योंकि मलमूत्रमें गरमी पहुँचनेसे भी सन्निपात, बेहोशी और आनतान बकना आदि उपद्रव उठ खड़े होते हैं। अगर हिचकी आते-आते मूर्च्छा हो जाय, तो तत्काल कय करा देना अच्छा है। वङ्गसेनमें लिखा है :—मूर्च्छां प्रशस्तांबु शिरो विरेकैर्जयेदभीक्ष्णं वमनैश्च तीक्ष्णैः ॥ बहुत तेज़ नस्य देने और तीक्ष्ण वमन करानेसे मूर्च्छा नाश होती है।

रुधिरके देखने और उसकी गन्धसे भी मूर्च्छा हो जाती है। रुधिर की मूर्च्छामें शरीर जकड़ जाता और गूढ़ श्वास हो जाता है। रुधिर की मूर्च्छामें शीतल चिकित्सा करनी चाहिये। मद्यकी मूर्च्छामें फिर शराब पीना और सुखसे सोना हितकारी है। विषकी मूर्च्छामें विषनाशक औषधियाँ देना हितकारी है।

(१) पीपरका चूर्ण ८ या १० रत्ती शहदमें मिलाकर चटानेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(२) सिरसके बीज, छोटी पीपर, कालीमिर्च और सेंधानोन--४।४ चाँवल भर, मैनसिल ४ चाँवलभर और लहसन २ चाँवलभर और वच ४ चाँवलभर या इन सबको बराबर-बराबर लेकर, गोमूत्रमें पीसकर, अञ्जन की तरह आँखों में आँजनेसे रोगी को होश हो जाता है।

(६) कमलका कन्द, कमलकी नाल, पीपल और हरड़—इनको पीस कर शहतके साथ चाटनेसे भी बेहोशी नाश हो जाती है।

(४) नाक और मुखका साँस रोकनेसे भी होश हो जाता है।

(५) नागकेशर, छुहारा, कमलगट्टेकी गिरी (हरी हरी पत्ती निकाल देना) मुनक्का और खस—इन सबको अढ़ाई तोले लेकर, काढ़ा बनाने और मिश्री डाल कर पीनेसे भी बेहोशी चली जाती है।

(६) स्त्रीका दूध अथवा अनारका रस पिलानेसे भी मूर्च्छा नाश हो जाता है।

(७) उसीजे हुए आमले, दाख और सोंठ—इनको एक जगह पीसकर, शहत मिलाकर, चाटनेसे मूर्च्छा, श्वास और खाँसी,—ये सब रोग आराम हो जाते हैं।

(८) लहसन, पीपल, कालीमिर्च, वच, सोनापाठाके बीज और सेंधानोन—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, गोमूत्रमें पीसकर आँजनेसे, सब सन्निपातोंमें होश हो जाता है।

(९) मिर्च, मुलहटी, सेंधानोन, खस, कायफल और पीपल—इनको गरम पानीमें पीसकर, मृदु नस्य देनेसे सन्निपातमें लाभ होता है।

(१०) अगर अच्छे-अच्छे उपाय करनेसे भी सन्निपात रोगीको होश न हो ; तो उसकी पसली, भौं या ललाटपर लोहेकी कोई चीज़ गरम करके उससे दाग देना चाहिये।

(११) लहसन, मैनसिल और वच—इनको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान कर आँखोंमें आँजनेसे बेहोशी दूर होती है।

(१२) सिरसके बीज, पीपल, कालीमिर्च और कालानोन-इन सब को समान भाग लेकर, गोमूत्रमें एकत्र पीसकर, आँखोंमें अञ्जनकी तरह आँजनेसे चैतन्यता होती है।

(१३) सिरसके बीज और कालीमिर्च—इन दोनों को बराबर-बराबर लेकर, एक जगह बकरेके मूत्रमें पीसकर, आँजनेसे होश हो जाता है।

(१४) बिजौरेके रसमें हींग और सोंठ मिलाकर मुँहमें रखने और तेज़ तथा चरपरी और कड़वी दवाओंको नाक, कान और नेत्रोंमें फूँकनेसे भी होश जाता है।

नोट—मूर्च्छामें पित्तकी प्रधानता रहती है। इसलिये बेहोशीकी दशामें गरम-ही-गर्म दवायें देनेसे रोगी मर जाते हैं। आजकल लोगोंमें कमजोरी बहुत होती है, इसलिये मामूली मातदिल उपायोंसे बेहोशी दूर करनी चाहिये। जब किसी उपायसे होश न हो, तब जो उपाय उचित जँचे उसीसे काम लेना उचित है।

(१५) रोगीको अदरखके रसकी नास दो; मूर्च्छा दूर हो जायगी।

(१६) शहद, सेंधानोन, मैनसिल और कालीमिर्च को पीसकर, अञ्जन-सा बनाकर, आँखोंमें आँजनेसे मूर्च्छा नाश होती है।

(१७) शीतल जल आँखोंमें सींचनेसे, सुगन्धित धूप देनेसे, सुगन्धित फूल सुँघानेसे, नर्म ताड़के पंखेकी मन्दी-मन्दी हवा करनेसे और कोमल केलेके पत्ते डुलानेसे मूर्च्छामें लाभ होता है।

नं० १५।१६ और १७ तीनोंके उपाय मूर्च्छामें कई बार परीक्षा किये गये हैं।

(१८) नीले कमलके फूलोंकी कोंपलोंके पत्तोंको या विष्णुकान्ताको पत्थरपर पीसकर, कपड़ेमें रस निचोड़कर, पिचकारी द्वारा नाकमें पहुँचानेसे मूर्च्छित मनुष्य तत्काल होशमें आजाता है। परीक्षित है।

(१९) छायामें सुखाये हुए कनेरके पत्ते ६ माशे, चार कालीमिर्च और बादाम—इन सबको कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो। इस नस्य से घोर मूर्च्छित भी जाग उठता है। परीक्षित है।

(२०) मूर्च्छा या बेहोशी बहुत बार दिलकी कमज़ोरी या गरमीसे होती है। उस दशामें साधारण दवासे मूर्च्छा नाश करनी चाहिये। मूर्च्छाका उपाय करते समय इस बातको अवश्य मालूम कर लेना चाहिये, कि रोगीकी बेहोशी गरमीसे है, खूनसे है, सरदीसे है या दिलकी कमज़ोरीसे है। अगर गर-मीसे ग़श आगया हो; तो सिर और आँखोंपर गुलाबजलके छींटे मारने चाहियें तथा सिरका, धनिया और गुलाबजल इनको एक शीशीमें भरकर रोगीको बारम्बार सुँघाना चाहिये और पैरोंमें मक्खन मलना चाहिये। इस उपायसे दिलकी कमज़ोरी और गरमीसे होनेवाली साधारण बेहोशी अवश्य आराम हो जाती है।

(२१) केवड़ेका अर्क़ १ शीशीमें भरकर, उसमें मलयागिर चन्दन घिसकर मिला दो और ऊपरसे जालीका या पतली मलमलका कपड़ा बाँधकर रोगीको बारम्बार सुँघाओ अथवा खीरा काटकर सुँघाओ। इन उपायोंसे कमज़ोरी-दिल और गरमी की बेहोशी मिट जाती है और सिरमें तरावट आकर सिरका दर्द भी मिट जाता है।

नोट—जीर्णज्वर और राजयक्ष्मावाली कितनीही बेहोश औरतें इन्हीं उपायोंसे होशमें आगई हैं। अगर मूर्च्छा सरदी से हो और कोई अनाड़ी इन नं० २०।२१ के नुसखों या और ऐसेही उधर लिखे हुए नुसखोंसे बेहोशी दूर करना चाहेगा, तो परिणाम खोटाही होगा; इसलिये बेहोशीका कारण जानकर यथोचित उपाय करना चाहिये।

(२२) सिरका अङ्गूरी ख़ालिस १ छटाँक और काली तिली का तेल २ छटाँक तथा पानी १ सेर—इन तीनोंको एक चीनी या काँचके बर्तनमें अथवा पत्थरकी चौड़ी कूँड़ीमें रखकर खूब मिला लो। इस जलमें बारम्बार १ कपड़ा तर करके, रोगीके सर पर रखो। जब कपड़ा सूख जाय, फिर तर करके रख दो। इस उपायसे बेहोशीमें बड़ा लाभ होता है।

(२३) कपूर और चन्दन अथवा खीरा और ककड़ी सुँघानेसे होश हो जाता है और गरमीकी भयानक मस्तक-पीड़ा भी शान्त हो जाती है।

(२४) अगर रोग कफ या सरदीसे हो; तो लौंग, केशर और जायफल,—इनको खूब महीन पीसकर, तिलीके तेलमें मिलाकर, रोगीके सिर पर लेप करना चाहिये। साथही खूब गरम (जिससे पैर जल न जायँ) पानीसे रोगीके पैर धोने चाहियें। पैर धोते समय, सदा ऊपरसे नीचे हाथ ले जाना चाहिये, किन्तु नीचेसे ऊपरको नहीं; क्योंकि पाशोया करने यानी पैर धोनेसे रोग निकलकर बाहर जाता है। शेख़ अबूअलीने लिखा है, कि मैं

सिर पीड़ावालोंके हाथ-पाँवोंपर गरम पानीके तरड़े उस वक्त तक देता रहता था, जबतक कि यह न मालूम होता कि, कोई चीज़ सिरसे हाथ पैरोंकी ओर उतरती है ।

(२५) अगर सन्निपात रोगीकी आँखें लाल हों और सिरमें भयानक दर्द हो, दर्दके मारे रोगीको चैन न पड़ता हो, तो नौसादर १ तोला और कलमी शोरा १ तोला—दोनोंको पीसकर अढ़ाई सेर जलमें घोल दो। जब पानी और दवाएँ एक-दिल हो जायँ, तब इस जलमें १ कपड़ा भिगो-भिगोकर सिर और कनपटियोंपर रखते रहो। जब कपड़ा सूख जाय, फिर तर करके रख दो। पीड़ा शान्त होनेके बाद कपड़ा मत रखना ।

ये सब हकीमी उपाय आज़मूदा हैं। नाज़ुक-मिज़ाजोंकी बेहोशी और सिरका दर्द आराम करनेमें रामबाण हैं। फिरभी इनसे काम न चले, तो उग्र उपायोंसे काम लेना चाहिये। हमने इस पुस्तकमें एक-से-एक उत्तम उपाय प्रत्येक उपद्रवके लिखे हैं और खूबी यह है, कि अधिकांश परीक्षित लिखे हैं; पर कौनसा नुसख़ा किस रोगी पर प्रयोग करना चाहिये, इसके लिये मुआलिज या चिकित्सककी अक़्लकी भी ज़रूरत है।

(२६) स्त्रीके दूधको नाकमें टपकाना या सिरपर दुहना अच्छा है। अगर स्त्रीका दूध न मिले, तो बकरीका दूध ही सिरपर डालना चाहिये ।

(२७) ताज़ा धनियेका जल और खीरा ककड़ीके बीजोंका पानी, थोड़ेसे सिरकेमें मिलाकर, शीशीमें भरकर रोगीको सुँघाना चाहिये। इसे "लखलखा" कहते हैं ।

(२८) सफेद चन्दनका बुरादा, धनिया और कपूर—तीनोंको बराबर-बराबर-बराबर (छै-छै माशे या ज़ियादा) लेकर, एक कपड़ेकी

पोटली में बाँधलो। एक चौड़े बर्तनमें थोड़ासा अर्क गुलाब रखलो। उसी अर्कमें पोटली भिगो-भिगोकर रोगीको सुँघाओ।

(२९) चन्दन और कपूर घिसकर और काहूके पत्तोंके पानीमें मिलाकर नाकमें टपकाओ।

(३०) खैरूके फूल, नीलोफरके फूल और छिला हुआ कद्दू—प्रत्येक आध-आध पाव तथा जौकी भूसी तीन मुट्ठी—इनको जलमें औटाकर निवाये-निवाये पानीसे पाशोया करो; यानी इस पानीसे पैर धोओ। साथ ही चन्दन अथवा चन्दन और कपूर घिसकर सुँघाते रहो या नं० २८ वाली पोटली गुलाब-जलमें तर करके बारम्बार सुँघाते रहो। बुखारका इलाज अलग करते रहो।

तन्द्रा और अत्यन्त निद्राके उपाय।

(१) घोड़ेकी लारमें सेंधानमक, कपूर, मैनसिल, पीपल और शहद—इनको महीन पीसकर, आँखोंमें आँजनेसे निद्रा सहित तन्द्रा आराम हो जाती है।

(२) सेंधानोन, सहँजनेके बीज, सरसों और कूट—इन सबको बराबर-बराबर लेकर और कूट-पीसकर, बकरेके पेशाबमें खरल करके नास लेनेसे उसी समय तन्द्राका नाश होता है।

(३) सोंठ, पीपल, वच और सेंधानमक—इनको समान भागसे लेकर, महीन पीसकर, नास लेनेसे महा घोर तन्द्राका भी विनाश होता है।

(४) कटेहरी, गिलोय, पोहकरमूल, सोंठ, भारङ्गी और हरड़,—इन को बराबर-बराबर मिलाकर, कुल दो तोले लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे तन्द्रा और निद्रा दोनों नाश होती हैं।

ज्वरमें मस्तक-शूल ।

वातज शिरदर्द नाशक नुसखे ।

(१) मुचकुन्दके फूल पीसकर सिर पर लगानेसे वादीका सिर दर्द आराम होता है ।

(२) कूट, अरण्डकी जड़ और सोंठ -इनको माठेमें पीसकर, गरम-गरम सिरमें लगानेसे वादीका सिर-दर्द आराम हो जाता है ।

नोट—वातज सिर दर्द—अगर बिना कारण ही सिर-दर्द खड़ा हो जाय, रातमें दर्द बढ़ जाय, सिरको बाँधने या सेकनेसे दर्द कम हो जाय ; तो समझ लो कि, यह सिरदर्द वादीसे है ।

पित्तज शिरदर्द नाशक नुसखे ।

(१) चन्दन, कमल, कमलकी केशर, मृणाल, कमलकन्द और पद्माख—इनको दूधमें पीसकर सिर पर लगानेसे पित्तका सिर दर्द आराम हो जाता है ।

(२) चन्दन, खस, मुलेठी, खिरैंटी, नखी और कमल—इनको दूधमें पीसकर लेप करनेसे पित्तका सिर दर्द आराम होता है ।

(३) मुलेठी, दाख और मिश्रीको एकत्र पीसकर नास देनेसे अथवा दालचीनी, मिश्री और तेजपातको एकत्र चाँवलोंके पानीमें पीसकर नास देनेसे अथवा दूध और घीको मिलाकर नास देनेसे पित्तका और खूनका दर्द-सिर आराम हो जाता है ।

(४) सौ बारका धोया घी सिरपर रखने या मलनेसे पित्तका सिर-दर्द आराम हो जाता है ।

(५) पित्तपापड़ेका रस, करेलेके पत्तोंका रस और गायका घी,—इन तीनोंको मिलाकर सिरपर मलनेसे पित्तसे भरा हुआ सिर तत्काल हल्का हो जाता है।

(६) चन्दन और कपूर पीसकर सिरपर लगानेसे गरमीका सिरदर्द फौरन आराम हो जाता है।

नोट—(१) पित्त या गरमीका सिरदर्द—अगर छूनेसे सिर ऐसा गरम मालूम हो, मानो अङ्गारोंसे तपाया गया है, आँखों और नाकसे गरम भाफ निकले, रातमें सरदी होनेसे सिरदर्द कम हो जाय ; तो समझ लो कि, सिरका दर्द पित्त या गरमीसे है।

ध्यान धरो ! वादीका सिरदर्द, रातके समय, सरदीका समय होनेसे बढ़ जाता है और पित्तका सिर दर्द रातके समय सरदी होनेसे घट जाता है।

खूनका सिरदर्द—अगर पित्तके सिर दर्दकी तरह सिर छूनेमें एकदम गरम जान पड़े, नेत्रों और नाकसे दाह निकले, रातके समय दर्द कम हो जाय तथा सिरके कोई भी चीज़ छुलानेसे सही न जाय ; तो समझ लो, यह रुधिर या खूनसे सिरदर्द है।

पित्तके और रुधिरके सिरदर्दमें कोई फर्क नहीं है। केवल जरासा फर्क है और वह यह कि, रुधिरके सिरदर्दवालेका मस्तक किसी भी पदार्थके स्पर्श-को सह नहीं सकता।

कफज शिरदर्द नाशक नुसखे।

—★★★—

(१) रेणुका, तगर, भूरिछरीला, नागरमोथा, इलायची, अगर, देवदारु, रास्ना, थुनेर और वालछड़—इनको बराबर-बराबर लेकर और जलमें पीसकर तथा गरम करके लगानेसे सरदीका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(२) धूप सरल, अगर, करञ्ज, देवदारु, रोहिषतृण और सेंधानोन—इनको बराबर-बराबर लेकर, दूधमें पीसकर और गरम करके लगानेसे कफका सिरदर्द नाश हो जाता है।

(३) वचको पीसकर, कपड़ेकी पोटलीमें रखकर, सूँघनेसे सरदी, जुकाम और और सिरका दर्द नाश हो जाता है।

नोट—कफ या सरदीका सिरदर्द—अगर मनुष्यका सिर कफसे भरा मालूम हो, सिर भारी और जकड़ासा हो, छूनेमें शीतल जान पड़े, मुख और आँखोंपर सूजन हो— तो कफका सिरदर्द समझो।

मिश्रित नुसखे।

(१) सोंठको जलमें पीसकर और दूधमें मिलाकर सुँघानेसे अनेक दोषोंसे हुआ सिरदर्द मिट जाता है।

(२) गुड़ और सोंठको एकत्र पीसकर नास देनेसे सब तरहका सिरदर्द मिट जाता है।

(३) पीपर और सेंधानोन पानीमें घिसकर, उसकी २।३ बूँद नाकमें टपकानेसे सिरका दर्द तत्काल मिट जाता है।

(४) जायफल दूधमें घिसकर सिर पर लगानेसे सिरका दर्द मिट जाता है। गरम करके लगानेसे जुकाम और सरदीका दर्द जाता रहता है। कपूर सूँघनेसे भी जुकाममें लाभ होता है।

(५) अगर सरदीसे सिरमें दर्द हो, तो कनपटियों पर खानेका चूना लगा दो और सोंठको दूधमें पीसकर सूँघो। इस उपायसे हर तरहका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(६) केशरको घीमें भूँजकर और मिश्री मिलाकर, सूर्योदयके समय नस्य देनेसे वातरक्तका सिरदर्द, भौं, कान, आँख और सिरका दर्द, आधाशीशीका दर्द और शङ्खक ये सब आराम हो जाते हैं।

नोट—शंखक—पित्त, खून और वायुके दूषित होनेसे कनपटीमें भयानक पीड़ा और भयंकर लाल सूजन होती है। यह विषके वेगके समान बढ़कर मस्तक और गले-

को पकड़ लेती है। इससे तीनही दिनमें आदमी मर जाता और अच्छा इलाज होनेसे तीनही दिनमें बच भी जाता है।

(७) मिश्री, केशर और दाख—इनको बराबर-बराबर लेकर और इनके वज़नसे चौथाई मक्खन लेकर, सबको मिलाकर नस्य देनेसे सूर्यावर्त और आधे सिरका दर्द तथा वात और पित्तका सिरदर्द ये सब आराम हो जाते हैं।

नोट—सूर्य्यावर्त्त सिरदर्द—सूरज निकलतेही आँखों और भौंओंमें मन्दी-मन्दी पीड़ा हो, ज्यों-ज्यों सूरज चढ़े त्यों-त्यों दर्द बढ़े और ज्यों-ज्यों सूरज उतरकर पच्छिमको जाय, दर्द घटता जाय और सूरजके अस्त होते ही बिलकुल दर्द न रहे, तो समझलो कि यह "सूर्य्यावर्त" है। यह दर्द त्रिदोषके कोपसे होता है और अत्यन्त कष्टसाध्य है।

(८) हल्दी, नागरमोथा, अनारका फूल (अभावमें अम्लवेत), छरीला, इमलीकी छाल, बालछड़, तेजपात कमलगट्टेकी गिरी, दालचीनी, व्याघ्र नख, महुएकी अन्तर छाल और बिजौरे नीबूका छिलका—इन सबको समान-समान लेकर अङ्गूरके या जामुनके सिरकेमें मिलाकर, सिर या ललाट पर लगानेसे सिर-दर्द, दाह, बेहोशी, वमन, उबकाई, हिचकी और कँपकँपी—ये सब नाश होते हैं। सैकड़ों बारका परीक्षित है। हर तरहके ज्वरवालेके सिरदर्दमें इसके लगानेसे लाभ होता है।

(९) बच और पीपलके चूर्णकी पोटली बाँधकर सूँघनेसे सूर्यावर्त और आधाशीशीका दर्द आराम हो जाता है।

(१०) भाँगका रस और बकरीका दूध बराबर-बराबर लेकर, दोनोंको मिलाकर और धूपमें तपाकर नास लेनेसे सूर्यावर्त्त-सिरदर्द नाश हो जाता है।

(११) प्याज़ काटकर सूँघनेसे गरमीका सिर दर्द नाश हो जाता है।

(१२) केशरको घीमें मिलाकर सूँघनेसे आधाशीशी और जुकाम नाश हो जाते हैं ।

नोट—अर्द्धावभेदक या आधासीसी—यह सिर दर्द आधे सिरमें होता है । वायु या वातकफके कारणसे मन्या नाड़ी, भौंह, कान, आँख और ललाटमें—एक तरफ दर्द होता है । यह दर्द शस्त्र या आरीसे काटने-जैसा होता है । जब यह रोग बहुत बढ़ जाता है, तब एक तरफके कान या नेत्रको नष्ट कर देता है ।

(१३) अगर सिर बहुत भारी हो, तो कुलींजनको पीस छानकर सूँघो ; छींकें आकर सिर हलका हो जायगा ।

(१४) छुहारेकी गुठली घिसकर सिरपर लगानेसे सिरदर्द मिट, जाता है ।

(१५) चिरमिटीकी जड़ पानीमें पीसकर सुँघानेसे आधाशीशी जाती रहती है ।

(१६) तिलीके तेलमें नमक मिलाकर और गरम करके सूँघनेसे आधाशीशी जाती रहती है ।

(१७) राई और खाँड़को जलमें पीसकर सूँघनेसे आधाशीशी मिट जाती है ।

(१८) नाकसे दूध पीनेसे आधाशीशी वगैरः सब तरहके सिर-दर्द मिट जाते हैं ।

(१९) सोंठ, गोलमिर्च, पीपर, करंजके बीज और सहँजनेके बीज—इनको बराबर-बराबर लेकर और बकरीके पेशाबमें पीसकर सूँघनेसे कीड़े नाश हो जाते हैं ।

नोट—कृमिज सिरदर्द—अगर सिरमें सूई चुभानेकासा दर्द हो, कीड़ों के माथेको खाली कर देनेसें माथा भीतरसे फड़के, नाकसे राध, लोहू और कीड़े गिरें ; तो समझ लो कि सिरमें कीड़े पड़ गये हैं ।

ज्वर छूटनेके पूर्व्वरूप।

—✻✻✻—

दाहःस्वेदोभ्रमस्तृष्णाकम्पोविड्भिदसंज्ञिता।
कूजनं चातिवैगन्ध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे॥

दाह, पसीना, भ्रम, प्यास, कम्प, मलका पतला होना, संज्ञाका नाश, गूँजना और देहमें अत्यन्त दुर्गन्ध—ये लक्षण ज्वर छूटनेके पहले होते हैं; यानी जब बुखार जानेवाला होता है तब होते हैं।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि, दोषोंके नाश हुए बिना रोग नहीं जाता और जब दोष क्षीण हो जाते हैं; तब दाह आदि उपद्रव कैसे रह जाते हैं?

इसका जवाब यह है कि, कोई-कोई चीज़ क्षीण होने समय अपनी शक्ति दिखाती है। जब दीपकमें तेल नहीं होता, तब वह बुझते-बुझते ज़ोरसे जल उठता और फिर बुझ जाता है। इसी तरह दोष भी शान्त होते समय, अपनी शक्ति—दाह आदिक दिखाते हैं। बन्दर पेड़की डाल हिलाकर दूसरी डालपर चला जाता है; फिर भी पिछली डाली थोड़ी देर तक हिलती ही रहती है; इसी तरह ज्वरके चले जानेपर भी, उसका असर कुछ समय तक बना ही रहता है। किन्तु ये दाहादि सब लक्षण त्रिदोष ज्वरोंके शान्त होनेके समय होते हैं; मामूली ज्वरोंमें तो केवल पसीने ही आया करते हैं। कहा है:—

त्रिदोषजेज्वरे ह्येतदन्तर्वेगे च धातुजे।
लक्षणंमोक्षकालेस्यादन्यस्मिन्स्वेददर्शनम्॥

त्रिदोषजज्वर, अन्तर्वेगी ज्वर और धातुगत ज्वरोंके छूटते समय,—ये सब लक्षण होते हैं और ज्वरोंके छूटते समय तो पसीने ही आते हैं।

"चरक"में लिखा है,—ज्वरके त्यागकालमें यानी ज्वरके जानेके समय रोगीका कंठ गूँजता है, "वमन" होती है, रोगी अपने अङ्गोंको

इधर-उधर पटकता है, श्वास छोड़ता है, देहका रंग बिगड़ जाता है, पसीने आते हैं, शरीरमें कँपकँपी आती है, वारम्वार जड़के समान हो जाता है, बकवाद करता है, हठसे सारा शरीर गरम या शीतल हो जाता है, संज्ञा नहीं रहती, रोगी कभी-कभी ज्वरके वेगसे घबरा जाता है, क्रोधीकी तरह चारों ओर देखता है और कभी आवाज़के साथ पतला पाखाना फिरता है—चतुर वैद्यको इन लक्षणोंसे जानना चाहिये कि, ज्वर जानेवाला है। डाक्टर इस अवस्थाको "कॉलेप्स" (Collapse) कहते है ।

"चरक"में लिखा है,—बहुत दोषवाले नवीन ज्वरमें (संसृष्ट या सन्निपातज्वरमें) जल्दबाज़ी करनेसे, असमयमें दोषोंके पकनेसे, इस तरह दारुण भावसे ज्वर छूटता है। जो ज्वर लंघनादि द्वारा क़ायदेसे आराम किये जाते हैं, जल्दबाज़ी नहीं की जाती, वे ज्वर देरसे आराम होते हैं ; पर जाते समय दारुण लक्षणवाले नहीं होते ; यानी उनके जाते समय ऐसे भयङ्कर लक्षण देखनेमें नहीं आते। जल्दबाज़ीके सभी काम ख़राब होते हैं ; पर आजकलके रोगी, आयुर्वेद का ज्ञान न रखनेके कारण, अपना ही हानि-लाभ नहीं समझते और बड़ी जल्दी करते हैं। वैद्योंको मजबूर होकर वैसा ही करना होता है—ज्वर चढ़नेके दिन ही दवा देनी पड़ती है। लंघन प्रभृतिके नियमोंको उल्लङ्घन करना पड़ता है। आयुर्वेदके मतसे कम-से-कम ३ लंघन भी नहीं कराये जाते। "ज्वरस्य प्रथमोत्थाने लङ्घनं च दिनत्रयं, न देयं कथितं वारि न च भैषज्य दापयेत्।" ज्वरके आते ही तीन लङ्घन कराने चाहियें। उन तीन दिनोंमें कोई काढ़ा या दवा न देनी चाहिये ; इसका कोई ख़याल नहीं करता। अगर चौथे दिन दवा दी जाय, तो बड़ा उपकार हो।

"हारीत संहिता"में लिखा है,—भ्रम, शीतलता, विह्वलता, कम्प, मलका पतलापन, थकान, परिश्रम और पसीना—ये सब लक्षण उस समय होते हैं, जब ज्वर छूटनेवाला होता है।

"सुश्रुत"में लिखा है—

धातून्प्रक्षोभयन्दोषो मोक्षकाले बलीयते ।
तेन व्याकुलचित्तस्तु म्रियमाण इवेहते ॥

दोष, मोक्ष होनेके समय या शान्त होनेके समय, धातुओंको क्षुभित करके, अत्यन्त बलवान हो जाते हैं; जिससे घबराया हुआ रोगी मरनेवालेकी सी चेष्टायें करने लगता है; यानी जब रोग घटने या अच्छा होने लगता है, तब वह इतना बलवान मालूम होता है कि, रोगीके बचनेकी आशा नहीं रहती ; परन्तु दोषके शान्त होते ही, रोगी अच्छा हो जाता है ।

ज्वरमुक्त रोगीके लक्षण ।

(ज्वर छूट जानेके लक्षण)

"सुश्रुत"में लिखा है—

स्वेदोलघुत्वंशिरसःकंडूःपाकोमुखस्यच ।
क्षवथुश्चान्नाकांक्षाच ज्वरमुक्तस्य लक्षणम् ॥

पसीनोंका आना, शरीरमें हलकापन, मस्तकमें खाज, मुखपाक यानी होठोंपर पपड़ी जमना, छींक आना और भोजनकी इच्छा होना—ये ज्वरमुक्तके लक्षण हैं ।

हारीतने लिखा है,—पसीने आवें, खाज चले, नाड़ी पुष्ट हो जाय, मुँहमें छींक आवें, शरीर हलका हो, भूख लगे, इन्द्रियाँ प्रसन्न हों, पीड़ा और ग्लानि जाती रहे—ये लक्षण हों, तब समझो कि ज्वर उतर गया ।

'चरक'में लिखा है,—ज्वरमुक्त होनेसे रोगी विगतक्लान्ति, विगत-सन्ताप, व्यथाहीन, विमलेन्द्रिय तथा पहले की तरह सत्ववान हो जाता है ।

ज्वर लौट आनेके चिन्ह।
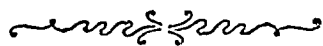
विमुक्तस्यापि हि शिरोगुरुत्वं नैव मुञ्चति।
अविमुक्तं विजानीयाज्ज्वरः पुनरुपैतितम्॥

अगर ज्वर छूट गया हो, पर सिरका भारीपन न गया हो; तो समझ लो कि, अभी कसर है—ज्वर फिर लौटकर आवेगा।

नट—शोधन शमन आदि करनेपर भी अगर कुछ पित्त त्वचामें रह जाता है, तो ज्वर पैदा कर देता है। ऐसे स्थलमें ईखका रस या शीतल शर्बत या शर्करोदक* पिलाना और दूध भात खिलाना चाहिये। अगर कफ और वायु शेष रहे हों; तो स्वेद, अभ्यङ्ग यानी पसीने निकालने और मालिश वगेरः से काम लेना चाहिये।

"सुश्रुत"में कहा है:—

हृतावशेषं पित्तं तु त्वकूस्थं जनयति ज्वरम्।
पिबेदिक्षुरसं तत्र शीतं वा शर्करोदकम्॥
शालिषष्टिकयोरन्नमश्नीयात् क्षीरसंप्लुतम्।
कफवातोत्थयोरेव स्वेदाभ्यंगौ प्रयोजयेत्॥

नोट—जरूरत होनेसे पृष्ठ ४१४ के अन्तमें लिखे हुए तीनों नुसखोंमें से कोई नुसखा विचारपूर्व्वक देना चाहिये।

ज्वरारिष्ट।

(न बचनेवाले ज्वर रोगियोंके लक्षण)

(१) जिसकी जीभ नीली पीली और खरदरी हो, अत्यन्त गरम श्वास आवे, रोमहर्ष हो; नीले, लाल और पीले नेत्र हो जायँ और कण्ठ घर-घर करे—वह रोगी नहीं जीता।

---

* शर्करोदकके लिये पृष्ठ ७६ का फुटनोट देखिये।

(२) जिसके मुँहमें जल्दी-जल्दी श्वास आवे, दाँतोंकी कतार काली हो जाय, नेत्र ठहरेसे हो जायँ और शरीरमें बल आजाय—वह रोगी-नहीं जीता ।

(३) बहुत पेशाब करनेवाला, बहुत श्वास लेनेवाला, दुबला, अरुचि-वाला और नष्ट इन्द्रियोंकी कान्तिवाला रोगी मर जाता है ।

(४) जिसके मुखसे खून गिरे, सिरमें दर्द हो, भीतर दाह और बाहर जाड़ा लगे,—ऐसा रोगी मर जाता है ।

(५) जो बेहोश हो, संज्ञारहित होकर सोता हो, जिससे गिरकर उठा न जाय, बाहर शीत और भीतर दाहसे पीड़ित हो,—वह रोगी मर जायगा ।

(६) जिसके रोएँ खड़े हों, आँखें लाल हों, हृदय (छाती में) भया-नक दर्द हो और मुखसे निरन्तर ऊँचा श्वास लेता हो, वह ज्वर-रोगी मर जायगा ।

(७) हिचकी और श्वाससे पीड़ित हो, मूढ़ हो—विशेषकर भ्रमते हुए नेत्रोंवाला हो, निरन्तर ऊँचे श्वासवाला हो और क्षीण हो, —वह ज्वर रोगी मर जायगा ।

(८) जिसकी आँखें धूएँकेसे रङ्गकी हों, जिसे बेहोशी हो ; अत्यन्त तन्द्रा हो यानी आँखें मिची जाती हों—ऐसा ज्वर रोगी मर जायगा ।

(९) जिसको बहुत कय होती हों, नेत्रोंसे जल गिरता हो, अरुचि हो, भीतर दाह हो और जीभ काली हो—ऐसा रोगी मर जायगा ।

(१०) जिसका एक उपद्रव तो शान्त न होता हो ; किन्तु और बहुतसे उपद्रव पैदा होते हों और नये-नये रूप लाते हों—वह रोगी मर जायगा ।

शास्त्रमें कहा है :—

> व्याधेरुपरि यो व्याधिः सोपद्रवः उदाहृतः ।
> सोपद्रवा न जीवन्ति जीवन्ति निरुपद्रवाः ॥

रोगके ऊपर जो उपद्रव हो, वही रोगका उपद्रव है। उपद्रव सहित रोगवाले नहीं जीते ; किन्तु उपद्रव रहित रोगवाले जीते हैं ।

(११) जो ज्वर बहुत प्रबल कारणोंसे उत्पन्न हुआ हो और जिसमें सारे लक्षण मिलते हों, वह ज्वर प्राणनाशक है ।

(१२) जो ज्वर पैदा होते ही और चिकित्सा करते-करते इन्द्रियोंकी शक्तिको नष्ट कर दे ; यानी रोगीको अन्धा, बहरा, गूँगा प्रभृति कर दे, वह असाध्य है ।

(१३) जिस ज्वरमें पुरुष ज्वरसे क्षीण हो गया हो अथवा देहमें सूजन आ गई हो, वह ज्वर असाध्य है ।

(१४) जो ज्वर धातुके भीतर हो अथवा अन्तर्वेगी ज्वर हो अथवा जिस ज्वरमें वातादि दोषोंका निश्चय न हो सके और बहुत दिनों तक रहनेवाला हो, वह ज्वर असाध्य है। जिस ज्वरमें रोगी अपने बालोंकी सीमन्त रचना आदि करता हो, वह भी असाध्य है ।

(१५) जो ज्वर आतेही विषम हो जाय और जो ज्वर बहुत दिनोंसे आता रहे, वह असाध्य है ।

(१६) क्षीण और अति रूखी देहवालेके गम्भीर ज्वर हो, तो मृत्यु समझनी चाहिये। भीतर दाह, प्यास, विरुद्ध दोषोंका बढ़ना, मलका रुकना, श्वास और खाँसी ये गम्भीर ज्वरके लक्षण हैं ।

(१७) जिसके रोमाञ्च होते हों, हृदयमें शूल हो, अङ्गोंमें ताप हो, जो

बेहोश हो, उर्द्ध श्वास लेता हो, जिसके सिर पर पसीने आते हों परन्तु छातीपर न आते हों और जिसका सारा शरीर शीतल हो, वह रोगी मर जायगा।

यमघंट योग।

वार	नक्षत्र	
रविवार	मघा	इन रोगोंको "यम घंट" कहते हैं। इन योगोंमें बीमार होने से रोगी शायद ही जीता है। सुख की आशा नहीं है। उदाहरण—वार रविवार हो और उस दिन नक्षत्र मघा हो, और उसी दिन रोग हुआ हो, तो समझना चाहिये कि "यम घंट" योगमें रोग हुआ। इसी तरह औरोंको समझ लीजिये।
सोमवार	विशाखा	
मंगल	आर्द्रा	
बुध	मूल	
बृहस्पति	कृत्तिका	
शुक्र	रोहिणी	
शनिवार	हस्त	

मृत्यु-योग।

वार	नक्षत्र	
रविवार	अनुराधा	इन योगोंको मृत्युयोग कहते हैं। इनमें रोग होनेसे शुभ नहीं। उदाहरण—जिस दिन रविवार हो और उसी दिन नक्षत्र अनुराधा हो, अगर ऐसे दिन रोग हो, तो रोगीके जीनेकी उम्मीद न समझनी चाहिये।
सोमवार	उत्तरा	
मंगल	मघा	
बुध	अश्विनी	
बृहस्पति	मृगशिर	
शुक्र	अश्लेषा	
शनिवार	हस्त	

मृत्युयोग ।

अश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपदा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, भरणी, कृतिका और विशाखा—ये नक्षत्र पापवारोंसे युक्त हों और नवमी, षष्ठी, द्वादशी और चौथ ये तिथि भी हों; तो मरण समझना चाहिये । जैसे,—अश्लेषा नक्षत्र हो, वार पापवार हो तथा नवमी तिथि हो अथवा द्वादशी हो या छठ अथवा चौथ हो—यानी तीनोंका मेल हो अथवा पापवार और नक्षत्र का मेल हो और उस दिन किसीको रोग हो; तो वह रोगी नहीं बचेगा ।

नक्षत्रोंके भागानुसार

रोगोंकी मर्य्यादा ।

१ कृत्तिका—इस नक्षत्रमें दारुण ज्वर और पित्तकी व्याधि उत्पन्न होती है । इस नक्षत्रके पहले भागमें रोग हो, तो १० दिन पीड़ा रहती है; दूसरे भागमें रोग हो, तोभी दश दिन पीड़ा रहती है और तीसरे भागमें रोग होनेसे ५ दिन पीड़ा रहती है ।

२ रोहिणी—इस नक्षत्रके पहले भागमें रोग हो, तो ६ रात; दूसरे भागमें रोग हो तो १८ दिन और तीसरे भागमें रोग हो, तो १० दिन पीड़ा रहती है ।

३ मृगशिर—पहले भागमें रोग हो तो ५ दिन; दूसरे भागमें हो तो १२ दिन पीड़ा रहती है और तीसरे भागमें रोग होनेसे १ मास तक पीड़ा रहकर मृत्यु हो जाती है ।

४ आर्द्रा—पहले भागमें रोग हो तो पन्द्रह दिन और दूसरेमें हो तो

१२ दिन तक रोग रहता है। तीसरे भागमें रोग पैदा हो, तो रोगी मर जाता है।

(५) पुनर्वसु —इसके पहले भागमें आया हुआ ज्वर ४५ दिन रहता है। दूसरेमें आया हुआ ७ दिन और तीसरेमें आया हुआ २५ दिन रहता है।

(६) पुष्य —इसके पहले भागमें आया हुआ रोग ७ दिन, दूसरेमें आया हुआ २० दिन और तीसरेमें आया हुआ २१ दिन रहता है।

(७) अश्लेषा—इसके पहले भागमें ज्वर चढ़नेसे मनुष्य बड़ी मुश्किल से जीता है, दूसरे और तीसरे भागमें ज्वर आनेसे निश्चयही मृत्यु होती है।

(८) मघा—इस नक्षत्रके पहले भागमें रोग होनेसे ७ दिन; दूसरेमें होनेसे १० दिन रोग रहता है और तीसरे भागमें रोग होनेसे मनुष्य २० दिन तक बहुत तकलीफ पाता है।

(९) पूर्वाफाल्गुनी—इसके पहले अंशमें ज्वर होनेसे ५ रात तक रहता है, दूसरेमें होनेसे १२ दिन तक रहता है और तीसरेमें ज्वर होने से १ मास बाद मृत्यु हो जाती है।

(१०) उत्तराफाल्गुनी—पहले भागमें रोग होनेसे १८ दिन, दूसरेमें होनेसे सात रात और तीसरेमें होनेसे ९ दिन पीड़ा रहती है।

(११) हस्त—पहले भागमें रोग होनेसे ७ रात; दूसरेमें होनेसे ४ दिन और तीसरेमें होनेसे ५ दिन पीड़ा रहती है।

(१२) चित्रा—पहले भागमें ज्वर होनेसे मृत्यु होती है। दूसरे भागमें रोग होनेसे रोग भयङ्कर रूप धारण करके ३ महीनेमें दूर होता है और तीसरे भागमें रोग होनेसे १३ दिन पीड़ा रहती है।

(१३) स्वाती—पहले भागमें रोग होनेसे १७ दिन; दूसरे भागमें होनेसे

२१ दिन पीड़ा रहती और तीसरे भागमें रोग होनेसे मृत्यु ही होती है।

(१४) विशाखा—पहले भागमें रोग होनेसे ४८ दिन पीड़ा रहती है, दूसरे और तीसरे भागमें रोग होनेसे १२।१२ दिन पीड़ा रहती है।

(१५) अनुराधा—पहले भागमें रोग होनेसे ७ दिन, दूसरे भागमें होनेसे १५ दिन और तीसरे भागमें होनेसे ६४ दिन पीड़ा रहती है।

(१६) ज्येष्ठा—पहले भागमें रोग होनेसे ४५ दिन और दूसरे तथा तीसरे भागमें रोग होनेसे १६ दिन पीड़ा रहती है।

(१७) मूल— पहले भागमें रोग होनेसे ६० दिन ; दूसरेमें होनेसे १६ दिन और तीसरेमें होनेसे १५ दिन पीड़ा रहती है।

(१८) पूर्वाषाढ़ा—पहले और दूसरे भागमें रोग होनेसे १५ दिन पीड़ा रहती है, किन्तु तीसरे भागमे' रोग होनेसे रोगी मर जाता है।

(१९) उत्तराषाढ़ा—पहले और दूसरे भागमे' रोग होनेसे १२ रात और तीसरे भागमें रोग होनेसे २० दिन पीड़ा रहती है।

(२०) श्रवण—पहले भागमें रोग होनेसे ७ दिन ; दूसरेमें होनेसे २० दिन और तीसरेमें होनेसे १६ दिन पीड़ा रहती है।

(२१) धनिष्ठा—पहले भागमें रोग होनेसे २० दिन ; दूसरेमे होनेसे ६० दिन और तीसरेमें होनेसे १ मास पीड़ा रहती है।

(२२) पूर्वाभाद्रपद—पहले भागमें दारुण रोग हो तो ४५ दिन ; दूसरेमें हो तो ६ मास और तीसरेमें हो, तो १६ दिन पीड़ा रहती है।

(२३) उत्तराभाद्रपद—पहले भागमें रोग हो तो १५ दिन ; दूसरेमें हो तो ३० दिन और तीसरेमें हो तो २८ दिन पीड़ा रहती है।

२४ रेवती—पहले भागमें रोग हो तो ८ दिन ; दूसरेमें हो तो १६ दिन और तीसरेमें रोग हो तो ३० दिन पीड़ा रहती है।

२५ अश्विनी—पहले भागमें रोग हो तो १ दिन ; दूसरेमें रोग हो तो ५ रात और तीसरेमें हो तो ७ रात पीड़ा रहती है।

२६ भरणी—पहले भागमें पीड़ा हो तो ७ दिन पीड़ा रहती है ; दूसरे भागमें रोग हो तो मृत्यु होती है और तीसरे भागमें रोग हो, तो ६० दिन पीडा रहती है।

नक्षत्रोंके तीन भाग आत्रेय मुनिने किये हैं। इनका मर्म जान कर वैद्यको चिकित्सा करनी चाहिये। इन नक्षत्रोंकी शान्तिके अलग-अलग मन्त्र हैं। उनसे हवन करनेसे रोग की शान्ति होती है।

नक्षत्रोंके हिसाबसे ज्वर रोगीके

आरोग्य लाभ या मरणका निश्चय।

१ धनिष्ठा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १० दिन तक रहता है।

२ शतभिषा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १० दिनमें रोगीको मार देता है।

३ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ दिन या १२ दिनमें मार देता है।

४ उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १४ दिन बाद आराम हो जाता है।

५ रेवती नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ४ या ८ दिनमें तक रहता है।

६ अश्विनी नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ दिनमें आराम हो जाता है।

७ भरणी नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ५ दिनमें रोगीको मार देता है।

८ कृत्तिका नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ७ या १२ दिनमें आराम हो जाता है, पीछे ३ पक्षमें संशय हो जाता है।

९ रोहिणी नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ या ११ दिनमें आराम हो जाता है।

१० मृगशिर नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ या ९ दिन रहता है।

११ आर्द्रा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ५ दिनमें मार देता है। इससे अधिक रहनेसे संशय हो जाता है।

१२ पुनर्वसु नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १३ या २७ दिनमें चला जाता है।

१३ पुष्य नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ३ या ७ दिनमें चला जाता है।

१४ अश्लेषा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर वहुत समय तक रहकर शेषमें मार देता है।

१५ मघा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १२ दिनमें मार देता है। अगर अधिक दिन निकल जायें, तो रोगी सुखी हो जाता है।

१६।१७ पूर्वा फलगुन नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ या १० दिनमें तथा उत्तरा फाल्गुनमें हुआ ज्वर ८ या ९ अथवा २१ दिनमें चला जाता है या मार देता है।

१८ हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ७ दिनमें मोक्ष कर देता है। आठ दिनसे अधिक होनेसे रोगी आराम हो जाता है।

१९ चित्रा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ दिनमें मोक्ष कर देता है। अधिक रहनेसे रोगी आराम हो जाता है।

२० स्वाती नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १० दिन या ३ दिनमें आराम हो जाता है।

२१ विशाखा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर २१ दिनमें मार देता है।

२२ अनुराधा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ दिन तक रहता है। इसके बाद चिकित्सा वृथा है।

२३ जेष्ठा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर पाँचवें दिन मार देता है अथवा १२ दिनमें सुखी कर देता है।

२४ मूल नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर दश या ३ सप्ताहमें आराम हो जाता है।

२५ पूर्वाषाढ़ नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ दिनमें आराम हो जाता है।

२६ उत्तराषाढ़ नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १ मास तक दुःख देता है। पीछे ८ या ६ मासमें आराम हो जाता है।

२७ श्रवण नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ दिन तक तकलीफ देता है।

नोट—२७ नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र मामूली तौरसे ६० घड़ी या २४ घण्टे तक रहता है। कभी-कभी ५५ घड़ी या ६५ घड़ी भी रहता है; पीछे दूसरा नक्षत्र बदल जाता है।

कुछ ज़रूरी बातें।
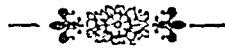
औषधि-सम्बन्धी नियम।

(१) बहुतसी दवाओंमेंसे कुछ की तोल लिखी हो और किसी की तोल न लिखी हो, तो जिसकी तोल न लिखी हो, उसे भी उन्हींके बराबर लेना चाहिये।

(२) अगर कहीं दवा सेवन करनेका समय न लिखा हो, तो वहाँ सवेरेके समय दवा लेनी चाहिये। दवा सेवनका समय जानना चाहो, तो पृष्ठ १३१-१३३ तक देखिये।

(३) अगर कहीं दवाके पकानेके लिये बर्तनका नाम न लिखा हो, तो मिट्टीके बासनमें दवा पकानी चाहिये।

(४) अगर कहीं पतले पदार्थका ज़िक्र न हो और बिना पतले पदार्थ काम न चलता दीखे, तो वहाँ पानी लेना चाहिये। जहाँ यह न लिखा हो कि, अमुक औषधिके पत्ते, छाल, फल या फूल क्या लिया जाय, वहाँ आप उस दवाकी जड़ लीजिये। जिन

---

* ये सब बातें पहले भागके २९८-३०२ पृष्ठोंमें विस्तारसे लिखी हैं, वहाँ अवश्य देख लीजिये।

वृक्षोंकी जड़ें मोटी हों, उनकी छाल लीजिये; जिनकी जड़ें छोटी हों, उनका सर्व्वाङ्ग लीजिये। जैसे; वड़ नीम आदिकी छाल लीजिये; विजयसार आदिका सार; परवल और तालीसपत्र आदिके पत्ते और त्रिफला तथा अनार आदिके फल लीजिये।

कौन-कौन दवाएँ नयी या पुरानी लेनी चाहियें?

(५) सभी कामोंमें नये पदार्थ लीजिये; किन्तु वायविड़ङ्ग, पीपल, गुड़, चांवल, घी, शहद, धनिया और हींग पुरानी लीजिये। ये एक साल वाद पुराने समझे जाते हैं। अगर पुराना गुड़ न मिले, तो नये गुड़को १२ घण्टे तक धूपमें रखकर काममें लाना चाहिये।

दवाका खुलासा न लिखा हो तो क्या करना चाहिये?

(६) अगर कहीं किसी दवाका विशेष परिचय न लिखा हो—जैसे; उत्पल लिखा हो तो नीलोत्पल समझो; पुरीषरस लिखा हो तो गोवर लीजिये; चन्दन लिखा हो तो लालचन्दन लीजिये; सरसों लिखी हो तो सफेद सरसों लीजिये; नमक लिखा हो तो सेंधानमक लीजिये; मूत्र लिखा हो तो गायका मूत्र लीजिये। दूध और घी लिखा हो, तो गायका दूध और घी लीजिये।

गीली सूखी दवाओंका विचार।

(७) गिलोय, कुड़ा, अड़ूसा, पेठा, शतावर, असगन्ध, पियावांसा, सौंफ और प्रसारिणी—ये दवाएँ गीली ही लेनी चाहियें।

अड़ूसा, नीम, परवल, केवड़ा, खिरेंटी, पेठा, शतावर, सोंठ, कुड़ा, गन्धप्रसारिणी, गिलोय, इन्द्रवारुणी, नागबला, कटसरैया,

गूगल और सौंफ—ये गीली ली जा सकती हैं, पर दूनी लेनेकी ज़रूरत नहीं।

नोट—सभी चीजें प्राय सूखी ली जाती हैं। अगर कोई चीज़ अभाववश गीली लेनी पड़े, तो दूनी लेनी चाहिये ; पर उपरोक्त चीजें, गीली होने पर भी, दूनी न लेनी चाहियें।

कहाँ लाल और कहाँ सफेद चन्दन लेना चाहिये ?

(८) चूर्ण, अवलेह आसव और तेलके नुसख़ेमें ख़ाली "चन्दन" शब्द लिखा हो, तो "सफेद चन्दन" लीजिये ; किन्तु काढ़े और लेपमें लाल चन्दन लीजिये।

कोई दवा न मिले तो बदल लेना चाहिये।

(९) अगर आपको कोई दवा न मिले, तो उसका प्रतिनिधि या बदल ले लीजिये। किसका क्या बदल है, यह देखना हो, तो आप पहले भागके ३०३—३०७ के पृष्ठ देखिये। वहाँ अनेक दवाओंके प्रतिनिधि या बदल लिखे हैं।

काढ़ेकी दवाओंका वज़न कितना होना चाहिये ?

(१०) काढ़ेमें जितनी दवाएँ हों, वे सब बराबर-बराबर मिलाकर कुल २ तोले लेनी चाहियें। जैसे ;—किसी नुसख़ेमें ६ दवाएँ हों, तो आप हरेकको चार-चार माशे लेकर दो तोले वज़न पूरा कर लीजिये। अगर नुसख़ेमें दो दवाएँ हों, तो प्रत्येक को एक-एक तोले लीजिये। काढ़ेको १६ गुने यानी ३२ तोले जलमें औटाइये और चौथाई यानी ८ तोले जल रहनेपर उतार लीजिये। काढ़ेमें कोई चीज़ ऊपरसे मिलानी हो, तो काढ़ा पीते समय मिलानी चाहिये। मिलानेवाली दवा प्रायः ६ माशे मिलानी चाहिये। अगर एक चीज़ मिलानी हो, तो आधे

तोले मिलाइये और अगर दो चीज़ मिलानी हों, तीन-तीन माशे मिलाइये। काढ़ा रोज़ ताज़ा बनाकर पीना चाहिये; बासी काढ़ा न पीना चाहिये। औटाये हुए काढ़ेको फिर दुबारा न औटाना चाहिये। काढ़ेके सम्बन्धमें और भी उपयोगी बातें जाननी हों, तो इसी भागके पृष्ठ १३१—१३५ और १७३—१७४ देखिये।

क्वाथ प्रभृति बनाने की विधि।

क्वाथ।

(११) अगर काढ़ा बनाना हो, तो २ तोले दवाको ३२ तोले जलमें, मिट्टीकी हाँडीमें, बिना ढकन लगाये, पकाओ और चौथाई जल रहने पर मल-छानकर पिलाओ।

नोट—कोमल द्रव्य चौगुना पानी, कड़ी अठगुना और अति कड़ी सोलह गुना पानी डाल कर औटानी चाहिये।

हिम।

—*—

अगर हिम या शीतकषाय बनाना हो, तो २ तोला दवाको १२ तोले या छैगुने जलमें पहले दिन शामको भिगो दो और सवेरे मल-छानकर पिला दो। देखो पृष्ठ १८३ का न० १५

फाँट।

अगर फाँट बनाना हो, तो पहले दवासे चौगुना गरम जल तैयार कर लो। पीछे उसी पानीमें दवाको थोड़ी देर तक भिगो रखो और पीछे छानकर पिला दो।

कल्क।

अगर कल्क बनाना हो, तो गीली या सूखी दवाको सिलपर

डालकर जलके साथ भाँगकी तरह पीस लो, यही कल्क है। देखो पृष्ठ १७२ के सिरका नोट।

स्वरस।

अगर स्वरसकी ज़रूरत हो, तो कच्ची दवाको सिलपर विना पानी मिलाये कूट-पीसकर कपड़ेमें निचोड़ लो। यही "स्वरस" है। अगर स्वरसकी गीली दवाएँ न मिलें, तो सूखी दवाओंको जौकुट करके अठगुने जलमें रातको भिगो दो; सवेरे आगपर औटाकर, चौथाई जल रहनेपर उतारकर काममें लाओ। अगर स्वरसमें मिश्री, शहद, गुड़ ज़ीरा, खार, नमक, चूर्ण या तेल मिलाने हों, तो आठ-आठ माशे मिलाने चाहियें। स्वरस १ या २ तोले तक दिया जा सकता है।

नोट—काढ़ा, हिम, फाँट, कल्क और स्वरस—इनको पञ्च कषाय कहते हैं। स्वरससे काढ़ा, काढ़ेसे कल्क, कल्कसे हिम और हिमसे फाँट हल्का होता है।

पुटपाक।

पुटपाक करना हो, तो सब दवाओंको जामुन या बड़के पत्तेमें लपेट कर, ऊपरसे मज़बूत धागा बाँधकर, दो अँगुल मिट्टी चढ़ाकर सुखा लो; पीछे आगमें रख दो। जब मिट्टीका रंग लाल सुर्ख़ हो जाय, दवाको पकी हुई समझो और निकाल खोल कर काम में लाओ।

चूर्ण।

अगर चूर्ण बनाना हो, तो पहले सब दवाओंको बीन-चुन और फटककर साफ करलो; पीछे अच्छी तरह धूपमें सुखाकर प्रत्येक दवाको अलग-अलग कूट लो। पीछे दवाएँ जितनी-जितनी मिलानी हों, उतनी-ही-उतनी तोल-तोलकर मिला दो। इस

तरह उत्तम चूर्ण बनता है। अगर चूर्णमें गुड़ मिलाना हो, तो बराबरका मिलाओ। अगर मिश्री मिलानी हो, तो दूनी मिलाओ। अगर चूर्ण पतले पदार्थमें मिलाकर पीना हो, तो चौगुने पतले पदार्थमें मिलाकर पीओ। अगर किसी चूर्णमें किसी चीज़की भावना देनी हो, तो जिसकी भावना देनी हो, उसकी भावना देकर चूर्णको सुखा लो।

भावना देनेकी विधि।

भावना देनेका यह क़ायदा है कि जिस काढ़े या रसमें भावना देनी हो, उस काढ़े या रसमें चूर्णको अच्छी तरह भिगोकर दिनमें धूपमें और रातमें ओसमें रक्खो। अगर सात भावना देनी हों, तो सात दिन तक भिगो-भिगोकर रोज़ दिनको धूपमें और रातको ओसमें रख दो। प्रत्येक दिन भावनाका रस या काढ़ा ताज़ा तैयार करके भावना देनी चाहिये।

अनुपान।

(१२) अनेक दवाओंके सेवन करनेके बाद कोई पतली चीज़ पीनेका क़ायदा है। दवाके साथ जो पतली चीज़ ली जाती है, उसे ही "अनुपान" कहते हैं। आजकल शहद प्रभृतिमें मिलाकर दवा चाटते हैं और वे शहद प्रभृति ही अनुपान कहे जाते हैं। अनुपानके साथ औषधि थोड़ी देरमें ही बड़ा अद्भुत चमत्कार दिखाती है। इसलिये प्रायः दवाएँ अनुपानके साथ सेवन करनी चाहियें। औषधि जिस रोगका नाश करनेवाली हो, उसका अनुपान भी उसी रोगके नाश करनेवाला होना चाहिये।

कफज्वरमें अनुपान शहद, तुलसीके पत्ते, अदरखका रस और पानका रस है।

पित्तज्वरमें अनुपान पित्तपापड़ेका रस, परवलका रस या काढ़ा, गिलोयका रस, नीमकी छालका काढ़ा या रस है ।

वातज्वरमें शहत, गिलोयका रस या चिरायतेको भिगोकर बनाया जल प्रभृति अनुपान हैं ।

विषमज्वरमें पीपलोंका चूर्ण, तुलसीके पत्तोंका रस, गोलमिर्चोंका चूर्ण, शहद और बेलके पत्तोंका रस प्रभृति अनुपान हैं ।

खाँसी, कफ प्रधान श्वास और जुकाममें अड़ूसेके पत्तोंका रस, तुलसीके पत्तोंका रस, पानका रस, अदरखका रस, पीपलका चूर्ण, काकड़ासिंगीका चूर्ण, वंसलोचनका चूर्ण ; मुलेठी, कटेहली, कायफल और अड़ूसेकी छाल—इनका काढ़ा अनुपान है । वायुप्रधान श्वासमें शहद और बहेड़ेका काढ़ा प्रभृति अनुपान हैं ।

नोट—रोग और रोगीकी अवस्थानुसार अनुपानके लिये काढ़ा ४तोले, स्वरस २ तोले या १ तोले और चूर्ण एक आने या आध-आध आनेभर देना चाहिये । चूर्ण के अनुपानमें शहद अच्छा है । पित्ताधिक्यके सिवा और सब अवस्थाओंमें शहद दिया जा सकता है ।

गोलियाँ ।

—※—

अगर गोलियाँ बनानी हों, तो दवाओंके चूर्णमें पतले पदार्थ विशेषकी भावना देकर, खरल में अच्छी तरह घोटकर जौ, सरसों या चिरमिटीके समान गोलियाँ बनाओ । अगर यह न लिखा हो कि, किस पतली चीज़को मिलाकर गोली बनाओ ; तो आप पानीके साथ चूर्णको खरल करके गोलियाँ बनाओ । अगर यह न लिखा हो कि, इतनी बड़ी-बड़ी गोलियाँ बनाओ, तो आप प्रायः एक-एक रत्ती भरकी गोलियाँ बनावें ।

नोट—गुटिका, बटी, मोदक, बटिका, पिंडी और गुड़—ये सात गोलियोंके नाम हैं ।

गुड़, खाँड या गुगलका पाक करके, उस पाकमें दवाओंका चूर्ण मिलाकर गोली बनानी चाहिएँ । अगर बिना पाक किये गोलियाँ बनानी हों, तो गूगलको शोधकर और पीसकर तथा चूर्णमें मिलाकर घीसे गोलियाँ बनानी चाहियें ।

अगर जल, शहद, दूध आदि पतली चीजोंमें चूर्णको डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो इनमें चूर्णको डालकर और खरल करके गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर खाँड़ या मिश्री आदि डालकर गोली बनानी हों, तो चूर्णसे चौगुनी खाँड़ या मिश्री मिलाकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर गुड़ डालकर गोलियाँ बनानी हों; तो चूर्णसे दूना डालकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर गूगल और शहद दोनों डालकर बनानी हों, तो इन दोनोंको चूर्णके बराबर लेकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर दूध या पानी वगैरः पतले पदार्थोंसे गोलियाँ बनानी हों; तो चूर्णसे दूने लेकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

मुद्रा और यंत्र प्रभृति।

अनेक प्रकारकी मुद्रायें।

दो शीशियों या दो हाँड़ियोंके मुँह मिलाकर, किसी चीज़से जोड़ दिये जाते हैं, जिससे भीतरकी दवा अथवा पारा प्रभृति न उड़ें अथवा धूआँ वगैर: न निकलें—इसीको मुद्रा कहते हैं।

कहीं तो शीशियोंका मुँह गुड़ और चूनेसे बन्द किया जाता है और कहीं शहत और चूनेको मिलाकर उनसे बन्द किया जाता है। डमरूयन्त्रकी दोनों हाँडियोंके मुखोंको चिकने पत्थरपर घिसकर बराबर कर लेते हैं; पीछे दोनों हाँड़ियोंके मुँह मिलाकर उनको पहले लोहेके तारोंसे कस देते हैं; इसके बाद कपड़ेके टुकड़ोंको चिकनी मिट्टी या मुल्तानी मिट्टीमें लहेस-लहेसकर, हाँड़ियोंके जोड़ों पर चढ़ाते हैं। कभी-कभी रूई, लोहेकी कीट, मिट्टी और राखको खूब कूटपीटकर, उससे हाँडियोंका मुँह बन्द कर देते हैं। अगर डमरूयन्त्र द्वारा हिंगलूसे पारा निकालते हैं; तो "वज्रमुद्रा" से,

दराजों को वन्द करते हैं। जहाँ पारेके उड़ जानेकी सम्भावना रहती है, वहाँ वज्र मुद्रासे काम लेते हैं।

पीपलका गोंद १ तोला, लोहचूर्ण १ तोला, रूई १ तोला, सैंधा नमक १ तोला, मुलतानी मिट्टी १ तोला और वालू २ तोला—इन सब को मिलाकर और ऊपरसे पानी डाल-डालकर, मजबूत पत्थरकी सिलपर रखकर लोढ़े या हथोड़ेसे कूटते हैं; तीन दिन बराबर कूटनेसे जब सब चीज़ें एकदम चिकनी और चिपक जाने लायक़ हो जाती हैं तब डमरूयन्त्रकी मुख घिसकर तैयार की हुई हाँड़ियोंके मुखोंको इसी कल्कसे बन्द कर देते हैं। इसीको "वज्रमुद्रा" कहते हैं। इससे मुख जोड़ देनेसे पारा उड़कर नहीं जा सकता; परन्तु मुद्रा से मुख बन्द करके ऊपरसे कपड़-मिट्टी अवश्य कर देनी चाहिये; इससे फटनेका भय नहीं रहता।

शहत और चूनेको मिलाकर, उससे शीशी और कागकी सन्धि को बन्द करते हैं अथवा गुड़ और चूनेको ज़रा पानी मिलाकर खूब एक कर लेते हैं, पीछे इससे भी शीशी और कागकी दराज बन्द करते हैं। इसको "दृढ़ मुद्रा" कहते हैं। चन्द्रोदय या सिन्दूर रसके बनानेमें दृढ़ मुद्रासे काम लेते हैं।

गोबर और चिकनी मिट्टी मिलाकर अथवा केवल चिकनी मिट्टी को पानीमें सानकर अभ्रक प्रभृतिके सम्पुट पर मुद्रा देते हैं; यानी शरावों (सराइयों) या हाँडियोंके मुख इसीसे वन्द कर देते हैं। इसको "साधारण मुद्रा" कहते हैं।

नोट—हर प्रकारकी मुद्रा देकर, ऊपरसे चार पाँच कपरौटी अवश्य कर देनी चाहियें; यानी ऊपरसे कपड़ेको मिट्टीमें लहेसकर ४।५ तह चढ़ा देनी चाहियें। इससे फटने का भय नहीं रहता।

सेंधानोन, चिकनी मिट्टी और आरने कंडोंकी राख—इनको बराबर-बराबर लेकर पानी मिलाकर एक दिल कर लेना चाहिये। इससे भी अनेक स्थलोंमें मुद्राका काम लेते हैं।

कज्जली तैयार करना।
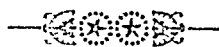
शोधी हुई गन्धक और शोधे हुए पारेको खरलमें डालकर खूब आहिस्ता-आहिस्ता खरल करो, जिससे पारा उछलने न पावे। जब घुटते-घुटते पारा और गन्धक एक हो जायँ, रङ्गत काजलकी तरह स्याह हो जाय, पारेकी चमक बिल्कुल जाती रहे ; तब समझ लो कि कज्जली तैयार हो गई।

नोट—किसी औषधिमें अगर कज्जली बनानेकी बात नहीं लिखी हो, किन्तु पारा और गन्धक अलग-अलग लिखे हों, तो वहाँ भी उपरोक्त रीतिसे कज्जली बनाकर और पीछे दवाएँ मिलाकर औषधि तय्यार करनी चाहिये।

कपरौटी।
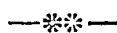
चिकनी मिट्टीमें लहेस-लहेसकर कपड़ेको हाँड़ी, शीशा या सराई पर चढ़ाते हैं, इसीको कपरमिट्टी या कपरौटी कहते हैं।

सम्पुट।

दो मिट्टीकी सराइयों या सकोरोंके बीचमें दवा रखकर, पीछे मुद्रासे बन्द कर देते हैं। इसीको "शराव सम्पुट" कहते हैं। शराव और सकोरा एक ही चीज़के नाम हैं। इसी तरह दो हाँड़ियोंके बीचमें पकाई जानेवाली दवा रखकर उनके मुँह मिलाकर, मुद्रासे बन्द कर देते हैं। इसको "हण्डिका सम्पुट" कहते हैं।

भूधरयंत्र।

एक गड्ढा खोद लो। उसमें एक हाँड़ी ऊपरको मुँह किये रख कर, उसमें पानी भर दो। दूसरी हाँडीके भीतर दवाको लहेस दो

और उसे औंधी करके गड्ढेमें रखी हुई हाँड़ीपर औंधो इस तरह रक्खो कि, दोनोंके मुँह मिल जायँ। पोछे दोनों हाँड़ियोंकी दर्ज़ों या सन्धियोंको मुलतानी मिट्टी या और किस चीज़से ऐसा बन्द कर दो कि, दवा न उड़ने पावे और धूआँ प्रभृति न निकलने पावें। पीछे ऊपरवाली हाँड़ीके ऊपर आगके अङ्गार रख दो। इस तरह तपत लगनेसे ऊपरवाली हाँड़ोकी लिहसी हुई दवा नीचेवाली जल भरी हाँडीमें गिर जायगी। पारेका अधःपतन या नीचे गिरानेको क्रिया इसी तरह की जाती है।

विद्याधर यंत्र।

एक हाँड़ीमें पारा रखकर, उसे ऊपर मुख किये रक्खो। उस हाँड़ीके ऊपर दूसरी हाँडी भी उसी तरह ऊपर मुँह करके रखो। ऊपरकी हाँडोमें पानी भर दो। दोनों हाँडियोंकी दर्ज़ों या सन्धि-स्थलोंको मिट्टीसे या किसी उत्तम मुद्रासे बन्द कर दो। पीछे दोनों हाँडियोंको चूल्हेपर चढ़ा दो। जब ऊपरवाली हाँडीका पानी गरम हो जाय, उसे निकालकर शीतल जल भर दो। इस तरह करनेसे नीचेवाली हाँडीमें रक्खा हुआ पारा ऊपरवाली हाँडोके पैंदेमें जा लगेगा। वही पारा काममें लाने योग्य होता है। जब पाक हो जाय, हाँडी ठण्डी हो जायँ, तब धीरेसे हाँडियोंको चूल्हेसे उतार और खोल कर पैंदीका पारा ले लेना चाहिये। यही पारेकी उर्द्ध-पातन या ऊपर गिरानेको क्रिया है। इस यन्त्रको "विद्याधर यन्त्र" कहते हैं।

नोट—पारेका उर्द्धपातन डमरूयन्त्रसे भी होता है। विद्याधर और डमरूयंत्र प्रायः एक ही काममें आते हैं।

डमरू यंत्र।

दो मज़बूत हाँडियाँ ऐसी लाओ, जो समान हों और जिनके मुँह मिल जायँ। दोनों हाँडियोंके मुखोंको चिकने पत्थर पर पानी डालकर धीरे धीरे घिस लो। पीछे दोनों हाँडियों पर ५ कपरौटी करके सुखा लो; इससे हाँडियोंके फटनेका डर न रहेगा। पीछे एक हाँडीमें पारा या शिंगरफ प्रभृति पदार्थ रखकर, दूसरी ख़ाली हाँड़ी उसके ऊपर इस तरह औंधी रखो, जिससे मुँह मिल जायँ। पीछे दोनों हाँडियोंके मुखोंको मज़बूत मुद्रासे वन्द कर दो, जिससे पारा प्रभृति निकलकर न जा सके। इसके वाद दोनोंके किनारे तारोंसे कसकर ऊपरसे कपड़े और मुल्तानी मिट्टीकी ४।५ तह लगा दो और पीछे धूपमें सुखालो और सूख जानेपर आगपर चढ़ा दो। ऊपर वाली पर शीतल जलकी धारा इस तरह देते रहो कि, ऊपरकी हाँडी गरम न होने पावे और पानीभी चूल्हेमें न जाने पावे, वाहरकी ओर वहकर गिरता रहे। अगर सुखसे पार पड़ना चाहो, तो ऊपरकी औंधी हाँड़ी पर रेज़ीके कपड़ोंकी २०।२५ तह करके और उसे पानीमें तर करके रख दो। जब कपड़ा आगकी तपतसे सूख जाय या सूखने पर आवे, तभी उसे धीरे-धीरे जल-धारासे तर करते रहो। अगर पारेको शीतल जगह न मिलेगी, तो वह इधर-उधर भागा-भागा फिरेगा। शीतल जगह मिलनेसे वह वहीं आकर लगता रहेगा और उसमें गुण भी उत्तम रहेगा। इस तरह पाँच घण्टों तक आग लगाने और कपड़ा तर करते रहनेसे पारा उड़कर ऊपरकी हाँड़ीमें लग जायगा। यही "डमरू यंत्र" है।

नोट—चूल्हेमें आग इस तरह लगनी चाहिये, कि हाँडियोंके जोड़ोंपर की हुई मुद्रा और कपरौटीको जला न दे, जिससे राह पाकर पारा बाहर निकल जाय। इस खतरेसे बचनेके लिये भट्टीपर एक गोल छेदवाला ऐसा तवा रखना चाहिये, जिससे बँधी आग लगे और उसकी लपट कपरौटी और हाँडियोंकी मुखमुद्रा तक न पहुँच

सके। यह बात चित्र देखनेसे अच्छी तरह समझमें आजायगी। शिङ्गरफसे पारा निकालनेके लिये अथवा पारेका उर्द्ध्वपातन करनेके लिये विद्याधर यन्त्रकी अपेक्षा डमरुयन्त्रसे सुभीतेसे काम होता है। और बातोंमें होशियारीसे काम लेनेके सिवा, आग लगानेके लिये भट्टी और चूल्हेका काम होशियारीसे करनेसे सब काम सुखसे हो जाते हैं। जिन लोगोंको पारेके शोधनमें उर्द्ध्वपातन और अधःपातन और तिर्य्यकपातन प्रभृति क्रियाओंमें झंझट जान पड़े, उन्हें शिङ्गरफसे पारा निकाल लेना चाहिये। शिङ्गरफसे निकाले हुए पारेको और शुद्ध करनेकी जरूरत नहीं रहती। वह सब कामोंमें लिया जा सकता है।

दोला यंत्र।

जिस चीज़को दोलायन्त्रसे पकाना हो, उसे पहले भोजपत्रमें बाँधो; इसके बाद कपड़ेकी चार तह करके, उसमें भोजपत्रमें बँधी चीज़ रखकर, उसकीपोटलीसी बनाकर, उस पोटलीको महीन डोरीसे बाँध देना चाहिये। पीछे एक हाँडीमें निर्द्दिष्ट पतले पदार्थ जैसे,—गोमूत्र, काँजी प्रभृति अथवा सूखे पदार्थ जैसे नमक,—इनको भर देना चाहिये। हाँडीमें जो चीज़ भरी जाय, वह आधी हाँडीमें भरी जानी चाहिये; आधी हाँडी ख़ाली रहनी चाहिये। पीछे हाडीके मुंहपर एक लम्बी लकडी आड़ी रख देनी चाहिये और उसमें उस पोटलीकी रस्सीका एक सिरा बाँधकर पोटली हाँडीके बीचमें झूलेकी तरह लटका देनी चाहिये। पीछे हाँडीको चूल्हेपर रखकर, मन्दी-मन्दी समान आग लगानी चाहिये; तेज़ आगसे भीतरके पतले पदार्थ गोमूत्र वगैरः के उफनकर बाहर आनेका और निकल कर बह जानेका खटका रहता है। पोटली हाँडीमें भरे गीले या सूखे पदार्थोंसे अलग न रहे, इसका भी ख़याल रखना चाहिये; क्योंकि पोटलीके उन पदार्थोंसे अलग यानी ऊँची रहनेसे पूरी आग नहीं लगेगी और उन पदार्थोंके गुण पोटलीकी दवामें न आवेंगे और तलीमें जा लगनेसे पारा उड़ जायगा। इसे "दोलायन्त्र" कहते हैं; क्योंकि इसमें पोटली दोले या

झूलेकी तरह झूलती रहती है। अनेक पदार्थोंको स्विन्न या सिद्ध करनेके काममें यह यंत्र लाया जाता है। मैनसिल, कौड़ी तथा जमालगोटेके बीज वगैरः इसी यंत्रसे शोधे जाते हैं। इस दोला-यँत्रको "स्वेदन यँत्र" भी कहते हैं।

वालुका यंत्र।

एक काले काँचकी मोटी बोतल लाओ। उस पर तीन बार कपड़-मिट्टी करो और सुखा लो; पीछे उसमें कज्जली प्रभृति भर दो। इसके बाद एक ऐसी हाँडी लो, जो बोतलके गले तक ऊँची हो। उसमें बोतलको रख दो और उसके चारों ओर बालू भर दो। बालू बोतलके गले तक रहनी चाहिये। बोतल जमानेसे पहले, हाँडीके पैंदेमें छोटी अँगुली घुसे इतना बड़ा छेद कर देना चाहिये। उस छेद पर बोतल इस तरह रखनी चाहिये, जिससे बालू न निकल सके। बहुतसे लोग छेदसे बालू न निकलने देनेके लिये, अभ्रकके पत्र छेदपर जमाकर पीछे बोतल रखते हैं। यह तरकीब सबसे अच्छी है। इससे बोतलको ठीक आग लगती है। इस तरह हाँडीमें बोतल जमाकर और गले तक बालू भरकर, हाँडीको चूल्हेपर चढ़ा देते हैं। इस यन्त्रको "वालुका यन्त्र" कहते हैं। इस यन्त्रकी सहायता से "रस" सिन्दूर, "मकरध्वज" और "चन्द्रोदय" आदि रस तैयार किये जाते हैं।

पाताल यंत्र।

एक हाथ गहरा गड्ढा खोदो। उसमें एक हाँडी जमाओ। हाँडीका मुख ऊपरकी ओर रक्खो। पीछे एक और हाँडी लो।

उसमें जिस या जिन दवाओंका तेल वगैरः निकलना हो भर दो और उसके मुखपर एक ऐसा ढकना लगा दो, जिसके बीचमें एक छेद हो। छेदवाले ढकने और हाँडीकी सन्धिको बन्द कर दो। पीछे इस ढकने समेत हाँडीका मुँह गड्ढेमें रखी हुई हाँडीसे मिला कर, मिट्टीसे या और किसी मुद्रासे जो उचित जँचे बन्द कर दो। पीछे मिट्टी या बालूसे गढ़ेको भर दो और ऊपरवाली हाँडी पर आग जलाओ। आगकी तपतसे ऊपरवाली हाँडीमें रक्खी हुई दवा नीचेवाली हाँडीमें, उस छेदमें होकर, तप-तपकर गिर जायगी। जब आग ठण्डी हो जाय तब गड्ढेसे हाँडीको निकालकर गिरी हुई दवाको निकाल लो। इसीको "पाताल यन्त्र" कहते हैं।

बालुकागर्भ पाताल यंत्र।
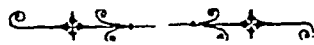
बाज़ारसे आतिशी शीशी ले आओ। इन शीशियोंमें यह खूबी है कि, ये तेज़ आगसे भी नहीं तड़कतीं। जिन चीज़ोंका तेल निकालना हो, उन्हे कूट-पीसकर आतिशी शीशीमें भर दो। पीछे लोहेके बारीक तारोंको हाथसे दबा-दबाकर एक गोलीसी बनालो। तारोंकी गोली ऐसी होनी चाहिये, जो शीशीके मुँहमें कागकी तरह घुस सके। उसमें इतनी साँस भी रहनी चाहियें, जिसमें होकर स्वयं शीशीकी दवा तो न निकल सके, किन्तु तेल टपक सके। शीशीमें दवा भरकर और तारोंकी गोली मुँहमें रखकर, शीशीपर तीन चार कपरौटी करके शीशीको सुखा लेना चाहिये।

कुम्हारके यहाँसे एक डेढ़ हाथ चौड़ी और खासी गहरी नाँद ले आनी चाहिये। उसके पैंदेमें कीलसे धीरे-धीरे एक ऐसा छेद करना चाहिये, जिसमें दवा भरी हुई आतिशी शीशीका मुँह मात्र घुस जाय और साँस न रहे। मतलब यह है कि, उस छेदमें शीशीका मुँह ठीक बैठे।

उस शीशी समेत नाँदको एक अंगरेज़ी चूल्हे पर या मामूली ईंटोंके चूल्हेपर रख दो। शीशीके मुँहके नीचे एक चीनी या काँचका प्याला रख दो अथवा नाँदवाली शीशीके मुँहसे मुँह मिलाकर दूसरी शीशी चूल्हेमें रख दो।

ऊपरकी तरफ नाँदमें, शीशीके पैंदे तक बालू भर दो और उस बालू पर आरने कण्डे जला दो। आगकी तपतसे तेल टपक टपक कर नीचेके रक्खे हुए बर्तनमें गिर जायगा। आग बहुत तेज़ न लगानी चाहिये। बहुत तेज़ आगसे तेलके जल जानेका भय है। हमने इस विधिसे नामर्दोंके तिले प्रभृति अनेक बार निकाले हैं।

"रसायनसार"के लेखक स्वर्गीय पण्डितवर श्यामसुन्दर आचार्य्य वैश्य अपनी पुस्तकमें लिखते हैं—शीशीको औंधी करके उसका मुख नाँदके छेदमें घुसादो और शीशीको इतनी बड़ी नलीसे ढंक दो, जिससे शीशी और नलीके बीचमें चारों ओर तीन अङ्गुल जगह रहे। इस शीशी और नलीके बीचकी खाली जगहमें दाब-दाबकर बालू भर दो; जिससे शीशी बालूके अन्दर ढँकी रहे। नली इतनी ऊँची होनी चाहिये, जो शीशीसे चार अङ्गुल ऊँची उठी रहे। इस यन्त्रको बड़े लोहेके चूल्हे पर रक्खो या तीन-तीन नम्बरी ईंटोंको तीन तरफ रखकर उन पर रख दो। नाँद और शीशी पर ढकी हुई नलीके बीचमें जो जगह हो, उसमें कण्डे रखकर आग लगा दो। यन्त्रके नीचे, शीशीके मुँहके ठीक सामने काँच पत्थर या चीनी प्रभृतिका प्याला रख दो। इस तरह करनेसे तेल टपक जायगा। इस यन्त्रसे तेल आसानीसे निकल आता है; शीशी वगैरः फूटनेका भी भय नहीं रहता। धूआँ कम हो जाने पर, ऊपरसे एक छेदवाली लोहेकी नाँद ढक देनेकी बात भी वे लिखते हैं। उन्होंने इस यन्त्रकी बड़ी तारीफ की है; इसीलिये हमने इसे यहाँ लिख दिया है।

तेल निकालनेकी सहज तरकीब ।

एक चोनी या लोहे प्रभृतिके कटोरेके मुँहपर पतला झन्नासा कपड़ा मज़बूतीसे बाँध दो। उस कपड़े पर लौंग प्रभृतिको, जिन का तेल निकालना हो, कूटकर फैला दो। कटोरेके किनारों पर सफेद अभरकके टुकड़े जमा दो और उन पर एक थाली रख दो। उस थालीमें लकड़ीके कोयले सिलगा कर रख दो। अगर कोयले बुझने लगें, तो पंखा करते रहो। इस तरह करनेसे, एक घण्टेमें तेल निकलकर कपड़ेमें होकर कटोरेमें जा गिरेगा। एक घण्टे बाद धीरेसे थालीको उठा लो और पीछे होशियारीसे अभरकके टुकड़ों और कपड़ेको हटा लो।

इस तरह बहुत जल्दी तेल निकल आता है; पर आधा माल हाथ आता है और आधा रह जाता है। इस उपायसे उन्हीं चीज़ोंका तेल निकलता है, जिनमें तैलका अँश अधिक होता है। जैसे लौंग, बादाम वगैर: ।

तिर्य्यक पातन यंत्र ।

दो लम्बी-लम्बी हाँड़ी लाकर, एकमें पारा और एकमें पानी भर कर दोनों हाँडियोंका मुँह टेढ़ा करके मिला दो। एक हाँडीको चूल्हेपर रक्खो और दूसरीको चौकीपर रक्खो, ताकि दोनोंकी उँचाई समान होजाय। पीछे दोनों हाँडियोंमें ऐसा रास्ता रक्खो, कि एक की चीज़ दूसरी में जा सके और बाहरकी तरफसे ऐसा बन्द कर दो कि, साँस ज़रा भी न रहे। पारेवाली हाँडीके नीचे आग लगाओ। आग लगते ही पारा उड़-उड़कर पानीवाली हाँडीमें जाने लगेगा। इसीको "तिर्य्यकपातन यन्त्र" कहते हैं।

पृष्ठ ५६१

डमरू यंत्र।

पृष्ठ ५६३

विद्याधर यंत्र।
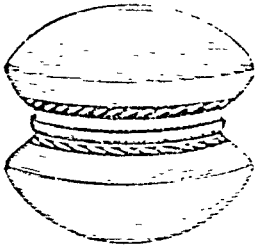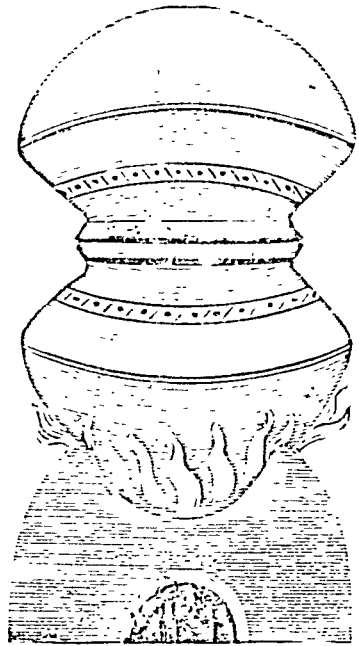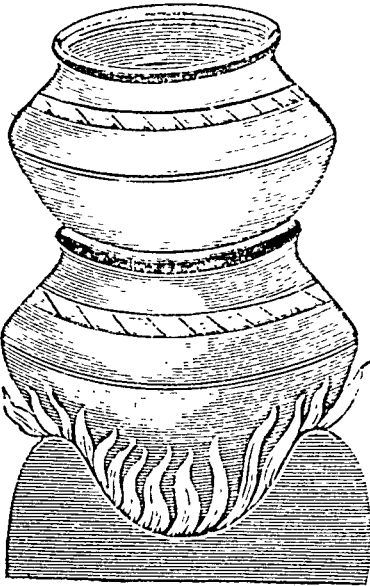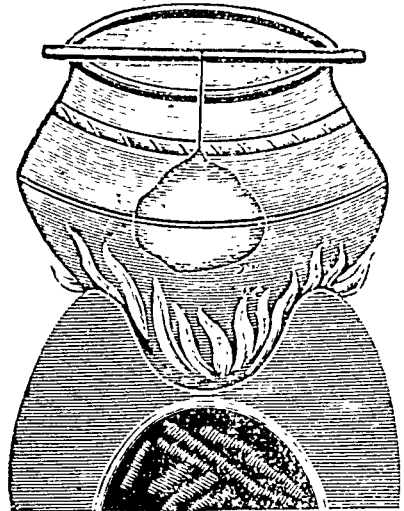
पृष्ठ ५६२

पृष्ठ ५६४

वालुका यंत्र।
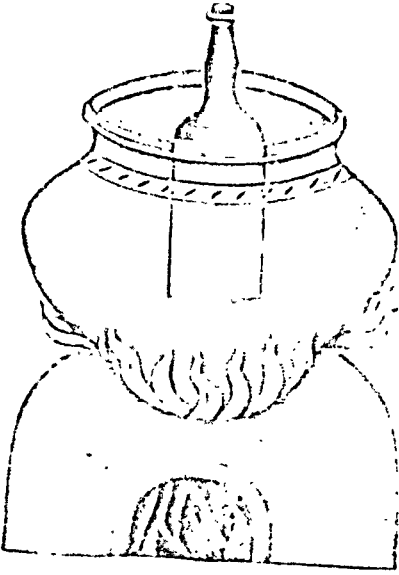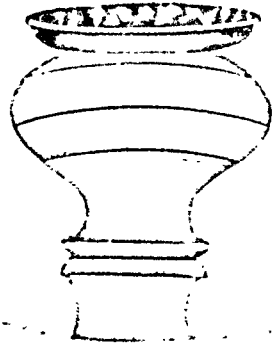
पृष्ठ ५६५

पाताल यंत्र

पृष्ठ ५६५

तिर्य्यकपातन यंत्र।
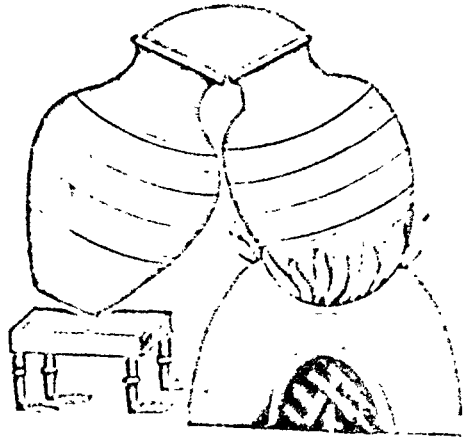
पृष्ठ ५६८

वालुकागर्भ पाताल यंत्र

पृष्ठ ५६६

वकयंत्र।
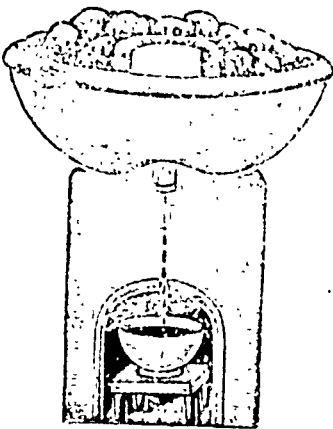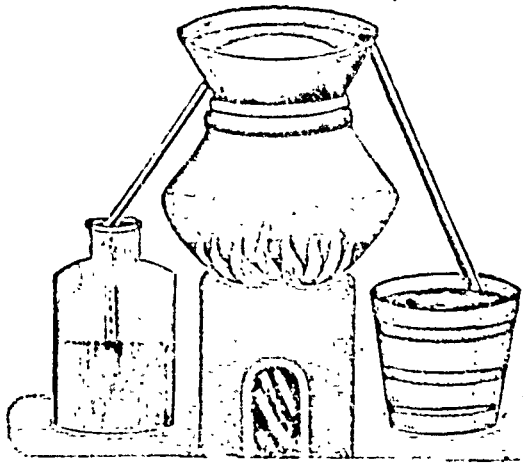
पृष्ठ ५६९

एक घड़ेमें पारा और दूसरे घड़ेमें पानी भरकर, दोनों घड़ों पर ढकने रखकर, उनकी दराज़ोंको सख़्त मुद्राओंसे बन्द कर दो और ऊपरसे खूब कपड़मिट्टी कर दो। पीछे दोनों घड़ोंके गलेमें दो छेद करके,एक बाँसकी नलीके दोनों सिरे दोनों घड़ोंके गलेके छेदोंमें घुसा दो। सन्धियों या दराज़ोंमें मिट्टी प्रभृति लगाकर बन्द कर दो। पीछे पारेवाली हाँड़ीके नीचे आग जलाओ; बाँसकी नली की राहसे पारा उड़ उड़कर पानीके घड़ेमें चला जायगा।

नोट—पारा उर्द्ध्वपातन, अधःपातन और तिर्य्यकपातन—इन तीनों तरहसे पातन करनेसे शुद्ध होता है। पारेका उर्द्ध्वपातन विद्याधर यन्त्र या डमरू यन्त्रसे होता है, अधः पातन भूधरयन्त्रसे और तिर्य्यकपातन तिर्य्यकपातन यन्त्रसे होत है। दोलायन्त्रसे पारा स्वेदित होता है।

बकयन्त्र ।

इस बकयन्त्रको नलीयन्त्र या भभका कहते हैं। भभकेके नामसे साधारण लोग भी इसे जानते हैं। जिस चीज़का अर्क़ निकालना होता है, इसीसे निकाला जाता है। यह यन्त्र मिट्टीका भी हो सकता है, किन्तु टूटनेके भयसे लोग इसको आजकल ताम्बेका ही बनवा लेते हैं। शहरोंमें ये यन्त्र कसेरोंकी दूकानों पर बने-बनाये भी मिलते हैं।

जितने बड़े यन्त्रकी ज़रूरत हो, उतना बड़ा बनवाकर भीतर क़लई करा लो। इसके ऊपरका ढकना ऐसा होता है, जिसमें दो औंधे-सीधे कटोरे जड़े रहते हैं। इन दोनोंके मेलसेही एक ढकना बनता है। ढकनेके नीचेके हिस्सेमें और ऊपरके हिस्सेमें आमने-सामने दो नलियाँ हाथ-हाथ-भरकी या कम-ज़ियादा लम्बी लगी रहती हैं। एक नली तो नीचेके कटोरेमें; यानी ढकनेके नीचेके हिस्सेमें लगी रहती है। इसकी और भभकेके दवावाले बर्तनको

राह एक होती है। आग लगनेसे जो भाफके अवख़रे उठते हैं, वह इसी नलीकी राहसे नलीसे लगी हुई बोतल या बर्तनमें जाते हैं। दूसरी नली जो ढक्कनके ऊपरी हिस्सेमें होती है, उसका दवावाले बर्तनसे कोई सम्बन्ध नहीं होता। वह एक दूसरे ख़ाली बर्तनसे मिली रहती है। ऊपरके कटोरेमें शीतल जल भरा जाता है। जब वह जल गरम हो जाता है, तब इस नलीके मुँहमें लगा हुआ कपड़ा हटा लेते हैं और गरम पानी ख़ाली टबमें जा गिरता है। इसके बाद नलीकी मोरीकी राहमें फिर कपड़ा ठूँसकर शीतल जल भर देते हैं। इस तरह जब-जब ऊपरके ढकनेका भरा हुआ पानी गरम हो जाता है, उसी नलीको खोलकर निकाल दिया जाता है। इस शीतल जलकी वजहसे ही भाफ पानीके रूपमें हो होकर, अपनी नली द्वारा, बोतल या बर्तनमें जा जाकर गिरती है। अगर ऊपरके ढकनेका गरम जल न बदला जाय, तो अर्क़ न निकले।

अगर भभकेमें ३२ सेर पानी समाता हो, तो उसका चौथाई—आठ सेर जल भभकेमें भरना चाहिये और जलसे चौथाई दो सेर दवा डालनी चाहिये। पीछे ढकना लगाकर उसे मुल्तानी मिट्टीसे बन्द कर देना चाहिये। आग लगनेसे भभकेसे भाफ उड़कर ऊँची जायगी और वह ढक्कनके शीतल जलसे सर्दी पाकर, पानीके रूपमें, अपनी नलीमें होकर, नलीसे लगे हुए बर्त्तनमें गिरती जायगी। आग समान और मन्दी लगानी चाहिये तथा ढकनेका गरम जल बारम्बार निकालकर उसकी जगह शीतल जल भर देना चाहिये।

जिस दवाका अर्क़ बनाना हो, उसे २४ घण्टे तक तिगुने या चौगुने जलमें क़लईदार या चीनीके बर्तनमें भिगो रखना चाहिये। पीछे उसी पानी और दवाको भभकेमें डालकर अर्क़ खींच लेना चाहिये। जितनी दवा हो, उतनाही अर्क़ निकाला जाय, तो वह अर्क़ अव्वल दर्जेका होता है। सुदर्शन अर्क़ या गुडूच्यादि अर्क़ प्रभृति (देखो पृष्ठ १४८—१५२) इसी तरह निकालने चाहियें।

अर्क़ निकालनेसे काढ़ा औटाने वगैर:की दिक़त नहीं उठानी पड़ती और अर्क़ का ज़ायका भी उतना बुरा नहीं होता ।

काँजी बनानेकी विधि ।
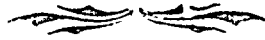
एक सेर राई, दो सेर सेंधानमक, कुलथीका काढ़ा चार सेर,* दो सेर चाँवलोंका पकाया हुआ भात और माँड, आधसेर पिसी हल्दी, आधसेर बाँसके पत्ते, पाव भर सोंठ, पावभर सफेद ज़ीरा और दस तोले हींग,-- इन सबमेंसे कूटने लायक़ चीज़ोंको कूटकर और शेषको योंही एक मिट्टीके बड़े घड़ेमें भरदो । इन चीज़ोंको घड़ेमें भरनेसे पहले, घड़ेको सरसोंके तेलसे पोत दो । पीछे इस घड़ेमें बीस सेर पानी भरदो । यदि पानी कम जान पड़े, तो और मिला दो । शेषमें सबको चला दो । पीछे आधसेर उड़द की पिट्ठीके बड़े सरसोंके तेलमें पकाकर घड़ेमें डाल दो और ढक दो । इस तरह जाड़ेमें सात दिनमें और गरमीमें चार दिनमें ही काँजी तैयार हो जाती है । जब किसी धातुके शोधनेके लिये काँजी लेनी हो, कपड़ेमें छान कर ले लो ।

हिंगलूसे पारा निकालनेकी विधि ।
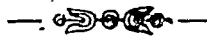
एक सेर हींगलूको, नीबूके रसमें, एक पहर तक खरल करके, धूप में सुखा लो । अगर धूप न हो, तो भट्टीके पास रखकर सुखा लो । पीछे उसे एक हाँड़ीमें रक्खो । उस हाँड़ीके ऊपर दूसरी हाँडी औंधी रक्खो । दोनों हाँडियोंके मुँह पहले पानीसे घिसकर समान कर लो, ताकि

* दो सेर कुल्थीको सोलह सेर जलमें पकाओ ; जब चार सेर जल रह जाय उतार लो और वस्त्रमें छानकर पानीको घड़े में डाल दो ।

सन्धियाँ एकदम मिल जायँ। साथही दोनों हाँडियोंपर तीन-तीन कपरौटी करके धूपमें सुखा लो। हाँडियोंके मुँह मिलाकर, उनपर मुलतानी मिट्टी या चिकनी मिट्टी और बालूसे मुद्रा दे दो। इसके बाद तीन चार कपरौटी करके सुखा लो। पीछे चूल्हेपर रखकर आग लगाओ। ऊपरवाली हाँडीपर रेज़ोका कपड़ा २०।२५ तह करके और पानीमें तर करके रख दो। जब-जब कपड़ा सूखे, उसे शीतल जल से तर करते रहो। इस तरह पहले पृष्ठ ५६३ में लिखी हुई डमरू-यन्त्रकी विधिसे काम करनेसे, हिङ्गलूका पारा ऊपरवाली हाँडीके पैंदेसे लग जायगा। उसे आग शीतल होनेपर, धीरेसे हाँड़ी उतारकर निकाल लो। जिनसे पारेके शोधनेकी खटखट न हो, वे इसी तरह हिङ्गलूसे पारा निकाल लें। हिङ्गलूका पारा अत्यन्त शुद्ध होता है। उसे फिर शोधनेकी ज़रूरत नहीं। वह इसी तरह काममें लाया जा सकता है।

अनेक द्रव्योंके शोधनेकी विधि।

सुहागा शोधना।
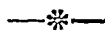
आग पर रखकर खील करलेनेसे ही सुहागा शुद्ध हो जाता है।

भिलावा शोधना।

भिलावे वही लेने चाहियें, जो पानीमें डूब जायँ। भिलावे ईंटके चूणके साथ घिसनेसे शुद्ध हो जाते हैं।

धतूरेके बीज शोधना।

धतूरेके बीजोंको कूटकर, १२ घण्टों तक गोमूत्रमें भिगो रखो; इस तरह वे शुद्ध हो जायँगे।

अफीम शोधना।

अफीम अदरखके रसकी वारह भावना देनेसे शुद्ध हो जाती है।

कुचला शोधना।

घीमें भून लेनेसे कुचला शुद्ध हो जाता है।

हींग शोधना।

लोहेकी कड़ाहीमें थोड़ासा घी डालकर गरम करो; पीछे उसमें हींगको डालकर चलाते रहो; जब हींगका रङ्ग लाल हो जाय, समझलो कि हींग शुद्ध हो गई।

नौसादर शोधना।

एक हाँड़ीमें चूनेका पानी भरकर, उसपर एक आड़ी लकड़ी रखकर, एक पोटली में नौसादर बाँधकर, उसी लकड़ी से हाँड़ी में लटका दो और दोलायन्त्रकी विधिसे पकाओ; नौसादर शुद्ध हो जायगी।

खपरिया शोधना।

एक हाँड़ीमें गोमूत्र भरकर, उसपर आड़ी लकड़ी रखकर, उस लकड़ीसे खपरियाकी पोटली हाँड़ीके भीतर झुलाकर, दोलायन्त्रकी विधिसे सात दिन तक औटानी चाहिये। गोमूत्र रोज़ बदल देना चाहिये। इस तरह करनेसे खपरिया शुद्ध हो जाता है। "स्वर्ण वसन्तमालती"में इसकी ज़रूरत पड़ती है।

हिंगलू शोधना।

हिङ्गलूका चूर्ण नीबूके रसमें और भेड़के दूधमें सात-सात भावना देने से शुद्ध हो जाता है।

गेरूमिट्टी शोधना ।
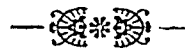
गायके दूधमें घिसनेसे या गायके घीमें भूननेसे गेरू शुद्ध हो जाता है ।

हरताल शोधनेकी विधि ।

पहले सफेद कुम्हड़ेके रसमें, फिर चूनेके पानीमें और इसके बाद तेल में एक-एक बार हरतालको, दोलायंत्रकी विधिसे, औटाओ ; तब हरताल शुद्ध हो जायगी ।

वंशपत्र हरताल सात दिन तक चूनेके पानीकी भावना देनेसे शुद्ध हो जाती है ।

तबकिया हरतालका चूर्ण करके, एक पहर तक दोलायंत्रसे काँजीमें पचाओ ; इसके बाद एक पहर तक पेठेके रसमें पकाओ ; इसके बाद एक पहर तक तिलोंके तेलमें पचाओ और शेषमें एक पहर तक त्रिफलेके जलमें पचाओ । इस तरह चार पहर तक पचानेसे हरताल शुद्ध होती है ।

गोदन्ती हरताल शोधना ।

गोदन्ती हरताल गोमूत्रमें दो पहर तक पकानेसे शुद्ध हो जाती है ।

फिटकरी शोधना ।

तवे पर या आगमें फुला लेनेसे फिटकरी शुद्ध हो जाती है ।

जमालगोटा शोधना ।

जमालगोटेके बीजोंको ३ दिन तक भैंसके गोबरमें दबा दो । ३ दिनके बाद कड़ाहीमें डालकर, ऊपरसे गोमूत्र भरकर, दोपहर तक

पकाओ। इसके बाद उनको धूपमें सुखाकर, हाथसे मलकर, छिलके उतारदो। पीछे उनकी मींगियोंको गायके दूधमें चार घन्टेतक पकाओ। इसके बाद उनको चीरकर, उनकी जीभी निकाल दो। इसके भी बाद उन्हें नीबूके रसमें घोटकर, कोरी नाँद पर लीप दो। उनका तेल नाँद सोखले और वे धूल-जैसे हो जायँ, तब नाँदसे उतार कर, फिर नीबूके रसमें घोटो और दूसरी कोरी नाँद पर लीप दो। फिर उस धूलसीको नाँद से उतार कर, फिर नीबूके रस में घोटो और तीसरी बार तीसरी नाँद पर लीप दो। इस बार सब चिकनाई निकल जायगी। इससे जो दवा बनाओगे, परमोत्तम बनेगी।

नोट—बीजोंको चीरकर, उनकी जीभ अवश्य निकाल देनी चाहिये, क्योंकि उनमें बहुत जहर होता है।

जमालगोटे के बीज शोधने की दूसरी विधि।

जमालगोटेके बीज शोधने हों, तो बीजोंको चीरकर उनके बीच की पत्तीसी निकाल डालो। पीछे एक हाँडीमें दूध भरकर, उस पर आड़ी लकड़ी रखकर, उसे आगपर चढ़ा दो। बीजोंको पोटलीमें बाँधकर, डोरी लगाकर, एक सिरा डोरीका हाँडी पर आड़ी रक्खी लकड़ीसे बाँध दो। पोटलीको हाँडीके बीचमें लटकने दो और आग लगाते रहो। इस तरह दोलायंत्र की विधि से जमालगोटेके बीज शुद्ध हो जायँगे।

गंधक शोधना।

एक मिट्टीके बर्तनपर बहुत महीन कपड़ा बाँध दो। पहले उसमें दूध या दूध-पानी भर दो; पीछे कलछीमें घी भरकर गरम करो और उस घीके बराबर गन्धकका पिसा चूर्ण कलछीमें डालकर आगपर

तपाओ। जब गन्धक पानीसो हो जाय, कलछीको दूधके वर्तनमें उलट दो। भीतर साफ गन्धकके डले हो जायँगे।

सींगिया और वछनाभविष शोधना।

वत्सनाभ विषके पत्ते सम्हालूके पत्तों जैसे होते हैं। इसका आकार बछड़ेकी नाभि-जैसा होता है। इसके पास और वृक्ष नहीं लगते। अगर इसे शोधना हो, तो इसे ३ दिन तक गोमूतमें रक्खो। रोज़-रोज़ मूत बदलते रहो। ३ दिन बाद गोमूतसे निकालकर, लाल राईके तेलसे भीगे हुए कपड़ेमें रक्खो। इस तरह यह विष शुद्ध हो जाता है। शुद्ध करनेसे इसका ज़ोर कम हो जाता है। दवाओंमें इसे शोध करही डालना उचित है। यह विष प्राणनाशक है; पर तरकीबके साथ खाया जाय; तो जीवनदाता, रसायन, योगवाही, वात और कफको जीतनेवाला तथा सन्निपात नाशक है।

सींगिया विष और वछनाभ विषके शोधनेकी एकही विधि है।

मैनसिल शोधना।
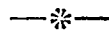
मैनसिलको शोधना हो; तो एक घड़ेमें बकरीका दूध भरो और उसपर आड़ी लकड़ी रक्खो। मैनसिलको पोटलीमें बाँधकर, लकड़ीमें पोटलीको लटका दो। पोटली दूधमें लटकती रहे। नीचे चूल्हे में आग जलाओ और उसपर हाँडी रख दो। ३ दिन इस तरह आग लगाते रहो; चौथे दिन मैनसिलको निकाल, खरलमें डाल, ऊपरसे बकरीका पित्ता इतना भरो कि डूबजायः फिर खरल करो। जब सूख जाय, फिर पित्तेमें डुबा दो और खरल करो। इस तरह ७ बार करो, तब मैनसिल शुद्ध होगा।

कौड़ी प्रभृति शोधना।

कौड़ीको शोधना हो, तो हाँडीमें काँजी भर, मुखपर लकड़ी रख,

उससे कौड़ीकी पोटली लटका दो। एक पहर तक हाँड़ीके नीचे आग दो ; कौड़ी शुद्ध हो जायगी। पीछे उसे मिट्टीके वर्तनमें रखकर आगमें जलाओ ; भस्म होजायगी। कौड़ी, मुर्दासंग, गेरू, शङ्ख, कशीस सुहागा और कालासुर्मा नीबूके रसमें उसी तरह हाँडीमें पोटली लटका कर दोलायंत्र की विधि से पकानेसे भी शुद्ध होते हैं।

शंख आदिका शोधना।

पाँच सेर गोमूत्र, एक सेर सेंधानोन और आध पाव नीबूका रस--इनको एक हाँडीमें भरकर, उसमें एक सेर शंख या सीप आदि रखकर, दो पहर तक तेज़ आग दो ; पीछे उनको निकालकर धो लो। यह दूसरी विधि है।

नोट—इनकी भस्म करनी हो, तो इन्हें मिट्टीके वासनमें रखकर आगसे जला लो ; बस यही भस्म है। शंख चाँदीके समान सफेद और भारी लेना चाहिये। सीप मोती की लेनी चाहिये। कौड़ी पीले रंगकी लेनी चाहिये, जिसमें पीठपर गाँठ हो तथा नीचे ऊपर बारह बारह दाँत हों और तोलमें ६ माशे हो।

समन्दर फेन शोधना।

समन्दरफेन कागज़ी नीबूके रसमें पीसनेसे शुद्ध हो जाता है।

पारा शोधना।

राई और लहसनको खूब पीसकर सुनारकी सी मूस बनालो। उस मूसमें जितना पारा शोधना हो भरकर, उसके ऊपर भोजपत्र लपेटकर और ऊपरसे तीन तह कपड़ेकी लपेटकर, पोटली बाँध लो। पीछे एक हाँडीमें काँजी भरकर, उस हाँडीके मुँहपर लकड़ी रखकर, पोटलीको डोरीसे बाँधकर, उसका एक छोर उस लकड़ीसे बाँधदो और पोटलीको हाँडीके भीतर अधबीचमें लटका

दो। चूल्हेमें आग जलाकर, उसपर हाँडी रख दो। तीन दिन तक चूल्हेमें आग लगाते रहो; इस तरह करनेसे पारा स्वेदित होगा। इस यन्त्रको दोलायन्त्र कहते हैं।

३ दिन बाद पारेको मूसमेंसे निकालकर, खरलमें डालकर, एक दिन घीग्वारके रसमें खरल करो; इसी तरह एक दिन चीतेके रसमें, एक दिन काँगनीके रसमें और शेषमें एक दिन त्रिफलेके काढ़ेमें खरल करो। खरल किये पारेको काँजीसे ऐसा धो डालो कि, पहली दवाओंका अंश न रहे।

जब धोनेसे पारा साफ होजाय, तब पारेसे आधा सेंधानोन लेकर, दोनोंको खरलमें डालकर, नीबूका रस दे देकर एक दिन-भर खरल करो। इसके बाद राई, लहसन और नौसादर—इन तीनोंको पारेके बराबर लेकर, इनके साथ पारा मिलाकर, खरलमें डालकर, धानके तुषोंका काढ़ा डाल-डालकर सबको खरल करो; जब खरल करते-करते सूख जाय, तब गोल-गोल टिकियाँ बना लो। उन टिकियोंके चारों ओर हींगका लेप करदो।

इन टिकियोंको एक हाँडीमें रखकर, उसमें नमक भरदो। पीछे इस हाँडीके मुँहपर एक दूसरी ज़रा बड़ी हाँडी उसी तरह ऊपर मुँह करके रक्खो। नीचेकी और ऊपरकी हाँडीकी सन्धि कपड़-मिट्टीसे ऐसी बन्द कर दो कि, साँस न रहे; पीछे धूपमें सुखालो। चूल्हे में आग जला, उसपर दोनों हाँडी इस तरह रख दो कि, नमकवाली हाँडीको पैंदा आग पर रहे। ऊपरवाली हाँडीमें जल भर दो। जब पानी गरम हो जाय, पानी बदल दो। अगर पानी न बदलोगे, तो आपकी मिहनत बर्बाद जायगी। इस तरह नीचे आग लगाते रहो और ऊपरकी हाँडीका गरम पानी निकालकर शीतल जल देते रहे। इस तरह ३ पहर आग लगानेसे, पारा उड़कर ऊपरकी हाँडीके पैंदेमें लग जायगा। ३ पहर बाद आग बन्द करदो। पीछे शीतल होने पर धीरे-धीरे हाँडियोंका जोड़ खोल लो और हलके हाथसे पैंदेमें लगा

पारा निकाल लो । यह पारा परम शुद्ध और दोपरहित सब कामके लायक होगा ।

पारा शोधनेकी सहज तरकीव ।

लाल ईंट का चूर्ण, रसोई-घर में लगा हुआ धूएँ का काजल, हल्दी, ऊन की राख और विना वुझा पत्थर का चूना—इन पाँचों को आध-आध पाव लो और इन सब के वज़न से आधा यानी पाँच छटाँक पारा लो । सब को खरल में डालकर जँभोरी नीवू के रसके साथ (अभाव में काग़ज़ी नीवू या विजौरे नीवू का रस भी ले सकते हो) तीन दिन या एक दिन खरल करो । पीछे डमरु यंत्र की विधि से एक पहर या तीन घण्टे तक आग देकर हाँडो उतार लो । शीतल होनेपर, हाँडी को खोलकर, पैंदी से पारा धीरे से निकाल लो । यह पारा परम विशुद्ध होगा । मकरध्वज और चन्द्रोदय को छोड़कर, यह पारा स्वर्णसिन्दूर, रस सिन्दूर प्रभृति सव कामों में आ सकता है ।

डमरु यंत्र की विधि उधर लिख चुके है ; फिर भी , ऐसे लोगों के लिये जो पुस्तक के पन्ने उलट कर देखनेमें भी आलस्य करते हैं, यहाँ हम पूरी विधि फिर समझाये देते हैं ।

दो मज़वूत हाँडियाँ कुम्हार के यहाँ से ले आओ। उनके मुखों को चिकने पत्थर पर पानी डाल-डाल कर ऐसे विस लो कि, वे वरावर हो जायँ—ऊँचे-नीचे न रहें । दोनो हाँडयों के मुँह मिला कर देख लो, कि दराज तो नहीं रहती । जब हाँडियों के मुँह ठीक हो जायँ, तब उन पर तीन वार या सात बार कपड़-मिट्टी कर दो और धूपमें सुखा लो । इस तरह हांडियों के फटने या फूटने का डर न रहेगा । पीछे एक हाँडो में नीबू के रस द्वारा

खरल किया हुआ पारा रख दो और दूसरी हाँडी को उसके ऊपर औंधी रखकर बज्रमुद्रा की लुगदी से उनकी सन्धों को बन्द कर दो। वज्रमुद्रा का मसाला इस तरह दरज़ों में लगाओ कि, ज़रा भी सन्ध या दर्ज न रह जाय। इसके बाद हाँडियोंके क़िनारों को लोहे के तारों से कस दो और ऊपर से फिर वहाँ भी कपरमिट्टी लगा दो और सुखा लो। इस तरह पक्का काम करने से पारे के उड़ जाने या हाँडियों के फूट जाने का भय न रहेगा। जब दोनों हाँडियाँ इस तरह सूख कर तैयार हो जायँ, तव उन्हें चूल्हेपर चढ़ा दो। ऊपरवाली औंधी हाँडी को शीतल जल से तर रखना परमावश्यक है; इस लिये उस हाँडी पर रेज़ी के कपड़े की २० या २५ तह करके और पानी में तर करके रख दो। जब-जब कपड़ा सूखनेपर आवे, उसे शीतल जलसे तर करते रहो। इस तरह कपड़ा रख कर पानी डालने से ऊपरकी हाँडी गरम न होगी और शीतल रहने से नीचे की हाँडी से पारा उड़-उड़ कर इस हाँडीमें आ लगेगा। इस तरह चार या पाँच घण्टेमें सब पारा ऊपर की हाँडी में आ लगेगा। पीछे शीतल होने पर, आहिस्ते-आहिस्ते खोल कर पारे को निकाल लेना चाहिये।

अगर कपड़े के वजाय कोई चतुर मनुष्य ऊपर की औंधी हाँडी पर ऐसा गोल घेरा वना दे, जिसमें पानी भर दिया जाय, तो और भी आराम रहे; पर घेरे में गरम पानी के निकालने को नाली भी वनानी होगी। उस नाली का मुँह खोल देने से गरम पानी निकल जायगा। गरम जलके निकल जानेपर, नाली के मुख में कपड़ा ठूँस देना होगा और शीतल जल भर देना होगा। मतलव असलमें ऊपर की हाँड़ी शीतल रखने से है। बुद्धिमान् आदमी इस मक़सद के पूरा करने को, अनेक नयी-नयी तरकीबों से भी काम ले सकते हैं। हाँ, चूल्हे या भट्टी पर हलवाइयों की तरह एक बड़े छेदवाला गोल तवा भी यदि रख दिया जायगा,

तो आग को लपटें हाँडियों की कपरौटी को न जला सकेंगी। आग नीचेवाली हाँडी के पैंदे में ही लगनी चाहिये।

साधारणतया पारे को शोधने की यह सब से आसान तरकीब है। असल में तो पारा स्वेदित करने, मूर्च्छित करने, ऊर्द्ध पातन और अधःपतन करने से शुद्ध होता है; पर जिन से वह खटखट न हो, वे इस तरह शुद्ध कर लें। और अगर इतना भी न हो, तो हिङ्गलू को नीबू के रस में या नीम के पत्तों के रस में ३ घण्टे तक खरल करके, इसी डमरु यँत्र की विधि से ऊपर की हाँड़ीमें चढ़ालें। यह पारा भी शुद्ध होता है और सब कामों में आ सकता है। कुछ भी तकलीफ नहीं है। हिंगलू से पारा निकालने और इस विधि से पारा शोधने में कोई भेद नहीं है। केवल खरल करने के मसालों में भेद है। हिंगलू नीबू के रस में घोटा जाता है और साधारण पारा ईंट के चूर्ण वगैर: पाँचों चीज़ों और नीबू के रस के साथ घोटा जाता है। डमरु यँत्र की दोनों में हो ज़रूरत पड़ती है। पारे के शोधने की यह तरकीब हमने स्वर्गवासी रसायनशास्त्री पण्डितवर श्यामसुन्दर आचार्य्य वैश्य महाशय की "रसायनसार" नामक पुस्तकसे ली है। डमरू यन्त्र की विधिमें-भी हमने उनकी विधिका सहारा लिया है; इस लिये हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं।

कुछ अँगरेजी ज्वरोंका वर्णन।

टाइफस फीवर।

(सन्धिक सन्निपातज्वर ?)

निदान।

यह ज्वर ज़ियादातर गन्दी और ज़हरीली हवासे पैदा होता है। रोगियोंके शरीरसे उनके श्वास और पसीनों द्वारा विष निकलकर

दूसरोंके शरीरमें समा जाता है। इसके सिवा अजीर्ण और कमज़ोरी वगैर: भी इसकी उत्पत्तिके कारणोंमेंसे हैं। यह रोग छुतहा है यानी एकसे उड़कर दूसरेको लगता है। जहाँ मनुष्योंका ज़ियादा जमाव होता है, वहाँ यह अक्सर होता है। कहते हैं, शीतकाल और शीतल स्थानोंमें इसकी पैदायश होती है।

पूर्वरूप।

-*-

छूत लगननेके दिनसे बारह दिन तक तो छूत लगनेके आसार नज़र नहीं आते। इसके होनेके पहले किसी-किसीको जाड़ासा लगा करता है; शरीरमें आलस्य, थकान और ग्लानिसी रहती है, तबियत नहीं लगती, बेचैनी भी रहती है, कमरमें वेदना होने लगती है और प्यास कुछ बढ़ जाती है, जी मिचलाया करता है और सिरमें दर्द भी होता है। इसके बाद, यह ज्वर यकायक अपने ज़ोर शोरसे हमला करता है और मनुष्यको जाड़ा देकर ज्वर चढ़ आता है।

पूर्णरूप।

-*-

जब यह अपने पूर्णरूपसे रोगीपर चढ़ बैठता है, तब रोगीका मुख मलीन हो जाता है, चेहरेपर उदासी आ जाती है, चेहरेकी रङ्गत स्याह हो जाती है, सिरमें वेदना होती है, आँखें सुर्ख़ हो जाती हैं, भूख जाती रहती है, प्यास बढ़ जाती है, होठों पर पपड़ियाँ जम जाती हैं, रोगी बल और सामर्थ्यसे हीन हो जाता है, सन्ध्या समय बेचैनी बढ़ जाती है, रातको नींद नहीं आती, रोगी आनतान बकता है। अगर नींद आजाय, तो समझना चाहिये कि, रोगी आरोग्य लाभ करेगा। अगर नींद नहीं आती, तो रोगी बेहोश हो जाता है, रोगीका शरीर तपने लगता है और रूखापन बढ़ जाता है। उस समय टेम्परेचर—ज्वरका ताप १०५ डिग्री तक हो जाता है। कभी-कभी

इससे भी ज़ियादा पारा चढ़ जाता है। छठे सातवें दिनसे शहतूतके फलकी शकलके काले-काले दाग़ या फुन्सियाँ होने लगती हैं। कभी-कभी तो ये दाग़ आपसमें मिले हुए देखे जाते हैं और कभी-कभी अलग देखे जाते हैं। पैदा होनेके दूसरे या तीसरे दिन इनका रंग ईंटकासा गुलाबी रंग हो जाता है। अगर दोषोंका कोप ज़ियादा नहीं होता, रोग हलका होता है, तो यह ज्वर सात दिन तक समान रूपसे रहकर धीरे-धीरे कम होने लगता है। दसवें दिनसे ज्वरका ताप घटने लगता है और चौदहवें-पन्द्रहवें दिन रोगी आरोग्यसा हो जाता है। तापकी घटतीके साथ वे काले-काले दाग़ भी घटने लगते हैं, नींद आती है, भूख लगती है और रोगीकी जीभ भी साफ हो जाती है।

अगर ज्वरकी गरमी ८वें दिनके बाद वैसीही बनी रहे, तो समझना चाहिये कि, शरीरके जोड़ोंमें शोथ या सूजन पैदा होगई है। इस दशामें रोग ज़ोर पकड़ता है। बारहवें दिनसे बीसवें दिन तक ख़राब हालत रहती है। रोगीको जीभ रूखी, भूरी और कालीसी हो जाती है। रोगी तन्द्रामें पड़ा रहता है, पर नींद नहीं आती। शरीर जकड़ जाता है, हाड़ोंमें वेदना होती है, मुखमें बदबू आती है, करवट लेनेमें कष्ट प्रतीत होता है, पेशाब होताही नहीं या कम होता है और रङ्ग उसका लाल होता है। ज्वरके नवें दसवें दिन तन्द्रा का बड़ा ज़ोर रहता है, रोगीको होश नहीं रहता, चारपाई परही पाख़ाना पेशाव फिर देता है। अन्तिम दशामें बाँइटे आने लगते हैं और रोगी परमधामको सिधार जाता है।

यह बराबर बना रहनेवाला ताप है। यह १४ से २१ दिन तक लगातार बना रहता है। यह कभी धीरे धीरे बढ़ता है और कभी एकदमसे भयङ्कर रूप धारण कर लेता है। साधारण अवस्थामें भूख नष्ट हो जाती है, दस्त नहीं होता, उबकियाँ आया करती हैं,

जीभ मैली हो जाती है तथा शहतूतके रङ्गके दाग़ पैदा हो जाते हैं और यह ज्वर दूसरे हफ़्तेमें धीरे धीरे उतर जाता है। अगर यह उग्र रूपसे होता है; तो इसमें मस्तकशूल, मूर्च्छा, सन्धियोंमें वेदना, बाँइटे आना और संज्ञा न रहना तथा बेहोशीमें पाख़ाना-पेशाब निकल जाना प्रभृति लक्षण होते हैं।

जब पाँचवें छटें या सातवें दिन शरीरमें शहतूतकी शकलके चकत्ते उठते हैं; तब तो रोगीकी हालत बहुत ख़राब हो जाती है, प्रलाप या बकवादका बहुत ज़ोर हो जाता है, रोगी बेहोश होकर बहरा हो जाता है, और मुँह फट जाता है। उस दशामें लोगोंको पहचानना कठिन हो जाता है, हाथ पाँव काँपते हैं, रोगी पलङ्गके सामानको खींचता है। अगर दवा देते ही आराम मालूम होने लगे, तब तो आरामकी आशा है; नहीं तो फुफ़्फ़ुसकी नलीमें ख़ून बहकर चले जानेसे रोगी मर जाता है। अगर यह रोग कम-उम्र वालेको होता है, तो बचनेकी उम्मीद रहती है। बड़ी उम्र वालेके बचनेकी आशा कम रहती है।

चिकित्साविधि ।

डाक्टरी क़ायदेसे पहले ज्वरके हेतुको दूर करना उचित है। अजीर्णसे हुआ हो, तो अजीर्ण नाशक उपाय करना चाहिये। गन्दी हवासे हुआ हो, तो रोगीको साफ हवादार स्थानमें रखना चाहिये। रोगीको लघु पथ्य और शीघ्र-शीघ्र दवा देनी चाहिये; दवामें देर होनेसे रोगीके प्राणनाशकी संभावना है। रोगीके कमरेके द्वार पर आग रखनी चाहिये। बलकी रक्षाके लिये दूध और ब्राण्डी—शराब देनी चाहिये।

नोट—अनेक आयुर्वेदज्ञ चिकित्सक इसको सन्धिक सन्निपातज्वर समझते हैं और वैसी ही चिकित्सा करते हैं और कहते है कि, दूध न देना चाहिये। वे लोग आग रखना अच्छा बताते हैं और सन्धिक सन्निपातज्वरकी चिकित्सामें जो क्वाथ

प्रभृति लिखे हैं उनकोही, दोषोंको समझकर, ज़रूरत होनेसे उनकी दवाएँ घटाकर-बढ़ाकर देनेकी राय देते हैं। अधिकांश वैद्योंकी रायमें यह सन्धिक सन्निपातज्वर है ; कुछ की रायमें यह कर्णक है। अभी इस पर वैद्योंकी कमैटी ने निश्चित राय क़ायम नहीं की है ; इस लिये हम अपनी ओर से कोई राय नहीं दे सकते। निस्सन्देह यह एक प्रकारका सन्निपातज्वर है और भारतमें बहुत कम होता है। सन्धियों या जोड़ोंमें सूजन होनेसे ही लोग इसे सन्धिक सन्निपात ज्वर कहते हैं। हमारी रायमें, अगर रोगी मिलें, तो चतुर चिकित्सक को दोषोंकी वृद्धि, क्षय और कोपके अनुसार इसकी चिकित्सा करनी चाहिये। इस तरह बिना नामवाले सभी रोगोंकी चिकित्सा की जा सकती है।

टाइफ़ॉइड ज्वर।

(तन्द्रिक सन्निपातज्वर ?)

निदान।

यह ज्वर मरे हुए जानवरों और डाँगरोंकी दुर्गन्धसे पैदा होता है। उनसे ख़राब हुई हवा नाक और श्वास द्वारा मनुष्योंके शरीरमें प्रवेश करती और भीतर पहुँचकर ज़हरका काम करती है। बद-बूदार चीज़ोंके खाने-पीने, गरम और ख़ुश्क-मौसम तथा ऐसेही अन्यान्य कारणोंसे मनुष्योंकी आँतोंमें ज़ख़्म हो जाते हैं। आँतोंमें ख़राबी होनेसेही विशेषकर टाइफाँइड ज्वर पैदा होता है।

पहली अवस्थाके लक्षण।

दससे चौदह दिनके भीतर, इस ज़हरका असर मनुष्यों पर होता है। जब इसका प्रभाव देह पर पड़ता है, तब शरीरमें आलस्य और थकानसी जान पड़ती है, काम करनेको जी नहीं चाहता, शरीर टूटने लगता है, जगह-जगह दर्द होता है, गरमीका ज़ोर होता है,

शरीर घूमता सा मालूम होता है, पतले दस्त होते हैं, कभी गरमी और कभी जाड़ा लगता है; दिनमें तन्द्रा रहती और रातको नींद नहीं आती ; अगर नींद आती भी है, तो अजीब-अजीब चौंकानेवाले सुपने दीखते हैं, प्यास बढ़जाती है, नाकसे खून गिरता है। जीभका विचला भाग मैला और किनारे तथा नोक सुर्ख़ रङ्गके रहते हैं, गालोंपर लाल-लाल दाग़ हो जाते हैं. नाड़ी भारी और निर्बल रहती है, श्वासमें बदबू आती है, पेट फूल जाता है, पेटको दबानेसे दर्द होता है, कभी-कभी वमन और अतिसारके लक्षण भी होते हैं। रोगीको किसी तरह चैन नहीं मालूम होता। रातको शरीर रूखा और गर्म हो जाता है। रातको टेम्परेचर—ताप १०५—१०६ डिग्री तक हो जाता है। बलकी हानि और कान्ति की मलीनता होती है। आँखें खड्डोंमें घुस जाती हैं, पेशाब या तो होता ही नहीं और यदि होता है, तो लाल और मिकदारमें थोड़ा होता है।

दूसरी अवस्थाके लक्षण।

सात दिन तक ज्वरका वेग मन्दा रहता है। दूसरे हफ़्तेमें बुख़ार बढ़ने लगता है। नवें दिनसे चौदहवें दिन तक तेज़ी रहती है। शरीर तपता है, चमड़ा रूखा रहता है, साँस जल्दी-जल्दी चलता और उसमें बदबू आती है, होठ सूख जाते हैं, जीभ सफेद हो जाती और उसमें लकीरसी हो ज़ाती हैं एवं पेटमें दर्द होता है।

तापकी घटती-बढ़ती।

सवेरे अगर १०२ डिग्री ज्वर होता है, तो उस दिनकी शामको १०४ हो जाता है। अगले दिन सवेरे १ डिग्री कम होकर १०३ डिग्री ताप हो जाता है ; शामको फिर दो डिग्री बढ़कर १०५ हो जाता

है। उसके अगले सवेरे १ डिग्री घटकर १०४ हो जाता है और उस दिन शामको १०६ डिग्री हो जाता है। हर दिन शामको २ डिग्री ताप बढ़ता और अगले दिन सवेरे १ डिग्री घट जाता है। शामको और २ डिग्री फिर बढ़ जाता है। यह दशा ४ ५ दिन तक रहती है।

फुन्सियां।

—※—

बुखार आनेके सातवें-आठवें दिन छाती और पेट पर गुलाबी रङ्गकी फुन्सियाँ पैदा होती हैं, जो ४।५ दिनमें मर जाती हैं। इसके बाद और जगह वैसीही फुन्सियाँ पैदा होतीं और नाश होती रहती हैं। अगर रोग हलका होता है, तो चौदहवें-पन्द्रहवें दिन सारी फुन्सियाँ नष्ट हो जाती हैं।

रोगकी तेज़ी।

—※—

रोगकी तेज़ीमें पेट फूल जाता है, तिल्ली बढ़ जाती है, सूखी ओकी आती हैं, क़य होती हैं, दस्त पीले पतले और बदबूदार होते हैं, नाड़ीकी चाल और ताप बढ़ जाता है, कानोंमें सनसन शब्द होता है। कोई-कोई रोगी कानोंसे बहरा हो जाता है। प्रलाप, हिचकी, सामर्थ्यहीनता, अरुचि, अतिसार, कृशता, संज्ञानाश, हाथपाँव काँपना, तन्द्रा और मूर्च्छा आदि लक्षण होते हैं। ऐसी अवस्थामें रोगी चल बसता है।

रोग नाशके पूर्व्वरूप।

—※※※—

२१ वें दिनसे इस ज्वरके जानेके आसार नज़र आते हैं। उस समय जीभ साफ होने लगती है, भूख लगती है, नाड़ीकी चाल धीमी हो जाती है, दस्त बन्द हो जाते हैं और रोगी खाटपर बैठने-उठने लगता है तथा चेष्टा बदल जाती है।

नोट—(१) सभी रोगियोंमें प्रलाप, फुन्सियोंका होना, अतिसार, और बलहानि प्रभृति लक्षण नहीं देखे जाते। इस ज्वरमें २० से ३० दिन तक भय रहता है। २० वें दिनसे या तो ज्वर कम होने लगता अथवा मृत्युका सामना होता है।

इस ज्वरके लक्षण दुर्गन्धजनित ज्वरसे मिलते हैं। अष्टगन्धकी धूप या सर्वगन्धका क्वाथ, जो आगन्तु ज्वरोंकी चिकित्सामें लिखा है इस ज्वरमें हित है,—ऐसी अनेक वैद्योंकी सम्मति है। कोई-कोई कहते हैं, इस टाईफाँइड ज्वरके लक्षण तन्द्रिक सन्निपातसे मिलते हैं। अगर तन्द्रिकके लक्षण ही विशेष हों, तो तन्द्रिक सन्निपातज्वरकी सी चिकित्सा करनी चाहिये। टाइफस और टाइफॉइड दोनों ही सन्निपात ज्वर हैं, इसमें सन्देह नहीं। डाक्टर लोग कब्ज होनेसे, पहले काष्टर आयलका जुलाब देकर कोठा साफ करते हैं; दस्त बहुत होते हैं, तो कुछ ठहर कर, दस्त बन्द करनेकी दवा देते हैं; मलमूत्रके स्थानोंकी सफाई कराते हैं; आँतोंमें सूजन आजाने और घाव हो जानेके भयसे चलने फिरनेकी सख्त ममानियत करते हैं; खराब दशा होनेसे शराब देते हैं; साबूदाना वगेरः हलका पथ्य देते हैं, दूध भी देते हैं और नमक या क्षार पदार्थोंका देना बुरा कहते हैं। अभी इस ज्वरके सम्बन्धमें भी वैद्योंमें मतभेद है। इसलिये हमने इसकी चिकित्सा नहीं लिखी; केवल लक्षण मात्र वैद्योंकी जानकारीके लिये लिख दिये हैं। चतुर वैद्य दोषोंके लक्षण समझ कर इलाज कर सकते हैं।

टाइफाइड ज्वर और टाइफस ज्वरमें भेद।

टाइफॉइड ज्वरमें जाड़ा कई बार लगता है; किन्तु टाइफसमें आरंभमें ही शीत लगकर ज्वर चढ़ता है। टाइफॉइड ज्वरमें खूनके दस्त होते हैं; पर टाइफस ज्वरमें दस्त कम होते हैं और उनमें खून नहीं होता। टाइफॉइड ज्वरमें आँतोंमें घाव होते हैं; पर टाइफसमें घाव नहीं होते। टाइफॉइड ज्वरमें ताप अजब ढङ्गसे घटता-बढ़ता है। चार पाँच दिन तक सन्ध्याको २ डिग्री ज्वर बढ़ता है, सवेरे १ डिग्री घटता है; शामको और २ डिग्री बढ़ता है; यह क्रम चार-पाँच दिन तक जारी रहता है; किन्तु टाइफस ज्वरमें १ दिन बाद ज्वर बढ़ने लगता है और तीसरे दिन तक बढ़ता है; पीछे स्थिर हो जाता

और आठवें दिनसे घटना आरम्भ हो जाता है। टाइफाँइड ज्वरमें गुलाबी रङ्गकी फुन्सियाँ निकलतीं और नष्ट होती रहती हैं; किन्तु टाइफस ज्वरमें शहतूतकी शकल और रङ्गके दाग़ पैदा होते और पीछे वे ईंटके रङ्गकेसे हो जाते हैं और शेष तक रहते हैं। टाइफाँइड ज्वरमें रोगी ज्वर आते ही कमज़ोर नहीं होता; किन्तु टाइफस ज्वरमें ज्वर आते ही सामर्थ्य घट जाती है। ४ दिनमें ही रोगी ऐसा हो जाता है कि, उससे खाटसे उठा नहीं जाता।

इनफेन्टाइल रेमिटेन्ट फीवर।

यह ज्वर टाइफाँइड फीवरही है। वालकोंके टाइफाँइड फीवर का नाम इनफेन्टाइल रेमिटेण्ट फीवर रख लिया गया है। इनफेन्ट वालकको कहते हैं और इनफेण्टाइल इनफेण्टका विशेषण है। यह ज्वर दो तरहका होता है:—(१) हलका, (२) तेज़।

हलके ज्वरके लक्षण।

शुरूमें वालककी भूख मन्दी हो जाती है, प्यासका ज़ोर हो जाता है और वच्चा सुस्त हो जाता है। इस अवस्थाके वाद वालक पड़ा रहता है। कोई छेड़ता है तो झुंझलाता है, क्योंकि मिज़ाज विगड़ जाता है। साँझको ग़फ़लतमें पड़ा रहता है, किन्तु सोता नहीं और रातको नींद न आनेके कारण माता-पिताको हैरान करता है। रात भर वेचैनीमें कटती है। शरीर कभी गरम हो जाता है और कभी ठण्डा हो जाता है। नाड़ीकी चाल बेतहाशा तेज़ हो जाती है। दस्त पतला और सड़ा हुआ होता है। मुँहसे बदबू निकलती है। सवेरेके वक्त ज़रा तवियत अच्छी मालूम होती है; शामके समय गरमी बढ़ने लगती है और ज्यों ज्यों रात होती है, तवियत बिगड़ती जाती है।

रातके समय ताप ज़ियादा रहता है। यह पहले हफ़्तेकी हालत है।

दूसरे हफ़्तेमें बेचैनी बहुत बढ़ जाती है। बालक रातके समय चौंक-चौंककर चिल्ला उठता है। कभी-कभी तो इस तरह दाँत पीसने लगता है, जिससे मूर्खलोग भूत-प्रेतका साया पड़ना समझ लेते हैं। इस तरह कराहता है जिससे दया आती है। मालूम होता है,—भीतर भयानक वेदना रहती है, पर बालक कह नहीं सकता या कहनेका होश नहीं रहता। ज्वर कभी दिनमें दो बार आता है और कभी एक बार। दिनमें दस बजे बाद ज्वर चढ़ता है और फिर ३ बजेके क़रीब उतर जाता है ; शामको फिर चढ़ता है और रातके पिछले पहरमें कम हो जाता है। बालककी जीभ बीचमें मैली और नोक तथा किनारोंपर लाल रहती है। नाक और मुँहको बालक बारबार नोचता है ; पेट भी फूल जाता है। पन्द्रहवें दिनसे बहुधा सब तकलीफें घटने लगती हैं और बच्चा धीरे-धीरे आराम होता चला जाता है।

तेज ज्वरके लक्षण।

—★❋★—

तेज़ ज्वर होनेसे चेहरा भारीसा हो जाता है। सिरमें भयङ्कर वेदना होती है ; भ्रम, मूर्च्छा, वमन, वगैरः लक्षण भी होते हैं। छठे दिनसे पेट, पीठ और छातीपर लाल लाल, छोटी-छोटी फुन्सियाँसी होने लगती हैं। इस अवस्थामें बेहोशी बढ़ जाती है, क़य भी ज़ियादा होने लगती हैं, श्वास जल्दी-जल्दी चलता है, हृदयमें शूल होता है, खुश्क खाँसी होती है, मटिया रङ्गके पतले दस्त होते हैं। ये पहले हफ़्तेकी बातें हैं।

दूसरे हफ़्तेमें बालक बिल्कुल लकड़ हो जाता, मांस सब सूख

जाता है, उठ-बठ नहीं सकता, बेहोश पड़ा रहता है और नाड़ी धीरे-धीरे चला करती है। ताप१०५ और १०८ डिग्री तक हो जाता है।

तीसरे हफ़्तेमें बच्चेकी कमज़ोरी बेहद बढ़ जाती है। वह बेहोश रहता है, हाथ पैर ऐंठने लगते हैं। इस अवस्थासे कोई भाग्यवान् बच्चाही उठता है।

आराम होनेके लक्षण।

—*—

यह ज्वर धीरे-धीरे जाता है। कभी पसीने आकर ज्वर उतरता है, कभी पसीने आकर और दस्त होकर ज्वर उतरता है और कभी वमन द्वारा पित्त निकलनेसे भी ज्वर शान्त हो जाता है। इस ज्वरसे १०० में २० रोगी मरते हैं। २० दिनके बाद बहुधा मृत्यु होती है। जिसकी आँतोंमें घाव हो जाते हैं, वे रोगी कम बचते हैं। ३० दिनमें रोगी आराम हो जाते या मर जाते है। कोई-कोई इससे भी अधिक दिनोंतक अपने कर्मफलोंको भोगकर मरते हैं।

पाइएमिया फीवर।

—*—

(रक्तविकारज्वर)

—*—

यह बुख़ार ख़ूनके दोषसे होता है। यह वैद्यकका रक्तविकार ज्वर है। किसी अङ्गमें सूजन आकर पीव पड़ जाती है। उसकी वजहसे ख़ून ख़राब हो-जाता है और बुख़ार चढ़ आता है। कभी सफेद-सफेद धब्बे पैदा होजाते हैं और कभी सन्धियोंमें वेदना होती है। यह धूपमें रहने, अग्निके पास बहुत बैठने, तापने और रक्तके दूषित होनेसे होता है।

चिकित्सा।

—*—

इस ज्वरमें पीवको सुखाना और खूनको साफ करना चाहिये। उशबेका अर्क, चिरायतेका अर्क अथवा मंजिष्ठादि अर्क प्रभृति खून साफ करनेवाली दवाएँ देनेसे अवश्य लाभ होता है।

न्यूमोनिया।

डाकृरी में इसके ५ भेद लिखे हैं—

(१) निमोनिया

(२) वंको निमोनिया या लब्यूलर

(३) पुराना या इन्टर स्टिश्येल निमोनिया

(४) फुसफुस की गेंग्रीन

(५) फुसफुस में कैन्सर (नासूर)

निमोनियाके लक्षण।

निमोनिया को फुसफुस का प्रदाह भी कहते हैं। इस रोग में फुसफुस में दाहने-बायें बहुत जलन होती है और नीचे की तरफ दर्द होता है। इस निमोनिया रोगके पैदा होने से पहले बुखार आता है, कम्प होता है और खाँसी चलती है। बहुत दिन पहले भूख कम हो जाती है, कमज़ोरी हो जाती है, हाथ पैर और छाती में दर्द होता है, श्वास ज़ोर से चलता है, नाड़ी तेज़ हो जाती है, जीभ और होठ नीचे हो जाते हैं, एवं धीरे-धीरे इस रोग में रोगी की चैतन्यता का नाश होकर मृत्यु हो जाती है।

यह रोग ६ से १० दिन तक बहुत कष्ट देता है। खाँसी और श्वाससे भयानक कष्ट होता है। उठकर बैठनेसे या ज़ोरसे साँस लेनेसे खाँसी आती और उसके साथ खून आता है। जब रोगी की मृत्यु होनेका खतरा होता है, तब ऊपर लिखे लक्षण या तो कम हो जाते हैं या बिलकुल ही नहीं रहते।

इस रोगमें पहले तो बलग़म पतला-पतला आता है; पीछे दो एक दिनमें खूब गाढ़ा आने लगता है। कभी-कभी दो एक घण्टेमें ही आटेकी तरहका आने लगता है। कफमें कुछ सुर्ख़ी सी मिली रहती ह; यानी कुछ खूनका अंश रहता है, रोगीका बुख़ार बढ़ता ही जाता है। पहले दिन ताप १०२ से १०४ डिग्री तक और तीसरे दिन १०७ से १०६ डिग्री तक देखा जाता है। १०६ डिग्रीका ताप होनेसे रोगीका बचना कठिन हो जाता है। नाड़ीकाकी चाल यद्यपि सर्वत्र समान नहीं होती; फिर भी तीसरे चौथे दिन १२० से १३० तक हो जाती है। सिरमें बड़ी वेदना होती है, नींद नहीं आती, बेचैनी बढ़ जाती है, पेशाबके साथ खूनकी झलक आती और उसके साथ धातु भी मिली रहती है।

(२) लब्युलर या ब्रंकोनिमोनियाके लक्षण।

इसके सब लक्षण निमोनियाके सेही होते हैं। फ़र्क़ यही होता है कि, निमोनियाकी तरह इसमें कम्प आदि लक्षण नहीं होते। ताप १०३ से १०५ डिग्री तक रहता है, कभी-कभी ज्वर बढ़ जाता है। नाड़ीकी गति तीव्र हो जाती है।

(३) पुराने निमोनियाके लक्षण।

पहले लिखा हुआ निमोनिया जब पुराना हो जाता है, तब पसलीमें एक ओर खिंचावसा होता है, श्वास और खाँसी बढ़ जाते हैं, कफ बड़ी कठिनता से निकलता और उसमें बड़ी दुर्गन्ध मारती है।

(४) फुसफुसके गेंग्रीनवाले निमोनियाके लक्षण ।
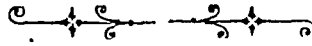
पुराना निमोनिया होकर, ज़हरीले कीड़ोंके ज़हरसे खूनके ज़हरसे अथवा उपदंश (गरमी रोग) से भी यह रोग हो जाता है। इसमें फुसफुसमें बड़ी तकलीफ होती है ।

(४) फुसफुसमें केन्सरवाले निमोनियाके लक्षण ।

यह रोग बहुत कम देखनेमें आता है । इसे कोई संक्रामक या छुतहा कहते हैं और कोई वंशपरम्परासे होनेवाला कहते हैं । इसमें श्वास, खाँसी, तीर छेदनेकीसी वेदना, दबानेसे तकलीफ बढ़ना, खाँसी के साथ कफ निकलना ये लक्षण होते हैं । कभी कभी फुसफुससे खून भी आता है, बुख़ार रहता है, रातमें पसीने आते हैं और रोगी कम-ज़ोर हो जाता है ।

निमोनियाके सामान्य लक्षण ।

पहले फेंफड़ोंमें सूजन आ जाती है और वे सख़्त हो जाते हैं तथा गलने लगते हैं । आरम्भमें जाड़ेका बुख़ार आता है, छाती बहुत गर्म हो जाती है, मुँह और नेत्र लाल हो जाते हैं, सिरमें दर्द होता है, प्यास बहुत लगती है, जीभ मैली हो जाती है, भूख जाती रहती है, छातीमें मन्दा-मन्दा दर्द होता है, सूखी खाँसी चलती है, कभी-कभी कफ भी आता है, बीमारीके बढ़ जानेपर मुखसे खून भी गिरने लगता है, श्वास कष्टसे आता है, थूक दहेसदार चिपचिपा और बदबूदार आता है ।

निमोनियाकी उत्पत्तिके कारण ।

सरदी लगना, कई तरहका ज्वर, ज्वरमें बदपरहेज़ीसे अपथ्य सेवन करना या शीतल जल वगैरः पीना या और कोई शीतल पदार्थ

खाना-पीना, बहुत मिहनत करना, अति स्त्रीप्रसंग करना, मौसमका बदलाव या ऋतुपरिवर्त्तन आदि इसके कारण हैं। विशेष करके यह रोग शीतल हवा लगने या और किसी तरह सर्दी लगनेसे होता है।

खुलासा।

असलमें "निउमोनिया" सन्निपातज्वरकी एक अवस्थाका नाम है। सन्निपात ज्वरमें साधारण लक्षणोंके सिवा और कितने ही विशेष लक्षण होते हैं। निउमोनिया होनेके पहले एकदमसे कमज़ोरी आ जाती है और भूख मारी जाती है। जब निउमोनिया होता ही है, तब पहले जाड़ेका बुख़ार आता है; सिरमें दर्द होता है, क़य होती हैं, रोगी आनतान बकता है और हाथ पैर पटकता है। जब रोग बढ़कर पूर्णरूपसे प्रकट हो जाता है, तब छातीके छूतेही दर्द होने लगता है, साँस लेनेमें कष्ट होता है, खाँसी का बड़ा ज़ोर रहता है, मैला और गाढ़ा तथा लहेसदार कफ निकलता है। वह कफ बासनमें रख दिया जाता है, तो सहजमें छूटता नहीं। कभी-कभी उस कफके साथ ज़रा-ज़रासा खून भी आता है।

जब एक सप्ताह बीत जाता है, तब पेशाब और पसीना बहुत आता है। नाड़ीकी चाल हर मिनटमें ९० से १२० बार तक हो जाती है। टेम्परेचर १०३ से १०४ डिग्री तक हो जाता है। कोई-कोई १०७ डिग्री तक टेम्परेचर हो जाने पर भी आराम होते देखे गये हैं। असलमें इस रोगमें फुसफुस ख़राब होता और बहुधा सड़ भी जाता है। इस दशामें किसी क़दर लाल और मैला तथा पतला कफ निकलता है। फुसफुसके सड़ जानेपर बदबूदार और पीबके जैसा बलग़म निकलता है। फुसफुसके ख़राब हो जाने पर रोग कष्टसाध्य हो जाता है। अगर फुसफुसमें दाह या जलन हो, तोभी रोगको

कष्टसाध्य समझना चाहिये। अगर छोटे बालक, बूढ़े, स्त्री और खास कर हामला—गर्भवती औरत तथा शराबीको यह रोग होता है, तो कठिनसे आराम होता है।

चिकित्सा विधि।
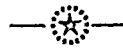
डाक्टर लोग इसमें अनेक दवायें देते हैं, परन्तु उनके यहाँ इसकी उत्तम दवा "काडलिवर आयल" है ; पर रोगके मिट जानेकी दशा में इसका देना हित है। इसे वे १ ड्रामसे लेकर १ औन्स तक दूधके साथ देते हैं। इसका इलाज अनुभवी डाक्टरसे कराना चाहिये। यह भी एक प्रकारका सन्निपात है। डाक्टरी मतसे पहले-पहल चिरायतेका काढ़ा या टिञ्चर स्ट्रोल देना अच्छा है।

वैद्यकके रक्तष्ठीवी सन्निपातसे इसके बहुत लक्षण मिलते हैं। किसी-किसीने निमोनियाको राजयक्ष्मा या सिल लिखा है। यह उन्होंने कफके साथ खून आनेकी वजहसे लिखा है। राजयक्ष्मा या सिलमें इसकेसे लक्षण बहुत दिनोंमें होते हैं; परन्तु निमोनियामें सब लक्षण चटपट होते हैं; रक्तष्ठीवीमें मुखसे थूकके साथ खून आता है; न्यूमोनियामें भी खून आता है। रक्तष्ठीवीमें ज्वर, प्यास, बेहोशी, दर्द श्वास, वगैरः लक्षण होते हैं, इसमें भी होते हैं। रक्तष्ठीवीमें नेत्र लाल हो जाते है, न्यूमोनियामें भी नेत्र लाल होजाते हैं। रक्तष्ठीवीमें जीभ काली हो जाना लिखा है; न्यूमोनियामें नीली हो जाना लिखा है। यह कोई भेद नहीं है। रक्तष्ठीवीमें अतिसार और खूनके चकत्ते होना बेशक अधिक लिखा है।

कोई-कोई विद्वान् इसे "कर्कटक सन्निपात" भी कहते हैं। अभीतक निश्चित मत किसीने भी नहीं दिया है; फिर भी हम इसको आराम करनेवाले चन्द परीक्षित उपाय लिखते हैं। आशा है, भगवान्की दयासे, उनसे अनेक मौकों पर लाभ ही होगा।

इस रोगमें सन्निपातज्वरमें लिखे हुए काढ़े, दोषोंका विचार कर

के देने चाहियें। इसी तरह खाँसीकी दवा भी दोषानुसार देनी चाहिये। पृष्ठ ३०४ में अभिन्यास सन्निपात ज्वरकी चिकित्सामें लिखा हुआ नं० १ काकड़ासिंगी, भारङ्गी, हरड़ प्रभृति ३३ दवाओं का काढ़ा देनेसे निउमोनियामें अवश्य लाभ होता है। विचार-पूर्वक "कस्तूरी भैरव," अथवा "कफकेतु" देनेसे भी लाभ होता है। रस हमेशा विचारकर देने चाहियें, क्योंकि कभी-कभी लक्षणोंमें बहुत भेद पाया जाता है। कभी रक्तष्ठीवी केसे और कभी कर्कटककेसे लक्षण मिलते हैं; पर ऊपरका काढ़ा हर हालतमें लाभदायक सावित हुआ है; बशर्ते कि रोगीकी टूटी न हो, क्योंकि टूटीकी बूटी तो कहीं भी नहीं है।

स्वल्प कस्तूरी भैरव।

शुद्ध हिंगलू, शुद्ध मीठा विष, शुद्ध सुहागा, जावित्री, जायफल, कालीमिर्च, पीपल और असल कस्तूरी—सबको बराबर बराबर लेकर, पानीमें खरल करके, रत्ती रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। सन्निपात-ज्वर या निउमोनियामें इन गोलियोंको बलाबल अनुसार अदरखके रसमें देना चाहिये। भयङ्कर अभिन्यास सन्निपात ज्वरमें भी "कस्तूरी भैरव" अच्छा काम देता है।

कफकेतु।

शङ्खभस्म, सोंठ, कालीमिर्च, शुद्ध सुहागा—प्रत्येक एक-एक माशे और शुद्ध मीठा विष ५ माशे—इन सबको अदरखके रसमें ३ दफा खरल करके, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। अदरखके रसके साथ देनेसे कफको वजहसे रुका हुआ गला खुल जाता है। इससे भयानक सन्निपात और न्यूमोनिया आराम हो जाता है। नवीन ज्वरमें यह "कफकेतु" अच्छा काम देता है।

ज्वरोंपर और उत्तमोत्तम रस।

श्रीमृत्युञ्जय रस।

शुद्ध मीठा विष १ माशे, कालीमिर्च १ माशे, पीपल १ माशे, जंगली ज़ीरा १ माशे, शुद्ध गन्धक १ माशे, सुहागा भुना हुआ १ माशे और शुद्ध हिङ्गल्रू (हिङ्गुल) २ माशे—इन सबको मिलाकर अदरखके रसमें खरल करके, मूँग बराबर गोलियाँ बना लो। मामूली तौरसे यह रस शहतके साथ दिया जाता है। सन्निपातज्वरमें इसे अदरखके रसके साथ; विषमज्वरमें काले ज़ीरेके चूर्ण और पुराने गुड़के साथ देते हैं। इसकी मात्रा जवानको चार गोली हैं। कमज़ोरको, बालकको और वृद्धको एक-एक गोली देनी चाहिये। इससे वातपित्तका दाह भी शान्त होता है। अगर कफकी अधिकता न हो, तो इसे कच्चे नारियलके पानी और चीनीके साथ सेवन करना चाहिये।

मृत्युञ्जय रस।

शुद्ध पारा एक माशे, शुद्ध गन्धक २ माशे, भुना सुहागा ४ माशे, शुद्ध मीठा विष ८ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज १६ माशे और त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपर) ६४ माशे—इन सबको धतूरेके रसमें खरल करके एक-एक माशे भरकी गोलियाँ बनालो। सबसे पहले पारे और गन्धकको खरलमें घोटकर कज्जली बनालो। पीछे कज्जलीके साथ शेष चीज़ोंको मिलाकर, खरलमें डालकर, धतूरेके रसके साथ खरल करके गोलियाँ बनाओ। इस तरह अच्छा रस बनता है। इस रससे सब तरहके ज्वर नाश हो जाते हैं। अगर सन्निपात ज्वरमें यह देना हो, तो अदरखके रसके साथ दो; अगर कफज्वरमें देना

हो, तो शहदके साथ दो और वातपित्तज्वरमें देना हो, तो नारियलके पानी और चीनीके साथ दो।

ज्वर मुरारि।

शुद्ध हिङ्गुल, शुद्ध मीठा विष, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, भुना सुहागा और हरड़—इन सबको बराबर-बराबर लो और सबके वज़नके बराबर शुद्ध जमालगोटेके बीज लो। सबको खरलमें डालकर पानीके साथ उड़दके दाने बराबर गोलियाँ बनालो। अगर ज्वर-रोगीको दस्त कराना हो, तो इसे अदरखके रसके साथ दीजिये। इससे ज्वर बहुत जल्दी भाग जाता है।

ज्वरान्तक रस।

शुद्ध पारा १ माशे, शुद्ध गन्धक १ माशे, शुद्ध वच्छानाभ विष १ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज ३ माशे, सोंठ, १ माशे, पीपल १ माशे, कालीमिर्च १ माशे और कंजेकी गिरी १ माशे—इन आठोंको तैयार करके रखलो। पहले पारे और गन्धकको खरलमें घोटकर कज्जली बनालो। पीछे बाकीकी छै चीज़ोंको पीस छानकर, कज्जलीमें मिलाकर, खरलमें सबको डालकर नीबूके रसके साथ एक दिन-भर घोटो। घुट-जाने पर ज्वारके दाने बराबर गोलियाँ बनालो।

सवेरे शाम एक-एक गोली अदरखके रस और शहतके साथ सेवन करानेसे इकतरा, तिजारी, चौथैया, प्रभृति आराम हो जाते हैं। अगर पित्तज्वर हो तो भुना हुआ ज़ीरा, बड़ी इलायची, आमले और मिश्रीके साथ गोलियाँ देनी चाहियें; कफज्वरमें शहद और बहेड़ेके साथ देनी चाहियें; वातज्वरमें रेंडीके बीजोंकी मींगी और शहतके साथ देनी चाहियें; दाहज्वरमें कपूर और कत्थेके चूरणमें मिला कर देनी चाहियें और ऊपरसे चन्दन और गिलोयका काढ़ा देना

चाहिये । सब तरहके ज्वरोंमें गिलोय, धनिया, नीमकी छाल, लाल-चन्दन और पद्माख—इनके काढ़ेके साथ गोलियाँ देनी चाहियें । शीतज्वर या नये बुख़ारमें सोंठ, मिर्च, पीपल और गिलोयके काढ़ेके साथ देनी चाहियें । अगर अनुपान न हो,तो केवल ताज़ा पानीके साथ देनी चाहियें ।

अग्निकुमार रस ।

—**—

गोलमिर्च २ माशे, वच २ माशे, कूट २ माशे, नागरमोथा २ माशे और शुद्ध मीठा विष ८ माशे—इन सबको खरलमें डालकर, अदरखके रसके साथ घोटकर रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बनालो ।

सन्निपातज्वरकी पहली अवस्थामें पीपलके चूर्ण और अदरखके रसके साथ दो । आमज्वरकी पहली अवस्थामे शहद और सोंठके चूर्णके साथ दो । कफज्वरमें अदरखके रसके साथ दो । जुकाममें अदरखके रसके साथ दो । खाँसीमें कण्टकारीके रसके साथ दो । श्वासमें सरसोंके तेल और पुराने गुड़के साथ दो । सूजनमें दशमूलके काढ़ेके साथ दो । अग्निमांद्यमें लौंगोंके चूर्णके साथ दो । दो गोली सेवन करनेसे तत्काल आराम होता है । सब तरहके रोगोंमे आमदोषकी शान्ति के लिये यह रस दिया जाता है । इससे अग्निकी वृद्धि होती है, इसीसे इसे “अग्निकुमार रस” कहते हैं ।